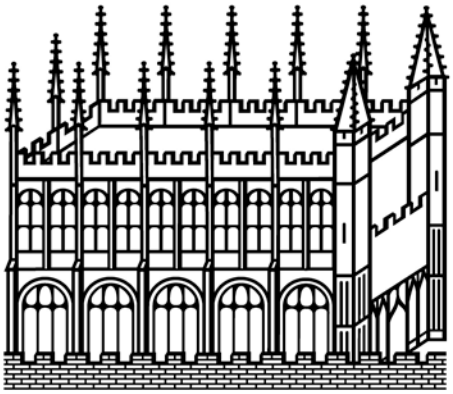

Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.



Hindi Raghu D 1

13. E. 39.

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Viśrāmasāgara.

Bishram Sagar Press

विश्रामसागर

بسرام ساگر

जिसमें

यद् शास्त्र अठारहों पुराणा का मत और श्री त्रिभुवनपति कथा
चन्द्रावतार के चरित्र जन्म से निज लोक गमन पर्य्यन्त
और श्री सच्चिदानन्द परब्रह्म रामावतार की कथा
बहुत से ग्रन्थों के मत से उत्तम २ छन्दों में
वर्णित है

उसको

श्री मन्महा महोपाध्याय गुणिगणा मराडली मराडन श्री
परब्रह्म रामचन्द्र जी के पादार विन्दानुरागी परम वैष्णव
महन्थ श्री रघुनाथ दास रामसनेही जी ने महात्माओं और
हरिभक्तों और विद्या रसामृत स्पर्शियों के निमित्त अतीव
परिश्रम करके सम्पूर्ण ग्रन्थों के आशय लेकर भाषा उल्था
किया
तीसरीबार

स्थान लखनऊ
मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में छापा गया
जनवरी सन् १८८४ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् जनवरी सन् १८८४ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परंतु व्योपारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्योपार की इच्छा हो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेजकर कीमत का निर्णय करलें ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषा इतिहास	१-आदिपर्व्व	६-भीष्मपर्व्व	४-किष्किन्धाकाण्ड
महाभारत	२-सभापर्व्व	७-द्रोणपर्व्व	५-सुन्दरकाण्ड
१-पहिले हिस्सा में	३-बनपर्व्व	८-कर्णपर्व्व	६-लंकाकाण्ड
आदिपर्व्व सभापर्व्व	४-विराट्पर्व्व	९-शल्यपर्व्व	७-उत्तरकाण्ड
बनपर्व्व	५-उद्योगपर्व्व	१०-गदापर्व्व	रामायण का इतिहास
२-दूसरे हिस्सा में	६-भीष्मपर्व्व	११-स्त्रीपर्व्व	रामायण शब्दार्थकोष
विराट्पर्व्व उद्योगपर्व्व	७-द्रोणपर्व्व	१२-स्वर्गारोहणप-	रामायण मानसदीपिका
भीष्मपर्व्व द्रोणपर्व्व	८-कर्णपर्व्व	रामायण तुलसीकृत म-	रामायण कबितावली
३ तीसरे हिस्सो में	९-शल्यपर्व्व व गदापर्व्व	यटीका युगुलानन्दकृत	रामायण गीतावली स
कर्णपर्व्व शल्यपर्व्व	व सौप्तिकपर्व्व मय योशि-	रामायण तुलसीकृत मय	भुवनेश भूषण
गदापर्व्व सौप्तिकपर्व्व	क व विशोक व स्त्रीपर्व्व	टीका सुखदेव कृत	विनयपत्रिका बा-सो-
योशिकपर्व्व विशोक-	१०-शान्तिपर्व्व राजध-	रामायण रामविलास	विनयपत्रिका बा-शि-
पर्व्व स्त्रीपर्व्व शान्तिप	र्म्म मोक्षधर्म्म व दानधर्म्म	रामायण तुलसीकृत	शंकर चरित सुधा
र्व्व में राजधर्म्म आपद	११-अश्वमेध आश्रम	रामायण सटीक मय	विष्णुपुराण भाषा
धर्म्म मोक्षधर्म्म	बासिक मुशल पर्व्व व	मानसदीपिका कोष आ-	लिंगपुराण
४-चौथे हिस्सा में	महाप्रस्थान स्वर्गारोहण	तथा जिल्द बँधी	ब्रह्मोत्तरखण्ड
शान्तिपर्व्व दानधर्म्म	१२-हरिवंश पर्व्व	तथा मोटे अक्षरों की मय	शुक्रनीति
अश्वमेध आश्रम बा-	महाभारत सबलसिंह	तसवीर व क्षेपक	रसवृष्टि व रसचंद्रोदय
सिक व मौशल पर्व्व व	१-आदिपर्व्व	रामायण तुलसीकृत	सुदामाचरित्र
बाणप्रस्थान स्वर्गारो	२-सभापर्व्व	सातों काण्ड	कृष्णगीतावली
हणपर्व्व हरिवंशपर्व्व	३-बनपर्व्व	१-बालकाण्ड	श्रीअनुरागरंग
महाभारत पर्व्व अलै	४-विराट्पर्व्व	२-अयोध्याकाण्ड	सौदागरलीला
हदा भी हैं	५-उद्योगपर्व्व	३-आरण्यकाण्ड	रासलीला



विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् जनवरी सन् १८८४ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचनेके लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परंतु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्योपार की इच्छा हो वह छपवाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेजकर कीमत का निराख करलें॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषा इतिहास	१-आदि पर्व	६-भीष्म पर्व	४-किष्किन्धा काण्ड
महाभारत	२-सभा पर्व	७-द्रोण पर्व	५-सुन्दर काण्ड
१-पहिले हिस्सा में	३-वन पर्व	८-कर्ण पर्व	६-लंका काण्ड
आदि पर्व सभा पर्व	४-विराट पर्व	९-शल्य पर्व	७-उत्तर काण्ड
वन पर्व	५-उद्योग पर्व	१०-गदा पर्व	रामायण का इतिहास
२-दूसरे हिस्सा में	६-भीष्म पर्व	११-स्त्री पर्व	रामायण शब्दार्थकोष
विराट पर्व उद्योग पर्व	७-द्रोण पर्व	१२-स्वर्गारोहण प०	रामायण मानसदीपिका
भीष्म पर्व द्रोण पर्व	८-कर्ण पर्व	रामायण तुलसी कृत म-	रामायण कविता वली
३ तीसरे हिस्सो में	९-शल्य पर्व व गदा पर्व	यटीका युगुलानन्द कृत	रामायण गीता वली स-
कर्ण पर्व शल्य पर्व	वसौप्तिक पर्व नय योशि-	रामायण तुलसी कृत मय	भुवनेश भूषण
गदा पर्व सौप्तिक पर्व	क व विशोक व स्त्री पर्व	टीका सुखदेव कृत	विनय पत्रिका बा-सो-
योशिक पर्व विशोक	१०-शान्ति पर्व राज ध-	रामायण राम विलास	विनय पत्रिका बा-शि-
पर्व स्त्री पर्व शान्ति प	र्म मोक्ष धर्म व दान धर्म	रामायण तुलसी कृत	शंकर चरित सुधा
र्व में राज धर्म आपद	११-अश्वमेध आश्रम	रामायण सटीक मय	विष्णु पुराण भाषा
धर्म मोक्ष धर्म	वासिक मुशल पर्व व	मानसदीपिका कोष बा-	लिंग पुराण
४-चौथे हिस्सा में	महा प्रस्थान स्वर्गारोहण	तथा जिल्द बँधी	ब्रह्मोत्तर खण्ड
शान्ति पर्व दान धर्म	१२-हरिवंश पर्व	तथा मोटे अक्षरों की मय	शुक्रनीति
अश्वमेध आश्रम वा-	महाभारत सबल सिंह	तसवीर व क्षेपक	रस दृष्टि व रस चंद्रोदय
सिक व मौशल पर्व व	१-आदि पर्व	रामायण तुलसी कृत	सुदामा चरित्र
स्वर्गा प्रस्थान स्वर्गारो	२-सभा पर्व	सातों काण्ड	कृष्ण गीता वली
हण पर्व हरिवंश पर्व	३-वन पर्व	१-बाल काण्ड	श्री अनुराग रत्न
महा भारत सबल सिंह	४-विराट पर्व	२-अयोध्या काण्ड	सोदागर लीला
इदार्थ हैं	५-उद्योग पर्व	३-आरण्य काण्ड	रास लीला



تصویر رگھناتھ داس رام سنیہی



सूचीपत्र ॥

बिश्रामसागर की कथाओं का ॥

अध्याय	विषय	पृष्ठसं	पृष्ठतक
१	मंगलाचरण	१	५
२	कथा प्रसंग बर्णन	६	११
३	गुरु माहात्म्य और नारद कथा	११	१५
४—५	गुरु माहात्म्य औरकृष्ण दत्त कथा	१५	२५
६	नाम माहात्म्य	२५	३२
७	बालमीक—गज—गणिका यमन उद्धारण	३२	३५
८	अजामिल कथा बर्णन	३६	३६
९	यमदूत कथा बर्णन	३६	४३
१०	गृहधर्म बधिक कपोत संबाद	४३	४८
११	यमपुरी बर्णन	४८	५६
१२	गृहधर्मकर्मबिपाक बर्णन	५६	६२
१३	सुब्रता यमराज प्रसंग बर्णन	६२	६७
१४	गौतमी सुब्रता धर्म प्रसंग बर्णन	६७	७२
१५	मुदगल प्रसंग बर्णन	७२	७६
१६	बीरभद्र प्रसंग बर्णन	७७	८१
१७	हरिश्चन्द्र सुधन्वाकथा बर्णन	८१	८८
१८	राजासिबि वा देवदत्त प्रसंग बर्णन	८८	९३
१९	सुदर्शन कथा बर्णन	९३	९७
२०	बहुलागऊकीकथाबर्णन	९७	१०२
२१	मोरध्वज कथा बर्णन	१०२	१०७
२२	मोरध्वज आख्यानबर्णन	१०७	१११
२३	ध्रुव चरित्र बर्णन	१११	११७
२४	ध्रुव मधुबन आगमन	११७	१२४
२५	प्रह्लाद कथा बर्णन	१२४	१३२
२६	श्रीनृसिंहअवतारबर्णन	१३२	१३६
२७	ब्रह्माकी उत्पत्तिअयोध्या की उत्पत्ति स्वायंभूमनु कथा बर्णन	१३७	१४३
२८	सातोंद्वीपनवखण्डप्रमाण श्रीसरयू की उत्पत्ति बर्णन	१४३	१५०
२९	श्रीगंगाकीउत्पत्तिबर्णन	१५०	१५५
३० ३१	एकादशी उत्पत्तिबर्णन	१५५	१६६
३०	एकादशीमाहात्म्यबर्णन	१६७	१७२
३३	श्रीतुलसीमाहात्म्यबर्णन	१७२	१७८
३४	युधिष्ठिर यज्ञ बर्णाश्रम धर्म हरिभक्ति साधन बर्णन	१७८	१८७
३५	जाजुल्यऋषि तुलाधार प्रसंग बर्णन	१८७	१९२
३६	मक्की दत्ताचयी संबाद		

अध्याय	विषय	पृष्ठम	पृष्ठतक
	चौबीसगुरुकथा बर्णन	१९३	२९८
३७	पितापुत्रसंबाद अलरक प्रसंग	१९८	२०४
३८	शयनजीतप्रसंग बर्णन	२०४	२१०
३९	सत्संगमाहात्म्यबर्णन	२११	२१४
४०	अम्बरीष कथा बर्णन	२१५	२१८
४१	चन्द्रहासआख्यानबर्णन	२१८	२२३
४२	नृगप्रसंगसंतलक्षणबर्णन	२२३	२३३
४३	राजाक्रासआख्यानबर्णन	२३३	२३८
४४	राजाक्रास नारदसंबाद बर्णन	२३८	२४३
४५	क्रासपिचउद्धार बर्णन	२४३	२४८
४६	नवधा भक्ति बर्णन	२४८	२५७
४७	छत्रीशास्त्रकी जुदीजुदी बाक्य	२५७	२९५
१	कृष्णायन प्रसंग बर्णन	२६६	२७४
२	कृष्णजन्मउत्साह पूतना कागासुर तृणावर्त्त बध बर्णन	२७४	२८१
३	कृष्ण दधिचोरी वाक्य बिलास बर्णन	२८१	२८८
४	कृष्ण ऊखलबन्धनयमलार्जुन उद्धार राधिका बिवाह ब्रह्मा बच्छहरण धेनुकबध बर्णन	२८८	२९५
५	कृष्णचतुर्मासाचीरहरण दानलीला गोबर्द्धनलीला बर्णन	२९५	३०३
६	कृष्ण रासलीला बर्णन	३०३	३०८
७	कृष्ण मथुरा आगमन बर्णन	३०८	३१४
८	कृष्ण कुबरीगृहआगमन बर्णन	३१४	३१९
९	उद्धव ब्रज आगमन	३१९	३३१
१०	कृष्ण जरासन्ध समर बर्णन	३३१	३३६
११	कृष्णरुक्मिणीहरणबर्णन	३३६	३४१
१२	रुक्मिणी मंगल प्रद्युम्न उत्पत्ति अरु रतिसंग बिवाहबर्णन	३४२	३४६
१	रामायणप्रसंगरावणउत्पत्ति अरु युद्धबिषय जय पराजय बर्णन	३४९	३५४
२	मेघनाद अहिरावण बिजय बर्णन	३५५	३५९
३	रामजन्म उत्सव बर्णन	३६०	३६९
४	श्रीरामचन्द्र बाललीला बर्णन	३६९	३७०
५	रामचरित्रबर्णन	३७०	३८८
६	बिश्वामित्र मख रक्षण बर्णन	३८८	३९६
७	श्रीरामचंद्र रंगभूमिआगमन	३९६	२०७
८	श्रीपरशुरामबनयाचाबर्णन	४०७	४१३
९	श्रीरामचंद्रबिवाह बर्णन	४१३	४२१
१०	श्रीरामकलेवा बर्णन	४२२	४२४
११	श्रीरामचंद्र श्रीअयोध्या आगमन	४२४	४३०
१२	श्रीराम बनयाचा नृप बिषाद बर्णन	४३१	४४१
१३	श्रीराम चित्रकूट आगमन बर्णन	४४१	४४८
१४	श्रीभरतचित्रकूट गमन बर्णन	४४८	५५४
१५	श्रीभरत चित्र कूटआगमनबर्णन	४५४	४६२

अध्याय	विषय	पृष्ठांक	पुस्तकांक
१६	श्रीभरतपादुका अभिषेक वर्णन	४६२	४६६
१७	श्रीराम दंडकबन आगमन वर्णन	५००	४०७
५८	श्रीराम सेवरी गृह आगमन वर्णन	४७८	४८८
१६	श्रीराम सुग्रीव मिचता वर्णन	४८६	४६५
२०	बालिबध सैन आगमन वर्णन	५१५	४६८
२१	मारुतनन्दन श्रीसीता प्रति रामसंदेश वर्णन	४६६	५०४
२२	हनुमान लंकापुरी बिध्वंस वर्णन	५०४	५११
२३	श्रीराम सिंधुतट आगमन वर्णन	५११	५१६
२४	श्रीराम सुबेल आगमन वर्णन	५२०	५२३
२५	अंगद रावण सम्बाद वर्णन	५२३	५२६
२६	लक्ष्मणहित राम बिरह वर्णन	५२६	५३४
२७	मेघनाद बध और सुलोचना सती वर्णन	५३५	५४१
२८	कुम्भकरण बध राम रावण समर वर्णन	५४१	५४७
२६	श्रीराम करके रावणबध श्रीअयोध्या आगमन वर्णन	५४८	५५१
३०	श्रीराम भरत मिलाप श्रीराम राज्य अभिषेक वर्णन	५५२	५६३

इति ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

अथबिश्रामसागर ॥

रघुनाथदासरामसनेहीकृतप्रारम्भः ॥



श्लोक ॥

सीतरामेतियुगुलं वस्तुतस्त्वेकरूपिणं ।
परमानन्दसन्दोहंसर्बाराध्यंनतोस्म्यहम् ॥
तत्प्राप्त्यैपरिमार्गिताहिबहबो लोकेजनानैवत
ह्यातारंहरिभक्तदासगुरुतोनान्यंक्वचिद्दृष्टवान् ।
तंषामेवतुपादपद्मप्रभवायासुस्त्वचक्ष्वाजिहं
रघुनाथाखिलग्रन्थसारसुखदंबिश्रामसिन्धौकृते ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपगिरासुखदानि ।
नाना ग्रन्थन केर मत कहौं बन्दना बखानि ॥
बन्दौं शारद के चरण हरण अविद्या मूल ।
बुधिसुधि बिद्या दे सुमति ह्वै मोपर अनुकूल ॥

छ० एकरदन करिबदन सदन सुखके दुखनाशक ।
ईश तनय गणईश शीश रजनीश प्रकाशक ॥
ऋद्धिसिद्धि बुधिलेत देतहरि कुमतिनजागत ।
जो सुमिरै मनलाय बिघ्न ता जन के भागत ॥
जयजयगणेशगिरिजासुवनभुवनबिदितयशअघहरण।
रघुनाथदासबन्दमकरतबारबारगणपतिचरण॥
जय अनङ्ग अरिसङ्ग उमा अरधङ्ग बिराजत ।
मुण्डमालमृगछाल कण्ठबिषव्यालजोछाजत ॥
शीश गङ्ग सारङ्ग भस्म सर्बाङ्ग लगावत ।

तीननयन मृदुबयन अयनसुख दुःखनशावत ॥
दीनदयालकृपालहर कर त्रिशूलबर गौरतन।
रघुनाथदासबन्दनकरतकरौकृपामोहिंजानिजन ॥
बन्दौंद्विजपदकमल अमलसुन्दर सबलायक।
बन्दौं रघुपतिसचिव सखासेवक सुखदायक ॥
बन्दौं गङ्ग तरङ्ग मेदिनी कुमुद बिभाकर।
बन्दौं सुरमुनि मनुज दनुजबिधिजीवचराचर ॥
बन्दौंकबिकोबिदबिमलजिनबरणयोसियरामयश।
सबमोपरकिरपाकरहु कहौंकथा बलपायतस ॥
राम चरित्र बिचित्र अपारा। गावत निगम न पावत पारा ॥
निजमतिसरिसतदपिमुनिगावैं। मन चञ्चल तेहि तहां रमावैं ॥
श्रवण कीर्त्तन सुमिरण सेवा। भक्ति अङ्ग भाषत महि देवा ॥
करन पवित्र गिरा अघ हारी। सबप्रकार मुद मङ्गल कारी ॥
असबिचारि बरणत रघुनाथा। भाषा करि हरि प्रेरित गाथा ॥
कवितदोष गुण ग्रन्थ मँझारा। कहे नागपति यहि परकारा ॥
रोला मगणनगणअरुभगण यगणशुभ चारिकहावैं।
जगणरगणपुनिसगणतगणकबिअशुभबतावैं॥
मगण तीनगुण आदिदेव महि सबसुखकारी।
नगण तीन लघुदेव नाग दायक बुधि भारी ॥
भगण आदि गुरुदेव चन्द्र मङ्गलदा होई।
यगण आदि लघुदेव नीर आनँदप्रद सोई ॥
जगण मध्य गुरुदेव सूर सुख सकलबिनाशै।
रगण मध्य लघुदेव अग्नि दाहत तन त्रासै ॥
सगण अन्त गुरुदेव काल नित देत उदासी।
तगण अन्तलघुदेवब्योम निरफलफलनाशी ॥
मनुजकबितकेआदिमहँलीजैइन्हैंबिचारिखुब।
कहैरघुनाथश्रीरामगुणबरणतअशुभौहोतशुभ॥

दो० तहां मित्र कोउ दासहैं उदासीन रिपु कोउ।
अक्षर शुद्ध अशुद्धकोउ सुनो कहौं मैं सोउ॥
खगकचघनघनजड़परतछतइतिसुखप्रदअङ्क।
शेष परै जो कवित तो करै रावते रङ्क॥
यहिबिधिपिङ्गल कहतबखानी। सोहे मम बिशेष नहिं जानी॥
तेहिते सबै कहौं कर जोरी। जो कछु चूकपरै लखि मोरी॥
सुजन सुधारि लहेउ तुमताही। लघुगुरुबरण जहांजसचाही॥
माहिं न ज्ञान बुधिबल चतुराई। कीन्हचहौं हरि कथा सोहाई॥
मति अति क्षीनपीन रुचि मोरी। चाहत नभै छुवन बरजोरी॥
यह ढीठता समुझि बर ज्ञानी। क्षमिहैं निजशिशु सेवकजानी॥
सुनि हैं मुदित सराहि सराही। रामसिया पदरत मतिजाही॥
जिमि बालक बोलत तुतराई। सुनत मातुपितु अति हरषाई॥
निंदिहैं कपटी खल अभिमानी। जेहरिबिमुख भक्तिनहिंजानी॥
तासुबचनसुनि सुजन सुछन्दा। तजहिंनउड़पदाखशिवनिन्दा॥
रबिहि उलूक कहै भल नाहीं। साक्षी किमि धारै मन माहीं॥
निन्दाफलनहिं कह्यों बखानी। पैहैं जब तब जै हैं जानी॥
दो० रामकथा सबको सुखद ऋतु बर्षा की नाइँ।
अर्क जवासा दुष्टजन ते आपुइ जरि जाइँ॥
यदपि रहै मम भनित भदेशी। परिहरिजन गुणनामतेलेशी॥
ताते भई अनूपम नीकी। जिमिमणिमढ़ितचौतनीफीकी॥
हरिहरि जनबिन जोकबिताई। सुभगप्राणबिनजिमिबपुभाई॥
खल बायस कर तीरथ सोई। सुजन हंस तहँ रमै न कोई॥
छन्द प्रबन्धन हरि गुण गावै। सजीवनि सोइ काव्य कहावै॥
कहैं सुनैं मिलि सज्जन ताही। करैं प्रणाम प्रीति गुणग्राही॥
यथा बक्र गति सरित निहारी। तासु पाथ पावन सुखकारी॥
मज्जहिं ताहि महामुनि देवा। अपर न काको बरणै भेवा॥
दो० श्रीपतिधीपतियज्ञपतिअखिललोकपतिजोपि।

प्रणवों भूपति प्रजापति करा कृपा प्रभुसोपि ॥
बन्दौं हरिजन पद कमल अमल तत्वप्रद रेनु।
जिनकेसँगप्रभुफिरतइमि जिमिबछरासँगधेनु॥
यद्यपि कामीकुटिलखल समलीजन रघुनाथ।
तद्यपि अहै तुम्हारोइ समुझि न छांड़ो हाथ॥
बड़कृतअंगीकार जेहि प्रतिपालत सजिताहि।
अहिमहिहरबिषदधिअगिनितजतनदुखप्रदआहि॥
बन्दौं खलमल रहितजे रामभक्त गुणखानि।
परदुख सोई सुखजिन्हैं परसुख मोटी हानि॥
हरिजनमणिकी कोठरी आपु सुतारी आहि।
मुयेहुनत्यागत टेकनिज तेहिते छांड्यो नाहि॥
सन्तस्वभावप्रभावलखिसमुझिखलनकै रीति।
तबमैं कीन्ह्यों ग्रन्थ यह हृदयनआन्योभीति॥
करिअरि केरे कुंवर को कहा सकै करि श्वान।
भूकत मारे जाइ हैं यमके भवन निदान॥

सो० बन्दौं सन्त समाज शीशनाय कर जोरि करि।
जहँहरिनामजहाजअमितपतितचढ़िभवतरहिं॥

बन्दौं गुरु पद बारहिं बारा। जासु कृपा छूटत संसारा॥
होत बिमल मतिमान बड़ाई। मिटत बिभेद कपट कुटिलाई॥
मोहिंसमपतितनयहिजगकोऊ। लघुमतिअगुणबपुखलघुसोऊ॥
सतगुरुगुरु मोकहँ गुरुकीन्हा। यथा दगड करबावन लीन्हा॥
करहुं तासु केहिभांति प्रशंसा। जोकृतकागहि पिक बकहंसा॥
मलिन भक्षतजि कपट कुसंगा। लागेउ नाम चुनन सतसंगा॥

दो० काशी बास निवास सुरसरि पदपाथ स्वरूप।
गुरु मूरति पशुपति प्रकट तारक मंत्र अनूप॥

बन्दौं अवध अवध पुर बासी। जे अनन्य सिय राम उपासी॥
बन्दौं सग्यू बिमल तरंगा। पावन करणि करणि अघभंगा॥

करहिं पानजल सुमिरैं नामा । बसैं अवध में जे बसु जामा ॥
ते तनुतजि फिरि जगनहिं आवैं । अस प्रभाव निगमागम गावैं ॥
बन्दौं नृप दशरथ सब रानी । दुलराये जिन सारँग पानी ॥
बन्दौं श्री मिथिलेश सु नयना । अवलोके रघुपति निजअयना ॥
बन्दौं भरथ लषण रिपु आरी । रामानुज सब बिधिसुखकारी ॥

छ० जयतिबातसंजातजयति रबिमण्डल ग्रासक ।
जयतिसन्तसुरसुखद जयतिनिशिचरकुलनाशक ॥
जयतिबिजयमदहरणजयतिसियशोचानिवारण ।
जयतिज्ञानगुणउदधिजयतिसबसंकटटारण ॥
जयतिजासुउरबसतनितरघुकुलमणिशरचापधर ।
सोइ प्रभुसेवक जानिकै करौकृपारघुनाथपर ॥

दो० बन्दौं श्री जानुकीपद पदुम जोरि युगपानि ।
बिधिहरिहरचिन्ततजिन्हैंशक्तिसहितसुखखानि ॥

छ० सारँग से दृगलाल माल सारँग की सोहत ।
सारँगज्योंतनश्याम बदनलखिसारँगमोहत ॥
सारँगसम कटिहाथ माथबिच सारँग राजत ।
सारँग लाये अंगदेखि छबि सारँग लाजत ॥
सारँगभूषण पीतपट सारँग पद सारंग धर ।
रघुनाथदासबन्दनकरतसीतापतिरघुबंशबर ॥

दो० गुणागारगुणरहितहरि गुणनियतागुणपाल ।
गुणनायकगुणनिधनकर गुणदायकगुणजाल ॥
मातृपितृ गामित्र द्विज गुरुहा दुर्वृत कोउ ।
जासुनाम कीर्तन किये शुद्ध होत जग सोउ ॥
अंध बिलोचन पंगु पग लहै मूक बचनासु ।
जासु कृपाते तिमिमहूं कहिहौं गुणगण तासु ॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगर ग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतबन्दनाबर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १

दो० बन्दौं वेद पुराण जे करहिं राम गुण गान ।
जो सुनि प्राणी पावहीं भोग भक्ति निर्बान ॥

बन्दौं राम नाम अबिनाशी । अचल अखण्ड चराचरबासी ॥
सब सुख करण हरण दुखभारी । जपैं जाहिशिव शैलकुमारी ॥
भव निधान कलि मल मथ नारी । पावनहूंको पावन कारी ॥
मुक्ति पंथ बिश्राम स्थाना । कबिसुसन्तके जीवन प्राना ॥
धर्म बिटप बर बीज प्रकाशक । मंगलकरनशोकसबनाशक ॥
मानस रोग अनेक प्रकारा । भेषज नाम बिनाशन हारा ॥
बिपति गहनघन बाण कुठारा । करि अज्ञान मृगेश निहारा ॥
मंत्र राज षट बरण समेता । कहतसकलनिगमागमबेता ॥
परम सरल सुमिरत सुखदाई । लोकानँद परलोक भलाई ॥
जन मन सारँग सारँग हरिसे । जगदधिकूलकलपदलसरिसे ॥
मुक्ति बाम श्रुति सुमन बिहंगा । मुनि मनपक्षउड़तजिनसंगा ॥
कलिमलतम बिधु बल्लभ गंजन । ब्रह्मनयन भ्रमधूम प्रभंजन ॥
करम कोटिकरि दशन कराला । दुर्बासना उड़प करताला ॥
जन्ममरण बिबिक्षुधा पियासा । नाम पियूषअशन बर बासा ॥
ज्ञानबिराग श्रवण जल जाता । कहै रघुनाथ मोर पितु माता ॥

दो० रामनाम बसै जासुउर अखिलमंत्रको बीर्य ।
प्रलयअनल बिषमृत्युते सोनरहोइ उतीर्य ॥

तो० सोइनामसुमिरिसुभाय । कहोंग्रन्थएकबनाय ॥
बिश्रामसागर नाम । सुनि लहैंनर आराम ॥

दो० सम्बत्मुनिबसुनिगमशतरुद्रअधिकमधुमास ।
शुक्लपक्षकबि नौमिदिन कीन्ही कथाप्रकाश ॥
अवधपुरीपरसिद्धजग सकलपुरिनसिरनाम ।
राम घाट के बाट में राम निवास सुधाम ॥
तहां कीन आरम्भ मैं रघुपति आयसु पाय ।
श्री गुरुदेवा दास के पदनिज हृदय बसाय ॥

सतगुणरजगुणतमोगुणत्रयबिधिकेमुनिबाच।
मोक्षदस्वर्गदसुभदहैं धरिहौंसुख प्रदसांच॥
उमा शम्भु सीतारमण जो मोपर अनकूल।
तौ बरणौं सो होइ फुर अन्तमध्य अरु मूल॥
पर उपदेश न लेश बड़ाई। कहौं कथानिज मतिहितगाई॥
जगबन मनकरिदुख दव दहई। हरिगुणसरिपरितबसुखलहई॥
श्रुतिपुराण बहुबिधिसुर बानी। लघुमतिमोरिपरतनहिं जानी॥
भाषा बन्ध करब मैं ताते। समुझि परै अस्माकम जाते॥
बचन बिभेद अर्थ नहिं दूजा। यथा इंदु शशि अर्चन पूजा॥
पुनि बहुमत बहुग्रन्थन माहीं। सब संग्रह बिन जानिनजाहीं॥
तेहिते मैं यक ग्रन्थ मँझारा। धरब बरण कम अर्थ अपारा॥
बात २ पर बर इतिहासा। भक्ति बिबेकसहित नहिंहासा॥
सुनि सन्देह करै जनि कोई। देखै वेद पुराण बिलोई॥
सब करसार अंशमत लीन्हा। मैं बिश्राम सु सागर कीन्हा॥
आदिअन्तदोउजानि किनारा। राम सुयश पय पावन भारा॥

दो० अद्भुत हास शिंगार भव बीर बिभत्स बिषाद।
रुद्र सुरुचि सम शान्तये यामें नवरस स्वाद॥

संशय भँवर करन सत संगा। अर्थ गहिर अध्याय तरंगा॥
कमल कबित्त सोरठा दोहा। भक्ति सुबाससन्त अलि मोहा॥
छन्दै बिबिधि भांतिकी मीना। सीप सकल चौपाई दीना॥
राम नाम मुक्ताहल भाई। जासु आब त्रिभुवन महँछाई॥
सुजन माल चुगत हरषाहीं। दुष्ट काग बककी गतिनाहीं॥
नानाबिधि इतिहास पुरानी। सोइ यहिबीच रत्नकी खानी॥
मनगिरि बासुकिसुरति लगावै। यहि बिधि मथैसोइ जनपावै॥
क्षमा शील संतोष बिचारा। मोह शयन भक्षक धरिआरा॥

दो० उक्ति युक्ति औरेबधुनि अर्थ भावना केर।
चोज प्रास अन्वै जमक जलचर अपर घनेर॥

बसत तहां श्रीयुत भगवाना। यामें राम सिया करथाना॥
जो चाहै प्रभु दरशन भाई। तासु युक्ति इमि आगम गाई॥
प्रथमें श्रद्धा सम्मल बांधै। दूसर साधु संग शुभ साधै॥
तीसर भजन क्रिया सोइ चलई। तुर्यअनर्थ बिरति बनलहई॥
पंचम निष्ठा रुचि उपजावै। षष्ठसुजान ध्यान चितलावै॥
सप्तम नामाश्रिक ह्वै जावै। जपतजीव त्रयताप नशावै॥
अष्टम भाव हरै दुख नाना। नवम प्रेम पै करि अस्नाना॥
दशम दरश रघुपति के पावै। जीवव्याधि सबतुरत नशावै॥
निज स्वरूप सुख लहैहजूरी। यहि उपायबिन दरशन दूरी॥
राम कृपा बिन श्रमै उपाई। पावै जिमि द्विजसुत समुदाई॥
ग्रन्थ अनेक नदी नद नारा। बहि आये शुचि जासु मँझारा॥
गी०छं०षटशास्त्र वेदपुराणमत बिश्राम याहीमें लह्यो।
यहि अर्थते बिश्रामसागर नाममें याकोकह्यो॥
जेसुनहिंसमुझहिंप्रीतिकरिहरिचरणमेंचितलाइहैं।
रघुनाथतेगोपद सरिस संसारयहतरिजाइहैं॥
दो० कलपद्रुम सम ग्रन्थ यह सर्बसुफल दातार।
धर्म मोक्ष कामार्थ हरि भक्ति बिराग बिचार॥
बुद्धिन ज्ञान बिबेक कछु बढ़ैन हरिपद प्रीति।
तिन्हैं न प्रीतम लागयहु बिश्रामोदधि रीति॥
बिबिधि ग्रन्थ देखे सुने जिनके कपट न शोच।
ते प्रमुदित ह्वै बरणि हैं पद पद प्रति श्लोक॥
पैहैं सुख सम्पति यश पावन। ह्वै हैं हरिहरिजन मनभावन॥
कल्पित ग्रन्थ कहै जो कोऊ। याचौं ताहि जोरि कर दोऊ॥
यह मम कृत तुव बारक बारा। देखिजाउशुचिसहितबिचारा॥
जो ममर्मति कल्पित कछुहोई। तौ मिलि दोष देहु सबकोई॥
आगे मुनिन कथन जो कीन्हा। सोई मैं भाषा करि दीन्हा॥
बहु ग्रन्थन मा रहै जो बाता। सो एकै मा धरी सोहाता॥

तहँ कोइ कहै कहा है भाषा। तेहिते मैं ब्रबीत बिन माख ॥
सुर नर पशु पक्षी जो होई। निजबाणी समुझत सबकोई ॥
रहैं बिबिहु कोबिद गिरिराया। गरुड़ै बायस पास पठाया ॥
आपु धर्‌यो पुनि हंस शरीरा। जब गुण सुने भुशुण्डीतीरा ॥
अजहूं जे सुर बाणी कहईं। प्राकृतकरि समुझावतअहईं ॥
तब सब हरषैं प्रीति बढ़ावैं। नाहितकोइ निकटनहिं आवैं ॥
तेहिते जौनि जहां की बानी। सोई ताहि तहां सुखदानी ॥
लेन देन बिधि जो कछु करई। देश वाक्य ते कारज सरई ॥

दो० जेहिते निजकारज सरैं ताको निंदै नीच।
यथा कोलपय पानकरि पुनि करिडारतकीच ॥
जो भाषा मानत नहीं तो भाषा मति गाय।
जोबोलैतौस्वानसम उगिलिअशनफिरिखाय ॥
अब गुरुपद रजआंजिदृग राम चरणशिरनाय।
चली कथाजेहि भांतिजहँसोसब कहौंबुझाय ॥

षटऋतुमाहिंशिशिरऋतुजानो। फाल्गुन शुक्ल पक्ष पहिचानो ॥
नैमिष क्षेत्र अटन तब होई। पक्ष एक निवसैं सब कोई ॥
प्रथम चक्र तीरथ जल पावै। पुनि सब पंच प्रागचलिजावैं ॥
यहि बिधि ब्रह्म सरादिन हाई। धेनुमतिहि आवै ऋषिराई ॥
तेहि तट व्यासदेव कर थाना। ऋषि शौनक तहँ रहैंसुजाना ॥
बहुरि सूत आये तेहि ठामा। लखिशौनकऋषियोदण्डप्रणामा ॥
चरण धोइ आसन बैठारी। धूप दीप आरती उतारी ॥
बोले बचन सुचित करि गाढ़े। हाथ जोरि सन्मुख भे ठाढ़े ॥
नाथ बात कछु पूंछा चहऊँ। आयसु होय बचन तब कहऊँ ॥

दो० अतिशय प्रीति बिलोकि तब कहा सूत हरषाय।
मुनि मन जनि शंका करौ पूंछो जो जिय आय ॥

बोले ऋषि सुनिये महिदेवा। तुम जानततिहुं कालकभेवा ॥
वेदरु शास्त्र सकल तव देखा। नित्यानित्यक कोन्हों लेखा ॥

तुम दयाल दीनन सुखदाई । तुमतजि कहां पूंछिये जाई ॥
प्रथम कहौ गुरु महिमा गाई । नाम महातम बहुरि सुनाई ॥
कर्माकर्म्म धर्म आधर्म्मा । ज्ञान बिराग भक्तिको मर्मा ॥
दुखसुख स्वर्ग नरकसब भांती । कौन कर्म करि केहिमाजाती ॥
माया ब्रह्म जीव जग जाना । हरिहरिजनगुन करौबखाना ॥
ब्रह्म अनादि धर्‌यो बपु आई । कीन्ह चरितकस कहौबुझाई ॥
चारि खानि जग जीव अपारा । उत्पति पालन अरु संहारा ॥

दो० योग यज्ञ ब्रतदान तप बरणाश्रम कर भेउ ।
भिन्न भिन्न भाषौ सकल रहे रहाये तेउ ॥
शास्त्र बिनानहिं ज्ञान भव ज्ञान बिना नहिंभक्ति ।
भक्ति बिना नहिं सत्य सुख ताते सुनिय सुशक्ति ॥

कुं० शीशभार श्रुतिसर्प बिल ग्रह मलमगसम लयन ।
कर सबकरपग अफल तरु मोर पक्षशशिनयन ॥
मोर पक्ष शशि नयन प्राण बिन बिग्रह अहई ।
नवै न गुरुजन चरण राम गुण सुनै न कहई ॥
करै न जो हरि कर्म हित अटै न तीर्थ मुनीश ।
दारु योषिता सरिस सो धावत नावत शीश ॥

दो० हरि बिषयक जो होइ जन ताहि उचित है येह ।
महा मनोहर हरि चरित सुनै सदा करि नेह ॥

सुनि मुनिबचन सूतसुख पावा । वेद ब्यास पद शीश नवावा ॥
क्षण यक हरिकर ध्यानलगाई । पुनिमृदु बचन कहे हर्षाई ॥
भेद तुम्हार हवै सब जाना । पूछेउ जिमि मूरुख अज्ञाना ॥
सो मैं अब तुम्हार मत जाना । कीन्हचहत सबकर कल्याना ॥
धन्य धन्य तुममुनि बड़ भागी । पूंछ्यो राम कथा अनुरागी ॥
राम कथा शुभ चिंतामणिसी । दायक सकल पदारथजनसी ॥
मोह महातम बसि करणीसी । अहंकार करि हरि घरणीसी ॥
अभिमत फल प्रददेव धेनु सी । स्वच्छकरनगुरु चरणरेणुसी ॥

कलिमल भेकबिपुलसरपीसी । क्रोध महिष दुर्गेदर पीसी ॥
सुजन समाजउड़प रजनीसी । साधुपोत पालन जननीसी ॥
ब्रह्म लखन हित दृग पुतरीसी । मनमृग बन्धन हितसुतरीसी ॥
लालच लोभ लवाबहरीसी । सदगुणसकलचनकडहरीसी ॥
दुर्बासना समूह सलभ सी । दीपशिखासमदहन कलभसी ॥
हरिभयहरणि बिभावसुता सी । दुखद अविद्या तूलहुता सी ॥
धर्म कर्मबर बीज रसासी । सुमतिबढ़ावन सुखसुदशासी ॥
ज्ञान भाव भवसुरा बतीसी । कबिकोबिदहितअजयुवतीसी ॥
काम भुवंग बिषय लहरीसी । मणि मयूर पाटन गहरीसी ॥
भर्म बलाहक जगत प्रानसी । ज्ञान खड्गखर धरन सानसी ॥
भवस्वर श्वानकमलबहनीसी । विरतिबिचार कहनिरहनीसी ॥
दालिद दुख मूषक मिनकीसी । रघुपतिध्यानकरनपिनकीसी ॥
सर्ब भूत पादप मधु ऋतुसी । कलिमलभंजन हेतुमृत्युसी ॥
बिरतिविवेकनृपति मोहनीसी । सद संतोष क्षीर दोहनी सी ॥
शोक शुक्र भव भीम गुसासी । पितरतरणहरिभक्तिसुपासी ॥
प्रभु पद प्रीति बढ़ावनि ऐसी । अनुदिन लाभ लोभकहँजैसी ॥
रामहिंप्रियजिमिकाककजासी । भक्ति मुक्ति प्रदमंगल राशी ॥

दो० मंगल बकता के भवन मंगल श्रोता धाम ।
मंगल लेखक के करन मंगलहो तेहिंठाम ॥

इति श्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतबन्दनाबर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

दो० भगवत चरित पियूषबर नित सेवै जो कोइ ।
अन्तकाल के समयमें तेहि उदबेग न होइ ॥

अस हरि कथा कहौंसुखदाता । सुनोप्रथम गुरुमहिमाताता ॥
गुरु ब्रह्मा गुरु बिष्णु पुरारी । गुरुपरब्रह्म दीन दुखहारी ॥
गुरु शरणागत जो कोइ आवै । बहुरि न सो चौरासी जावै ॥

गुरु कृपाल अगणितगतदाता। गुरू कृपा छूटै यम नाता॥
महा अधम पापी नर होई। गुरु शरणागत आवै सोई॥
फिरि ते नरक परैं नहिं प्रानी। जो गुरु बचन लेइं फुरमानी॥
कहौं एक इतिहास पुरानी। मनु लगायसुनुमुनिवरज्ञानी॥
सो० रहा बधिक यक नीच करै ठगाही बनबिषे।
नाम तासु मारीच अतिनिर्दय कपटीकुटिल॥
तेहि एकदिनमनकीन्हबिचारा। मो सम पतितनकोउ संसारा॥
जबते धर्‌यों देह जग आई। पाप करत सब उमिरि बिताई॥
इन अपराध कौनि गति होई। यहिबिधिविपिनिशोचकरसोई॥
तेहि अवसर गौतम ऋषि आये। जातरहैं कछु सहज सुभाये॥
मुनिहि बिलोकितुरत उठिधावा। चरणनायशिरबचन सुनावा॥
मैंपापी ठग कुटिल चवाई। तुम दयालपतितनगतिदाई॥
तेहिते प्रभू कृपा अब कीजै। मोहिं आपनोशिष्यकरि लीजै॥
कहमुनि तोहिं शिष्य जो करहूँ। अर्द्ध पाप अपने सिर धरहूँ॥
दो० सुनु ठग पद्म पुराण में देखी सब निरताय।
पापपुण्य जेहिबिधि बटै सो त्वहिकहौं बुझाय॥
एक तपसी बिषयी एक होऊ। भोजन करैं एक महँ दोऊ॥
भली बुरी सङ्गति होइ जाई। पाप पुण्य आधा बटि जाई॥
छुवै सराहै औ बतलावै। दशवाँ अंश तहाँ बटि जावै॥
दर्शन ध्यान बचन सुनु जाका। सतवाँ अंश पाप पुनि ताका॥
जप तप दान धर्म एक करई। एक सेवा वाकी अनुसरई॥
दशौं अंश फल सोऊ पावै। पाप पुण्य जोई होइ आवै॥
करज काढ़ि पुनि पाप जो करई। तीन भागफल धनदहि परई॥
चोरी करि धर्म करै जो कोई। पाप पुण्य तेहि कछू न होई॥
जो कोउ काहू पेरि करावै। पुण्य पाप षट अंश सो पावै॥
प्रजा जो धर्म्माधर्म कमाई। छठा अंश राजा ढिग जाई॥
होम पाठ सन्ध्या अस्नाना। जाप करत वा पूजा ठाना॥

बात करै अथवा कुइ लेई। छठा अंश निज पुण्यहि देई॥
आनके करनिज धर्म करावै। छठा अंश फल सोऊ पावै॥
दो० पिता पुत्र नारी पुरुष गुरू शिष्य यहि भाय।
पाप पुण्य जो कछु करै अर्द्ध अर्द्ध बटि जाय॥
असबिचारिशिषिकरौं न तोहीं। बाट न रोंकु जानदे मोहीं॥
बोला बधिक जान नहिं देहौं। जबलगिगुरुनतुम्हैं करिलेहौं॥
सुनिमुनि हृदयविचारहिआना। यहहै खल नहिं देहै जाना॥
सहस नेह चह निज भल भाई। परी पूर पथ देहु बताई॥
कह ऋषि गुरु दक्षिणादे मोहीं। तबतो शिष्य करौं मैं तोहीं॥
बोला का दीजै सो कहऊ। मम ढिग होइ लेव जो चहऊ॥
अब जनिपाप किहेउ कछु भाई। राम नाम सो सुमिरहु जाई॥
परम जाप तारक ब्रह्म सङ्गी। ब्रह्म हत्यादि पापहरै जङ्गी॥
असकहिऋषिचलिभे जिउपाई। बधिक नाममें प्रीति लगाई॥
तहि भांतिन कछुकालबितावा। मरणकालकादिनुजब आवा॥
ताहि लेन यम दूत सिधाये। पाछेते हरिगण चलि आये॥
शीश मुकुट मणि कुण्डल काना। पीत बसन तन भूषण नाना॥
भुज बिशाल अनुपम कर लाजै। हरिदर चक्र कौमुदी राजै॥
गणन देखि यमदूत डेराने। बोले बचन कपट कुल साने॥
बड़ी भाग्य हम दरशन पाये। आजु कहाँ यहि तीरसिधाये॥
दो० कहागणन दूतौसुनोबधिक भक्तयहि ग्राम।
तेहि आनै आयन इहाँ लैजैबे हरि धाम॥
सुनत बचन किंकर यमकेरे। बोले निज २ नैन तरेरे॥
बधिक नीच पापी अन्याई। जीव हतेसिनहिं जायँगनाई॥
बनके बनयहि कीन्हेसि नाशा। तेहि तुम कहत रामकरदासा॥
कहगणजबते गुरुयहि कीन्हा। राम नाममें मनचित दीन्हा॥
किहिसि न तबते कछु अपराधू। यहिसम और कौनहे साधू॥
अस कहि लीन विमान चढ़ाई। हरि पुरको चलिभे हरषाई॥

गी०छं० चलिभेबिमानचढ़ाइ हरिपुरताहि राख्योजायकै ।
अतिदेखिगुरुपरतापयमके दूतगयखिसियायकै ॥
असमुझिनरगुरुशरणहवैहरिभजनजिननाहींकियो ।
तिनपायनरतनआइजगकरिहानिनरकहि चलिदियो ॥

दो० गुरु शरणा गत आइकै जो सुमिरै सिय राम ।
इहाँ रहै आनंदमें अन्त बसै हरि धाम ॥
ब्रह्मा बिष्णु महेशते जो अधिकी ह्वै जाय ।
गुरुबिनभवनिधिनातरै कहतनिगम असगाय ॥

यामें कछु संदेह न पैली । आदिहिते सब गुरुकरि ऐली ॥
ब्रह्मके शिष्य प्रकृतिही जानो । प्रकृति शिष्यमहँतत्वपिछानो ॥
महत्तत्वशिषि प्रणव जोकहिये । ओंकारते बिष्णुहि लहिये ॥
बिष्णु किशिष्य लक्षमी भयऊ । तिनकेबिधिबिधिकेशिवकहेऊ॥
रामचन्द्र अवतार जो लीन्हा । बिश्वा मित्र गुरू तिनकीन्हा ॥
व्यास पुत्र शुकदेव सुभाये । जन्म लेतही बिपिनिसिधाये ॥
तिन्ह गुरु कीन्हों जनकै जाई । तब हिरदय महँ निष्ठाआई ॥
ब्रह्म पुत्र नारद मुनि जेऊ । मनु भगवान केरि सुनि लेऊ ॥
दीक्षा हीन जाइं हरि तीरा । दरशन हेत सदा मुनि धीरा ॥
कछुककालरहि जबफिरि आवैं । जब बैठैं सो ठाउं धोवावैं ॥
एक बार नारद लखि लयेऊ । रमा नाथते पूंछत भयऊ ॥

दो० बोले हरि नारद सुनो तुम गुरु अबै न कीन ।
सोबिचार एती जगह नित्य पाक करि लीन ॥

दीक्षा हीन जहां चलि जावै । सो जागह अशुद्ध ह्वै जावै ॥
गुरु मुख चरण परै जब आई । तब सोइ धरा शुद्ध होइजाई ॥
कह नारद सुनिये सुर राया । प्रथमें तुम मोहिंकतनबताया ॥
कहप्रभु तुम अतिशयप्रियमोरे । कह्योन सुनि होई दुखतोरे ॥
तेहिते प्रभु गुरु कीजै जाई । काहि करौं अब देहु बताई ॥
जो प्रथमें मिलि जाय सकारे । ताहि गुरू तुम कीन्ह्यो प्यारे ॥

भोर भये निकसे मुनि जबहीं । धीमरि देह धरी हरि तबहीं ॥
मुनि आगे ह्वै निकसे आई । नारद देखि परे पग धाई ॥
तेहि गुरु करि हरिकेढिगआये । देखत प्रभु निज हृदयलगाये ॥
दो० कह गुरु कीन्हों कौनपै सुनि बोले हरि राउ ।
गुरुमें पै जो तुम कही चौरासी कहँ जाउ ॥
सुनि नारद निज गुरु पहँआये । समाचार सब कहि समुझाये ॥
गुरु दयाल बोले तुम जावो । हरिते चौरासी लिखवावो ॥
लिखिजबहोहिं लोटितबजायो । हाथ जोरियुग बचन सुनानो ॥
सुनि नारद आये प्रभु पाहीं । चौरासी जानत मैं नाहीं ॥
सो लिखि मोहिं देहु समुझाई । ताहि देखि भुगतौं मैं जाई ॥
कह हरि नौलख जलचरजाती । सब योनिन भरमैं बहुभांती ॥
दश लख पक्षी को बिस्तारा । उड़त रहैं भयको उरधारा ॥
ग्यारह लाख जात कृमि कीटा । बीसलाख बन बिटपजोदीटा ॥
तीस लाख पशु योनिहि जानो । चारि लाखमानुष्य पिछानो ॥
यह चौरासी योनि कहावै । सब भुगते बिन अंत न पावै ॥
ह०छं० सुनिगये नारद लोटि तामें देखिप्रभु बोलतभयो ।
केहि दीनमतयहतुम्हैं कहऋषिआजुगुरुमोकोदयो ॥
तेहि कहत पै जिन एक क्षणमें मेटि चौरासी दई ॥
अस औरनाहिं कृपाल दीन दयाल गुरुसमजगहई ॥
दो० गुरु गोबिन्द ते अधिकहै यह प्रतीत मनलाइ ।
गोबिन्द डारैं नरक जो तौ गुरु लेइं बचाइ ॥
तम गुकार रू तासु हर गुरु सोइ करै प्रकाश ।
बरणो धर्मरु शास्त्रको यह मैं बर इतिहास ॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासरा
मसनेहीकृतमारीचनारदकथाबर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

दो० बन्दि राम सियसंत गुरु गणप गिरा सुखखानि ।

बरणौं धर्मरु शास्त्रको पुनि इतिहास बखानि ॥
कही सूत गुरु महिमा गाई। सुनि शौनक बोले हरषाई ॥
नाथमोहिं निजकिङ्कर जानो। गुरु प्रभाव कछु औरबखानो ॥
कहासूत गुरु बिन कछु करई। ताको काज एक नहिं सरई ॥
गुरु बिनु मुक्ति पंथ नहिं पावै। गुरु बिन नर चौरासी जावै ॥
गुरुबिन ज्ञानभक्ति नहिं जानै। गुरुबिनआतमनहिं पहिंचानै ॥
दो० बिनगुरु दीक्षा अफल सब जप तप होमक्रियादि।
ज्यों पाहन में बीज बइ उपजै ना फल बादि ॥
तेहि पर इक इतिहासबखानो। सुन्दर ताहि पुरातम जानो ॥
अवध उत्तरै योजन चारी। रहैनगर एकअति सुखकारी ॥
तामें कृष्णदत्त द्विज रहई। सुन्दरिनाम तासु त्रियअहई ॥
करै दान दिन प्रति अधिकाई। द्वारे अतिथिबिमुख नहिंजाई ॥
हीरा हेम पदारथ नाना। देहिँ विप्र कहँ वेद बिधाना ॥
अशन बसन गजबाजि मिठाई। शय्यादान करै मन लाई ॥
दो० एक दिवस द्विज बर सोई गयो रहै कहुँग्राम।
नाम सुन्दरी तासु त्रिय रही आपने धाम ॥
तेहिदिन तेहिपुर नारद आये। करबीना शिर तिलक लगाये ॥
राम चरित गावत हरषाई। तेहि द्वारे ह्वै निकसे जाई ॥
ऋषिहिदेखिसुन्दरिउठिधाई। करि बहु बिनय भवन लैआई ॥
उच्चासन तापर बैठारे। हेमथार लै चरण पखारे ॥
कछु चरणोदक कीन्हो पाना। कछुछिरक्यो सिगरे अस्थाना ॥
धूप दीप आरती उतारी। बड़ी भाग्य भै आजु हमारी ॥
सुनि आज्ञा लै पाक बनाई। कह्योस्वामि चलि भोगलगाई ॥
तबनारदउठि भोजनकीन्हा। अँचै बहुरि आसन पगदीन्हा ॥
सुन्दरिबात करन तबलागी। लखि नारद बोले अनुरागी ॥
धन्यतुम्हार मातपितुचीन्हा। जिनकी कोखि जन्मतुमलीन्हा ॥
नरतनपाय सुफलतवभयऊ। जो मनजन सेवा मह दयऊ ॥

धन्य तुम्हार गुरू सुखदाई। साधु सेव जिन तुम्हैं दृढ़ाई॥
सो० सुनि बोली द्विजनारि मेरेतौ गुरु हैं नहीं।
अपनेहृदयबिचारि देहुअशन लखिक्षुधितकहँ॥
सुनिअसवचन देव ऋषितासू। डारे अशन बान्त करि आँशू॥
लखि सुन्दरि डरिबोलेलीन्हा। केहिअपराध बमनप्रभुकीन्हा॥
कहमुनि होइ वैष्णव जोजन। करै अवैष्णव के गृह भोजन॥
पावै तहां जलहु बिन जानै। ताको यह प्राचित्त बखानै॥
चन्द्रायण ब्रत ठानै सोई। तेहि अघते तब पावन होई॥
इष्टा पूर्ति पुण्य सब वाके। किये अमिथ्या निष्फल ताके॥
तेहिते अधिकपाप तेहिपरई। निगुरा छुआ जो भोजनकरई॥
यहिते नष्ट कर्म्म नहिँआना। भ्रष्ट बुद्धि करि देत अयाना॥
दो० ताते सुन्दरि तव छुवा भोजन कीन अजान।
कियो बान्त यहि कारण नष्टभयो ममज्ञान॥
सुनिसुन्दरि मन कीनबिचारा। कत मैं कीन्ह धर्म अधिकारा॥
कतमैं बिबिध दानब्रत किह्यऊँ। कतमैं तीर्थाटन मन दिह्यऊँ॥
कत मैं सुबरण सींग मढ़ाई। दई गऊ बिप्रन समुदाई॥
गुरु बिन धर्म करै जो कोई। मैंनहिं जान्यो निष्फल होई॥
तेहिते मुनि अबदाया कीजै। राम मंत्र मोका प्रभु दीजै॥
अबजनिदेर लगावहु स्वामी। देखि प्रीति बोले ऋषि नामी॥
प्रथम जाइ कीजै अस्नाना। सुन्दरि कहा बचन परमाना॥
जब हरिशरण जीवयहजाई। यमगण ग्रसैं कुटुम्बिन आई॥
सुत पितु मातु कहैं अस बैना। भक्ति न छाजै हमरे ऐना॥
कोऊकहैअबहिंजगतसुखकीजै। वृद्धभये परिहरि भजिलीजै॥
सुनि मतिभ्रम जेरहे चुपाई। लीन्ह्यों काल अचानक खाई॥
मृतक जानि सुतपुत्री नारी। रोवहिं स्वारथ हेतु पुकारी॥
तासु सोच कोउ नेक न करई। हरिहिबिमुखधौंकसदुखपरई॥
तेहिते मैं नहिं जाब नहाई। सुनिनर नारि देहिं भरमाई॥

राम चरण पंकज चित दीना। जेहिते होत पापसब छीना॥
सुनत बचनमुनिअतिसुखपावा। तुलसी माल कंठ पहिरावा॥
दो० बिप्र बयस नृप शूद्रवा होइ अपति पति बाम।
हरि ब्रत धारै उचित तेहि है तुलसी को दाम॥
बिधि हरिहर कहसाखिकरि राममंत्रतबदीन्ह।
बैष्णव धर्म सिखाइ कै गवन पितापुर कीन्ह॥
तेहिक्षण मिलैतासुपति आवा। लखिसक्रोधअसबचनसुनावा॥
केहिके कहे लीन्हतैं माला। जानिपरा पहुंचा तव काला॥
अबते तोरु चहसि जो प्राना। नाहित कटिहौं शीश कृपाना॥
सुनि सुन्दरि बोली करजोरी। सुनहुं प्रान पति टेक जो मोरी॥
चहु तन टूक टूक करि डारौ। भावै अनल माहिं धरि जारो॥
धरती खोदि तोपि बरु देहू। तजौं न रामहिं प्रणमम येहू॥
जिन प्रथमैं करि पाछे छाड़ा। तिन्है जानि एस्वाँगी भाड़ा॥
दो० असअबलाकेबचनसुनि गुणिद्विजरह्योचुपाय।
काढ़ि देउं तौ जग हँसै मारे हत्या आय॥
तेहि दिनते असनेम सो धरई। पतिका छुवा न भोजन करई॥
सहित प्रीतिते अशन बनावै। परसि दूरिते ताहि पवावै॥
यहि बिधिदिनप्रतिपावै खाना। देखि बिप्र मन भई गिलाना॥
जोहमारि जूठनि नित खाई। सो अब दूरिते देत बहाई॥
अबकी ऋषि आवैं ममधामा। मोहूं गुरुकरि सुमिरौं रामा॥
यहिबिधिद्विजमनकरतबिचारा। कृपा कीन्ह नारद पगुधारा॥
गुरुहि देखि सुंदरि हरषानी। शीशनाय बोली मृदुबानी॥
सुफल जन्मभा आजु हमारा। जोनिकेत रौरे पगुधारा॥
सुन्दर आसन पर बैठावा। चरण धोइ चरणोदक पावा॥
बहुरि पाँच पैकरमा कीन्हा। दर्बि भेंटलै आगे दीन्हा॥
दो० गुरू बैद्य अरु ज्योतिषी देवमित्र बड़राज।
इन्हैं भेंटबिन जो मिलै होइ न पूरण काज॥

आज्ञा मांगि कीन्ह जिवनारा। षटरस व्यंजन बिबिध प्रकारा॥
सुवरणथार परसि धरि दीन्हा। हरिहिअर्पिमुनिभोजनकीन्हा॥
अचमन करि आसनजब आये। द्विज सुन्दरिते बचन सुनाये॥
गुरु दिक्षा मोहि देहु देवाई। जातेतव संगति होइ जाई॥
सुंदरि आइ कही गुरु पासा। इनहुन का कीजै हरिदासा॥
बिप्रहु तब बोला कर जोरी। पुरवौ प्रभु अभिलाषा मोरी॥
दिक्षा लिहे सरी मम काजू। ताते बिनै कीन्ह मैं आजू॥
कह नारद द्विज आउ नहाई। तब तुमका हरिनाम सुनाई॥
सुनि मुनि बचन बिप्र हरषाना। पुरतट सरितहँ चल्योनहाना॥
मग एक पंडितते भै भेंटा। ठाढ़कीन्ह तेहिं गहिकर फेंटा॥
पूंछा कृष्ण दत्ततुम आजू। हरबर चलत कौन बड़काजू॥
कृष्णदत्त पंडितते भाषा। गुरु दिक्षाकी है अभिलाषा॥

दो० तब पंडित बोले बचन कृष्ण दत्त सुनिलेहु।
यह मृत्यु पक्ष कुंवार है गुरु दिक्षा जनि लेहु॥

यामें पिण्ड दान भल चीन्हा। दीक्षा मंत्रन चाहिय लीन्हा॥
कार्तिक शुक्ल पक्ष शुभ मासा। तबतुम होयहु हरिके दासा॥
सुनत बचन द्विजमन भ्रम छावा। तुरत पलटि नारदपहँ आवा॥
कह प्रभु क्वार जान अब दीजै। कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा कीजै॥
यह सुनिनारद गेबिधि पासा। बिप्र रहे कार्तिक की आसा॥
ताकी अवधि न पहुंचन पाई। बीचन दुहुनकाल लियोखाई॥

दो० पल पहार की खबरि नहिँ धौया में काहोय।
आगे की आशा करत काल हँसै मुख मोय॥
अस बिचारि जे चतुर नर करत न लावैंबार।
नहिँ जानी केहि घरी में काल करै संहार॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदा
सरामसनेहीकृतकृष्णदत्तकथाबर्णनो
नामचतुर्थोऽध्यायः ४॥

कह शौनक मुनिकहौ बखानी। तनुतजि कहां गये द्वौ प्रानी॥
कहा सूत सुंदरि द्विज नारी। चढ़िबिमान हरिलोकपधारी॥
बिप्र गयो यमके दरबारा। पाप पुण्य का भयो बिचारा॥
यमते चित्र गोपित्र बखाना। इन बहु कीन्ह पुण्य अरुदाना॥
जबते जाय देह इन धारी। उभय पाप कीन्हे अति भारी॥
कह यम कौन पाप सो कहिये। तेहिअनुसार दण्डयहचहिये॥
एक बार इन यज्ञ जो कीन्हा। सबबिप्रनकहँ न्यौता दीन्हा॥
तहां एक हरि जन चलि आवा। कृष्णदत्त ते बचन सुनावा॥
हमहैं क्षुधावंत द्विज राई। कछु भोजन मोहिं देहु मँगाई॥
अससुनिबिप्र क्रोधकियो भारी। अनुचितबचन कहेउदुइचारी॥
सुनि कटुबचन गयो उठिसाधू। तेहि ते यहि परभा अपराधू॥
हरि जन जासु यज्ञ महँ आवैं। मिलैनअशन क्षुधित फिरिजावैं॥
ताकी पुण्य सकल घटि जाई। बहुरि पाप होवै अधिकाई॥
दूसर जब सुंदरि गुरु कीन्हा। तेहिलखिइनअति डाटैलीन्हा॥
ताते पुण्य छिन्न भै याकी। थोरी एक रही है बाकी॥
सो० सुनि बोले यमराज याहि देहु गज देह अब।
निजफल भोगी जाहि आप कहूंनृप केभवन॥
अस कहिधर्मबिपिनिजनभावा। कृष्णदत्त गजका तनु पावा॥
कछुकदिवस बनमाहिंबितायो। पुनि नृप चन्द्रसेन गृहआयो॥
चन्द्रसेन कुरुक्षेत्र के राजा। जिनके सदा धर्म कर साजा॥
यहसब चरित देखि द्विजनारी। मनमा शोच करै अति भारी॥
मम पति सो वारण तनु पावा। मोह बिवस मन खेद बढ़ावा॥
बरलै पुनि मृत लोकहि ऐली। जहँ आशा तहँ बासा पैली॥
जाके घर गज तानृप केरी। भई सुता अति रूप घनेरी॥
दो० दानदिहिसि अरुकिहिसिगुरु भैकन्यानृपकेरि।
राजा को करि द्विज भयो दूनो जात सुमेरि॥
कन्या जब कछु भई सयानी। गईद्विरद पहँ निज पतिजानी॥

इन देखा यह है मम नारी। भई महीपति केरि कुमारी॥
असबिचारि दोउ प्रीति बढ़ाई। दिनदिन होत जात अधिकाई॥
एक दिवस नृप हृदय बिचारी। ब्याहयोग्य भई सुता हमारी॥
बिप्र बोलि शुभ घरी सोधाई। यज्ञ स्वयम्बर केरिबनाई॥
सुनि सेंदुरि निराशन त्याग्यो। करिबिचार मन शोचनलाग्यो॥
लखि राजा बर वैद्य बोलावा। तबहुन कुम्भी दाना खावा॥
यहिबिधि बीति बारबहु गयऊ। तबतो नृपके अति दुखभयऊ॥
कह कन्या पितु ते अस जाई। गजहि अशन मैं देहुँ कराई॥
बोले भूप जाहु किन अबहीं। मरि जाई तब जैहौ कबहीं॥
पिता बचन सुनिगै पति पासा। बोली तुम कत रहत उदासा॥
बहुदिन ते भोजन नहिं खायो। सो कारण मोहिं नाहिं बतायो॥

दो० कह गयन्द चाहत करन नृपति तुम्हार बिवाह।
सो बिचार अब होत है हृदय हमारे दाह॥

जब ते यहां जन्म तव भयऊ। कबहुन सङ्गबिछुरि ममगयऊ॥
अस बिचारि दुख होत हैमोहीं। ब्याही आन पुरुष अब तोहीं॥
ताते मैं नहिं दाना खाहूं। बारहिं बार मनहिं पछिताहूं॥
सुनि कन्या बोली मृदुबानी। शोच किहे दुखहै अरुहानी॥
हम जो कहा नर तनके माहीं। भजहु रामफिरि औसरनाहीं॥
तब कार्तिक की आस लगायो। अब वारण की देहीं पायो॥

दो० तब कार्तिक की आस करि बिसर्योसिरजनहार।
अब चौराशी योनि में आय परेउ भर्तार॥
ताते पुनि मैं कहत हौं दुख तजि भोजन खाहु॥
तुम्हैं छाँड़िहौं ना करब आन पुरुष सँगब्याहु।

सो० सुनि गजभोजनकीन लखिनृपबोल्यो कुंवरिते॥
कौन मंत्र तुमदीन जो सुनि खायो तुरतही।

प०छं० कह कन्या वोहि जन्म केर गजअहेमोर पति।
मैहौं याकी नारि बिप्र घर जन्म रहै सति॥

हौंगुरुकरिहरिभज्यौं भइउं तेहिसुता आइतव।
इनदीन्हों बहुदान भक्तिबिन बारण बपुभव॥
सज्यो स्वयम्बरसाजसुनिकरिभोजन तजदीन तेहि।
बचन दीन मैं जाइ जब तब फिरि भोजन कीन्ह यहि॥
सुनि अस बचन भूप हरषाना। कन्या बचन साँच नहिं माना॥
लागे करन स्वयम्बर साजा। आये देश देश के राजा॥
रानी तब कन्यहि अन्हवावा। कीन्ह्यों तन शृंगार सोहावा॥
सहित सनेह गोद बैठाई। बोली मधुर बचन सुख दाई॥
रंग भूमि आये बहु भूपा। देश देश के सुभग स्वरूपा॥
जोतव मन भावै महिपाला। मेल्यो तासु गरे जयमाला॥
अस कहि हारदीन्ह तेहिहाथा। पठई एक सहेली साथा॥
भूषण दिशि नहिं दृष्टि उठाई। चली कुवरि कुंजर पहँ आई॥
पद्मी उरमेल्यो जै माला। चकित भये सब देखि भुवाला॥
सबहिन कहीबयसलघु जानी। चौंधि गई कन्या फिरि ठानी॥
सखी सदन लाई जहँ रानी। मातु ताहिलखिबहुतरिसानी॥
दई सबै मति हरी तुम्हारी। नृपतजि माल ब्याल उरडारी॥
दीन चहै बिधि दुखजब जेही। ताकी मति पहिले हरिलेही॥
असकहिपुनिदीन्ह्योंकरमालहि। अबते पहिरावहु नर पालहि॥
गई कुंवरि पुनिकरि उरडारी। देखि भूप सब चले सिधारी॥
तब राजा अतिशय दुख पावा। असिलै कन्यै मारण धावा॥
श्रुति धारी जेबिप्र प्रवीना। छोरि कृपान नृपतिते लीन्हा॥
अल्प वयस यह अहै कुमारी। है अज्ञान न चाहिय मारी॥

सो० गौररहँटद्विज चौरसुता नारिविभिचारणी।
यती भृष्टजन और तदपिनइनकोमारिये॥

ष०छं० दस गोमारे पाप सदृश एक द्विज संहारे।
दश द्विज बधे जो पाप एक स्त्री के मारे॥
दश स्त्री बध पाप एक कन्या बध होई।

दश कन्या बध पाप यती एक मारे सोई ॥
दो० दश दंडी मारे परै जो पातक सिर आय।
तेहिंसमयकहरिजनबधेकहतनिगमअसगाय ॥
ताते हाजन लीजिये कीजै एक उपाय।
बरखोजाय टीकाकरो बहुरि देहुभौंरचाय ॥

सुनि नृप नाऊ बिप्र बोलावा। बरढूंढन हित तुरत पठावा ॥
पुर अरु ग्राम अनेकन देशा। देखे जहँ तहँ सकल नरेशा ॥
गुङ्ग पंगु अंधा धर काना। सिर्री घर्री कोढ़ी जाना ॥
अस बरुमिलै जहाँ चलि जाहीं। कन्या सरिस मिलैकहुंनाहीं ॥
तबद्विज नाऊ दोउ फिरि आये। राजाते सब बरणि सुनाये ॥
सुनि नृप कर्म विपाक मँगाई। बिप्रन ते ताको बचवाई ॥
कह द्विज कन्या कहा जो रहई। महा राज सोइ सांची अहई ॥
जहाँ तहाँ फैली यह बाता। हाथी राजा कर यामाता ॥
सुनि अपकीरति नृप दुखपावा। अग्निकुण्ड तुरतै खन वावा ॥
दो० गोमल घृत भरि दारु नृप जरैलाग तेहिं मांह।
तेहि क्षण आये देवऋषि खैंचि लीन्हगहिबांहँ ॥

कह नारद क्यों जरै भुआला। सो सब बरणौं मोसे हाला ॥
बोल्यौनृप गजअशनन कीन्हा। कन्या ताहि खवावै लीन्हा ॥
मैं पूछा कस दिहे खवाई। कन्या कहा मोर पति आई ॥
तासु गिरा हम सत्य न जानी। यत्न स्वयम्बर की सब ठानी ॥
कन्या हारु गजहि पहि रावा। तेहि पाछे मैं बरु खोजवावा ॥
जसि कन्या बरु मिलान तैसा। मिलासो आँधर पंगु अनैसा ॥
तब मैं कर्म बिपाक बँचाई। कन्या कहा सो साँची पाई ॥
ताहू पर जे पुरुष अनारी। पग पग निंदा करैं हमारी ॥
सो अपकीरति सुनी न जाई। ताते जरि मरि हौं ऋषिराई ॥
दो० कह नारद जनि जरहु अब है कछु एक उपाय।
राम नाम गज सुनै तौ अबहीं नर होइ जाय ॥

सुनिमुनि बचन भूप सुखपावा। बार बार चरणन शिर नावा॥
महाराज अब देर न कीजै। बेगि गजहि गुरु दीक्षादीजै॥
जेहि अपकीरति मिटै हमारी। बरी जाइ तेहि साथ कुमारी॥
सुनि नारद हरि मंत्र सुनावा। गज पातक सब दूरि बहावा॥
मुखते भा बालक एक आई। तेहि शोभा कछु बरणिन जाई॥
बयस किशोर गोर तन जासू। दृगबिशालशशिसम्मुखहासू॥
बाल बिलोकि भूप अरु रानी। इक टक रहे निमेष न आनी॥
देखि सखी सब कुंवँरि सराहैं। धन्य भाग्य बड़ तुम्हरे आहैं॥
प्रथमैं तन दुख सह्यो अपारा। ताते पायो सुभग कुमारा॥
हमैंन बिधि अस दीन्हों नाहा। सखी सराहि कहैं मन माहा॥
तब कुमार शिशु बन्दन कीन्हा। शीशनाइ चरणनधरिलीन्हा॥
जयजयजय ऋषि राज तुमारी। मोहिंपापीकीबिपतिनिवारी॥
गज तनु लहिमैं अति दुखपावा। ता दुख ते तुम आजु बचावा॥
दो० जान्यो मैं तव कृपा ते अब सत सङ्ग प्रभाव।
दानौ जातनवादि हित करतजहां चलिजाव॥
तबमुनिवर बर शिक्षादीन्ही। सुनितेहिसहितहियेधरिलीन्ही॥
नृप रानी कन्या सोइ जानो। भे नारद के शिष्य बखानो॥
तेहि पाछे पण्डित बोलवावा। ब्याहहेतशुभदिवससोधावा॥
पत्रा खोलि बिप्र अस बोला। आजु लग्न नृप अहे अमोला॥
सुनि नरेश मन भै परतीती। कीन्ह ब्याह गन्धर्ब की रीती॥
बहु बिधि दायजु दीन्ह भुआला। बड़ आनन्द भयो तेहिकाला॥
गी०छ० नृपकीन्हसुता बिवाह अति उत्साहनहिँ बरणतबनै।
दियोदानबहु महिसुरनकहँ गजबाजिपुररथको गनै॥
दिनदिनअधिकअधिकातसुखसुरपुरसरिसबहुभांतिहो।
गुरु शरण के परतापते रहि सकल संशय जातिहो॥
दो० गुरु समान तिहुं लोकमें और न दूसर देव।
ताते शौनक कीजिये गुरु चरणन की सेव॥

दीपउड़पमनिचन्द्ररबि पञ्चप्रकृतिगुरुजानि।
बैष्णवदीक्षा सर्बपर मुनिवर कहतबखानि॥
बैष्णव धर्म ते परे जो धर्म निरूपै कोय।
सो सहस्र जा यमन ते सुजनन बाढ़ै सोइ॥
कुं० अन्य सुराश्रे होइ तो राममंत्रफिरि देय।
राममंत्रयुत जौन तेहि अपरन देयनलेय॥
अपरन देयन लेय सोई पथ पाय बतावै।
सतगुरु मानहिँ ताहि ज्ञान जो जातेपावै॥
कहतदासरघुनाथ येगुरूशिष्यदोउधन्य।
परैनरक महँजाय जो धर्म सिखावैअन्य॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतगुरुमाहात्म्यकृष्णदत्तकथा वर्णनोनामपञ्चमोऽध्यायः ५॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुख खानि।
बरणौं नाम प्रभाव बहु ग्रन्थन कर मत आनि॥
पुनि शौनक बोले कर जोरी। ऋषि सुमंत्र पद प्रीतिनथोरी॥
नाथ मोहिँ निज सेवक जानी। नाम महातम कहौ बखानी॥
सुनि मुनि बचन सूत हरषाने। बोले बिमल बचन सुख साने॥
सुनौ कहौं मैं नाम प्रभावा। जो गिरिजापति शङ्कर गावा॥
एक बार शिव सहित भवानी। बैठे निज आश्रम सुख दानी॥
पतिहि प्रसन्न देखि अधिकाई। बोलीं शिवा सनेह बढ़ाई॥
दो० मुहुर मुहुर तुम कहत हौ राम नाम सुखदानि।
तासु अर्थ करि कृपा प्रभु मोसे कहौ बखानि॥
धन्य प्रिया तुम जगत में कह्यौ ईश हरषाइ।
राम नाम के अर्थ ही जो पूछ्यो मनलाइ॥
चारि बेद अरु षट सहस सब पुराण मुनिदेव।

नाम प्रभाव सोउग्र अति ते नहिं जानत भेव॥
राम नाम को अर्थ जो सो सब जान्यो राम।
तासु अनुग्रह ते कछुक मैं पायो सुख धाम॥
निज मति सरिस सुनहुँमनलाई। नाम अर्थ मैं कहौं बुझाई॥
कोटि काम सम जातन शोभा। असकोजोन देखितेहिंलोभा॥
जनक नगर जे नर अरु नारी। रमे देखि तन सुरति बिसारी॥
सप्तद्वीप के नृप जो आये। सहितविदेहसोदेखिलोभाये॥
परशुराम बिन कारण कोही। राम रूप देखत गे मोही॥
बन बिहरत खग मृग नर नारी। कोल किरात पात द्रुम डारी॥
रमे सकल मिलि सेवा ठानी। रमक्रीड़ा तेहि कहत भवानी॥
घोरिनिशाचरिलखिछबिरामा। पुनिइच्छा कीन्हेसिबसकाम॥
चौदहसहस असुर खरदूषण। मोहे देखि राम बिन भूषण॥

दो० दण्डक बन मुनि सर्ब जे ज्ञान योग तप धाम।
राम रूप छबि देखि कै भे पुरुष ते बाम॥

रमेहु बालि देखत रघुराया। अजरामर नहिं लीन्ही काया॥
रावण समर निशाचर जेते। देखि राम छबि मोहे तेते॥
अवध नगर नरनारि चराचर। रम्योरामतन देखि दिवाकर॥
रमक्रीड़ा ताते तुम जानो। अबसो सुनौ जो और बखानो॥
जल तरङ्गजिमिरबि अरुघामा। कनक एक भूषण बहु नामा॥
गिराअर्थजिमि अग्निउष्णता। कहतभिन्ननहिंभिन्नसोअनता॥
बैसे नाम रूप ह्वै भावा। यदपिनामकर अधिकप्रभावा॥

दो० रूप मिलत नहिं नाम बिन नाम रूप बिनवादि।
ताते दोऊ नित्य हैं अमल अनूप अनादि॥
राम बदन रा जानिये आतेहि उर पहिचानि।
मा मकार दोउ चरण भे रेफ तेज चेतानि॥

सो० कोटि भानु ते भूरि है प्रकाश यामे बिमल।
रह्यौ चराचर पूरि परब्रह्म ताको कहन॥

कोटि विष्णु अज ईश कोटि शारदा शेष शशि।
सुरपति कोटि फणीश सम प्रभाव जामे बिशद॥
तीरथ कोटि अनन्त नाम अधिक पावन करन।
हरण पाप श्रुति सन्त कहत तदपि उपमा नहीं॥
कहँ रबि कहँ खद्योत प्रकाशा। समकिल है मुख फूक बताशा॥
उपमा नाम की नाम न आना। गुह्य भेद सुनु करहुं बखाना॥
राम नाम अंशाश ते जानौ। तीनि सिद्धि भै प्रकट बखानौ॥
सोह बीज और ओंकारा। अर्द्ध अर्द्ध ते करब बिचारा॥
अर्द्धाकार ते ऊ पहिंचानो। रेफ सो अन्तर भूत पिछानो॥
हल मकार ऊपर अनुसारा। ताते सिद्धि भई ओंकारा॥
यहि बिधि सोहंबी नभ बानी। नाम ते प्रकट मुक्ति की दानी॥

दो० राम नाम ते प्रकट भैं षट बस्तु इ जेऔर।
तिनकेनाम बखानहुं सुनुमन करिइकठौर॥
परब्रह्म अरु जीवजो महानाद स्वरचारि।
पंचम बिंदु षष्टरु अवर मायादिब्यनिहारि॥

परब्रह्म सो रेफ ते भयऊ। जीव रकार आदि ते कहेऊ॥
मध्याकार नाद सो कहिये। रा दीरघ ते स्वर को लहिये॥
हल मकार ते भा अनुस्वारा। अनुस्वार ते प्रणव बिचारा॥
प्रणव ते भये तीन गुण जानौ। सत रज तामस आदि बखानौ॥
त्रै गुण ते त्रै देव उपाये। ब्रह्मा विष्णु महेश कहाये॥
तिन ते भयो सकल संसारा। रमक्रीड़ा तेहि करत उचारा॥

दो० नारायण को रूप करि जोहै प्रथम रकार।
महाविष्णु आकार ते महा शम्भु माकार॥
राम नाम के भीतरै ब्रह्मजीव त्रैलोक।
ज्यों क्षितिबीजनक्षत्रनभनग्रमाहिंग्रहथोक॥
रामनाम के ध्यानमें सृष्टि ध्यानहोइजात।
जिमि सींचे एक मूलके डारपात हरियात॥

रामनामको छाँड़िकैकरत जोअपरउपाइ।
मुखतजिभोजनभजैजिमिसपनेहुंक्षुधानजाइ॥

रमक्रीड़ा याते बुध कहई। अपर हेतु सुनिये जो अहई॥
परम जाग शुभ रेफ कहावै। परम बिराग रकार बतावै॥
सो पावक के बीजहि लहिये। बड़वानल आदिक जोकहिये॥
अस बिचारि जो नाम उचारैं। कर्म शुभाशुभ सो सब जारैं॥
परमज्ञान विज्ञान जो कहई। ताको मूल अकार सो अहई॥
सो सूरज का बीज यही है। सुमिरत करत प्रकाश सहीहै॥
भक्ति स्वरूप मकार सोहावनि। चन्द्रबीज त्रैताप नशावनि॥
तीनकाण्ड रबिशशि सबजाते। रमक्रीड़ा कबि बरणत ताते॥
सत रकार वित जानु अकारा। आनँद रूप मकार बिचारा॥
सत कहिये जो बिनसै नाहीं। चित चैतन्य सकल घटमाहीं॥
आनन्द जो नित अहै अनन्दा। ताते नाम सच्चिदानन्दा॥

दो० तनपद ब्रह्म सोरेफ कहि त्वंपद जीवअकार।
हलमकार माया असी तत्वमसी श्रुतिसार॥
हलमकार छर माया अक्षर ब्रह्म अकार।
रेफ निरक्षर ब्रह्मकहि सबव्यापकनिरकार॥
हलमा इच्छाप्रकृति तेसकल शक्ति संजाय।
रमक्रीड़ातेहिकहत अबमुख्यनाम कहौंगाय॥

कुं०छं० बिष्णु नरायण कृष्णजो बासुदेव हरि ब्रह्म।
परमेश्वर परमातमा बिश्वम्भर निष्कर्म॥
बिश्वम्भर निष्कर्म कलानिधि कलुष हनन्ता।
केशौ कमला कन्त बिश्व बपु भव भगवन्ता॥
औरौनाम अनेक जो रटै त्यागि मुख सिष्णु।
सुखद सकलपावनमहां पहुंचावत पुर बिष्णु॥
सब नामनमें राम नाम परकाशक जिय जानु।
जिमि नक्षत्र महँचन्द्रमा अरु ग्रहगन मेंभानु॥

अरु ग्रहगन में भानु कबिन में यथा अनन्ता।
निर्जर में जिमि शक्र भक्तमें जिमि हनुमन्ता॥
लोकन में गोलोक सरित में सरयू धारा।
नरन माहिं जिमि भूपधनुष धारिन में मारा॥
भगवन्तन में राम यथा शक्तिन में सीता।
अद्रिन में जिमि मेरु पुण्य पाठन में गीता॥
कामधेनु गो माहिं अहिंसा धर्म न मा जिमि।
वृक्षन में सुरवृक्ष खगन में बयन तेई तिमि॥
क्षिमनमाहिंजिमिक्षिमासरिनमेंजिमिसरस्वाना॥
कर्मन में हरि कर्म ज्ञान में ब्रह्मज्ञाना॥
पुरिन माहिं जिमिअवधमंत्रमें जिमि ओंकारा।
रुद्रन में में यथा स्वरन में जिमि आकारा॥
पुष्कर तीरथ माहिं मणिन में कौस्तुभ जैसे।
सबनामन में राम नाम तुम जानौ तैसे॥
सुनिबोलीगिरिजाबहुरि बरणौतिनके अर्थअब।
कहशिव सोऊ सुनु प्रियाबन्दौं नामसंक्षेपसब॥

नर जीवन की संज्ञा मानौ। नर सब जाकेआश्रित जानौ॥
ताते नाम नरायण कहिये। नरहियअयनजासुकोलहिये॥
हरि दुख हरत भक्त के पापा। ताते हरि अस नाम सुथापा॥
बासुदेव सब माबस जोई। सब जहँ बसै बासुदेव सोई॥
केशौ सो जेहि तेहु सुर सेवैं। कला अंश अवतार जो लेवैं॥
पोषत भरत सकल संसारा। तासु बिश्वम्भरनाम उचारा॥
पूरण जिमिसबजगत अकाशा। सब भिन्न निरगुण परकाशा॥
ताते ब्रह्म कहावत सोई। अनत अनन्त रूप जेहिहोई॥

दो० कृषि भूवाचक शब्दजो ताहि कहतहैं कृष्ण।
सबमेंव्यापकरहतनितबिषणव्यापसोविष्णु॥
सर्वश्वर्य सुधर्म यश श्री बिराग बिज्ञान।

षट भग जामें होइये तेहि कहिये भगवान॥
राम नामते होत जो सो काहू ते नाहिं।
यहनिश्चयकरिदेखियो सकलपुराणनमाहिं॥
राम नाम निर्बर्ण है सब बरणन को ईश।
मुकुट क्षत्र ये जानिये रेफ बिन्दु सब शीश॥
राम नाम मय सर्बहै नामप्रकृति अरुबर्ण।
रम क्रीड़ा ताते कहत सुनहुं अपर परिकर्ण॥
कोटि तीर्थब्रतदानतप कोटि योग जपध्यान।
कोटि ज्ञान बिज्ञान मख तुलैन नाम समान॥
सप्त कोटि जो मंत्र है चित भस्मावन काज।
परो मंत्रहै राम नाम सकल मंत्र को राज॥
राम नाम जे जपैं सदाहीं। मुक्ति भुक्ति तेहि शंसै नाहीं॥
मूर्द्ध गगन तहँ बसतर कारा। त्रकुटी बास अकार बिचारा॥
जिह्वा बास मकारहि जोई। निजनिजथल उच्चारसोहोई॥
योगी अर्त रकारहि ध्यावै। अरु अकार ज्ञानिनमनभावै॥
पूरण नाम जपै हरि दासा। मुक्ति भुक्ति की छाड़ै आशा॥
जैसे मंत्र प्रयोग कहावै। तैस तैस साधे फल पावै॥
ते सब सिद्ध क्षिप्र होइ जाई। राम नाम सुमिरै मनलाई॥
जपै कौन बिधि युक्ति बतावो। निजजन जानिननाथदुराओ॥
कह शिव सुनौप्रिया करिप्रीती। नाम जपन की बरणौं रीती॥
सतगुरु ते जब पावै नामैं। करि बिश्वास रटै तजिकामैं॥
गी० छं० तजिकामक्रोध बिमत्सरालसलोभ मोहनिवारिकै।
छलमलकुसंगतित्यागिमददुरबासनासनमारिकै॥
शुचिअंगगोमन जीतिनाशा निरतनित नामैंरटै।
हवैजाय सोनर रामहीको रूपभव बंधन कटै॥
प्रीति अप्रीति रीत बिन जाने। कहतनामसुख लहत सयाने॥
अमियगरलगद जलमलआगी। पारस समगुणकहतबिरागी॥

अंतर नाम जपत जो कोई। मुक्ति होत परि भक्तन सोई॥
राम रूप दरशन नहिं पावैं। ताते जन रसना मन लावैं॥
रसना नाम रटत जो कोई। पराभक्त हरि दरशन होई॥
रसना नाम रट्यो जिन जानौं। तिनसबहिनके नाम बखानौं॥
दो० लोमसनारदव्यासशुक भृगुअगस्ति प्रहलाद।
गणिका यमनगयंदद्विज नामकजान्योस्वाद॥
काग भुसुण्ड नाम गति जोई। कल्पान्तौ जेहि नाश न होई॥
बालमीक ध्रुवसुमिर्यो नामा। पावन भयो लह्यो बिश्रामा॥
नाम प्रसाद शेष महि लीन्हें। भुवन चारिदशरजसमकीन्हें॥
नामहिंबलमैं विष कियोपाना। वेद पुराण बिदित जगजाना॥
सनकादिकगणपतिहरिजाता। जीवन मुक्ति पूज्य सुखदाता॥
और अमित भये हरि दासा। नाम सुमिरि गे प्रभुके पासा॥
सो० योगी ज्ञानी भक्त जे सुकर्म करता सकल।
राम नाम अनुरक्त रम क्रीड़ा ताके कहत॥
सत युग शत्यन झूठ बखानी। करि हरिध्यान तरैं भवप्रानी॥
त्रेता तप मख संयम करहीं। सूर बलिदेइजीव जगतरहीं॥
द्वापर व्रत पूजा आचारा। करिकरि जीवहोइ भवपारा॥
कलिनहिं तपव्रत संयम योगा। साधनकठिन देहबस रोगा॥
ताते निगम सुगम मग गावा। कलिभवसिन्धुनाम दृढ़नावा॥
नाम प्रताप सकल युग जानू। कलिविशेषजिमिग्रीषमभानू॥
अस बिचारि ते नरवर ज्ञानी। जपहिंनामऋतुअनऋतुमानी॥
अन्नअशनतजि वनफल खाना। गजरथ बाजि देइ गोदाना॥
गी०छं० गोदेइकोटिन दानगिरिचढ़ि झांपले तन जारहीं।
सबकरहिंतीरथ अटनज्ञान पुराणवेदबिचारहीं॥
मख कोटि सुर तेंतीस राधैयोग अष्टगिहिकरै।
एक राम नाम जहाज़ बिनसंसारसागर नातरै॥
दो० श्रवैअनल शशिव्योमफल तमरविदेइभिटाय।

बिन हरिभजनन भवतरैं करैंजोकोटिउपाय ॥
गरुड़ै खाइभुजंग बर घृत निकसै जलनीक।
भजन बिना सुखनालहै यहपाथर कीलीक ॥
अस बिचारि रघुनाथभजु रामनाम मनओर।
जब होई तब होइहै येही ते भल तोर ॥
सोइ ज्ञानी ध्यानी गुणी दाता सूर सुजान।
अति पवित्र रघुनाथ सो जो सुमिरैभगवान ॥
राम नामका अर्थ कछु कह्यो बुद्धि अनुसार।
नाम प्रभाव अपार अति कोअस पावै पार ॥
शठ अशिष्यबिष पाठकीतिन्हैंन यह मतदेइ।
राम उपासक ते कही जोसुनिउरधरि लेइ ॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतनाममाहात्म्यबर्णनोनामषष्टोऽध्यायः६ ॥

दो० सुमिरिरामसियसंतगुरुगणपगिरासुखखानि।
कूरमकोल पुराणकी कहौं इतिहास बखानि ॥
कहसौनकहरिनामकहि पतित तरे जगकौन।
यह अभिलाषासुननकीकहौ नाथ तुमतौन ॥
बदेउसूत हरिनामकहि तरिगे पतित अनेक।
पारन पावैं जो गनैं सहस शारदा शेष ॥
जोकछु मम जाने सुने गुणे पुराणन माहिं।
सोतवहितबरणनकरौं जोपूछ्यो मोहिंपाहिं ॥

बालमीक गणिका गज जानौ। यमन केर इतिहास बखानौ ॥
कीरति मुखइक मुनिवर रहई। बिपिनमध्यतन योगनचहई ॥
इकदिन स्वपने शुक्र बिनाशा। बांबी धरिऋष चले उदासा ॥
तेहिते बालमीक मुनि भयऊ। ठगनिकेरिसंगति होइगयऊ ॥
तिनके साथ बिपिन नितजाई। मारि जीवधन लेइ छिनाई ॥

[redacted] विधिसोंजब भयोसयाना। तब बनलागअकेलेहि जाना॥
ब्राह्मण बयस शूद्र जेहि पावै। प्रथम मारितेहि बस्तुछिनावै॥
जो कोइ आपुइते धन देई। बिन बधकिहे कबहुंनहिंलेई॥

दो० एक दिवसबड़िदेर भइ मिलानकोऊ ताहि।
तेहिमगनिकसेसप्तऋषि कहतनामजोआहि॥
कश्यप अत्रे यमदगिनि बिश्वामित्र बशिष्ट।
भरद्वाज गौतम कहे नाम सप्त ऋषि शिष्ट॥

इन्हैं देखि धावा हर पाई। बोला बचन मुनिन ते जाई॥
पोथी पत्रा देहु उतारी। नाहित सबन डारिहौं मारी॥
जानि दुष्ठ बोले मुनि ज्ञानी। सुनु ठग हमपूंछत इकबानी॥
जो तुम पाप करत अति भारी। तिनमांकोइऔरौ सझियारी॥
यह घर जाइ पूंछिये बाता। आइ हमैं फिरि कीजै घाता॥
कही बिहँसि मैं बूझन जावों। तुम भजिजाउकहांपुनिपावों॥
तब मुनिसोंह राम की खाई। सुनि आवा घर देर न लाई॥
तात मात सुत बनिता भाई। पूंछेसि सबकानिकट बोलाई॥
मैं जो लूटि मारि धन लावों।खातसकलमिलिभोगभोगावों॥
जीव बधे कर पाप जो होई। तेहिमा सझियारी है कोई॥
सबहिन कहा पाप जो आहीं। ताके हम साथी हैं नाहीं॥

दो० अस सुनिसोडरपतभयो गयोसप्तऋषि पास।
हाथजारिचरणनपर्‌यो कर्‌योबचन परकाश॥

महाराज हौं शरण तुम्हारी। पतित जानिमोहिंलेहुउबारी॥
सुत पितु मातुबन्धुत्रिय नाती। हैं सब स्वारथ कर सँघाती॥
संकट परे काम नहिं आवैं। सबकेसबजहँ तहँ भजिजावैं॥
अबलग मैं सबका निजु जानी। करतरह्यों पातक सुखमानी॥
सो अघ समुझिलगत डरभारी। पाहि पाहिमैं शरण तुम्हारी॥
दीन जानि बोले सुख दाई। मरा मरा कहिसुमिरहु जाई॥
सुनिमुनिबचनहृदयधरिलीन्हा। मरामरासोइ सुमिरणकीन्हा॥

तिसरे शब्द राम होइ गयऊ। बालमीकिकर कारज भयऊ॥
जाप करत भे पातक नाशा। निर्मल हृदय भयो परकाशा॥
दो० तबभविष्य सियरामयश कह्यौ कोटिशतगाइ।
शौनक नाम प्रभाव अश मरा कहे गतिपाइ॥
ओर सुनौ गणिका इक रहई। ताके पाप पारको लहई॥
अन्त समय लीन्हों यम घेरी। लगे देन तेहि त्रास घनेरी॥
तेही समय एकहरिजनआयो। देखि नायका बिनय सुनायो॥
तुमहौ दीन बंधु सुख दाई। मोहिं संकट ते लेहु छुड़ाई॥
सुनि साधू मनबिस्मय कीन्हा। मंत्र याहिनहिं चाहियदीन्हा॥
जो याकर कल्याण न होई। तौ प्रण जाइ हमारो खोई॥
बिना नाम भल होत नजानौं। याहिकौन बिधिनाम बखानौं॥
दो० अस बिचारि साधू कह्यो जगजो हिन्दूलोग।
कीर पढ़ावत कहौंसोइ तब तव नाशै सोग॥
सुनि गणिकाकह रामसोआही। अस कहतै तन छूटा ताही॥
सुनतहि हरिगण आये धाई। यम फांसी से लेत छुड़ाई॥
हिततें सुभग बिमान चढ़ावा। राम धाम तहँजाइ बसावा॥
अस है राम नाम सुखदाई। अधम जातिगणिकैगतिपाई॥
सुनहुं एक गज अतिबलवाना। करन गयो सागर जलपाना॥
ग्राह गह्यो ताकर पग धाई। लै गा जल गहिरेघसिलाई॥
फिरि गजखेंचि किनारे लावा। यहिबिधिसोबहुकालबितावा॥
गजके तात भ्रात सुत भामा। कछु दिनभोजनदीन्होंतामा॥
पाछे सबन त्यागि तेहि दीन्हा। क्षुधा क्षीणभा बलते हीना॥
कोउ सहायक जब नहिं देखा। जान्योगा अब प्राण बिशेषा॥
तब तेहि अर्द्ध नाम गोहरायो। गरुड़छांड़िहरि तुरतहिधायो॥
ग्राहे हति गज लीन बचाई। सुनु मुनि असदयाल रघुराई॥
तिन्हैं छांड़ि जे आनैं ध्यावैं। तजिसुरसरिजल कूपखनावैं॥
ओर सुनौ मैं कहौं बखानी। रह्योमलेच्छ एक अघखानी॥

एक दिवस गुर्वी कहँ गयऊ। बाहेर ग्राम सो बैठत भयऊ॥
पाछेते शूकर सुत आवा। बिट ऊपरमुख मारिगिरावा॥
कहा यमन मार्‌यो हारामा। अस साँगत छूट्यो ताजामा॥
यमके दूत गहिन तेहि धाई। आइ गणनतब लीन छिड़ाई॥
कहा गणन लीन्हों यहिनामा। अब नहिंजायतुम्हारे धामा॥
कह यमदूत हराम जो कीन्हा। सो यहिनामसुवरकालीन्हा॥
हरिगण कँह संकट के मारे। हाइ रामअसकहिसिबिचारे॥
दूतकहा चलि न्याव चुकाई। जाहि मिलै सोई लै जाई॥
यहिबिधिझगरतगे बिधिपासा। बोले ब्रह्म जाहु कैलासा॥
तब चलि उमानाथ पहँ गयऊ। दोउमिलिहालगुजारतभयऊ॥

दो० सुनत कहा शिव नामकर न्याव न मोसों होइ।
चलि बैकुण्ठ चुकाइये श्रीपतिते कहि सोइ॥

अस बिचारि बैकुण्ठहि आये। समाचार सब हरिहि सुनाये॥
कह यमदूत चरण शिर नाई। इहु है अति पापी अन्याई॥
मरत हराम कहेसि मुख येहीं। ताते गण लै जान न देहीं॥
सो नियाय तुमते प्रभु होई। जो तुम कहो करैं हम सोई॥
सुनतबिष्णुमन कीन्ह बिचारा। नाम प्रभाव अनन्त अपारा॥
बाले यमदूतौ सुनि लीजै। याको इहैं रहन अब दीजै॥
सुनि यमगणचलिभेखिसियाई। हर्षे शिव बिरंचि मुनिराई॥

गी० छं० हर्षे बिरंचि महेश शेष गणेश नारद आदिकै।
जेहिहेतुमुनितपकरतयोगीयोगआसनसाधिकै॥
नहिंमिलतसोपदयमनकहिहारामबिनश्रमपायहू।
असजानिनामैंनाजपैं तिनबादिजन्मगँवायहू॥

दो० असहै नाम प्रभाव जेहि कहिनसकैं हरिआपु।
ताते सन्तत कीजिये राम नाम को जापु॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदास
रामसनेहीकृतबालमीकिगजगणिकाउद्धारवर्णनोऽध्यायः॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपगिरासुखदानि।
कहौं कथा भागवतकीअब इतिहास बखानि॥

बोले मुनि कछु नामप्रभावा। कहौंसुनौं अब अपर सोहावा॥
कनउज तीर ग्राम इक अहई। अजामील द्विज तामें रहई॥
माता पिता नाम यशधारा। सो सब सांचकीन्ह करतारा॥
पूर्ब्ब कर्म्मबशतजिनिज नारी। बेश्या एक लिहिसि बैठारी॥
सुरापान ताके सँग कीन्हा। शौच सयान दूरि धरिदीन्हा॥
अजामील लै नीच न देई। चर्म नका पर अपना लेई॥
अस पातक निशि बासर करई। हृदय नेकु दाया नहिं धरई॥

प० छं० एक दिवस इकसाधु तासु नगरी महँ आयो।
पूंछ्यो हरिजन धाम सुनत दुष्टन बहँकायो॥
अजामील घर जाहु चहौ जो शुभ बिश्रामा।
हरिजन जान्यों साँच गयो चलि ताके धामा॥
गणिका लखि घूमें तुरत अजामील सुनिपाइ।
बिनती करि फिरि लै गयो आसन दीनबनाइ॥

दो० यद्यपि मैं यहि जन्ममें दुर्भग अघ युत दीन।
तदपि पाछिले जन्ममहँ पुण्यधनीकछुकीन॥

सो० पुण्य पुंज बिन नाथ मोको तव दर्शन कहां।
जोपि मिलतकहुंसाथ तौनहिंहोतो भाउउर॥

अस कहि सीधा बिटते लायो। बिबिधिभांतिभोजनकरवायो॥
ह्वै प्रसन्न बोल्यो हरिदासा। तब बनिता उरपुत्र निवासा॥
अबकिबेरजन्म लेइ जबयाही। धर्‌यो नाम नारायण ताही॥
नारायण जो धरि हौ नामा। तौ नहिं जैहौ यमके धामा॥

प० छं० असकहि हरिजन गयो भयो जबबालक जानी।
धर्‌यो नरायण नाम बचन बैष्णौ को मानी॥
तासों राखे नेह नेकु नहिं न्याराकरई।
मोह बश्य भा अंधमृत्युते नाहीं डरई॥

दो० यहि भांतिन कछु कालगे अन्तसमै की बार।
लेन चले यमदूत बहु आये तासु अगार॥
महा भयानक रूप निहारी। अजा मीलडरप्यो अति भारी॥
मुद्गर मारिड़ारिगर फाँसा। काढ़त जीव चले उर्द्ध श्वासा॥
निकसत प्राणभई अति पीरा। रही न तनकी सुद्धि शरीरा॥
कण्ठ घेरि यमगणइक लयऊ। मुखसेबचन बोलिनहिं गयऊ॥
दो० तबसोइ सुतकी आदि करि कह्यो बचनहरुवाइ।
कहाँ नरयण पुत्र मम तेहि मोहिं देउ दिखाइ॥
नाम लेत हरि हृदय बिचारा। दुखकी बस कहूंमोहिं पुकारा॥
मोर नाम जे जगमें लेहीं। तेहि कि कष्टयम किंकर देहीं॥
स० तुरतैंहरिबोलिकह्योगणतेकेहुंनामलियातेहिबेगिबचावो।
फाँसछोड़ाइ चढ़ाइबिमान बजाइ निशान मेरेढिगलावो॥
आयसु पाइगये द्विजधाम बिलोकिकैदूतसबै दुखपावो।
बोलि उठे तबहींगणते केहि कारणभौन घुसेतुमआवो॥
इतना सुनि उत्तरगण दीन्हा। इहां रहतहरिजन हमचीन्हा॥
तासु फांस काटन के हेता। ताते पठइनि कृपा निकेता॥
सुनि यमदूतन कहा रिसाई। तुमतौ गणौं बड़े अन्याई॥
याकी सम नहिं दूसर पापी। ताको तुम हरि जनकरिथापी॥
खायसिमांसकिहिंसिमदपाना। असजारहि लैचल्यौ बिमाना॥
सुनहु गणौ जे आमिष खांहीं। तेहिसम और पापनहिंआहीं॥
याकर दोष जौन कछु होई। कृष्ण कह्यौ पारथ से सोई॥
पशूहते जो रोम शरीरा। तितने बर्ष नरक सह पीरा॥
आठ जो हिंसा के गृह जानो। सो भारत में साखि बखानो॥
जीव बधन इक अज्ञा देई। दूजो मारै त्रै गहि लेई॥
चौथो सुनो सवाँरन हारा। पँचवाँ बेंचन हार निहारा॥
छठों रसोई जौन चढ़ावै। सतवों सो जो परसि जिमावै॥
अठवां खान हार जो होई। परैं नरक महँ आठौ सोई॥

दो० मोल मँगावैघरहतै ताहि द्रव्यदे कोउ।
सुख सम्पतिसव नाशहीमोक्ष लहैनहिं सोउ॥

द्विज हवैकै मदिरा जो खाई। देव तुरुक कर पूजै जाई॥
बारमुखी जो गरे लगावै। कुलका धर्म सकल घटिजावै॥
तेहि द्विजकी पूजा जो करई। पुण्यजाइ घटि अघ सिरपरई॥
यामें नहिं हम झूंठ बखाना। धर्म शास्त्रमें यह परमाना॥
तेहिते अब ऐसी जनि कीजै। याहि नरक लै जाने दीजै॥
अस पापी जो हरिपुर जाई। नरक काहि हम डारब भाई॥

स० बोलेतबै गणदूतनते तुमनाम प्रभाव न जानतभाई।
गोद्विजपाप करैनरजो अपने करतेमधुलेइ छोड़ाई॥
चोरीकरैबटपारी करै गुरुतल्प धरै पगआमिषखाई।
औरहु पापकरैबहुजोहरिनामलिहेसबही जरिजाई॥

दो० गणिका यमन गयन्दसे बालमीकि अघ खानि।
नाम कहत सबतरिगये कहँ लगिकहौं बखानि॥

कोटि गऊजो देवै दाना। ग्रहण करै काशी अस्नाना॥
मकर प्रयाग बसै जो जाई। यज्ञकरै दश सहस सोहाई॥
गिरि समहेम दान कर कोई। राम नाम सम तुलै न सोई॥
यथा ढेबुक मुद्रा जग माहीं। हैं सब एक पदिक सम नाहीं॥
बस्तु अमोल यथामति कहहीं। जिनजाना जसतसफललहहीं॥
संकेत परिहास जो करई। रामनाम सुमिरत अघ हरई॥
असहरि नामप्रकटजग आही। शेष महेश रटत हैं जाही॥
सोई नाम याते कहि आवा। याकी सम को भक्त कहावा॥
कह यमदूत सुनहुँ गण जेता। कब यहि कीन रामते हेता॥
यहतौ पुत्र नाम कहि टेरा। ताते हम दियो दुःख घनेरा॥
जो यह लेत राम कर नामा। तो हमते याते का कामा॥
कहगणहरिजनजोकहिगयऊ। ताके बचन मानि यहि लयऊ॥
करि उपदेश सन्त दिय नामा। ताते भक्त भयो यह रामा॥

चारौ युग श्रीशारङ्ग पानी। सांचौ करि आये जन बानी॥
यहिविधि दूतनकह समुझाई। लीन्हो ताहि बिमान चढ़ाई॥
राम धाम लेगे यहि भांती। यम किंकरचलिभेखिसियाती॥

ह०गी०छं० खिसियाहिचलिभेदूतयमकेदेखिमहिमानामकी।
असअधमपापी खलसुरापीनिर्दयी हरिबामकी॥
सोअन्तसमय पुकारिसुतकोनामहरिपुरकागयो।
असराम नामप्रभावसुनिअतिहर्षशौनककेभयो॥

दो० नारायण इतिनाम कहि अजामील भो पार।
ताते सन्तत कीजियो रामनाम उच्चार॥
सुत बनिता धनधाम जो सबइहनै रहिजाइ।
नरकस्वर्ग यमलोक में नामैं होत सहाइ॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतअजामीलप्रसंगबर्णनोनामअष्टमोऽध्यायः ८॥

दो० सुमिरि राम सियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि।
धर्मदूत सम्बाद अब कहौं असकंद बखानि॥

सो० कहशौनक हरपाइ। अजामील जब ना मिल्यो।
दूतधर्म ढिग जाइ। कहा कहिन सो बरणिये॥

कहा सूत यमदूत रिसाई। धर्मराज पहं पहुंचे जाई॥
दंडफाँस सब दीन्हों डारी। देखौ रबि सुत दशा हमारी॥
जाहि अधमपापी हम चीन्हा। तेहि तवढिगलावन मनकीन्हा॥
अन्तसमै सुत नाम पुकारा। तुरतै हरिगण ताहि उबारा॥
लीन्हेनि बहुरिबिमान चढ़ाई। रामधाम तहँ राखेनि जाई॥
अस अनरीति न हमैं सोहाई। ताते तवढिग आयन सांई॥

दो० दंडफाँस लीजै अपनि कह्यो सबन शिरनाइ।
दूतकर्म नहिं करब अबअसकहि चलेरिसाइ॥

रिसह जानि यमराज बोलाये। करिसनमान निकट बैठाये॥

कहा धर्मदूत सुनौ मम बाता। हैंहरि नाम सकल सुख दाता॥
संसकार जो अघकर आही। सूक्षम रूप कहत मुनि ताही॥
सो नहिं नशैतपादिक कीन्हें। यतन अनेकदान बिधि दीन्हें॥
सो वह सूक्षम अघ को मूला। सुकृत नाम नाशत सब शूला॥
ताते ताके अघ सब नाशे। जिमितम सहजै भानु प्रकाशे॥
जो जन लेइ राम कर नामा। तेहिते तुमते है का कामा॥
तिनके निकट न जायो भाई। देखि दूरिते दिह्यो बराई॥
सुनत दूत कह जगके माहीं। नाम एक बर लेत को नाहीं॥
जो उनके ढिग जान न पाई। तो मृत्युलोक करब का जाई॥
कह रबि सुत दूतौ सुनि लेहू। मैं जो बूत तामें मन देहू॥
राम कहत जो नरजग माहीं। सो ब्योहार नेह कछु नाहीं॥
गुरुते रामनाम जिन पावा। करि बिश्वाससो हृदयबसावा॥
जो कोइ कोटिन करै उपाई। मारै त्रासै लोभ दिखाई॥
तदपि राम तजिअन्तन ध्यावै। सो हमरे लोकै नहिं आवै॥
असहरिभक्तबिलोक्योजबहीं। कर्‌यो प्रणाम दूरिते तबहीं॥
साकट कहं तुम धरिलैआवो। नरक डारिसब कर्मभोगावो॥
बोले दूत जोरि युग पानी। इक संशय हमरे उत पानी॥
पांच तत्व की सब की देही। किमिजानब ये राम सनेही॥
भक्तन केर चिन्ह कहौं गाई। जाते हमउनढिग नहिं जाई॥
बहुरि कहौ साकट कर भेदा। जिन्हैं लाय देई बहु खेदा॥
कह रबि तनय सुनौ रे भाई। भक्त चिन्ह मैं कहौं बुझाई॥
कण्ठ बिषे तुलसी की माला। मस्तकमेंदियतिलकबिशाला॥
शङ्ख चक्र भुज मूल सोहाये। भुवन पबित्र करण भुविआये॥
हरि की कथा सुनैं हरषाई। राम नाम सुमिरैं मन लाई॥
जीव बधन हित अस्त्रन धरहीं। देखत दीन दया अति करहीं॥
क्षमा शील सन्तोषै गहहीं। बालवृद्ध सब के प्रिय रहहीं॥
मन क्रम काहू दुःख न देवैं। अति उदार सन्तन कहँ सेवैं॥

अस हरि भक्तहरी सम जान्यों। यामें रञ्चक भेदन आन्यों॥
दो० जो कदापि भक्तन बिषे कछुक दोष दरशाइ।
तथा देह कृत मानिये भक्त न परसै नाइ॥
भक्त दोष प्राकृत नहीं तिन्हैं न बाधक होइ।
और न को पावन करन सद समर्थ है सोइ॥
ताको यह दृष्टान्त बिचारौ। सो सुनि कै सन्देह निवारौ॥
जो गङ्गा में फेणु दिखावै। तौ का गङ्ग प्रभाव मिटावै॥
ब्रह्म द्रव जग मगत जहाहीं। हरत ब्रह्म हत्या क्षण माहीं॥
तैसे सन्त गोबिन्द पियारे। सब दोषन को भंजन हारे॥
ताते तुम्हैं कहौं समुझाई। भक्तन ढिग जनि जायो भाई॥
दो० भक्तन के लक्षण कहे कछु संक्षेप बखानि।
अब साकट बर्णन करों सोऊ लेहु तुमजानि॥
साकट जेहि हरिभक्ति न भावै। साधनलखि मन क्रोध बढ़ावै॥
साकट पर जे निन्दा करईं। परसुखदेखि बिना नलजरईं॥
साकट सो हिंसा रत रहई। तजै सुपन्थ कुपन्थै गहई॥
साकट जो पर द्रव्य चोरावै। पर अपकार सदा मन भावै॥
साकट सो भोगै परदारा। करै अकारण क्रोध अपारा॥
जिव बदले जो जीव मरावै। साकट मांस बिराना खावै॥
गुरु पितु मात बचन नहिं मानै। साकट औरन का दुख ठानै॥
इमि नर बिमुख राम ते आहीं। डारहु आनि नरकके माहीं॥
दो० कौन कर्मकरि लहत नर नरक स्वर्ग में बास।
सो हमते बर्णन करौ जानि आपने दास॥
कह यमदूत सुनौ जेहि कर्मा। परतनरक महँ कहौं सो मर्मा॥
हिंसा करै बचन कटु भाषै। सुनै वेद परतीत न राखै॥
दै विश्वास घात जो करई। प्राणी सोइ नरक महँ परई॥
देव विप्र सन्तन दुखदाई। पर निन्दा करै अपन बड़ाई॥
बिना समय भोगै जो नारी। परत नरक मद मांस अहारी॥

रजस्वला तिय गर्भ युत होई। तासों रमण करै जो कोई॥
बिप्रै न्यवति बहुरि नहिं देवै। सो प्राणीनरकबासको लेवै॥
शूद्र भील श्वपचाधम कोई। भगवद्भक्ति परायण होई॥
तिन्हें जानिकै करै जो तर्का। मन्द बुद्धि सो भोगै नर्का॥
जे निज देहँ मांझ अभिमानी। आतम बुद्धि लखैं अज्ञानी॥
हरि कलत्र अपना करि मानैं। प्रतिमा मात्र देव करि जानैं॥
सलिलमात्र तीरथ जिनजाना। सन्तन में कछु भावन आना॥
ते गोखर सम जानौ प्रानी। परत नर्क महँ बाचक ज्ञानी॥
अर्चे विष्णु शिला करि मानैं। श्रीगुरु देवै नर करि जानैं॥
वैष्णव की जो जाति बिचारैं। अन्यदेव सम विष्णुहि धारैं॥
हरि हरिजन चरणोदक होई। तीर्थ बुद्धि करि मानै सोई॥
राम नाम मंत्रन सम धरई। सो नर घोरनरक महँ परई॥
गोशाला अरु ग्राम जरावै। द्यूत चौर्य्य परत्रिय मनभावै॥
देखे बिना दोष दे सीसा। नर्क परै सो बिश्वे बीसा॥
तीरथ देव गऊ अस्थाना। मध्य गली धर्मशाला जाना॥
जाय मैल बिष्टा जो करई। जीव बधै सो तनमें परई॥
पूजै नाहिं सन्त घर लाई। और देखि मन क्रोध बढ़ाई॥
रोष गुरू ते बात चोरावैं। हरियशतजिनरकीरतिगावैं॥
भक्तन को यश कभू न कहई। राम भक्तिते बिमुखहिं रहई॥
पर औगुण जो करैं उघारा। तेशठ भुगतैं नरक अपारा॥
नारी जो निज पति छिटकावै। आन पुरुष का गरे लगावै॥
पतिते बोलै बचन कठोरा। रामतेबिमुखधर्म मुख मोरा॥
अस त्रिय परै नरक के माहीं। यामें कछु संशय है नाहीं॥
पाप कर्म सबते तम होई। ऊंच नीच चाहै करै कोई॥

दो० नरकपरत जेहिकर्मकरि सोमैं कह्यों बखानि।
स्वर्गमिलैसो कहतअब दूतलिह्यो तुमजानि॥

श्रद्धा सहित करैं जे दाना। पूजैं उत्तम बिप्र सुजाना॥

होम यज्ञ तीरथ व्रत करहीं। जप तप गायत्री मन धरहीं॥
पर उपकार सदा मन भावै। द्वारेअतिथिबिमुखनहिंजावै॥
बोलैं बचन सबन सुख दाई। ते नर वसैं स्वर्ग महँ जाई॥
काहूकेर बुरा नहिं चहहीं। रक्षा करत जीव की रहहीं॥
मान परावो गिरन न देहीं। सत्य बचन इन्द्री गहि लेहीं॥
वैष्णव देखि करैं परनामा। रजकण जितने लागैं यामा॥
तितने शत मन्वन्तर माहीं। बसैं स्वर्ग कहि आगमजाहीं॥
नारी पतिव्रता जो होई। धर्मवान् कोमल चित सोई॥
पति कुष्ठी दारिद्रा जानो। रोगीकृपिणअन्ध पहिचानो॥
कामी क्रोधी कैसो होई। नारि ईश सम मानै सोई॥
पतिके संग सती होइ जावै। सो तिय सत्यस्वर्ग सुखपावै॥

सो० आश्रम धर्मदृढ़होइ बिहँग कपोता कीसरिस।
बसै स्वर्गमहँ सोइ बहुत काल लगि जानियो॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागर श्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतयमदूतसम्बादबर्णनोनामनवमोऽध्यायः ९॥

दो० सुमिरिराम सिय सन्तगुरु गणप गिरासुखदानि।
कहौंइतिहास समुच्च की अब इतिहास बखानि॥

सुनत दूत अस पूंछै लीन्हा। बिहँग कपोत धर्मका कीन्हा॥
सोऊ नाथ अब कहौ बखानी। जाईगृह आश्रम जेहि जानी॥
कह धर्म सुनहुं दूत मनलाई। बन्दौं कथा सुंदर सुखदाई॥
बधिक एक अति निर्दय रहई। बिपिनजाइ जीवन कहँगहई॥
निश दिन नीच जीव संहारै। पाप दोष नहिंहृदय बिचारै॥
एक दिवसएकबनहिंसिधावा। तामें जीव न एकहु पावा॥
उत्तर दिशिते आंधी आई। भयो अंधेर न सूझै राई॥
गर्ज्यो मेघ प्रलय की नाई। भाग्यो सुनत पंथ नहिं पाई॥
वृष्टि होन पुनिअतिशयलागी। पाथर परत सबै सुधि भागी॥

जहां तहां जल बहै घनेरा। पांवन अड़ै बिपति ने घेरा॥
माघ मास कांपै सब देहा। सहै त्रासकरि करम सनेहा॥
क्षुधा सतावै ज्यों ज्यों तनको। होवै पीर अधिकही मनको॥
पवन जोर ते पक्षी जानो। गिरिगिरि परे वृक्ष तर मानो॥
दामिनि चमक कपोती देखी। धाइ बधिक तेहि गह्यो बिशेषी॥
दो० आपु कालके गालमें सो न बिचार्‌यो अंध।
वाहि पींजरा मांहि करि चलत भयो मतिमंद॥
शोचत सुमन कपोती सोई। मम पति आजु अकेलो होई॥
मंदिर तिनकर जहां रहावा। तेहि द्रुमतरेबधिक सोइआवा॥
छाया ताकी सघन निहारी। बैठा समिटि सुपास बिचारी॥
शीत क्षुधा बस बोलि न जावै। काठसरिस तनभा दुखपावै॥
ताही समय कपोत सो आयो। प्यारी बामधाम नहिं पायो॥
दो० मोते पहिले आवती नित्यबधू गृहमाहिं।
आजुरहीकहँप्राणप्रिय कछूकुशलहै नाहिं॥
अस बिचारि मन शोचन लाग्यो। मोह प्रबल हृदै महँजाग्यो॥
मैंजु अकेल रह्यों घरमाहीं। बिन बनिताजीवनकछुनाहीं॥
नारि पुरुषते अंतर परई। धिक्तेहिंनरहिजोगृहमनधरई॥
आश्रम की शोभा त्रिय जानौं। बनिताबिनावृथासुखमानौं॥
जित तित दृष्टि कपोतहिं फेरी। देखीबधू पींजरे गेरी॥
बिस्मय कीन्ह कपोती जबहीं। बोल्योबचनबिकलह्वै तवहीं॥
अहो प्रिया अबमैं काकरिहौं। तुमबिनप्राणत्यागिकैमरिहौं॥
पतिको बिकल कपोती जानी। बोली बचन धर्मनय सानी॥
हेपति त्यागौ शोच सनेहा। दुःख मूल जानौ जग गेहा॥
मिलन बियोग दुःखसुख साथा। तातेशोच करिय जनिनाथा॥
देखोतुम बिचारि मनमाहीं। जगमें कोउ काहू कर नाहीं॥
धाम वाम तन धनसुत भाई। एक दिवस सबहीछुटिजाई॥
जोकछु धर्मा धर्म कमावै। अंतसमय सो संग सिधावै॥

म करै भरै यम त्रासा। धर्मतेलहै अमर पुर बासा॥
धर्म करौ मन लाई। याते लोक प्रलोक भलाई॥
क आश्रम तुम्हरे आयो। याको पूजिकरौ मनभायो॥
ति बैरी याको जानो। बैठो शरण तुम्हारी मानो॥
ति परे जो करै सहाहीं। होयतासुयशत्रिभुवन माहीं॥
आये सत्कार न करई। नाशै पुण्य पापशिर परई॥
वह गेह कुटुम परिवारा। जाते होवै पर उपकारा॥
याकी सेवा करहू। गृस्थ धर्मसो हिरदे धरहू॥
धर्म जनि देर लगावो। फिरि ऐसोऔसरनहिं पावो॥
० सुनत कपोती के बचन कीन कपोत बिचार।
मैं पक्षी मानुष्य यह किमिपोषों यहिबार॥
असकहि उतर्योवृक्षते गयोबधिकके पास।
सम्मुख ह्वै श्रद्धासहित कीन्हों बचनप्रकास॥
मोको आज्ञा देहु कछु सोइकरौ यहिबार।
धन्य भाग मेरे प्रभू जो तुम आये द्वार॥
किरात बोला असि बानी। अहोकपोत सुनहु सुखदानी॥
शीत सतावै भारी। सोकाहू बिधि देहु निवारी॥
कपोत चढ़िचहुँ दिशि देखी। बरत वृहद इक पुरमें पेखी॥
न चावकरि पहुंचो जाई। जरत समधिग हिलायोधाई॥
उजारि भूमिमें डारी। तामें अग्नि दई परजारी॥
पात सूख तरु केरे। चुनिचुनिलाइअग्नि महँगेरे॥
बधिक शीत भयो नाशा। चेतनुह्वै पुनि बचनप्रकाशा॥
० पर उपकारी बिहँगतें शीत निवारे मोर।
अबकछु भोजनदीजिये क्षुधासतावै घोर॥
कपोत मनकीन बिचारा। धिक्है पशुपक्षी अवतारा॥
चुनिकै निजु पेटहि भरहीं। पर उपकारकौनबिधिकरहीं॥
वै मनुष्य बहुत मुखडारैं। धिक्हम आपनओद्र पसारैं॥

भयो कपोत खेद उर भारी। विनवितृगृहकोबसबउजारी॥
भुवन कूप कृमि कुटुम बिलासा। होइपाप जन जाइ निरासा॥
रुदन कपोत कियो बहु तेरो। केहिबिधिहरौंदुःखयहिकेरो॥
शोचतही मनकीन बिचारा। त्रयबिधिते चहिपरउपकारा॥
धर्म सचै तो करौं उपाई। हर्षि-बधिक ते बोल्यो जाई॥
धीरज धरौ अतिथ मन माहीं। देत अहार देर अबनाहीं॥

दो० करि परिकर्मा अग्निको कूदि पर्‌यो ताबीच।
यह सब कौतुक देखिकै बधिक कियो शिरबीच॥

सो० पूरब पुण्य प्रताप उदय भयो बैराग तेहि।
लाग्यो करन कलाप मो सम मन्दन बुद्धिकोय॥

धन्य धन्य पक्षी तन तेरो। धिक् जन्म मम मानुष केरो॥
नरतन लहि का कीन्ह कमाई। पाप करत सब बयस गँवाँई॥
कबहूं कछू सुकृत नहिं कीन्हों। नहिंकाहूकरदुखहरि लीन्हों॥
धिक् धिक्मोकों बारहि बारा। धनिबिहङ्ग जेहिधर्म विचारा॥
मैं जो किये अति पातक भारी। अब तपकरि सब देहौं जारी॥
असकहि डार्‌यो जालहिफारी। तुरत बिहङ्गिनि दीननिकारी॥

दो० छूटि कपोती फन्द सों ऐसे करत बिचार।
पतिबिनजीवननारिको जगमेंवृथानिहार॥

यों कहि गिरी अग्नि महँ सोई। भई सती साँची यह जोई॥
मध्य अग्नि महँ दीख बिमाना। पतिताबीच बैठिजिमिभाना॥
बिहँगिनिकोतनुपलटिजोगयऊ। ताहू केर दिब्य बपु भयऊ॥
पति लखि भेंट्यो गरे लगाई। गयो दुःख सन्ताप नसाई॥
रञ्चक दुख कीन्हों धर्म हेता। सुख जो भयो गनै को तेता॥
ताते धर्म कीजिये भाई। यामें जनि रहिये कदराई॥
नारि पुरुष दोउ चढ़े बिमाना। गगलै उड़े मगन मन जाना॥
जय जय देव किहिनि हरषाई। सत्यलोक तहँ राखेनि जाई॥

दो० प्रबरा प्रबरी की कथा भई कही मैं सोय।

बधिकहालवरणौंबहुरि सुनिराखोहियजोय ॥
कबिपिनि तपकीन्होंभारी। मगनध्यानतनसुरतिबिसारी ॥
दिन अग्नि लगी चहुं पासा। बधिकदेहजरिबरि भइनासा ॥
जो रहे जरे तन सङ्गा। बधिकसो राच्यो हरिके रङ्गा ॥
बिमान पारषद लायो। तापर चढ़िकर स्वर्गसिधायो ॥
टी कुटिल कीर अघ धामा। सज्जन सङ्ग लहो बिश्रामा ॥
स्थ धर्म जसतस यहगावा। सुनिदूतनअतिशय सुखपावा ॥
यमचरण चार शिर नाई। अब हम मृत्युलोक कहँजाई ॥
ठौर जाइ हम रहिये। कहाँनजाय कृपाकरि कहिये ॥
यम जो पूंछ्यौ आई। तुमहिं देहुं अस्थान बताई ॥
र हरि पूजन मन धरहीं। लै चरणोदक भोजन करहीं ॥
सुनैं हरि कीरति गावैं। ठाकुर द्वारे में नित जावैं ॥
सहित गुरु साधुन सेवैं। क्षुधित देखि तेहि भोजनदेवैं ॥
० हरि गुरु दासन ते रहे सांचो निःछल जौन।
तिनके ढिगजनि जायहू दिह्यौ त्यागियेभौन ॥
अवज्ञा पुत्रन करहीं। द्वारेअतिथिबिमुखनहिं फिरहीं॥
होम करि बिप्र जिमावैं। सन्तन की सङ्गति चलि जावैं ॥
बचन राखैं बिश्वासा। इत ने ठौर तुम्हार न बासा ॥
अस धाम त्यागि तुम देहू। बसौ जहां सोऊ सुनि लेहू ॥
न कथा राम की होई। हरि की भक्तिन जानै कोई ॥
न मानै पितु की सीखा। जेहिघर लहैन भिक्षुकभीखा ॥
क वृक्ष होइ जेहि धामा। तहां जाइ तुम करौ सुकामा ॥
हिंसा जाके घर होई। मदिरा माँस मीन भख जोई ॥
तजि पूजै भूत पिशाचा। बेश्यारत कह सत्य न बाचा ॥
नर जहँ तहँ बसिये जाई। मरे नरक महँ डार्यौ लाई ॥
भवन दीप नहिं बरई। गणिका आय नृत्यजहंकरई ॥
जूठनि जारा लपटाना। पर्व परे नहिं देवैं दाना ॥

सुता पराई घर मा आवे। रहै निरादर दुख जहँ पावे॥
पर्व परै भोगैं जो नारी। बसहुजाइ असभवन बिचारी॥
बासी अन्नजो दिनप्रति खावैं। जेहि गृह सन्त न आदरपावैं॥
कलह होइ जहं सांझ सकारे। साधु बिप्र जे करैं दुखारे॥
बिनादीप निशिभोजन खाहीं। बसहु दूत तिनके घरमाहीं॥
दो० मातुपिता कहं देहिं दुख करै कहैं जो बाम।
तहां बसौतुमजाइकै जे न भजहिं सियराम॥
आपु भक्त घर साकट नारी। सुतकलत्र सब मांस अहारी॥
तिनका छुवा जोभोजन खाई। भक्ति धर्म सबही घटि जाई॥
अवशि बसौतिनकेगृह सोधी। जे सत गुरु ते भये बिरोधी॥
छोड़े केश रहैं जो नारी। बहू सासुसे लड़ैं प्रचारी॥
मरघट चारि पन्थ जो होई। अजया पुत्र रहैं जहँ सोई॥
ये अस्थान कहे मैं बरणी। औरौ लेहु जानिलखि करणी॥
धर्मराज के बचन सोहाये। सुनि यमदूतन के मनभाये॥
गी०छं०भयोसुनत यमदूत पुर रबिपूत जो बरणन कियो।
उठिनाइशिरमनमुदितह्वैसबफांसमुगदरकरिलियो॥
यह दूतयम सम्बाद बर्णो सुनैं जे अरु गाइ हैं।
तेहि भूतअपर पिशाच यमके दूतानाहिं सताइ है॥
दो० लक्षण धर्मा धर्मके ऊंच नीच जे आहिं।
जन रघुनाथबिचारिकछुलिखेग्रन्थकेमाहिं॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागर श्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतगृहधर्मयमदूतकथाबर्णनोनामदशमोऽध्यायः १०॥

दो० सुमिरिराम सियसन्तगुरु गणपगिरा सुखदानि।
नासकेत भारत्थ की कहौं इतिहास बखानि॥
धर्मराजनिज गणनते बोले निकट बोलाइ।
गंगयमुन के बीच इक द्विज तेहि लावहु जाय॥

जामू गिरि ढिग बस्ती आही। तामें बिप्र रहत है वाही॥
नाम शाल मलि ताको जानौ। गोत्र अगस्त्य केर पहिंचानौ॥
पूरण आयु भई सब ताकी। लावहु बेगि नहीं अबबाकी॥
सुनि यम दूत सकल हरषाने। निज निजबाहन सबनपलाने॥
कोइ कूकर शूकर पर कोई। करमें गुर्ज भयानक सोई॥
कोई चले महिष चढ़ि बीरा। बड़े २ दसन लिहे धनुतीरा॥
कोइ खरपर आरूढ़ पिछाना। कारी देहं सुमेर समाना॥
कोइ मुरदा पर किढे सवारी। ठाढ़े केश गदा कर धारी॥
कोई सिंह चित्ता चढ़िधाये। लोहित लोचन भौंह चढ़ाये॥
कोइ बसहापर आसन कीन्हे। फांसी अरु मुद्गर कर लीन्हे॥
यहि भांतिन यमदूत सिधाये। बसत बिप्र जहँ तेहि पुरआये॥

सो० सोइ गोत्र सोइ नाम दूसर द्विजतामें रहत।
यम घुसिगेतेहि धामडारि फांसत्रासनलगे॥

दो० उभै घरीके बीच महँमारिलिहिनि द्विजसोई।
मुश्क बांधिलै चलत भे रहे कुटुम्बी रोइ॥
तात मात सुत भ्रात तनग्रामधाम धन जोइ।
सबजहँके तहँई रहे संग चल्यो नहिंकोइ॥

भूसुर कह आगे करि लीन्हा। यमपुर ओर पयाना कीन्हा॥
मृत्युलोक ते यमपुर जानो। सहस छियासी योजन मानो॥
आठ ठौर तेहि मारग माहीं। अतिशय कष्ट होत सुखनाहीं॥
प्रथमै दुइ सहस्र मगजोई। तामें दुख सुखकछु नहिं होई॥
एक सहस योजन तेहिं आगे। सिंह बहुत लखिअति भैलागे॥
जे बैठे साधन के माहीं। तिन्हैं दुःख तहँ ब्यापै नाहीं॥
योजन पांच सहस अस होई। कांटे परत लोह सम सोई॥
पायन में सो चुभि चुभि जावैं। तामें प्राणी बहु दुख पावैं॥
गजरथ बाजपालकी दीन्हा। ते नर तेहि चढ़ि जाते चीन्हा॥
उभै सहस योजन यहिभांती। बारू तपत रहत अति ताती॥

सोबरदान दिहिन जिनलोगा। तिनका तहां न ब्यापै सोगा॥
योजन द्वादश सहस अगारा। परत बिषम खांड़े की धारा॥
रथ कर दान काम तहँ आवै। नाहित नर अतिशै दुखपावै॥
आगे योजन आठ हजारा। मिलततहांजलगहिरअपारा॥
मही दान दीन्हें सुख पावै। उतरत पावन में छुइ जावै॥
योजन तीस अगारू जाई। अंधकार तहँ अति दुख दाई॥
दीप दान तहँ कामें आवै। ठाकुर द्वारे जौन बरावै॥
की ब्राह्मण घरकी मग माहीं। साध भवन की तुलसीपाहीं॥
तीरथ माहिं कथा के नेरे। बारि दीप ते जाहिं उजेरे॥
सो० आगे योजन आठ महा भयानक मग मिलत।
चढ़ा उतर के घाट होत तहाँ प्राणी बिकल॥
दो० तेहिके आगे मिलत है योजन सहस अठारा।
तपतभानु भूस शीशपर तहंअतितुदनअपारा॥
तेहि मारग में सो सुख पावै। कुंवा बावली ताल खोदावै॥
की पौसरा दीन बैठाई। की ठाकुर द्वारे पहुंचाई॥
अरु मारग में वृक्ष लगावै। ऐसा दान काम तहँ आवै॥
सहस छियासी योजन येही। पृथक् २ देख्यो द्विज तेही॥
आगे जाय यमपुरी तीरा। देखी तहँ एक नदी गँभीरा॥
नाम तासु बैतरनी आही। मज्जा रुधिर भरा तेहिमाहीं॥
गोजर बीछि सर्प अरु कीरा। उतरत पापी पावहिं पीरा॥
सौ योजन की चाकल सोई। देखत प्राणबिकल तहँ होई॥
जो अपने स्वामी को मारै। कन्या कामिनि द्विज संहारै॥
जीव बधै अरु सबै सतावै। पुर जंगल महँ आगिलगावै॥
तिन्हैं प्यास तहँ लागे भाई। रक्त पीब सोइ पीवैं जाई॥
दो० अमिष अहारी मदपिया ज्वारी चोर कसाय।
बटपारी जो पातकी दुख पावत अधिकाय॥
कोउ उछरत बूड़त कोऊ लहरिसंगबहिजात।

काहू बीछी सर्प बहु क्रीड़ा नोचे खात॥
सो० जोकोउ पापी होय ताहि रुधिरकीलखिपरै।
पुण्यवान कह सोइ देखि परै घृत क्षीरकी॥
छं० होमयज्ञ व्रत कीन दीन जिन अन्न को दानहिं।
पूजै द्विज त्रिपुरारि किये तीरथ अस्नानहिं॥
पुरट दान पटदान तुला गजबाजि जो दीन्हों।
आज्य मिठाई क्षीर दही पोथी दत कीन्हों॥
सन्तचरणमेंप्रीति जिनगुरुदिक्षालियजानिसुख।
ते बैतरणी शैल चढ़िउतरिजात नहिं होतदुख॥
जिन गोदान दीन्ह संसारा। पकरि पूंछसो हावैं पारा॥
यहिबिधि नदीउतरिद्विजपाई। पुरह यमपुरी देख्यो जाई॥
योजन सहस तासु बिस्तारा। तामें द्वारे चारि निहारा॥
पूरब उत्तर पश्चिम जानौ। चौथा दक्षिण द्वार पिछानौ॥
धर्मवान जो प्राणी भयऊ। सोतौ तीनि द्वार ह्वै गयऊ॥
दक्षिण द्वारे भे सो जाई। जो नर पाप कीन्ह अधिकाई॥
बिप्र साधु सुरभिन दुखदीन्हा। अरुबिश्वासघातजिनकीन्हा॥
दुष्ट बड़े तन मन दुखदाई। सब जीवन की तकैं बुराई॥
चोरी करैं चौपया मारैं। पक्षी पकरि फन्द में डारैं॥
कन्या बेंचि द्रव्य जे लेहीं। छल करिकै काहू बिष देहीं॥
हरिते बिमुख सदा जे रहईं। काम क्रोध तृष्णा बस बहईं॥
वेद पुराण शास्त्र नहिं मानै। गुरुते कपट सयान पठानैं॥
दुखीदीन कहँ आपु सतावैं। झूठी साखि भरन जे जावैं॥
साधू ब्राह्मण सेइन नाहीं। किहिनि नदा न पर्बके माहीं॥
अस प्राणी दक्षिण दिशि जावैं। यम किंकरतेहिबहुत सतावैं॥
दक्षिण द्वार गयो द्विज सोई। जायसालमसलिदेख्योजोई॥
दो० तहँासिंह बहुस्वान वृक सर्प्प गीध अरु भाल।
अन्धकार नहिं जान कोउ राति दिवस का हाल॥

नरक हजारन हैं जहाँ परे पतित रह रोइ।
त्यों त्यों मारैं दूतशिर रक्षक तहाँ न कोइ॥
तिनमें बड़ेजे मुख्यहैं नरक अठारह जानि।
भिन्न २ कर नाम अबसबके कहौं बखानि॥

पं०छं० प्रथमैंइककुंभीपाक जानि। अतिशैदुखदाईताहिमानि॥
जोबिप्रगऊ पशुपक्षिमारि। ब्रह्मचारीकोतपदेहिंटारि॥
अरुदानदेतहठकै जो नीच। सोपरतनरककुम्भीकेबीच॥
हैकुंभसरिसमुखछोटजासु। षोड़शयोजनबिस्तारतासु॥
तामेंमलमज्जाअतिनिहारि। दुखपावतपापीनररुनारि॥

क०छं० दूसरनरकअबीचि नाम। तामें पल नाहीं है अराम॥
गुरुअरु कन्याबधै कोइ। भक्ष्यअभक्ष्यजो खातहोइ॥
जोपाहुनआवैनिजनिकेत। तेहि न करै सनमान हेत॥
नरकअवीची परत सोइ। नरनारी चाहै सो होइ॥

हरिगी०छं० अबनरकतीसर नामरौरवहै भयानकसोमहां।
तेहिदेखिडरपतजीवबारू तपसरहतीहै तहां॥
पगजरतप्रणीकरतरोदनदौरिचहुंदिशिजावहीं।
अतिहोतव्याकुलएकक्षणबिश्रामनाहिनपावहीं॥

तो छं० जिनराजबिषेनहिंन्यावकियो।बिनऔगुनपर्जहिदंडदियो॥
जिनब्राह्मणवेदपढ़ेजु भले।तेहिमारगआपुसोनाहिंचले॥
केहुंआरतआइकै प्रश्नकरी। ग्रहटेढ़ बताइ सुवित्त हरी॥
धरिपाखंडरूप फिरैजगमें। हरिबिमुखसोबूड़िरहेअघमें॥
जपसंयम पूजननाहिं करैं। तपतीरथयज्ञ न ध्यान धरैं।
ब्रत दान कभूंजे ना करते। तम रौरव माहिं परैं नरते॥

चौथनरक गुरु जिमि है नामा। गुरुरसअसऔटत है तामा॥
जोकाहू की भाँजी मारै। अरु काहूका बुरा बिचारै॥
पट गुण लौण जो लोह चुरावे। गुरु जिमनरकसोईदुखपावै॥
पचवाँ कूपनरक तहँ सहई। तामें प्राणी अति दुख लहई॥

कूप समान बननि तेहि केरी। पीबरक्त कृमि तामें हेरी॥
तासु निकट बैठे बहु कागा। बड़ि२ चोंचभयानकनागा॥
परेजीव जबहीं उतराहीं। मारें चोंच रसातल जाहीं॥

दो० राम भक्ति जिन नहिं करी गुरुदिक्षा नहिं लीन।
रामनाम सुमिर्‌यो नहीं साधु सङ्ग नहिं कीन॥

सो० मानुष देही पाइ कह्यौ सुन्यौ नहिं रामयश।
दासी संग कराय कूप नरक महँ सोइ परत॥

छठवाँ कीट नरकहैं जानौ। तामें क्रोड़ा भरे बखानौ॥
पापिन के तन चोटैं सोई। तामें त्राश अधिकही होई॥
मारि मारि मछरी जिन खाई। ह्वै कृमिरहैं निरैमहँ जाई॥
भली बस्तु जो छिपिकै खावैं। अरुकाहू को अन्न चोरावैं॥
दुखी दीन लखि दया न करहीं। कीट नरकमहँ सोनर परहीं॥
सतवाँ असी पत्र बना नामा। ताके पत्र दुधारे श्यामा॥
पापिन को तामें घसि लावैं। कटि२ जांयबहुरिजुरिआवैं॥
त्राहि २ तहँजीव पुकारैं। त्यों त्यों दूतपरिघ सिरमारैं॥
जिन कोउ अपने मित्रहि मारा। काटि नहरि अरुवृक्षगवाँरा॥
कामी कुटिल अकारन क्रोधी। परनिन्दक गुरुसंत बिरोधी॥
राखा बरत भङ्ग जे करहीं। असी पत्रमहँसो दुख भरहीं॥

दो० अठवां दारुण नरक हैं जेहि देखत भय होय।
जे कामी हैं नारिनर तहँ पावैं दुख सोय॥
बहुत खम्भ नररूप तहँ बहुहैं नारि अकार।
बरत रहत एकरससदा दोउदिशकाष्टअपार॥

जो नर पर त्रिय गरे लगावैं। पकरि खम्भ महँताहि भेटावैं॥
कहै कि चीन्हि लेहुसोइ नारी। जेहिके सङ्ग कियो सुखभारी॥
जे त्रिय आन पुरुष संग करहीं। तहां जाय तेऊ दुख भरहीं॥
परवी परै बरत वा होई। तेहि दिन मैथुनकरै जो कोई॥
सोउ खम्भ महँ जात भेटावा। यमके दूत अधिक तेहिंतावा॥

कहेकि तुम मानुष तन पायो। करि २ मैथुन ताहि गवांयो॥
तुमते खर शूकर भल जानी। बरष २ सन्तोषै आनी॥
हरि की भक्ति कियो सो नाहीं। सहौ कष्ट अब दारुण माहीं॥
नवम नरक निरस्वास कहावै। तामें स्वास न घूंटी जावै॥
सो० ब्राह्मण बिधवा नारि। सुरु गुरु अंश चोरावहीं।
कहैं न बचन बिचारि। परै सोई निरस्वास महँ॥
दशवां कुल शंकुल है भारी। तामें तो अतिदुख अधिकारी॥
अग्नि समानजरत द्रुम रहहीं। दश योजन के चाकलअहहीं॥
योजन पांच घेर बिस्तारा। एक एक का न्यारा न्यारा॥
बंधे जँजीरन में तहँ पापी। हाय हाय बोलैं संतापी॥
ब्राह्मण क्षत्री शूद्ररु बैसा। भारी पाप कीन जिन जैसा॥
मारैं जीव मास लै खावैं। ते नर यही नरक दुख पावैं॥
गेरहों नरक सोई मुख नामा। सूची छेद परे जिव तामा॥
जिन सतगुरुकी निंदा कीन्हा। संतन दोष लगावत हीना॥
तीरथ वहि मुख वेद पुराना। सबहिन कीनिंदा जिनठाना॥
नारि बधै अरु बिप्र सतावै। सो सूची मुख नरकहि जावै॥
बरहों घोर नरक अस नाऊँ। सो बिकराल भयानक ठाऊँ॥
तामें सिंहस्यार अहि शूकर। भाल भेड़िया कागरु कूकर॥
जिन रसना हरिनामनलीन्हा। कटुक बाद साधनते कीन्हा॥
कबहुंन कोमल बचन उचारे। तेहि मुख नागलगावत कारे॥
सन्त दरश जिनकीन्ह्यों नाहीं। निरखिघरयोनहिंपगभूमाहीं॥
परत्रिय देखि कुदृष्टिहि झाँकैं। तिनकी काग निकारत आंखैं॥
जो कोउ पुरमें आगि लगावै। तिनका मांस भेड़िया खावै॥
जो कोउ बन पशु पक्षी मारै। ताका पेट सिंह धरि फारै॥
जो कोउ काहुइ मारै भाई। शूकर ताके हाथ चबाई॥
जिन हरिचरित सुनैनहिंजाना। सीस औटि डारै तेहि काना॥
जिन नर अमिष अहारैकीन्हा। गोला लाल पियावै लीन्हा॥

रोवत गोला करैं पुकारा। त्रास देइं यमदूत अपारा॥
तबतौ भरूयो परावा मांसू। अबकत रोवत बड़ेबड़े आंसू॥
कांट चुभत अपने दुख मान्यौं। परको संकट देत न जान्यौं॥
दो० बिनदावा नित रहत जे फूल पात चुनिलेत।
तिन्हैं मारि भक्षण किह्यो केवल रसना हेत॥
कर्म किह्यो जस भोगौ सोई। नरक अघोर माहिंअसहोई॥
तेरहों शूली नरक कहावै। शूली समदुख तामें पावै॥
जो नर पाप करै अधिकाई। करि शिकार मृग मारै जाई॥
साहक नर सूरी धरि दीन्हों। जिनबनकाहिं ठगाहीकीन्हों॥
काहू को शस्त्रन ते मारै। तेहि यम शूली नरकमें डारै॥
नरक चौदहों हैं दुख खानी। अग्निकुण्डतेहिनाम बखानी॥
तामें अग्नि बरै अति भारी। जाहि देखि डरपे नर नारी॥
मरैं जीव बहुताके माहीं। हाय हाय बोलैं घिघियाहीं॥
कोउ कहै मैं बहुत पियासा। जल पियाइ फिरदीजै त्रासा॥
दूतकहैं सुनुरे मति हीना। तूतो दया धर्म नहिं कीन्हा॥
प्यासेको जल नाहिंपियायौ। भूखेको नहिं कबहुं खवायौ॥
साधू ब्राह्मण अरु गुरु भाई। पूज्यौ नहीं कबहुँ घरलाई॥
ग्रहणपरे नहिं दीन्ह्योंदाना। पेटभर्‌यो नितबैल समाना॥
धृग धृगरे मूरुख नर लोई। अपना किया भुगत अब सोई॥
पानी माँगत कौने ज्ञाना। प्रथमै अग्नि कुण्डनहिं जाना॥
दो० नरक पन्द्रहों है जहां तेल जंत्रता नाम॥
कोल्हू कीसम सोबना डरत देखिनर बाम॥
जो चोराइ परखेतहि काटै। नितदिन मात पिता कहँडाटै॥
भूमि पराई लेइ छिनाई। पर पत्नीपरवस लै जाई॥
तुला चढ़ाय घाटि जो देवै। तेल यंत्र सो बासा लेवै॥
सोरहों नरकनाम दुख दाई। तामें तोहै दुख अधिकाई॥
जो मदपीवै आमिष खावै। झूठे काहू दोष लगावै॥

पर औगुण जो करै उघारा। दुखी दीन कहँ नाहक मारा॥
भक्ति छोडावै निगुरा करई। कहे कहाये जो पर हरई॥
दुखद नरकमें सो दुख पावै। जो नर कीन्ही कृत बिसरावै॥
सो० नरक सत्रहों जानि अन्धकार जेहि नामहै।
महा भयानक मानि तामें कछु सूझै नहीं॥
जे राकस अति निरदै कोही। तन अभिमानी हरिजनद्रोही॥
गरे बिराने करद चलावै। अन्धकार दुख सोई पावै॥
नरक अठारहौ हैं दुख धामा। हवै बिलोचन ताकर नामा॥
तामें नर अन्धा ह्वै जावै। भर्मत फिरै कष्ट बहु पावै॥
जो मग चलत जीव नहिं पेखै। क्रोध दृष्टिकै साधुहि देखै॥
अरु परि नारि कुदृष्टि निहारै। कण्टक तोरि बाटमें डारै॥
बिधवा नारि नयन जो आँजै। खाइ पानपर पतिके काजै॥
जो ठाकुर द्वारे नहिं जावै। साधु गुरू लखि शीशनवावै॥
अन्ध को देवै बहँ काई। परै बिलोचन में सो आई॥
दो० नरकअठारौं साल मह देखि डर्‌यो मनमाहिं।
तन काँपत सबकछु बचन मुखते आवत नाहिं॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदास
रामसनेहीकृतयमपुरीबर्णनोनामएकादशोऽध्यायः ११॥

दो० सुमिरिरामसिय सन्तगुरु गणप गिरासुखदानि।
बरणौं कर्म बिपाक कछु सोइ इतिहास बखानि॥
फिरि दूतन आगे करि लीन्हा। यमकी सभाठाढ़ तहँ कीन्हा॥
बिप्र बिलोकेउ धर्मक रूपा। मारकँड्यौ समतेज अनूपा॥
रतन जटित शिर मुकुट बिराजै। श्रुतिकुण्डल गलमालसुछाजै॥
चारि बेदके पढ़ने वारे। और मिमाँसा जानन हारे॥
बहुत शास्त्र रचि आप बनाये। धर्म हेत जगमांहि चलाये॥
बैठे सिंहासन हरषाहीं। शोभाक्रांति अधिकतिनमाहीं॥

और ऋषीश्वर बहु सतिबादी। धर्मराज ढिग तिनकी गादी॥
जीवहिं जब यम गण लैजावैं। ठाढ़ करैं रबि सुतके ठावैं॥
तहँ महिशेष वहाँ लै जावो। चित्रगोपित्रै याहि दिखावो॥
दो० गुप्त प्रकट पुनि पापजो करत जीव जग माहिं।
सो सब लिखि २ धरतहैं तनको चूकत नाहिं॥
पाप पुण्यते सब कहि देहीं। रबिसुतनिजकाननसुनिलेहीं॥
धर्म सहित तब न्याव चुकावैं। जो जसकरैं सोतसफलपावैं॥
पापिनको लै नरकमें डारैं। यम किंकर शिर मुद्गर मारैं॥
धर्मवान ते स्वर्ग सिधावैं। आगे बाजन बाजत जावैं॥
पहुंचैं स्वर्ग निकट जब जाई। आगे मिलैं अप्सरा आई॥
नृत्य करत भीतर लैजावैं। सिंहासन ऊपर बैठावैं॥
कहैं कि हमहैं तुम्हरी दासी। रहिये एक कनेबच खासी॥
देव देव कहँ करैं निवासा। हेमालै सुख भोग बिलासा॥
अबसो पुण्य कहौं समुझाई। जासे बसत स्वर्ग महँ जाई॥
जिन नरदानद्विजनकहँ दीन्हा। काहूकर अपमान न कीन्हा॥
सब जीवन की दया बिचारैं। काहुइ दुख देवैं नहिं मारैं॥
वेद पुराण सुने सुख पावैं। कथा कीरतन में मनलावैं॥
योग तपस्या तीरथ करहीं। संयम सहितबरत अनुसरहीं॥
भांड़े बस्तर घोड़े हाथी। गोवैं दई बाछुरा साथी॥
कन्द मूल फल अन्नजो दीन्हा। बिप्र साधुकर आदर कीन्हा॥
मगमें वृक्ष बिपुल लगवाये। कूप बावली ताल खनाये॥
कार्तिक माह बैशाख नहाये। नांगे पगसो पर पहिराये॥
औरौ धर्मबिबिधि बिधिकीन्हा। स्वर्ग माहिंतिनबासा लीन्हा॥
दो० जोकोइ करै सो आपुको परको करै न कोइ।
अपना कीन्हा पाइहै ऊंचनीच किनहोइ॥
जिन कोउ गुरुतेदिक्षा लीन्हा। मनलगाइ हरिसुमिरणकीन्हा॥
साधन की सेवा नित करहीं। मुखते बचन मीठ उच्चरहीं॥

दान करै सो हरिको अरपै। बोलै सत्य झूठनहिं जलपै ॥
करै भक्ति सतसङ्गति जावैं। अस नर ते बैकुण्ठ सिधावैं ॥
तिनको धर्मतीर नहिं न्याऊ। जे हरि भक्तिकरैं सति भाऊ ॥
याबिधि धर्मराज के पासा। जाइ न एको हरिका दासा ॥
पापिन को यमयहिबिधिकरहीं। प्रथमै नरक माहिं लै डरहीं ॥
बहुत काल लगि नरक भोगाई। फिरि जगमें जनमावत भाई ॥
पूरब जिन जस कीन्हें कर्मा। तैसा आइलेत जग जन्मा ॥
जोनर ब्राह्मण हत्या कीन्हा। जन्मनिपुत्री तेहि जग चीन्हा ॥
गऊ पापते होइ मलेक्षा। जोनहिं करै जीवकी रक्षा ॥
जोकाहू का सोन चोरावै। जन्म पाय कुष्टी ह्वै जावै ॥
मदिरा पीने मेडुक होई। मारै पंथ रोग युत सोई ॥
द्विज पुस्तक पढ़िनाहिंबिचारा। बहुत रहे बिषायाकी धारा ॥
हरिकी भक्ति करी सो नाहीं। तेई होत सर्प जगमाहीं ॥
जिन गणिका की संगति ठानी। रासभ होत आइ सोइ प्रानी ॥
जोद्विज मांस अहारी होई। ताको दान देइ जो कोई ॥
दोनों गीदर का तन पावैं। परकी निंदा मुख करि गावैं ॥
जिनपल दानदीन अधिकारा। पावैं बाघ सिंह अवतारा ॥
जोकोइ कन्या होती मारै। सो गिरगिट की देही धारै ॥
झूठा बाद बिबाद बढ़ावै। सो कच्छप की देही पावै ॥
देबे योग्य दान नहिं करहीं। सोशठ बगुला का बपु धरहीं ॥
दान देत जो बरजै कोई। सोतौ लदुवा घोड़ा होई ॥
कर्ज खाइ कोई मरि जाई। ह्वैकै वृषभ भरैसो आई ॥
जो साधुन की निंदा कीन्हा। शूकर केर जन्म तिन लीन्हा ॥
जोकोइ धरी धरोहरि नाटै। अरु पक्षिन के परजो काटै ॥
साधहिं दोष लगावै जोई। सोइ बिष्टाकर कीड़ाहोई ॥
जोकाहू का लोह चोरावै। होइ नहारू बहु दुख पावै ॥
जोकाहू को अन्न चोरावै। होवै बहिरा सुना न जावै ॥

दो० ब्राह्मण अरुहरि भक्तकहँ लातन मारैजोइ।
जन्म पाइ जगके बिषे सोई पंगुल होइ॥

आपु होत गुरु गुरू न कीन्हा। सोई बिलार होत हम चीन्हा॥
जोनित क्रोधी हरषै नाहीं। सोई होत नकुल जगमाहीं॥
दै बिश्वास करै दुष्टाई। सो ह्वै कुरँग बसै बन जाई॥
दान देइ पाछे पछितावै। सोनर जन्म मेषकर पावै॥
जिन करपूर कपास चोराई। सोशुत्रा होवै सतिभाई॥
बैलै बधिया करै करावै। सोइ नपुंस क्लोवा ह्वै जावै॥
जो अनहोती करै लड़ाई। सो बनकी माखी ह्वै जाई॥
गुरु ब्राह्मण का अंश चोरावै। सो मरुदेश भुवँग तनु पावै॥
नरतन पाइ करै परपीड़ा। सेा होवै मोहरी का कीड़ा॥
ज्ञान पाइ गुरुते फिरि जावै। सेा शरीर कोढ़ी का पावै॥
जो संतन की हाँसी करई। जन्म पाय सिरी ह्वै मरई॥
भीतर कपट उपरते प्रीता। सेापापी धारै तन चीता॥
पर प्रमदनते जो रति करहीं। सेा जगमाहिं श्वानबपुधरहीं॥
देखि दोष जो आमिष खावै। सेा नर गीधकेर तनु पावै॥
पाप सहितजिन दीन्हो दाना। सोई होत द्विरद जग जाना॥
हरिजन माहिं छूतिजिन मानी। होत छछूंदरि सेा मलखानी॥

सो० बिना लगाये भोग जे नर भोजनकरत नित।
होत तासुतन रोग जन्म मिलत तेहि कागकर॥

दो० जहँलगि खोटेकर्म हैं सेासब दुखकीखानि।
सोई करि नर परत हैं चौरासी में जानि॥

स्वर्गी पुण्य क्षीण ह्वै जावै। पुनिसेा मृत्युलोक को आवै॥
नरतन मिलै तिन्हें अतिपावन। सुत बनिता धनधामसोहावन॥
फिरि धर्म करै स्वर्गसुख पावै। अधरम करै तौ नरक सिधावै॥
हरिकी भक्ति करैनहिं जबलौं। आवागवन मिटैनहिं तबलौं॥
यहि भांतिनयमलेखा लीन्हा। जेहिजस चहीताहितसदीन्हा॥

पाछे यमगण द्विजै दिखावा । लखिहरि तिनतेबचनसुनावा ॥
रेदूतौ मति मन्द अनारी । आजु कसूर किह्यो तुमभारी ॥
अस्य नाम द्विज और रहायो । ताको तजि याकोलै आयो ॥
सुनि यमदूतन बचन बखाना । धोखे नाथ इन्हैं हम आना ॥
तब धर्मराज द्विजै सनमान्यो । मनमें निज अपराधपिछान्यो ॥
कैसो पापी होवै कोई । बिना अवादे आवन सोई ॥
यहु द्विज बिना अवादे आयो । अस बिचारियमबचनसुनायो ॥
दो० हेद्विज तोकोदेखिकैलागिदयाअतिमोहिं ।
जोभावै सेा माँगुबर आजु देहुँ मैं तोहिं ॥
कह द्विजजोप्रभु किरपा कीजै । तौमृत्युलोकजान मोहिंदीजै ॥
जेतनी मोरि आयु है बाकी । तेतनेदिवस वहां मोहिंराखी ॥
अबलगि मैं कछु धर्मनकिहेऊं । झूठे जगत माहिंमन दिहेऊं ॥
जबते देख्यों पुरी तुम्हारी । नरकनिरखिलाग्यो डरभारी ॥
ताते असमत मोसे कहिये । जाते फिरि तव धाम न ऐये ॥
कह यम पापी पुण्यी दोऊ । मोरे पुर आवत है सोऊ ॥
रामभक्ति जग करै जो कोई । तिनपर मेरा दंड न होई ॥
चक्र एक दिशि रक्षा करई । एकदिशिगरुड़न कबहूं टरई ॥
एक ओर सब पार्षद दौरैं । हरि रक्षा तिनपर सब ठौरैं ॥
तिन्हैं बिरोधि कहौं कितरहऊं । मन क्रमबचन सत्यमैं कहऊं ॥
ताते द्विज अब जगमें जाई । सुख प्रद भक्ति करौ हरषाई ॥
बिन हरिभक्ति इन्द्र सुखपावै । पुण्यक्षीण मृत्युलोकहिआवै ॥
राम भक्त कोपातन होई । भक्ति बीज अजरामरसोई ॥
सुनि द्विजधर्महि शीशनवायो । तुरतपलटिमृत्युलोकहिआयो ॥
मृतक शरीरमाहिं पुनिजाग्यो । लखिगृहबासिनकोदुखभाग्यो ॥
पर्‌यो कोलाहलनगर मँझारी । सुनत चले देखन नर नारी ॥
भई भीर बहुबिप्र निकेता । आये चलि पुरबासी जेता ॥
पूछन लगे कहां तुम गयऊ । केहिभांतिनफिरिआवतभयऊ ॥

कहा सालमल यमगण आये। महा भयानक रूप बनाये ॥
मारि मोहिं यमलोक सिधाये। आठ ठौर मगदुख अति पाये ॥
दीखि एक बैतरणी धारा। तामें पीबरक्त कृमि छारा ॥
गयन यमपुरी दक्षिण द्वारे। तहां हजारन नरक निहारे ॥
तिनमें जीवपरे कृत शोरा। देखत धीरज भाग्यो मोरा ॥
दूत हमें लैंगे यम पासा। तिनमोहिंदेखत बचन प्रकाशा ॥
याके नाम और द्विज भाई। तेहितजियहिदीन्हों दुखआई ॥
मोसे कहिनि माँगि बर लीजै। मैं कहबहुरि जानमोहिं दीजै ॥
और बात इक देहु बताई। जाते फिरि तवलोक न आई ॥
तिन कह राम भक्ति करु जाई। कबहुंन नरकपरहु पुनि भाई ॥
ज्यहिविधिगयनजवनविधिआयन। सोहमतुमतेबरणिसुनायन॥
जे नर चतुर सुजान सुकर्मी। लागे करन भक्ति मिलिमर्मी ॥
आपु साल्मल गुरुहि बोलाई। राम मंत्र लीन्हों हरषाई ॥

ह०छं० लीन्हों हरषि द्विजमंत्रतारकबहुतविधिउत्सबकियो।
पितुमातुसुततियबन्धुकोउघररहनसाकतनहिंदियो॥
करिनेम सुमिरै नाम पूजन ध्यान नित हरिको करै।
सतसंग साधन सेव हरियश कहैसुनि मनमें धरै ॥

दो० यहिविधिरघुपतिभक्तिद्विजकीन्हींअतिअभिराम।
अन्त समय सब कुटुम्बलै बस्यो रामके धाम ॥
जन रघुनाथ बिचारिकै भक्ति करौ सतिभाय।
नातरु फिरि पछिताहुगे नरतन बीतो जाय ॥
बहुत जन्म सुकृत कियो ताको फल नर देह।
कहै रघुनाथ सो पाइकै जन्म सुफलकरि लेह ॥
चौरासी लख कोशमें एक दरवाजा छोट।
ताही पाइ जो नाकढ़ै तो फिर भरमै कोट ॥
काल सिचानो शिर खड़ो ताहि डरै नहिं नेक।
फूलो फिरै समुद्रमें करत कुकर्म्म अनेक ॥

आखिरको फिरना रहै मरना तोहिं बिशेषि।
ताते हरि भजि लीजिये यहीलाभ मन पेखि॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथ दासरामसनेहीकृतगृहधर्मकर्मबिपाकबर्णनो नामद्वादशोऽध्यायः १२॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु गणपगिरासुखदानि।
बरणो महभारत्थ की पुनि इतिहास बखानि॥
कहसौनक यह जगत में कोउधनी कोउ रंक।
कोइ भोगी रोगी कोऊ भूपति भिक्षुक शंक॥
कोउनिशिदिनदुखहीसहतकोउजनमतमरिजात।
कोउजियत बहुकाल तक कोउ बिनपुत्रलखात॥
काहूके जननी जनक मरत बालपन माहिं।
सो यह कारण कौनहै कहो नाथ मोहिं पाहिं॥
सुनि तब सूतबचन असभाखा। लखि अधिकारीगुप्त न राखा॥
सौनक जो तुम पूछेउ आई। सो सब कर्म प्रभाव लखाई॥
कर्मते दुख सुख रोग अरोगी। कर्मते भिक्षुक भूपति भोगी॥
कर्मते मरै बाल पितु माता। और बात कछु नाहिं न ताता॥
एक इतिहास कहौं अब गाई। जाहि सुनतबहुव्याधिनशाई॥
एकद्विजगुणनिधिनामसुजाना। सर्ब शास्त्रन को जेहि ज्ञाना॥
तेहिके एक कन्या भै आई। नाम सुबर्ता छबि अधिकाई॥
चारि बर्ष की भई कुमारी। तबहीं तासु मरी महतारी॥
तबगुणनिधिनिजमनहिंबिचारा।बिनत्रिय भवनबसब धिक्कारा॥
कन्यायुत सो बनहिं सिधायो। तामें मुनि आश्रम बहु पायो॥
तिनके ढिग एक कुटी बनाई। रहनलग्यो द्विज अतिहरषाई॥
करन लागिकन्यहिप्रतिपाला। बिप्र जानि ये बड़े दयाला॥
बिबिधि भांतिके चित्र बनावै। लाय खेलौना ताहि खेलावै॥

राखै ताहि प्रसन्न सदाहीं। होइ उदास कबहुं सो नाहीं॥
मातुहीन अरु बाल कुमारी। तेहिहितद्विज संन्यासन धारी॥
भई सुबर्त्ता जबै सयानी। तब द्विजब्याहकरनमनआनी॥
इतने माहिं काल धरिखायो। मनइच्छासो करन न पायो॥
मृतक पितहिलखि कन्या रोवै। ब्याकुल अधिकधीरनहिंहोवै॥
कहै सुबर्त्ता बहु बिधि बानी। पिता पिता कहि रोदनठानी॥
दो० मोको तजि कितको गयो अहो पिता परबीन।
दयावन्त सब भांति तुम मैं कन्या अतिदीन॥
अब इत रक्षक कौन हमारा। मात पिता भ्राता नहिंप्यारा॥
हाय हाय मैं काकर्म कीन्हा। ऐसा दुःख दैव मोहिं दीन्हा॥
जरौं अग्नि की जलमें बहिहौं। कीचढ़ि गिरि२महिमरिजैहौं॥
पटकै दोउकर शिरभू माहीं। बिनपितु मा मम जीवननाहीं॥
सुनि कन्याका रोदन भारी। उठि दौरे ऋषिसंयुत नारी॥
सो० आये सब तेहि तीर समझावैं बहुभांति करि।
धरै न मन में धीर तात मात कहिशिरधुनै॥
ऋषि पत्नी बहु करैं प्रबोधा। नहिं उपजै ताकेउर बोधा॥
लखि यमके मन करुणा आई। तत्क्षण द्विज का रूप बनाई॥
पहुंचे आइ सुबर्ता तीरा। कह्योबचनमृदु सुखदगँभीरा॥
दो० हे कन्या मति रुदन करु धरु धीरज मनमाहं।
अपने कर्मन केर फल जाय कहूं सो नाहिं॥
आगे करै सो अब भुगतावै। अब जो करैसो आगे पावै॥
कल्पकोटि तक घटै न सोई। अवशि मेव भोगन कहँ होई॥
कर्म बीज होनी फल अन्ता। तेहि निरवंत होतकोइसन्ता॥
ताते कुंवरि न रोदन कीजै। पाछिलकर्म किह्यो तस लीजै॥
कह कन्या भाषौ प्रभु तौना। पूरब कर्म कीन्ह हम कौना॥
बिप्र कहा सुनु सुता सयानी। प्रथम जन्मतव कहौंबखानी॥
पूर्व जन्म गणिका तैं अहई। उजयनि नगरमाहिं घररहई॥

सुन्दर रूप नयन चपलाई । जेहि चितवैतेहि लेइलोभाई ॥
पुरके लोग बहुत बश तेरे । जो तुम कहौ करैं वहिबेरे ॥
तेहि पुर बिप्र रहे इक जानो । पुत्र तासु विद्वान पिछानो ॥
पूजा करै धर्म शुभ साधै । पाप कर्म नहिं कछु अवराधै ॥
एक दिवस सो सहज सुभाई । तव द्वारे ह्वै निकसो आई ॥
देखि तुम्हैं भूल्यो बुधि ज्ञाना । रह्यो ठाढ़ तहँ मनो दिवाना ॥
तब तू जानि ताहि बोलवावा । आदर करि निजढिगबैठावा ॥
वाकी प्रीति तुम्हीं से लागी । मात पिताबनितानिजत्यागी ॥
तेरे बिषय बसै दिन राती । चलतफिरतहियतोहिंसोहाती ॥
इक दिन तेरे भवन मँझारा । दूसर कामी आइ पधारा ॥
बिप्र शूद्र ते भई जो रारी । शूद्र द्विजै तहँ डार्‌यो मारी ॥
दो० यम किंकर तेहि लै गये डारेनि नरक अघोर ।
शूद्र तुरन्तै भाग तब भयो नगर महँ शोर ॥
काहूद्विज गृह आइ पुकारा । तव सुतगा गणिकाघरमारा ॥
सुनि पितुमातु नारि दुख पाई । रोदन करत धाम तव आई ॥
पुत्र बिलोकि अधिक दुख पागे । तोको शाप देन तब लागे ॥
तासु मातु बोली असि बानी । पुत्र बियोग न धीरज आनी ॥
हे बेश्या तैं सुत बश कीन्हा । यंत्र मंत्र करिधन हरिलीन्हा ॥
फिर ताको डारे मरवाई । हमकहँदुख दारुण दिलवाई ॥
पुत्र बिछोह कराये मोहीं । मातुहीन होई दुख तोहीं ॥
दो० पिता तासु ऐसो कह्यौ बाल अवस्था माहिं ।
पिता तोर मरिजाइहै जहां हितू कोउनाहिं ॥
कह्यो भार्य्या पति बिना मोहिं कियेतैं जैस ।
रह्यो कुंवारी नाह बिन सह्यो कष्ट तुमतैस ॥
ऐसे तोको शापजो दई तिहूँ मिलि जानि ।
तातेदुखयहिउमिरिमें भयो कर्मगति आनि ॥
सो० भले बुरे जो कर्म बिन भोगे छूटत नहीं ।

धरै जो कोटिनजन्म संगनछाड़तएकक्षण ॥
सुनत सुबर्ता बोली बानी। द्विजतुम कहासत्यमैं जानी ॥
जन्म पाछिलो तुमकहि गावा। जेहि क्रमतेमैं असदुख पावा ॥
इक सन्देह होत मन मोरे। सो अब पूछतहौं करजोरे ॥
मेंदारिक अति अधम अपावनि। बहु नाहनते नेह लगावनि ॥
बिषय मनोरथ नित प्रति पाले। बहु मनुष्य के घरमैं घाले ॥
जननि जनक कुलधर्म सो त्यागे। जे मेरे सँग नेकहु पागे ॥
कहौं कथा सब पापै कीन्हा। भलोकर्म स्वपनेनहिंचीन्हा ॥
द्विजकुल जन्म कौनबिधिपायों। सबदिन खोंटे कर्म कमायों ॥
अरु तुम दरश दियोकिमि आई। सुनि भूसुर बोला सुखपाई ॥
दो० जौन कर्म ते बिप्रकी सुता भई तू आइ।
दीन दरश में पुण्यजेहि सुनुसो कहौं बुझाइ ॥
एक बिप्र हरिभक्त सुजाना। समदरशीगुणज्ञाननिधाना ॥
गो गज श्वान बिप्र चंडाला। सबमें इकदीखै नँदलाला ॥
जप तप आदि धर्म जो ठानै। तेहिकर फल अर्पैभगवानै ॥
इंद्री जीति घेरि मन राखै। झूठ बचन मुखते नहिंभाषै ॥
कामरु क्रोध मोह मद त्यागी। रहितलोभहरिपदअनुरागी ॥
मैं अरु मोरि तोरि नहिं जानै। दुखसुखकोसामान्यपिछानै ॥
नहिं कछु आश्रम बंधन ताके। कुल कुटुम्ब करमोहनजाके ॥
जित चाहै तितही बसि रहई। हर्ष शोक नहिंबिस्मयगहई ॥
एक दिवस पुरबासा लेवै। दूजेदिन तहँते चलिदेवै ॥
बिचरत सहज सुभाय सोहायो। यकदिनगर तुम्हारे आयो ॥
देखि श्वेत तव द्वारे माहीं। बस्योसंतनिशिखोटपननाहीं ॥
मैले बसन शरीर कृशाना। त्यागे बिषय भोग जो नाना ॥
आधी रात भई निशि नासा। बैठे भजन करै हरि दासा ॥
दो० तेही समय कुतवालकी फेरी पहुँची आइ।
कह्यो सन्त सो कौन तू सोतौ मौन रहाइ ॥

तिन्हैं उतर कुछदियो न जबहीं। चोर २ कर पकर्‌यो तबहीं॥
द्विज कछु साँच बचन समुझायो। दुष्टन मन बिश्वास न आयो॥
खैंचि चले लै अपने साथा। नहिंकछुदुखमान्योद्विजनाथा॥
तैं जागे अपने घरमाहीं। शोर सुनत आई तिनपाहीं॥
दीख मँगाइ द्विजै दिखरायो। तब तुम तिनतेबचनसुनायो॥
जोयह चोर होइ सुनि लीजै। तौ चाहोसो हमको कीजै॥
सुनि तव बचन दिहिनछुटकाई। करगहि तू निज मंदिरलाई॥
चरण पखारि पलँग बैठावा। धूप दीपकरि पदशिर नावा॥
कह्यो कछुकदिन ममगृहरहऊ। पहिरौबसनजौनबिधिचहऊ॥
षटरस भोजन करौ बनाई। जाते देह पुष्ट ह्वै जाई॥
सुनत सन्त बोल्यो शुभ बानी। ज्ञान विराग भक्तिरससानी॥

दो० धन्य मातु तव भाटको मोहिं चही कछु नाहिं।
वृथासकलसुखजगतके बिनसिजात क्षणमाहिं॥
क्षुधा तृषा सुख भोगकी कछु इच्छा नहिं मोहिं।
सहज आइ निकस्यों इहाँ सत्य सुनायो तोहिं॥

तुम समान मैं और न चान्हा। पर उपकार आजुतैं कीन्हा॥
पर उपकारी धनि नर नारी। भवसागर सो होवै पारी॥
तुमपर तुष्ट होइँ भगवाना। मेटैं जगकर आवन जाना॥
मोको कछु चहिये नहिं माई। करहुशयननिज सेजहिजाई॥
यहिबिधि संत कह्यो समुझाई। तबतें पुनि बोली शिरनाई॥
महाराज मैं धनिहौं आजू। दरशन पाइ सरे सबकाजू॥
पाप चारिणी मैं असिनारी। जेहिभवतरौंसोकहोबिचारी॥
कह्यो सन्त भव तरो जो चाहै। तौहरि शरण आइकै गाहै॥
काम क्रोध मद मोह निवारै। निर अभिमान दंभ परिहारै॥
तृष्णा लोभ मछरता दहई। इन्द्रिन के मारग नहिंबहई॥
थिर स्वभाव एकान्त निवासी। दुखसुखसमचितधर्मप्रकाशी॥
उपज्यो न ताहि मृतकपहिचानै। मिले न हर्ष शोक गय आनै॥

नाशवन्त सब जग का देखै। आतम अचल अखंडित पेखै॥
सम दम शील दया उरराखै। गुरुते गर्बित बचन न भाषै॥
पर दुख देखि तासु दुख हरई। हरिहर जनको सेवा करई॥
राम नाम सुमिरै मन लाई। राम छाँड़ि चितअन्तनजाई॥
ऊठत बैठत भोजन पावत। श्वासश्वासप्रतिनामैध्यावत॥
आन उपाय सकल परिहरई। केवल रामनाम व्रतकरई॥
सो संसार तरै सति मानो। यामें कछु सन्देह न आनो॥
मुक्त होइ भव बंधन छूटै। फिरितेहिंयमकिंकरनहिंकूटै॥
ताते तुमहूं येही कीजै। नरतनपाइ सुफलकरिलीजै॥
भय निद्रा मैथुन आहारा। सबयोनिनमें मिलतनिहारा॥
हरि सुमिरण याहीते होई। सबयोनिन समताहिनखोई॥
दो० ऐसे तोहिं उपदेशही करत भयो भिनसार।
साधू उठि रमतो भयो धरि हरिपद उरसार॥
तब तोहिं उदय भयो बैरागा। बिषयबिलासबमनसमत्यागा॥
धर्म वृत्ति हिरदय महँ धार्‌यो। कंचनमृतिकासरिसनिहार्‌यो॥
तजि घर बनमें बासा कीन्हों। रामचरणपंकज चित दीन्हों॥
द्विज रक्षाकरि हरिको ध्यायो। जन्मबिप्रकुलतेहिपुनिपायो॥
प्रथमैं द्विजन शापजो दयऊ। तेहिते तोहिं दुःखयहभयऊ॥
संत कृपा यम जाल न परेऊ। संत कृपा सब पातक जरेऊ॥
संत कृपा ते नरक न लहेऊ। चौरासी बिच नाहिन बहेऊ॥
संत कृपामैं दरशन दीन्हो। पूर्व कर्म तव बरणन कीन्हो॥
यह मैं भेद सकल कहि गावा। जोतुम पूरब कर्म कमावा॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतसुबर्त्ताकथाबर्णनोनामत्रिदशोऽध्यायः १३॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु गणप गिरा सुखदानि।
कहौं मिमांसा शास्त्र मत सोइइतिहास बखानि॥

सुनत सुबर्त्ता बचन उचारा। नाथ शोक तुममोर निवारा॥
तदपि सुरति करि दुखहैं आवत। मोहबिबशमनबोधन पावत॥
ताते बात कहौ अब सोई। जाते फिरि मोहिं दुःखनहोई॥
कह द्विज सुनु कन्या मनलाई। तहँदुख जहँसनेह सरसाई॥
बिन सनेह दुख होय न कैसे। शुक मूषक सुतसेदज जैसे॥
सब जीवन में समता आनै। शत्रुमित्र मध्यस्त न मानै॥
बपुधरि हानि लाभ जो होई। कर्मन के शिररावै सोई॥
जैसे नारि गौतमी कीन्हा। पुत्रशोक तेहिभयो न चीन्हा॥
कह कन्या सुनिये द्विज राई। कथा गौतमी की जो चलाई॥
मैं अज्ञान न ऐसे जानो। ताते कर बिस्तार बखानो॥
बोला बिप्र कुवँरि सुनि लेहू। कहौं कथा तामें मन देहू॥

दो० ज्ञानवन्त धीरज बड़ी दया हृदय बैराग।
नारि गौतमी जानिये हरि पदमें अनुराग॥

करै तपस्या बनके माहीं। परमकठिनकहिजातसोनाहीं॥
ताके रहै पुत्र एक जानो। खेलै तहँ निर्भय पहिचानो॥
यकदिन एकतरू शिशुगयऊ। काट्योसर्प तुरित मरिगयऊ॥
तहँ यक बधिक देखि यहुहाला। डारिफांसपकर्योसोइब्याला॥
लायो जहां गौतमी रहई। तासों बधिकबचन असकहई॥

अ०छं० बालक तिहारो। सर्प ने सँहारो॥
बड़ो दुष्ट जान्यो। पकरिताहिआन्यो।
तजो नाहिं पाको। बल लेव वाको॥
यही नाय पोषी। भयो ब्रह्मदोषी॥

ऐसे बचन सुने भयकारी। बोलत भई गौतमी नारी॥
अहो बधिक मैं कहौं सो कीजै। अबहीं छांड़ि सर्प को दीजै॥
याहि हते सुत जीवै नाहीं। वृथा धरैक्यों अघ शिरपाहीं॥
कह्यो कीर हिंसक ठग कोई। ताहि बधे कछु पाप न होई॥
बालक दोषी सर्प अनारी। मैं तो याहि डारि हौं मारी॥

सुनि गौतमी कही असबाता। मुयेक कहा करै तू घाता॥
कामी क्रोधी हिंसक रोगी। अयशी कृपण दरिद्री शोगी॥
मूढ़ मूढ़ तृष्णा के जारे। राजअग्नि जल सिंह बिदारे॥
राम बिमुख निन्दक अभिमानी। पापी कोल कालबश जानी॥
बेद विदूषक हरिजन द्रोही। भुजँग भूत तन पोषक होही॥
ये सब जीव मृतक सम जानो। मुरदै कहा मारनो ठानो॥
अपने कर्मते मर्‌यो कुमारा। अपने कर्म तुम जाय निहारा॥
अपने कर्म सर्प बधि आवा। जसकीन्हेसि तैसा फलपावा॥
परको दुख देवै जो कोई। सोई दुख ताहू कहँ होई॥
बोलै गिरा कूप को जैसी। वाही समय मिलै तेहि तैसी॥
जो दरपन का थाप उठावै। तैसो थाप ताहि बनि आवै॥
पिछिले जन्म कर्म किय जैसे। भोगे देह धारिकै तैसे॥
बालक नहीं सर्पने मार्‌यो। वाके कर्म वाहि संहार्‌यो॥
तेहि ते बधिक छांड़िदे येहू। दोष भुनङ्गहि नाहक देहू॥
सुनि गौतमी केर अस बैना। बोला उरग पाय उर चैना॥
यामें है कछु दोष न मेरा। मैं तो फिरौं मृत्यु का प्रेरा॥
बालक मोते कैयो बारा। भई भेट इहि बिपिन मँझारा॥
डस्यों न मैं तेहि सहज सुभाये। बिना मृत्यु की आज्ञा पाये॥
अस सुनि मृत्यु तहां चलिआई। बोली बचन सत्य सुखदाई॥

सो० हौं नहिं खायो बाल नहीं बध्यो यहि सर्पने।
दई जो आज्ञा काल सोइ करौं मैं आइकै॥

मैंहौं कालराय की चेरी। आज्ञा होइ ग्रसौं वा बेरी॥
काल कहै ताको मैं खाऊं। बिनानिदेश निकटनहिंजाऊं॥

भु०छं० सुने बैन ऐसे जबै काल राया।
धरी देह छिप्रै उसी ठौर आया॥
कह्योसर्प नाहीं नहींमृत्यु मार्‌यो।
नहीं रोग कोई जुमैं नाश धार्‌यो॥

करै कर्म जो जैस तैसाहि पावै।
बिना भेद जाने हमै दोष लावै॥
मरै औ जियै वृद्ध बालक जवाना।
सोतो कर्महीं ते नहीं और आना॥
कोई कर्म कैकै बहुत काल राहै।
कोई कर्म कैकै अगिनिमें न दाहै॥
कोईकर्म कीन्हों हमैं जीति लीन्हो।
बस्योबिष्णुके धाम बिश्राम चीन्हो॥

दो० कोइ कर्म करि नीचते भये ऊंच कोइ गर्त्त।
कोइ बोरत तारत कोई सिरजत पालत हर्त्त॥
कोइ जल डूबै तरु गिरै अगिनिजरैबिषखाय।
कोई सहस्र न रोग कोउ सर्प डसे मरिजाय॥

काहुइ सिंह भेड़िया खावै। कर्मकिहिन तसिमृत्युहिपावै॥
चित्रकेतु सुत गजवै जनमा। रानी सकल गिंजाई बनमा॥
पगतर पीसि गई मरि जोई। बिपदै बदला लीन्हेनि सोई॥
कीर बिछोह जानुकी कीन्हों। ह्वैसोरजक निंदिबनदीन्हों॥
दशरथ दुख अंधन का दयऊ। पुत्रशोक तनु त्यागत भयऊ॥
चतुरानन कन्या को धायो। तेहिक्रमते शिवशीशगिरायो॥
बालिहि राम बाण ते मार्‌यो। द्वापरमें सोइ बदलबिचार्‌यो॥
कीर भयो द्वापर महँ सोई। कृष्ण चरण मार्‌यो शरजोई॥
गांधारी सुत शत गे मारे। कमठ अंड रुज हेत बिदारे॥
कर्म ते इन्द्र भाल भग पाई। कर्म ते नृपबर भयो जटाई॥
कर्म ते भे नृग नहुष कुजंतू। कर्म ते रबिशशि राहु ग्रसंतू॥
हरि बिंध्याते जो छल कीन्हा। तेहिक्रमआप जन्मजगलीन्हा॥
नारद शाप विष्णु कहँ दयऊ। कर्मते शम्भुलिङ्गगिरि गयऊ॥
कहँलग कहौं कर्म जसकीन्हा। तससबहिनमिलिभोगैलीन्हा॥
तेहिते कर्म प्रधान जग अहई। दुखसुख जीवकर्मकरि लहई॥

सो० सम्पतिबिपतिकलेशउत्पतिपालनयशअयश।
होत कर्म ते तैस यामें दोष न मोर कछु॥
सुनत काल के बैन बुद्धि फिरी तब बधिक को।
भाविराग उरऐन छाँड़िदिहिसि तेहिसर्पकहँ॥
सर्प मृत्यु अरु काल जितते आये तित गये।
भयोबधिक उरशाल कर्मपाछिले सुरतिकरि॥

दो० बधिक गौतमी के चरण पुनिपुनि शीशनवाय।
लग्यो योग जपतप करन कुलकी रीतिगवाँय॥
बधिकगौतमी की कथा भई जौन बिधिजानि।
सो कन्या तो सों कही मैं संक्षेप बखानि॥
असब्राह्मणके बचन सुनि मनमेंकीन्ह बिचार।
पुनि कन्या बोलतभई बचन महा सुखसार॥
मेरे मनको दुखहर्‌यो कर्‌यो बोध बहु भाँति।
गयो मोह अज्ञान अब हृदय में आई शाँति॥

सो० योगी जानत भेव अगिले पिछिले जन्म कर।
सो मोसों कहि देव हे स्वामी तुम कौन हौ॥

कह्यो विप्र सुनु कन्या बाता। मैं हौं यम पापिन दुखदाता॥
तो को दीन दुखी अति देखा। कीन्हो बोध आय द्विज भेषा॥
माँगो बर भावै जो तोहीं। अतिप्रसन्नजिय जानहुंमोहीं॥
कह कन्या पितु मात हमारा। सुहृद बन्धु सगरो परिवारा॥
बसैं स्वर्ग जबलगि शशिभानू। यही मोहिं दीजै बरदानू॥
एवमस्तु कहि यम चलिभयऊ। तुरत सुबर्ता यह ब्रतिलयऊ॥
जप तप लागी करन उदारा। कन्दमूल भखि भोगबिसारा॥

गी० छं० बिसरायतनसुखभोगजगकेतुच्छमनमेंजानिकै।
लागीकरनहरिभक्तिसुमिरण ध्यानज्ञानपिछानिकै॥
सब कर्म बन्धन काटि कै श्रीराम के धामैं गई।
सुरसिद्धिमुनिगतिजौन दुर्लभभजनकरिपावतभई॥

दो० आठ पहर चौंसठ घरी तिनमें भजिये राम।
जन रघुनाथ न भूलिये यही सयानो काम॥
यह इतिहास पुनीत मैं बरण्योंमति अनुसार।
कहै रघुनाथ जो उर धरै भवसागर ह्वै पार॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथ दासरामसनेहीकृतगौतमीसुबर्तीधर्मप्रसङ्गवर्णनो नामचतुर्दशोऽध्यायः १४॥

दो० सुमिरिराम सिय सन्तगुरु गणप गिरासुखदानि।
कहौं भार्त की कथा कछु अवध बिलास बखानि॥
सो० पुनि शौनकमुनि पाहिं पूंछ्यो दोउ करजोरिकै।
दान तपस्या माहिं अधिक कहा सो बरणिये॥
सुनत सूत बोले हरषाई। सुनु शौनक मैं कहौं बुझाई॥
तप ते दान अधिक ह्वै जानी। श्रद्धा सहित करै जो प्रानी॥
बहुत कष्टकरि द्रव्य कमावै। तेहि परमारथ माहिं लगावै॥
ताको यश त्रिभुवन महँ होई। बसैस्वर्ग महँ निश्चय सोई॥
जो सुधर्म करि फल नहिं चहई। तौ हरिभक्त परमपद लहई॥
तापर यक इतिहास बखानो। सुन्दर महा पुरातन जानो॥
मुद्गल बिप्र एक सुत नारी। बसत रहे कुरुक्षेत्र मँझारी॥
शीला बीनि बिरति असिगहई। पाख एक तक जोरत रहई॥
डेढ़सेर जब इकठे होई। पीसि बनावै भोजन सोई॥
साधु बिप्र प्रथमै भुगतावै। पाछे अपना सब मिलि पावै॥
यहिं भांतिन बीते बहुकाला। द्विज निजधर्म करैप्रतिपाला॥
अ०गी०एकदिवसऋषिदुर्ब्बासा। सुनिबिमल बड़ाईतासा॥
ते लेन परिक्षा आये। हरि जन का भेष बनाये॥
म०छं० अरु देह क्षीन। तनबसन हीन॥
द्विजद्वार आय। तपको छिपाय॥

लखिबिप्रसोय। अतिमगनहोय॥
दण्डवत कीन। पगधोय लीन॥
आसन पधारि। आरति उतारि॥
दोउपाणिजोरि। बोल्योनिहोरि॥
महाराज धनिभाग हमारे। जो निकेत तुम आइ पधारे॥
जेहि गृह सन्त चरण नहिंजावै। अश्मशान तहँ भूत रहावै॥
तव दरशन निर्मल मन भयऊ। संचितकर्मसकलजरिगयऊ॥
भोजन रहैं सो आगे राख्यो। दीनबचन बहु मुखतेभाष्यो॥
सुनि द्विज बचन गूढ़ सुखदाई। पावन लग्यां संत हरषाई॥
जेंइँ चुक्यो कछु जूंठनि रह्यऊ। सोऋषिबांधिबगलमेंगह्यऊ॥
एको ग्रास न तिनको बाच्यो। बिप्रप्रसन्नभयो मतसाँच्यो॥
दुर्वासा चलिभे निज गैला। मुद्गल मननहिं आयो मैला॥
पट पखवारे ऐसे करेऊ। खाइजाइद्विजदोष न धरेऊ॥
और भाव दिन दिन अधिकाई। नेक कृपणता मनहिंनआई॥
लखि दुर्वासा दूगुन भावा। भीतर बाहर यकसम पावा॥
बोलत भये बिप्रते बानी। हर्षसहितनिर्मल सुखदानी॥
तो०छं० धन्यतुम जगमाहिं। असदानिदूसर नाहिं॥
निजअशनहमकोदीन। बड़दान तुमने कीन॥
तिहुं लोकमें यशतोर। होई बचन फुर मोर॥
अरुबिष्णु के पुरजाइ। बसिहौतहांसुखपाइ॥
जो मुनिनदुर्लभ भक्ति। मिलिहैतुम्हैंसोशक्ति॥
असबचनसुनिद्विजराय। बोल्योबचनशिरनाय॥
सो० अहो सन्त सुख भौन तुम किरपा जापर करौ।
मोक्षआदि सुख जौन मिलतसहजमें आइतेहि॥
ब०छं० यहिबिधि करत बतकही बिप्र सुजान।
स्वर्ग लोकते लाये दूत विमान॥
सुर बिमान को उपमा कही न जाय।

सातस्वर्ग की विभव जु माहिं लखाय ॥
रतन जड़ित अति उज्ज्वल शोभावान।
उतर्‌यो नभते मानों चन्द्र समान ॥

सु०छं० सुरदूत पुनिवन्दनकही। इन्द्रादि देवन की सही ॥
तवहेतुजिय आयोभलो। चढ़िस्वर्गकोअबहींचलो ॥
असबैन दूतन के सुने। मनमाहिंद्विजमुद्गलगुने ॥
बोल्यो बहुरि हरषाइकै। दूतौ सुनौ मन लाइकै ॥

सो० सुर पुर दुख सुख कौन गुण अवगुण तामें कहा।
कहौ कृपा करि तौन हौं प्रभु जाते जानिये ॥

कह्यो गणन हंसन्त कृपाला। तुमको सब मालुम है हाला ॥
दीन जानि प्रभु दाया करेऊ। हमते प्रश्न ऐसि उच्चरेऊ ॥
सुनो स्वर्ग सुख बरणौं सोई। जन्म मरणकी व्याधिनहोई ॥
भय न कलेश लेन नहिं देना। क्षुधा तृषानहिंव्यापतजेना ॥
कल्प बिटप मनसा का पूरा। छाँह बसै होवे दुख दूरा ॥
रतन जड़ित हेमालय बन्यऊ। सुभगसेजपटभूषण घन्यऊ ॥
दिव्य रूप ह्वै बासा पावै। सेवा करन अप्सरा आवै ॥
स्वर्ग माहिं अससुख है भाई। सो हम तुमका दीन बताई ॥
दुख अब ताके सुनौ ऋषीशा। कहौं सोई जो आंखिन दीशा ॥
इकतौ कछु करतव्य न होवै। जाते पुण्य बढ़ै अघखोवै ॥
करी कमाई जो फल खावै। खात खात कमती ह्वै जावै ॥
परकी पुण्य अधिक लखिसोई। तबै ईर्षना मन में होई ॥
पुण्यक नाश सद्य ह्वै जावै। फिरि सो मृत्युलोक को आवै ॥
जप तप यज्ञन ते सुरलोका। मिलत इमपिताहू में शोका ॥
देव दूत की ऐसी बानी। सुनि मुद्गल बोल्यो सुखमानी ॥
काम क्रोध मद मत्सर आदी। जहँअतितहांके सुखसबबादी ॥
स्वर्ग माहिं है दुःख अपारा। तेहि मनचाहत नाहिंहमारा ॥
निश्चल धाम होइ जो कोई। हमते बरणि सुनावो सोई ॥

दो० कह गन स्वर्ग पतालये सब नाशक ये जानि।
स्वर्गलोक बिधि लोकलौं सबकीहोवै हानि॥
बिष्णुलोकनितथिररहै उतपति परलयनाहिं।
सुखतितबहुतप्रकारके बसतसन्ततेहिमाहिं॥
जन्म मरण तामें नहीं अकस ईर्षना व्याधि।
आनन्दै आनन्द है राम धाम आनादि॥

तो०छं तहँ रहत हैं हरिराय। ऐश्वर्य्य कछु कहोंगाय॥
जेहिराजसबब्रह्मण्ड। चौदह भुवन नव खण्ड॥
बैकुंठ गढ़ आजीत। चाकर सकल सुरमीत॥
बिरंचि जासु देवान। है फौजदार ईशान॥
मातंगबसुदिगपाल। पानी भरै घनमाल॥
कोतवाल हैंयमराज। नाक्षत्र मानहुं बाज॥
मुस्तौफिचित्र गुपित्र। लम्बोदर मुंशी तित्र॥
पुर देव कानोंगोइ। औजीर अक्किल सोइ॥

स०छं० अरु सूबा शेष बिचारी। कूबेर जासु भंडारी॥
चहुखानिलाखचौरासी। तेहैंसबकरिखनबासी॥
करै परारब्ध करभोगा। रहैसबपर कर्मदरोगा॥
अहदी ग्रहरोगअनन्ता। जागीरतगीर करन्ता॥
यमदूतपियादा फिरहीं। जेरामविमुख तेधरहीं॥
महिषशलोकबँदिखाना। बहुनर्कभापसी जाना॥
हरि धर्मपोतबिन दीन्हें। तहँपरतआइशठचीन्हें॥
विन वेद प्रतिग्रहधारी। ते जानहुं सबै बेगारी॥
परबी पचग्रह जानो। तहसीलदारयहमानो॥
जपतपब्रतदानहिंकरहीं। तेनरजनुपोतहिभरहीं॥
मदकामक्रोध अहंकारा। डकइत लूटत संसारा॥
सतसंगन की बतयारा। सोकरतफिरतहुशियारा॥
है अन्न पूरणा मोदी। दे सबै अहारै सोदी॥

वोकील बीर हनुमाना। जयबिजयरहतदरवाना॥
शुचिसेवक भक्तपियारे। जिनकेहितनरतनुधारे॥
सुरलोकसकलजागीरा। सरसहनाजासुसमीरा॥
अरु धर्म नवीन करारा। हैभक्तिबड़ी सरकारा॥
नौबतिहै अनहद तासा। चोपैबर बारहु मासा॥
भूलोक जासु बाजारा। तहँहोत कर्म बैपारा॥
सेराइ द्वीप अरु खण्डा। धनुकालमृत्युपरचंडा॥
बनबाग अठारौ बागा। हैं सातोसिंधु तड़ागा॥
परबतसबबिल्लीजाना। तम्बूनभ दीरघताना॥
बन्दीगण वेद कहावैं। जे नेतिनेति यशगावैं॥
जिनकीप्रियलक्ष्मीरानी। साहेलीगिरा भवानी॥
दे भक्ति मुक्ति दोदाना। तेहिधेक्षकसंतसुजाना॥
हैऋद्धिसिद्धिजेहिदासी। सोनिशिदिनकरैंखवासी॥

दो० कोटि कोटि ब्रह्माण्डहैं रोम रोम प्रति जासु।
कहै रघुनाथ बखानिकोउ पार कि पावैतासु॥
सुनिप्रभावअस बिष्णु को मनहर्ष्यो महिदेव।
पूछ्यो हरिपुर किमिमिलै ताको कहिये भेव॥
मिलै जो वह पद भक्तिते योग ज्ञानमनलाय।
और उपाय करै किते बिष्णु लोक महँ जाय॥

सो० देव दूत के बैन सुनि बोल्यो मुद्गल बहुरि।
जाहु आपने ऐन कह्यो बन्दना सुरन ते॥

दो० देव दूत भेजे स्वरग आप भक्ति मनलाय।
करणीबल निजुकुटुंबयुत बस्योबिष्णुपुरजाय॥

सो० तपते अधिकी दान सह श्रद्धा के जो करै।
होयभुवनबिख्यात भक्तिमिलैपुनिद्विजसरिस॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतमुद्गलप्रसंगबर्णनोनामपंचदशोऽध्यायः १५॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु गणपगिरासुखदानि।
हरिधर्म्मोत्तर ग्रंथकी कहौं इतिहास बखानि॥
सो० सुनि शौनक सुखपाइ नाइशीश बोल्यो बहुरि।
नाथ कहौ समुझाइ पुण्य बढ़त केहिद्रव्य ते॥
कहा सूत सुनि कहौं बुझाई। जेहि धनधर्म बढ़ै अधिकाई॥
सुकृत करि, जो द्रव्य कमावै। तेहि पर मारथमाहिं लगावै॥
बाढ़े पुण्य पाप ह्वै नाशा। सो नरलहै स्वर्ग में बाशा॥
अधरम करि जो द्रव्य कमावै। धर्म माहिं पुनि ताहि लगावै॥
ताकी पुण्य वृथाही जानौं। सुनौ एक इतिहास बखानौं॥
नृप यक बीर भद्र अस नामा। सोरठ नग्र माहिं तेहिधामा॥
करै पुण्य बहुभांतिन राजा। गजरथ भूमि पालकी बाजा॥
सो० सुवरण सींग मढ़ाय मुक्ता पूछै रजत खुर।
पीताम्बर ओढ़वाय देइ धेनु इमि द्विजन कहँ॥
शय्या दान करै पटदाना। यज्ञ महोत्सव बहुबिधिठाना॥
तेहि पर एकबार बिधियोगा। नृप यक चढ्यो संग लै लोगा॥
निशा अचानक नगर लुटायो। कैदकीन जेहि पकरे पायो॥
रानी नृपति अतिथि के वेषा। भागि बचे काहू नहिं पेपा॥
आये एक नगर के माहीं। देबुकामात्र रहै ढिग नाहीं॥
कर मुद्रिका एक नृप चीन्हा। बेंचिककुकदिन भोजनकीन्हा॥
नातेदार रहैं पितु मामा। रानी सहित गयो तेहि धामा॥
तहां नहीं कछु आदर पायो। बहुरि भूप भगिनी घर आयो॥
जानि अभाव जनक लघुभाई। तिनके निकट गयो चलिराई॥
सो० रहेतहां कछुकाल पुनि लागे अनखान सब।
चलिभे तुरत भुवाल समुझिकर्मगति मनबिषे॥
दो० जाके भवनै जाइँ चलि बात न पूछै कोइ।
बिपति परे हरि बिन कोई काहूको नहिंहोइ॥
कु० कमलकेरपितु सरितपति गरल सुधाशशिभाय।

मित्र भानु ब्रह्मा तनय बिश्वभरा जेहि माय ॥
बिश्वभरा जेहि माय श्रीरम्भा दोऊ भगिनी।
बहनोई हरि इंद्र नाति शिव सुन्दर भगिनी ॥
अस परिवार सुसारजड़ जारिदियो निशियाम।
बिपति परे रघुनाथ बिन कोइ न आयो काम ॥

भूखन मरन लगे नृप रानी। भिक्षा करि युक्ति तब ठानी ॥
घर घर भिक्षा करैं भुवारा। तनपर बसन न जुरै अहारा ॥
कछुककालयाबिधिचलिगयऊ। नृपरानी से बोलत भयऊ ॥
संभरि गढ़ इक शाहु सुजाना। मानिक नामबिदित धनवाना ॥
बेंचन पुण्य जात जो कोई। मानिक शाहु लेत है सोई ॥
कागद पर लिखितुला चढ़ावै। ताहि बराबर सोन देवावै ॥
रानी कहा सुनो नृप राई। तुमहूं कीन्ह पुण्य अधिकाई ॥
तामें कछुक बेंचि लै आवो। पहिरो बसन पेट भरि खावो ॥
जो जगमें तनु रही हमारा। करब दान पुनि बहु परकारा ॥
कह राजा रानी सुनि लेहू। मारग को खरचा कछु देहू ॥
सुनि रानी तुरतै उठि धाई। गृह गृह ते भिक्षा करिलाई ॥
नृप के बसन बांधि सोइदीन्हा। गणपतिसुमिरिपयानाकीन्हा ॥
तेहि बासर निशि भै तरु पाई। रह्योसुतिय बिन भोजनराई ॥
दुसरे दिन चलिसर इकपायो। करि मज्जननृप भौंरीळायो ॥
सेंकि तूणं हरि भोग लगावा। तेहिक्षणइक अभ्यागत आवा ॥
क्षुधावंत बोला हर आई। सुनि नृप के मन करुणाआई ॥

दो० होय धनी कंगाल जो तद्यपि रहे उदार।
जन्म दरिद्री धन लहै करि न सकै उपकार ॥
द्वैभौंरी अभ्यागतहि दीन्हीं करि सन्मान।
दुइ पुनि अपना खायकै कीन्हों बहुरिपयान ॥

तिसरे दिवस शाहु पहँ आयो। आदर करि राजा बैठायो ॥
पूंछ्यो बणिक कहां ते आये। कोहौ कौने काज सिधाये ॥

सुनि नरेश अस बचनप्रकाशा। सोरठ ते आयन तुव पासा॥
बेंचन पुण्य हेतु यह ताता। तुमहूं लेत सुनी हम बाता॥
अस सुनिशाहु उतरुतबदीन्हा। बेंचहु पुण्य जवनकछुकीन्हा॥
लिखि कागद पर तुलाचढ़ावो। सांची लिखा द्रव्य जेहिपावो॥
दश सहस्त्र मख कीन्हों राई। सोलिखि मानिक तुलाउठाई॥
पलरा दोऊ रहे समाना। रती न चढ़ा महीप लजाना॥
बोला शाहु और लिखि धरहू। सांची लिखौ झूंठ परिहरहू॥

सो० हेम गऊ गज बाजि दीन्हों कन्यादान जो।
तुला चढ़ायो राज सोऊ सबबिरथाभयो॥

जहँ लगि लोग रहे तेहि ठामा। हितू गुमाश्ता चार गुलामा॥
सबन कही झूंठे तुम अहऊ। ठगहीकरि सुखसम्पतिचहऊ॥
जो तुम करत दानरु धरमा। कंचन चढ़त न कौने मरमा॥
लखि रुखबोला शाहु सुजाना। कौने समय कीन्ह तुम दाना॥
बीर भद्र कह सुनिये शाहू। जब हम थे सोरठ के नाहू॥
गजरथ तुरँग पालकी जाना। भृत्यसूता बहु चमू खजाना॥
तब यह दान दीन्ह हम भाई। तुमते सांची कहा बुझाई॥
बोला विट का चढ़ै भुवारा। यह अधर्म कर धर्मतुम्हारा॥
लूटि बांधि परजै दुख दिहेऊ। बनितनकहँबिनबस्तरकिहेऊ॥
बछरा गऊ बेढ़ि ले आयो। हरियर वृक्ष अनेक कटायो॥
आवा कोउ फिरियादी दीन्हों। लै धन सांच न्यावनहिंकीन्हों॥
सो धन आनि धर्म तुम ठाना। ताते कौन पुण्य परमाना॥
जबते रंक भयो तुम राई। तबते पुण्य किह्यउ कछुभाई॥

दो० कह्यो महीपतिबचन मृदु सुनियेशाह सुजान॥
भिक्षाकरि भोजन मिलै काहेम कीजै दान॥

कुं० कीन्ह पयाना यहां को सुमिरि हृदय गणराय।
तेहि मगइक सरके निकट भौंरी चारिलगाय॥
भौंरी चारि लगाय अर्पि हरि ग्रास उठावा।

तेहि समय मम निकट एक अभ्यागत आवा ॥
क्षुधित देखि मैं तासु कोउभय मधुकरी दीन्ह।
रंक भवन तबते सुनहु यही पुण्य जग कीन्ह ॥
सुनिमानिकलिखितुलाचढ़ायो। डाँड़ीगहि धरि हेम उठायो ॥
तबहीं पला गरू ह्वै गयऊ। पुनिलै पुरट चढ़ावत भयऊ ॥
ज्यों ज्यों कंचन आनि चढ़ावै। त्यों त्यों पलाअधिक गरुवावै ॥
जहँलगि सुबरण शाहु निकेता। ह्वै भाँरी सम भयो न तेता ॥
बोला मानिक सुनहु नरेशा। अब नहिं हेम हमारे लेशा ॥
तेहिते जो कछुहै सोइ लीजै। अपने नगर पयाना कीजै ॥
सुनि नृप महिषा ऊंट मँगायो। सकलकनकतिनमाहिं लदायो॥
लीन्हे सङ्ग सिपाही नाना। जिनसोरठकहँ कीन्ह पयाना ॥
पहुँचे दिन तिसरे घर आई। लखिरानिहिभासुखअधिकाई ॥
बहुरि सेन नृप साजि अनेका। चतुरङ्गिनी एकते एका ॥
दो० दै डंका अरि भूप पर चढ़ा चमूलै जाय।
रामकृपातेहिजीतिकैलीन्होराजछिनाय ॥
आय निकेत महोत्सव कीन्हा। बिप्रनदानबिबिधिबिधिदीन्हा ॥
करन लाग पुनि राज भुवारा। पालै प्रजा अनेक प्रकारा ॥
अधरम कछुक होन नहिं पावै। करै ताहि नृप दण्ड देवावै ॥
लागेहु करन भक्ति युत रानी। छाड़ि अनीतिकर्म मनबानी ॥
आवै साधु नगरमा कोई। मिलैपुरः चलि भूपति सोई ॥
करि प्रणाम मन्दिर लै आवै। पदपखारि निजशीशचढ़ावै ॥
षोड़श भाँति पूजि सनमानी। मनजोगवत रहै भूपतिरानी ॥
सुनै कथा हरि कीरति गावै। तजिसतसंगअनतनहिं जावै ॥
सेवक सचिव करैं पुर काजा। बिष्णु चरणसेवै नित राजा ॥
भवन बनाय सुबस्तु भराई। मुदित देइ महिदेवन राई ॥
सुमन बाटिका बाग लगाये। बापी कूप तड़ाग खनाये ॥
करै जोधर्म कर्म शुभ जानी। बासुदेव अर्पै नृप ज्ञानी ॥

सहित नेम सुमिरै हरि नामा। क्रोध न लोभ मोहमद कामा॥
युक्ति सहित करिभोग बिलासा। समयपायतनुतजिअनयासा॥

ह०छं० अनयास निजबपु त्यागिभोहरिरूपकरआयुधधरे।
भुजचारिउरपटमुकुटकुण्डल तिलकशिर मालागरे॥
आरूढ़सुभगबिमानलखि सुरसुमन बहुबरषायहू।
जपयोग तपतेअगमसोपद भक्ति करि नृप पायहू॥

दो० कहरघुनाथ अधर्मकरि पुनि हरि सुमिरनकीन्ह।
करम बन्धते छूटिकै मोक्षस्वरूपी लीन्ह॥
तजिकुकर्म शुभ कर्मकरि द्रव्य कमाय जो कोइ।
ताहि लगावै धर्म में तपते अधिकी होइ॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतवारभद्रप्रसंगबर्णनोनामषोड़शोऽध्यायः १६॥

दो० सुमिरिराम सिय संतगुरु गणपगिरासुखदानि।
महभारत सद्ग्रन्थ को कहौं इतिहास बखानि॥
सो० शौनक सहित हुलास पूंछ्यो कै पद धर्म के।
कितउतपति कितनाश कितस्थितिबिस्तारकित॥
कुं० कह्यो सूतमुनि धर्मके चारि चरण पहिचान।
प्रथम सत्य पुनि दयाहै और तपस्या दान॥
और तपस्या दान सत्य ते उतपति सोई।
दया तहां बिस्तार क्षमा ते स्थिर होई॥
नाश होतहै लोभकरि क्रोधौ ते दूरी रह्यो।
कृतयुगचहुंपुनितीनिफिरिदुइकलिइकवेदनकह्यो॥
दो० सुनु शौनक जेहिभांतिजिन धर्मकिहिनि तनुधारि।
लिखेपुराणन में कहौं तिनमें ते दुइ चारि॥
भूप त्रसंक्रतु भुज बली महिमण्डल रिपु जीति।
दीन्ह्यों सुख गोद्विज प्रजन सहित वेद की रीति॥

चन्दप्रभा रहै तिन की बाला। जिन जाये हरिचन्द्र नृपाला॥
बदनावति हरिचन्द्र कि रानी। जासु सुयश त्रिभुवनमेंजानी॥
तासु तनय रोहिणी कुमारा। इन्द्रावती बधू सुकुमारा॥
करै राज्य हरि चन्द्र नरेशू। धन अधर्म कर लेइ न लेशू॥
तासु राज्य कोउ दुखी न रहई। चारों बर्णधर्म निज गहई॥
सब सुन्दर सब बिरुज शरीरा। सबगुणज्ञ सब पण्डितधीरा॥
तेहि पुर रामभक्त नर नारी। संतसमागम रुचिअधिकारी॥
निशिदिन भूपप्रीति हरिचरणा। सुमिरन पूजन बन्दनकरणा॥
सो० बापी कूप तड़ाग खनवाये मारग बिषे।
लगवाये वहु बाग बनवाये हरि हर भवन॥
दो० बिटप फूलफलसहितगिरि प्रकटभईगलियान।
कामधेनु भै भूमिजल कहेदेहि घनआनि॥
धर्म बचन मन जो करै सो अरपै भगवान।
भक्तिवंत भूपाल बर हरि तजि रतिनहिं आन॥
प्रति संबत सब माल खजाना। देइ लुटाइ न राखै दाना॥
नृप कीरति सब जगमां छाई। जहां तहां मुनि करैं बड़ाई॥
कहैं कि नृप हरिचन्द्र समाना। है न अवर धर्मज्ञ जहाना॥
सुनिकौशिकमुनि कहा रिसाई। अबहीं नृप सत देहुं डिगाई॥
तुरतै अवध पुरी चलि आयो। कोलककुनपबिशाल बनायो॥
प्रबिशि बाटिका चाँड़न लागे। घुरघुरात रखवारे भागे॥
ते भूपति पहँ जाय पुकारे। सुवर देत इकबाग उजारे॥
सुनि नरेश पठये भट भूरी। आये सब जहँ कोल गरूरी॥
दो० करि उपाय हारे सकल कोल सो निकर्योनाहिं।
सुनि हरिचन्द्र तुरंग चढ़ि पहुंचे तेहि के पाहिं॥
भाग बराह टाप सुनि पावा। देखि ताहि भूपति रपटावा॥
कहुं लखि परत कबहुंदुरिजाई। सघनबिपिनइमिगयउलेवाई॥
आगे बढ़ि मुनि युक्तिउपायो। यकपुत्री यकपुत्र बनायो॥

आपु भये पण्डित तेहि बेरा। लागे करन ब्याह तिनकेरा॥
अग्र बराह दीख नहिं जबहीं। आये नृप तिनके ढिगतबहीं॥
लखिक्षितिपति बोलाद्विज सोई। यहि कन्या के है नहिंकोई॥
पायँ पूजि याके नृप देहू। तुम धर्मज्ञ जगत यश लेहू॥
कह हरिचन्द्र बिपिन के माहीं। है कछु प्रभु मेरे ढिग नाहीं॥
नगर माहिं जो चलते देवा। सब बिधिते तहँकरतिउँसेवा॥
बिप्र कहा कछु सगुन करीजै। गृहलेवाइ पुनिचहौ सोदीजै॥
है लगाम कुंजी तव तीरा। तेहिते पद पूजौ रणधीरा॥
तुरतै नृप पद पूजै लीन्हा। विश्वामित्रस्वाल पुनिकीन्हा॥
मैं तुम्हार पंडित हौं राजा। मोको कछु दीजै महराजा॥
भूपति कहा मांगि द्विज लेहू। कनक तीनिमन राजन देहू॥
कह हरिचन्द्र दीन द्विजराई। चलहु भवन मनलेहु भराई॥
कन्या कुंवर गुप्त कै गयऊ। मुनिनृपसंगअवधचलिभयऊ॥
राजा बाजि चढ़न तब लागा। छीनिलीनमुनिगहिकरबागा॥

दो० कह ऋषि कन्यहि देइकै पुनि नृप फेरे लेत।
अस अधर्म नहिं चाहिये तनक बस्तु के हेत॥

अस कहि आपु भये असवारा। पांइ पियादे चले भुवारा॥
पहुंचे नहीं अश्व के साथा। आगे बढ़ि टेरैं ऋषि नाथा॥
नृप सुकुमार बहुत श्रम पायो। कछुदिन रहेअवधपुर आयो॥
लखि नृप खुशी भये नरनारी। गय भूप निजभवन मँझारी॥
सुभग गलीचा एक बिछायो। करिसनमान मुनिहिंबैठायो॥
चरण पखारि बारि मुखनाई। भोजन कहँ पूंछा पुनिराई॥
सुनि मुनि कहा हेम मम दीजै। पीछे अपर बात कछु कीजै॥
तब नृप कनक भराइ मँगावा। कह्यो लेहु मुनिबचनसुनावा॥
कुंजी दान दिह्यो म्वहिं राई। द्रव्य सकलतहि भीतरआई॥
जहँ लगि टाप घोड़की बाजी। तहँ लगु भई हमारी राजी॥
मोरि द्रव्य मोसे कहै लेहू। औरै कनक आनिकै देहू॥

नाहिंत कहौं दीन नहिं राई। हम अपने आश्रम का जाई॥
कह नृप शिर काटै जो कोई। ऐसि बात हमते नहिं होई॥
दो० सुनि सुत रानी भूपतिहु कह्यो शीशधरि माथ।
मनु मनु सोने पर हमैं बेंचि लीजिये नाथ॥
अससुनि तिन्हैं लीन अगुवाई। बेंचन हेतु चले ऋषिराई॥
अकनि प्रजालै हेम सिधाये। राजै मोल लेन बहु आये॥
बिश्वामित्र कह्यो तिन हेरी। प्रजा कि द्रव्य हवै नृप केरी॥
आनदेश तहँ बिकहु नरेशू। चले बनारस सहत कलेशू॥
आगे मुनि पाछे नृपरानी। तेहिपाछे सुत रोहिण जानी॥
मुनि दूसर द्विज देह बनाई। बैठ्यो पुरः कूप पर जाई॥
राजहि देखि समीप बोलायो। पूछ्यो हाल महीप बतायो॥
बोला बिप्र भूप सुनि लीजै। गा द्विजदूरि पान जलकीजै॥
कहनृप द्विजहिदिये बिनभाई। पियब न पाथ प्राणबरु जाई॥
दो० असकहि अबनृप चलि दियो रानी पहुंचीआइ।
कह्यो बिप्र जल पीजिये पेइ गये हैं राइ॥
रानिहु वैसे बचन सुनायो। पाछे पुत्र रोहिणी आयो॥
ब्राह्मण कहा पियउ सुतपानी। आगे पेइ गये नृप रानी॥
कुंवर कह्यो वै वृद्ध बिचारे। छाँड़िनि धर्म प्यास के मारे॥
हमतौ द्विजहि दिहे बिन हेमा। घूंटब नहीं लार यह नेमा॥
अति धर्मज्ञ हिये हम जाने। गाधिसुवन मनमाहिं लजाने॥
चलत चलत काशी महँ आये। मुनि लै बीच हाट बैठाये॥
बिप्र एक रानिहि लै गयऊ। मनु भरि हेम देइ सो दयऊ॥
मालाकार कुवँर कहँ लीन्हा। फुलवारी महँ डेरा दीन्हा॥
राजहि लिहिसि डोमयकआई। पाइ पुरट चलि भे ऋषिराई॥
नृपते कही श्वपच असि बानी। भरा करो नाँदन महँ पानी॥
सुनि नृपतीर भरन तबलाग्यो। कहमुनिभूपसत्यनहिंत्याग्यो॥
जो जल भरै चले मुनि आवै। फोरै नाँद पाथ बहि जावै॥

देखि श्वपचत्रिय तिनते लरई। बैठ रहत कछु काम न करई॥
सुनि कह डोम भूप सुनु बाता। हम तुम बीच ईश जगत्राता॥
बाचा बन्ध नृपति तो किह्यऊ। मरघटनिकट बासतबदिह्यऊ॥
लै सब यहां जो आवै कोई। दगडलिहे बिन दाह न होई॥
निशा आइ हमका धन देऊ। भोजनमात्र तात तुम लेऊ॥

दो० यहिबिधिबसत मशाननृप बहुत दीन धनआइ।
सुखी डोम नायक परम हितकारी जन पाइ॥

कछुककालयहिबिधिचलिगयऊ। तब मुनिरूप सर्पकोलयऊ॥
हरिशशिसुतहि डस्योसो जाई। दीन्होंताहि रबिहि सों पाई॥
रानी जबै खबरि यह पाई। रोदन करत कुंवँर पहँ आई॥
लै लहास गङ्गा के तीरा। गै जेहि घाट रहत नृपधीरा॥
नारि बिलाप करत बिधिनाना। सुतशव देखि भूप दुखमाना॥
पुनि धरि धीरमहीपति कहई। ईश रजाय शीशपर अहई॥
दुखसुख देह पाय सँग लागे। मिलनबिछोहस्वप्नजिमिजागे॥
जल अकाश क्षितिपावक बाता। मिलै कीन परपञ्च बिधाता॥
नश्वर रूप मोह बश शोचा। परधन गये करै दुख पोचा॥

दो० प्रकट भयो तनु जानिये सोसोवत तव तीर।
जीवननाशन नित्यहै असबिचारि धरुधीर॥

नट मर्कट गति देखु निहारी। हरिआधीन सकल तनुधारी॥
चाक कुलाल फिरत है तौलौं। अधआधार लकरिया जौलौं॥
सब संसार काल कर भोगा। आपुन देखत आनहिं सोगा॥
अस्थि मांस बिष्ठा तन छयऊ। यम लपेटि सहायन भयऊ॥
तेहिपरकहतन मोहिंसमआना। कछु दिनगये रहीनहिंमाना॥
अल्प आयु बहु करत उपाई। मृत्युशिर खड़ी न ताहिडराई॥
बलिपशु पाइघासजिमि चरई। बूड़त आपु आन को धरई॥

दो० जगत बिकट बनकुरगमन माया जाल पसारि।
काल शिकारी बिन खबरि लीन अचानक मारि॥

दारु नारि तन ममता डोरी। कर्म नचावत है चहुं ओरी॥
दश इन्द्री सुरनिजनिज ओरा। खैंचत जहां तहां बरजोरा॥
मूसत पांच चोर करि दंगा। रहतहितूहवै निशिदिनसंगा॥
जीव कुशल कैसे कहिजाई। जिमि खेती हरवाहै खाई॥
शोक समाज देखि सब परई। सुखी सोजो हरिपदमनुधरई॥
दुख कर मूल मोह है रानी। सोतजिसपदिमानु ममबानी॥
दंड घाट कर हम कहँ दीजै। पाछे पुत्र दाह निजु कीजै॥
रानी कहा सुनो नरपाला। तुमते कछू छिपा नहिंहाला॥
कहो द्रव्य कहँवाँ में पाई। जोलै तुम्हैं दीजिये आई॥
दो० कह नृप करलीन्हे बिना हौं नहिं दाहन देहुं।
स्वामी केर निदेश तजि नाहक अधरम लेहुं॥
सो० तेहिते मैं अब जाय पूंछौं प्रभुते हाल यहु।
जो वेदेइँ बताइ सोइ करब पुनि आइकै॥
असकहिहरिचन्द्रनगर सिधाये। गाधि सुवन मरघट तहँआये॥
रानीते अस बचन उचारा। बैठि लिहे कत मृतककुमारा॥
रानी सकल हाल कहिदयऊ। पुनिमुनि ऐसे बोलत भयऊ॥
जो दुरवृत्त नहिं करी दिनेशा। तौ तोहिं दहन न देइ नरेशा॥
तेहिते मैं तोहिं देउँ बताई। भस्म सकलतन लेहु लगाई॥
बालक यक आकर्षिजो लीन्हा। सो रानी कहँमुनिबरदीन्हा॥
कह्यो कि लै मठ बैठो जाई। मैं तुम्हार सुत देउँ जराई॥
सुनि रानी गै मंडफ जबहीं। कौशिकमुनि पुरआये तबहीं॥
जहँ तहँ अस दीन्हों गोहराई। नगर तुम्हारे डाइनि आई॥
पूंछिनि कहां हवै मठ माहीं। यामें झूंठ कहत हम नाहीं॥
गई अबै पुरते सहमोदा। लीन्हें यकबालक शवगोदा॥
चौबंसाछं० सुनिसबधाये। तेहिढिगआये॥
रूप निहारी। अति भयकारी॥
बालकचीन्हा। गहिकरलीन्हा॥

नृपपहँल्यायो। कहिसमुझायो॥
भूप रिसाई। दिहिसिटँगाई॥
कह्यउकि धावो। श्वपचहिलावो॥
गरदन मारो। करो न वारो॥
हिंसक त्यागे। भलनहिं आगे॥

दो० गा इक धावन डोम गृह कह्यो हाल समुझाइ।
तेहि पठवा हरिचंद्र कहँ चलिआये तहँराइ॥

राजा निज रानी पहिचान्यो। तनको मोहन मनमें आन्यो॥
कता तुरत उठायो राई। मारौं शीश बिलग ह्वै जाई॥
आइ तबै हरिकर गहि लीन्हा। जयतिजयतिनभदेवनकीन्हा॥
धनिरानी धनि नृपति महाना। तज्यो न धर्मसह्यो दुखनाना॥
सुदिन सकल धरमज्ञ कहावै। कुदिनकसौटीपरि खुलिजावै॥
घन प्रहार बिन सांचे हीरा। अंगै किसकै कांच करखीरा॥
अस्त्र शस्त्र जिमि सबकोइ बांधै। शूर सोइ जो समरन कांधै॥
सुनिते कह्यो रिसाइ खरारी। तुम्हरे मद सरता अतिभारी॥
जपतप संयम करते भयऊ। आदिसुभावतदपिनहिंगयऊ॥
अस धर्मज्ञ नृपहि दुखदीन्ह्यो। यामें कहौ लाभ का चीन्ह्यो॥
धर्म छोड़ावन इनकर आयो। फूंकन चहत सुमेरु उड़ायो॥
तप कर तुम्हैं बहुत अभिमानू। सो नहिं रही सत्यह जानू॥
सुनि मुनि चरण परे ह्वै दीना। प्रभु अपराधबहुत मैं कीना॥
करहु सो क्षमा जानि अज्ञानी। नृपपदपरेहु कह्योप्रभुबानी॥
सुनि मुनिगहे चरणतजिमाना। लखिनृपकीनसकुचिसनमाना॥
तुरतै पुत्र दीन मँगवाई। जो प्रथमै रबिकासों पाई॥

दो० नृप हरिचंद्रहि जानि कै पुरबासी सबलोग।
भूप सहित बिनती करी भय दरश बिधियोग॥

सो० बोले बिष्णु बहोरि जो भावै सो मांगिये।
कहनृप दोउ करजोरि मोको कछू न चाहिये॥

रानी ते बूझउ सुरराई। मांगी जो कछु वाको भाई॥
रमानाथ नारी ते भाषा। माँगहुबर जोमनअभिलाषा॥
रानी कहा नाथ सुनि लीजै। प्रथमै भक्ति आपनी दीजै॥
जहँजहँ जन्म धरब हम जाई। तहँतहँ हरिचन्द्रै पतिपाई॥
पुत्र मिलै रोहिणी समाना। राजकाज धन धाम खजाना॥
यहिबिधि मुनि सांगै तहँआई। जाते नाथ दरश तव पाई॥
यह बरदान देहु मोहिं स्वामी। और न चहिये अन्तर्य्यामी॥
सुनिहरिसजलनयनहोइआयो। प्रेमसहित निजहृदयलगायो॥
तुम समान त्रिय जासुअगारा। कस न होइ तहँ धर्मअपारा॥
चलहु अवध निज राज करीजै। प्रजा अनाथ तिन्हैं सुखदीजै॥
सुनिहरिचन्द्र अवध चलिआये। पुरबासी लखि रत्न लुटाये॥
सिंहासन भूपति बैठारे। जग निवास बैकुण्ठ पधारे॥
बहुरि सकल संशय करि दूरी। रानीसहितकिहिनिसुखभूरी॥
गी०छं०सुखभूरिकरिनृपरानिपरजन बिबिधिबिधिपालतभये।
तजि अन्तसमय शरीरबिन परिश्रम हरिपुर का गये॥
यह कथा नृप हरिचन्द्र की तुम ते कही समुझाइ कै।
अब और यक इतिहास भाषौं सुनहुंमुनि मनलाइ कै॥
सो० हंसध्वज नृप तासु तनय सुधन्वा हरि भगत।
निजबपुदीन्ह्योंआसुशङ्खलिखितखलद्विजनहित॥
रन्ति देव नृप आन बहु दिन में भोनन लहे।
विप्र शूद्र शठश्वान सन माने तब मिलेहरि॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास
रामसनेहीकृतहरिचन्द्रसुधन्वारन्तिदेवप्रसङ्ग
वर्णनोनामसप्तदशोऽध्यायः १७॥

दो० सुमिरि राम सियसन्तगुरु गणपगिरा सुखदानि।
वरणौं भारत की कथा कछु दालभ्य बखानि॥

सो० शौनक मन में गुणय पूंछ्यो पद शिर नाइ कै।
जिव रक्षा कृत पुणय होत कहा सो वरणिये॥
नि सुमंत्र बोले हरषाता। नीक प्रश्न कीन्ह्यो तुमताता॥
मूल जिव रक्षा जानों। सुनो तासु कृत पुण्यबखानों॥
तक सब तीरथ करि आवै। गयामाहिं नित पिण्ड परावै॥
गज हयपट माणिक हेमा। देहि विप्रकहँ करि नितनेमा॥
सुसकल करै ब्रतदाना। संयम नेम तपस्या ठाना॥
सबपुणय जो तुला चढ़ावै। जिवरक्षा सम सोउ न पावै॥
शिविकी कथा बखानों। जिवरक्षा तिन कीन्हीं जानौ॥
ति यज्ञ करत इक बारा। रहैं तहाँ महिदेव अपारा॥
अग्नि शिवियश सुनिपायो। लेन परीक्षा दोउ सिधायो॥
ग्नि कपोत बपुष तबकीन्हा। बाजरूप बासव धरिलीन्हा॥
ज कपोत बाज रपटावा। नृप जहँ यज्ञकरत तहँआवा॥
दो० बैठे शिवि लखि गोदमें दुर्‌यो कपोत डेराय।
घेरिबाज बोलतभयो नृपते बचन बनाय॥
अहोभूप धर्मज्ञ तुम महूं सुनी यह बात।
मोह कृपणता है नहीं तनको तुम्हरे गात॥
सबको पालै महिपाला। सन्त असन्त कहा नरवाला॥
वगुण देखि छिपावै जानी। गुणको सदा धरत उरआनी॥
रे अतिथि जो कोई आवै। तुमते बिमुख जाननहिं पावै॥
वजनि धर्म छोंड़ियो राई। यशतेरहै अयश जग छाई॥
जन मोर कपोत रहायो। ताको तैं क्यों गोद छिपायो॥
खोहौं बहुदिनको राई। याको मोहिं देहु पकराई॥
जाकहा श्येन सुनि लीजै। याको आश छोंड़ि अबदीजै॥
क्षी डरपि शरण ममलीन्हा। तजौं न याहि परण दृढ़कीन्हा॥
रणागत आये जो त्यागै। ब्रह्म हत्या ताकेशिरलागै॥
दो० लोभ क्रोध बशपरिहरै करै न रक्षाजासु।

सो नर पापी नीचखल मुखनहिं देखियतासु॥
मुखदेखे सुकृत घटिजाई। धर्मवान लखि सुखअधिकाई॥
तेहिते यहि तजिहौं नहिंभाई। शीशहु जो कोउ काटैआई॥
बोला श्येन सुनत असिबाता। मैं तोहिं सुनावहुँ बड़दाता॥
धर्मटेक सो छांड़ि भुवाला। लै अपयश जीहौं कै काला॥
दिये अहारहोइ जिव रक्षा। तजिहठिलेहुमानिसो शिक्षा॥
किये अहार प्राणधिर रहई। नाहिंत तनुतजिमारग गहई॥
मोरेमुये बहुत करनाशा। जननिजनकसुतनारिबिनाशा॥
एक जीवकी रक्षा करहू। बहुतेन की शिरहत्या धरहू॥
बिन बिवेक धरमहु करकोई। पाछेतेहि पछिताइक होई॥
कर मनकी गति झोनीराई। पुण्य करत पातक ह्वै जाई॥
तेहिते नृपति मानि अबलीजै। मोर अहार होइ मोहिंदीजै॥

सो० कहशिबि सुनहु शचान शरणागत रक्षा करै।
यहिसम धर्म न आन सोमैं निजहिरदै धर्‌यों॥

दो० सोइ पंडित धर्मज्ञ सोइ सतिबादी मतिधीर।
शीलवन्त ज्ञानीश जो हरै पराई पीर॥

म्बहिंइच्छा कछुस्वर्ग कि नाहीं। नहिं बैकुण्ठ जानके माहीं॥
मुक्ति भुक्तिकी चाह न करहूं। नरक परनको मैं नहिंडरहूं॥
इक अभिलाष यहै मनमाहीं। आवै शरण तजौं त्यहिनाहीं॥
जो मोपर प्रसन्न भगवाना। देहिंटेक हिय यही न आना॥
तन धन धाम बाम सुत जावै। तजौं न ताहि शरण जोआवै॥
मोहिं कपोत परम प्रिय भाई। ताकोकहौ तजा किमिजाई॥
और चहौ सो लीजै मांगी। सुनि शचान बोलाभय त्यागी॥
भूमिधाम धन अन्न अपारा। लिहेसरी नहिं काजहमारा॥
मम भक्षण पक्षीहै येहू। सो नहिंदेउ तौ अबसुनिलेहू॥
आपन मास खवावो मोहीं। दयावन्त तब जानौं तोहीं॥
तुला चढ़ाइ कपोतहि दीजै। तेहिसम धरहु देरमत कीजै॥

कुं० सुनिशिवि मन हरषतभयो कह्यो धन्य ममभाग।
असद अस्वच्छ शरीर यह पर स्वारथमें लाग॥
पर स्वारथमें लाग धन्य जननी जिनजायो।
दीन्हो जातजराय कहो केहि कामें आयो॥
हरि सुमिरण अरु कर्मशुभ सधैपाइ नरदेहपुनि।
जीवन ताहीको सफल बोल्यो बहुरि शचानसुनि॥

वृथाकरै कतबाद भुवारा। क्षुधित जातहै प्राणहमारा॥
राजा तुरत तुला मँगवायो। पलरापर कपोत बैठायो॥
दूजे पला माँस निज धरेऊ। आपन गुरू कपोतै करेऊ॥
तबराजा फिरिकाटि चढ़ावा। बिहँगपलानहिंसमसरिआवा॥
काटि काटि कैयोबेर डार्‌यो। उठ्यो न भूते नेकु निहार्‌यो॥
चढ़िबैठ्यो नृप तबहरषाई। देखि अग्नि हरिरहे लजाई॥
सुरदेखैं नभ चढ़े बिमाना। कहैं कि असप्रण कहूं न ठाना॥
जयजय धन्यधन्य नृपकरहीं। सुमनबरषिनिजनिजपुरफिरहीं॥

दो० अगिनि पुरंदर कपटतजि प्रकट्यो आपनरूप।
कै प्रसन्न बोलतभये धन्य धन्य तुमभूप॥
बिश्वमाहिं तुमसम नृपति है नहिं कोई और।
प्रणकीन्हों भल होइहै तेरो यश सबठौर॥
मेघनदी जल भूमि द्रुम सन्त जन्म जो लेत।
केवलबिधि परगटकिये परमारथ के हेत॥

तुम समान राजा जे आहीं। तेउ जानिये सन्तन माहीं॥
इतनेन की जो निन्दा करहीं। रौरव नरक माहिं सो परहीं॥
तेरे तन की जाय बुढ़ाई। होइ नवीन सुभग सुखदाई॥
हमशठ हठबशकुकरम कीन्हा। नाहक आय तुम्हैं दुखदीन्हा॥
सो अपराध क्षमौ करि दाया। असकहि सुरपतिस्वर्गसिधाया॥
यज्ञ जबै पूरण ह्वै गयऊ। तब भूपति मन हर्षित भयऊ॥
गण बिमान लाये हरषाई। बिष्णुलोक तहँ राखिनि जाई॥

जो यह कथा सुनैं अरु गावैं। यमकिंकर तेहि नाहिं सतावैं॥
शिविकी कथा कही जो जानी। और सुनौ यक कहौं बखानी॥
केकी नगर रहै यक शाहू। बुद्धिमान घर द्रव्य अथाहू॥
देवदत्त अस ताकर नामा। सुयशानाम तासु की बामा॥
एक बार पति पद शिरनाई।। बोली बचन मधुर सुखदाई॥
सुनहु नाथ निगमागम गावै। नरतन बड़े भाग्य ते पावै॥
तेहिलहिजोहरिभजननकरहीं। जगत मार शिर ऊपर धरहीं॥
सो पाछे पछितात अभागी। जिमिनगवालअमौलिकत्यागी॥
ताते पति हरि भक्तिहि कीजै। नर तनपाइ सुफलकरि लीजै॥
धन ते धर्म करहु मनलाई। आखिर अन्त संग नहिंजाई॥
ऐसे बचन नारि जब कह्यऊ। सुनिशुचिशाहपरमसुखलह्यऊ॥

दो० धर्म करन लागे ललकि तन मन धन ते दोउ।
जो माँगै तेहि देइ सोइ बिमुख न जावै कोउ॥

नौधाभक्ति करैं नित नेमा। बिप्र बैष्णव पद अति प्रेमा॥
यहिभांतिन बहु दिवस बिताये। लेन परीक्षा धर्म सिधाये॥
रूप अघोरी का धरि लीन्हा। शाह दुवार स्वाल आकीन्हा॥
देखि वैश्य भीतर लैगयऊ। मुदित मनोरथ पूछत भयऊ॥
कह्यो अघोरी सुनु अनुरागी। मोको आजु क्षुधा बहुलागी॥
पुत्र तुम्हार बध पट केरा। तेहि आमिष मनचाहत मेरा॥
दोउ प्राणीमिलि सुतबधकीजै। क्षोभ न तनको मनमें लीजै॥
निजनिज करमोहिं देहुखवाई। ना क्वै सकै तौ अन्तै जाई॥
सुनत शाह शाहुनि असबयना। खेलत सुतै बोलायो अयना॥
मारन लगे दोउ मिलि जबहीं। बालक बचन कहतभा तबहीं॥
मारु न मातु घरै महँ रैहौं। अबहों दूरि न खेलन जैहौं॥

सो० अहो सुवन तव कर्म होत जो खेलन को लिखा।
तौ कत लेत्यो जन्म आइ हमारे जठर महँ॥

अस कहि घात कीन हरषाई। बोटी बोटी बिलग बनाई॥

ो अघोरी सों प्रभु लीजै। देर भई यहि भोजन कीजै॥
तेहि कहाकि मैं नहिंखैहौं। इतने में तनकौ न अघैहौं॥
निज आमिष दीजै थोरा। जेहिते जाइ उदर भरिमोरा॥
ल जबै काटन कहँ कीन्हा। तुरतै धर्म हाथ गहिलीन्हा॥
ूवै आपन बपु प्रगटायो। देवदत्त सों बचन सुनायो॥
शाह सुनु मैंहौं धरमा। आयों लेन तुम्हारो परमा॥
धन्य तुमहौ धनि ताता। धर्म हेतु सुत कीन्हों घाता॥
री पुण्य घटी नहिं भाई। दिन २ अधिक २ अधिकाई॥
लोक बसिहौ तिहुं प्रानी। जन्म मरण की होई हानी॥
तुम्हार बालकन माहीं। खेलत हवै अमिथ्या नाहीं॥
यक सेवक शाह पठायो। तेहिकेसंग कुँवर चलिआयो॥
मातु पितु हर्षित भयऊ। हृदय लगाय मायभरि लयऊ॥

० भये बिदा तब धर्म करि देवदत्त सनमान।
हरिपुरते आवत भयो ताही समय बिमान॥

०छं० आयोबिमाननिकेत निरमलरतनसागर मणिमयो।
लयोधाय गणनचढ़ायतिनका बिष्णुपुर बासादयो॥
लखिदेवजयजयजयतिकहिकहिसुमनबहुबरषायहू।
रघुनाथ गुरुपद माथधरि यह कथा सूक्षम गायहू॥

० धन्य पुत्र हरिभक्त जो धन्य पतिव्रत नारि।
जासों परमारथ बनै धन्यसो दर्बि निहारि॥

इश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजारश्रीरघुनाथदास
रामसनेहीकृतशिविवादेवदत्तप्रसङ्गवरर्णनोनाम
अष्टादशोऽध्यायः॥ १८॥

० सुमिरि रामसियसन्तगुरु गणप गिरासुखदानि।
बरणों भारथ ग्रन्थ की पुनि इतिहास बखानि॥
अग्नि देवकर पुत्र यक तासु सुदर्शन नाम।

धर्मवान गोजीतवर क्षमा शील तपधाम॥
बोधवान नृप निजसुता दीन्ही द्विजै बिवाहि।
दोऊ प्राणी मिलि बसे कुरुक्षेत्र महँ जाहि॥
निशिदिन धर्म सुदर्शन भावै। अतिथि द्वारतेबिमुख न जावै॥
मनक्रम करै साधुकी सेवा। सन्तै स्वामी सन्तै देवा॥
यहिबिधिकछुककालचलिगयऊ। इकदिनद्विजमनशोचतभयऊ॥
साधुनमें नहिं त्रियको भावा। अरध अंगतेहि बेद बतावा॥
मैं न होंउ गृह हरि जन आवै। बनिता ते सनमान न पावै॥
तौ मम धर्म होइ सब नासा। जो आदर नहिं पावहि दासा॥
नारि पुरुष दोउ इकमत होई। तेहिकर धर्मडिगै नहिं कोई॥

दो० अस बिचारि निज बधूते बोल्यो विप्र सुजान।
सन्त सेव हिरदै धरौ जाते होय कल्यान॥
संत सेव हरि सेवसे शतगुण अधिकी जानि।
निज मुख प्रभु बर्णन कियो धर्मोत्तरमें मानि॥
पुरह धरत नैबेद्य तेहि शुद्ध करौंमैं देखि।
स्वाद लेतमुख दासके कह हरि विसिते पेखि॥
सर्वाराधन में परे हरि अवराधन आहि।
जनसेवा तेहितेअधिक कहशिव आगम माहिं॥
गोबिंदपद पूजन करै सन्तहि सेवै नाहिं।
तेनहिं प्रीतमबिष्णु कहँ दंभिक भाजन आहिं॥
आवै बैष्णव जासु घर पावै नहिं सनमान।
नशै पुण्य सौ जन्मकी कह असकंध पुराण॥
यमन क्षेत्र निश्चयतहाँ जहाँ न संतस्थान।
बासै जब हरि क्षेत्रसो वद बाराह पुरान॥
साधुभजेभजिजातहरि जिमिशिशुगर्भ मँझार।
बिन जननी तोषै नहीं इमिकह अमृतसार॥
श्रद्धा युतहरि भक्त कहँ अन्न खवावै कोइ।

सोई सोम पर्वतसरिस दिनदिन अधिकीहोइ॥
साधु सेव कीन्हीं नहीं जिन नरतन को पाय।
तेनर पशुते अधिक हैं पेट भरन को चाय॥
पचि २ मार्योकुटुम्बहितपरमारथनहिं कीन।
धृग २ ताकी बुद्धिको तजि अमृत बिषपीन॥
ताते सुमुखि मानु मम बाता। जाते मोरि तोरि कुशलाता॥
तन मन धन संतन कहँदीजै। ह्वै अधीन चरणोदक लीजै॥
गृहस्थाश्रम को धर्महै याही। हरिजनआइबिमुखनहिंजाही॥
जो कुछ सन्त कहैं सो कीजै। सुखप्रद बचनमानि मनलीजै॥
जोत्रिय कहा करै पति केरा। सो पावै सति लोक बसेरा॥
सुनि पतिबचननारिसुखपाई। बोली बचन कपट नहिं राई॥
अहो नाथ म्वहिंधर्म दृढ़ायो। सुनि तवबचनमोहिंअतिभायो॥
तनमनधनकरिसंतहिपोषिहौं। हेपति परण तुम्हारो रखिहौं॥
पतनी सेा जो अनी सम्हारै। बिमुख करै सो शठ निरवारै॥
पतिसो जो त्रियकी पतिराखै। निजपतिबिनत्यहिकोपतिभाखै॥
ऐसे बचन कहे जब नारी। सुनत बिप्र उरभा सुखभारी॥

दो० दोउ धर्म लागे करन तन धनसों तजि नेह।
विविधि भाँति सेबाकरैं सन्त जो आवैगेह॥
यहिभाँतिनबहु कालगे रह्योसुयशजगछाय।
मृत्यु दुवारे आइकै मुहुर्मुहुर फिरिजाय॥

कबहुँ धर्म घटती नहिं होई। ताते मारि सकै नहिं सोई॥
यकदिन सुनौ सुदर्शन कानन। गयेरहैं तहँ समधी आनन॥
धर्म परीक्षा लेन सिधाये। भेष वैष्णव केर बनाये॥
जहँ द्विजभवनतहाँचलिगयऊ। बोधवतीते बोलत भयऊ॥
हे धर्मज्ञ सुना मैं तोहीं। मनमथ आजु सतावत मोहीं॥
तेहिते अपने तनका दीजै। जेहिते अङ्ग सङ्ग करि लीजै॥
सुनिकरजोरिकह्यो द्विजबामा। लीजे अशन बसन बहुदामा॥

ऐसी बात न कहौ गोसाईं। बोले धर्म और कछु नाईं॥
केवल चही शरीर तुम्हारा। जासों लाग्यो चित्त हमारा॥
जो न देहु तो मारग लीजै। ह्वैमा एक बात कहि दीजै॥
सुनि अस बचननारिशिरनाई। मनमें शोच कीन अधिकाई॥
मेटौं तौ प्रण कीन सो जाई। सङ्ग करौं पतिबर्त नशाई॥

दो० शोचतही श्रुतिके बचन ह्वै आये तब आदि।
पति आज्ञा त्रियकरैतौ पतिब्रतजाइनबादि॥

तबहरि जनते बोली नारी। किरपा हमपर कीन मुरारी॥
यहतन धनसब तुम्हरै स्वामी। हम सेवक सबबिधिअनुगामी॥
सुनि हरि कुटीकपाट लगायो। ताही समय सुदर्शन आयो॥
साङ्गसुनतत्रियसकुचिनबोली। दीन्हो भेद अतिथि तबखोली॥
मोर मनोरथ पुरवत नारी। खड़े रहौ तलद्वार मँझारी॥
सुनत सुदर्शन अतिसुखपावा। धन्य २ पतिबचन सुनावा॥
धन्य प्रिया तव पितु अरुमाई। पूज्यो संतहि हेत बड़ाई॥
आखिर तनुनहिं रहत तुम्हारा। ह्वै जातो कृमि बिष्टाक्षारा॥
सो बपु वैष्णव हेत लगायो। राख्यो धर्म मोहिंअतिभायो॥
अहो सन्त मन निश्चल होई। मति शंका मान्यो तुम कोई॥
धाम बाम तन धन जो हेरो। सो सब जानो साधुन केरो॥
मैं सब बिधि संतन को दासा। और न मेरे आन उपासा॥
पुण्य हमारि उदय भै आजू। जो घर सर्यो तुम्हारो काजू॥
बचन सुदर्शन के सुनि प्यारे। धर्म निकरि आये तब द्वारे॥
धन्य धन्य तुम धनि तवबाला। प्रणआपन कीन्हों प्रतिपाला॥

दो० अहो संत मैं धर्म हों यह पतिब्रता नारि।
लेनपरीक्षा आयऊं नहिंकछु दोषबिचारि॥
तुमसमपुण्यसलोकनहिं तीनिलोक महँकोइ।
जसकीन्ह्यों तसजगत में काहूतेनहिंहोइ॥
देवदनुजनरनागमुनि गणिकाताजिजगमाहिं।

नारि दोष को देखि कै रोष करै को नाहिं॥
रे क्रोध भयो नहिं राई। ऊपर ते बहु किह्यो बड़ाई॥
कृपिणता मान न मोहा। समजित इंद्रीजीत न कोहा॥
ुलोक तहँ बसिहौ जाई। आजुइ लेन बिमान जोआई॥
गी तव आधे अंगा। सदा रही सोतुम्हरे संगा॥
अंगते सरिता होई। बोधवती कहवाई सोई॥
इ मज्जी याहि मँझारा। तासु पाप सब ह्वै हैं क्षारा॥
कहि धर्मभे अन्तर्द्धाना। गणलै आये सुभग बिमाना॥
सहस लगे त्यहि माहीं। पवन समान उड़त जेजाहीं॥
पन्नो तेहि माहिं चढ़ायो। लखिसुरहर्षि सुमन बरसायो॥
पुण्य प्रताप ते दोऊ। गे हरिपुर जानै सब कोऊ॥
० द्वारे मृत्यु बैठी रहैं सत देखन के काज।
प्रण छूटै तौ मारहूं ज्यों तीतर को बाज॥
० प्रण जबछूट्यो नाहिं चलीतुरतखिसिआयकै।
जाति न मृत्युघर माहिंहै मुनिपुण्य प्रतापते॥
पढ़ैसुनै नरकोइ यह इतिहास जो नित्तप्रति।
मृत्यु अकाल न होइ भापत भीपम पर्वइमि॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघु
नाथदासरामसनेहीकृतसुदर्शनकथाबर्णनोनाम
ऊनबिंशोऽध्यायः॥ १९॥

० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि।
बरणौं भारतग्रन्थकी पुनि इतिहास बखानि॥
सुनौ मैं करौं प्रकाशा। बहुलागऊ केर इतिहासा॥
वती पुरी यक अहई। चंद्रसेन राजा तहँ रहई॥
हरिभक्त बसै तेहि ग्रामा। बहुला गऊ तासु के धामा॥
वल अंग हंस की नाहीं। बिचरै सदा अभै बन माहीं॥

रोहितगिरि यमुना तट एका । गुफनमाहिं रहैं जीवअनेका ॥
वृक्ष सघन बेली उरझानी । चारोंतरफ भरा त्यहि पानी ॥
यकदिन बहुला संग बिहाई । चरत चरत परबत परआई ॥
सिंह एक निकसा अति भारी । बड़े २ रदन बदन भयकारी ॥
बहुलै देखि सामने धावा । निकटजायअसबचनसुनावा ॥
जीवन कठिन जानु निज गाई । लेहौं तोहिं आजु मैं खाई ॥
जो आवै इहि बनके माहीं । मोसे सो उबरत है नाहीं ॥
सुनिहरि बचन गऊ बिलखानी । बछरा छोट आपनो जानी ॥
केहरि कह रोवै केहि काजू । बचिहौनहिं हमते तुमआजू ॥
बद बहुला सुनु केहरि भाई । आपनशोच मोहिं नहिंराई ॥
जो उपजै सो निश्चय नाशै । जो नाशै सो पुनः प्रकाशै ॥
प्रीति पुत्रकी हृदय में गाढ़ी । तेहितमोहअग्निमोहिंबाढ़ी ॥
प्रथम पुत्र जावा में याही । पियतअबैंपयतृणनहिंखाही॥
सो० बच्छै क्षीर पियाय फिरि मैं इहनै आइहौं ।
तबतुमलीन्ह्योंखाय सुनिबोल्योमृगराजहँसि ॥
दो० जोकोउ शूली चढ़त पर लगन लिखावैधाय ।
तैसे तैं मृत्यु भूलिकै बछरा के ढिग जाय ॥
मेरे फन्द आय जो परेऊ । सो जानौ जग जन्म न धरेऊ ॥
तैं चाहै निजपुर को जाना । मोहिं बनाये निपट दिवाना ॥
घरमें जाय पुरुष को पैहौ । प्राण देन फिरि काहेक ऐहौ ॥
ताते हौं नहिं देहौं जाई । सुनि बहुला बोली अकुलाई ॥
बिप्र गऊ पितु मातै मारै । बनिता बालक गुरू सँहारै ॥
कन्या ब्याहि और को देवै । दोउ जनन ते पैसा लेवै ॥
साधुन की निन्दा मुख गावै । हरिहरतजि जो आनहिध्यावै ॥
इन करमन का पाप जो जागै । नहिं आऊं तौ ममशिरलागै ॥
झूंठी साखि सभा महँ बोलै । अतिथि निराश बासते डोलै ॥
तुला चढ़ाय घाटि फिरि देवै । माफिन में पुनि पोतहि लेवै ॥

कथा होत जो दुन्दि मचावै । बिघ्न करै होने नहिं पावै ॥
चोरी ज्वारी रत परनारी । हरिहिंसक मदमांस अहारी ॥
येते कर्म किहे जो पापू । नहिं आवौं तौ ममशिरथापू ॥
दो० हरिबिमुखन ते मित्रता राम जनन ते रोष ।
जो नहिं आऊं तौ परै मेरे शिर यह दोष ॥
मात पिते जे सेवैं नाहीं । भली बस्तु भै छिपिकै खाहीं ॥
दे बिश्वास दगा करि जावैं । साधु गुरू में दोष लगावैं ॥
हरिहरजन गुण कहै न सुनई । परअपकार लागि शिरधुनई ॥
औरौ पाप कर्म जो होहीं । नहिं आवौं तौ लागैं माहीं ॥
सुनत सिंह बोला हे गाई । शपथ तोर मोरे मनभाई ॥
हमरे मन बिश्वास तिहारो । जित चाहौ तित बेगि सिधारो॥
आयो आतुर क्षीर पियाई । अस जनि जान्यो ठग्योंबनाई ॥
दो० अहो सिंह तव ठगन की समरथ काको आहि ।
ठगा चहै जो औरको सोई शठ ठगि जाहि ॥
अस कहि आयसु हरिकोपाई । हुंकरत बहुला तुरत सिधाई ॥
पहुंची जब बछरा के तीरा । बाल बिलोकि गई सबपीरा ॥
अंगज जननि देखिढिग आवा । चूमि चाटि मा दूध पियावा ॥
चित उदास अम्बा करजानी । बोला बच्छ अग्रहै बानी ॥
मातु बिकल देखौं मैं तोहीं । कारण कौन बताओ मोहीं ॥
बहुला कहा पियहु सुत क्षीरा । जेहि कारण आइउँ तव तीरा ॥
आनु निहारि लेहु मोहिंबेटा । काल्हिते नहिं होई पुनिभेंटा ॥
बनमें हरि घेर्‌या कहिखेहौं । सोंहैं दै आइउँ फिरि जैहौं ॥
बोला बच्छ जाउँ मैं माई । तेरे बदले म्वहिं हरि खाई ॥
धर्मवान माता तैं आही । तव सेवा मोहिं करनो चाही ॥
जाते मम होवै उद्धारा । सुनि बहुला अस बचनउचारा ॥
दो० हेसुत आई मृत्यु मम तेरी आई नाहिं ।
मेरी बदि तू कौन बिधि जैहै हरिमुख माहिं ॥

सो० सुनु सुत मम उपदेश नखी नारि नृप शृङ्गधर ।
सरिसु शस्त्र अकुलेश इन बिश्वास न कीजिये ॥

अस कहि चलिगौवनढिगआई । देखि मिलीं सुरभीसबधाई ॥
पूछन लगीं कुशल कितरहेऊ । गिरिपर गइन सिंहतहँगहेऊ॥
खाये लेत रहैं मृगराजा । सौंह देइ आइन सुतकाजा ॥
सब सों विनय करौं करजोरे । क्षमा कीजिये अवगुण मोरे ॥
हौं अब जात सिंह के पासा । सुनत सखी सब भईं उदासा ॥
बोलीं बिलख शास्त्र असकहई । झूठै कहिय प्राण जो रहई ॥
तेहिते बहुला तुम मति जावो । घरबैठो निज प्राण बचावो ॥
बहुला कहा सखी सुनि लेहू । अस उपदेश हमें मति देहू ॥
आपन प्राण बचन के हेता । झूठ कहै तेहि जानो प्रेता ॥
परके प्राण झूठ कहि बाचैं । झूठ नहीं सो जानहु सांचैं ॥
जाकी मृत्यु मरै नर सोई । आपु अकेलो संग न कोई ॥
सत्य समान धर्म कोइ नाहीं । पाप न झूठ सरिस जगमाहीं ॥
शिव ते झूठ कह्यो चतुरानन । जग महँपूज्य नहींतेहिकारन ॥
सिय ते झूठ नदी गो कहेऊ । भक्ष्यअभक्ष्य गुप्त ह्वै बहेऊ ॥
हरि श्रुति निन्दा झूठबखानी । भये बोध सोइ पातक जानी ॥
उमा शंभु ते झूठ उचारा । त्यहिकारणदुखलह्योअपारा॥
नर बा कुंजर धर्म बखाना । तेहि अघ भयो अंगुष्ठपषाना ॥
तेहि ते सत्य तजब हमनाहीं । अस कहि चली केशरी पाहीं ॥
नमस्कार सब गौवन कीन्हा । सत्य हेत जीवन तनु दीन्हा ॥
चलत चलत बहुला तहँ आई । बैठो रहै जहां मृगराई ॥
बोलत भई सिंह मोहिं खावो । हौं आई निज क्षुधा मिटावो ॥
देखि ब्याघ्र कह बैठो माई । अब न खाबतोहिंचहुमरिजाई ॥
सतिबादी कहुं दुखको पावै ।तिमिरकतहुं दिनमणिहि मिटावै॥
कीन्हों सत्य जौन कछु कहेऊ । तवआवन मोहिंअचरजभयऊ ॥

दो० सत्यमाहिं सबलोक है सत्यमाहिं सब धर्म ।

ज्ञान मुक्तिहै सत्य में सत्यमाहिं शुभ कर्म ॥
धन्य धामतव धन्य पुर धन्यचरततृणजौन ।
धन्यधरणिजहँपग धरौ धनिकिसानहैतौन ॥
धनि तव क्षीरधन्यजिन पीन्हा । धन्यतुम्हारदरशजेहिकीन्हा॥
मैं निज भागि धन्य करिचीन्हों । जबते दरश आपको कीन्हों ॥
अब बहुला सेा दीजै ज्ञानू । ज्यहिते होय मोर कल्यानू ॥
बहुला कहा सिंह सुनिलेहू । हिंसा करन छांड़ि अबदेहू ॥
हरि सुमिरण में तनमन दीजै । यह उपदेश मानि ममलीजै ॥
कौतुम हौ सेा कहहु बखानी । सुनि कण्ठीरव बोला बानी ॥
हे स्वामिनि मैंहौं गंधर्बा । विद्या रूप केर उर गर्बा ॥
देव शाप ह्वीपी तनु पायेां । यहि तनते बहुपाप कमायों ॥
तुम्हरे दरश भये अघ नाशा । छूटो शाप हृदय परकाशा ॥
मैं प्रसन्न हौं तुम घर जाई । मम अपराध क्षम्यो येमाई ॥
असकहिहरिसुमिरन मेंलाग्यो । भोजन नीरदेहसुख त्याग्यो ॥
कछु दिन में तनु छूटत भयऊ । चढ़िबिमानसुरपुरकहँगयऊ ॥
बहुला जब आई निजधामा । पुत्र सखिन पायो बिश्रामा ॥
सत्य वृत्ति सबहिन उरधारी । बच्छसहित भइधेनु सुखारी ॥
ह०गी०सुखसाथरहिकछुकाल चलतबिमान लेनजो आयहू ।
नृपसहितपुरनरनारिद्रुमपशु आदिसबनचढ़ायहू ॥
लैउड़ेगणलखि देवबरषे सुमन घन जयजय किया ।
गयो लांघि सातौं स्वर्गपर गोलोकमें बासालियो ॥
दो० बहुलाहरि सम्बाद नित कहै सुनै जो कोइ ।
रहै सदा आनन्द में मृत्यु अकाल न होइ ॥
छ० धाम माहिं जोपढ़ै सुक्ख बालक का होई ।
गऊ खरिक जो पढ़ै वृद्धि गौवन की सोई ॥
दुखी होइसेा पढ़ै नहीं तो श्रवणन करई ।
होइ सकल दुखनाश और तन रोगौ हरई ॥

बहुतमहातमभार्तमें कह्योकछुक मैं गाय कै ।
मुक्तिचहै रघुनाथ भजु रामनाम मनलायकै ॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघु
नाथदासरामसनेहीकृतसुदर्शनबहुलाकथावर्ण
नोनामबिंशोध्यायः ॥ २० ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगण पगिरासुखदानि ।
बरणौं जैमिनकी कथा कछु असकंद बखानि ॥
सो० मौरध्वज नृप एक धर्म धुरंधर नीति रत ।
राम भक्ति की टेक वधू पिङ्गला पतिव्रता ॥
तासुराज्य कोइ दुखी न रहई । धन अधर्मकर भूप न लहई ॥
बाल वृद्ध योवन नर नारी । बसैं जोन तेहि नगरमँझारी ॥
सबमिलि करैं भक्ति हरि केरी । नृप रानी उर प्रीति घनेरी ॥
माला तिलक सहित जोआवै । सुनतै नृप आगे उठि धावै ॥
भवन लायकै चरण पखारै । चरणोंदक सोइ मुखमें धारै ॥
दो० गंग नहाइ सहस बर द्वारावति सत्य जान ।
सन्तचरणजलजो पियै तुलैन तेहि समआन ॥
सो० सिंहासन बैठाय षोड़श बिधि पूजन करै ।
नितनव नेह बढ़ाय सेवैं नृपसुत नारि युत ॥
ज्यहिदिन सन्त न कोई आवै । तेहिदिन आपुन भोजनपावै ॥
चोर सातमिलि कीन्ह बिचारा । हरिजन के आधीन भुवारा ॥
साधुन केर भेष धरिलेहू । सब चलिये मौरध्वज गेहू ॥
नृपते प्रथमै सेव कराइ । घात पाय मूसब धन भाई ॥
अस कहि सुन्दर भेष बनायो । सातौं हरि राजा गृह आयो ॥
देखि दण्डवत कीन्ह महीपा । मानोलह्योस्वातिजलसीपा ॥
पद पखारि आसन बैठार्यो । धूपदीप आरती उतार्यो ॥
अंतहपुर में आसन दीन्ह्यो । सुत बनिता सब सेवाकीन्ह्यो ॥

एक दिवस राजा मनआई। बनकी शोभा देखिय जाई॥

छ० असविचारि कसवाइ अश्वचढ़ि चले भूप जब।
चमूवार असवार अनुग पाछे लागे सब॥
सघन विपिनमेंगये फिरैंजहँमृग करिहरिसँग।
बोलत बिबिधिबिहंग फूल फूले नाना रँग॥
बिहरत बीतोदिवसनिशिपायकीन्हबिश्रामतहँ।
शुभतड़ागपुरइनि कमल करतभँवरगुंजारजहँ॥
इहां देखिवर सूनचोर मूसन मनलायो।
हीरा हेमनिकारि भवन बाहेर धरि आयो॥
ढोवत बीतीरैनि लोभ बश कछू न जान्यो।
रानिहि डार्योमारि बांधि बसुवेगि परान्यो॥
इततेसातौ जात हरि उतते आवत राज।
देखि हियेसंशय कर्योपर्यो चरण तजि बाज॥
बोल्योदोउ कर जोरि क्षमौ प्रभु गुनहहमारी।
रानी नारि सुभाव अवज्ञा किहिसि तुम्हारी॥
चलिये बहुरि निकेत चेत हमरे तब होई।
सुनि ठग गये सुखाइ राय ते बोले सोई॥
साधु नहीं हम चोर हैं धन मूसा सो लेहु।
कै दयाल हम सबन पर जीवदान अब देहु॥
कह्यो भूप धन धाम बाम सुत देह हमारी।
हवै सकल तव नाथ वृथा कत होत दुखारी॥
ऐस बचन जनि कहौ लोग सुनिकरिहैं शोरा।
कहिहैं परगट गुप्त सबै हरि जनहैं चोरा॥
गहि कर लाये भवन को सिंहासन बैठाय।
रानिहि मृतक निहारिकै शोच न मनमें आय॥

कुं० लाग्यो पुनि सेवा करन नृप संतनकी आय।
कनक थार सातहुंन के धोये चरण बनाय॥

धोये चरण बनाय मृतक रानी तहँ लायो।
रुण्डहि मुण्ड मिलाय रामकर ध्यान लगायो॥
सींच्यो चरणा मृतहि प्राण घट माहींजाग्यो।
उठी तुरत हरषाय भूपलखि भाषन लाग्यो॥

दो० आजु तुम्हें निद्रा बहुत कहांकि घेरी आय।
संतचले जब रूठि कै राख्यो क्यों न मनाय॥
हाथ जोरि रानी कह्यो सुनौ प्राणपति बात।
सोइ गई मैं आजु अति इन्हें न जान्यों जात॥
कह नृप पद अबते गहौ गहेरानि सुखझेरि।
मनमें भयो न मैल कछु लागे सेवन फेरि॥
प्रतिमा तीरथ मंत्र गुरु भेष जो बैष्णव कोइ।
जाकी जैसी भावना ताहि तैस फल होइ॥

तब हरि पुनि२ आयसु मांगा। बोले भूप सहित अनुरागा॥
जो धन चहौ सो हमते लीजै। चोरी कर्म छांड़ि प्रभु दीजै॥
जन्म भरेकहँ सम्पति दीन्हों। हरष समेत बिदा तबकीन्हों॥
ऐसी भक्ति देखि भगवाना। मनबचक्रमते निज जनजाना॥
मौरध्वज पर दाया कीन्ह्यो। चक्र सुदर्शन रक्षक दीन्ह्यो॥
ईति भीति दुखदालिद्र आवै। नृपके नगर न पैठन पावै॥
एक दिवस यम दूत जो आये। चक्र सुदर्शन लखि रपटाये॥
भागत यम पहँ पहुंचे जाई। दण्डफांससब दिहिनि चलाई॥
लखि हरि कहा हवैका भाई। सुनि गण बोले बचनरिसाई॥
दण्ड हमार तिहूं पुर माहीं। ऊंच नीच कोउ छांड़तनाहीं॥
मौरध्वजपुर जान न पायन। खेदेहु चक्र इहां भगिआयन॥
यह अनुचित देखी महराजा। हमते यह सपरी नहिं काजा॥
सुनि रविसुत मनक्रोधबढ़ायो। दूतन सहित बिष्णुपहँ आयो॥
शीशनाय कह अरज हमारी। सुनहुनाथ त्रिभुवन सुखकारी॥
तव आज्ञाते जगत मझारा। सब पर रहतहै दण्ड हमारा॥

मोरध्वजपुर दूत हमारे। गे तहँ खेद्यौ चक्र तुम्हारे॥
दो० दूतन कर अपमानभा दीन्हिनि फांस चलाय।
सोयह कारण कौन है नाथ कहौ समुझाय॥
हँसिबोले हरि सुनहुं यम नृपसमभक्त न कोइ।
तेहिते दीन्ह्यों चक्र निज रखवारी कहँ सोइ॥
केहि बिधि जावैं दूततब मेरे जन के पास।
सुनत पित्रपतिजोरिकर कीन्हो बचन प्रकाश॥
छ० भूप करै केहि भांति यज्ञ सेा कहिये मोहीं।
कहप्रभु कहे न बनी चलौ दिखरावौंतोहीं॥
यमहिंसिंहकरि आपु साधु कर रूपबनायो।
आयेनृपदरबार देखि उठि पद शिर नायो॥
सिंहासन पधराय कै षोड़शबिधि पूजाकरी।
भोजनको पंक्त भयो तब नृपते बोले हरी॥
सिंहएकमम साथ प्रथम भोजन तेहिदीजै।
कह्यो भूप का चही तौनि ततबीरहि कीजै॥
सुतको मांस जु देहु आन साउज नहिं खाई।
कितौभक्तिप्रणतजहु कितौशिशुलेहुबोलाई॥
भक्ति तुम्हारी ना तजौं कोटिविघ्नकिनहोइ।
सुतबनिता धन धामतन सङ्ग जाइनहिं कोइ॥
हरष सहित यक दास बोलाई। कह्यो कि आनहुसुतहिलेवाई॥
आज्ञा मनि कुवँर ढिग गयऊ। खेलत बोलि लयावत भयऊ॥
पुत्रहिलखि नृप बचन प्रकाशा। हमरे इक आये हरिदासा॥
तिनके सँग इक नाहर अहई। तुम्हरै मांस खान सेा कहई॥
सेा कस आज्ञा अहै तुम्हारी। मेटहु संशय आजु हमारी॥
सुनि ताम्रध्वज कह शिर नाई। धन्य सेा तन परस्वारथ आई॥
धन्यधामजहँअतिथि कि सेवा। धन्य शिष्य जानै गुरु देवा॥
धन्य नारि पतिब्रत अनुसरई। धन्य पुत्र पितु आज्ञा करई॥

धन्य ग्राम जो सुरसरि तीरा। धन्य तपी तामस बिन धीरा॥
धन्य सो नगर जहां रजधानी। राजा धन्य धर्म मति सानी॥
धन्य दास जो आयसु मानै। धनि स्वामी सेवा पहिंचानै॥
धन्य ज्वान जो इन्द्री जीतै। धन्य सो प्रीति न यांचै मीतै॥
धन्य सभा जहँ पण्डित होई। पण्डित धन्य क्रियायुत सोई॥
धनि धनपाइ जो त्यागनकरई। धन्य दरिद्री पाप न चरई॥
धन्य सुखी जो बिषय निवारै। धन्य साधु जो मानस मारै॥
धन्य सो क्षमा समर महँआनै। धनि दाता नहिं दान बखानै॥
धन्य सो द्रव्य दान महँ लागै। धनि प्रभुतामदमान न जागै॥
धन्य कर्म जो भगवत हेता। धन्य ज्ञान बैराग्य समेता॥
धन्य बिरति जो रति भगवानै। धन्यसोकवि हरिचरितबखानै॥
धनि नर परअवगुणहिं छिपावैं। धनि बिद्या बिकारमिटिजावैं॥

दो० दयावान सो देश धनि कहत वेद बुध लोइ।
राम भक्त जहँ ऊपजै धन्य जाति कुलसोइ॥
धन्य घरी रघुनाथ तब जब होवै सतसंग।
जन्म तासुको सफल जो रँगै राम के रंग॥

अहोपितामोहिं भा सुख भारी। जो हरि मांगी देह हमारी॥
अब यह परस्वारथ में आयो। धनि जननी ऐसो तन जायो॥
रोग दोष बश छूटै काया। स्वारथ शास्त्र रजाइ कटाया॥
बिष्टाकर्म खाक होइ जाई। कहो कौन स्वारथ फिरिआई॥
माता भार मुई दश मासा। सही अनेक भांति तेहिं त्रासा॥
सोतनलग्यो न परहित माहीं। जीवन जन्म धृग्गहै ताहीं॥

दो० भजन परारथ कर्म शुभ सधै पाय नर देह।
जीवन ताको सफलहै अरु सबके मुखखेह॥
असकहि पितैनवायशिर चलिभेकुवँरप्रबीन।
आये केहरि संत जहँ कहे बचन ह्वै दीन॥

अब भोजन हमका करि लीजै। अहो सिंह तुम देर न कीजै॥

बार बार ऐसे जब कहेऊ। सुनियमनिजतनप्रकटभयऊ॥
रूप चतुर्भुज हरि कर लीन्हा। प्रकट नृपतिकहँ दर्शन दीन्हा॥
धन्य धन्य तुम धन्य भुवारा। आपु सराहत सिर्जन हारा॥
कह रबि तनय धन्यहौ राई। सुत तुम्हार तुमसे अधिकाई॥
जसि श्रीपति तब कीन बड़ाई। सेा निज नयनन देख्यो आई॥
बोले प्रभु बर मांगु नरेशा। प्रणतपाल मेरो यह पेशा॥
मोरध्वज कह सब सुखदाइनि। आपनि भक्ति देहु अनपाइनि॥
एवमस्तु कहि कृपानिधाना। बोले पुनि सुनु भूप सुजाना॥
करौ भक्ति जबलग यह देही। अन्त समय मम धाम सनेही॥
असकहिहरियम तुरतसिधाये। अपने अपने मन्दिर आये॥
धर्म गणन ते कथा बखानी। भई प्रीति मन मिटी गलानी॥
जोजन चरित सुनै नित एहा। होइ सन्त पद पावन नेहा॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतमोरध्वजकथाबर्णनेानामएकबिंशोध्यायः २१॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि।
बरणों हरिअस्मृति मत कछुसेाइकथाबखानि॥
रानिहिमार्योहरिणलखितदपि न भयोअभाव।
पुत्रहि दीन्हो द्वापि जन हित मोरध्वज राव॥

यहि बिधि भक्ति करै नरनाहा। दिन प्रति बाढ़ैअधिक उछाहा॥
भूप धर्म जेा वेदन गाये। सेा सकलौ क्षितिपतिकरवाये॥
सुर भूसुर सुरभिन अति मानै। बैष्णवको बिष्णुहि समजानै॥
श्रीपति चरण लीन मन जासू। लुब्ध मधुपजिमितजै न पासू॥
बहुतकालयहिबिधिचलिगयऊ। और सुनेा जेा कसनी लयऊ॥
कांन धर्मसुत यज्ञ क साजा। पत्र बांधि छांड्यो बर बाजा॥

दो० कृष्ण बिजय बभ्रूबहन नीलध्वज वृषकेतु।
हंसध्वज औरौ सुभट सँग रक्षाके हेतु॥

चलत बाजि आयो सोई मोरध्वज के ग्राम।
ताम्रध्वज गहि बांधि पट बांध्योलै निजधाम॥
चढ़ि रथ आगे आप सिधायो। पाछेइत अर्जुन दल आयो॥
होनलागि अति मारु गँभीरा। शूर मगन कदरन मन पीरा॥
सात दिवस भरि भई लराई। मोरध्वज सुत जीति न जाई॥
अर्जुन आदि बीर जे रहेऊ। दियेबिडारि बिकल सबभयऊ॥
लखि अचेतनिज मंदिरआयो। बड़ पराधभा भूप सुनायो॥
भक्ति करत जाकी नितरहिये। तिनते युद्ध करन को चहिये॥
महिदुखहरन सुरनसुखकारी। धर्यो आय बपु कृष्ण मुरारी॥
सुनि ताम्रध्वज कही जु बाता। अनजाने अनीति भै ताता॥
यहां कृष्ण पारथ ते कहेऊ। सात दिवस इहनै ह्वै गयऊ॥
मोरध्वज है भक्त हमारा। तेहिते लरे न पैहौ पारा॥
सुनिकपिध्वजकेमाअभिमाना। हमते बड़ा भक्त को आना॥
जिनके बश नितरहत गोपालै। धनुष केरि बिद्या उर आलय॥
यहअभिमानकृष्ण प्रभुजाना। लगे बिचारन इमि भगवाना॥
अ० छं० जायद्वैत ते ज्ञान जाय कुल द्विजहि सताये।
जाय नीचसँगसुमति जाय क्षुध भोजन खाये॥
जाय क्रोध ते धर्म जाय आदर नित मांगे।
जाय नीति बिन राज्य जाय शूरापन भागे॥
जाय ज्ञान ते मोह जाय अघ हरि गुणगाये।
जायतिमिर रबिउदय जाय बिद्यालसआये॥
जाय यती बश काम जाय यश लोभ बढ़ाये।
जायगृहीबिनकार जाय सुख सबहिंसताये॥
जाय कुमति ते द्रव्य जाय संतोष ते ममता।
जायकपटते प्रीति जाय रिस कीन्हे समता॥
जाय सखा ते शोच जाय पातक ते शोभा।
जाय सुपथ ते रोग जाय बैराग्य ते लोभा॥

जाय जन्म अरु मरणरामके सुमिरणकीन्हे।
जाय गुरू ते भर्म कर्म निज रूपहिचीन्हे॥
शान्ति जाय परवर्ति ते दोष जाय दिहेदान।
कहै रघुनाथयोंजातहै भक्तिकिहे अभिमान॥

ताते अबहीं देहु मिटाई। नातरु बढ़त बढ़त बढ़ि जाई॥
कृष्ण कहा पारथ सुनु मोहीं। आवो भक्ति देखावों तोहीं॥
आपु वृद्धद्विज बपु धरिलीन्हा। बालकरूप बिजय कहँ कीन्हा॥
आये चलि मोरध्वज द्वारा। हरि पूजन महँ रहे भुवारा॥
द्वारपाल जा खबरि जनाई। बोले नृप बैठारहु जाई॥
कहत दोऊ जन चले रिसाई। सुनि नृप परे चरण महँधाई॥
करिसन्मान सुआसन दीन्हा। हाथ जोरि इमि पूंछे लीन्हा॥
कौन हेत आयो महराजा। आयसु होय करौं सोइकाजा॥
हम सरिखेन तेबनत न आना। तुम्हरी सेवा ते कल्याना॥

दो० बिप्रकही जो देनकी करौ प्रतिज्ञाराइ।
तौमैंमागौं जाहिते बचन वृथानहिं जाइ॥

कहनृप कीन्ह प्रतिज्ञा मांग्यो। तबतौ बिप्र कहनअसलाग्यो॥
जातरहेनबनहरि यकमिलेऊ। गहिसिआयबालकमोहिंढिलेऊ॥
तब मैं कह्यो छांड़ि यहिदीजै। याके बदले मोको लीजै॥
सिंह कहा मोरध्वज राऊ। तासु अंग दाहिन लै आऊ॥
तौ मैं बालक देहुं बचाई। नाहिं तौ याहि डारिहौं खाई॥
हौं तव अंग देनकह राई। छांड़ेसि तब बहु सौंह कराई॥
सोई लेन आयों तब द्वारा। अपर हेत नहिं कछू हमारा॥
सुनि रानी बोली हरषाई। अरधंगी त्रिय वेदन गाई॥
ताते म्वहिं केहरि को दीजै। पुत्रकह्यो नहिं मोको लीजै॥
बहुरि कृष्ण बोले सुनि लेहू। केहरि बचन कहा यक येहू॥
स्रो पुत्र हाथ गहि आरै। चीरैं हर्ष समेत भुवारै॥
सुनि आरा नृपलीन मँगाई। रानी पुत्र गह्यो तब आई॥

शिर धरि चीरन लागे कैसे। बढ़ई उभय दारु कहँ जैसे॥
चीरत आयो नाशा तीरा। बायें दृग भरि आयो नीरा॥
दो० निंदिनिंदि कहिनीरलखि चलेकृष्ण अनखाइ।
दोउ करिटेकि करोत नृप पूंछ्यो ठाढ़ कराइ॥
केहि कारणप्रभु चल्यो रिसाई। तौनिबात म्वहिं कहौ बुझाई॥
देत क्षोभ तेरे ढ्वै आवा। तेहिते यक अम्बक जलछावा॥
कह नृप मोरे क्षोभ न राई। बामअंग रोवत यहि लाई॥
मैं न लग्यो परमारथ माहीं। मोसम भाग्य हीनकोउनाहीं॥
तुम्हरे दहिने तौ नहिं आवा। सुनत कृपाल महासुखपावा॥
फेर्यो शीश कमल कर जबहीं। भई नबीन देह नृप तबहीं॥
सजलनयन प्रभुहृदय लगायो। जय कहि देव सुमन बरषायो॥
कह्योकि नृप मांगहु बरदाना। जो इच्छा मन होइ सुजाना॥
कोटि भांति जा देहुं भुवारा। तुमते तबहुं न हौं उद्धारा॥
ऐसी भक्ति कीन्ह तुम मोरी। दृष्टि न सूधिहोत दिशितोरी॥
दो० भूप कहा जा इषदहू करै तिहारे साथ।
ताको तुम गिरिमेरुसम मानिलेतहौ नाथ॥
एक बात मांगत हौं स्वामी। सो मोहिं दीजै अंतरयामी॥
आगे युग लागी कलिकाला। कुटिल अपावन रूप कराला॥
तामें कसनी भक्तन केरी। लेहु न नाथ अरज यह मेरी॥
कलिमें भक्त नामकी आशा। कसनी लिहे न होइ प्रकाशा॥
सुनतबचन कहबिहँसि मुरारी। जो मांग्योसो दीन्ह्यो हारी॥
निजके हेतुहि अबकछु कहिये। प्रभुपदप्रीतियहीमोहिंचहिये॥
कह प्रभु धन्य धन्य तुमराजा। धन्य पुत्र तिय सहित समाजा॥
असकहि हयलै बिदाजोभयऊ। देखि दर्प पारथकर गयऊ॥
गी०छं० जबदेखिनृपकीभक्तिकोअभिमानपारथकोगयो।
गिरिचरणश्रीगोपालकेहवैदीनअसबोलतभयो॥
महिमंदमोसमकोउतुमतेनाथहौंसेवालई।

धृगतेहुपरअहँकाररराखतभक्तमोसमनाहई ॥
लाभबशगुरुमित्रभ्रातापुत्रबहुजीवनिहने ।
समुझिकुलकरतूतिअपनेदोषजायेंनहिंगने ॥
परपिता द्विजकानीन हमरेपिता गोलक गारजू ।
हम कुंडकटु अग्रज जुवारी हद्दहारी नारिजू ॥
अतिकष्टकरि भो ब्याहुसोत्रिया पंचभरतारीभई ।
गुणहीनहरिछलपीनपावरनिधननिर्ब्बलनिर्दई ॥
ऐसेहुपर नहिं जानियत धौं काहिते रीझ्यो हरी ।
बनबानबिष ऋष रिपुनते सबठौरतुमरक्षाकरी ॥
छ० दुरबल के बल भूप भूप के बल को बलहै ।
तस्करके बलराति धनिहि धन घातै छलहै ॥
मूरख के बल मौन मानिनी के बल रोदन ।
क्रोधकेबल खलबयन मयनके बाम बिनोदन ॥
द्विजकेश्रुतिकबिबलबरणखगकेपरसरकरलहौ ।
तेहिप्रकार यदुनाथ तुमनाथ हमारे बलअहौ ॥
दो० कह रघुनाथ सनेहिनरयहिबिधि बिनतीकीन्ह ।
मोरध्वज की यहकथा यथाबुद्धि कहिदीन्ह ॥
मोरध्वज की यहकथा पढ़ै सुनै नितनेम ।
होयभाव भक्तन बिषय बढ़ै रामपद प्रेम ॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतमोरध्वजआख्यानबर्णनोनामद्वाबिंशोऽध्यायः२२।

दो० सुमिरिराम सियसन्तगुरु गणपगिरा सुखदानि ।
बरणौं महापुराणको अब इतिहास बखानि ॥
सुनहु मुनिहु मनलाइकै सुंदरकथा अनूप ।
कहीजौन शुकदेवजी सुनी परीक्षितभूप ॥
सोई कथा मैं कहौं बुझाई । रामचरण जेहिरति अधिकाई ॥

सतयुग भे मनुजग यशजासू। नृप उत्तानपाद सुत तासू॥
सुरुचि सुनीतिरहे दोउरानी। बिधुबदनी गुणरूप सयानी॥
उत्तमनाम सुरुचि सुतजायो। ध्रुव सुनीति के बेदनगायो॥
सुरुचि महीपै प्रिय अधिकाई। सो सुनीतिके महलन जाई॥
अन्न सेरभरि देइ भुवारा। ताहीते दोउकरैं गुजारा॥
पाँचबर्षके ध्रुव जब भयऊ। खेलतनृप जहँतहँचलिगयऊ॥
ठाढ़भये आगे हरुगाई। लखिनृपरुख लियोगोदउठाई॥
देखि सुरुचि अति उठीरिसाई। दिहिसि उतारि गोदते धाई॥

दो० बैठनको नृपगोद जो लिखाहोत तवकर्म।
तौ सुनीतके जठरमें काहेक लेत्योजन्म॥
पूत अभागिनि केरके चहो गोद नृपकेर।
अन्न मिलतहै सेरभरि सोउ न मिलिहै फेर॥

छ० तपबिनहोइ कि राज साज बिनहोइ कि कारज।
गुणकिहोइ बिन टहलबिना गुणहोइकि चारज॥
धनबिन मित्रकिहोइ मित्रबिन होइकि सदसुख।
सिद्धिकिबिनबिश्वास दासबिनमिटैकि भवदुख॥
अघबिनहोतकिअयशशुभयशकिहोइबिनदानके।
होतभुक्ति युतमुक्ति कहुं बिनाभजे भगवानके॥

असकहि बाँह पकरि ध्रुवकेरी। मंदिर बाहर दीनखदेरी॥
रोवतध्रुव माताढिग आयो। देखत जननी गोद उठायो॥
कहिंमार्‌यो सो कहिये मोसे। का अपराधभयो सुततोसे॥
कहध्रुवपिता गोदमोहिंलीन्हा। रानीछीनिडारिमोहिं दीन्हा॥
दूरि दूरि कहि घरते काढ्यो। सुनिदुर्बचन मोहिंदुखबाढ्यो॥
ऐसीबिधि मोको दुखदियऊ। राजाकछू मन्योनहिं कियऊ॥
ताते मैं पूछतहौं तोको। काकी शरणअहै सुखमोको॥
कह्योमातु सुखनिधि भगवानू। सोइ पितुमातु बंधुसँग जानू॥
जेहिप्रभुराखि गरभमें लीन्ह्यौ। पानिकेबुंद प्रकट बपुकीन्ह्यौ॥

गरभमोचि पुनि बाहेर लायो। मातु पयोधर क्षीरपियायो॥
यहिविधि पुष्टकिहे सबअंगा। जनमत मरत तजैनहिं संगा॥
जिय अपराधी ताहि न जानै। संकठ परे तबै कछु मानै॥
ताते सहै बिपति बहु भांती। चौरासी लख आवत जाती॥
अस जियजानिभजहु भगवानै। सुमिरतजाहि शंभु धरिध्यानै॥
सो प्रभु बिश्वरूप श्रुति कहई। सुनौ तात जेहि संशय दहई॥
च-छं- पदपताल शिर ब्रह्मधाम। अपरलोक है अंगनाम॥
नयनदिवाकरदिशाकान। अश्वनीकुमारबाजासुघ्रान॥
घनकेशअंबुपतिजीहजानु। निशिदिननिमेषआननकृशानु॥
दिगपालबाहुहैंपवनश्वासारोमावालिबिटपलघुदीर्घघास॥
नारीसरिता अरुअजाहाँस। अधरलोभ यम दशन तासु॥
अस्थि अद्रिरस शब्दभोग। जानैबिरला कोउचतुरलोग॥
शिष्णुप्रजापति वीर्यतोय। भृकुटीबिलाससोइकालहोय॥
उदरसिंधु सांचोप्रसंग। ईश थूल इतना जु अंग॥
सो० अहंकार त्रिपुरारि चतुरानन सोइ बुद्धिबर।
मनद्विजराज बिचारि चेतनरूप अनूपहरि॥
दो० सो प्रभु सचराचर बिषे पूरण व्योम समान।
भजनबिनानहिं लखिपरत ज्योंबिनमथेकृशान॥
असबिचारि सब शोच तजि रामचरण चितदेहु।
सुर दुर्लभ तनु पाइकै ताहि सुफल करि लेहु॥
ऐसे बचन सुने ध्रुव जबहीं। हाथ जोरि बोले इमि तबहीं॥
तुम कत दुखी सुखी वह रानी। तौन भेद मोहिं कहौबखानी॥
कह रानी प्रथमै तन माहीं। सपन्यो दान दीन कछु नाहीं॥
साधु संग हरि भजन न भावा। खर कूकर समसेंति गवाँवा॥
जसकछुकर्मपोचभलकीन्हा। सोइजनमतबिधिशिरलिखिदीन्हा॥
नहिं जानी केहि सुकृत तेरे। भये प्राप्ति गुण गोबिंदकेरे॥
तेहिते कोइदुख निकट न आवै। पररब्ध तेहि तनु भुगतावै॥

दो० जो कछु लिखा लिलाटमें सोहौवै परि नाम।
चहै परै घर रंक के चहै महीपति धाम॥
यद्यपि हरिके भजन करि होत सुरीते काँट॥
नर बरषनते ह्वै गई विधि बरषै बढ़ि बांट॥

ताते सुत तुम ऐसी करहू। रामचरण पंकज चित धरहू॥
भुक्ति मुक्ति हरि दरशन पावो। जो तजि कामनाम लवलावो॥
यहिविधि मातु दीन जबज्ञाना। सुनि ध्रूके अतिशय मनमाना॥
पूरब का कछु सुकृत जागा। ध्रुवके भयो बिमल बैरागा॥
उठि जननीते आज्ञा माँगी। करिहौंभजनबिपिनगृहत्यागी॥
बोली मातु अबै तू बारो। सतसंबत जनि बन पगुधारो॥
क्षुधा तृषा जब आनि सताई। केहिते भोजन मँगिहौ जाई॥
शीत उष्ण बरषा दुख पैहौ। का बन वोढ़िहौ काह दशैहौ॥
बाघ सिंह बक सूकर आई। औरौ जीव बहुत दुखदाई॥
बालक देखि दे हैं दुखभारा। का उपाय तबचली तुम्हारा॥

दो० सुनिध्रुव कह माता तुरत गयो ज्ञान का तोर।
अबहीं तें हमते कहै हरि रक्षक सब ठौर॥
गरभ माहिं रक्षाकरी जहां हितू नहिं कोइ।
अबका परखि न पालिहै बिपिनगयेमहँसोइ॥

अस कहि ध्रुव चलिभे हरषाई। मंत्रिन भन्यो भूप ते धाई॥
ध्रुव बालक बन जात तुम्हारा। का निदेश तव है यहि बारा॥
कह नृप सोन सेर युग देहू। अबहीं ध्रुवै फेरि तुम लेहू॥
मंत्री सुनि आये ध्रुव पासा। अस्थिरकरिअसवचनप्रकाशा॥
सेर भरे कर दुइ सेर खाहू। लउटिचलौघरबनहिं न जाहू॥
जेहिं प्रभुकीन सेर से दूना। तेहिके भवन अवर का सूना॥
हरि मारग ते फिरब न भाई। करै जो कोई कोटि उपाई॥
मंत्रिन आइ कहा नृप पाहीं। चले जात ध्रुव आवत नाहीं॥
राजा कह्यो ग्राम यक दीजै। मानै तबै फेरि ध्रुव लीजै॥

सचिवन ध्रुवको ग्राम सुनायो। तब ध्रुव अधिकसनेह बढ़ायो॥
मनमें अभय मनोरथ जागा। तुरतै मिलन ग्रामइक लागा॥
नाम जपे ते धौं का होई। मोरे मन प्रतीति असि सोई॥
ताते हम अब लौटब नाहीं। मंत्रिन जाइ कही नृप पाहीं॥
तब राजा आपुइ चलि आयो। चौथाई कहि अर्द्ध सुनायो॥
बहुरिकह्यो सब राजहि लीजै। नाना भांति भोग चलि कीजै॥
मुनिपितुबचनकहतध्रुवभयऊ। प्रथमैं सेर अन्न नहिं दयऊ॥
जेहि न कोइ ताकर प्रभु सोई। प्रभु जाके ताके सब कोई॥
जब मैं रामचरण चित दीन्हा। तबतुमनाम राज्यकर लीन्हा॥
हरि सनमुखते जो फिरिआवों। सती स्वांगकरि ताहिलजावों॥
दो० रानी जबहीं गोदते दीन्हों मोहिं उतारि।
तबहीं क्यों न सँभारेऊ मोह करत अबहारि॥
जबलग हरिके दर्श न पैहौं। तबलग जगमें मुख न देखैहौं॥
मंत्री नृप सब कहि कहि हारे। हठ करिकै ध्रुव बनै सिधारे॥
मिले ध्रुवै नारद मग माहीं। पूछेउ कितआयो कित जाहीं॥
जननिजनकको कितवग्रामा। हे सुत कहौ कहा तव नामा॥
बोले ध्रुव पितु मातु मुरारी। भ्राता मित्र सोई सुखकारी॥
सोइ कुलजाति कुटुंबपरिवारा। सब जीवनको सिरजन हारा॥
जबलग ऐसे पिते न जानै। तब तक झूंठ सांच करि मानै॥
जगमहँजेहिबिधिवदसबकोऊ। तुमते कहि समुझावों सोऊ॥
नृप उत्तानपाद पितु अहई। माता उभयनाम ध्रुव कहई॥
पितागोद लखि दूसरि माता। दिहिसिउतारिकहिसिकटुबाता॥
दो० रोवत जननीपहँ गयों तेहिमोहिं दीन्होंज्ञान।
हेसुत सुख सपन्यो नहीं विनाभजे भगवान॥
तब मैं बनको चल्यों रिसाई। सचिवन कहा भूपते जाई॥
राजा तब बहु लोभ दिखायो। सबतजिहौं हरिशरणतकायो॥
तुम कोहौ निज नाम बखानौ। मैं बालक नहिं ऐसे जानौ॥

कह ऋषिनारद नाम हमारा। गोदोहन बिचरो संसारा॥
सुनि ध्रुव गिरे चरण हरषाई। ऋषि उठायलिये गोदलगाई॥
चलु ध्रुव तोहिं फेरि लै जावों। राजा ते सनमान करावों॥
राज करो चलि ब्याह करीजै। बालक एक होइ सुनि लीजै॥
सुतहि राजदै बनहिं सिधारो। सब राजनकी साखि बिचारो॥
कानन सिंह बाघ बहु रहईं। भालु भेड़िया देखत गहईं॥
निशिचरबिपुल फिरतदुखदाई। बड़े बड़े भय मानत भाई॥
तहँ बालक को कौन उबारा। ताते मानौ बचन हमारा॥
शीत उष्ण बरषा दुख पावै। क्षुधा तृषा जब अधिक सतावै॥
तब केहिते दुख कहिहौ रोई। तहँ नहिं मातु पितानुज कोई॥
करणी कठिन न कीन्ही जावै। बिपिनजाइ कत प्राण गमावै॥

दो० कहरघुनाथ अनेकबिधि मुनि भयरहे देखाय।
ध्रुवके तनक न शंकभय राम कृपा दृढ़ ताय॥

कह ध्रुव हरिरक्षक सब ठावां। घरबनफिरत चलतबिचगावां॥
जैसी कर्म्म भावती होई। तैसी मृत्यु पाव सब कोई॥
आखिर यहतन यकदिन छीजै। तेहिते हरिसुमिरणकरि लीजै॥
माता पिता नारि सुत नाती। को काको सबपथिक लखाती॥
इन सबहिनते सरत जोकाजा। तौ तजि क्यों बनजाते राजा॥
राज पाइकै मद होइ आवै। करै अनीति नरक को जावै॥
राज नरक दोउ संगै रहईं। यहितेमोहिं नहिं भावत अहईं॥
ताते मोहिं हरि भक्ति दृढ़ावो। कृपा करौ गुरु मंत्र सुनावो॥
मैं बड़ भागी हौं ऋषि राया। यहि अवसर तव दर्शनपाया॥

दो० लागत लय ज्योंवृष्टि भै बूड़त वोहित साथ।
मरत धनन्तर मिलेतिमि मोहिंमिलेतुमनाथ॥
बन्धु बयर परनारिसँग न्यायम कीजै देर।
भोजन दान सुकर्म में नाहिं लगाई बेर॥

ताते बेगि सुदीक्षा दीजै। पतितै प्रभु पावनकरि लीजै॥

नारद ध्रुव के मन की जानो। भूतभविष्य बर्तमान पिछानो॥
तब ध्रुवका दीन्हों उपदेशा। मूल मंत्र यहि जपत महेशा॥
आसन ध्यान कह्यो जपनेमा। नवधा भक्ति बतायो प्रेमा॥
सम दम सत संतोप विचारू। ज्ञान बिराग दया उर धारू॥
काम क्रोध मद मत्सर लोभा। छांड़ौ मान मोह छल छोभा॥
सो० बिद्या जाति महन्त यौबन को मद रूपमद।
तजैं यतन करि सन्त पांच काटिये भक्ति के॥
औरौ बिघन भजन में भाई। रिद्धि सिद्धि सब घेरैं आई॥
इन्द्र डरपि अप्सरा पठावैं। छलबलकरि सो आनिडिगावैं॥
जापर कृपा करै असुरारी। तेहिते सकल जाइजियहारी॥
मुनि शिक्षा दै जबहिंसिधाये। तब ध्रुवचलि मधुबनमें आये॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघु
नाथदासरामसनेहीकृतध्रुवमधुबनआगमनो
नामत्रैबिंशोऽध्यायः॥ २३॥

दो० सुमिरिराम सियसन्तगुरुगणपगिरासुखदानि।
राजनीति संयुक्त कहौं सोइ इतिहास बखानि॥
पांच बरष के बयस ध्रुव धर्ष करी कछु नाहिं।
सुनि माते उपदेश लहि आये मधुबनमाहिं॥
एक पायँ भे ठाढ़ सुजाना। निश्चलमनकरिहरिकोध्याना॥
अन्न त्यागिफलमूलजोखायो। फलहु तजे तब पात चबायो॥
दलहु छांड़ि जल कीनअहारा। जल परिहरिभे पवन अधारा॥
यह चिंतवनि रहत चितछाई। कब देखौं हरिपद सुखदाई॥
दो० पवन तजत लागे जरन सुर सब शक्र डरान।
जैसे केहरि का निरखि अस्थिलियेमुखस्वान॥
माया देवी तुरत बोलाई। कहिनिकिध्रुवहिडिगावहुजाई॥
मैना और उर्बसी संगा। आईं जहँ ध्रुव सहित अनंगा॥

ऋतु बसन्त बिरचेसि अमराई। नव पल्लव फल फूल सोहाई॥
गुंजत अलिगण कुंज बिहंगा। बाजत बाजन उठत तरंगा॥
नृतहिं अप्सरा भाव बतावैं। ऊंचेस्वर कल किन्नर गावैं॥
यहिबिधिकिहेनि उपायघनेरी। छूटी नहिं समाधि ध्रुव केरी॥
ऐसे ध्रुव डिगिहैं नहिं जाना। तब देवी माया छल ठाना॥
रूप बनाइ सुनीतिक लीन्हा। पुत्र पुत्र कहि रोदन कीन्हा॥
प्रथमै आंधी आनि चलाइसि। पर उपल जलमलबरसाइसि॥
भीजे पट कट कट रद होवै। कांपै कृशतप पुत्र कहि रोवै॥
घर ते नृप मोहिंदीन निकारी। जा ध्रुवढिग जाकी महतारी॥
केहि की अब मैं शरणै जावों। बोलो लाल बहुत दुख पावों॥
शीश धुनै कर दै दै मारै। हाय हाय बदि बचन उचारै॥

दो० शोर सुनतरघुनाथ तब ध्रुवकी जगी समाधि।
लगे बिचारनमनै मन हरिचरणन चितसाधि॥

एका एकी कानन माहीं। किमिरानी आवत मोहिंपाहीं॥
जो अज्ञान होत तौ औती। प्रथमैं कत मोहिं बनैपठौती॥
जानि परत यह माया अहई। आई छलन मोहिंसुतकहई॥
नारद बचन आदि जब कीन्हा। पुनिध्रुव रामचरणचितदीन्हा॥
रघुपति कृपा न भूलै संता। जिमि नट लहै जमूड़ा अन्ता॥
बहु प्रकार सो सचि पचिहारी। तबलजाइ सुरलोक सिधारी॥
इन्द्र आदि सुर ह्वै ह्वै दीना। मधुसूदनकी बिनती कीन्हा॥
महाराज ध्रुवतेज अपारा। तेहिते सुरपुर छूट हमारा॥
तिष्टन कौन ठौर प्रभुपाई। जरतबिबुधजहँ२ चलिजाई॥
ताते हमैं राखि प्रभु लीजै। ध्रुवकोजाय दरश अबदीजै॥
ब्याकुल लखि सुरकृपानिधाना। मनबच कर्मदासनिजजाना॥
आये हैं ध्रुव निकट मुरारी। लगिसमाधितनसुरतिबिसारी॥
कृश लखि शङ्ख नादहरिकीन्हों। खोलिनयनध्रुवतबहींदीन्हो॥
आगे खड़े दीख भगवानैं। भक्तबछलशिवरूप निधानैं॥

दो० तड़ित विनिन्दक पीतपट नील जलदतन श्याम।
इंदुबदन बारिज नयन कर आयुध अभिराम॥
शीश मुकुट बनमाल उर छबि मनोज हरि भास।
ध्रुव बिलोकि लागे करन अस्तुति सहित हुलास॥

अ०छं० नमोराम सुखधाम नमो जगदीश दयालं।
नमो अशेष अलेख नमोसुरमुनिप्रतिपालं॥
नमो अनाथनि नाथ नमोसंतनहितकारी।
नमोशंभुअजईश नमो निरगुण गुणधारी॥
नमो अपार अगार नमोनिरकारनिरामय।
नमो अभेद अछेद नमो निरखेदनिरामय॥
नमो अजीत अतीत नमो परमात्मा नन्दं।
नमो निकर्म निभर्मनमोनिजब्रह्मसुछन्दं॥
नमो अरूप अनूप नमो सुरभूप उजागर।
नमो बीररणधीर नमो तारणभव सागर॥
नमोशरणदुखहरणकरणततकालनिहालं।
नमो तुमेक अनेक नमो कालहु के कालं॥
नमो कृष्ण तोहिंकृष्णतोहिंरामंबलरामं।
तुहींदशौअवतार तुहीसारण सबकामं॥
नमोनमोजयजयतिजयअघमउधारणअघहरण।
रघुनाथदासयहिभांतिध्रुवस्तुतिकीन्हीगहिचरण॥

दो० सजलनयन प्रभुअंगभरि लीन्होंहृदयलगाय।
कह्यो पुत्रबर मांगिये जो तेरे मन भाय।

मधुभारछन्द सुनि। गुनि॥ ध्रुव। ब्रुव॥

मांगौं कहा जगतपति देवा। सब नस्वर बिन तुम्हरीसेवा॥
अर्बि खर्बि लग दर्बि जो होई। त्रिभुवन राज पाव जो कोई॥
जोपै मरण करण सुख कैसो। सपनेकी सम्पति भ्रमजैसो॥
तेहिते नाथ कृपा जो कीजै। प्रेमभक्ति आपनिमोहिंदीजै॥

योगयज्ञ जपज्ञान बिरागा। क्रियाकाण्डबहुभांतिबिभागा॥
भक्ति बिना गुण सोहत कैसे। जीव बिनातन भूषण जैसे॥
सत सङ्गति भवनिधि जलयाना। देव दयाकरि सो भगवाना॥
सुनि ध्रुव बचन सरल छलहीना। बोले प्रभु भंजन दुख दीना॥
सांची बात कही तुम ऐसी। मेरे भक्त कहत हैं जैसी॥
सुर नरनाग लोक बिधिहू को। मोबिनभक्तगणतसबफीको॥
परतव मातु बहुत दुख पायो। राजहेत तैं बनको आयो॥
जो निजपुर अबहीं लै जावों। जगमें जाहिर नाहिंकरावों॥
तौ सब जनि हैं ध्रुव मरिगयऊ। कीबनखोय जनावरलयऊ॥
जोजगमें अप कीरति होई। तौकेहि काम धाममसोई॥
ताते प्रथम राज चलि कीजै। छत्तिससहसबरषलगलीजै॥
पुनिमम लोकहि आयो ताता। चढिबिमानसँगलीन्हे माता॥
तब ध्रुव कह्यो जोरियुग पाणी। राजतेनरक होत श्रुतिबाणी॥
कह भगवान अधर्म जो करई। सोनृप जाय नरकमहँ परई॥
धर्मवान क्यों नरकै जावै। राजनीति रतदोष न आवै॥
बोले ध्रुव मम नीति न जानी। कहहरि सुनुमेंकहौं बखानी॥
अ०छं० कहै न मिथ्याबचन मूढ़ मंत्री नहिं राखै।
दइकै लेइ न फेरि अजानै अमन न चाखै॥
मित्रै देइ न दुःख अमित्रै ना पतिआवै।
सबते राखै हेत बिप्र ना भूलि सतावै॥
दंड न बिरथा करै पुत्र सम परजै पालै।
जूवा चोरी मांस मद्य हिंसा ये टालै॥
परत्रियमातुसमानद्रव्यपरबिषसमजानै।
तजैकोह मदमोह द्रोहतन छोह न आनै॥
करै सदा सत्संग भक्त भगवत सम लेखै।
मनराखैहरिचरण करणसुनिकथाबिशेषै॥
रिपुते ठानै समर गूढ़ निज मंत्र न खोलै।

मानै कबिबुधवेद गिराकटु कभी नबोलै ॥
लोभी लम्पटद्विजनधर्मअधिकारीकरही ।
दान देइ लखिपात्र पाठपूजा अनुसरही ॥
जपतपसंध्याबरतकरितजैखजानाकोष ।
कहैं रघुनाथ ऐसेनृपैरती न लागैदोष ॥

दो० कृश सींचै छांटै जबर इकेन माहिं दे टेक ।
फूले फल सोइ लेइनृप चिरजिव मालीएक ॥
जौन चलैयहि रीतिनृपअवशि नरकसोजाय ।
अब सुनु परजन को धरम जाते दोषनशाय ॥
कृषी बणिज व्यापारमें नफामिलै जो जान ॥
दशाअंश दे बिप्र कहँ दोप न लागै हानि ॥
जो द्विज पावै और कहँ चौथाई दे सोइ ।
लेइ देइ बिश्वास करि दोष नाश तब होइ ॥
सेवाकरि धन जो लहै यथा शक्तिदे दान ।
तौनहिं लागैदोष कछू कुकरम करै न आन ॥

ताते तुम ध्रुव राजिहि करहू । जा मैं कह्यों सो मारगधरहू ॥
मम आज्ञा मानै जो कोई । ताहि किकछुदुख सपनेहुंहोई ॥
मोरी सीख करौ तुम राजू । भुक्ति मुक्ति दै सारौ काजू ॥
यों कहि राज काज सब साजे । बिबिधि प्रकार बाजने बाजे ॥
सैन अपार प्रकट प्रभु कीन्हों । तंबू सेज बिछौना दीन्हों ॥
गजरथ बाजि पालकी याना । चोपदार दर वानी नाना ॥
बणिक बजाज सराफ सोनारा । हलवाई जौंहरी चमारा ॥
जहँ लग भूपन केर समाजा । सो सबप्रकट कीनमहराजा ॥
भक्त बछल प्रभु किरपाकीन्हों । चक्रवती ध्रुवको करिदीन्हों॥
शङ्खादिक बहु भांति बजाई । चली कटक अतिबरणिनजाई ॥

दो० हरिकी आज्ञा मानिकै ध्रुव चढ़ि चले गयन्द ।
जन राघव हरि कृपाते मिटिगे सबदुखफन्द ॥

देश २ के नृप सुधि पाई। लै लै भेंट मिले ते आई ॥
करि सनमान सुता निजदेहीं। दायजु अमित कहांतक लेहीं ॥
यहि भांतिननिजपुरनियरायो। नारद तब नृपके ढिग आयो ॥
कह्यो पुत्र ध्रुव आवत तेरो। हरि दीन्हों तेहि राजघनेरो ॥
राजा कहा बिपिनिगा सोई। अब ध्रुव कैसे जीवत होई ॥
जलबहि गयोकि अग्नि जरायो। सिंह सर्प्प धौं बाघनखायो ॥
वृषभ महिषहय अजा हेराई। सकल काम तजि ढूंढ़न जाई ॥
मैं अपराधी बालक त्याग्यों। चल्योगहनउठिसंगनलाग्यों ॥
नारद कहा शोच जनिकरहू। बेगिहि आवत धीरज धरहू ॥
सुनि सुनीति उरभा सुखभारी। मुनिअसत्यक्योंकहतबिचारी ॥
तेहि समय ध्रुव दूत पठायो। नृप उत्तानपाद ढिग आयो ॥
सब वृत्तान्त कहा तेहिं गाई। सुनतै भूप उठा हरषाई ॥
रानी सहित सचिव पुर बासी। ध्रुवढिग चलेबिहायउदासी ॥
ध्रुव के डेरै नृप जब आयो। पितहिदेखिध्रुव उठिशिरनायो ॥
लीन महीपति गोद लगाई। गइ मणिमनहुं नागफिरिपाई ॥
अंक माल भरि भेंटी माता। प्रेमाश्रुनते सींच्यो गाता ॥
दो० पुरलोगन कहँ भेंटिकै पूंछि कुशल बहु भांति।
आसनदीन्हों सबनकहँ यथायोग सब जाति ॥
राजा ध्रुवकी करत बड़ाई। धन्य २ तुम धनि तुव माई ॥
जो हरिभक्ति हृदय महँधार्‌यो। सौ पीढ़ीतक पितर उधार्‌यो ॥
सुर नर मुनि सबकरतबिचारा। पुत्र बिना मिथ्या संसारा ॥
एक पुत्र जन्मै अस आई। शत पीढ़ी दे नरक पठाई ॥
एक सुवन सुर पुर पहुंचावै। निरै बास यमफांस छुड़ावै ॥
मोसम भाग्यवन्त नहिं आना। पुत्र मिला हरिभक्त सुजाना ॥
सुनिकरजोरि बिनयध्रुवकीन्ही। तुम्हरी कृपा भक्तिप्रभुदीन्ही ॥
बिबिधि भांति जेवनारकराई। बासरगयो निशा तब आई ॥
हरि बिशकरमैं आज्ञा दीन्हीं। कंचनपुरी छिनकमहँ कीन्हीं ॥

मणिमय मंदिरप्रभुरचिलिहेऊ। तेहिमहँ ध्रुवकहँ बासादिहेऊ॥
लागे रहन सकल हरपाई। भाव भक्ति दिनदिनअधिकाई॥
अरिन जीति बिप्रनसुखदीन्हा। भुजबलसकलबिश्वबशकीन्हा॥
पुत्र समान प्रजन कहँ सेवै। अधरम कर धन कबहुंन लेवै॥
कथा कीरतन ध्यान कराहीं। सुमिरण करत यामचलिजाहीं॥
ध्रुवराजा की आज्ञा मानैं। राजा ध्रुवहि बड़ा करिजानै॥
यकदिनकरिबिचारबन गयऊ। हरिसुमिरणकरिहरिपदलयऊ॥

दो० ज्यों पंकज जलमें रहत अरु सनेह पयमाहिं।
त्यों ध्रुव बरतै राज सुख लिप्तहोइकहुं नाहिं॥
यहिविधिछतिससहसबर्षकीह्यों भोगबिलास।
कछु दिन बाकी रहेजब तब मनभयो उदास॥

कमल छं० साधु बिप्र। बोलि छिप्र॥
पूंछि काम। दीन दाम॥

गी०छं० दियोराजकाजसुपुत्रकहुंपुनिआपुबनहिंसिधायहू।
जहँकीन्हप्रथमैंआय तहँहरिकेर ध्यान लगायहू॥
कछु कालबीते बिष्णुकेर बिमानढिगआयो भलो।
गणलिहिनिध्रुवैचढ़ाइ तापर हर्षि बैकुंठै चलो॥
ध्रुवकह्योतिनते मातुहमरी रहततेहिलैलीजिये।
वहजात चढ़ी बिमान आगे देखिआनँदभीजिये॥
यहि भांतिपहुंचेजाइ ध्रुवकाअचलहरिपदवीदई।
रघुनाथ सकलनक्षत्र अजहूं करतपरिकमा हई॥

दो० ऐसो हरिकी भक्ति है ताहि करत जे नाहिं।
तिन्हैं जानियेपशूसम सींग पूंछ बिन आहिं॥
ध्रुव चरित्ररघुनाथ जन कहसंक्षेप बखानि।
पढ़ै सुनैकरि नेमतेहि होय दैत्य दुखहानि॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतध्रुवचरित्रबर्णनोनामचतुर्विंशोऽध्यायः॥ २४॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि।
अबनरसिंहपुराण को कहौंइतिहास बखानि॥
जगत बिदित बैकुंठ है जहां बसत भगवान।
द्वारपालजयबिजयदोउ अतिभुजबली सुजान॥
एक बार सनकादि तहँ आये जनुचहुंबेद।
ब्रह्मानन्द मगन मन बाल स्वरूप अभेद॥

रमानाथ के दरशन हेता। लगे जानऋषि हरषिनिकेता॥
जयरुबिजयदोउरोकि बखाना। बिन आयसु नहिं पैहौजाना॥
सुनि मुनिदीन श्राप करि कोहू। तीनि जन्म तक राकसहोहू॥
भयो शोर सुनि सबहिन जाना। श्रीसहित आये भगवाना॥
कह हरि इन बहु कीन्हों पापा। मुनिभलकिह्योदिह्यो जोशापा
तब बोले सनकादि बिचारी। प्रभु अपराध कीन्हहमभारी॥
इन आपन धर्म पालनकीन्हा। बिन अपराधशाप हमदीन्हा॥
कह जय बिजय सुनौ गोसाईं। इहां तुम्हार दोष कछु नाईं॥
निजकृतदुखसुखसबकोइलहई। समुझे बिनासो आनहिंकहई॥
जोतुम नाथ दंडमोहिं दीन्हा। सोहम मानिअनुग्रह लीन्हा॥
सुरहेलन प्रभु आज्ञा हानी। उपज्यो महा पाप दुखदानी॥
सोसब अब मम कीन्ह्योंनाशा। कृपासिंधु समदृग हरिदासा॥

दो० अबकरि करुणा देहुहम जहँ २ जनमी जाय।
तहँतहँ प्रभुके नामको सुमिरण बिसरि न जाय॥

मन्दयोनि कर त्रास न कोई। केहुभांति हरि सुमिरण होई॥
मुनितिनकेरि साधुता देखी। सहित लाज दुखभयोबिशेषी॥
कहहरि तुमकत शोचहिकरहू। मम इच्छासोइ मनमें धरहू॥
अबसबमिलिसोकरहुउपकारा। जेहिते हो इनकर उद्धारा॥

दो० एकजन्म लक्ष्मी कह्यो सनकादिक इकबार।
एकजन्म भगवान कह हम करि हैं उद्धार॥
असकहि सनकादिकसहित हरिगृहचलेसिधाय।

कछुदिन बीते जयबिजय भे दिति के सुतआय॥
दी०छं० कनककशिपु हाटकनयन दैत्यबलीदोउभाय।
दैत्यबली दोउभाय छीनि इन्द्रासनलीन्ह्यों।
निरजर दियेनिकारिहुकुमअपनोहींकीन्ह्यों॥
एक बार हरनाक्ष धरालैगयो पराई।
धरि बराह अवतार ताहिहरि मार्योआई॥
हरणाकुश तपको गयो इन्द्र सून सुनपाइ।
लैलीन्ह्यों पुर आपनो त्रियदइकैद कराइ॥
दुखित जानिनारद तहां आयदियो उपदेश।
आयदियो उपदेश शोकतेहिकछुक मिटायो।
गर्भरहैं प्रहलाद ज्ञानसब तामें पायो॥
रहेतहां बहुकाल मातु वोदर के माहीं।
करै भजन मन मुदित कष्ट तनब्यापैनाहीं॥
हरनाकुश कोसिद्धिभोतपबिधि भाख्योआइ।
अहोपुत्रबरमांगिये ऋधि सिधि जो मनभाइ॥
जोमोपर परसन्न प्रभु तौदीजै बरुयेह।
तौदीजै बरु येह हमें जो सृष्टि तुम्हारी।
मरौं न काहू हाथ बात मोको यह प्यारी॥
रातिदिवसनहिंमरौंगगनमहिजलहथियारा।
दैकै बरुबिधिगयो भयो तेहि हर्ष अपारा॥
गरजि चल्यो घरआपने सूनो देख्यो आइ।
कोपिचढ्यो फिरिइन्द्रते सुरपुरलीनछिड़ाइ॥
घरलायो त्रियआपनी जन्मलीन प्रहलाद।
जन्मलीन प्रहलाद भयोतेहि आनँदभारी।
दियेदान गजबाजि याचकन किये सुखारी॥
करै राजि मन मगन बिप्र गौवन कहँमानै।
हरिदेवन ते द्रोह आपनो बैरी जानै॥

यहिभांतिनबीतत भये भोग करत कछुकाल।
बड़भये प्रहलाद तब खेलैं जहँ कहुं बाल॥

मनोहरछंद॥

सुनोएकहाल तेहिनगर कुम्हारबसैधोखेतेबिलारीबच्चाआवां मेंलगायोहै। पाछे सुधिआई शीशधुनैपछिताईतहांआयेप्रहलाद बातकहि समुझायोहै॥ जपोरामनाम जासे सरै सबकाम निशि बीतीचारि याम रामराम रटलायोहै। होतहीप्रभात खोल्यो लाग्योसब रेगनको मिटिगयोशोक प्रह्लादमनभायोहै॥

च०छं० इकदिवससुरारी मनहिंबिचारी पढ़नयोगप्रहलादभयो।
कविगुरुकेलरकासगडामरकाबोलितिन्हंसुतसोंपिदियो॥
लैगे चटसारा तहँ बैठारा बाल अपारा जहां रह्यो।
पाटीकरलिद्धं ओंनमसिद्धं पढ़ोद्विजन यहिभांतिकह्यो॥
तेहिअर्थलगायोयोतिबहायो निखवख रामैरामलिख्यो।
लखिबिप्रसुजानीकहिमृदुबानीअरेपुत्रयहकाहसिख्यो॥
तवपितु सुनिपैहै बहुतरिसैहै मरिहैं धरिहै शिरखोरी।
ताते यहि बारी डारुबिगारी मानहुं सत बाणी मोरी॥

पादाकुलक कहप्रहलादा। युत अहलादा॥
बिप्र सुनीजै। सत्य भनीजै॥
विद्या नामा। उभै जुतामा॥
अधिक को आही। पढ़ों मैं ताही॥

तो० सुनियेसुतबेदपुराणकहैं। बिद्यासमनाधनऔरअहैं॥
नहिंचोरचोरायसकैनजरै। सुखदेश प्रदेशनभूपहरै॥
गुणरूपपराक्रमबुद्धिघनी। सुतसेवकबन्धुअनेकधनी॥
बिनबिद्यासोंनरसोहतयों। बहुहंसनमेंयकबागलज्यों॥
तेहितेसुतबिद्यानित्यपढ़ो। जेहिपावहुराजगयन्दचढ़ो॥
असबैनसुनेद्विजकेजबहीं। प्रहलाद जुबोलिकह्योतबहीं॥

दो० बिद्याधन कुलरूप मद प्रभुता यौबन नारि।

ये बाधक हरि भक्तिके कह बुध वेदबिचारि ॥
ब०छं० तेहिते मैं यह बिद्या पढ़ब न नाथ ।
सुनि महिसुर प्रह्लाद के गहिदोउ हाथ ॥
लाये जहँ हरणाकुश कहिनि रिसाइ ।
पढ़ै न तव सुत राजन हमहिं सिखाइ ॥

कड़पा छंद ॥

बिहँसिप्रहलादको गोदबैठारिकै कही मुखचूमि सुतपढ़ो काहा ।
रामहीनाम सब पढ़नमें सारहै पढ़ा हमसोइ सुनि हृदयदाहा ॥
बदत बुधबेद यह दुष्टकी रीतिहै प्रीति आधर्म में अधिक लावै ।
ज्ञानबैराग्य हरिभक्तिभवभयदहन नामगुणग्रामजेहिनाहिंभावै॥
कही हँसिदेव शठकूर ऐबीबड़े आइकोइ बाल भुरकाय दीन्हा ।
बहुरिप्रहलादतेकहत सुनिलीजिये शत्रुकोनामनहिंचहीलीन्हा॥
सकल जग ईश सब जीवको पोषता तासु ते तात का बैर कीजै ।
छांड़िमदमानशुभज्ञानहिरदयधरौ करौहरिभजनजगसुयशलीजै

दो० शत्रु नकाहू केर हरि मित्रहु नाहिन तात ।
जैसो देख मुकुर में तैसो ताहि लखात ॥
सुनेबचनअसअसुरपतिरिसबशदिहिसिउतारि।
कहिसि द्विजनत याहिलै जाहु पढ़ावो मारि ॥

हा०छं० सुनि पुनि द्विज लाये चट सारहि ।
लिखि दीन्हेनि सुत पढ़ो पहारहि ॥
आपु गये पुर कहँ कछु कामहिं ।
पोथि लिख्यो प्रह्लाद श्रीरामहिं ॥

श०छं० लखि बालक सब । ढिग आये तब ॥
सखा ते जैसे । बोले ऐसे ॥

दो० कहा शिशुनप्रह्लादते हठ तुम करते काहि ।
मात पिता गुरु जो कहै प्रमुदितकीजैताहि ॥
सुनि बोले प्रह्लाद तब मातपितागुरु सोइ ।

करै जो सन्मुख रामकेजहँलग निजबलहोइ॥
अमृत पलटेदेइ बिष पारस बदले कांच।
जानि बूझि तेहिलेइकोउ कहौंसखौ सबसांच॥
पढ़नसुनन सोइसुफलजो रामचरण रतिहोइ।
नातरु फिरिमूरख भला बाद न ठानै कोइ॥

सुनहु तातयहि जगके माहीं। दुखनिशिदिनसुखसपनेहुंनाहीं॥
देखहु तुमनिज हृदयबिचारी। उपजत चारि खानि तनुधारी॥
अंडज जो अंडाते होई। पिंडज प्रगट गर्भते सोई॥
स्वेदज श्रम सीकर ते जानौ। उद्भिज संग वारि करमानौ॥
भ्रमत जीवसब योनिन माहीं। दुखबहुभांति बरणिनहिंजाहीं॥
पाप पुण्य जबसम दोउहोई। ईश कृपा नरतन लहै सोई॥
प्रथम जीवजल माहीं आवै। जलते बहुरि अन्नमें जावै॥
जाके भवन जन्मभा चहई। सोई अन्न खातवह अहई॥
अन्नते रसरसते सुखकारी। रुधिर वीर्य यकमास निहारी॥
जब युवती रति दानहिं पावै। तबसोइ जीवगर्भ में आवै॥
रजवीरज यक दिनमहँमिलई। पंचयेंदिन बुद २ उठिखिलई॥

दो॰ सतयें दिन फेना उठत दशयें पिण्ड पलबीश।
मासदिवस जब होततब निकसन लागतशीश॥

उभै मास भुज जांघ लखाई। तिसरे पेट बिलग ह्वै जाई॥
बेद मास अँगुरी कचरोमा। हाड़ मांस सरत्वचा जुक्कोमा॥
पूरण गर्भ सातयें मासा। अठयें वाक सहित चलश्वासा॥
नवयें मास चेतभा भाई। पूर्व जन्म सतकी सुधि आई॥
बिष्टा मूत्र उपर ह्वै बाहैं। चोटत कीट अनल तनदाहैं॥
पीड़ित सदा अधो मुख रहई। तहँ न मातपितुकेहिदुखकहई॥
तब भगवान केरि सुधि कीना। बोलत भयो बचन ह्वै दीना॥
दीन दयाल कृपाल मुरारी। अशरण शरणहरणदुखभारी॥
प्रभुयहि बार माहिं निरवारौ। कर्मक्षेत्र में लै तनुडारौ॥

तहँतव चरणकमल चितलावों। जाते गर्भबास नहिं पावों॥
दो० चारि ठौर सब नरन के कछु बैराग चढ़न्त।
गर्भ माहिं शवकेनिकट कथासुनत रतिअन्त॥
बिनय सुनीतब कृपानिधि पवन चलाई एक।
योनि छांड़ि बाहेर भयो भूल्यो ज्ञान बिबेक॥
पिता शुक्र बहुते कुवँर मारजअधिककुमारि।
रजबीरज दोउसम तहां होत नपुंसक धारि॥
कर्महोत जैसे कछू तैसाही फलहोइ।
तैसाही दुख सुःखको भोग करत नरसोइ॥
कर्मसेा त्रैबिधि संचित परारब्ध क्रियमान।
भरैधरै बपुकरै जस तस भोगै तन आन॥
यहि बिधि लीन जन्मजगआई। छिनयकबचनबोलि नहिंजाई॥
पुनिभा कछुक चेततब जाग्यो। कहां कहां कहि रोवनलाग्यो॥
सुत उतपतिसुनिपितुमहतारी। हर्षित गानकरैं मिलि नारी॥
छठी भई पुनि बरहों कीन्हा। नामकरणशिशुमुखमें दीन्हा॥
करत मूत्र बिष्टाजहँ परिया। स्वच्छास्वच्छगनतनहिंकरिया॥
माताहू कछुभेद न जानै। सुतधौं केहिहित रोदन ठानै॥
मन अनरूपित करै उपाई। जेहिते अधिक होत दुखआई॥
पांच बर्ष बालापन गयऊ। पुनि पवगंड अवस्था भयऊ॥
पढ़ि सुनि खेल कूद के माहीं। नव संव्वत् गतचेत्यो नाहीं॥
जननी कहत पुत्रबड़ भयऊ। यहनहिंजानतसुतघटिगयऊ॥
बहुरि कुमार अवस्था आई। कसब करन लाग्यो हरषाई॥
भाबिवाह बर भामिनि पाई। प्रमुदित षोड़श बर्ष बिताई॥
तब तहँ तरुण अवस्था लागी। कामअग्निहि रदयबिचजागी॥
बनितन ते अति हेत बढ़ायेा। आपन सुखतिनमेंलखिपायो॥
दो० यथा गृहपसवकास्तलै चपिचावत सहप्रीति।
निज तालूगत तनुजभषि मानततोषअभीति॥

तन हेरै फेरै नयन बयन बदै मद साथ।
हिंसा रत निजमत चलै मलै मोछ दोउहाथ॥
चालिस बर्ष लगे तरुणाई। रही बहुरि आई वृद्धाई॥
भये पुत्र उपपुत्र घनेरे। होत दुखी तिनके दुख तेरे॥
निशिदिनचिन्ता करत अपारा। सबन केर मोसे प्रतिपारा॥
कहु शठ कुश बारी के जीवैं। को तेहि चारा देत सदीवैं॥
तिनके हेत करै अघनाना। नहिं जानै मरि यमपुरजाना॥
भजे न हरि हरिजनगुणलीला। कहे न सुने मुदित मनशीला॥
बातनहीं वृद्धापन गयऊ। जरा अवस्था आवत भयऊ॥
तन बल गयो गिरे सब दांता। डगमगचलत सुनतनहिंबाता॥
हराजल बहत अकामबिचारी। दीन्हो खाट दुवारे डारी॥
परे पवरि पर क्षुधा सतावै। मांगत कहे कहां कोउ पावै॥
तृषा लागि जल देत न कोई। बकत तहां मुख आवत जोई॥
घरके कहैं मरिउ नहिं जाही। का यमराज बिसरिगेयाही॥
जिनके हित परलोक बिगारा। तेसबजियतैंकिहिनिकिनारा॥
इकदिनयमगणलीन्हिनिमारी। सुनत दीन पुर बाहेर डारी॥
लै जब गये दूत यम पासा। देखतदिहिनि नरकमहँबासा॥
प्रथमैं दुखद नरक भुगतायो। पुनि चौरासी में जनमायो॥

दो० जीवत नानादुख सह्यो बिनाभजे भगवन्त।
अब चौरासी के बिषे भोगौ कष्ट अनन्त॥
धृगधृग ताकी बुद्धि को नरतन वोहितपाइ।
तरै न जो जग जलधि सों आतमहत गतिजाइ।

तेहिते तात नरक परिहरहू। रामभक्ति हिरदयमहँ धरहू॥
श्रवै अम्बुभुक कुश रस पाई। उवैं दिवाकर पश्चिम आई॥
मृगजल निरखि तृषाबरु जावै। राम बिमुख सुख जीवनपावै॥
सुनि सब बालक बोले सोई। इक संशय हमरे मन होई॥
हम तुम जन्म लीन इक संगा। खेलत रहेन बिहंग तुरंगा॥

तुम हरिभक्ति कहां यह पाई। मुनि दुर्लभ पुराण श्रुतिगाई॥
दो-छं-सुनिप्रहलादकह्योहरिणाक्षजबामारोगयोपितुगातपकोतब
इन्द्रसकोपिदैत्यपुरछेकिकै। मातुहमारीसगभहिदेखिकै॥
भु०छं० बिचार्योहियेमेंतबैपर्बतारी।असुरशुक्रतेगर्भयाकेमँझारी॥
बधेयाहिनीकोनतौशत्रुहोई।करोरारिआगेखलीदुष्टसोई॥
दो० तेहि अवसर नारद तहां आइ कही असिबात।
यहिके उर हरि भक्तहैं सुर सुखदायक तात॥
सुनि कै नारद के बचन तब चलि भये सुरेश।
दुखित देखि मुनिमातु कहँ लगे देन उपदेश॥
स० तजिशोचहियेहरिनामधरौजोहवैंसुखदायकदुःखप्रहारी।
जेहिध्यावतशेशगणेशदिनेशऋषीसनकादिउमात्रिपुरारी।
सुतबन्धुसखात्रियमातुपिता धनधामसबैरबिकोभववारी।
ताबिचधावतहै मृगज्यौंन जपैजगपालक सिन्धु मुरारी।
दो० यहिबिधि मुनिममातुकहँ उपदेश्यो दिनसात।
मैं सचेत जननी जठर सुन्योकह्यो सोइतात॥
सुनि प्रहलाद बचन अनुरागे। दण्डप्रणाम करन सबलागे॥
भल उपदेश हमैं तुम दीन्हा। मात पिता स्वारथ रतचीन्हा॥
अस कहि बैठे निज निजठामा। लागे लिखन रामही रामा॥
तेहिअवसर दोउ महिसुरआये। प्रहलादै लखि बचन सुनाये॥
विद्या पढ़ो छांड़ि शठताई। हठकीन्हें कछु नाहिं भलाई॥
हाठक नयन बहुत हठ ठाना। मारे गये हवैं तव जाना॥
भक्ति पक्ष कर हठ है नीका। शठ ताकरहठदुख प्रदजीका॥
सुनिरिसकरिद्विजधरिदोउहाथा। लाये तहँजहँनिशिचरनाथा॥
महाराज तव सुत यह कैसा। कालकूट हरि घटमहँजैसा॥
राम राम जयराम पुकारे। पढ़त न विद्या हम पचिहारे॥
बिप्र बचन सुनि गोद उठाई। बोला अधिक सनेह बढ़ाई॥
तुम सुत जेठे सब सुखकारी। तुमहीं राज केर अधिकारी॥

ताते बिद्या पढ़ौ सचेता। सुखद सिखावन सुततवहेता॥
नि०छं० यदपि तुम तात यह बात हित की कही।
तदपिमोहिं नीकि नहिं लागि तनकौसही॥
लोक में सुखद परलोक में अकाज को।
ताते हौं न पढ़ौं तात करौं नाहिं राज को॥
शि०छं०सुनिअसिबानीअतिरिसठानीओनिगिरायोगजैमँगायो॥
कहइहि लीजै। पगतर दीजै। बड़ दुखदाई। बधे भलाई॥
म०छं०प्रहलादकीमातसुनीयहबातगईपतितीरकह्योधरिधीर॥
मा०छं० नाथबात मानिमोरि। पुत्र बधे बड़ी खोरि॥
दास नीचकीसमान। परारही देहु जान॥
छोट पुत्र आहिलेहु। राज काज ताहि देहु॥
ऐसज्ञान नारिदीन। कहेसुने क्षमा कीन॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगर ग्रंथउजागर श्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतप्रहलादचरित्रबर्णनोनामपंचविंशोऽध्यायः२५॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि।
बरणौं श्री प्रहलादको पुनिइतिहासबखानि॥
तबनिज सचिव पठायो आयो जहँ प्रहलाद।
बोल्यो सुत विद्या पढ़ौ तजिहठ बाद बिवाद॥
प० छं० नृप निंदेतेतनराखिलेह। तुमगुप्तकरौहरि पद सनेह॥
मल मांस मूत्रकफ है प्रधान। ऐसे तन का शोचै अयान॥
कोइअल्पकालकोइ कल्पमाहिं। मरनाबिशेषिकछु रहननाहिं॥
अबहीं चाहौ डारै सो मराइ। पररास नाम नहिं तजब भाइ॥
दो० अल्पकाल जीवन भला रामभक्त जो होइ।
भक्तिहीन शत कल्प तक जीवैबिरथा सोइ॥
कहैरघुनाथअनेकबिधि सचिवरह्योसमुझाय।
मान्यानहिंप्रहलादजब तब उठिगयोरिसाय॥

ता०छं० ताहिसमयपुरलोगजुआये। आरतहवै असबैनसुनाये॥
नाथ सुनो बड़ शोच हमारे। बाल सबै प्रहलाद बिगारे॥
तो०छं० तिनकेरिदशानहिंजातकही। कहुंरोवतहांसतहालसही
कहुं नाचत गावत गोप रहैं। पुलकांग बिलोचन नीर बहै॥
हरि नाम निशंक रटैं मुखते। किन येऊ पियूष कहै हमते॥
धृग जीवन है जगमें तिनको। मनलाग न यारसमें जिनको॥

दो० सुनो नाथ प्रहलाद जो फिर जैहैं चटशार।
तौहमबसिबे अनतकहुं त्यागबनगर तुम्हार॥

ता०छं० याबिधिके सुनिबैनमुरारी। मुष्टिक एकभवांइ कैमारी॥
बिप्रन ते पुनि बोल्यो रिसाई। खोयहु बालक भक्ति पढ़ाई॥

दो० गुरु नन्दन तुम बन्धु दोउ तातेकरिय न रोष॥
भयो कालबश बाल यह बिप्र तुम्हार न दोष।

असकहिपुनिसुतकेदिशि डोला। रामनाम सुमिरतलखिबोला॥
अबते मानि लेहु मम बानी। नाहित होत प्राणकी हानी॥
पुनो तात संतन की टेका। छूटन जो दुख परै अनेका॥
सुनिप्रहलाद वचनकरि क्रोधा। बांधो अधमप्रचारिसि योधा॥
राज कुमार सकै को बांधी। सुभट समूह रहे चुपसाधी॥
छ०छं० तबआपुइधावा बांधिबनावा गिरितें दीन्हेसिडारी।
उपरैहरिलीन्हों भूधरिदीन्हों लागिनतातिबयारी॥
पुनिजकड़िजँजीरननीरगँभीरनदिहिसिदुष्टबोरवाई।
सांकर कहँतोरी भक्तहि छोरी किहिनिकिनारेआई॥
तब गज मँगवायो तरे डरायो देखत कुंजर भाग्यो।
महिखोदिगड़ायोअहिलपटायोतिहिक्षणबिषतिनत्याग्यो
तुपकैबहुदाग्यो घावनलाग्यो पुनिफेरेउ शिरआरा।
दोउचरणबँधायोउरधटँगायो तारनतकितकिमारा॥
उरचुभ्यो न एकातीप अनेका नामप्रताप नव्यापी।
सबकरैं बिबादूयहि ढिगजादूतेहिबलबचतप्रलापी॥

सुनि ताकी भगनी हरबरमगनी नामढुंढ़ला आई।
उरलैप्रहलादै अतिअहलादै बैठि अग्नि लगबाई॥
निशिचर हरषाने जरत पिछाने काठकपाट लै आवैं।
डारैं तिहि माहीं कुप्पर ढाही चरख फरक जो पावैं॥
बल्लनकीमाला नरभखबाला गुहिगुहि आइचलायो।
जपिये मनुलाई हँसैं ठठाई बड़ हरि भक्त कहायो॥
भोरहि प्रहलादा युत अहलादा बैठे धूरि उड़ावैं॥
जरिगे तम चारी दुष्टनि नारी नभ निर्जर गरियावैं॥
भाषत रघुनाथा यह सब बाता भइ सतयुग के माहीं।
करिमाधुस द्रोहा ह्वै बशमोहा अब लगुजारी जाहीं॥

दो० देखि सखा प्रहलाद के हर्षि मिले सब धाय।
दनुजराय बोलत भयो पुनि निजढिग बैठाय॥

सं०छं०हौंबहुत्रासदई सुततोकहँ। तद्यपितू न डरै कछु मोकहँ॥
तात सुनोजिनकेउरहैंहरि। तेनिभय कोउकाहसकैकरि।
तौलगसंश्रितशोकसतावत। जौलगरामकनामनध्यावत॥
हैसब तापप्रनाशनकोगद। देखु समीप अहं बपु तेहद॥

म-छं-सुनिबचन ऐसशरलागजैस॥गहिखम्भधाइबांधेसिरिसा॥
तवप्राणहरणं।मैंकीनपर्ण॥करखड्गकाढ़ि। जनुतड़ितगाढ़ि॥
बोलाकठोर। कहँरामतोर॥जेहिरहेसुधेइ।अबराखिलेइ॥

बि०छं०रामहमार ह्वै सचराचरमें नहिं मानुतो योंलखि लीजै।
नामके अक्षर चौगुणकै पुनिपांच मिलाइकैदूगुन कीजै॥
आठका भागदियें रघुनाथ बचैं युग अंगतहांमनुजै।
मोहूमेंरामहै तोहूमें रामहै खड्गमेंरामहै खम्भ सुनीजै॥

श्रीछन्द खम्भा। माहैं। भाष्यो। जैसे।

दण्डकछंद-गगड़ गड़गड़ान्यो खम्भ फाट्यो चरचराय। कस्यो नरनाहर को रूप अति भयानो है। ककट कटकटावै दंड़ै दशन लपलपावै जीभ अधर फरफरावै मोक्ष व्योम व्याप्य मानो है।

भभरि भरभराने लोग डडरि डरपराने धाम थथरि थरथराने अंग चितै चाहत खानो है। कहत रघुनाथ कोपि गर्जे नरसिंह जबै प्रलय को पयोधि मानो तड़पि तड़तड़ानो है॥

गी०छं० गर्जो महाधुनि घोरशब्दक शोर तिहुंपुरमा भयो।
चौंके बिरञ्चि डेरानबासव ध्यानशङ्कर तजिदयो॥
लेलखरतदिग्गजकोलकूरम कलमल्योअहि महिहली।
नरनागसुरभेबिकलउछरेउसिन्धुजलमारुतचली॥

दनुजराज देखा नरहारी। बोला बचन सक्रोध पुकारी॥
रे हरि कुहुक तोरि मैं जाना। छलकरिबध्यो बन्धुबलवाना॥
तासु बैर लेने हित तोहीं। खोजिफिरेउँकहुं मिल्योनमोहीं॥
अब नरहरि तनुधरि मम नेरे। आयो कठिन काल के प्रेरे॥
असकहि कीन्होसि गदा प्रहारा। गहिनरसिंह धरणि दैमारा॥
पुनि उठि लरत धरत हरिधाई। बहुत काल इमि भई लराई॥
बिकल जानि सुर रमा निवासू। उरधरि उदर बिदारेउतासू॥
लखिसुर हरषि सुमन बरषायो। जयजयकहिदुन्दुभीबजायो॥
आँतै काढ़ि पहिरि उर हारा। तदपिननिघटितक्रोधअपारा॥
नारदादि सनकादि मुनीशा। सहितशक्र कमलाजगदीशा॥
डरहिंसकल कोइनिकटन जावैं। दूरिहिते सब बिनय सुनावैं॥
कह बिधि कमला ते तुम जाहू। निकटबासिनी हरिकी आहू॥
सुनि कमलाकर कानन धारा। हमअसरूप न कबहुंनिहारा॥

दो० तबसुरसबप्रहलादकीबिनयकिहिनिढिगआय।
चतुरानन बहु प्रीति ते बोले हृदय लगाय।
निकट जाहु प्रहलाद तुम हमसब देव डरात।
सुनत गये नरसिंह पहँ हर्ष शोक नहिं गात॥

दीन दयाल लमकि उरलायो। बिछुरा बनबालक जनुपायो॥
हा सुत तोहिं नीच दुखदीन्हा। पायसिफलखलआपनकीन्हा॥
अबमोहिं अतिप्रसन्नजियजानू। मांगु तात अभिमत बरदानू॥

सुनहुनाथ तव भक्ति जेकरहीं। मनमें कछू कामना धरहीं॥
तवै बनिकन आसिक जानी। कृत उदयोग नफा अनुमानी॥
हमैं न कछु चहिये किरपाला। सुकृत सुभक्तिहि देहुदयाला॥
यह बरदान मिलै प्रभु मोका। बिमुख पिता पावै परलोका॥
सुनि नरसिंह कह्यो हरषाई। सुनहु तात मम भक्ति बड़ाई॥
कुं० जाके कुलमें भक्तमम नाम लिहाड़ी होय।
एक एक शत आपनी पीढ़ी तारत सोय॥
पीढ़ी तारत सोय पिता की चौबिस जानौ।
माता की गनिबीस बाम की षोड़श मानौ॥
द्वादश पुत्री और एक दश भगिनी ताके।
दश भूवा की और आठ मौसी गै जाके॥
दो० कुल पबित्र जननी सकल भागवती महिबास।
स्वर्गस्थित पितरोपि धनु येषुबंश ममदास॥
जब जगपति असबचन सुनाये। जन प्रहलाद हिये अतिभाये॥
नामें जासु प्रेम परतीती। सोत्यहिप्रियलागत यहरीती॥
पुनि नरसिंह कही असिबाता। बचन हमार मानिये ताता॥
यदपि तुम्हैं इच्छा कछु नाहीं। तदपि मन्वंतर राजि कराहीं॥
गी०छं० करिय मन्वंतर एककी सुतराज्य अब मोरेकहे।
होंडरतमायातेतुम्हारी बिनयकरिहरिपदगहे॥
ममतोरयाहिचरित्र नितसहमोदसुनिहैं जेगाइहैं।
रघुनाथ ते निश्शंकही भवबंध ते छुटिजाइहैं॥
दो० यह चरित्र प्रहलाद कर बरणयो जन रघुनाथ।
श्री गुरु देवादास के चरण कमल धरि माथ॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघु
नाथदासरामसनेहीकृतप्रह्लादचरित्रबर्णनो
नामषड्बिंशोऽध्यायः॥ २६॥

ो० सुमिरिराम सिय संतगुरु गणप गिरा सुखदानि।
मारकण्डेय पुराण कछु भोगल कहौं बखानि॥
रघुपति इच्छा प्रकृति सो रच ब्रह्माण्डा अनेक।
बिधिहरिहरगुण थापिबहु कबहुं कबहुं रहएक॥
पुनि शौनक बोलत भये नाथ कहौ यहि बार।
अवधपुरी भूलोक महँ आई केहि परकार॥
सूत सुनिये मुनि ज्ञानी। यहौ भेद मैं कहौं बखानी॥
बार जल बाढ़त भयऊ। सब ब्रह्माण्ड बूड़ि तहँ गयऊ॥
जीवन की तत्व भवानी। आदि बिष्णुमहँ आइ समानी॥
तब शयनशेष पर कीन्हों। मोह्यो माया जगन न दीन्हों॥
ण श्वासते भे चौ वेदा। आदि अंत जे बरणत भेदा॥
ते एककमल तहँनिकस्यो। सोपंकज जलऊपर बिकस्यो॥
तामें ब्रह्मा भे आई। चारिभुजा मुखचारि लखाई॥
बिलोकिबिधिहृदयबिचारा। कहँ माता कहँ पिता हमारा॥
लनाभिगहि तरका गयऊ। पुनि ऊपर कहँ आवतभयऊ॥
ल बार अय ऊरध आयो। पद्म नाभि कर अंत न पायो॥
नभ ते भै गिरा सोहाई। मिली न प्रभुबिनतपसेवकाई॥
अजचित्त ध्यानमें दयऊ। बहुत काल परदरशन भयऊ॥
०छं० तहँबिष्णुके श्रुतिमैलसे। प्रगटेअसुरयुगशैलसे।
लखिकैतिन्हैंब्रह्माडरेउ। तबदेवकीबिनतीकरेउ।
जयजयमाता। सबसुखदाता॥जगतकहावै। तवउपजावै॥
छं० तोहीं आदि माया। निगम नेति गाया॥
तोहीं कर्णि हरणी। तोहीं बिश्वभरणी॥
जलज माहिं मोहीं। प्रकट कीन्ह तोहीं॥
जगत बशि तुम्हारे। तरुण वृद्ध बारे॥
छं० हरि बश तोरे। सोवतभोरे॥ देहु जगाई। करैलराई॥
असुरसँहारै। हमैंउबारै॥सुनितबमाया॥हरिहिजगाया॥

मधु कैटभ देख्यो हरि जागे। दोउ ब्रह्मा कहँ मारनलागे॥
तोहीं बिष्णुहि दिये जगाई। तब ब्रह्मा अति शोर मचाई॥
केशब दीख दुष्ट कहँ आये। क्रोधित ह्वै असुरन परधाये॥
होन लागि जलमाहिं लड़ाई। जीति न जाइँ बलीदोउ भाई॥
पांच सहस्र बरषचलि गयऊ। मधुकैटभ तब बोलत भयऊ॥
हम प्रसन्न तुमपर भगवाना। लखि सूरता अहो बलवाना॥
ताते बर भावै सोइ लीजै। कह हरि शीश आपने दीजै॥
दो० हँसि बोले दोउ दीन हम जो तुम मांग्योनाथ।
पर जल में जनि मारिये बाहर काटो माथ॥
हरिछं० तब हरि उरु धरि। जल पर बध करि॥
लीलाछं०मरन लागे जबै। बचन बोले तबै॥
भूमि तन की सचौ। सृष्टि तापै रचौ॥
तब हरि असुर हते निजपानी। तासुज्योतिप्रभु माहिंसमानी॥
तब ते मधुसूदन कहवाये। कैटभारि गुण आगमगाये॥
भूमि भई तिन तन की जानो। नाम मेदिनी ताहि बखानो॥
जल के ऊपर रही सो छाई। जिमिनलिनी सरपरउतराई॥
जलकर पारावार सो नाहीं। कच्छपएक रहत त्यहिमाहीं॥
मस्तक कुक्षि चरण दृग हेरे। कैयो कैयो योजन केरे॥
दो० सप्त सहस शतकोटियक अर्ब योजन परमान।
कूरम मुख पूरब दिशा पश्चिम पूंछ बखान॥
तापर शेष नाग इमि रहई। जैसे मूल मेरु पर अहई॥
फन हजार ताके श्रुति काहा। यकफन पर यकरहत बराहा॥
मशक समान जानि नहिं पावा। असतनु शेषसो आगमगावा॥
बसुधा दशन बराह के धारी। तिलसम गनै कोलअसभारी॥
कुं० आठौदिशि दिग्गज रहैं महि रक्षाहित दुंद।
ऐरावत पुनि पुंडरिक बामन चौथ मुकुंद॥
बामन चौथ मुकुंद पराजित यम सारभकुज।

हेमदन्त परमान अठारह योजन के दुज ॥
दुज ह्वैयोजन केर सूं डित्रैयोजन पाठा।
षट षटयोजन ऊंच बलीअति दिग्गज आठा ॥
दो० यहिबिधि थिरकरि भूमिप्रभु बिधिकोआज्ञादीन।
सृष्टिरचौयहिधरणिपरसुनिबिधिशिरधरिलीन ॥
ह्मा सृष्टि रचन जब थापी। पचास कोटि योजन भूनापी ॥
नते बिधि जग रचने लागे। इच्छै ते बहु सुत उपरागे ॥
नकादिक आदिक जे भयऊ। मायारहित सकल बनगयऊ ॥
ब बायें भुज ते सतरूपा। दहिने उपजाये मनुभूपा ॥
नहूं बनका कीन पयाना। लखि ब्रह्मा तब रोदनठाना ॥
ते रुद्र प्रकट भे गेरा। कत रोवत हम रचब घनेरा ॥
ईक्षीण कोइ पीन बिशाला।कोइबिनशिरकोइबिपुलकपाला॥
इबिन कर मुख दृगपगकाना। कुटिल कराल केहूंके नाना ॥
हि बिधि भूत बहुत उपजाये। एकहि एक लेहिं सो खाये ॥
ब बिधि तिन्हें बरजि सौंपाये। रुद्रन सहित बिष्णु पहँआये ॥
भु ते सब निज हाल निरूपा। मुनिमिलिगेजहँमनुसतरूपा॥
ोले सुवन राज्य चलि करहू। बचन हमार हृदयमहँ धरहू ॥
म संतोष दया सु बिचारी। जहँ तहँअहै सुखदव्यवहारी ॥
ह मनु हमें पुरोहित दीजै। बोले बिधिबशिष्ठ कहँलीजै ॥
नत बशिष्ठ बचन अस भाषा। दश कूकर सम चक्री राखा ॥
श चक्री सम ध्वज यक होई। दशध्वजसरिस नायकासोई ॥
श गणिका सम नृपयकगावा। दशनृपसम उपरहितरहावा ॥
सा मन्द कर्म मोहिं देहू। अहो पिता मैं लेब न एहू ॥
नि बशिष्ठ के बचन पितामह। कहसुतलाभअग्रतोहिंयामह॥
रमातमा ब्रह्म नर देहा। धरिहैं रबि कुलानके गेहा ॥
तिनकहँ तुम देखिहौ भरिनयना। सुनिहर्षेबशिष्ठ बिधिबयना ॥
नि मनु कह्यो थान मोहिंदीजै। विशद राजधानी जहँ कीजै ॥

दो० सुनत बिष्णु बैकुंठते दीन अयोध्या आनि।
मनु लाये महिलोकमहँ श्रीपतिको तनुजानि॥
कठिकांती पगवंतिका नाभि द्वारका शौध।
हृद माया कंठ मधुपुरी काशि घ्राण शिरऔध॥
चौरासी योजन बिषे बसी कनक मय झारि।
त्रयशत छत्तिस कोस कर घेरा तासु निहारि॥
यकइस अर्ब पाँचसौ क्रोरी। लाख उन्हत्तरि द्विज घरजोरी॥
चौदह लाख यकोतर धामा। तपसिन केर रहैं ऋषि तामा॥
यकसौ अर्ब यकयासी क्रोरी। चारिलाख दुइशत पुनिओरी॥
चारि हजार अपर फिर हेरी। यतनी बखरी क्षत्रिन केरी॥
चौदह पद्म एकसौ अर्बा। ये ते बैश्यन के गृह सर्बा॥
चारि पद्म गृह शूद्रन केरे। जामल रुद्र कहत इमि टेरे॥
बानप्रस्थ और संन्यासी। रहैं असंख्य असंख्य उदासी॥
यहिबिधिप्रजनसहितमनुराजा। करैराज्य सब सुखी समाजा॥
द्वै सुत भे मनुके अभिरामा। प्रियब्रत पद उत्तान सुनामा॥
दो० बहुरि तीन कन्या भईं सकल सुलक्षण खानि।
देवहुती अवकूति अरु परसूती ये जानि॥
मनुते भे मनुष्य मनु राया। तेहिते मानुष्य नाम कहाया॥
राज्य करत बीते बहु काला। यकदिनकीन्ह बिचारभुआला॥
बिषय करत चारिउ पनगयऊ। तदपि नइंद्री तिरिपित भयऊ॥
भक्ति बिमुख सुख दुःख समाना। असबिचारि बन कीनपयाना॥
नारि सहित नृप नैमिष आये। हर्षि गोमती माहि नहाये॥
तहाँ बिप्र हरि देव प्रवीना। कनकलता युतनारि नवीना॥
करहिं तपस्या भगवत हेता। अशनबसनतजि अवध निकेता॥
लागे करन तहैं तप आपू। द्वादश बर्ण मँत्र कर जापू॥
गौर श्याम सिय राम स्वरूपा। धरैं अहनिश ध्यान अनूपा॥
कन्द मूल फल कुछु दिन खाये। पुनि सबत्यागि नीर परआये॥

षट सहस्र सम्मत जल पीनो। पुनिभखिबातसोउ तजिदीनो॥
वर्ष सहस दश भख्यो समीरा। पुनिसोउतजिदीन्होंमतिधीरा॥
मन अभिलाष यहै दिन राती। प्रभुकहँ देखि जुड़ाइय छाती॥
निर्गुण निराकार निरखेदा। नेति नेति ज्यहि गावत वेदा॥
ब्रह्मा विष्णु महेश सुभेषा। जासु अंशते होत अलेषा॥
दो० सोइ प्रभु सेवा बश रहत कहत निगम असगाय।
जो यह सत्य तौ पूजिहैं मम अभिलाषा आय॥
तो०छं० इमि बर्ष दश हज्जार। रहेदोउ बिन आधार।
कृश गातना तन वारि। नहिंनेक मानी हारि॥
हं०छं० लखितप अति भारी। हरि अज त्रिपुरारी।
चलि मनु ढिग आये। मृदु बचन सुनये॥
यु०छं० मांगहु बर सुत सोई। जो इच्छा मनुहोई।
मनुकछु कहतनभयऊ। पुनि पुनि फिरि गयऊ॥
वो-छं-प्रभुजगस्वामी।अंतर्यामी॥निजजननजान्यो।नन्यपिछान्यो॥
च-छं० तब मैं नभबानी सुनु नृप रानी माँगहु जो बरभावै।
सुनिगिरा सोहाई उठेमोटाई जिमिघरते कोइआवै॥
बोले हरषाई प्रेम बढ़ाई सुनु सेवक सुर धेनू।
बिधिहरिहरनायक सुरनसहायक प्रणतपालसुखदेनू॥
जोशम्भुइ भावै मुनिजन ध्यावै कागभुशुण्डि सुखैना।
सोइ रामअनूपा श्यामस्वरूपा देखौं मैं भरि नयना॥
अस बचन बिनीता परमपुनीता सुनिप्रकटे भगवाना।
शुभतनघनश्यामं लखिशतकामं लाजत नीरजपाना॥
शशिमुखछबिसींवाँ चिम्बुकग्रीवा अधरअरुणशुकनाशा।
नवअम्बुजलोचन रिपुमदमोचन रदकपोल हरिहासा॥
भूषण मणिजाला उरबनमाला भालतिलक उरभारी।
श्रुतिकुंडल लोला मुकुट अमोला भृकुटी धनुअनुहारी॥
कटि कसे निषङ्गा कर शारङ्गा पीतबसन लपटाये।

करिकन्धजनेऊ कचशुभतेऊ बिबिधि सुगन्ध लगाये॥
नखनखत छबीरा नाम गँभीरा उदर रेख त्रयराजैं।
राजिवदोउचरणं मुनिमनहरणंजिनध्यावतअघभाजैं॥
जो सब जग मोहैं बाँयें सोहैं आदि शक्ति सुखखानी।
जेहि अंशते अघटैं अगणित प्रकटैं उमा रमा ब्रह्मानी॥
दोउ रूप अनूपा मनु सतरूपा यकटक रहे निहारी।
पग गिरे सुजाना दण्डसमाना बपुकी दशा बिसारी॥
प्रभु तुरत उठायो हृदय लगायो फेरेउ शिर निजहाथा।
माँगहु बर सोई जो मनहोई सुनि बोले नरनाथा॥
पद पद्म तुम्हारे देखि हमारे सब पूजे मनकामा।
लालसा जु एका है माँगिबेका कहत लगत भयतामा॥
जानत तुम स्वामी अन्तर्य्यामी पुरवहु ममअभिलाषा।
सब सकुचि बिहाई मांगहुंराई नहिंअदेव प्रभुभाषा॥
बोले महिपालक तुम समबालक इनसम चहौंपतोहू।
बिषइक इवजानो ईश न मानो देव यहै करि छोहू॥

दो० एवमस्तु कहि कृपानिधि पुनि बोले सुरराय।
आपु सरिस पैहौं कहां महीं होब सुत आय॥

सतरूपा ते कह्यो बहोरी। देवि माँगु बरजो रुचि तोरी॥
जोपति मांगा सोइ प्रिय मोहीं। मानौं मैं ईश्वर कर तोहीं॥
सुनि मृदु गूढ़ बचनछलहीना। कह प्रभु जो मांग्यो सो दीना॥
अब तुम दोउममआयसुमानी। बसौ जाय सुरपति रजधानी॥
तहँ कछु काल रहेउ सुखपाई। युगत्रेता जब लगिहै आई॥
तबतुम ह्वैहौ अवध भुवारा। तहँ होबमैं तनय तुम्हारा॥
इच्छामय नर देह बनाई। अवतरिहौं अंशन युत आई॥
करिहौं चरित अनेक प्रकारा। जोसुनि नर ह्वैहैं भवपारा॥
असकहिपुनिप्रभुद्विजपहँआये। माँगु माँगु बरबचन सुनाये॥
नारि समेत बिप्र अस भाषा। देहु नाथ बर यह अभिलाषा॥

ो० इन समान कंन्या मिलै तुम समान जामात।
यहबर दीजै कृपाकरि और न चाहियतात॥
स्तु कहि कृपा निधाना। बोलतभे सुनुविप्र सुजाना॥
जनक होब तुम सोई। नाम सुनयना इनकर होई॥
तव तनया शक्ति हमारी। ह्वैहै अंशन संयुत चारी॥
मात्र मिलब तहँजाना। असकहिभे प्रभु अंतरधाना॥
सतरूपा द्विज द्विज नारी। बसेजाय चहुं स्वर्ग मझारी॥
महि अवतरिहैं बरलागे। सोचरित्र बर्णब पुनि आगे॥
ो०छं० यह इतिहासजौनमेंकही। लोमशरामायणमहसही॥
पद्मपुराणसाखिपुनिभारै। सुनिकरकोइसंदेहनकारै॥

तिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदास
मसनेहीकृतब्रह्माकीउत्पत्तिअयोध्याकीउत्पतिस्वायंभुवमनु
कथाबर्णनोनामसप्तविंशोऽध्यायः॥ २७॥

ो० सुमिरिराम सियसन्त गुरु गणपगिरासुखदानि।
बरणौं सुख संहिता कछु बिष्णुपुराण बखानि॥
सौनक शंभूमनु पाछे। कौन राज्य केहि कहियेआछे॥
छे मुनि जब नृप बन गयऊ। तब उत्तानपाद पति भयऊ॥
न ते ध्रुव ध्रुव ते सुत दूना। कछु दिन पाछे ह्वैगासूना॥
ख विरंचि प्रियव्रतै लयाये। कीनिराज्यभलि प्रजारिझाये॥
त पुत्र तिनके भे चीन्हें। ताते सात द्वीप करि दीन्हें॥
ो० जांबू और पलाक्ष है शालीमल कुश चारि।
क्रौंच संकला द्वीप षट पुष्कर सातविचारि॥
सागर अंतर जानिये इन द्वीपन में तात।
क्षारक्षीरदधि मधुमदिर इक्षुजलसागरसात॥
द्वीप तासु विस्तारा। योजन लक्ष केर निरधारा॥
फल तहँ नदी बहावै। ताते जंबू द्वीप कहावै॥

सेझ दादि तैं गिरिबहु रहईं । गंगादिक सरिता बहु बहईं ॥
नृप अगनीत तहां भे चंडा । नव सुत करि दीन्हें नवखंडा ॥
दो० ईला रमनक हिरणिकुर हरि वृषकिंपुरुषाल ।
भरथ माहिं उपद्वीप बहु भद्रराश्वध्वज माल ॥
सौ योजन का देश बनावा । सबै देश का मण्डल गावा ॥
त्रयशत मंडलका यक खंडा । बिष्णु उपासी बसत अखंडा ॥
तामें चहुं वर्णन के नामा । द्विजनृप वणिकशूद्रअभिरामा ॥
जंबुद्वीप के चहुंदिश ढेरा । छार सिंधु लख योजन केरा ॥
ता के आगे द्वीप पलाक्षा । उभय लाख योजनकरआक्षा ॥
तामें पाकरि बिटप सोहावै । ताते द्वीप पलाक्ष कहावै ॥
इदिम बाहु तहँ के नृपहेरे । भयो सात बालक तिनकेरे ॥
जबै शुभद्र सात शिवरासा । क्षेम अभय अमृत हरि दासा ॥
ताते सात खंड करि दीन्हें ।सरिबहुगिरिद्रुममधिधरिदीन्हें॥
दो० तामें बिप्रै हंस कहि क्षत्रिहि कहत पतंग ।
वैसे बुध शूद्रै बदत त्याग अपर बहु अंग ॥
ताके चारौं तरफ हैं सागर दर रस केर ।
द्वै लख योजन में तहां तरणि उपासकढ़ेर ॥
ताकें अग्र सालिमल द्वीपा । चारि लक्ष योजकर द्वीपा ॥
रुद्र सहस्त्र योजन कर तामें । शेमल तरु खगपति रहैजामें ॥
द्वीप शालिमल त्यहि कहवावा । यज्ञवाहु नृप तहां रहावा ॥
सात सुवन तिन के भे चीन्हें । तिन हित सात खंडकरिदीन्हें ॥
ऐयायन अबिज्ञान सुरोचन । समर सोमपरि भद्रदिमोचन ॥
दो० तहँ बिप्रै बद सुत्रधर नृपै बीज धरभाव ।
वैसे बोलत बंशधर शुद्रहि दुखघर गाव ॥
तेहि के चारौं तरफ है सागर मदिरा केर ।
चारि लक्ष योजन तहां चंद्र उपासी ढेर ॥
तेहि आगे कुश द्वीप जु अहई । आठ लाखयोजन श्रुतिकहई ॥

तेहिमधिकुशकरबिटपसोहावा। रुद्र सहस्त्र योजनकर गावा॥
भूप हिरण्यरेत कहँ केरे। सात पुत्र भे तिन के हेरे॥
नाभि गुप्त दृढ़रुचि बसुमाना। बसु बिबक्त कस्तुत ब्रतजाना॥
तेहिते सात खण्ड करि दीन्हें। सरि गिरि मर्यादा के लान्हें॥
दो० तहँ ब्राह्मणकोकुशलकहिक्षत्रिहि कोबिदकाम।
बैश्यहि अभिजित बदनुहै शूद्रहिकोकिलनाम॥
तेहिके चारो दिशि रह्यो घृतको सागरपूरि।
आठ लाखयोजन तहां अग्नि उपासी भूरि॥
क्रौंच द्वीप तेहि आगे आहैं। सोरहलख योजन तहँ राहैं॥
क्रौंचबिहँग रबि तेजसोहावा। क्रौंच द्वीप तेहि ते कहबावा॥
घृत कूरट तहँके नृप जाना। तिनके भे सुत सात सुजाना॥
मेघ वृष्ट भाजीष्ट सुधामा। मधुरुहलोहितबनपतिआमा॥
सात खण्ड करि तेहिते बांटै। मर्यादा हित गिरि तरु पाटै॥
दो० तहँबिप्रहि पुरुषा कहत क्षत्रिहि ऋषि बाराय।
बैश्यहि भद्रा भनत हैं शूद्रै देवक गाय॥
ताके चारो तरफ हैं षोड़श योजन केर।
क्षीरसिन्धु तहँके मनुप उदक उपासी ढेर॥
शाकद्वीप तेहि आगे सोहा। बत्तिसलख योजनकर जोहा॥
तहँ शाकोन केर तरु अहई। शाकद्वीप तेहिते सब कहई॥
मोक्षतिथ तहँके नृप धीरा। सात पुत्र तिनके भये बीरा॥
चित्ररेफ पवमान पुरोजय। धन्न बिश्व बहु रूप मनोजय॥
तिन हित सातखंड करिदयऊ। सोई नाम खंडन कर भयऊ॥
दो० तहँ बिप्रै बदवालजी क्षत्रिहि कहत अमीर।
बैश्यहि भाषत बिरुजकर शूद्रै धारक धीर॥
ताके चारौं तरफ है दधिकर सागर नीक।
बत्तिशलख योजन तहां पवन उपासी ठीक॥
ताके आगे पुष्कर द्वीपा। चौंसठि योजन केर समीपा॥

पुष्कर का तरु तहां रहावै। ताते पुष्कर द्वीप कहावै॥
इन्द्रदवन राजा तहँ केरे। रमन धातुकी सुत युग हेरे॥
तिनहित उभयखंडकरि नाखै। गिरि तरु मर्यादा हित राखै॥

दो० तहँ बिप्रै पारस कहत क्षत्रिहि भनत भुजङ्ग।
वैश्यहि बोलत भरथरी शूद्रै भनत कुरङ्ग॥
ताके चारों तरफ है सिन्धु शुद्ध जल केर।
चौसठलख योजन तहां ब्रह्म उपासक ढेर॥

चिंतामणिछंद॥ ताकेआगे परैधूमि। रातीमाटी केरिभूमि॥ पौनेसोरहलाख हेरि। ताकेआगेहेमकेरि॥ गोपालछंद॥ आठ करोरि वन्तालिसलाख। योजनजानहु एकपाख। लोकालोकी आदिअद्र। औरहुबीसन आहिभद्र॥ बीरछंद॥ अबतात। सुनु बात॥ नभकेरि। मुख हेरि॥

दो० जामू मद्ध सुमेरु यक लख योजन परमान।
तामधि यकद्वस लोकहैं सो सब करौं बखान॥

कुं० बासुकि भूतक यम सुदक्ष किन्नर ब्रह्म राक्षेश।
राकस काल रुचित गुपित योगिनि गंधबदेश॥
योगिनि गंधबदेश सुअर्य्यम महत तप सुजन।
सत्य सु दिव्य सु नागदेव पिप्पल विशुकर्मन॥
बिश्वकर्मादिक छांड़ि अहैं औरौ नाना पुर।
पावक पवन पुरारि ब्रह्म बैकुण्ठ दिवासुर॥
इक लख योजन भूमितेहै ऊंचारबि लोक।
सहस बहत्तर योजन तेहि बिवान कर ओक॥
तेहिबिवानकर ओक उदय कृत इन्द्रपुरी जहँ।
धर्मपुरी मध्याह्न अस्त भव बरुण पुरी महँ॥
अर्द्धलाख योजन रहै धनदपुरी उतरेक।
यकद्वससहस योजनछसै चलै पलकबिचएक॥
यकलख योजन भानुतेहै शशि लोक उछार।

योजन अरतालिस सहस में ताको बिस्तार॥
में ताको बिस्तार एक लखपर मंगर पुर।
तेतालिस हज्जार माहिं बिस्तार तस्य फुर॥
यहिबिधिइकइकलाखपर बसैंग्रहनखत अनेक।
बर्णैं जन रघुनाथ किमि सबन अहै ह्वै एक॥

यह इतिहास कह्यों जसजानी। अब पूछो सो कहौं बखानी॥
सुनि शौनक बोले हरषाई। हाथ जोरि चरणन शिरनाई॥
दीनदयाल बचन सुनि तोरे। अति आनन्द भयो उर मोरे॥
तृप्त न होत श्रवण मम स्वामी। सरितसमूहसिन्धुजिमिगामी॥
तेहिते मोहिं निजकिङ्कर जानौ। अब सरयू की कथा बखानौ॥
प्रगटी किमि भूलोकम आई। को लायो सेा कहौ बुझाई॥
सुने सूत मुनि बचन बिनीता। राम कथा पर प्रीति पुनीता॥
धन्य धन्य कहि बारहिंबारा। बर श्रोता मैं तुम्हैं निहारा॥
सुनो तात सरयू जिमि आई। उतपति मैं सो कहौं बुझाई॥
ब्रह्मा कहँ जानत संसारा। जिनशिरज्योजगकरबिस्तारा॥
तिनके भवन तीनि रहैंइस्त्री। संध्या स्वस्ति और सावित्री॥
तिनके तनय मरीची भयऊ। नाम प्रेमजाप्रिय विधिदयऊ॥
सुत मरीच के कश्यप जानेा। दशत्रियतिनके नामबखानो॥

रोलाछंद॥ प्रथमैंअदितीअमरकोटि तेतिसजिनजाये॥दितिके दैत्यअपारनाग कद्रुमकेगाये॥ बिनतासुत खग नाथ चन्द्र सो मावतिकेरे। सुरावतीके सूर्य्य रहतजगजासु उजेरे॥ पादवती जो सवाव लक्षपर्बत की माता। दमावती सुतऋषै अमोघाख गसंजाता॥ इरातेतृणवृक्षजौनलागतपरकाजै। नखरेखासुतमेघ कोटिछप्पनउपराजै॥ तिनके अमृत वृष्टि किहेसबजगसुखपा वत। कश्यप ते मैं सृष्टि सकलश्रुति ऐसेगावत॥ तोमरछंद श्रीकश्यपकेसुतभानु। ह्वैनारि तिनकजानु॥ छायाप्रभाअसनाम। बिश्वकर्मजाअभिराम॥युगपुत्रछायाजाय। यमराजशनिदुखदाय

शनिबहिनियमुनानाम। यमभयहरणिप्रदकाम॥ प्रभाके अश्व
नीकुमार। प्रकटेहरणरुजभार॥ तिनकेतनयमनुभूप। शुचिरेखा
नारिअनूप॥तिनके तनय इक्ष्वाकु। जिनकीनप्रजाविश्वाकु॥
सरयू नदीतिनआनि। भूपरबहाईजानि॥ केहिभांतिलाये नाथ।
बिस्तारबरणौगाथ॥ कहसूतअवधभुवाल। इक्ष्वाकुभेजेहिकाल॥
बैठेभवनएकबार। नृपकीनस्वतःबिचार॥ पुरपाससरिताहोइ। तौ
लहैसुखसब कोइ॥

दो० गृह स्नान सो अधम है मध्य कूप कर होइ।
उत्तम सरश्रवती करै उत्तम उत्तम सोइ॥

सो० अस मन समुझि नृपाल गुरुबशिष्ठपहँआयहू।
नाइकमल पद भाल कहत भयेनिजकामना॥

सुनि बशिष्ठ हिय हर्षितभयऊ। दोउमिलिगोकन्याढिगगयऊ॥
बोलत भये नदी यक चहिये। कहांसोमिलै कृपाकरिकहिये॥
कह नंदनी सुनहु मुनि ज्ञानी। सुनी एक हौं कहौं बखानी॥
एक समय बैकुण्ठ मँझारी। बैठे नारायण युत नारी॥
महादेव हरि दरशन हेता। आये तहँ गिरि सुता समेता॥
नारदादि सनकादि मुनीशा। चतुरानन सुमनस सुरईशा॥
सबहिन आइ आइ शिर नायो। प्रभुआदर करि करि बैठायो॥
सभा देखि शंकर अनुरागे। लागे करन नृत्यहरि आगे॥
नारद बीना ताहि बजावैं। ब्रह्मादिक सुरसंग गवावैं॥
छैयोराग रागिनी छत्तिस। समगुणग्राम सप्तस्वरबत्तिस॥
ताल मृदङ्ग तँबूर सितारा। बाजत बह्यो बिनोद अपारा॥
देखि नृत्यरीझे भगवाना। बोलेहरि मांगहु बरदाना॥
कह पशुपति जो दाया कीजै। तौ मोहिंभक्ति आपनी दीजै॥
सुनि शंकर के बचन मुरारी। बोले दीन नयन भरि बारी॥
साइ जल पात भयो मुनिराई। लीन कमंडल महँबिधिघाई॥
तीरथ भयो गुप्त सो रहई। लावहु जाइ ब्रह्मपहँ अहई॥

दो० सुनि बशिष्ट हरषित भये गये पिताके लोक।
सुखशोभातहँकरनिरखि भे मुनिबिगतबिशोक॥

ब्रह्म भवन पुनि देख्यो जाई। कहि न जातकछुतासुनिकाई॥
चतुरानन के दरशन कीन्हें। भालतिलक कर वेदजुलीन्हें॥
धरे कमण्डल अग्र सोहायो। लखिबशिष्ठचरणनशिरनायो॥
बिधिरहैंध्यानमाहिं लवलीना। बैठिगये तहँ मुनि परबीना॥
नव सहस्त्र संवत चलि गयऊ। तबअजध्यान निवारत भयऊ॥
सुतबिलोकिहँसि हृदयलगायो। कह्योतात केहिकारण आयो॥
तब बशिष्ठ मृदुबचन उचारे। नृप इक्ष्वाकु यजमान हमारे॥
तिनके पुरढिग सरिता नाहीं। तेहिते हौं आयो तुम पाहीं॥
अब महराज मया करि सोई। दीजै जेहि मोको यश होई॥
सुनिबिधि हर्षि कमण्डलनायो। चल्योप्रवाह संग सुनिधायो॥
गगन ते गिरी भहूं आकाशा। गिरि सुमेरुमहँ कीन्ह्योबासा॥
ऐरावत के रददोउ लागे। फाट पहाड़ चली बहिआगे॥
सो जल गिर्‌यो भूमिपरजाना। तेहिते सरयू नाम बखाना॥
पुनि नलमान सरोवर आवा। गैसमाइमुनि लखिदुखपावा॥
मानसरोवर बिधि मन तेरे। भयोधाम हरिका तेहि नेरे॥
जाय बशिष्ठ ठाढ़ भे द्वारे। लगे करन तप तन मन वारे॥
बिपुलकाललगि तहँतपकीन्हा। तज्यो अहार भयो तनक्षीना॥
तब हरि द्वारपाल हँकराई। कह्यो वशिष्ठै लेहु बोलाई॥
द्वारपाल तहँ बोलिलै आयो। आइबशिष्ठ चरण शिरनायो॥
कह भगवान सुनोमुनिप्यारा। कवन हेत तपकियो अपारा॥
कह बशिष्ठ इक्ष्वाकु यजमाना। भूप अयोध्या के जगजाना॥
तिन अस कहा नदीयक होई। मैं बिधिपासगयों सुनिसोई॥
तहां एक सरिता प्रभु पाई। सो सरवर महँ आइ समाई॥
बोले हरि हलकोरहु पाथा। अबहीं निकरि चलै तवसाथा॥
तब बशिष्ठ जल जाय हलोरा। चली निकसि सरयूबरजोरा॥

गिरि पुरग्राम धामकरि पावन। बहींअवध तर आइ सुहावन॥
दो० सुनि नृप पुरबासिन सहित आये अपगातीर।
पूजन कीन्हींबिबिधि बिधि दीनदान भयभीर॥
आय आयसुर बधुन युत कीन्हेनि तहां स्नान।
नाम धरे त्रय नयनजा सरयु बशिष्ठी जान॥
दरशपरश मज्जन करत हरत पाप श्रुतिगाय।
अन्तकाल हरिपुरबसै रबिसुतभय मिटिजाय॥
सरयूकी उत्पत्ति इमि मुनिन कही रघुनाथ।
केहु पुराण में बदत बुध है रघुपति पदपाथ॥
कामाछंद॥ बायें। पायें॥ केरो। हेरो॥ तोमरछंद॥ दोउ भांतिमंगलमूल। मोहिंदेहु ह्वैअनुकूल॥ सियरामनामअधीर। सुमिरौं सदा तव तीर॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदा सरामसनेहीकृतसातोद्दीपनवखण्डप्रमाणश्रीसरयूकीउ त्पत्तिबर्णनोनामअष्टविंशोऽध्यायः २८॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि।
पिककृतअगिनिपुराणमतकहौंभागवतबखानि॥
सुनि शौनक बोले शिरनाई। गंगा कौन भांति महिआई॥
कहिबिधि उतपति भै सो गावो। प्रभुप्रभावकछुबरणिसुनावो॥
कह्यो सूतनृप सगर जो भयऊ। जिनबहुभांतिप्रजहिसुखदयऊ
तिनके केशि सुमति ह्वै नारी। पुत्र बिना नित रहे दुखारी॥
इकदिननृपदोउत्रियन समेता। बन तप करन गये सुतहेता॥
कीन कठिन तप तीनिहुं प्रानी। बरंब्रूहि बोले भृगु बानी॥
केशी कहा पुत्र इक दीजै। एवमस्तु अति सुन्दर लीजै॥
मांगहु कहन सुमति ते लागे। साठि सहस्त्रसुवन तिनमांगे॥
बरदै भृगु आश्रमै सिधाये। बधुन समेत भवन नृपआये॥

असमंजस सुत केशी जायो। शिशुनकेमिससोबिपिनिसिधायो
सुमतिके भे सुत साठि हजारा। घृत घटमें कीन्हो प्रतिपारा॥
बीर महा रणधीर सक्रोधी। मारे असुर सकलजिन शोधी॥
एक बार नृप मख कर साजा। कीन्हेउतहँलिखिछांड्योबाजा॥
दो० इन्द्र ताहिगहि कपिल के पाछे बांध्यो जाइ।
रखवारे नहिं दीख तब कहिनि भूपते आइ॥
सुनि सुत रहे सुमति के जेता। चले सकल ढूंढ़न के हेता॥
सातद्वीप नवखंड मँझायो। श्यामकरणकोखोज न पायो॥
तब लागे महि खोदन सोई। तीनिदिशादिशिडारिनिजोई॥
पुनि ढूंढ़त उत्तर दिशि आये। तहांकपिलमुनिध्यानलगाये॥
पाछे अश्व बँधा लखि मानी। बोले सगर सुवन कटु बानी॥
पकरि तुरंग आड़में आना। हमैंबिलोकिधरिसिबकध्याना॥
सुनि मुनीशकरि क्रोध निहारा। सब यकसङ्ग भये जरिक्षारा॥
समुझि बूझि बिषपान जोकरई। कहौ तात सो काहे न मरई॥
इहां शोध मन कीन भुवारा। भे बहुदिन नहिं फिरे कुमारा॥
दो० तब असमंजसके तनय अंशुमान कहँ बोलि।
कह्योखबरिलैबिपिनकीलखिहयलावहुखोलि॥
सो० सुनतचले हरषाय जहँतहँ खोजत नगर बन।
मिले गरुड़मगआय कही कथा सबजिमिजरे॥
काहन्तछंद॥ असखबरिपाइ। जलनिधिनहाइ॥ तिलउदक दीन। पुनिगवनकीन॥ संयुताछंद॥ खगनाथयुततहँआयहू।मुनि चरणशीश नवायहू॥ करिबिनय आशिषपायकै। हयलैचले हर षायकै॥ तोमरछंद॥ बदवैनतेसुनुतात। परमार्थकीयकबात॥ जो गंगआवैभाथ। तवहोहिं पितरकृतार्थ॥ सुनिअंशुमान निहोरि। कहगरुड़तेकरजोरि॥ अबगंगकीउत्पत्ति। कहियेकृपाकरिसत्ति॥ आयेमहीपरजासु। तरिहैं पितरममआसु॥ बोले गरुड़हरषाय। उत्पत्तिसुनुकहौं गाय॥

त्रेता युगमें बलि मख ठयऊ। इन्द्रलोक लै सो मनु भयऊ॥
तबहरि हियबिचारअसकीन्हा। प्रहलादै मैं यह पद दीन्हा॥
सोबलि लेनचहत करि यागा। तेहिहित बावनतन अनुरागा॥
बावन आंगुर के केहि कारण। भे प्रभुसोकहिये अहिचारण॥
मांगन केर हेतु हरि जाना। तेहि ते बावन भे भगवाना॥
मांगन मरण उभय सम अहई। मान बड़प्पन नेह न रहई॥
सो० तृणते लघु तूलाइ तूलहु ते लघु यांचकह।
कत न उड़ावत बाइ मांगनकर भयमानिकर॥
याते हरि बावन तन भयऊ। अदितिकेजठरजन्मआलयऊ॥
यज्ञोपवीत भयो जब जाना। भिक्षा हेत चले भगवाना॥
बड़दानी सुनि बलिपहँ आयो। बहुप्रभुता मुखबरणिसुनायो॥
बलिबिलोकियकटकरहिगयऊ। असबपु कबहुं न देखतभयऊ॥
कह बलि मांगु जो भावै तोहीं। पयग तीनि पृथ्वी दे मोहीं॥
मम समान दानी लहि तुमते। मांगत बना न मांगहु अबते॥
बावन कही सुनहु नरपाला। द्विजै तोष चाही सब काला॥
दो० असंतोष द्विज दोषयुत संतोषी नृप चारि।
सहलज्जा गणिका अधम निरलज्जा कुलनारि॥
कहा शुक्र महिपाल सुनु ये हैं श्री भगवान।
छलनहेत आये तुम्हैं देहु न इन कहँ दान॥
दो०छं० जोभगवान कह्योतुमयेहैं। हौंनदेहौं दलिकैनहिंलेहैं॥
तातेयहैहितहितेदीजै। नाम चली धन लै कह कीजै॥
शुक्र कहा पुनि सुनहु भुवारा। अबते मानहु बचन हमारा॥
द्रव्य हीन नर व्याकुल रहई। सर्ब ठौर मन्दादर लहई॥
बिना पराध मित्र जन माखै। त्रिय सनेह करि बचननभाषै॥
ते हित धनकी रक्षाठानहु। दबैते सबै वश मानहु॥
दो०छं० कहबलिदेनकह्योंइनकाअबाजोनहिंदेहुंतौधर्मनशैसब॥
झूठसमाननपातकआनजू।बोलत भे धनिशुक्रसुजानजू॥

बी०छं० श्रोतुग्पोर। पांचठौर॥ झूठकही। दोषनहीं॥
दो० निज त्रियते पुनि ब्याहमें धनहित संकट प्राण।
गोद्विज हिंसामें कही झूठ न दोष प्रमाण॥
जिन कर रक्षक लोक सब असुर हते जिनहाथ।
तेहि कर मांगत भीखअब किमपिन दीजै नाथ॥
अवनि रवनिधनतनसँगसबहीं।पुनिअससमयमिलीनहिंकबहीं॥
असकहि करन संकलप लागे। प्रबिशेकबि करवा महआगे॥
रुक्यो नीर हरिडाभ चलायो। फूटि आंखि संकल्प करायो॥
तबबावन निज देह बढ़ाई। पग भू जंघ लोक ध्रुव जाई॥
स्वर्ग भयो कटिशिव पुर पेटू। रबि सुतलोक हृदय जा भेटू॥
कंठ आष तप जो कहि भयऊ। आनन सत्य लोक महँगयऊ॥
ऐसो दीर्घ रूप हरि कीन्हा। पुनि पृथ्वीनापन मनदीन्हा॥
दो० तल अतल वितल तलातल रासातलपाताल।
सप्त पतालन एक पग नापे कृष्ण कृपाल॥
प्रथमै भू दूसर भुवर तीसर स्वर जनचारि।
पंचम सत्य ठठामहत मुनिबिधिलोकनिहारि॥
सात स्वर्ग ये जो मैं बरणा। सोसब नापे दहिने चरणा॥
ब्रह्मलोक जब हरि पद गयऊ। चीन्हिचलांक धोइ सोलयऊ॥
धरेउ कमण्डल महँ चतुरानन। गंगा भईं रहत जग जानन॥
तपजो करहु गंगमहि आवैं। तब तुम्हार पुरुषागतिपावैं॥
गंगाकी उतपति इमि जानो। बावन कृतअब सुनतबखानो॥
ढैपग सकल लोक जब भयऊ। एकै पगबाकी रहिगयऊ॥
बलि बावन पग पीठि न पाई। रीझि कहा मांगौ बरराई॥
जो प्रभु मोपर किरपा कीजै। यही रूपनिज दरशनदीजै॥
एवमस्तु कहि बलिहि लवाई। राज्य सुतलको दीन्होंजाई॥
द्वारपाल ह्वै श्रीभगवाना। रहतसदातहँसब जगजाना॥
याही ते हरि सनमुख ठीका। कृपाकोप छल तिनकरनीका॥

दो० बड़ेबड़ेन ते छलकरहिं जन्म कनौड़े होय ।
वृन्दाश्रीपति शिरलसै गति बावनबलिजोय ॥

यह सब चरितगरुड़जब गावा । अंशुमान सुनिअतिदुखपावा ॥
पुनि खगनाथ गये हरिपासा । आये अंशुमान निजबासा ॥
देखि सगर उरलीन लगाई । खबरि सकल पुत्रन कै पाई ॥
यज्ञ कीन्ह भूसुर सनमाने । कछुदिनरहिगृहपुनिअकुताने ॥
राज्यसु अंशुमान कहँ दयऊ । आपुतपनहितसरिबनगयऊ ॥
अंशुमान के भये दलीपा । तिन्हैं थापि बनगे नरदीपा ॥
भागीरथ दिलीप के सूवन । भेजेहि नाम चारि दशभूवन ॥
तिन्हैं राज दे बन अनुराग्यो । करितप कठिनतहँतनत्याग्यो ॥
भागीरथ सुतकाकुथ भयऊ । दैतेहिं राज आपबन गयऊ ॥
लागे तप गंगाहित करना । रबि सन्मुख ठाढ़े इकचरना ॥
सहस बर्ष बीते बिधि आये । मांगु तात बर बचन सुनाये ॥
कह नृपजो किरपा प्रभु कीजै । तौगंगा महि आवन दीजै ॥
बोले अज हम छांड़ब जबहीं । जाई गंगरसातल तबहीं ॥
तेहिते अब शंभुइ अवराधी । मांगहु बर तेरखिहैं साधी ॥
सुनि नृप दिव्य बर्ष शिवध्याये । मांगहु बरहर आइ सुनाये ॥
गंगारोंकि लेहु करि दाया । कीन कबूल गंगसुनिपाया ॥

दो० जाउं रसातल सहित शिव जटा बढ़ायो ईश ।
छांड्यो अज इक बर्षलों रही भुलानी शीश ॥
ध्यायोनृप गार्‌यो जटा भइ धारा तहँ तीन ।
सुरपुर गइ पाताल इक रही मही पर पीन ॥
सुरपुर मंदाकिनि कहत परभावती पताल ।
गंग कहाई अवनिलखि बोले मलिननृपाल ॥
हे सुरसरि हरिभक्त जे रहि समस्त बेकार ।
तिनके तन स्पर्श से नाशी पाप तुम्हार ॥

सुनि समोद नृप संग सिधाई । स्वच्छकरत पुर सागरआई ॥

तरे पितर भागीरथ केरे। अजहुं उधारत पतित घनेरे॥
यहिबिधि मुनि गंगा महिआई। जासु महातमबरणि न जाई॥
दश सहस्त्र संवत तप करई। मख व्रतदान नेम आचरई॥
सकल पुण्यलै तुला चढ़ावै। गंग महातम सम नहिंपावै॥
सुर मुनि मनुज सिद्ध बहुजाना। गंगाके व्रत सबहिन ठाना॥
हरिजन भाव बहुत बिधिराखैं। प्रभुका पादोदक श्रुति भाषैं॥
जिमिघनसोष्णबोष्णतमखोवै। तिमि गंगा कलिपातक धोवै॥

दो० दृष्ट्वा अघ शतजन्म के पीत्वा अघशत दोष।
मज्जन जन्म सहस्त्र के हंतिगंग कलिजोय॥

जोपै कुंजर शौच न होई। तौ हरिधाम बसै नर सोई॥
वैश्य केर बालक एक मरेऊ। कप्फन की रज मुखमें परेऊ॥
भयो न भूत गयो सुर धामा। देखि सिद्ध कीन्हों परनामा॥
बिप्र एक गणिका रत जाना। अन्तकालनिकसै नहिंप्राना॥
बार मुखी मुख थूक्यो आई। तजितनबस्योबिबुधपुरजाई॥
पक्षी गिर्‌यो मृतक ह्वै नीरा। मिटिगैतासुसकल भवभीरा॥
गंग महातम अहै अपारा। थकैं कहत मुख शेष हजारा॥

गीतिकाछन्द॥ कहिथकैंशेषसहस्त्रमुख मैंएककावरणनकरौं। निजबुद्धिमाफिक कह्योकछुतब हेतुहरिपदउरधरौं॥ तेधन्यसुर सरितीर रहिलहिनाम नित्यनहावहीं। रघुनाथतेतनत्यागिकैंपर धामनिश्चयजावहीं॥

सो० माथनाय रघुनाथ मांगत दीजै जननि मोहिं।
जन्म जन्म तप पाथ पावों गावों राम गुण॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतगंगोत्पत्तिवर्णनोनामैकोनत्रिंशाऽध्यायः २९॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपगिरासुखदानि।

बरणौं ब्रह्मपुरण को अब इतिहास बखानि ॥
सुर सरि महिमाअगम सुनि बावन कथारसाल ।
पुनि शौनक बोलत भये नाइ सूतपद भाल ॥

प्रभु आनन्द भयो अति मोरे। सुनि इतिहास सुधारस बोरे ॥
इक लालसा और उर जामी। सो अब पूरण कीजै स्वामी ॥
एकादशी की उतपति कैसे। भइ जगमाहिं बखानौ तैसे ॥
सुनत सूत बोले सुख पाई। भली प्रश्न कीन्हों ऋषिराई ॥
सबसुखकरणि हरणिअघभारी। पार होत भवसुनि नरनारी ॥
सोइ इतिहास सुनावों तोहीं। जसकछु समुझिपरोउरमोहीं ॥
सतयुग माहिंअसुर इकभयऊ। मुरअसनाम सबनिदुखदयऊ ॥
शंखासुर सुत पितु बधजान्यो। तब बनजाइ तहां तप ठान्यो ॥
पदमासन ढिग आइ बखाना। मांगुसुवन निजरुचिबरदाना ॥
बोला सुनिसुर मुनि मनुजादा। श्रीधर हरलोकप सह पादा ॥
नहँ लगि सृष्टि रची तुमहोऊ। हमते समर न जीतै कोऊ ॥
एवमस्तु कहि ब्रह्म सिधायो। मुरबर पाइवेस्म निज आयो ॥
भुजबलजीतिसकलमहिपाला। पुनिदलसाजि सुरनपरचाला ॥
भयो युद्ध अति खेचर हारे। शक्र सहित भागे भय मारे ॥
दनुजराज लखिअति हरषाना। बैठारे तहँ आपन थाना ॥
दिगपालन पर बहुरि सिधारा। जहां तहां भय मारु अपारा ॥
बरुण कुबेर काल यम राई। लै लै जिय सब गये पराई ॥
सकललोक तपबल बशकीन्हे। निज सेवकन बास तहँ दीन्हे ॥
तब सुरसहित इंद्र शिव पासा। आइ नाइ शिर हाल प्रकाशा ॥
नाथ असुर भय देव दुखारी। ब्रूहि उपाय मिटै दुख भारी ॥
कह हर शेत द्वीप तुम जावो। कमलनाभ कहँबिपति सुनावो ॥
शंभु बचन सुनि सुर सुर ईशा। आये तुरत जहां जगदीशा ॥
सन्मुख ह्वै लोचन भरि बारी। हाथ जोरि अस्तुति अनुसारी ॥

तोटकछंद ॥ नयजयजगदीशअजीशपतिं। करुणारससागर

भूमति ॥ जयदीनदयालकृपालप्रभो। तवपूरिरह्योजग माहिं
बभो ॥जबहींजब दुःखहमैंजु परेउ। तुमहींतबसंकटनाथहरेउ ॥
बनिशिचर एकभयो मुरहै। सुरदीन निकारि लियोपुरहै ॥दिग
ालसबैमिलिदेवहरी। भय त्रासितआइपुकारकरी ॥ तेहितेअब
ाथकृपाकरिये। दनुजै दलिमोदुखको हरिये ॥ सुनिदीन गिरा
ादबिष्णुतबै। करिहौंकलिकोपननाशसबै ॥ कहियाबिधिसाजि
लेदलका। दिगपालन देवनके हलका ॥ यह सुद्धितमीचरपाइ
ली। लैसेनसुसन्मुख आइरली ॥नभपूरिरही रजरोर करै।पर
आपनबाचनबूझिपरै ॥ चामरछंद ॥ इतउतबीरजयतिजयपुकारि
ावहीं। चक्रवान शक्तिशूल भिण्डिलैचलावहीं ॥शीशपाणिपाय
मिखण्डखण्डछैगिरैं। उष्टिउष्टिरुण्डदौरिमारुमारुकैभिरैं ॥
ोमरछंद ॥ पुनिचल्यो मुरबलवान। करिक्रोध कालसमान ॥
करधनुषशरझरिलाय। सबचलेदेवपराय ॥ सुरनाथजूझनलाग।
णत्रासितइन्द्रहुभाग ॥ हरिकाग्रस्योमुरभूप। भयबिष्णुक्रोधस
रूप ॥ हनि चक्रमार्योताहि। नहिंकीन्हितनकौआहि ॥ तरज्यो
तमीचरधाइ। शठहरिहिमारिसिआइ॥ यहिभांतियुद्धकरत्त। भइं
सहस बरषैं गत्त॥मुनिसिद्धहाहाकीन। तजिसमरबिष्णुहिदीन ॥
आगत निशाचरनाथ। धावत भयोहरि साथ ॥ श्रमबिपुलबद्री
आइ। प्रविशेगुहामहँधाइ ॥ रहसिंहवतआसनाम। योजनतरणि
बढ़ताम ॥ यकद्वारतामधितात। मुरदीखबिष्णुहिजात ॥ लैसंग
निजभटसर्ब। प्रबिश्योगुहायुतगर्ब ॥ दानवबधनकेलाय। प्रभु
कीन एकउपाय ॥ भये आप निद्राबश्य। कन्या भई उर तस्य ॥
बलबिपुल तेज अपार। हैंजगत जेहि आधार ॥ तन दिव्य पट
भुज चारि। अलंकार आयुध धारि ॥ प्रकटी जो माया आदि।
जेहि डरत शिव ब्रह्मादि ॥ लखि दनुज करिकै क्रुद्ध। लागीक
रन तहँयुद्ध ॥ प्रगटीदशौदिशिआगि। कितजाहिदानबभागि ॥
इमिभये सब जरिक्षार। निकसीसुगंध अपार ॥ भाशकुनइंद्रहि

नीक। आयेगुहा सावीक॥ कियो कंदरा परवेश। सुरनारदादि गणेश॥ देखी सबैजगमात। बैठीप्रफुल्लितगात॥ बासवसहित अनुराग। अस्तुति करन तब लाग॥ मदनमोदकदण्डक॥ जय तिजगजननि अघहरणि मनमगनिकर अयुधबर चक्र अशिशूल धर्णी। सर्बगुणभवनि दुखदवनिदानवसुरभिब्याधजनपद्म हरि विश्वकर्णी। रोगतम तरणि भयहरणि कलिकालिका सालिका शत्रुपरचंडरूपी। भूतग्रह प्रेतवय शाकिनी डाकिनी बिहँग हित जाल दुर्गे अनूपी॥

दो० यहिबिधि अस्तुति इंद्र करि देवनहने निशान।
बरषिसुमनजयजयतिकृत तब जागे भगवान॥
सुरसुरपतिदृगपालमुनिबिनयकिहिनिसबभांति।
देखि असुर बध बिष्णु तब बोले मनहरषाति॥

भुजंगप्रयातछंद॥ किह्योदेबिकल्याणदेवन्यकेरो। बरैमांगिये जाचहैचित्ततेरो॥ कहाशक्ति प्रकटीमैंतनतेतुम्हारे। असुरदुष्ट आवतलखेसबैमारे॥ सुनोनाथमोकोनहींयांचिआवै। कृपाकैसोदी जैतुम्हैंजौन भावै॥ बद्यौबिष्णुचललोकमेरेमेंराहौ। एकादशिश रीरिन्नुभैनामलाहौ॥ नवोनिद्धसंसिद्धफलतुर्तदाता। जुहोवोसदा भयहिरण्याक्षघाता॥ रहेबर्तपूजै तुम्हैं नेम धारी। मनोकामना पाइहै नरओनारी॥

दो० यहि प्रकार बरदान दै हरि भे अंतर्द्धान।
उतपति एकादशी की इमि मैं कीन बखान॥

कह शौनक यह कहौ बखानी। कौनी भांति रहै ब्रत प्रानी॥ सुनि मुनि बचनसूत सुखमाना। तात सुनोअब बरत बिधाना॥ एकादशी ब्रत कीन जो चाहै। दशमी ते अस नेम निबाहै॥ मसुरी मांस कांस त्रिय संगा। कोदव चणक शयन परयंगा॥ अल्प अहार बारइक करई। मधु अरु शाक दशौ परिहरई॥ उठै एकादशि होत बिहाना। शुचिकरिमध्य दिवसअस्नाना॥

केशव की पूजा पुनि ठानै। षोड़श भांति भजै भगवानै॥
काम क्रोध मद लोभ रुमाया। तप्ततोय मद मैथुन जाया॥
निद्राहास्य म दर्शत बोलै। तजि रद धावन झूंठ न बोलै॥
राति जागरण करै सुजाना। सुनै कथा हरि कीरति गाना॥
प्रात क्रियाकरि बिप्रबोलाई। यथा शक्ति सनमानै भाई॥
तैलामिष परान्न पुनि भोजन। मैथुनादि तजि द्वादशसोजन॥
यहि प्रकार जो करै बिधाना। ताकर फल सुनिये दै काना॥

दो० काशी सेवै अब्द शत अचवै बारि केदार।
उभय सहस गोदानदे तीरथ अटै अपार॥
होम यज्ञकरि शतसहस बिप्र जेमावै कोय।
एकादशी ब्रत के रहे सम नहिं कोई होय॥

सो० जो ब्रत सहित बिधान रहैराखि बिश्वास उर।
आवै अंत बिमान बसै बिष्णुपुर जाइ सो॥

रोलाछंद॥निराहारफलपूर्णदुग्धतेआधारहई। फलअहारचतु रांशकंदतेअठवांलहई॥ करैउदरभरिअशनअंशशतकाफलपावै। उभयबारतेसहसअंशफलनिगमबतावै॥ एकादशीके दिवसअन्न खावैजोकोई। अथवादेवैकाहुदोषताकोबहु होई॥ बरतकरणपरि हरैरहैबिषयारसलीना। ग्रासग्रासपरपरतब्रह्महत्यातेहिचीन्हा॥

दो० दशमी बेधी नारही करी द्वादशी बर्त।
पंचालिस तक चाहिये सठियानी पुनि हर्त॥

सो० बरष एक के माहिं एकादशी चौबिस परैं।
सुनौ सबन के नायँ फल समेत बर्णन करौं॥

अगहन असित एकादशि केरा। शयन बोधिनी नाम निबेरा॥
बिप्र कोटि शतन्योति जेमावै। यहि ब्रतसमफलसो नहिंपावै॥
मार्गपक्ष सित मोक्षद नामा। जो रहि पुंस पावहरि धामा॥
तेहिपरयक इतिहास बखानौ। ब्रह्म पुराण केर तुम जानौ॥
गोकुल नगर रहै यक राजा। बैपानस अस नाम बिराजा॥

नरक परा पितु स्वप्ने देखा। जागत भा उर खेद बिशेषा ॥
राज काज सुख नीक न लागै। मनबिचारिकेहिबिधिदुखभागै ॥
पुरुषा जासु अधोगत होई। जीवत वृथा पुत्र जग सोई ॥
असकहिमुनि अत्र्याश्रमआयो। करिप्रणाम निज शोचसुनायो ॥
कहिऋषितवपितुते इक बारा। ऋतुवंती प्रिय भोग बिचारा ॥
सुनि रति दान दीननहिं राई। तेहि अघ पर्‌यो अधोमुख जाई ॥
दो० मार्गशीर्ष सित पक्षकी एकादशी ब्रतस्वच्छ।
करिदीजै फलदान तेहि लहै पिता तव मोक्ष ॥
सो० सुनि नृपमंदिरआइ करि ब्रतदीन्ह्योदानतेहि।
पुण्य परम गति पाइ जयकहि सुरबर्षे सुमन ॥
रहेजो ब्रत जस रीति पावै अंत बिमोक्ष सुख।
पढ़ै सुनै करि प्रीति बाजपेय फल सोउलहै ॥
सत्य झूठकी बात जानै निगम कि रामजी।
मोहि हरिहेत सोहात अधिकनामकलिकामतरु ॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागर श्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतएकादशीउत्पत्तिमार्गशीर्षकृष्णपक्षशुक्लपक्ष शयनबोधनीमोक्षदाकथाबर्णनोनामत्रिंशोऽध्यायः३०॥

दो० सुमिरिरामसिय संतगुरु गणपगिरासुखदानि।
कहौं बावन पौराण मत ब्रह्म वैवर्त्त बखानि ॥
कह शौनक कहिये ऋषिराऊ। पूस असित ब्रतकेर प्रभाऊ ॥
कहा नाम किन पूजन कीन्हा। सुनि सुमंत्र असबोलैलीन्हा ॥
सुफला नाम अहै यहि ताता। जानि अजानिकिहेफलदाता ॥
करै सहस जो कन्या दाना। तुलै न इहि ब्रतरहे समाना ॥
यहिपर एक सुनेा इतिहासा। महिषमन्नप चंन्द्राबलिबासा ॥
तासुपुत्र बड़भयो अधर्मी। लंपट चोर मदप हतकर्मी ॥
सुनि नरेश बनदीन निकारी। करै निबाह बिहँग मृगमारी ॥

पौष कृष्ण हरि बासर बारा। मिलानकछुत्यहि दिवसअहारा॥
क्षुधित रह्यो चल दलतर सोई। निद्रालुब्ध भई नहिं कोई॥
ब्रत प्रसादते भा मनपावन। जान्यो आपुहि बंश लजावन॥
आइ भवन पितु पद शिरनायो। समय सनेह राजपद पायो॥
अन जाने ब्रतकर फल ऐसा। जानि किहे नहिं जानी कैसा॥
जोयह कथा सुनै या गावै। कन्यादान दिहे फल पावै॥

इतिश्रीपौषकृष्णएकादशीमाहात्म्यंसंपूर्णम्॥

सो० कह शौनक शिरनाइ पौषशुक्ल हरि ब्रतकथा।
अबम्वहिं देउ सुनाइ सुनि सुमंतु बोले हरषि॥

यहिकर नाम पुत्रदा कहिये। अवशि पुत्रफल धारै लहिये॥
लक्ष्मी नारायण हित सेवै। संयम नियम पूर्व लखिलेवै॥
यहिपर एक कहौं इतिहासा। केतुमान नृपभाद्र निवासा॥
तेहिके तनय न एकहु भयऊ। यकदिनकरिबिचारबनगयऊ॥
देखेतहँ खगमृग तरुनाना। मटत मिलेमुनिसोम सुजाना॥
करिबिनतीनिजदुखसबकहेऊ। सुनि मुनिमन्त्रबीतजस चहेऊ॥
पौष शुक्ल ब्रत पुत्रद नामा। करहु जाइ पूजी मन कामा॥
भवन आइ ब्रत कीन्हेउ भूपा। हरि प्रसाद सुत लह्योअनूपा॥
जोयह कथा सुनै अरु गावै। सुख संपति नाना बिधिपावै॥

इतिश्रीपौषशुक्लएकादशीमाहात्म्यंसंपूर्णम्॥

सो० कह शौनक शिरनाइ माघ कृष्ण हरि ब्रत कथा।
अबम्वहिं देहुसुनाइ सुनि सुमंतु बोले हरषि॥

यहि कर नाम षटतिला अहई। करिब्रतनेमनिकर अघदहई॥
तिल पिण्डनमें हरिहि पधारै। बिबिधि भांति पूजा अनुसारै॥
तिल पावै तिल बिप्रै देवै। तासु पुण्य सुरपुर सुख लेवै॥
यहिपर यक इतिहास बखानौं। रहै पुरमें शशिब्राह्मणजानौं॥
नाना नेम बरत सो ठानै। दान देन भिक्षा नहि आनै॥
करि चिन्ता हरि जाप्पै आई। दीन्ही मृतिका द्विजैरिसाई॥

अंतकाल त्यहि पुण्य प्रतापू। लहा स्वर्गशुचि मंदिर आपू॥
तहँधन धान्य कछू नहिंदेख्यो। आपुहि महामन्द करिलेख्यो॥
हरिमत देव बधुनते भागी। यक पटतिला पुण्यदुरिमांगी॥
दरश हेतु व्रत काहू दयऊ। ऋद्धिसिद्धि सब ताके भयऊ॥
जो यह कथा सुनै वा गावै। तस्य अवश्य पुण्य सरसावै॥

इतिश्रीमाघकृष्णएकादशीमाहात्म्यंसम्पूर्णम्॥

सो० कह शौनक शिरनाय माघशुक्ल हरिव्रत कथा।
अब मोहिं देहु सुनाइ सुनि सुमन्तु बोले हरषि॥

माघ शुक्ल हरि बासर केरा। जया नाम अघ हरत सवेरा॥
यहि पर यक बरणौं आख्याना। इन्द्र अप्सरा रहै छबिवाना॥
निर्त्तत सो हरि आगे जानी। मालव गंधब देखि लोभानी॥
निरखि निलज्ज शापवृषदयऊ। होउ पिशाच जाय द्वउभयऊ॥
बनमें रहैं सहैं दुख नाना। माघशुक्लव्रत किहिनिअजाना॥
हरि प्रसाद गे स्वर्ग यान चढ़ि। इमिभविष्य उत्तरभावतिपढ़ि॥
जो यह कथा सुनी वा कही। करी कृपा तेहि पर प्रभुसही॥

इतिश्रीमाघशुक्लएकादशीमाहात्म्यंसम्पूर्णम्॥

सो० कहशौनक शिरनाय फाल्गुन कृष्ण हरि व्रतकथा।
अब मोहिं देहु सुनाय सुनि सुमन्तु बोले हरषि॥

बिजया नाम याहि श्रुति गावै। याके रहे बिजय नरपावै॥
अवध नगर नृप दशरथ के सुत। पितुबच बनगत बंधु बधू युत॥
तहँ जानकी हरी दशकंधर। मिलिरबि सुतहि चढ़ले बंदर॥
दधि तट आपु अनुज मत ठयऊ। बकदालय ढिग पूछन गयऊ॥
नाथ कहौ केहि बिधि रिपुजीती। सुनि मुनिबर बोले करप्रीती॥

दो० फाल्गुन कृष्ण बिजय अस नाम यकादशि केर।
करहु जाय त्यहि कृपाते जितिहौ शत्रु घनेर॥

सो० आय कीन व्रत राम रणचढ़ि मार्‌यो दशमुखहि।
सिय सोदर युत धाम पहुँचत पायो राम पद॥

कल्प भेद यह बात बद असकंध पुराणइमि।
पढ़ै सुनै जो तात सो न सहै यम त्रास पुनि॥
इतिश्रीफाल्गुनकृष्णएकादशीमाहात्म्यंसम्पूर्णम्॥

सो० कह शौनक शिरनाय फाल्गुनसित हरिव्रत कथा।
अब मोहिं देहु सुनाय सुनि सुमन्तु बोले हरषि॥

आमर्दकी नाम यहि जानौ। गोशतदियेअधिक फलमानौ॥
धात्रीतरु पूजै मनु लाई। देइ दान बहु बिप्र जेंवाई॥
हरि सुमिरन जन भजन प्रकाशै। आधिव्याधिदुख दारिदनाशै॥
याही व्रत कीन्ह्यों सुग्रीवा। तस्यप्रसाद लह्यो सुखसीवा॥
राजा नल दमयन्ती रानी। यहिव्रतकरिभइ बिपदाहानी॥
आमर्दकी प्रात दुरबासा। नृपपरतम करि भये निरासा॥
जो यह कथा सुनै या गावै। पुष्कर मज्जन कृत फलपावै॥
इतिश्रीफाल्गुनशुक्लआमर्दकीमाहात्म्यंसम्पूर्णम्॥

सो० कह शौनक शिर नाइ चैत्र कृष्ण हरि व्रत कथा।
अब मोहिं देउ सुनाइ सुनि सुमंतु बोले हरषि॥

पाप मोचनी यहि कर नामा। शुभगति लहै किहे बिश्रामा॥
यहि पर यक इतिहास बखानौं। भविष्योत्तर पुराणको जानौं॥
च्यवन पुत्र मेधावी नामा। करै तपस्या बिपिन अकामा॥
इन्द्र डरपि अप्सरा पठायो। हावभाव करि आय डिगायो॥
रमत बरष बीत्यो पञ्चासी। बोली अहं जाब नभबासी॥
कह मुनि एक क्षमा जनि डोली। होत प्रात जायो सुनि बोली॥
कै बर्षकी तब रात्रि प्रमाना। मुनिहिं चेत तबभा दुखनाना॥
दीन्ह शाप तेहि हे अब चरणी। होहु पिशाची तप क्षय करणी॥
सुनि कम्पित ह्वै चरणन नई। कीजै कृपा भूल बड़ि भई॥
कह ऋषि चैत कृष्ण उपवासै। करु हरिवासर ते अघनासै॥
सुनि अप्सरा कीन व्रत भारी। ह्वै पावन सुरलोक सिधारी॥
जो यह कथा सुनै वा गावै। चन्द्रायन व्रत कृत फल पावै॥

इतिश्रीचैत्रकृष्णपापमोचनीमाहात्म्यंसम्पूर्णम् ॥

सो० कहशौनक शिरनाइ चैत्रशुक्ल हरिव्रत कथा।
अबम्वहिं देहु सुनाइ सुनिसुमंतु बोलेहरषि ॥

कामद नाम एकादशि येहा। करत हरत जेहि कलुष सनेहा ॥
यहि पर एक सुनौ इतिहासा। पुण्डरीक नृप सुतल निवासा ॥
गंधर्बी ललिता त्यहि तीरा। क्रीड़तकरी नृपतित्यहि भीरा ॥
मदनातुर क्वै गान बिगारा। दीन शाप निशिचर बपु धारा ॥
पतिगतिलखिलज्जितबिलखानी। किंकरोमि को गच्छ कठानी ॥
यक दिन कानन कीन पयाना। बिंध्या शिरवर मिलेमुनिनाना ॥
पूछेते निज बिपति सुनाई। तिनकह कामद ब्रत करुजाई ॥
सुनि ब्रतदानताहिकरि दयऊ। राक्षसत्व गत गंधव भयऊ ॥
चढ़िबिमान निजपुर पगुधारा। सुनत कहत अघदहत अपारा ॥

इतिश्रीचैत्रशुक्लकामदमाहात्म्यंसंपूर्णम् ॥

सो० कह शौनक शिरनाइ बैशाखे सित हरिबरत।
अब म्वहिं देहु सुनाइ सुनि सुमंतु बोले हरषि ॥

नामबरूथिनियहिमुनिगाइनि। सबसुख रामभक्ति बरदाइनि ॥
बिप्र मुंच यक यह ब्रत करेऊ। जात जागरण हरि मग धरेऊ ॥
बोला द्विज लौटत मोहिंखायो। शपथखाय हरि मन्दिरआयो ॥
करि जागरण प्रात तहँ गयऊ। ब्रतप्रसादमृगपतितजिदयऊ ॥
अंत समय हरिपुर गा सोई। कहत सुनत गोशत फलहोई ॥

इतिश्रीबैशाखकृष्णबरूथिनिमाहात्म्यंसंपूर्णम् ॥

सो० कहशौनकशिरनाइ बैशाखशुक्ल हरिब्रतकथा ॥
अब मोहिंदेहु सुनाइ सुनि सुमंतु बोलेहरषि ॥

मोहनि नाम काम फलदाई। बिष्णु चरण सेवै चितलाई ॥
षोड़श भांति सहित अभिलाषै। करै प्रदक्षिण जयश्रुतिभाषै ॥
बिष्णुहि चारि अर्घ हरि काहीं। रबिहि सात चंद्रै यकचाहीं ॥
हरि ढिग झूठ बिवाद न ठानै। गरभालै पादुका न आनै ॥

अग्रे पृष्ठे उप दिशि बामा। करै न जप तप होम प्रणामा॥
यहि बिधि द्वादश दोष बराई। हरिहि भजै सबपाप नशाई॥
यहिपर यक इतिहास बखानौं। कूर्म पुराण केर तुम जानौं॥

दो० श्री रघुनाथ बशिष्ठते कह्यो स्वप्नके माहिं।
देखत हौं मैं दश मुखै भयबश सूततनाहिं॥

कहौ सोब्रतज्यहिकरिअघजाहीं। सुनि बशिष्ठ बोले प्रभुपाहीं॥
राम नाम तब धारण करई। कैसे कलुषी भवनिधि तरई॥
प्रश्नलोकहित किह्यउ कृपाकर। सितबैशाख रहौ हरिबासर॥
सब दुख दोष देत करि हानी। सुनौ एक इतिहास पुरानी॥
सरस्वती तट सोमवती पुर। बसै बैश्य धनपाल नाम चुर॥
तासु तनय बड़ पापी भयऊ। तस्करजानिकाढ़ित्यहिदयऊ॥
धूर्त कर्म करि दिवस बितावै। यत्र तत्र गहि पीटो जावै॥
नृप भय बहुरि बसाबन जाई। खग मृग तहँके बध करिखाई॥
यकदिन जाह्नवी चलिन्हायो। कौडिन्याश्रम लखिशिरनायो॥
महापतित मैं किमि अघ नाशै। कह मुनिकरु मोहनी मुपासै॥
मुनिब्रतरहत दहत अघभयऊ। दिब्य देह ह्वै हरिपुर गयऊ॥
जो यह कथा कहै वा गावै। सो व्रत अर्द्ध केर फल पावै॥

इतिश्रीबैशाखशुक्लमोहनीमाहात्म्यंसंपूर्णम्॥

सो० कह शौनक शिरनाइ ज्येष्ठकृष्ण हरिव्रतकथा।
अब मोहिं देहु सुनाइ सुनिसुमंतु बोलेहरषि॥

ज्येठअसितव्रत अपरा नामा। दोष दलनि दायक मन कामा॥
यकइतिहास सुनौ श्रुति कहई। सत्यवती यक ब्राह्मणि रहई॥
हरिमिलनेहितज्यहित्यहि पूछै। केहिलावै तजि आमद वृछै॥
लखिलालसातासु लालचमुनि। बोले सत्यवती मोते सुनि॥
ज्येष्ठ कृष्ण अपरा व्रत रहऊ। मिलीसोइपतिजेहितुमचहऊ॥
करनलागिव्रत सहितबिधाना। द्विजनि ज्यँवाइदेइ बहुदाना॥
तनुतजि अन्तकाल लहिजोई। भई आइ सतिभामा सोई॥

कृष्ण कंतते पुछय एक दिन। बूझसिआपनि यही कहीतिन ॥
अस अपरा ब्रत भू धृत गावै। पढ़त सुनत गोशत फलपावै ॥

इतिश्रीज्येष्ठकृष्णअपरामाहात्म्यंसम्पूर्णम् ॥

सो० कह शौनक शिरनाइ ज्येष्ठशुक्ल हरिब्रतकथा।
अब मोहिं देहुसुनाइ सुनिसुमंतु बोले हरषि ॥

यहि ब्रत नाम निर्जला सेवै। हरिपट धेनु बिप्र कहँ देवै ॥
दुवादशी दिन पारन करई। सो नर यम यातना न भरई ॥
बरणयो व्यास भीमते याही। अन्नअशननहिं ब्रतदिनचाही ॥
यहितन मो चण्डाल समाना। मरे लहैं दुर्गति दुख नाना ॥
बोले भीम करिय कस ताता। वृषभउदर ब्रतरहा न जाता ॥
तो तुम एक निरजला कीजै। बारो मास केर फल लीजै ॥
सुनिबिधि करण वृकोदर लागै। जात भये हरिपुर तनु त्यागै ॥
जो यह कथा सुनै वा गावै। गया पिण्ड दीन्हें फलपावै ॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदास
रामसनेहीकृतचतुर्दशएकादशीमाहात्म्यबर्णनोनाम
एकत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि।
बरणोंबिविधिपुराणकी पुनि इतिहासबखानि ॥

सो० कहशौनक शिरनाइ असित अषाढ़हरिब्रतकथा।
अब मोहिं देहुसुनाइ सुनिसुमंतु बोले हरषि ॥

महा पुनीत योगिनी नामा। यहिब्रतचरेहोइ सिधिकामा ॥
यहिपर यक इतिहास बखानौ। बिधि वैवर्त केर तुम जानौ ॥
अलकापुरी यक्ष पति पाली। बटुक हेमरह तिनकर माली ॥
तस्यांगना मृगाक्षी नामा। प्रीत्याशक्त रहै बश कामा ॥
शिवपूजन कुबेर नित जाहीं। यकदिनस्त्रकपहुंचायसिनाहीं ॥
तब धनपतिनिज अनुगपठावा। रमत देखि तहँ आय सुनावा ॥

सुनि कुबेर बोले करि रोसा। सुरहेलन कृत देइ भरोसा॥
यहि अघ कुष्ट होइ अष्टादस। कहतै भयो गयो काननतस॥
सहै कष्ट तब मन पछिताई। मार्कण्डेय लखि बिपति सुनाई॥
कह मुनि योगिन्या मुपवासै। करु जेहि पुण्य कुष्ट तवनासै॥
सुनि व्रत करतभयो बपुनीता। कहत सुनत सुखप्रदसबहीका॥

इतिश्रीआषाढ़कृष्णयोगिनीमाहात्म्यंसंपूर्णम्॥

दो० कह शौनक शिरनाइ सितअषाढ़ हरिव्रतकथा।
अब मोहिं देहु सुनाइ सुनि सुमतु बोले हरषि॥

सुर शयनी यहि नाम अनूपा। जेहि धरिहृदयतरिय भवकूपा॥
मिथुनस्ते अबि हरिहि सोवावै। तुलाराशि गत बहुरिजगावै॥
तस्यपुरः चतुराब्द कि मासा। करै नेमरहि बरत उपासा॥
मृदुबादी हावै गुड़ त्यागी। पुष्प तेल गंधब सौभागी॥
कटुक कषाय तजै छबिवंता। रबिगतभयहरिसुमिरणसंता॥
रक्त कण्ठ तांबूल नेवारे। पदाभ्यांग बस बाहन द्वारे॥
महिंसापि नृप होय बिशोका। पय दधि तजै जाय गोलोका॥
तजै अन्न सो सुरपुर बासै। लौनते त्रयतन के अघ नासै॥
हरि मंदिर मार्जना जो करई। दीपदान लेपन अनुसरई॥
काम क्रोध मद लोभ गँवावै। सो सायुज्य मुक्ति नर पावै॥
जेहि तेहि भांति देइ जो दाना। सो प्राणी हावै धनवाना॥
नृत्य गान कृष्णा लै करई। सो नर भक्ति लहै बरबरई॥
अंबरीष पतनी पद्मावति। पुरहरही हरिमंदिर गावति॥
दीन लगाय चून निज पानी। तेहिफल भई अवधकी रानी॥
करिहरि भक्ति गई प्रभु धामा। बहु पुंसन कर सारेउ कामा॥
कहत सुनत तेहिप्रभुनिजजानै। इमि नारदी पुराण बखानै॥

इतिश्रीआषाढशुक्लदेवशयनीमाहात्म्यंसंपूर्णम्॥

सो० कह शौनक शिरनाइ श्रावण तम हरिव्रत कथा।
अब मोहिं देहु सुनाइ सुनि सुमंतु बोले हरषि॥

श्रावण कृष्ण कामिका नामा। सेवत दोऊ लोक बिश्रामा॥
पूजै बिष्णु चरण चितलाई। तासु पुण्य कछुबरणि नजाई॥
गंगा गया गोदावरि पुष्कर। बाराणसि प्रयाग मज्जै नर॥
अन्न पटादि दानदे सोई। यहिब्रतसरिसतदपिनहिंहोई॥
पुण्य बढ़ावनि स्वर्ग निसेनी। यक इतिहास सुनौ सुखदेनी॥
शुभग सुमन रुकमंगद बागा। आवैलेन सुरी सह रागा॥
यकदिन एक रहि गई भूमा। वृतन्ताक कर लाग्यो धूमा॥
सुनि नृप मालीते तहँ आवा। देहु पठाइ स्वर्ग मोहिं भावा॥
कहि विधि तव सुकृत सरसाई। कामद ब्रत दीजै यकराई॥
कह नृप यहां न जानै कोई। कीन अजान लयावो सोई॥
तब नृप नगर पिटाई डौंड़ी। सुनिआईयकबनिककिलौड़ी॥
दीन दान ब्रत लहि सुरनारी। चढ़िबिमाननिजलोकपधारी॥
देखि प्रभाव करननृपलाग्यो। सुतत्रियप्रजनसहितअनुराग्यो॥
छलि मोहनी कठिन बरु यांचा। तदपितज्योनहिहरिब्रतसांचा॥
प्रणबिलोकिहरिदरशनदीन्ह्यों। खलमोहनिहिथुकैलीकीन्ह्यों॥
इमि ब्रह्माण्ड पुराण बखानै। कहत सुनत अघनाशतमानै॥

इतिश्रीश्रावणकृष्णकामिकामाहात्म्यंसंपूर्णम्॥

सो० कहशौनकशिरनाइश्रावणसितहरिब्रतकथा।
अब मोहिंदेहु सुनाइ सुनि सुमंतु बोलेहरषि॥

श्रावण शुक्ल पुत्रदा नामा। लहैं पुत्र यहिकरि अभिरामा॥
यहिपर यक इतिहास भनीता। माहिष पुररह नृप महिजीता॥
पुत्र हीन कछु रुचै न तेका। द्विजनिबूझि बनगादिन एका॥
तहां मिले लामश कालीना। पूछे ते बोला कै दीना॥
तनुलहि कुपथ न पगहमधारे। कहि अघ भयो न पुत्र हमारे॥
कहमुनि पूर्व बनिकतुम रहेऊ। धर्मवान यक दिन जल बहेऊ॥
तृषित सवच्छ पेत रहैं गाई। पीन ताहि तुम मारि भगाई॥
तेहि अघअंगज मिल्यो नथीजै। अब पुत्रदा इकादशि कीजै॥

श्रवण सुनत गृह आयो। कीन्ह्यो व्रत प्रताप सुतपायो॥
यह कथा सुनै या गावै। गंगा स्नान किये फल पावै॥

इतिश्रीश्रावणशुक्लपुत्रदामाहात्म्यंसम्पूर्णम्॥

सो० कह शौनक शिर नाइ भाद्रअसितहरि व्रत कथा।
अब मोहिं देहु सुनाइ सुनि सुमंतु बोले हरषि॥

अजिता नाम अस्य प्रद छेमा। हृषीकेश पूजै युत प्रेमा॥
यहि पर सुनु एक कथा पुरानी। नृप हरिचंद रहे बड़ दानी॥
विधिवश राज भ्रष्ट भै ताकी। सुत तिय देहगईबिकिजाकी॥
व्रत जन मृत चैल प्रहारी। बोले लखि गौतम दुख भारी॥
अजिता बरत करौ हरिचंदा। मिटैं सकल दुख होइ अनंदा॥
सुनि महिपाल तहँ व्रत कीन्हा। सुततियराज्यबहुरिहरिदीन्हा॥
जो यह कथा सुनै वा गावै। दश गोदान दिहे फलपावै॥

इतिश्रीभाद्रकृष्णअजितामाहात्म्यंसम्पूर्णम्॥

सो० कह शौनक शिर नाइ भादव सित हरि व्रतकथा।
अब मोहिं देहु सुनाइ सुनि सुमंतु बोले हरषि॥

यहि हरि बासर पदमा नामा। सबदुखहरणिकरनसुखधामा॥
यहि पर एक कहौं इतिहासा। मान्धाता नृप अवध निवासा॥
धर्म वान गो जीत अमानी। प्रजा अशंक बसैं तहँ जानी॥
तीन बर्ष जल मेघन दीन्हा। भये लोग सब सुखते हीना॥
नृपहुदुखित ह्वै कच्छ सिधावा। मिलिअंगिरहिसोकष्टसुनावा॥
कह मुनि यकनृपली तपुकरही। तेहिअघ महिजलछीटनपरई॥
करु हत ताहि आज जल बरसै। हिंसाकरबनबरु जग झरसै॥
तेहि ते देहु धर्म उपदेशा। नभ सितहरिव्रत करौनरेशा॥
भले नाथ कहि कीन्हो आई। प्रज जन हितभै वृष्टिअघाई॥
यह संस्त्रित सुख लह्यो नरेशा। कहतसुनततेहिमिटतकलेशा॥

इतिश्रीभाद्रपदशुक्लपद्मामाहात्म्यंसम्पूर्णम्॥

सो० कह शौनक शिरनाइ आश्विन कृष्ण हरिव्रतकथा।

अब मोहिं देहु सुनाइ सुनि सुमंतु बोले हरषि॥
नाम इंदिरा यहि सुख देनी। नरक निवारण स्वर्ग नसेनी॥
तापर एक कहौं इतिहासा। इंद्रजीत नृप महिपुरबासा॥
सविता तस्य अधो मुख रहेऊ। नारद आय भूपते कहेऊ॥
कह नृप किमि होइहै निस्तारा। बरत इंदिरा रहो भुआरा॥
देहु ताहि फल करिनृप दयऊ। त्यागिअधोमुखहरिपुरगयऊ॥
जो यह कथा सुनै वा गावै। नैमिष क्षेत्र अटे फलपावै॥

इतिश्रीआश्विनकृष्णइंदिरामाहात्म्यंसम्पूर्णम्॥

सो० कह शौनक शिर नाइ आश्वन सित हरिव्रतकथा।
अब मोहिं देहु सुनाइ सुनि सुमंतु बोले हरषि॥

पापांकुशा नाम यहि जानी। अशुभकर्म नाशिनिसुखदानी॥
सुनिइतिहासकृष्णजिमिकहेऊ। चेतन नाम बिप्र एक रहेऊ॥
विद्या बित गर्बित नहिं सूझै। आप समानन आन हिं बूझै॥

दो० बिद्या बाद प्रमाद धन शक्तिसुपर दुख हेत।
खल सुसाधु बिपरीत करि ज्ञान दान सुखदेत॥
बिद्या बिद्या हरण हित पढ़त होत खलठूंट।
चह्यो निकासन मीनको घुसि आयो गृह ऊंट॥

सो० एक दिन सोवत माहिं कहेउ मनुष एकनगरमें।
भूप रहेउहै नाहिं चलु तहँ मिलिहैं राज तोहिं॥
चल्यो हर्षिबश मोह मगनदलखिलाग्योहलन।
मध्य नगर सहक्रोध चाबत जाग्यो सहित दुख॥

करि बिचार कुंभज पहँ गयऊ। तिन उपदेशयथोचितदयऊ॥
पढ़े सुने का फल सुत येही। करिबिबेक हरिपद चितदेही॥

दो० दश संदन नंदन चरण कमल अमल अनुराग।
जो न बढ्यो बादिहि पढ्यो मढ्यामोह ममदाग॥

भव नद काल मगर तुम देखा। मध्य बयस महँखाव बिशेषा॥
पाप संकुला करि अघ जारौ। हरिपद भजिपरलोकसुधारौ॥

कीन आइ व्रत बुद्धि प्रकाशी। सुमिरन करिभाहरिपुरबासी॥
जो यह कथा सुनै या गावै। व्रत फल चतुर अंशसोइपावै॥
इतिश्रीआश्विनशुक्लपापांकुशामाहात्म्यसम्पूर्णम्॥
सो० कह शौनक शिर नाइ कातिककृष्ण हरिव्रतकथा।
अब मोहिं देहु सुनाइ सुनि सुमंतु बोलेहरषि॥
रमनी नाम रहै जो कोई। सो नर इंद्र समीपी होई॥
यहि पर एक सुनै आख्यानै। नृप मुचकुंदभले व्रत ठानै॥
सुता तस्य शशिभागा नामा। शोभन पति आवा पितुधामा॥
क्षुधित अशन निजनारितेमाँगा। सुनतकहेउपतितेशशिभागा॥
आजु अहै हरि बासर नाथा। पशु पक्षी कोइलहै न पाथा॥
होत हंस गति कौन अकाजू। बड़ भाग मृत्यु पाई आजू॥
भावी बश त्यागे त्यहि प्राणा। हरिपुरगाचढ़ि शुभगबिमाना॥
बहुत कहा कहिये बिस्तारी। व्रत प्रभाव सबपुरी उधारी॥
जो यह कथा सुनै वा गावै। अन्नदान दीन्हे फल पावै॥
इतिश्रीकार्तिककृष्णरमणीमाहात्म्यंसम्पूर्णम्॥
सो० कह शौनक शिरनाय कार्तिक सित हरिव्रत कथा।
अब मोहिं देहु सुनाइ सुनि सुमंतु बोले हरषि॥
परबोधिनी नाम यह नीकी। दायक सकल कामनाजीकी॥
यहिव्रत सरिस अपरव्रतनाहीं। अघतमजिमिबिलोकिरबिजाहीं
जनक नगर यक रूपा रहेउ। हरिनिशिजागिमित्रमगचहेउ॥
तेहि प्रसाद मन भई गिलानी। तजिसिदेहभजिसारँगपानी॥
वितदत्वा खिल भय सुरबाला। नृत्य गान व्रत करैं रसाला॥
सहित सनेह जपै हरि नामा। ब्रह्मचर्य्य अस्थितहरिकामा॥
व्रत प्रसाद सोइ गोप कुमारी। भई अधिक गिरधरै पियारी॥
वृन्दाबन बिहार जग जाना। इथंवदति स्कन्द पुराना॥
कार्तिक में सुनि सुमन चढ़ावै। हरिहितासुफलबरणिनजावै॥
देवोत्थानी हरि व्रत गीता। सुनतकहत फललहतपुनीता॥

ये चौबीसौ नाम बखाने। एकादशी के जो मम जाने॥
बिधिवतकरिहरिसुमिरणकरई। गोपद इव भवसागर तरई॥
गीतिकाछन्द॥ भवतरै गोपद सरिसजो शुचि नेमकरि व्रत ठानई। पावै बरत षटअंश फल जो कथासुनै बखानई॥ कलि-कालपाप पयोधि जप तप योग मखआश्रय तजै। रघुनाथदास प्रतीति ते सतसंग करि रामै भजै॥

दो० राम भजन बिन कर्म्म जो सो सब तुच्छ लखात।
यथा शुन्न दश गुन्न बिन अंक गने नहिं जात॥
एकादशी बरदानि तोहिं मातु जाँचि सब कोइ।
लह्यो काम फल देहु मोहिं रामचरण रति होइ॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथ दासरामसनेहीकृतचौबीसोएकादशीमाहात्म्य बर्णनोनामद्वात्रिंशोऽध्यायः ३२॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु गणपगिरा सुखदानि।
कार्तिक माहातमकथा कहौं इतिहास बखानि॥
पुनि शौनक बोले मृदुबानी। केहि बिधिभईतुलसिकाज्ञानी॥
विष्णु शीशधारी केहि हेता। यहौ कहौ प्रभु कृपा निकेता॥
कह्या सूत सुनिये ऋषिराई। विष्णुपुराण कहत इमिगाई॥
तुलसीनाम रहै यक नारी। तेहि हरिहेत कीन्ह तपभारी॥
ह्वै प्रसन्न आये भगवाना। बोले सुमुखि माँगु बरदाना॥
देखि रूप बोली कर जोरे। पति ह्वै सदा रहौ उपमोरे॥
सुनि लक्ष्मी तापर करि कोहू। दीन्होंशाप बिटप जड़ होहू॥
कमलहि शापदीन तेहि येहा। बसहु जाइ तुम नीचन गेहा॥
सुनत बचन तुलसी से कहेउ। बिटपहोउ तुम ममप्रियरहेउ॥
मैं धरि शालग्राम शरीरा। रहिहौं सुमुखि सदा तवतीरा॥
प्रथमगंडकी कामिनि यकचुर। तपकरिमाँगिसि बसौसदाउर॥

मैं कह सरितहोउ यहि भोरे। शिलारूप बसिहौं उर तोरे॥
एक कल्प इत्थं श्रुति गाई। दूसरि बिधि अबसुनौ सुनाई॥
गीतिकाछंद॥ इकबारशिवमगजात सुमिरत नामतहँ बास वरहेउ। लखिकहेउ योगीहोहुठाढ़े चितैभवमारगगहेउ॥ तब इन्द्रदर्पितधाइअइ रिसाइअसबोलतभयेउ। मानेकहानहिंमोरतैं शठहेरिहमतन चलिदियेउ॥ सुनिबक्रबचनमहेशक्रोधितन यनतीसरतेतहाँ। प्रकटीअगिनिकी ज्वालतीक्षणजरनहरिलाग्यो महाँ॥ होइबिकलबासवगिरेउचरणनत्राहित्राहिपुकारेहू॥ लखि दीन शम्भुकृपाल पावकतोय निधिमहँ डारेहू॥ त्यहिवृहदतेतहँ भयो बालकसिन्धुसुतकरि पालेऊ॥ बिधिआइकीन्ह्यो कर्मनाम हुंधरिजलंधरचालेऊ॥ गतकालकछुभातरुणवृन्दानामनारीपाय ऊ। सो कालनेमिकिसुतामनवचकर्मपतिपद ध्यायऊ॥
दो० भयो जलंधरप्रबलअति जीतिजगत बशकीन्ह।
निशिचरपतिह्वैनिशिचरनबासजहांतहँदीन्ह॥
यक दिन सभा बैठ रहैं सोई। सकलसमाज आपनी जोई॥
राहु कबंध देखि अस कहई। शीश तोरकेहि काटा अहई॥
रोलाछंद॥सुनोनाथएकसमयदेवदानवसबआये। मथ्योसिंधु गिरिडारिरत्नचौदा तहँपाये॥ कामधेनुगजअश्वकल्पतरुबिषश शिजानो। धनुकयन्वन्तरकंबुरमारंभापहिंचानो॥ कौस्तुभमणि वारुणीसुधायेचौदा कहेऊ। दियेबांटि हरिसुरन मांसमधुअमृत भयऊ॥ तेहिहितश्रीभगवानमोहनीरूपबनायो। निकटआइसुर असुरउभयपांतिनबैठायो॥बांटनलागेआपुसुरादैत्यनकहँदीन्हों। देवनिपायोपियुपतहांउठिमोहूंपीन्हों॥ रवि शशि दिहिनिबताइ बिष्णुकाट्योशिरमोरा। देवासुरसंग्रामभयोसागरतटघोरा॥ ऐरावतसुरधेनुकल्पतरु रंभाचारी। लैगेबासवस्वर्गसम्पदासकल तुम्हारी॥ सुनिनिश्चर पतिदूतसूतढिगतुरतपठायो। जाइकहा चरदेहु बस्तु जो दधिकी लायो॥ दूतबचन सुनि शक्रकह्योजा

निजपतितीरा। लेईआइ अबबस्तुहोइजोअतिबलबीरा ॥ करि महिमण्डलराज जीतिनरभावरबण्डा। अबआवैचढ़िसमर करौं तेहितनसतखण्डा ॥ दूतजलंधरपासआइसबहालसुनावा। यातु धानसुनिकोपि कटकलैआतुरधावा ॥ अमरावतीगरेरिइन्द्रबहुकी नलराई। मरैनमारेअमरसुरनयुतगयोपराई ॥ तबहरिसन्मुख जाइबिबिधिबिधिबिनयसुनाई। दुखित जानिभगवानदनुजते कीन लड़ाई ॥ भव्यतीतकछु कालसमर लखिरीझि मुरारी। कह्यो जलंधरमांगुहोइरुचिजौनतुम्हारी ॥ जोमोपैंपरसन्ननाथ दीजै बरयेहा। कमलाके संयुक्तबसौंतुमहमरंगेहा ॥ एवमस्तुक हिकृष्णकीनतहिगुहानिवासू। शोभातिहुंपुरकेरिआइतहँ कीन प्रकाशू ॥ तब बासवह्वै बिकलगयेचतुराननतीरा। कह्योसक लदुखरोइसुनतबिधिदीन्होंधीरा। नारदतेतबकह्योजलंधरबली अपारा। मरण तासुशिवहाथअपरतेमरीनमारा ॥ जोशंकरतेबधै यह करैतौसुरसुखलहई। सुनिनारदपितुबचनदनुज जहँ आये तहँई ॥ लखिमुनिदीन अशीशनाइशिरनृपबैठारा। बोलीबीणा धरण आजु कितेपगुधारा ॥

सुनि नारद बोले निज काजू। हम कैलास गये रहैं आजू ॥
तहां करत त्रिपुरारि बिहारा। शीशजटा उर नर शिर हारा ॥
नग्न अमंगल रूप बिशेषी। तहां नारि यक सुन्दरदेखी ॥
इन्दुबदनि मृगनयनि बिराजै। रतिशतकोटिदेखिछबिलाजै ॥
जेहि के घरऐसी त्रिय होई। तेहि समान जगमेंनहिंकोई ॥
सुनि नारद के बचन मुरारी। लीन राहु का तुरत हँकारी ॥
बोला शठ शंकर पहँ जाऊ। कह्योदेहुत्रिय जामलचहऊ ॥
क्षिप्रराहु शंकर पहँ आवा। निज पतिकर संदेश सुनावा ॥
सुनि महेशकियो क्रोध कराला। कीरतिमुख प्रगट्योततकाला ॥
गदापाणि दृग अति भयकारी। डरपि राहुबहुबिनय उचारी ॥
सुनि पशुपति तब दीनबचाई। आवा जहां निशाचर राई ॥

सब वृत्तान्त तहांकर कहेऊ। सुनिसागरसुतउरअतिदहेऊ॥
गीतिकाछंद॥ उरदह्योतुरतैसयनसंग अपारलैशठधायहू।
बहुहोतअशकुनगुनतनहिं सोशम्भुसंमुख आयहू॥ षट बदन
आदिगणेशभूत पिशाचभिरे प्रचारिकै। द्रुम अस्त्र शस्त्र चलाइ
एकहिएक डारत मारिकै॥ कोउपरेकहरतघावबशकोइशीशबिन
जहँतहँफिरैं। कोउमारुमारुपुकारकोउएकबाणलागतमहिगिरैं॥
यहिभांतिकीन्होंयुद्धशिवशशिमासतबहहर्योहियो। ह्वै श्रमित
गिरिजानाथहरिकोध्यानसमरैमें कियो॥
नाथ हरौ मम संकट भारी। तुरतै प्रगटे तहँ मुरारी॥
बोले हरि तुम सुनो पुरारी। पतिब्रता है याकी नारी॥
तेहि प्रभाव खल जीतिनजाई। करहु कि काहेनकोटि उपाई॥
ताते यहि आड़ौ कछु बेरा। मैं ब्रत भंग करौं तेहि केरा॥
असकहि यती स्वरूप बनायो। गुहा निकट वृन्दाके आयो॥
उदित भूमि तरु द्वारे पाई। बैठ आसन रुचिर बनाई॥
तेहि रजनीरज निशिचरनारी। देख्यो स्वप्न भयंकर भारी॥
मनो जलंधर खर आरूढ़ा। मुंडित शिर गा दक्षिण मूढ़ा॥
चौंकि परीव्याकुलअति शोचा। प्रातभये गृहकाज न रोचा॥
क्षण द्वारे क्षण भीतर जाई। यती बिलोकि बिष्णुपहँआई॥
शीश नाइ निज स्वप्न सुनावा। कहहरि सुरहितअवसरपावा॥
सुनु वृन्दा पुराण अस कहई। अस स्वप्ना दुखदायकअहई॥
तव पति समर शंभु कर आजू। मरी अनन्द करी सुरराजू॥
तेहि क्षण माया करधरशीशा। गिरा आइ आगे तेहि दीशा॥
बिबिधिबिलापकिहिसिपतिचीन्हा।जरिहौंसंगचितारचिलीन्हा॥
कह हरि बचन मानु यकमोरा। तौ अबहीं पति जीवै तोरा॥
रुंड मुंड धरि बसन वोढ़ाई। सुमिरौ निजसत घरी अढ़ाई॥
यहउपायकरिसुनितेहिकिहेऊ। बान अर्द्धधरि दृगपट दिहेऊ॥
उठ्यो जलंधर माया केरा। वृन्दहि तब सुख भयो घनेरा॥

मायाधीश चरण शिर नाई। गई तुरत निज मिलै लवाई॥
काढ़ि अशन कछु ताहि खवाई। पौढ़े दोउ परयंक बिछाई॥
कीन बिहार छूट ब्रत तासू। भयो तेजहत दनुज उदासू॥
तब शिव समरजलंधरमार्‌यो। शिरभुज जहँतृन्दातहँडार्‌यो॥
मायाका पति गयो बिलाई। मर्म जानि तब हरिढिगआई॥

घरीछंद॥ बिष्णुचीर। देखिधीर। क्रोधकीसि। शापदीसि॥ वरवैछंद॥छल्योमोहितुमधरिकैयतीस्वरूप। होउमनुजअबजाय चराचरभूप॥ तहांमोरपतिहोईप्रबलसुरारि। यहीरूपधरिहरि हैनारितुम्हारि॥

दो० अस कहि चिता सवाँरिबर बैठिनरी पतिसंग।
तासु भस्मलै रमापति लपटाई निज अंग॥

सो० इहां शक्र सुखपाइसुरगणमुनिदिगपालमिलि।
उमा नाथ पहँ आइ लागेसब अस्तुति करन॥

तोटकछंद॥ प्रणमामिभवंभवभयशमनं। करुणामृतसिंधुक लिंदमनं॥ निरपुणयगुणाश्रमकंकरणं। जयश्रीशिवसंकटकेहरणं अबिकल्पकलानिधिवेदबिभुं। सर्बज्ञसदापरमीशप्रभुं॥ चिदका शकनित्यनिरावरणं। जयश्रीशिवसंकटकेहरणं। निरवद्यनिराश्र मसावपुखं। अवलाखँडपारअजाअदुखं॥ सतशीलगुणाकरकंज रणं। जयश्रीशिवसंकटकेहरणं॥ अतुलितबलबीर्यबिरक्तबरं। गुणज्ञानबिरागोतीतपरं॥ मदमोहनिशादरणंतरणं।जयश्रीशिव संकटकेहरणं॥ हरिकुंदकपूरसमासुतणं। सबभस्मबिभूषितभूरि गणं। छविकेंद्रपकोटिदेबाकरणं। जयश्रीशिवसंकटकेहरणं॥मृदु मौलिजटामधिगंगबसै। बरबालछपाकरभाललसै॥त्रयअंबकशूल करंधरणं।जयश्रीशिवसंकटकेहरणं॥उरमुंडश्रकाम्बरब्यालचूमं। श्रुतिकुंडललोलकपोलधमं॥ शुकघ्रानशरीरनमिंदुब्रणं। जयश्री शिवसंकटकेहरणं॥ डमरूकरकंठभुजंगछजै। चरणाम्बुजचिंतत दुःखभजै॥भवआरणतारणकंकरण। जयश्रीशिवसंकटकेहरणं॥

सुरसंतकबंधजगोपलनं । भखभाववनागहरिंदलनं ॥ भुजदंड प्रचण्ड छयंकरणं । जयश्रीशिव संकटके हरणं ॥ वृषभव्वर बाहनभूतिमिसं। गिरिनंदिनिराजतबामदिशं॥प्रणपालकघालक दुष्टजनं। जयश्रीशिवसंकटकेहरणं॥ नहिंध्यावतजीवतुम्हैंजबलौं। दुखपावतजावतहैंतबलौं ॥ जगओढ़रदानिउमारमणं। जयश्री शिवसंकटकेहरणं ॥ रघुनाथकहैसुनिक्रोधगयो । तुरतैगौरीश प्रसन्नभयो॥मिदरुद्रएकादशजोपिपढ़ै। दुखदैन्यनशैसुखभूरिबढ़ै॥ यहि बिधिबिनय कीन्ह असुरारी। तब तिनते बोले त्रिपुरारी ॥ सुनहु सकल सुर बचनहमारा। बिष्णु कृपामैं निशिचरमारा ॥ चलौ चली अब तिनके पासा। आयेचलि जहँ रमा निवासा ॥ अमरणयती रूप प्रभु देखी। पृथक् २ करिबिनय बिशेषी ॥ रहे अधोमुख तब भगवाना। मनहिं माहिंदेवन सनमाना ॥ हरिगतिदेखि सुरन दुखपायो। तब महेशबिधि युक्तिउपायो ॥ बोलि उमा पद्मा ब्रह्मानी। कह्यो प्रसन्न करहुहरिजानी ॥

सो० प्रभु अनुशासन मानि गईं तिहूं भगवानपहँ।
लैआरतिनिजपानि कीन्हों हरि गुणगानकछु ॥

पुनि भारती भस्म जललयऊ। धर्‌यो महीतरु धात्री भयऊ ॥ देखि भवानी वैसे ठाना। यतीबेल उपजी जग जाना ॥ कीन इन्दिरा सोइ उपावा। अजगन्धा तुलसी तरु पावा ॥ शीतल छाहँ सुगंध लहीजब। ह्वै प्रसन्नहरि खोले दृगतब ॥ वृन्दा तनु तुलसी भै आई। हर्षि बिष्णु निज शीशचढ़ाई ॥ अधमनिशाचरिपतिव्रतकीन्हा। हरिछलितेहि उत्तमपददीन्हा ॥ देखि देव छबि हने निशाना। तुलसिहिअतुल पूज्यअनुमाना॥ बिष्णुप्रियाकलिकलुषनिकंदनि। जयजयजयतुलसीजगबंदनि॥ तब प्रभु सब देवन ते कहेऊ। परमप्रीति वृन्दावश भयऊ ॥ तेहि तनु पाय तुलसिकररूपा। गयो बिरह सुख भयोअनूपा ॥ लक्ष्मीबास हृदय मम अहई। तुलसी सदा शीश पर रहई ॥

जो मन क्रमयहि सेवनकरिहैं। सो कृतांतपुर पावन धरिहैं॥
दलकरिप्रीतिजोममशिरराखी। तुलसीमिश्रित भोजनचाखी॥
दीप दान देई जो कोई। कोटि यज्ञ फल तिनकाहोई॥
कंठ लग्न जो तुलसी धारी। सो सबकाल शुद्ध बिनबारी॥
तस्य दरश मे जानहु मेरो। करौं सदा हौं जन उर डेरो॥
तुलसी धारि करी शुभ कर्मा। बढ़ी सोअधिककोटि गुणधर्मा॥
नर वा नारि जो मम ब्रतधारी। सोतुलसीस्त्रक करिअधिकारी॥
तुलसीसदा नाम मम ध्यावै। तासु पुण्य कहि कापै जावै॥

दो० तुलसी धारक मात्र जो होई भक्ति बिहीन।
सोऊ पूज्यहै बिप्रकहँ और कहा नरदीन॥

कुं० तिलकदाम धरि देखिकै करीजो निंदा तासु।
सो मलेक्ष जाता असक त्यागी संगति तासु॥
त्यागी संगति तासु दोष नत लागी भारी।
ज्यों हरहट के संग जाइ कपिला गो मारी॥
मारीगोजिमिजाततिमि यमगणदेहैंदुखदिलक।
प्रमुदितह्वैजोसुनैसोउ जान्योदुष्टनकोतिलक॥

दो० तुलसी श्रम धारेबिना करी जो भोजन अन्न।
परम अपावनि पाथसो लह्योन जनु नर तन्न॥
जेहि आदर मैं देउँ जग तेहि निदरै असकौन।
भूप बचन परिहरि प्रजा बसै किसो सुख भौन।
श्रीमुख बानी शीशधरि गे सब निज निजथान॥
कार्तिक महातम की कथा यहमैं कीन बखान।

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथ दासरामसनेहीकृतश्रीतुलसीमाहात्म्यवर्णनोनाम त्रयःत्रिंशोऽध्यायः ३३॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु गणप गिरा सुखदानि।

बरणौं भारत की कथा कछुक वृतान्त बखानि ॥
सुनि शौनक बोले मृदुबानी। राय युधिष्ठिर मखजब ठानी॥
तामें अचरज भयो जुकौनू। मोकहँ नाथ सुनावो तौनू॥
करहंसछंद॥ हँसिकह्योसूत। जबधर्मपूत॥
कृतकरणलाग। दैबलिबिभाग॥
तबसब मिलिबोले असि बानी। पूरणमखभयकेहिबिधिजानी॥
घंट एक तब कृष्ण बँधायो। भोजनकहँद्विजबिपुलबोलायो॥
जेंइबिप्र खरिका जब लयऊ। घंटबिषे कछु शब्द न भयऊ॥
बोले कृष्ण प्रणत हितकारी। यज्ञहीन भै भूप तुम्हारी॥
ताही समय नकुल इक आवा। लोट्यौ तहँजहँद्विजनअँचावा॥
भयो न सर्बबपुखहरि तासू। तबतौ मनकरि लीन उदासू॥
बहुरि पुकारि सभा महँ कहई। मिथ्या यज्ञ भूप तव अहई॥
बिप्र एक सेतुवा मख कीन्ही। तेहिसमअपरयज्ञनहिंचीन्ही॥
दो० सुनत सभाके लोगसब नकुलै निकट बोलाय।
पूछ्यो द्विज मखकिमिकरीसोअबकहौ बुझाय॥
तनतब अचरज रूप लखाई। सुनि न्यौरा बोला हरषाई॥
सेतुवा यज्ञ भई जेहि रीती। कहौं सुनो नृप सुनिकरप्रीती॥
द्विजएक कुरुक्षेत्र महँरहई। नाम शिलोचनतेहिसब कहई॥
पूत पतोहू अपना नारी। चरिहुन का हरिभक्तिपियारी॥
शीला की वृति करि तन पोखै। प्रथमै साधु बिप्रकहँ तोखै॥
यहिबिधि करत गयेबहुकाला। एकबार तहँपर्‌यो दुकाला॥
पशु पक्षी सब भये दुखारी। लंघन करैं निकर नरनारी॥
कठिन बिप्रहू को अति जावै। बिना न जाइ अन्न नहिं पावै॥
चुनि चुनि धरत मासयुगगयऊ। तीन पावतब यकठे भयऊ॥
सोइ भुजाइ सेतुवा बनवायो। तामें चारिउ भाग लगायो॥
धर्म बैष्णव रूप बनाई। आये तुरत जहाँ द्विजराई॥
देखि शिलोचन पदशिर नायो। आदर करि आसन बैठायो॥

चरण धोय सेतुवा धरे आगे। हितते धर्म खान तब लागे॥
आपन भाग जेइँ जब लीन्हा। क्षुधानमिटीद्विजहुंनिजदीन्हा॥
सोऊपाय पर त्रिपितनभयऊ। तबद्विजशीशनाइनिज लयऊ॥
चतुर नारि पतिकी गतिजानी। बोलीब चन धर्मनय सानी॥
हेपति भाग मोरलै दीजै। क्षुधित न जाइ बात सो कीजै॥

दो० सांची प्रीति पिछानि कै सोऊ भाग द्विजदीन।
भयो न पूरण सन्त लखि बोला पुत्र प्रबीन॥

रोलाछंद॥ अहोपिताअबभागमोरलैसंतैदेहू। करहुपरणयह पूरजाइचहतनधनगेहू॥ सुतयद्यपितुमबड़ेतदपिमोहिं पालनयो गू। भयोंवृद्धमैंतुम्हैंअबैकरनासुखभोगू॥ तातेपोषहुदेहुजियौब हुबर्षलगेजेहि। धर्मबिनाजोजियेपिताजगमृतकजानितेहि॥ सधैधर्मतनगयेताहिजीवतपहिचानो। असकहिदीन्होंभागभक्त खायेनअघानो॥ पुत्रबधूजियजानिदीननिजभागमगनहोइ। भयोतृप्ततबसंत बचनबोल्यो ऐसेसोइ॥ हेद्विजमैंहौं धर्मलेन आयों तवअन्ता। देखि गयो हियहारि नहींकोउ तुमसम संता॥ अब तजिकै मृतलोकबसौं चलिहरि पुरभाई। घटीनतुम्हरीपुण्य औरदिनदिन अधिकाई॥ ताहीसमय बिवानदेवगणतहँलैआये। जयजयकहिसुरसुमनसुमन द्विजपरबरषाये॥ लीन्होंचहुनचढ़ाय जायहरिपुरमहँराख्यो। देख्योधर्मप्रतापकिहे ऐसाफलचाख्यो॥ जितअँचवारहैअतिथि तहांमैंनिकस्योंधाई। भयोंअर्द्धतनुस्वर्णसर्व जलरहानराई॥गीतिकाछंद॥ हमरीउमिरिमहँऔरदूसरियज्ञवैसी नाभई। जहँहौंलह्यौं फलअक्षतआधीदेह हरिकीह्वैगई॥ तबते फिरैंबहुतीर्थ यज्ञनसर्बकाहू नाकियो। इहनौयहीउरधारिलोट्यौं मेटि नहिंखोटपन दियो॥

दो० सुनि न्यौराके बचन नृप शोच कीन्ह मनमाहिं।
पूछिनि प्रभु ते यज्ञ यह पूरण भय कत नाहिं॥

सुनत कृष्ण बोले हरषाई। यहौ भेद मैं कहों बुझाई॥

यहिसमाज वैष्णव नहिंआयो। ऋषिसमूहमिलिजहँतहँखायो॥
जो तुम कह्यो भक्त ये नाहीं। हैं परिजात गर्भ इन माहीं॥
कुल विद्या महत्व छबिज्वानी। पांच काँट ये भक्त के जानी॥
इन ते भक्ति न नेरे आवत। अतिसुकुमारि देखिडरपावत॥
तेहिते निरअभिमान जो होई। पूरण चहौ जेवाँवो सोई॥
ऐसे भक्त कहां हम पाई। तव पुर हों तौ देहु बताई॥
बालमीकि सुपचा बड़ साधू। लावहु जाइ सहित अहलाधू॥
सुनि प्रभुबचन युधिष्ठिर धाये। करि सनमान भवन लै आये॥
परसे अशन द्रौपदी नाना। सो सब भक्त एकमहँ साना॥
पंचाली लखि कृत अनुमानै। सूपच रस स्वादै का जानै॥
तेहि जेवँत पर घंटा बाजा। एकै बार खुशी भा राजा॥
बासुदेव मन बिस्मय आवा। बारक बार शब्द सुनि पावा॥
ग्रास ग्रास पर चहिये बाजा। अस बिचारि बोले यदुराजा॥
सभालोगसब सत्यहि भाख्यो। यहिअवसरदुरावजनिराख्यो॥
क्षोभकीन्ह केहि हृदय बिशेषी। बड़ि मान्यता भक्त कै देखी॥
निज उर बात द्रौपदी कहेउ। सुनिहरिउचहुदोषबड़ गहेउ॥
चल दल द्रोन पुरीष ते होई। सुरनर मुनि पूजत सब कोई॥
तुलसी स्वच्छ चहै तहँ जामै। तिमि ममजनपावन सबठामै॥
बरत बांझ हरि बासर अहई। नदीबाँझ सुरसरि श्रुति कहई॥
देह बाँझ जिमि रमा निवासा। बरण बाँझ तिमि मेरे दासा॥
अच्युतकुल निजजन्म निरीक्षा। मात्रयोनि जनु लीनपरीक्षा॥
ताते ऐसी कबहुं न कीजै। चलौ भक्त ते पूछै लीजै॥
सबमिलि आइ कही असिबानी। डारेउक्यों एकहि महँसानी॥
बोले भक्त भोग भगवाना। लागिगयो सबभयो समाना॥
पावत परत स्वाद अनुमानी। यहि ते मैं सब डारे सानी॥
सुनिजन बचन हर्ष उर छयऊ। भक्त जेइँ जब अँचवत भयऊ॥
नकुल जाय परसाद सो पावा। सकल शरीर स्वर्णकर भावा॥

सकल समाज देखि अस कहई। अमितप्रभाव भक्तिकरअहई॥
द्वादश कोटि रहे द्विज भूरी। सुपच भक्त ते भै मख पूरी॥
बहुमुनि थे पम्पा शर कच्छा। शवरी पद रजते भा स्वच्छा॥
कुम्भजव्यास आदि मुनिनाना। हरिभजिकोनहिं भयोमहाना॥
तब सुजात रिपु पूछै लीन्हा। केहिगुणइनतुमकहँबशकीन्हा॥
सुनहु धर्मनन्दनकरि नेहा। मोहिंजनसम नहिंप्रियनिजदेहा॥
तव पुर परम भक्त यह क्षेमा। सुनहु तासु बरणौं जप नेमा॥

गीतिकाछन्द॥ जपनेम संयमकरहिं ध्यानअमान सदारहा वही। समशील सत सन्तोष दया बिचारि क्षमा गहावही॥ छलहीन इन्द्रीजीत उरवैराग मदमोहैं तजै। गत काम क्रोधरु लोभ भयमोहिं छोड़ि आनै नहिं भजै॥

दो० ममगुणगावतपुलकितनममजनसों अतिप्रीति।
तेहिते मैं यहिबश रहत अभ्यासुग की रीति॥
यहिप्रकार रघुनाथ हरि भाष्यो भक्त प्रभाव।
सुनत युधिष्ठिर के भयो तब भक्तन में भाव॥

सो० पुनि बोले कर जोरि बरणाश्रम के धर्म प्रभु।
सुननेकी रुचि मोरि भक्तिसहित सो बरणिये॥

बीरछंद॥ सुनिप्रश्न। बदकृष्ण॥ द्विजधर्म। करमर्म॥

दो० सन्ध्या मज्जन होम जप श्रुति पठनार्च्चन देव।
क्षमा तोष द्विज धर्म यह अभ्यागत की सेव॥
क्षमातेज बलअचलकलि अतिउदारद्विजदास।
ये गुण क्षत्री केर फुर उर मेरो विश्वास॥
अस्तिक बुद्धि बिनीत व्रत दानेद्यम आरम्भ।
ये लक्षण बर बैश्य के बिप्र भक्त निरदम्भ॥
तिहूं बरण की सेव करि जो पावै सो लेइ।
सत सन्तोषी कपट बिन शूद्र धर्म है येइ॥
मिथ्याबादअशौचअरि नास्तिक कुटिलकठोर।

ये लक्षण नर नीच के कामी क्रोधी चोर॥
सत्य क्षमा परस्वार्थ रत गद मदमार कुकर्म।
तृष्णा बिन चहुं बरण के ये साधारण धर्म॥
अपने अपने धर्मकरि अन्त अमरपुर जाइ।
बरण भ्रष्ट भोगैनरक अबसुनु आश्रम राइ॥
ब्राह्मणक्षत्री वैश्य इन तिनहुनकी बिधि एक।
गर्भाधानादिक सकल संस्कार कर नेक॥
कु० जनौ भये गुरु पास रहि पढ़ै वेद पद सेइ।
दंड कमण्डल मृग चरम माल मेखला लेइ॥
माल मेखला लेइ केश नख बिन्दुन त्यागै।
सन्ध्योपासन शौच काल तीनों अनुरागै॥
रागैनहिंजगमाहिंलघु अशनकरैदृढ़ आसनौ।
ब्रह्मचर्य्य के धर्मये मम सम मातै गुर जनौ॥
ब्रह्मलोक जो चहै तौ रहै यही पथ माहिं।
कामी कामिनि केर सँग भूलेहु ठानै नाहिं॥
भूलेहु ठानै नाहिं चहै जो होन सकामा।
तौ श्रुतिपढ़ घर आइ करै युवती अरु धामा॥
धाम माँझ जपदान मख करत रहै श्रुतिधर्म।
यज्ञ करावन दतग्रहण वेद पढ़ावैं ब्रह्म॥
परये तीनों आइइमि जिमि पावकको नीर।
ब्रह्मतेजनाहिं रहत है तेहित्यागतमतिधीर॥
तेहित्यागतमतिधीर सिलोकरितननिरबाहै।
मम सुमिरण ममध्यान अन्तमेरो पदलाहै॥
लाहै क्षत्री यह करै पालन सबको बरि।
रण सन्मुख मरि जाय नहिं घरघरउपरि॥
गृह बासी को धर्म तिन करै पांच मखमेव।
प्रथमपाठकरिऋषिजजपबहुरिहोमकरिदेव॥

बहुरि होमकरि देव भूतबलिश्राद्ध ते पीतर।
अन्ननीर ते अतिथि कहां शत्रू कहँ मीतर॥
मित्रमानि सब काहु समुझिकाहुइ न दुखावै।
मिथ्या जानै जगत कुटुम्ब पंथी ठहरावै॥
मिलेन मुदगत शोच रहैपाहुन सम तासी।
करै सदाममभजन तरै सो बसि गृहबासी॥
जब जाको बिपदापरै बैश्य बिरतसो लेइ।
जबमिटिजावै आपदा तबआपनिगहिलेइ॥
तब आपनि गहिलेइ एकसुत भेव न जानै।
चहौ रहै घरमाहिं मुक्ति अस ग्रेहीपावै॥
पावै सोइतम द्वार होय जो जग आशक्ता।
मैंमैं करि कुल सजै भजै नहिं मेरो भक्ता॥
भक्ताकेगुणनाहिंआहिंउरखललक्षणसब।
अन्तसमयपछितातजातकिरतान्ततीरजब॥
यहिबिधिबरषपचासरहितबजावैबनमाहिं।
ऋतुऋतुकोतप करैतहँ कचनखनाखैनाहिं॥
कचनखनाखैनाहिं निरसह्वै भोगबिसारै।
कन्दमूल फलखाइ पौष प्राणामय धारै॥
धारैबलकलबसनरसन हितआवै ऋधिसिधि।
छुवै न बानप्रस्थ केर लक्षण है यहि बिधि॥
बनबसि होइ पवित्र मन तब लेवै संन्यास।
दण्ड कमण्डल धारिकै करै एकांत निवास॥
करै एकांत निवास क्षुधा हित पुर में आवै।
द्विज घर चुटकीसात मांगिसरिसरतट जावै॥
जाइ करै तहँपाक प्रथम कछु भाग निकारै।
की देवै लखिपशुहि कितौत्यहिजलमा डारै॥
डारै पगमग देखि करै ममसुमिरन शुचितन।

यह लक्षण संन्यास नहीं तौ भेष बहत बन ॥
दो० परम धरम संन्यास करि लहै परमपद हंस।
परदश बिधिके बिप्रलखि लेइ तीन करअंस ॥
कुं० तत्वज्ञान जबहोत तब छूटिजात सब मान।
यदपिहृदयअतिबुधि तदपि बरतैबालसमान ॥
बरतै बाल समान ध्यान मेरो मन माहीं।
क्षुधा तृषा तपशीत तिन्हैं कछु व्यापै नाहीं ॥
नहिंमद माया मोह भय रर्ङ्कार दृढ़ मत्व।
जीवत मृतक समान यह परमहंस करतत्व ॥
दो० परपददायकधर्म यह परमहंस पदश्रेष्ट।
जोये लक्षण होइँ न तौ भयो जानिये भ्रष्ट ॥
हे नृपजे मम भक्त हैं रहित बासना चित्त।
तदपि करैं शुभकर्मकिं जगकल्याण निमित्त ॥
जैसे सबिताके बिषे अंधकार नहिं लेश।
तदपिकरतपरकाश जगपर सुखहितउपदेश ॥
कह नृप भक्तन के शुभकर्मा। बदहु देव सर्बोपरि धर्मा ॥
सुनि गिरिधरबोलेलखि प्रीती। सुनहु भूप भक्तन की रीती ॥
मेरी कथा सुनै अरु कहई। सहित सनेह नाम ममगहई ॥
पूजा में अति निष्ठा धारै। बिबिधिभांतिअस्तुतिबिस्तारै ॥
बंदन करै प्रदक्षिण देई। साष्टांग चरणामृत लेई ॥
सब भूतन में मोको जानै। मम जनतेहि मेरो तन मानै ॥
मेरे हेतु करै सो करै। मोबिन जौन ताहि परिहरै ॥
मेरे हेतु अरथ सब त्यागै। आठहु भोगन ते बैरागै ॥
योगयज्ञ जप तप ब्रतदाना। शयनासन भोजन जलपाना ॥
इत्यादिक सबममहित करहीं। जाते अंतर सो परिहरहीं ॥
सदा आपको मोहिं निवेदै। प्रेम शस्त्रते ग्रन्थिहि छेदै ॥
मुक्ति भुक्ति की करै न आसा। तिनके हृदय करौं मैं बासा ॥

ऐसी जब मम भक्तिहि लह्यऊ। तब अवशेष न कछुरहिगयऊ॥
मेरी भक्ति हृदय ज्यहि नाहीं। ते सब धर्म अधर्म कराहीं॥
भक्ति सुतंत्र चारिफल दाता। सकलजीवसुखप्रदजिमिमाता॥
बिरति बिबेक ज्ञान बिज्ञाना। होत तुरत त्यहिकरतसुजाना॥
सोइ शुचि साधु सुघरबर सोई। यस्यभक्ति ममकिञ्चित होई॥
जिन मम भक्तिहृदय महँधारी। सब सुधर्म के ते अधिकारी॥

दो० बरणाश्रम करमान यदि तबतक श्रुतिकरदास।
बरणाश्रम ते त्यक्तजे श्रुति ऊपर त्यहिबास॥
ज्यहिकरि होतप्रसन्न मैं बिनहींश्रम अतिहाल।
सेा भाष्यो निज भक्ति सुनि पुनिबोलेमहिपाल॥
हे प्रभु जो सब धर्ममय हैं तव भक्त अखेद।
कर्म उपासन ज्ञानकत किये त्रिकांडी वेद॥

एकैकस सिद्धान्त न राखा। सेाऊ भेद सुनिये प्रभु भाखा॥
जाको यश देख्यो अधिकारी। त्यहि हित तैसी बात बिचारी॥
जिन जगजालझूंठ करिजान्यो। ब्रह्मलोक तकदुखअनुमान्यो॥
बहुरिहु ताके उद्यम त्याग्यो।बिधिनिषेधबिनम्वहिं अनुराग्यो॥
तिनको ज्ञान योग अधिकारा। अस्थिर ह्वै ममकरैं बिचारा॥
अरु जिनके समता दृढ़ नाहीं। राजत कछु प्रवृत्ति के माहीं॥
परम सगुण सुनिकै सुख मानै। मेरो भजन सत्य करि जानै॥
तिनकहँ भक्ति योग सुखकारी। तरै आपु तारै संसारी॥
अरुजे बिषयन के आधीना। तिनके उद्यममें लवलीना॥
कथा सुननको नहिं सवकासा। नहिंमम भजनकेर अभ्यासा॥
तिनको कर्म योग सुखदाई। गहैं न भूलि निषेधै भाई॥
जोशुभ कर्म तजै असग्रेही। सो सम श्वपच न छुइयेतेही॥
तनमें जोर न घरमें दाना। नृपसरिकरिकिलहैकल्याना॥
जेततपर तिनहुनमा होहीं। ते अतिशय उत्तमप्रियमोहीं॥
फल इच्छा सोसकल मिटावै। अन्तसमय ममलोकसिधावै॥

दो० बहुत जन्म जप योग तप धर्म ज्ञानरत होइ।
होय हृदय जब शुद्ध तब भक्तिलहैममसोइ॥
करैं कृपा मम सन्त जब तब नहिं दूजै ठौर।
गुरु सो मेरो रूप है सर्ब देव शिरमौर॥
दश क्रममें ब्रतबंध में तीरथ होम सराध।
षटस्थान गुरुबिप्र है दिक्षागुरु ममसाध॥
सुनिगिरिधरकेबचनबर हरष्यो भूपसुजान।
एकादश असकन्ध मत यहमें कीन बखान॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतयुधिष्ठिरयज्ञबर्णाश्रमधर्महरिभक्तिसाधनबर्णनोनामचतुस्त्रिंशोऽध्यायः॥ ३४॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु गणप गिरा सुखदानि।
स्वसन समुच्चय आदिबहु सतमत कहौं बखानि॥
सो० पुनि शौनक शिरनाइ बोले द्विज पद नाइ शिर।
नाथ कहौ समुझाइ सतसंगति महिमा कछुक॥
सुनत सूत बोले सुखपाई। सतसंगतिसम कछुनहिंभाई॥
सौसहस्र संवत तप करही। अयुतयज्ञनितउठि अनुसरही॥
चंद्रायण ब्रत आदि अपारा। करैयोग जपदान निहारा॥
जहँ लगहैं तीरथ फिरि आवै। क्षण सतसंगसरिस नहिंपावै॥
सात स्वर्ग सुख मोक्षहु केरा। धरै तुलापर एकहि बेरा॥
सत संगति लवभरि करै कोई। तेहिसम सुख दूसरनहिंहोई॥
निःसंशय जानहु यहभाई। सत्य महातम राम दोहाई॥
गंगापाप ताप शशि हरहीं। दारिद दूरि कल्पतरु करहीं॥
साधु संगमा जो मनलावै। ततकालै तिहुं ताप नशावै॥
दोइ घरी यक घरी सोहाई। हरिके जन तिष्ठैं जहँ आई॥
तीरथ सकल तहांई जानौ। मही तपोबन सोइ पिछानो॥

दो० संतनकी बाणी सुनै प्रेम सहित जो कोइ ।
गंगादिकसबतीर्थफल बिन अस्नानहिंहोइ ॥

अन्त कालहू जाके पासा । भक्त अकामी करै निवासा ॥
ब्रह्महत्या मय पापी होई । भगवत धाम पाइहैं सोई ॥
सत संगति भवनिधि महनावा । चढ़ैसो पारहोइ सतिभावा ॥
साधु संगते शीतल होई । जन्म मरण क्षणमेंजाइ खोई ॥
साधु संगते पातक जावै । ज्यों पावक ते शीत नशावै ॥
सतसंगति गति पलटै ऐसे । पारसते लोहाहरि जैसे ॥
अधमहु साधु संग जो आवै । पावन होइ वेद असगावै ॥
ज्यों अपबित्र नीर मधु संगा । गंग मिलत पावन ह्वै गंगा ॥
तिलसँग फूल फुलेल कहायो । साँभरि भयो खेत जो आयो ॥
नीर क्षीरकी संगति पाई । बर्ण मिट्यो सोइ मोलबिकाई ॥
वृक्ष अनेक मांतिके कोई । मलया गिरिसंग चंदन होई ॥
बेनकरील होत नहिं जानो । सारहीन हत भाग्य पिछानो ॥
ऐसे जे नर भ्रष्ट अभागी । बैठे साधुन ढिग अनुरागी ॥
संगति फल लागत नहिंकैसे । नागबेलि बिच रमसर जैसे ॥
जिन के भक्तिबीज उर छायो । सत संगति जल जबहींपायो ॥
ऊगत तुरत सुनहु मुनि तामें । अमी वृष्टि ते नभ नहिं जामें ॥
उदय दिनेश सबहिं लखिपरहीं । पै उलूक गीदर निशि चरहीं ॥
ताते सत संगति का करहीं । जो नरबचन हृदय नहिंधरहीं ॥
जिनजिनबचन सन्तकरिमाना । तिन तिनका ह्वैगा कल्याना ॥
सो सब बरणि कौन पै जाहीं । तदपि कछुकबरणौंतुम पाहीं ॥
अजामील शठ पातक धामा । साधुसंग मिलिलहेसिअरामा ॥
बालमीकि मुनि भे मुनिराई । सप्त ऋषिन की संगति पाई ॥
द्विज दुन्दुभी प्रेत यक भयऊ । लहि गोकरण संगतरिगयऊ ॥

दो० महादेव का संग करि कीर अंड सुनिभेव ।
चेतन ह्वै पुनि उड़िगयो भयो आइ शुकदेव ॥

ब्यास संग नारद का कीन्हा । तपनि मिटीभे शीतल चीन्हा ॥
धौमर संग चिमन का पायो । झषनसहितसुरलोक सिधायो ॥
ब्यास पुत्र के संग समाजा । भे भवपार परीक्षित राजा ॥
पांच हजार यज्ञ सुत जवने । नारद संग जाइ बन गवने ॥
बिप्र एक गृह दुख बस दीना । भिक्षाहेतु जान तन क्षीना ॥
बैश्य एक निकस्यो मद भरेऊ । रथका धकालाग द्विजगिरेऊ ॥
मरनलाग तापर करि क्रोधा । मातलिदेन चले तब बोधा ॥
तुरतै धरेउ सियार शरीरा । आये चलि ब्राह्मण के तीरा ॥
बोले बिप्र शोक परि हरहू । नेक बिचार हृदय महँ करहू ॥
दुख सुख हानि लाभ संयोगा । कर्मन ते पावत सब लोगा ॥
जो जस करै सो तस फलपावै । आनहिं बिरथा दोष लगावै ॥
यद्यपि हम पशु योनि मँझारी । ऐसा शोच करहिं नहिं भारी ॥
करगथ हीन न संशय ठानो । जो कछु होइ भावई मानो ॥
यद्यपि हम कछु धर्म न करहीं । तद्यपि प्राणघातनहिं चरहीं ॥
जीव बधे बड़ पातक जाना । ताते बिप्र देहु जनि प्राना ॥
देखौ तुम बिचारि मनमाहीं । नरतन सम तन दूसर नाहीं ॥
जासु बिवश सचराचर सोहा । नर्क स्वर्ग अपबर्ग अरोहा ॥
तात हरि सुमिरन कर लेहू । कोह कुबुद्धि याहि तजिदेहू ॥
तन छूटै पर बड़ दुखपावै । नहिं जानी केहियोनिसमावै ॥
ब्राह्मण तनते उत्तम पायो । जगतसुखनलगिबादिगँवायो ॥
खानपानहित द्विजनहिं आयो । तप के कारण ईश पठायो ॥

दो० सुनि जंबुकके बचन द्विज करनलग्यो तपजाइ ।
मिटिगेसब दुखअन्तमहँ बस्यो स्वर्गसुखपाइ ॥

अस सतसंग अहै मुनि राई । गई तुरत द्विज ब्याधिनशाई ॥
अवरसुनहुबिधिसुत यकभयऊ । जाजुलऋषितपहितबनगयऊ॥
कीन्ह तपस्या तन सुधिटारी । खगन कीन घर जटा मँझारी ॥
अंडादै पकि फूटि उड़ाने । शिर ते निकसत जाजुलजाने ॥

तब ऋषिके उपज्योअभिमाना। मोहिं समानतपकियोनआना॥
तुरत भई नभ बाणीटेरो। तुलाधार सम तप नहिं तेरो॥
समता भक्ति जासु उर आई। रहत बनारस देखो जाई॥
सुनिजाजुलऋषि तुरतसिधाये। तुलाधार बनिया घरआये॥
देखि कीन सनमान अपारा। चरण धोइ आसन बैठारा॥
पूंछ्योक्यहि हित आयहु आजू। आज्ञा होइ करौं सोइ काजू॥
कहऋषियशतुम्हारसुनिमोहीं। भा सुख अब कछु पूंछबतोहीं॥
मैं बन तप बहु काल कमावा। तुम्हरीसमसरिनासुनिपावा॥
कौन धर्म तुम साधत अहऊ। सो हमते किरपा करिकहऊ॥
तुलाधार कह रामहिं ध्यावों। रामहिं के गुण मुखते गावों॥
काय बचन मन संतहि सेवों। बिप्र ज्यँवाइ दान बहु देवों॥
ताकर फल तनको नहिं चाहों। अरपों हरिहि सुमारग गाहों॥
चारिखानि जहँ लगि तनधारी। सबमहँ ब्यापक एक मुरारी॥
यह बिचारि सबको शिरनावों। ऊंच नीच नहिं मनमें लावों॥
दुखी दरिद्री होइ जो कोई। सेवों ताहि नरायण जोई॥
डांड़ी पकरि घाटि नहिं देहूं। झूठ न कहौं परांश न लेहूं॥
काहुहि शत्रु मित्र नहिं मानों। मैं मेरी तेरी नहिं आनों॥
आय हर्ष न गये बिषादा। दुखसुखसमनहिं करौंबिवादा॥
गोमन के मारग नहिं बहऊं। पांचहु बिषय प्रहारे अहऊं॥
करि हरि मीन कुरंग पतंगा। एक एक बस बिसरत अंगा॥
सबको बससो किमि सुखपावै। त्यहिते मोमन दूर रहावै॥
काहुइ दुख देवों नहिं पावों। राम नाम निशिबासर ध्यावों॥
याते शांति बसी उर आई। दुरमति भ्रम सब गयोनशाई॥
निजदुखनिजगुणकहा नचाही। तुम पूछेउ मैं बरणयों ताही॥
कहमुनिशांतिकवन बिधिआवै। सुनहु निगमयहि भांतिबतावै॥

दो० सात भूमिको ज्ञानकी तिन बिन होइ न ज्ञान।
ज्ञानबिनानहिंशांतिसुख सोअब करौं बखान॥

कुकुभाछंद। प्रथमभूमिकाहै शुभइच्छादूसरिजानुबिचारै। नित्यवस्तुहिरदयलैराखै औरअनित्यनिवारै॥तीसरितनमानसा कहावैतनमनइन्द्रीरोकै। चौथीसत्यायुतसबजगमेंआतमएकबि लोकै॥ पंचमअंशशक्तनिजरूपैतामेंनिश्चयआनै। छठईनावपदा रथतेरेहोतबुद्धिलगुहानै॥ सतईंतुरीभूमिकाजानोमैंत्वैंजहांनरह ई। सप्तभूमिकायेकहवावैंबिनगुरुनाकोइलहई॥

ये सातौं साधन बनिआवै। उपजै ज्ञान शांति तब पावै॥
जबते शांति बसै उर आई। काम क्रोध मद जाहिं नशाई॥
उर बासना रहै नहिं कोई। भय कलेश संशय जायँ खोई॥
समचित रंक राव बड़ छोटा। समचितघरबन सज्जन खोटा॥
समचित शीत उष्ण बरषाना। कंचन मृतिका नारि पषाना॥
समचित मातु बन्धु सुत दारा। सम अरि मित्रहु अपन परारा॥
ब्रह्मानन्द मगन नित रहई। जीवन मुक्त सोई नरअहई॥
प्रमहंसी यह ज्ञान कहावत। राम कृपाते कोइ कोइ पावत॥
अति दुस्तर मारग यह भाई। बरणत सुलभ करत कठिनाई॥
ताते जौन चतुर नर अहई। तजि सब रामभक्ति यकगहई॥
ज्ञान बिराग आपुही आवै। गोसँग ज्यों घृत बच्छहु पावै॥
ताते मुनि तुमहूं अस करहू। ज्ञान भक्ति हिरदयमहँ धरहू॥

सो० जोकोइ भक्ति बिहाइ ज्ञानहेतु बहुश्रम करहिं।
मानहुं तजिसुरगाइ आकदुहैं पय लागि शठ॥

महारामायणेश्लोक॥

येकेवलाद्वैतमतानुरक्ताः श्रीराममूर्तिंविमलांविहाय॥ तेवैम दांधाहृदयेस्वमूर्तिं त्यक्त्वायजन्तिप्रतिबिम्बकुम्भं १ येरामभक्ति ममलांसुविहायरम्यां ज्ञानेरताःप्रतिदिनंपरिक्लिष्टमार्गे। आरांम हेन्द्रसुरभींपरिहृत्यमूर्खाअर्कंभजंतिसुभगंसुखदुग्धहेतुम् २॥

सो० ज्ञानते पर पद जाइ करै निरादर हरि चरण।
गिरैसो पुनि तमआइ प्रभुरक्षित नहिं जनकबहुं॥

भागवतेब्रह्मस्तुतिश्लोक ॥

येन्येरविन्दाक्षविमुक्तमानिनस्त्वय्यस्तभावादविशुद्धबुद्धयः ॥ आरुह्यकृच्छ्रेणपरंपदंततःपतंत्यधोनादृतयुष्मदंघ्रयः १ तथानतं माधवतावकाःक्वचित् भ्रश्यंतिमार्गात्त्वयिबद्धसौहृदाः ॥ त्वदाभि गुप्तविचरंतिनिर्भयाविनायकानीकपमूर्द्धसुप्रभो २ ॥

दो० नसोपुराणनसंहिता नसो काव्य इतिहास ।
नसोशास्त्रतीरथबरत जहां न हरिहरदास ॥
योग कुयोगमखादिगुण अवगुणज्ञानाज्ञान ।
बिद्याविद्याबिपतिसुखजहँ नरामरतिमान ॥
नारदादिसनकादिमुनि अजशंकर शुकदेव ।
लोमशभृगुसब ज्ञानबिधि भक्तिकरतहैंतेव ॥

सुनिजाजुलऋषि हरषतभयऊ। ज्ञानभक्ति हिरदयधरिलयऊ ॥ तुलाधार कहँ गुरुकरि जान्यो । जैसे गरुड़ भुशुंडिहि मान्यो ॥ बसी शांति उर भर्म नशायो । तब न भवानी को शिरनायो ॥ ऋषि सब जगमें ब्रह्म निहारो । अससतसंग प्रभाव अपारो ॥

दो० ब्रह्मजीव जगवृक्षहै सतसंगति फलसार ।
चरचा अमृत रसभरी बीजहु तासु मँझार ॥
बीजहु तासु मँझारहै इमि भाषत वेदाङ्ग ।
जोचाहै हरि दरश सो करै सदा सतसंग ॥
पियुषपताल न पाइये पियुष न चंद्रमँझार ।
पियुषमिलतसतसंगमें इमिकहैअमृतसार ॥
तातें जनरघुनाथनित करुसतसंगविचारि ।
प्रभुपदबढ़ैसनेहज्यहिजनममरणजायहारि ॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसत्यमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतजाजुलतुलाधारप्रसंगवर्णनो नामपंचत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३५ ॥

दो० सुमिरिरामसिय संतगुरु गणपगिरासुखदानि।
कहौंसमुद्रकी कथा कछु एकादश जानि॥

बहुरि सूत बोले हे ताता। जाजलि केरि कही मैं बाता॥
अपर सुनहु यक नहुष भुवारा। भयो इन्द्र पदलेन बिचारा॥
सौ यज्ञन करि चढ्यो बिमाना। इन्द्रलोक सूनो सुनि काना॥
वृत्रासुर मार्यो सुरईशा। त्यहि हत्यातें दुरेन दीशा॥
नहुष जाय सिंहासन बैठो। प्रभुता पाइ आइ मद पैठो॥
सहस बरष कीन्ह्यो सुखराई। इन्द्राणी ढिग कभू न आई॥
तब नृप तासों बचन सुनावा। अबम्वहिंइन्द्रजानुसतिभावा॥
सुनत शची अतिशय दुखपायो। ध्यायोगुरुहितुरत ढिगआयो॥
शीश नाइ निज बिपति सुनाई। दीनदेखि मुनि युक्ति बताई॥
नृपते तुम अस जाइ सुनावो। आवाहन चढ़ि मम ढिगआवो॥
शची आइ नरपति ते कह्यऊ। सुनतनहुषअतिशयसुखलह्यऊ॥
घटज आदि द्विज लीन लगाई। चढ़ि पालकी चल्यो हरषाई॥
कामातुर ह्वै कहेसि रिसाई। सर्प्प सर्प्प चलिये ऋषिराई॥
सुनि अगस्त्य तब दीन्होंशापा। होहु सर्प्प तुम अपने पापा॥

दो० त्यहिक्षणउतरि पर्योपद कर्योबचनपरकास।
शापदूरि कबहोइहै कहोजानि निज दास॥

कह अगस्त्य द्वापर के अन्ता। प्रगटी धर्म तनय यक सन्ता॥
सो आई तुम्हरे ढिग कबहीं। चरणछुवत निस्तरिहौ तबहीं॥
कौन भांति हम जानब ताही। कुंभज कह्यो चिह्न इकआही॥
पूछ्यो ज्ञान उतरु जब पायो। जानि तासु पद शीश धरायो॥
असकहि मुनिपुनि चलेसिधाई। भये सर्प्प नाहुष तब आई॥
गिरि कंदरा रहे बहु काला। हिरदै उठै अगिनिकीज्वाला॥
बड़े कष्टकरि द्वापर पायो। बनो बास पाण्डव जबआयो॥
द्रुपद स्वयम्बर रच्यो अनूपा। जुरेतहां दिशिदिशि के भूपा॥
तब खगपति ते कह्यो गोपाला। पंडन कहँ लावहु ततकाला॥

आज्ञा शिरधरि गरुड़ सिधाये। कुंती युत पांचौ जन लाये॥
सोइ गुरु तीर तिन्हैं बैठाई। कृष्ण पास आये खगराई॥
राजै तृषा लागि तहँ जानौं। भीमते कह्यो जाइ जलआनौं॥
देखि तड़ाग निकट चलिगयऊ। चापपाइअहि निकसतभयऊ॥
योजन एक कुनप बिकराला। उरग नहां जनु मूरति काला॥
पूंछ्यो पास भीम के आई। कहु जग महँ जीवतको भाई॥
जो कोइ मनुष होइ बलवाना।सुनिअहिलह्योनयहिउरज्ञाना॥
खैंचि श्वास लीन्ह्यो मुख डारी। यहाँ युधिष्ठिर जानि अबारी॥
पठयो नरहि सरहि चलिआयो। देखि सर्प्प असबचनसुनायो॥
को जीवत जगमा नर सोई। शर बिद्धा जाके कर होई॥
समुझि सोज्ञान हीनधरिखायो। तब नकुलै महिपाल पठायो॥

समानिकाछंद॥ तालतीरगेजबै। नागबोलियोंतबै॥ जीवध
न्यकौनहै। रूपवानजौनहै॥ बीरछंद॥ सुनिसर्प्प। करिदर्प्प॥
मुखबाइ। गयोखाइ॥

यहां युधिष्ठिर कह सहदेऊ। लेउ जाइ भाइन कर भेऊ॥
गये तीनि जन एक न आयो। नहिं जानी कौने बिलमायो॥
तब सहदेव निकट सर गयऊ। अजगरदेखिकहतअसभयऊ॥
जीवत जगमें काहि पिछानी। बिद्यावान होइजो प्रानी॥
भक्ति बिहीन ज्ञान बिन चीन्ह्यो।तुरतनिगलिसहदेवहिलीन्ह्यो॥
बहुरि युधिष्ठिर आपुहि आये। चक्षुश्रवा लखि बचन सुनाये॥
किबार्त्ता अचरज का भारी। पंच कौनि मोदित नरनारी॥
चहूँ प्रश्न का उत्तर दीजै। तेहि पाछे नृप नीरहि पीजै॥
धर्म तनय बोले हरषाई। सुनौ यथा मति कहौंबुझाई॥

दो० भट्टी मोह कृशानु रबि धवनि श्वास मद दारु।
निशिदिन घनदरवी बरष क्रमकुट काललोहारु॥

जीव सार सम कूटत जाई। यहै बार्ता मो मन भाई॥
सुनि पन्नग प्रसन्न अति भयऊ। ततक्षणउगिलिभीमकहँदयऊ॥

चारि खानि जहँ लगि तनुधारी। जलचरथलचर नभचरनारी॥
मरा एक दिन सब कर होई। शेष रहे अचरज है सोई॥
सुनी भुजंग बात यह जबहीं। उगिलिदिहिसिपारथकातबहीं॥
पंथ सो जाहि महाजन थापै। नकुलैउगिलिदिहिसितबचापै॥
दुसरे दिन बहु भोजन पावै। परबश होइ न अऋणरहावै॥
भजै राम तजि काम कुकर्मा। सोइनर मुदित न संशयभर्मा॥
कृष्ण बहिर्मुख सबसम प्रानी। होइनकसविधिसबगुणखानी॥
अस सुनि पुनि सहदेवै दयऊ। बहुरि राव ते बोलत भयऊ॥
महाराज बचनामृत तोरे। सुनि आनंद भयो अति मोरे॥
अबनिज चरण शीश मम धरहू। दीनदयाल कृतारथ करहू॥
कारण कौन भाल पग राखी। हमते भेद कहौ सो भाखी॥
पूरब भेद नहुष सब बरना। बिप्रशापजेहिबिधिनिस्तरना॥
सुनि नृपअहि शिरचरणछुवावा। भै अघहानि दिव्य बपुपावा॥
आयो तुरत बिमान समीपा। चढ़ि हरिपुरका गयो महीपा॥
अस सतसंग प्रभाव घनेरा। जेहि लहि गादुखनाहुषकेरा॥
और सुनौ यक मंकी साहू। रह धन हीन दीन सबकाहू॥
धन हित उद्यमकिहिसिअपारा। होइ नफानहिं घटा निहारा॥
करजु काढ़ि युग वृषभहिलायो। नहिंकहिंजोतनखेतसिधायो॥
मगमा वृषभ कीनि मचलाई। भागत परे ऊंट पर जाई॥
माचि बीच गर्दनि के उरझी। उनमत ऊंट उठ्यो नहिंसुर्झी॥
दो० चले घसीटत वृषभ दोउ भये मृतक ऋषिराइ।
लखि मंकी शोचन लग्यो महि तन शीश नवाइ॥
ताही क्षण दत्तात्रय आये। दुखित देखिअसबचनसुनाये॥
अहो तात मत धीरज गाहौ। वृथाशोचकरिक्यों तनुदाहौ॥
दुख सुख कर्म भावई हाथा। कैसे मिटै लगी सो साथा॥
तेहिते चतुर शोच नहिं करहीं। होनहार सोइ हिरदय धरहीं॥
बिन दातव्य द्रव्य नहिं पावै। देश बिदेश चहौफिरि आवै॥

पूरब पुण्य होइ जो भाई। बिन आरम्भ मिलै धनआई॥
बहु नर उद्यम हीन हयाना। ते धनवन्त दुखी बुधिवाना॥
पाछिल धर्म जानिये आता। और तासु जैनें सरिवाता॥
आदौ दान दिह्यो नहिं ऐसो। अब चाहत धन मिली न कैसो॥
तेहि ते उर संतोषै धारौ। तृष्णा डाइनि दुष्ट निवारौ॥
नहिं कछु सुख संतोष समाना। चौबिस गुरुकरि हमयहजाना॥

दो० सुनिमंकी बोलत भयो मुनि पद शीश नवाइ।
कौन कौन गुरु किहेउ प्रभु सो मोहिंदेउ सुनाइ॥

बीरछन्द॥सुनिदत्त। निजुमत्त॥मृदुबोलि। कह्योखोलि॥ तोटक छन्द॥प्रथमैंगुरुजानौभूमिकिह्यों। तेहितेजुक्षमाअरुशान्तिलिह्यों॥ जलदूसरसबंपबित्रकरैं। जिमिसज्जनजीवकेपापहरैं। गुरुतीस रवायुअमैलअहै। ममत्योंगतिसंगसमानबहै॥ मृगवेदहिगुरुसुनि तानमेरे। तेहिभांतिविषयसुखचित्तहेरे॥ शशिपंचमआतपज्योंहर हीं। हरिकेजुनशीतलत्योंकरहीं॥ कठयेंरबिज्योंरससर्बग्रहै। न लिपैंपरित्योंजगसंतरहै॥ भभकैसमतागिनिआज्यपरे। निघटेति मिकामिनिभोगकरे॥नभअष्टमपूरणब्रह्मतथा। नवमानददाजनवृक्ष यथा॥ दशमोदधिआयघटैनबढ़ै। जनत्योंसुखदुःखसमानबढ़ै॥ भँवर यकादश बिरति सुपासू। पुहुप पुहुप की लेइ सुबासू॥ नाहिं वृक्षका दोष बिचारै। करहिंसंत तेहि बिरति अहारै॥ कीटहि शब्द सुनावत ऐसो। सोहवै जात भृङ्ग लै जैसो॥ द्वादश अहि नहिं भौन बनावै। तैसहि भक्ति बसै जहँ पावै॥ तेरहों गुरु हाथी कहँ कीन्हा। काम बिबश परबशभा चीन्हा॥ तबते काम नेवारत भयऊ। राम चरण पंकज चित दयऊ॥ मकर चौदहां रसना स्वादा। आमिष गह्योसहित अहलादा॥ सुखनहिंभयो गयोपुनि प्राना। तज्योसकलरसदुखद पिछाना॥ दशशरशलभ दियाकी ज्योती। देखत जरत सती ज्यों होती॥ तैसेनरलखित्रिय फँसि जाहीं। सो बिचारि हौं देखत नाहीं॥

तेहि देखौं तेहि आतम जानौं। और न दूसर भेदहि आनौं॥
षोड़श चील्ह एक लै मासू। उड़त भई सह मोद अकासू॥
बहुत बिहंग ताहि पछु आयो। दीन्ह्यों छांड़ि तबै सुख पायो॥
तबते बित्त ग्रहण नहिं करहूं। जहां तहां निरद्वन्द बिचरहूं॥
सप्तदशौं गुरु अजगर भावै। निरालंब आवै सोइ खावै॥
अष्टादश गुरु बेश्या एका। बैठी करि शृंगार अनेका॥
एक दिवस ब्यसनी इक आवा। दै धीरज गथ लेन सिधावा॥
करत पिंगला सेज सवाँरी। मगदेखतनिशिखटक वोनारी॥
अधगुल यामरजनी चलि गयऊ। बेश्या हृदय बोध तब भयऊ॥
आशात्यागि भजेसि भगवाना। वही ज्ञान मैं हिरदय आना॥

दो० गुरू वोनैसौं वानकर दीख बनावत तीर।
भूपगयो तेहि अग्रहवैसहितशब्दअतिभीर॥

वहू धाय पूंछा यहि औरा। नृपगा मैंन सुनी कछु शोरा॥
तहँ मैं सिखेहुं ध्यान का भेदा। रहौं लीन तजि जगके खेदा॥
बिंशम मिथुन कपोता भयऊ। बिपिन कपोती अण्डा दयऊ॥
फोरे सेइ बड़े शिशु भयऊ। इकदिनबधिकदेखिगहिलयऊ॥
आये दोउ लिह्वे मुख चारा। पुत्र बिना घर सून निहारा॥
अधिक तीर देखे अकुलाई। गिरी कपोतिनिजा रहि जाई॥
देखि शोच अति कीन बिहंगा। फँसा आपुहू सब के संगा॥
अति बल मोह देखि मैं जाना। तबते तज्यों भज्यों भगवाना॥
गुरु इकैसवीं मकरी भाई। पूरततारु निगलि फिरि जाई॥
ऐसे ईश जगत करि सोई। अन्त आपु महँ लेत समोई॥
उभय बिंश जानहुं मधु माखी। रस रस आनि इकट्ठे राखी॥
खाइनिनहिं निजकाजनकीन्हों। आइ छोड़ाइ आनहीं लीन्हों॥
तैसहि कृपिण दरबि को पाई। पुण्यनकरहिंसकहिंनहिंखाई॥
बिबिधि भांति राखै महि गोई। करहिभोग तेहिआनहिं कोई॥
तेहि ते संग्रह करौं न दामा। नृप भय चोर बधत ठगतामा॥

गुरु तेईसवां कन्या जानहुं। तासु चरितअब सुनहुबखानहुं॥
करन सगाई युग जन आय। मात पिता तेहि घरनहिंपाये॥
कन्या तब कीन्हेउँसन्माना। आप लगी पुनि कूटन धाना॥
चूरी खटकत भई गलानी। डारेसिफोरि कछुकनिजपानी॥
ह्वै लगरहीं खटक नहिं जाई। एकराखि कूटिसि हरषाई॥
तबते सोइ सीख धरि चित्ता। एका एक रहौं मैं नित्ता॥
बहुतन संग कलह ह्वै आवै। एका एक परम फल पावै॥
चौबिसवां गुरु किहेउँ शरीरा। जेहिलगिसब नरसाहतपीरा॥
दो० पालत षट्रसस्वाददै बिविधिबसनपहिराइ।
तेलफुलेल लगाइ नित सेवा करी बनाइ॥
सो० अंतसमय की बार सङ्गन चालै एक पग।
और सकल परिवार सो आपन किमिहोइहै॥
आपन तन जान्यो नहिं जबते। करनलग्यो निजस्वारथतबते॥
निज स्वारथ सोई कहवावै। जो कछुराम भजन बनिआवै॥
भजन बिना जीवहि सुखनाहीं। बिधिहरिहरसमीपचहुजाहीं॥
चौबिस गुरु करि जो मतपायों। सोमैं तुमकहँ सकल सुनायों॥
सुनि मंकी उर उपज्यो ज्ञाना। जगतझूठकरि तबहिंपिछाना॥
मुनि पद शीश नाइ बनगयऊ। जपतपकरितनत्यागतभयऊ॥
हरिपुर बसेउजाइ दुख खीशा। अस सतसंग प्रभाव मुनीशा॥
कह शौनक इक संशय मेरे। दत्तात्रयी पुत्र किन केरे॥
यहौ भेद प्रभु देउ बताई। सुनत सूत बोले हर्षाई॥
सो० अत्रय ऋषि की नारि त्रैदेवन कर अंश लय।
कीन्ह्यों पुत्र बिचारि नाम धर्‌यो दत्तात्रयी॥
इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघु
नाथदासरामसनेहीकृतमंकीदत्तात्रयसंवादचौबि
सगुरुबर्णनोनामषटत्रिंशोऽध्यायः॥ ३६॥
दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपगिरासुखदानि।

कहौं समुझैचरित कछु कछुजैमिन मत आनि॥
बहुरि सूत बोले करि येहा। धन्य धन्य शौनक तव नेहा॥
जो पूछ्यो सो बरणि सुनावा। और सुनौ सतसंग प्रभावा॥
सबते अधिक ज्ञान यह पावन। पुत्र पिता सम्बाद सुहावन॥
बिप्र एक कश्यप अस नामा। मेधावीसुत अति अभिरामा॥
ज्ञानवंत ममता उर नाहीं। यकदिनप्रश्नकिहेसिपितुपाहीं॥
पिताकहौ काकर तप करिये। जाते भवसागर को तरिये॥
कह कश्यप सुत वेद पढ़ीजै। ब्रह्मचर्य करि गृह सुखकीजै॥
बानप्रस्थ बहुरि सन्यासा। धारण करिकीन्ह्यों बनबासा॥
जप तप योग यज्ञ तहँ ठान्यों। यह करतब्यहै तुम्हैंबखान्यो॥
सुनि मेधावी उत्तर दीन्हा। मृत्युबिवशहमसबकहँचीन्हा॥
जब चाहै तबहीं संहारै। बालवृद्ध नहिं तरुण बिचारै॥
तौकिहिबिधि चहुंआश्रमकरई। अमर होइ सो हिरदै धरई॥
लोमशादि मुनिचिरजिवआहीं। टूटत रोम कलप के माहीं॥
तेऊ डरत मृत्यु ते भाये। लोंहड़ा रहत शीश औंधाये॥
और सुनौ पांडव मख साजा। कीन्ह्योजबतब छांड्यो बाजा॥
अर्जुन कृष्ण हन्स वृष केतू। चले सकल रक्षा के हेतू॥
ढूंढ़त सिंधु पार जब गयऊ। दीप एक बन देखत भयऊ॥
तहँ बक दालभ ध्यान लगाये। सबनजाइ मुनिपद शिरनाये॥
चरण छुवत बक दालभ जाना। नयनखोलि कीन्होंसनमाना॥
लागे कहन चरित हरि केरे। बहुबिधिजो निज नयननहेरे॥

दो० चित्र कोटि चत्र लाखपुनि। उभयसहसअवतार।
भये दशरथी रामके। मेरी दृष्टि अगार॥

सुनि अर्जुन बोले तिनहींते। तुम्हैं यहां कितने दिन बीते॥
कह मुनि सुनहु तात मनलाई। आदिहिते सब कहौं बुझाई॥
निमिषि अठारहु काष्ठा जानौ। तीस कष्टकी कला पिछानौ॥
तीस कला की होत महूरति। तीस महूरतिका दिन पूरति॥

पंद्रह दिवस केर पखवारा। उभय पाखका मास बिचारा॥
बारह मास बिगत जब होई। तेहिका बरष कहत सबकोई॥
सत्रा लाख अट्ठाइस बरषा। शतयुग रहत सकल सुरहर्षा॥
बारा लाख छानबे हजारा। त्रेता रहत सुखी संसारा॥
दो० आठलाख चौंसठसहस। द्वापर रहत समान।
चारिलाख बत्तिससहस। बर्षरहत कलिजान॥
चारि सहस युग बीतत जोई। तब ब्रह्माका इकदिन होई॥
रातितेतनही तब बिधि स्वावै। सृष्टि धरे उर कल्प कहावै॥
तीस कल्प बीतत अज मासा। बारा मास बरष परकाशा॥
ऐसे बरष एक शत जाई। तब लगि ब्रह्मा जीवत भाई॥
मरे पितहि परलै ह्वै जावै। ब्रह्म कल्प सोई कहवावै॥
मोहिं देखत एते दिन भयऊ। ब्रह्मा बीसनाश ह्वै गयऊ॥
एक बार ब्रह्मा इक आये। चारि भुजा मुखचारि सोहाये॥
करतल चारिवेद तन पीना। राम चरित गावत लवलीना॥
मोते कहिनि ध्यान तजिदीजै। हमते कछुक चतुरता कीजै॥
तेहि समय बौंडर इक आई। हमैं बाहिले चला उड़ाई॥
उलटत पलटत नाघत खंडा। देखा जाइ आन ब्रह्मगडा॥
तहँ विधि बैठ आठ मुखसोहा। आठ भुजा बसुदेवहु जोहा॥
को भवानि बिधित बिधिभाषा। ब्रह्म अहंइत्थं सुनि माखा॥
दो० अबतककह्योसोकह्योपर अबनकह्योअजनाम।
ब्रह्मा ये मय आठमुख जेहि करतल सबकाम॥
इतनी कहत पवन पुनि घूमी। उभय लपेटि चली नभ झूमी॥
उहांते उड़ेनआन महँ गयनू। सोरा मुख बिधिदेखत भयनू॥
पुनि बत्तिस चौसठि छानावा। दुगुन २ मुखका विधिपावा॥
जेहि देखा सोऊ उड़ि जाई। गगन पार सब निकसे जाई॥
दो० तहां पुरुष इकदीखबर जेहि तन अति बिस्तार।
बदन अनन्त अनन्तभुज वेद अनन्त अपार॥

कीनि बन्दना तिन सनमाना । सब ब्राह्मण कागा अभिमाना॥
कछुक बार रहि आयसु पाये ।फिरिनिजनिजआश्रमकहँआये॥
सुनिअर्जुन अतिशय सुखपावा । बहुरि जोरिकर बचनसुनावा॥
हे प्रभुकृत उजार महँ रहऊ । शीत उष्ण बरषाशिर सहऊ॥
लेत्यौं इक मंदिर बनवाई । सुनत बचन बोले ऋषिराई॥
लघु जीवन जग कौने हेता । धनसंची अरु करी निकेता॥
मृत्यु खड़ी शिर सन्मुख हेरै । जब चाहै तबहीं मुख गेरै॥
जो कोइ सुरी चढ़ावा जावै । क्षण रहि गये कौन सुखपावै॥
सुनौ पिता ऐसे जे अहईं । तेऊ डरत मृत्यु ते रहईं॥
औरेन की अब कौन चलावै । जोनितजन्मिजन्ममरिजावै॥
तेहि ते तात मोह तजि देहू । करहु राम पद पंकज नेहू॥
निशिबासरऋतुजेहिबिधिजावै । त्योंतुम्हरी नित आयुसिरावै॥
देखत जात सचेत न होवै । ढहते महल माहिं कतसोवै॥
प्राण अन्त कछु बनै न भाई । उठी हाटजिमि बस्तुन पाई॥

श्लोक यावत्स्वस्थमिदंदेहंयावन्मृत्युश्चदूरतः॥
तावदात्महितंकुर्य्यात् प्राणान्तेकिंकरिष्यति॥

गीतिकाछंद॥ सुनिपुत्रके अस बचन विमल बिरागकश्यपके भयो । दोउत्यागितृणसम धामधनसुतबामबनका चलिदियो॥ जपयोगसंयमसहितकरिहरिभक्तितनमनजीतिकै । गयेअन्तसमय बिमानचढ़िप्रभुधामबस्योप्रतीति कै॥

सो० ऐसा है सतसंग जाके करतै अघ नशत ।
लागत हरि का रंग भागत संशयशोक भ्रम॥

और सुनौ बिश्वा बसु नागा । मन्दालसा सुता सुठि भागा॥
तालकेतु लयगा हरि ताही । ऋतुध्वजगालवमखगतचाही॥
बधकरि ताहिसुता सोइलीन्हीं । बिश्वा बसुहि आइपुनिदीन्हीं॥
ब्याह युक्ति तिन नृप ते ठानी । गहि पदबोली कुवँरि सयानी॥
तीनि बचन मोहिं देवै नाहू । ताके संग करब हौं ब्याहू॥

इक तो जो मम द्वारे आवै। मंगन बिमुख जान नहिंपावै॥
दूसर मोहिं जीवन नर नाहा। करै न अपररवनिसँगब्याहा॥
तीसर जो बालक हौं जावों। द्वादश सम्बत महीं खेलावों॥
असप्रणकठिनसमुझिमनमाहीं। अब तकमोहिं बरीकेहु नाहीं॥
रतिध्वज बचन देइतहँ परणी। धूम सहित लाये घर घरणी॥
कछुक काल बीते सुत भयऊ। चेरिउ का नहिं कबहूं दयऊ॥
आपु खेलावै दिन अरु राती। देइ ज्ञान तनुजै यहि भांती॥
श्लोक शुद्धोसिबुद्धोसिनिरंजनोसि संसारमायापरिबर्जितोसि॥
संसारस्वप्नंत्यजमोहनिद्रांमन्दालसाबाक्यमुवाचपुत्रम्॥
बड़े भाग सो नर तन पायो। सुर दुर्लभ पुराणश्रुति गायो॥
ताहि पाय निज रामन ध्यावा। धृग जीवन जग बादिगवँावा॥
ताते सुत हरि सुमिरण करहू। ज्ञान बिराग हृदय महँधरहू॥
क्षुधा तृषा सुख दुख अपहारी। काम कोह मद मोह नेवारी॥
सुत पितु मातु बन्धु अरधंगी। ये सब हैं स्वारथ के संगी॥
अन्त समय कोउ काम न आवै। बीचहि मिलैं बीच रहि जावै॥
तिन्हें त्यागिबनगवनहिं कीजै। अह निश राम रसायन पीजै॥
क्षण क्षण तेरी आयु सिरावै। ज्योंकरतल जलनिघटतजावै॥
काल अचानक सबका मारै। वाल वृद्ध नहिं तरुण बिचारै॥
ताते वालपनहिं ते चेतौ। बेगि लगायो हरिपद हेतौ॥
दो० बहु प्रकार मंदालसा दीन सुतै उपदेस।
भयोज्ञान हिरदयबिमल गयोबिपिनमुनिभेष॥
सो० यहिभांतिन षटबाल पठये बन उपदेश करि।
सप्तम भये भुवाल आइ निकट बोलेबिलखि॥
हे भामिनि सुनिये मम बाणी। भयनृवृद्ध हमतुम दोउप्राणी॥
बालक बन पठयो सब आछे। करी राज को हमरे पाछे॥
तेहिते यहिराखौ गृह माहीं। बार बार विनवों तोहिंपाहीं॥
सुनि पतिबचनपुत्र घररारुयो। तासों ज्ञान कछूनहिं भारुयो॥

पर नित शोचहि करैं अपारा। परी नरक यह पुत्र हमारा॥
तब यक यंत्रबांधि भुजदीन्ह्यो। बिपतिहोइ यामेंसोइकीन्ह्यो॥
कछु दिनबीते दोउ मरिगयऊ। पाछे अलरक राजा भयऊ॥
सुनि बन बंधु गये ते आये। तजहु राज बड़ दोष सुनाये॥
सो महीप मानसि नहिं राई। बखरा मागन दीन खेदाई॥
दो० तब ते काशी राज पहँ फिरि आदी भे जाय।
निज निज हींशादेन कहि लाये ताहि चढ़ाय॥
कछुक दिवस अलरकनृपलरेऊ। भयोत्रसिततबरणपरिहरेऊ॥
गयो भागि बनबिपतिबिचार्‌यो। खोलिमुद्रिकाताहिनिहार्‌यो॥
दो० जगत जालमें मतिपरै केवल दुखयहि माहिं।
सत्य कहौं सति २ कहौंसुतसुखसपन्योनाहिं॥
सो० राम बिमुख नरजौन किह्योनसंगति तासुकी।
साधुसंग सुखभौन मिलत ज्ञानहरिभक्तिजहँ॥
दो० खगमृग किन्नर नाग नर दैत्यासुर समुदाइ।
युगयुग में जे तरे ते सकल साधु सँगपाइ॥
अस मुद्रिका मांझ जब देख्यो। खोजत दत्तात्रय का लेख्यो॥
पर्‌यो चरणनिजबिपतिसुनायो।मुनिबरबहुबिधिज्ञानसिखायो॥
गयो मोह सुख भयो अपारा। करिहरिभक्ति भयोभवपारा॥
अस सतसंग अहै ऋषि राई। गइक्षणमें भव व्याधिनशाई॥
ताते साधुसंग नित कीजै। मनक्रम त्यागिकुसंगतिदीजै॥
कुं० भक्तिलता सतसंग जल सनधापल्लव पाइ।
शाखाज्ञान बिरागगुरु लघुक्षमादि समुदाइ॥
लघुक्षमादि समुदाइ प्रेमसों सुमन सोहावन।
हरि प्रापति फलमधुरमहादुखदोषनशावन॥
प्रथम अजाते रक्षिये बड़े भयेनहिं शक्ति।
बँधेरहैं करइमि कहै कल्पलता हरि भक्ति॥
दो० जननै कन्या जनकते रहै जनकके गोद।

होइपुत्र तबबिबिसुखदइमिकहैभक्तिबिनोद ॥
प्रभु पयोधि धनसंत है हरि २ जनयोमान।
मुसकिलते रघुनाथ इमि करतसाधुआसान ॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतपुत्रपितासंबादअलरकप्रसंगबर्णनो नामसप्तत्रिंशोध्यायः ३७ ॥

दो० सुमिरि रामसिय संतगुरु गणप गिरासुखदानि।
सांख्य शास्त्रमत कहौं कछु कछु वेदांत बखानि ॥
सुनि शौनक बोले हरषाई। सतसंगति महिमाकछुगाई ॥
और एक बरणौं इतिहासा। जेहिते होइ ज्ञान परकासा ॥
सयनजीत यक भूपति राहै। नीतिवान परजै बहुचाहै ॥
तेहि के पुत्र बरष दश केरा। भयो मृतक सेा करमनघेरा ॥
राजा शोचकीन अति भारी। प्राण तजनका बात बिचारी ॥
तेहि अन्तर लोमश ऋषिआये। नृपहिदुखितलखिबचनसुनाये॥
हेनृप शोक करै तू काको। तेरो सुतनहिं तैं पितुवाको ॥
पुत्र शरीर परातव आगे। रोवत मृषा जीवके लागे ॥
जनमे मरै न भयो न होई। नित्य अरूप अचल है सोई ॥
सस्तर काटिसकै नहिं ताही। पावक जारिसकै नहिंजाही ॥
नीर भिजोय सकै नहि वाको। मारुत सोखिसकै नहिंताको ॥
ऐसा यहि आतम कहँ जानौ। मनमहँ तासु शोचमतिआनौ ॥
याको मृतक कहै जो कोई। महा मूढ़ अज्ञानी सोई ॥
नाशवन्त है देह पिछानौ। जीवात्मा अविनाशी जानौ ॥
दो० देह अंग न्यारे करौ जहँ तक होत बिनास।
उतपति भय जेहिभांतिते करतनरकको बास ॥
प्रथम ब्रह्म अज अखँड अमाया। इच्छा करि पूरुष उपजाया ॥
पुरुषेच्छा ते प्रकृति प्रभेवा। प्रकृति ते भयो महाततदेवा ॥

महातत्व ते भो निरँकारा। निरंकारते प्रणव निहारा॥
प्रणव ते भये तीनि गुण राऊ। सतरजतामस प्रगट प्रभाऊ॥
त्रयगुणकी भार्षों औलादी। जिनते भा तनुअनितउपाधी॥
सतत बासुदेव चितजानो। और चौदहौ देव पिछानो॥
रज गुणते ब्रह्मा बुधिमयऊ। दशों वाइइन्द्री दश जयऊ॥
तामस ते शिव जानौ राई। आहं अंतःकरन लखाई॥
अहंते भा अकाश लहि पोला। उपजे श्रवणसुनत जे बोला॥
नभते भई पवन अस्पर्सा। तासों भुक दृग्रूपहि हर्सा॥
अग्नितें जल रसना रस चाहै। जलते पृथिवी गंध जोलाहै॥
एकते एक प्रकट ह्वै आई। जब सिमिटै सब जाइसमाई॥

दो० सतरज तमबुधि चित अहं शब्दअस्परस रूप।
रसन गंधमिलिगांठिपरि तबउपज्यो मनभूप॥
तेहिते अन्तष्करणनृप गने जातहैं चारि।
मनबुधि चितअहँकारअब बिरतीकहौंबिचारि॥

ज्ञान बिचारि शील बिश्वासा। धीरजनिश्चयमतिवृतिभासा॥
सुरति चपलता अगिन उमंगा। राग आदि चितवृत्ति प्रसंगा॥
मैं तैं मान मलिनता दोषा। अहंकार की बिरति सरोषा॥
दुखसुख भय संकल्प बिकल्पा। लाज उघाटनमनवृतिथल्पा॥
एक वस्तु बहुनाम कहाये। अन्नचून जिमि रोटी गाये॥
अब इनके इन्द्रिन के देवा। जेजे हैं बरणौं सो भेवा॥

कुकुभाछंद॥ मनके देव चन्द्र बुधिब्रह्माबासदेवचितकेरे। अहं कारशिवदिशा करणकेनयनभानुसुरहेरे॥ रसनाबरुणत्वचाकेमा रुतनासाअश्वनिजानौ। मुखकेअग्निइन्द्रहाथनके देवगुदायम मानौ॥ लिंगदेवपरजापतिसिरजत चरणनविष्णुबिराजै। चौद हदेवरहतयहितनसँग नितनिरभयह्वैगाजै॥

दो० नारी चौदह सहसहैं यहि शरीरके माहिं।
तिनमांचौबिसमुख्यहैंसबकोइजानतनाहिं॥

कमल नाभिते दशउरध दशैंगई अधजान।
युग दक्षिणउत्तर उभयतिनमादशपरधान॥
तिन दशहुन के नाम बखानौं। जहँ २ बसै सोऊ तुम जानौं॥
बांयें इड़ा पिंगला दायें। मध्य सुखमना तीनि गनायें॥
बाम चक्षु गंधारी रहई। हस्ती जिह्वा दहिने अहई॥
पूषा कर्ण दाहिने अहई। पुनि यसश्विनीबायें लहई॥
नाभी माहिं अलंबक राजै। कहुलिनासिका माहिं बिराजै॥
मुख अस्थान संखिनी केरा। ये नाड़िन के नाम निबेरा॥
दश पवनो हैं यहि तनमाहीं। निजनिजथलमें सोउरहाहीं॥
प्राण पवन हिरदय में बासा। जेहितेनिशिदिननिकसतश्वासा॥
गुदा अपान नाभि सामाना। कंठ उदान सर्ब तन व्याना॥
नाग बायुते उठै डकारै। कूरम नयनन पलक उघारै॥
देवदत्त आवै जमुहाई। किरिकिलछीक लगावैभाई॥
मुये धनंजय देह फुलावैं। येदश पौन शरीर रहावैं॥
दो० इन्द्रिय दश तत्व पांचते प्रकट भई यहजानि।
उभय उभय सेां प्रीतिहै सोऊ कहौं बखानि॥
मुखते श्रवण कहत यक सुनई। त्वचा पाणि असपरसै गुनई॥
नयन चरण ते प्रीति रहावै। नयन फँसै पदलय पहुंचावै॥
रसन उपस्थ भोग दोउ चाहैं। गुदा नासिका नेह निबाहैं॥
मन इन इन्द्रिन के सुखलागी। भूल्यो ब्रह्मक्रांति सब भागी॥
ताते भयेा दीन मति हीना। मनबासा अब कहौं प्रवीना॥
हिरदय बीच कमल यक अहई। पखुरी आठ केरि तहँ रहई॥
जेहि दलपर मन बैठत धाई। तबतहँ तैसी बिरत लखाई॥
पूरब दलपर जब चलि जावै। दया धर्म धीरज उपजावै॥
दल अगनेय माहिं पग धरतै। क्षुधा तृषा निद्रालस बरतै॥
दक्षिण मद मत्सर कुल छोहा। अहंकार उपजै अरु कोहा॥
नय ऋषि दलेमाह हठमाया। आशा तृष्णा शंक गनाया॥

पक्षिम दल समता उपजावै। आनँद निरभै चित्त रहावै॥
बायब उच्चाटन संतापा। भय लज्जा बरतै उर पापा॥
उत्तर दलपर जब मन टिष्टा। हँसी बिनोद कामकी चिष्टा॥
ईशाने सुधि बुधि संतोषा। क्षमा शीलसतबिरति अदोषा॥
मन आठो पखुरिन पर धावैं। पवन समान बार नहिं लावै॥
तेहि मनका रोंकत कोइ सन्ता। पकरि लगावत चरण अनन्ता॥
ना तरु जगत सिंध महँ भंगा। बाहत कर्म बीचिकन संगा॥
कुं० और सुनौ तत्व पांचते जो प्रगटे तन माहिं।
काम कोह मदमोह भय बोलननभतेआहिँ॥
बोलन नभते आहिं बायु ते बाढ़ै काया।
बल करनासुनि चलनपरसि संकोचबताया॥
पावकते आलस क्षुधा तृषानींद संग ब्यौर।
जल ते मेदरु रक्त कफ बिन्द पसीना और॥
दो० महीतत्व ते जानिये अस्थि मांस अरु चाम।
नारी रोमा सर्ब मिलि भा शरीर बेकाम॥
तन झूंठाझूंठा करत झूंठा सब संसार।
तन सच्चा सच्चा जगत सच्चा कर्म बिकार॥
तनमें तुर्ज देह है मूला। व्यापक सूक्ष्म लिंग अस्थूला॥
तिनकी चारि अवस्था कुरिया। जाग्रतस्वप्न सुषोपति तुरिया॥
बानिहुं चारि भांति की करी। परा पसन्ती मध्य बैखरी॥
दश इंद्री अरु पांचौ तत्त। तिन ते तन अस्थूल अनित्त॥
बाल युवा वृद्धापन रोगा। सोवत जागत सीततयोगा॥
मल डारन नव द्वार निहारा। थूल संग ये लगे बिकारा॥
जाग्रत तासु अवस्था जानौ। देखत जो कछु करतपिछानौ॥
दो० दशौ बायु अरु तीन गुण पांच मातरा भास।
चौदह स्वर अंतष्करण यामें करत बिलास॥
पांच तत्व इन्द्री दशौ और पांच सँगबाय।

सतगुणहूं दश देवता सोइ रहा सुख पाय ॥
सोवत स्वप्न दोषकत जोई । लिंग देह तुम जानौ सोई ॥
लिंग देह जै तत्व न केरा । सो मैं तुमते करौं निवेरा ॥
प्राण अपान समान उदाना । व्यान वायु सर रजतमजाना ॥
अन्तष्करण चारि स्वर चारौ । पांच मातरा सोउ निहारौ ॥
बीस तत्वते लिंग शरीरा । स्वपन अवस्था तासँगबीरा ॥
जीव नाम ताही को परही । लिये मना सोई अब तरही ॥
कर्म करत तस भोगत भाई । स्वर्ग नर्क महि मण्डलआई ॥

सो० जन्म मरण सुख शोग क्षुधा पिपासा जानिये।
येषट उरमो रोग जीव संग लागे रहत ॥

लिंग शरीर नाम तब पावै । जब नर अजपा में मन लावै ॥
अजपाकिं जो सोस्मि उसासा । सुमिरैनाम सहित बिश्वासा ॥
श्वास लेत रा तजत मकारै । जागत सोवत नाहिं बिसारै ॥
होइ वासना तब सब नाशा । मिलैब्रह्ममहँजिमिजलबासा ॥
आनँद प्राण मनोमय कोसा । तिहुन केर तनु सुक्षम पोसा ॥
अधिक नींद सोवै जब प्राणी । रहै न ताको कछू पिछानी ॥
सूत्रा तमा प्रकाशित भो पति। तस्यअवस्था आहिसुषोपति ॥
तीनि अवस्था ना सत चीना। सतसँगतुरिया नित्त नवीना ॥
ईश्वर जीव भेद मिटि जावै ।तुरी अवस्था सोइ कहावै ॥
कोइ कोइ सन्त लहत हैं याको। लक्षण सुनौ बतावौं ताको ॥
प्रेम बिबश तनकी सुधि भूली । गद २ कंठ रोम रहे फूली ॥
कहुं उठि चलत बैठि कहुं जाई । कहुं नाचत करताल बजाई ॥
बोलत बचन और को औरा । समुझि परत मानहुं मतिबौरा॥
जर्द बदन तन चढ़त न मासू । नहिंलागत जेहि क्षुधापिपासू ॥
बूझि परत नहिं पर्वत गाऊं । को हम कहां जात केहिठाऊं ॥
समचित शत्रु मित्र नरनारी । समचित पुत्र पिता महतारी ॥
हौं तू बन्धु गई सब खोई । त्याग अत्याग तहां नहिंकोई ॥

दोष अदोष मिटी भ्रमकाई। निज स्वरूप सुख रहेसमाई॥
मन चित अहंकार नहिंजावै। बुधिपहुंचतपहुंचत नशिजावै॥
दो० जैसे पुतरी लोनकी दधि थाहत गलिजाय।
त्यों आतम के खोजते सुधि बुधि जातहेराइ॥
ज्यों सूरज के तेजते देखि परत रबिजात।
त्यों आतम के तेजते आतम रूप लखात॥
ऐसो मत जिनका मिल्यो ते नर जीवन मोष।
ज्यों चाहैं त्योंहीं रहैं तिन्हें न दोष अदोष॥
चारि अवस्था बरणि सुनाई। जहँ जहँ बसैं कहौं सो गाई॥
जाग्रत को चक्षुन में बासा। लिंग देह कर कंठ नेवासा॥
कारण तनु हिरदय महँ राजै। तुरी अवस्था गगन बिराजै॥
परमातमा ब्रह्म की जानो। सबतेपृथक जो आदिपिछानो॥
दो० पुरुष प्रकृति महततुनिरं ओंगुण अन्तष्कर्म।
इंद्री सुर तत बायु तन इनते परे जो ब्रह्म॥
परकाशक चर अचर का परमात्मा सो एक।
जैसे बहु जल कुम्भमें रबि लखि परत अनेक॥
आदि अंतमधि मीश सोइ पश्यति जे मतिधीर।
जिमि मृत पात्र अनेक बिधि बसनततुगोक्षीर॥
श्लोक एकञ्चमृत्पात्रमनेकरूप मेकञ्चक्षीरंबहुबर्णधेनुः।
सुवर्णमेकंबहुभूषणानिचैकःपरात्माहिशरीरभिन्नः॥
दो० सो शरीर आनित्य है नित्य आतमा ब्रह्म।
तू ताही को अंशहै भूल्यो ह्वैके भर्म॥
जैसे मंदिर कांचके जात भयो कोइ श्वान।
आपनि छाहीं देखि कै भूंकत भा हैरान॥
जैसे मूरख सिंह ने आपन रूप निहारि।
कूदि परेउ जल कूप में दूजो भर्म सम्हारि॥
यथाशचानउड़ान नभ निकसा जहँगचकांच।

निजतनछांहबिलोकिजड़ टूटभग्नभयच्वांच ॥
तेरेही अज्ञान ते दूजो भासत आइ।
ज्यौंबिच फूटी आरसी मुखबहु परत लखाइ ॥
अपनेही अज्ञान सों सबसे कीन्हों बैर।
तेरो दुख तो को भयो और न दूजो गैर ॥
ताते तूही एक है नित्य अखंड अनूप।
जीव ग्रंथिको छांड़ि कै लखौ आपना रूप ॥
काम क्रोधमदमोह भय राग द्वेष अभिमान।
मैं तैं हिंसा शोक श्रम जीव लक्ष परमान ॥
जबतक इनके बश रहै गा है गो मन नाहिं।
तबतकसपनेहुं ना मिलै निजस्वरूपके माहिं ॥
जीव आतमै कर्म है परमातमा बिसोग।
जनि राखौ यहि भेद का जानत ज्ञानी लोग ॥
कर्म उपासन ज्ञान मत तीनि वेद के मांहि।
जो ततपर है तिन बिषे कहियत ज्ञानीताहि ॥
ज्ञान भानु हरि भक्तिचख कर्ममुकुर लै हाथ।
देखि परैं निजरूप तब कहत दास रघुनाथ ॥

गीतिकाछंद ॥ शुभकर्मज्ञानरुभक्तितिहुंबिनजन्ममरणनछूटई। चहुंजाइसुरपुरनागपुरमहिगिरतयमगणकूटई ॥ सुनिभूपऋषि केबचन छिप्रैपुत्र शोकबिहाइकै। लागेकरन जपयोगसंयमज्ञान मुक्तिहिपाइकै ॥

दो० कह्यो सूत शौनक सुनो ऐसाहै सतसङ्ग।
सेनजीत नृप ब्रह्ममें भयोलीनतजिअङ्ग ॥
सत्यदृढ़ावन मोक्षप्रद कुमतिहरनत्रैशूल।
सतसङ्गतिअसजानिनरकसनकरैंसुखमूल ॥

इतिश्रीबिश्रामसागर सबमतआगर ग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतसेनजीतप्रसंगबर्णनोनाम अष्टत्रिंशोऽध्यायः ३८ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्त गुरु गणपगिरा सुखदानि।
श्रीहरि बंस पुराण की कहौं अब कथा बखानि॥
पुनि शौनक बोलत भये नाइ सूत पदभाल।
सत्सङ्गति महिमा कछुक कहिये और कृपाल॥

कह्यो सूत सतसङ्ग समाना। और न दूसर बस्तु जहाना॥
जो सतसङ्ग करै मनु लाई। उपजै ज्ञान मिटै भ्रम काई॥
मोक्ष आदि सुख चाहै कोई। सतसङ्गति करि पावै सोई॥
जप तप योग करै ब्रत दाना। सतसङ्गतिबिनलघुफलजाना॥
सतसङ्गति क्षण मात्रहु होई। तेहि सम तुलैनतपलख कोई॥
सुनौ एक इतिहास पुरानी। जाते परै महातम जानी॥
मुनि बशिष्ठ यक बार सुभाये। गाधि सुवन के आश्रम आये॥
बिश्वामित्र बहुत सनमाना। रहे तहां कछु दिन सुखमाना॥
चलनलगे जब बिधिसुत गेहा। कीन बिचार गाधिसुत येहा॥
पूजा इन्हैं दीजिये काहा। जेहिते सुखीजायँऋषिनाहा॥
लाख बरष जो तप मैं साधा। तेहिंमा मुनिहिंदेउँअबआधा॥
करि संकल्प दीन ऋषिराई। पाइ बशिष्ठ चले हरषाई॥

दो० यक दिन बिश्वामित्रहू गेबशिष्ठ के भौन।
तिनदीन्ह्योंसतसंगफल उभयघरीकरजौन॥

गाधिसुवन मुनि कह्यो रिसाई। मैंतोहिं तपदीन्ह्योंअधिकाई॥
तेहिंसमयुगुलघरीकिमिकीन्ह्यो।न्यावचुकावनदोउचलिदीन्ह्यो॥
आये शंभु तीर कैलासा। तिन पठयो ब्रह्मा के पासा॥
तब दोउ ऋषै ब्रह्मपहँ गयऊ। सब वृत्तान्त सुनावत भयऊ॥
चतुरानन अस कहा बिचारी। जाहु दोऊ हरिपाससिधारी॥
सुनि विधिबचनदोऊमुनिनाथा। जाइ बिष्णु पद नायो माथा॥
गाधिसुवन बोले हरषाई। नाथ न्याव इक देहु चुकाई॥
हमरे भवन गवन इन कीन्हा। जसकछुबनासो आदरदीन्हा॥
बिदा होत तप सहस पचासा। इन दीन्ह्यों मैं सहितहुलासा॥

हौं चलि आयों इनके धामा। कछुक दिवसकीन्ह्योंबिश्रामा॥
दो० चारिघरी सतसङ्ग इन कीन्ह्यां स्वप्न मँझार।
तेहिमाते युगदंड मोहिं दीन्ह्यो चलती बार॥
दुइमा ते का हैं अधिकाई। यहै न्याव प्रभु देउ चुकाई॥
सुनि मुनिबचनबिष्णुअनुमाना। ऋषि सतसङ्गप्रभावनजाना॥
जामैं बहुबिधि कहब बुझाई। तबहुं न इनकी संशय जाई॥
अस मन समुझि कह्योश्रीनाहू। दुइमा एक शेष पहँ जाहू॥
तिन का लावहु इहां लिवाई। पुनि प्रभु सहितचलेहरषाई॥
जाइ शेष पहँ भाष्यो हाला। कहअनन्त जो तुमयहिकाला॥
धरहु धरणि दुइमा ते कोई। देहुं चुकाइ न्यावमैं सोई॥
कह ऋषिलाखबरषतपकीन्ह्यों। तेहिमा अर्द्ध बशिष्ठै दीन्ह्यों॥
आधा रहा हमारे पाहीं। तेहि तपतेज महीरहि जाहीं॥
धारेउ शीश शेष शिरटाला। सधीनक्षितिऋषिभयेबिहाला॥
तब बिधिते हरि कह्यो बुझाई। सुनि बशिष्ठ बोले हरषाई॥
चारि घरी स्वप्ने के माहीं। साधुसङ्ग कीन्ह्यों बहुनाहीं॥
दो० उभय घरी ऋषिका दिह्यों रही उभय ममपास।
ताके फल बल भूमि यह घटपर करौं प्रकास॥
सुनि शिरखैंचिलीन अहिराऊ। महि रहिगै सतसंग प्रभाऊ॥
सङ्ग प्रताप देखि अधिकाई। गाधिसुवन तब रहे लजाई॥
योग तपस्या त्यागन कीन्हों। सतसंगति में तन मन दीन्हों॥
अस सतसंग अहै ऋषिराई। और सुनो अब कहौं बुझाई॥
द्विज इक रहा बड़ा अबिचारी। तस्कर कर्म करै सहिगारी॥
सो इक दिवस नर्मदा पासा। गयो तहाँ निवसै हरिदासा॥
तिनकी चोरी करिबे हेता। बसतभयो निशिसन्तनिकेता॥
कथा भई कछु बार तहांहीं। अनमन बैठि रहा तिन पाहीं॥
जब रजनी बीती युगयामा। तबहरिजन कीन्हनि बिश्रामा॥
सोवत जानि बिप्र अरुगाई। चोरी करन लाग हरषाई॥

लखियमराज क्रोधअतिकीन्हा। बोलि दूत अस भाषै लीन्हा॥
यहिं भक्तन की कीन्हेसि चोरी। लावहु बेगि नरक महँ बोरी॥
वह द्विज है सन्तन के ठांई। ताहि लेन कौनी बिधि जाई॥
कह्यो धर्म जौनी बिधि पावो। तौनी भाँति यहां तक लावो॥
सुनत दूत यक तक्षक भयऊ। हरिजन धाम तहांचलिगयऊ॥
मन्दिर निकट रहा लगि बाटा। निकसाद्विजचोरायअहिकाटा॥
जलपत जानि संत सब धाये। चरणोदक तुलसी मुख नाये॥
राम राम कहु राम बखाना। इतने माहिं मुक्त भे प्राना॥
मुदगर मारि डारि गर फाँसा। दूत लेआये यम के पासा॥
लखि द्विज धर्म तेल औटायो। बरत कराह मांझ डरवायो॥
भयो सनेह सुरभि समताहीं। करै अनंद परा तेहिं माहीं॥
बहुरि बरत खम्भा भेंटवायो। शीतल भा गोला औटायो॥
पियत सीस भा अमी समाना। अमिष नागभे सलिलकृसाना॥
लोहा काँट सुमन सम भयऊ। तबतो डारि नरक महँ दयऊ॥
बिष्टा पीब कीट सब भागा। धर्मराज लखि अचरज लागा॥
करत बिचार मनहिं मनलाये। ताहि समय ऋषिनारद आये॥
बोले बैवस्वत कर जोरे। नाथ एक बड़ि संशय मोरे॥
यह पापी अति चोर लवारी। ताहि दीन हम साँसति भारी॥
याके दुख कछु भयो न राई। सोकारण मुनि जानि न जाई॥

दो० धर्मराज के बचन सुनि बोले ऋषि हरषाइ।
याहि मँगायो कहां ते सो मोहिं देहु बताइ॥

तब रबिसुत सब हाल बखाना। जेहिबिधि संतन ढिगते आना॥
सुनि यमबचन कहाऋषिराजू। बड़ अपराध कीन तुम आजू॥
संत महातम तुम नहिं जाना। जिन्हैं बखानत वेद पुराना॥
जगमहँ नहिंकोइ संत समाना। जिनबश सदारहत भगवाना॥
दासी शिशु मैं पाइ उछिष्टा। बिधिसुतभयोंऋषिनमहँशिष्टा॥
बूझेउँ हरि ते संग प्रभावा। तिनमोहिं जलचरपासपठावा॥

देखत मरेउ धरेउ बपु आना। पुनि शुकपहँ पठयो भगवाना॥
सोऊ निज शरीर तजि दयऊ। तब नृप सुत ते बूझत भयऊ॥
देखत आवा दिव्य बिमाना। तेहिचढ़ि बोला सुवनसुजाना॥
दो० प्रथमें में जलचर रह्यों जहां दरश तुम दीन।
तेहिफल पायों कीरतनु तहों कृपा तुमकीन॥
शुकतनुतजिनृपसुतभयों पुनिभे दरशतुम्हार।
अबनभ जात बिमानचढ़ि इतना लखाहमार॥
सो० सम्भाषण अस्पर्श करैं धरैं जे सेव उर।
तस्यसुकृतफलसर्सकहिनसकतश्रुतिसहसमुख॥
सुनि मोरे मन आनँद छावा। सन्तप्रभाव अमितलखिपावा॥
रहे बिप्र यह तिन के पासा। तुमअहिबन कतकीन्ह्योंग्रासा॥
साधुन राम राम जब टेरा। काहेन छांड़िदिह्यो तेहिंबेरा॥
अब ते कहा मानि मम लीजै। याको पठै धाम हरि दीजै॥
अस शौनक सतसंग प्रभावा। बड़पापी परधाम सिधावा॥
बायु पुराण केर इतिहासा। यहमें तुमते कीन प्रकाशा॥
नलिनी दलगत जल लव जैसे। नरजीवन है चंचल तैसे॥
क्षणहीं सज्जन संगति करई। तेहिनौकाचढ़ि भवनिधितरई॥
चहुं युग चहुं श्रुति कहैबुधलोई। बिनसतसंगति तरै न कोई॥
हारगीतिकाछंद॥ सतसंगबिननहिंतरै भवनिधि दानब्रतबरु बहुकरै। असजानि जेनरचतुरकरि सतसंगहरिनामैररै॥ जग आइ नरतनपाइ सपनेहुं साधकेढिगनागयो। तेहिजानियेपशुसरिसमानुषदेहभयतोकाभयो॥
दो० साधन के सतसंगकी महिमा अगम अपार।
बरणीजन रघुनाथकछु निजमतिकेअनुसार॥
इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतसतसंगमाहात्म्यबर्णनोनामएको नचत्वारिंशतमोऽध्यायः ३९॥

दो० सुमिरि रामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि।
कहौं नवम अस्कन्ध मत कछु ब्रह्मांडबखानि॥

बहुरि सूत बोले मृदुबानी। सुनो कथा ऋषिकहौंबखानी॥
एकबार यमराज प्रबीना। आपन दूत बोलि सब लीना॥
कह्यो कि मृत्युलोक के माहीं। तुम्हरा कोई दुसरिहानाहीं॥
एकबात यह जाने रहियो। साधुन को कर कभूनगहियो॥
वैतो हैं परमेश्वर प्यारे। रहैं राम कर बाना धारे॥
बैष्णव सठवां पूज्य सदाहीं। स्वर्ग रसातल भूतल माहीं॥
स्वर्गदेव अहितल अनुसरहीं। मनुजपूज्यमहिनिजहितकरहीं॥
तेहिते जो तुमहूं लखिपायो। तुरत दूरिते शीश नवायो॥
जो मम आपनि चह्यो भलाई। तो न सतायो संतहि जाई॥
साधु दुखावै त्रैफल पावै। तन धन कुटुंब नाश ह्वै जावै॥
जिन जिन बैर भक्तसों ठाना। पायनिदुखबहु सुनो प्रमाना॥

दो० हरनाकुश प्रहलाद ते दुर्योधन पंचालि।
कंस उग्र रावण अनुज भे सुकंठ अरु बालि॥

दुरबासा ऋषि बहु दुख पायो। अम्बरीष ते बैर बढ़ायो॥
नृप नृगभे गिरिगिट जगजाना। श्वपच भक्तको मरद्यौ माना॥
धृष्ट बुद्धिगा आपुइ मारा। चन्द्रहास का मरन बिचारा॥
सुरति सुधन्वा ते गस ठानी। शंखलिखितमुख छबिभैहानी॥
सुनत दूत बोले कर जोरी। कहौ नाथ बिस्तारि बहोरी॥
केहि बिधि दुर्बासा गे जारे। धृष्ट बुद्धि जे केहि बिधि मारे॥
नृगगिरिगिटभेकेहिबिधिआई। पृथक पृथक सब कहौ बुझाई॥
कह रबितनय कहौं मतियथा। प्रथमै अम्बरीष की कथा॥
राजा अम्बरीष बड़ साधू। तिनके उरमें क्षमा अगाधू॥
सब मन कृष्ण चरण में राखै। मुखते राम कथा नित भाषै॥
करसों हरि मन्दिरबर झारै। नयनन ते प्रभु रूप निहारै॥
सिरसि श्यामपद करतप्रणामा। रसनै प्रिय प्रसाद प्रभुनामा॥

श्रवणनि सुनै चरित हरिकेरे। अपर काज के जात न नेरे॥
कहँ लगि कहौं चरितमैं तिनके।व्यजनाहरिहिडोलायोजिनके॥
तिनके भवन गये दुर्बासा। तादिन रत नृप रहे उदासा॥
ऋषिहिदेखि भूपति सुखपायो। दीन निमंत्रण सबै टिकायो॥
रैनि जागरन करि उत्साहू। होत बिहान उठे नर नाहू॥
प्रात क्रिया करि आइ महीशा। जान्यो दुवादशी पल तीशा॥
बूझा गुरै बोलि का कीजै। पारनहमअब केहिबिधिलीजै॥
मुनिकी पूजा है युग यामा। होत बिरोध किहे दोउ कामा॥
भृगु मुनि कहा शिला हरिधोई। करहु पान कछु दोष न होई॥
दो० गुरुकी आज्ञा पाइकै नृप चरणोदक लीन।
दुरबासा ऋषि जानि तहँ आइ क्रोध अतिकीन॥
रे नृप हमैं निमंत्रण दीन्हे। तोहीं प्रथम पान जलकीन्हे॥
क्रोध अगिनि ते तव कुल जेता। करहुं भस्म शठ तोहिंसमेता॥
असकहि पटक्योजटाबिशाला। प्रगटीतुरत अगिनिकीज्वाला॥
सम्मुख चली भूपके जबहीं। नरपतिरामहिसुमिरेउतबहीं॥
चल्यो सुदर्शन चक्र कराला।अगिनिखाककरिमुनितबचाला॥
भागे ऋषि गे अज शरनाई। तेहि क्षण वृहदब्रह्म पुरछाई॥
कीन्ह बिदा ब्रह्मा बरिआई। हरि द्रोही को सकै बचाई॥
तब गे ऋषि शंकर के पासा। देखि शंभुअस बचन प्रकाशा॥
पढ्यो पुराण सहस सब बेदा। जान्यो नहिं भक्तन कर भेदा॥
महाप्रलय महँ बचत न कोई। तबहुं न नाश भक्त कर होई॥
अचल धाम साकेत बिहारी। निवसत तहां दिव्य बपुधारी॥
श्लोक॥ मार्कण्डेयपुराणेसदाशिववाक्यंदुर्बासाप्रति॥ महति निलयेब्रह्मन् ब्रह्माण्डोजलप्लुतः नतत्रनाशोभक्तानांसर्वेषांचबिशिष्यते १॥
ताते जाहु यहां ते भागी। नाहित जरी नगर ममआगी॥
तब बैकुंठ गये दुर्बासा। व्याकुलगात बचन परकाशा॥

हे ब्रह्मण्य देव आरत हर। शरणपाल पूरण करुणाकर॥
हाय हाय प्रभु लेहु बचाई। चक्रसुदर्शन देहि जराई॥
सुनु द्विज कहा रमापति टेरी। म्वहिंनहिं शक्तिबचावन केरी॥
हैंयहिबिधि अगणितगुण मेरे। भक्त बसलता के सब चेरे॥
यथा तमारि तेज के पासा। दीपोगण नहिंकरत प्रकाशा॥
भक्तन पराधीन हौं कैसे। पक्षी बँध्यो डारि महँ जैसे॥
साधुन मेरो उर अस गहेऊ। तिनतजि क्षणहूं जातनरहेऊ॥
दारागार पुत्र अप ताना। तन धन मोह मानिकल्याना॥
सकल त्यागिमम शरणै आवै। ते हमते कैसे तजि जावै॥
प्राणते अधिकभक्त प्रिय मोहीं। दुरबासा समुझावों तोहीं॥
तिनते बैर कीन्ह तुम जाई। भागो यहां न रहे भलाई॥
होत कसूर मोर कछु भाई। तो मम कहे माफ ह्वैजाई॥
सदा दास मम की रखवारी। फिरहि चक्रको सकै उबारी॥
ताते जो निज चहो उबारा। तो फिरि जाउ भूप दरबारा॥
बड़े दयालु दीन दुख हारी। देखत तुमकहँ लेहैं उबारी॥
ऐसे बचन कहे जगदीशा। सुनिऋषिचलेकाटिजनशीशा॥
अंबरीप ढिग पहुंचे जाई। भे शीतल नृप लीन बचाई॥
पद पखारि भोजन करवाये। तिन पाछे उठि आपहु पाये॥

दो० लज्जितह्वै ऋषिराजतब कीन्हों तपबनजाइ।
भावै सो बर मांगिये कह्यो रमापति आइ॥
दुरबासा बोले बिहँसि यह वर दीजै मोहिं।
दशसहस्त्र अँबरीपही जन्म धरनकहँहोहिं॥

सो० सुनि बोले भगवान अंबरीप मम भक्त है।
सोन धरी तनु आन देनकह्यो सो लेहुतुम॥

जन्म हजार आन के जोई। मम अवतार एक सम होई॥
ताते अंबरीप हित लागे। दश अवतार धरब हम आगे॥
सहज सुभाव प्रणत अनुरागी। नर तनुधरेउदास हितलागी॥

असप्रभु प्रणतपाल को आही। भजिबेयोगभजिय जगजाही॥
अपर देव आपै बर देवै। आपै मरण मांगि मुदलेवै॥
राम भक्ति बिन केवल ज्ञाना। सोउनिरस श्रम साधननाना॥
जैसे बिना पुरुष की नारी। केहिते दुख निजकहै बिचारी॥
पद बेलन्द परे जो पाऊं। तो लोकौ परलोक न ठाऊं॥
सौ भागिनी करै क्रम खोटा। तऊ ताहि बड़िपतिकी वोटा॥
गोपी गोप पांडुसुत पांचा। कौन कुकर्म करत तिन बांचा॥
कृष्ण कृपा सब ठां जय पाई। यज्ञ ऋषभ निज देह जराई॥

दो० भगवत गीता में कह्यो अर्जुन ते गोहराय।
भक्तियोग छीजै नहीं सबदिन बर्द्धत जाइ॥
भ्रष्ट भये पंथी सरिस कीन पंथ में बास।
भोरभयेपुनिचलिमिल्यो तिमिमोकोममदास॥
दैवी माया गुण मयी महा दुरत्यय पात।
ममआश्रयहवै अधमसो बिनप्रयासतरिजात॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथ दासरामसनेहीकृतअम्बरीष कथाबर्णनोनाम चत्वारिंशोऽध्यायः॥ ४०॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपगिरासुखदानि।
बरणौं जैमिनकीकथा कछु नृपनीति बखानि॥

पुनि यमराज कह्यो मृदुबानी। अम्बरीष की कथा बखानी॥
अब सुनु दूसरि कथा सुनाऊं। भूप एक केरल पति नाऊं॥
तिनके तनय भये चँद्रहासू। मूल नक्षत्र जन्म भा तासू॥
कछुदिनबादिबिपतिअसिजागी। शशि हांसै धाही लय भागी॥
कुन्तलपुर कुन्तलय नरेशा। जेहि नृप सब कर देइँहमेशा॥
तस्य देवान धृष्ट बुधि नामा। रहीआइ धाही तेहि धामा॥
करि किंकर पालन सुत सोई। तिनकर भेद न जानत कोई॥

यहि बिधि भये बरष षट केरे। बुद्धिवान अति रूप घनेरे॥
तेहियकदिनब्रह्मभोज प्रकाशा। जुरेऋषय तहँ गे शशिहासा॥
बिषया नाम सुता निज लीन्हे। बैठ देवान चिन्ह द्विजचीन्हे॥
यहि कन्या का याही बालक। बरी बिशेषि कह्यो उद्दालक॥
यहं सुता पतियहिबिधिचाही। दुष्टबोलि बन पठयो ताही॥
जाइ दुरन्तर बोले सोई। लेउ धाइ जो तुम्हरे होई॥
पिता मात पाये इत आयो। तिन हमका बध हेत पठायो॥
है यक गोली सुखद हमारी। भजि लीजै पुनि डारो मारी॥
रहे गण्डकी सुत मुख बीचा। पूज्यो मानस शिरकरि नीचा॥

दो० तदाकार ह्वै हतन हित दई नयन की सैन।
लखि जल्लादन के कठिन भई दया उर ऐन॥
हरि प्रेरित रघुनाथ थल बोले आपुस माहिं।
ऐसो सुन्दर बालयह बधन योग्यहैं नाहिं॥
छठी आंगुरीकर रहै काटिलिहिनिसोइचीन्ह।
शशि हासै बन छांड़िकै जाइ देवानै दीन्ह॥

सो० छांह किहे खगभाल चहुंदिशि बैठे घेरि मृग।
आयो इक महिपालनाम कुलिन्द्र अपुत्रसोइ॥

चन्द्रहास लखि लीन उठाई। प्रमुदित मनहु रंकनिधिपाई॥
गा लै भवन कीन उतसाहा। दिहेसिदानजाको जसचाहा॥
निज सुत समुझिपढ़ावतभयऊ। पुनिनृपराज तिलकसोदयऊ॥
लागे करन राज हरषाई। पालहिंप्रजहिं सुखीसबभाई॥
मनक्रम करै भक्ति हरि केरी। सन्त समागम प्रीति घनेरी॥
गृहगृह प्रतिहरि गुणगणहोई। रामनाम सुमिरत सब कोई॥
जो कोइ भक्त भवन चलिआवै। करि प्रणाम आसन बैठावै॥
षोड़श भांति पूजि सनमानै। हरि हर जनमें भेद न आनै॥
एक बार निज कटक बनाई। सुदिन साधि नृपचढ़ा बजाई॥
जहँ तहँ परी मारु नृप जीते। कोइकोइ आइ मिले भयभीते॥

सब सों रामभक्ति कबुलाई। करन कहै तब देवै जाई॥
यहि प्रकार नृप जीतिबसाये। पुनिनिजपुर चँदनावति आये॥
पितै पूंछि अरु मानि बड़ाई। नृप कुन्तल पै चौथि पठाई॥
पहुंचे भृत्य भूप दरबारा। दीन देवान खजाने डारा॥
सो० उतरे ताही धाम हरि बासर तेहि दिन रहै।
रामराम सियराम कहि निशि कीन्हो बास सब॥
भोर भये जागे सब प्राणी। आइ देवान कही कटु बाणी॥
काकुलिंद राजा तब पायो। हाइहाइ करि राति बितायो॥
बोले सेवक राजै कोई। मराकहै मरिगा सोइ होई॥
हमरे नृप कर सुत असभयऊ। सब भूपनते कर निजलयऊ॥
इन्हैं जानि जन चौथि पठाई। सुनि देवान मन संशय आई॥
सुत कुलिन्दके रहै न कोई। भयो कबै सुनि बोले सोई॥
भूप शिकार गयो यकबारा। मिल्यो तहां यकसुभगकुमारा॥
आनि भवन सुत मानि पढ़ायो। दीनराज तिन भक्ति बढ़ायो॥
सुनि देवान बिस्मय परेजा। सोइ न होइ जेहिमारनभेजा॥
तुरतै गयो महीपति पासा। हाथजोरि असबचन प्रकाशा॥
नाथ सुता मम भई सयानी। नृप सुत इकठहरत बरजानी॥
जो राउरकी आज्ञा पावों। महूं देखि निजनयनन आवों॥
सो० सुनिनृप आयसुदीन तुरत भवन निजआयहू।
बोलि मदनसुतलीन कहेसिजाव बरखोजहित।
ह्वै तयार चँदनावति गयऊ। चंद्रहार लखि आदर दयऊ॥
धृष्टबुद्धि सोइ बालक देखा। बहुरि बिचारेउमरण बिशेषा॥
दुखद दुष्ट अहि मंत्राधीना। खलबशहितविधिकछूनकीना॥
ऊपर हित अन्तर कुटिलाई। बोला बचन निकट बैठाई॥
खरच भूरि तुम्हरे लघुलाभा। बहुरि चहत मोहिं देवै काभा॥
जो इहवाँ आवै मम बस्ता। तौ करि देहुं तुम्हैं मैं सस्ता॥
कहचँद्रहास कौन बिधि आवै। तुमबिन उहां न कोऊ पावै॥

ताते तुमहीं जाउ सिधाई। चीन्हत उहां तुम्हैं सब भाई॥
चामरछंद॥ औरएक कामधाम लोगवागयो कहीं। जातचंद्र-
हासकोपठायदीजियेसहीं॥ देखिबेकिलालसादेखाइदेइआइये।
कग्दहीमदन्नतेजु बेगिमांगिलाइये॥
असकहि खलइकचीठीकीन्हो। तामें यह श्लोक लिखिदीन्हो॥
श्लोक॥ विषमस्मैप्रदातव्यंत्वयामदनशत्रवे। कार्य्याकार्य्येन
कर्त्तव्यकर्त्तव्यंकिलमेप्रियम् १॥
लै खत चंद्रहास चलि भयऊ। मारत हय कुन्तलपुर गयऊ॥
भूप बाटिका देखि सोहाई। उतरि नहान्यो सर सुखपाई॥
हरि पूजनकरि बसन बिछावा। बांधि अश्व सोये तेहि ठांवा॥
ताही समय महीप कुमारी। सखिनसहित आई फुलवारी॥
चम्पक मालिनि नाम सुधन्या। बिषयानाम देवान की कन्या॥
चंद्रहास को देखि लोभानी। पागपत्र खोल्यो निज पानी॥
बांचि पितहि खीझी मनमाहीं। मारन योग कुवँर ये नाहीं॥
काजरु पोंछि दृगन ते लीन्हो।बिषजहँतहँबिषयालिखिदीन्हो॥
शंभु शिवा बारे ते सेई। होहु प्रसन्न मिलैं बरयेई॥
छबिमय मूरति हृदय बसाई। नृपजा सहितभवननिजआई॥
चंद्रहास जागे लखि वारा। आये छिप्र देवान दुवारा॥
भेटि मदन करि पाती दीन्ह्यो। बांचिबेगि बड़आदर कीन्ह्यो॥
तुरत पुरोहित लीन्ह बोलाई। दईब्याहि बिषया सुखपाई॥
हरषित युवतिन मंगल गाये। बिप्रनदानबिबिधिबिधिपाये॥
बाजैं बाजन राग मिलावैं। नाचैं नटी चटपटी लावैं॥
दुसरे दिवस देवान सिधावा। बेगवन्त निजपुर का आवा॥
भाटन कीरति बिरचि सुनाऊ। श्रवण सुनतजनु लागतघाऊ॥
भवन जाइ सुत दूलह देख्यो। रागरंग बहुभांति परेख्यो॥
जरे अंग सुत बोलि रिसाना। किहे कहा यश तव परवाना॥
बांचिपत्र शिर पीटन लागा। लिख्योकहा मैं मन्द अभागा॥

पुनि मारन हितरचेसिउपावा। सुता अनाथ रहे मोहिंभावा॥
चन्द्रहास यद्यपि पग परेऊ। तद्यपि दुष्ट दया नहिं करेऊ॥
दो० दुष्ट न छांड़त दुष्टता कैसो होइ अधीन।
ज्यों जलकोमलमें चलै जोंकबक्रप्रतिलीन॥
पुत्रै नृप दरबार पठायो। आपु उभय जल्लाद बुलायो॥
बोला जाउ शक्ति मठदोऊ। डारेउ मारि जो आवै कोऊ॥
तब शठ चंद्रहास ते बोला। आवहु पूजि देवि कुल मोला॥
सुनत चले करतल धरिथारा। तेही समय कुन्तले भुवारा॥
बोला गुरुते शीश नवाई। होइ सुगति मोहि कहौ उपाई॥
कहगालवऋषिसिखसुनिलीजै। राजसुता चँद्रहासै दीजै॥
सबसों नेह गेह तजि राई। सीतापति सुमिरो बन जाई॥
सुनि नृपकहा अबै कोउ जावै। चन्द्रहास ममपास लै आवै॥
मदन बिचारि तुरत उठिधायो। पूजत जात पन्थ में पायो॥
बोला चलो भूप बोलवाया। देई राज काज निज आया॥
शिष्याक्तं० ॥ देवीपूजैहौंजावों। राजापैकैसेआवों॥ थारीमोको लावोजू। राजातीराजावोजू॥
देवी पूजै मदन सिधाये। चन्द्रहास राजा ढिगआये॥
देखत ब्याहि सुता निज दयऊ। राजतिलककरि बनकागयऊ॥
इहां मदनगे शक्ति निकेता। दुष्टन मारी खड्ग सचेता॥
धरते मुण्ड बिलगकरि दीन्हे। असफल खलसंगतिके कीन्हे॥
दो० दुष्ट संगतित जोकरै ताहू को दुख होइ।
देहजीव खोरिया घरी शिररसना मतिजोइ॥
देखि हाल काहू कही धृष्टबुद्धि सों जाय।
आयनिरवसुतशिलाशिरपटकि मराकहिहाय॥
जोजनका अनभलतकै सोइजाय शठखीस।
ज्यों रजतेमारै रबिहि उलटि परै निजशीस॥
चन्द्रहास सुनि यह सबहाला। निरबैरी समसन्त कृपाला॥

आयो चलि देवी के धामा। कीन शक्ति लखिनृत्यप्रणामा॥
बोली ये दोउ शत्रु तुम्हारे। महीं क्रोध करि आजु सँहारे॥
मांगहु बर जो तुम्हैं सोहाई। देहु मातु फिरि इन्हैं जियाई॥

छप्पयछंद॥ तस्कर केतुकधर्मदुष्टकेतुकगमखाना। किरपिनके कुतदानमूढ़केकुतविज्ञाना॥ कसबीकेकुतलाजशांतकुतनरकामिन कें॥ व्यसनीकेकुतद्रव्य धामकुतखलभामिनके॥ हिंसककेकुत दयादिल कपटीकेकुतमित्रसग॥ कहैंरघुनाथसनाथइमिहरिजन केकुतशत्रुजग॥

दो० दुर्जन तजै न दुष्टता सज्जन तजै न हेत।
कज्जल तजै न श्यामता मोती तजै न खेत॥

सुनिजियाय देवीदोउ दीन्ह्यो। सन्त सतायेकर फल चीन्ह्यो॥
कीन राज जल पङ्कज नाई। दीनि भक्ति भुव में फैलाई॥
हैं न जनै वृपदव जल जारै। यथा भूप तस प्रजा प्रचारै॥
जो यह कथा सुनै वा कहई। धनवृधि होय हरष में रहई॥
फल जैमिनमें बहुविधि राखा। ताते हौं संक्षेपै भाषा॥
देखो हरिजन ते करि द्रोहा। आपुइ दुख पायो बश मोहा॥
असिहरिभक्ति सुखदछलत्यागी। तनुधरि करै सोइ बड़भागी॥

दो० यस्य न विद्यादान तप जप न शील गुणधर्म।
ते मनुष्य महि भारहित प्रकटे नाहक ब्रह्म॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथ दासरामसनेहीकृतचन्द्रहासआख्यानबर्णनोनाम एकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपगिरासुखदानि।
कहौं उत्तराअर्द्धमत कछु धर्मोत्तर जानि॥

पुनि रबिसुत दूतन ते कहेऊ। चंद्रहासगुण सुनि तुमलहेऊ॥
और सुनो यक भयो भुवारा। नाम निरग जानत संसारा॥

चक्रवती नृप नीति निधाना। ठानै धर्म अनेक बिधाना॥
हरि वृषानखुर रजत मढ़ाई। जलज लूमगहि बसनवोढ़ाई॥
सुरभी सहस बिप्र कहँ देवै। तेहि पाछे जल अन्नहिं सेवै॥
तेहिपुर श्वपच भक्त यकरहई। देवक नाम ताहि सब कहई॥
सुजन जान हरि दायाकीन्ही। कामधेनु तेहिका प्रभु दीन्ही॥
पुर बासी बिप्रन लखि पाई। आइ भूपते बात चलाई॥

भुजंगप्रयातछंद॥ महाराजहैडोमकेएकगाई। नहींदूसरी तासमाभूलखाई॥ सुनीस्वर्गकेमाहिहैंधेनुऐसी। नजानीश्वपच नेलहीभांतिकैसी॥ भलीभांतितेजोइसेदानदेवै। मखैकोटिहूते परेपुण्यलेवै॥ सोतातेगऊआनिबिप्राहिदीजै। अमित्युन्यकोफल इसीधोसलीजै॥महीपालसुन्तैहियेलोभकीन्हो। कहीमोललावो अभीदामदीन्हो॥ गये बिप्रबोलेबिकतूधेनुतेरी। जुबेंचौकहाहौं नहींगाइमेरी॥ प्रभूकीअहैभोगपयकोलगावौं। बचैजौनिजूठन्महूं ताहिपावौं॥ भयोक्रोधबिप्रेगयोभूपपारी। कह्योनाथशूपचक मानभारी॥ गऊकोदुहैक्षीरघृतआपुखावै। तुम्हैंलेतजानीप्रभू कीबतावै॥ पशूशूद्रनारी शठंडोलयावत। बिनादंडदीन्हेनहां ठोकआवत॥

दो० कह महीप बिप्रहु सुनो श्वपच है हरिदास।
ताहि सतावै सोइ जो चहै निरै को बास॥

ताते हौं न सतावब साधू। पुण्य करत होई अपराधू॥
बोले बिप्र बहुरि हरषाता। स्वारथ रत अधर्म की बाता॥
सुनहु भूप यह है चण्डाला। कहा भयो पहिरे गर माला॥
श्वान खाल गंगा जल होई। ताहि पवित्र कहै नहिं कोई॥
क्षीर धारै मद भाजन माहां। होत कबहुं सो पावन नाहीं॥
तैसे भक्ति शूद्र की राजा। ताहि सताये कछु न अकाजा॥
मानहुं पितर बिप्र सुर गाई। होत महाफल जिन सेवकाई॥
यहिबिधिद्विजनकहासमुझाई। सुनि नृपके मन दुर्मति आई॥

बुद्धिवान कैसो होइ कोई। कहे सुने ते मति भ्रम होई॥
तब नृप सेवक ते असभाषा। लावहु छोरि धेनु करि भाषा॥
आयसु पाइ तुरत जन धाये। बरबस सुरभिभक्त की ल्याये॥
भक्त द्रोह लखि श्रीपति आपू। द्विजमुख नृपै देवायो शापू॥
निज अपराध प्रभुजात बचाई। भक्तदोष सोनहिं सहिजाई॥
सोइ सुरभी अरु गऊ हजारा। दई बिप्र कहँ एकै बारा॥
मुदित महीसुर ल्यायो धामा। फिरिआई सुरभी तेहि ठामा॥
दूजेदिननृप दान जो कीन्ह्यो। सहस संग ताहू को दीन्ह्यो॥
हांकिबिप्र निज भवनसिधावा। हेरत फिरत प्रथम जेहिपावा॥
बोला प्रथम मोरि यह गाई। दूसर कहै आजु मैं पाई॥
झगरत ये गे नृप दोउ पासा। क्रोधितह्वै अस बचन प्रकाशा॥
रे नृप तू अति है अन्याई। धेनुदिहेसिफिरिलिहेसिफिराई॥
बोले भूप क्रोध जनि कीजै। सहस धेनु यहि बदले लीजै॥
बोला प्रथम बिप्र सुनु राई। मैं तो लेब यहै निजु गाई॥
अपर देउ तुम कोटि ससाजा। तदपि होइनहिंयहिसमराजा॥
दूसर कह्यो मोहिं का कहई। दैकै दान लीन अब चहई॥
दुबिधा परि नृप शोच बढ़ावा। मूड़ हलावत बचन न आवा॥
शीशतोरि गिरिगिट समकापा। गिरिगिट होउ हमारे शापा॥
कहनृप बचन अमोघ तुम्हारा। होई किमि उद्धार हमारा॥
करुणा करि सो देउ बताई। सुनि बिनती बोले द्विजराई॥
द्वापर युग यदुबंश मँझारा। कृष्णचन्द्र लेहैं अवतारा॥
सुनु नृप तिनके चरणसनेहा। छूटी तब गिरिगिट की देहा॥
असकहिद्विजनिजमंदिर गयऊ। कालपाइयमगणगहिलयऊ॥
लैगे दूत धर्म दरबारा। पाप पुण्यका कीन बिचारा॥
पुण्यतेपाप भयो अधिकाई। प्रथमै कहा भुगितिहौ राई॥
बोले भूप बहुत जो होई। प्रथमै मोहिं भोगावो सोई॥
इतना कहत न लागी बारा। गिरिगिटकातनुधर्‌यो भुवारा॥

द्वारावती निकट इक कूपा। लाग्यो रहन तहां नर भूपा॥
दिव्य बरष शतजबचलिगयऊ। तब अवतार कृष्णकर भयऊ॥
बाल चरित कर कसै मारी। बसे आइ द्वारका मँझारी॥
तहँ इकदिन प्रभुयदुन समेता। आये बन शिकार के हेता॥
लागि तृषासब भये दुखारी। ढूंढ़हु जल अस कह्यो मुरारी॥
खोज करत पावा सोइ कूपा। किरकिल देहधरे जहँ भूपा॥
लागे सब काढ़न यदुबीरा। तबहुंन निकसै अधम शरीरा॥
बिप्रशाप अरु हरिजन कोपा। निकसै किमि पापनते तोपा॥
यदुन आइ तब हरिते कहेऊ। सुनिआये जहँनृगनृप रहेऊ॥
बाम चरण असपरस्यो जबहीं। दिव्यस्वरूपभयेनृप तबहीं॥
देखि चरित बोले यदुराई। को तुम अहो कहो सो गाई॥
कहनृप मैंहौं निरग नरेशा। जाकर दान बिदित सबदेशा॥
महिरजजलकन नभउड़ जाना। गनिनजातजिमितिमिममदाना॥
कहहरि कीन्ह्यो दान अपारा। कौनहेत गिरिगिट तनुधारा॥
तबनृप सब वृत्तान्त सुनावा। जेहिकारणगिरगिटतनुपावा॥

दो० दान बिभूषण लोकमें दान स्वर्ग सो पान।
दानदलैदुखदोषनहिंदानसरिसहितुआन॥

सुनिबोले गिरिधर करि छोहा। अबजनि करयो भक्तते द्रोहा॥
ममजन मोहिं प्राणते प्यारे। सदा रहत जे शरण हमारे॥
करहुं सदामैं तिनकी रक्षा। सँगसँग फिरौं यथा गोबक्षा॥
ममजनदिशि तिरछेलखकोऊ। लेहुं निकारि तासु दृगदोऊ॥
जोमम जनहिं चलावै हाथा। डारौं काटि तासुकर माथा॥
जोमम जनते बैर बढ़ावै। देहुं मिटाइ रहन नहिं पावै॥
पाष मास संबत त्रैपांचा। मद्धि बिनाश बचनममसांचा॥
तेहिपाछे यमदुख चौरासी। खर कूकर सूकर तनु पासी॥
जोममजन की सेवा करई। मानहुं ममसेवा अनुसरई॥
यद्यपिहौं स्वतंत्र सब भांती। तदपि रहत जनबशदिनराती॥

भक्त हमारे बांधव प्यारे। हम भक्तन के बंधु पियारे॥
मेरे भक्त गुरूहैं मेरे। हौंगुरु उन कर वैममचेरे॥
जहँमम भक्त सकलसुखतहवाँ। गंगादिक तीरथ सबजहवाँ॥
मेरेभक्त लगत जेहि प्यारे। तेबल्लभ हैं परम हमारे॥
बिषयिउ भक्त होइ जो कोई। अहै पवित्र तवहुं जनसोई॥
जिमि माशिशुहिसँवारिसभीती। देत दिठोना तिमिममरीती॥
भक्त दोष जो मनमें लावै। सोनर नीचनिरै दुखपावै॥
कीट पतंग आदि जो कोई। मुक्ति क्षेत्र सबकी गतिहोई॥
बैष्णव द्रोही सुगति न पावै। आगम शास्त्रबचन असगावै॥
श्लोक मुक्तिःकीटपतंगानां सर्बेषामिहदेहिनां॥
मुक्तिक्षेत्रमिदंप्राप्यवैष्णवद्वेषिणंबिना १॥
भक्तन की निन्दा जो करई। सोनर प्रगट कोललखिपरई॥
निन्दा विष्टा उदर न भरई। साधुन को पावन सित करई॥
जोवैष्णव की करै बड़ाई। निश्चय सोभवनिधितरिजाई॥
बैष्णव परम धर्ममै जानौ। परम धर्ममय बैष्णव मानौ॥
बैष्णव परमाराधन हेरे। परम गुरू बैष्णव सबकेरे॥
बैष्णव संगति करै जो भोजन। बिमलहोइकलिमलतेंसोजन॥
बैष्णव कर चरणा मृत पावै। कोटि जन्मकर पापनशावै॥
सन्त उछिष्टसहित जो खाहीं। ब्रह्महत्यादि पापनशि जाहीं॥
श्वपच होइ मम भक्तिहिकरई। सोइउत्तम सोइभवनिधितरई॥
जाको दीजै तासों लीजै। मोहिं समता की पूजन कीजै॥
भक्ति हीन जो होइ कुलीना। पण्डित जपतप ज्ञान प्रबीना॥
वाके सब गुण जानहु ऐसे। मृतक देह के मण्डन जैसे॥

दो० बिरचतसन्तजो अवनिपर तीरथ पावन हेत।
देखि डरैजो जगत को तिन्हैंपरमसुख देत॥

सो० संसृत सिंधु अपार तामधि बूड़तजीवसब।
तिन्हैं उतारन हार बोहितसन्तस्वरूपमम॥

मेरो संग सन्तको जानौ। सन्त सङ्ग मेरो करि मानौ॥
हे नृप मैं अरु वै द्वै नाहीं। मैहीं हौं सन्तन के माहीं॥
काहुइ अस तनु धरि उद्धारौं। काहुइ सन्त रूप ह्वै तारौं॥
सन्तन के चरणन के रेनू। मुक्ति भुक्ति दायक सुरधेनू॥
भक्त कहै सोई मैं करहूं। सन्तन के हित नरतन धरहूं॥
भक्त मोहिं हैं परम पियारे। सुनि नरेश तब बचन उचारे॥
प्रभुतुम जेहिआपनजन कहऊ। जिनकेबिवशदिवसनिशिरहऊ॥
तिनके लक्षण मोहिं सुनावो। जिनकीमहिमानिजमुखगावो॥
ह्वै प्रसन्न बोले प्रभु तत्क्षण। सुनहु भूप सन्तन के लक्षण॥
परम कृपाल द्रोह नहिं जानै। क्षमावन्त अरु सत्य बखानै॥
निन्दा रहित द्वन्द उर समता। पर उपकारी सुहृद नममता॥
आये काम बुद्धि थिर रहई। इन्द्रीजीति नम्रता गहई॥
अल्प असन एकान्त निवासी। सदाचार संग्रहन में बासी॥
शीतलचितयुतबिरति बिचारा। धर्मसहितनिजरहित बिकारा॥
दयावन्त षट उरमी जीता। मोह मान अपमान अतीता॥
ज्ञान मान प्रद परम प्रबीना। परसुखसुखलखिपरदुखदीना॥
मित्र मित्र हित मित्रहि खावैं। तेहि प्रकारनित मोको ध्यावैं॥
चारि प्रकार मुक्ति नहिं लेहीं। सब तजि मम सेवामन देहीं॥
दृढ़ बिश्वास न लोभ नरोषा। यथा लाभ तामें संतोषा॥
जोकोउ चलि शरणागत आवै। ज्योंत्योंकरि तेहिज्ञान उपावै॥
अनघ अजाति अशत्रु अचाही। आसन त्रासन सदगुणग्राही॥
प्रेम नेम दृढ़ शांति सरूपा। समचित सुखदुख निर्धनभूपा॥
दृष्टि पूतकरि महि पगु धरहीं। बस्त्र पूत जल पानहि करहीं॥
सत्य पूत करि बचन उचारैं। मनसि पूत करि कारज सारैं॥
यद्यपि बेद रूप मय गाये। बरणाश्रम के धर्म दृढ़ाये॥
सोउ शुभाशुभ ते सब तजहीं। काय बचनमन मोकहँभजहीं॥
मम आधीन सदाहीं रहई। साधनको बल भूलि न गहई॥

मोहींको करता करि मानैं। सपनेहुं उर आपा नहिं आनैं॥
दो० बैठे जहँजबसन्तमिलि। सात पांच इक ठौर।
तहँ मम बात चलावहीं। करैं न चरचा और॥
कोउ कहदश अवतार मुरारी। धरे सकल सुंदर सुखकारी॥
मीन बराह कमठ पहिंचानौ। नरहरि बावनभृगुपतिजानौ॥
राम चन्द्र नँद नन्दन लोने। नवम बोध निकलङ्की होने॥
दशमा ह्वै अवतार बिशाला। मनमोहन रघुपति नँदलाला॥
इन युग माको बड़ सुख रासी। बोले तब रघुनाथ उपासी॥
दो० राम हमारे बड़े हैं लघू तुम्हारे कान्ह।
केहिबिधिजाने जाइँनिज प्रभुताकरौबखान॥
प्रथमसोमकुलकृष्णतव शशिसमतेजप्रकाश।
भानुबंश श्रीरामजी रबिसमान द्युति भास॥
जन्म समय श्रीरामके भयो महा आनंद।
तब बसुदेव दुराइकै डारि गये गृह नंद॥
राम हमारे भूपहैं रैयत तुम्हरे लाल।
यशुमतिसुत नाथेवृषभ रामअस्थि अरुताल॥
बकी न मोहीदेत बिष असुर न मोह्यो कोइ।
मातुन मोही बाँधती मोही युवतिन लोइ॥
सो० युवतिन कीयहरीति पुरुष मनोहर देखि कै।
करहिं कामबश प्रीतिबहुरि बजाई बाँसुरी॥
दो० मोहन हमरे रामहैं कछून करतब कीन।
देवदनुज मुनिनागनर मोहिं बिलोकत लीन॥
जो कहौ कैकयिदीन बन तासु भेद घटिजात।
कह्यो संहिता में सुनौ एक समय सुर त्रात॥
बचन बन्धु करि मातुते कह्यो चतुर्दश बर्ष।
राजसमयमोहिंदिह्योबन सोइकीन्होंतजिहर्ष॥
कंसहि मारेउ कृष्णतब सो नरपति दुखदाय।

रावणबश सुरनर असुर ताहि बध्यो रघुराय ॥
वेदवती दशशीश ते कह्यो रहै मैं तोहिं।
तवपुर पैठि बिनाशिहौं हेतु गई तेहि सोहिं ॥
कृष्ण छोड़ाये मातुपितु निज २ का सबलोग।
राम नेवाजे देव मुनि मनुज आन तजि भोग ॥
प्रथम खबरि लगवाइ कै कूबर दीन सुधारि।
चरण परशि पावन करी रघुपति गौतम नारि ॥
जरासन्ध के समर मा गये भागि गोपाल।
पीठि न दीन्हीं रणबिषे काहुइ राम कृपाल ॥
चोरी कीन्ही कृष्ण तब पर भामिनिमें प्रीति।
राम न बोले झूंठ कछु भूलि न चले अनीति ॥
ब्रजपति बिधि वृषभेश कर हरेउ मान अवधेश।
विष्णुअंग भृगुनाथहू कीन्हें सुबश बिशेष ॥
कृष्ण गोबर्द्धन कर धरेउ यह सेवक को काम।
सोइ कारज सब कपिन ते करवायो श्रीराम ॥
कृष्ण पीन दावानलहि नाथ्यो काली नाग।
रामसेतु करिअरि समर अमित निवारे नाग ॥
बिप्र सुदामा मित्र ते तंदुल लै धन दीन।
राम कपीशबिभीषणहिं दुरदिनमेंनृप कौन ॥
सरबसदीन्ह्योंगोपिकनतदपितज्यो यदुराउ।
ऋणी भये हनुमानके अस रघुबीर सुभाउ ॥
कृष्ण शरण उद्धव भये पुनि पठये तप हेत।
तिन्हैं हमारे रामजी राज परम पददेत ॥
दशसहस्र दशसै बरष कीनि अवध वसिराज।
फिरियादी बकस्वान ह्वै भेइततो दिशिसमाज ॥
अहिमहिअंशसुअनुजसियदीन्ह्योंजगहितत्यागि।
आपु स्वपुर गे यान चढ़ि कृष्ण सकृत सरलागि ॥

[redacted]सहैं राम हमारे स्वामी। अखिल रूपके कारण नामी॥
अपर कहैं सिद्धांत हमारा। पूरण हैं सकलौ अवतारा॥
समझत में सब एकै अहईं। रूप धरे चौबिस श्रुति कहईं॥
हैं सब एककनक जिमि यद्यपि। होत नरा शिर तीसम तद्यपि॥
बोले अपर सकल श्रुति सारा। राम नाम है इष्ट हमारा॥
सुख दायक दुख पातक हरता। सब इष्टन को पूरण करता॥
ब्रह्मबहा बिन रामा होई। रा विन रघुपति कहैन कोई॥
मा बिन महादेव हा कहिये। रेफबिन्दुबिन प्रणवत लहिये॥
कृष्ण रहित राकसन कहावै। महाबीर बिन मान रहावै॥
रा बिन राधा धारहि जावैं। आबिन सीता सीत कहावैं॥
दुर्गा रमा शारदा भयरौं। गवरिगणेशआदिहरिगयरौं॥
करि बिचारि देखेबुध कोई। सबमंत्रन महँ अक्षर दोई॥
जीव यथा लघु तेहि बल जागै। देव सरिस फल देतजोमांगै॥
तेहि जाने बिन कछू न जानै। पशु समान तेहिबेद बखानै॥
नाम बिवश है रूप सदाहीं। रूपनाम बिन आवत नाहीं॥
बिनानाम पुरधाम न पावै। जानत नामकहत मिलिजावै॥
अगुन सगुन युग ब्रह्म कहावै। सुखप्रद परि तामें नहिंपावै॥

दो० ब्रह्म सो ब्यापक सकलघट आनँद अमल अखण्ड।
तदपि त्रसितजगजीवसबसहतबिबिधिबिधिदण्ड॥
प्रीति सहित जोनाम कहँ रटै राखि बिश्वास।
यहां सदा सुखमें रहै अन्त रामपुर बास॥
निरगुन ते बड़नाम यश सो मैं कह्यां बुझाइ।
अब सरगुनते कहत हौं सुनौ सुजन मनलाइ॥

नामरूप धरि असुर सँहारे। सुरनर मुनिसबकियेसुखारे॥
नाम जपतते सुखी सदाहीं। औरन के दुख देखिमिटाहीं॥
कृष्णकुनपधरिगिरिकरिलीन्हेउ।ब्रजबासिनकी रक्षा कीन्हेउ॥
नाम जप तअहिपति महिलीन्हे। भुवनचारिदशरजसम चीन्हे॥

रामकामअरि कर धनुभंजा। भृगुपतिसहितनृपनमदगंजा॥
नाम रसिक तृणसम संसारा। तोरहिंकलिखिसिआइबिचारा॥
कृष्ण एक दावानल पीन्हा। ग्वालबाल सब बाहेरकीन्हा॥
नामसुमिरिशिवबिषकियोपाना। जड़रुजीवजेहिसबजगजाना॥
राम गीध सेवरी मुनि नारी। ह्वै प्रसन्न भव भयते तारी॥
नाम सुमिरि शठ तरे अपारा। अजहूं जपत होत भवपारा॥
दो० राम सुकंठ बिभीषनै दीन्हि राजि निजकाज।
नामसुमिरिसज्जनतजहिंबातसरिसजगसाझ॥
राम सिन्धुमा सेतुकरि भये पारलै सैन।
नाम सुमिरि हनुमानगे कूदिपियो घटज्वैन॥
रामरावणहिंरणनिधनिकीन्हिराजिबसिबास।
नामजपतयुतमोहदल होत बिनय श्रमनास॥
राम कामकरि अनघ इक अवध जातलैधाम।
नाम उधारत तिहुंभुवन जो सुमिरै सहसाम।
हनुमत्संहितायांहनुमानबचनश्रीरामप्रतिश्लोक॥
रामत्वत्तोधिकंनामइतिमेनिश्चितामतिः।
त्वयैकतार्यतेयोध्यानाम्नाचभुवनत्रयं॥
असहै इष्ट हमार महाना। शिरधरिसबहिन कीनप्रमाना॥
जे अबूझ तेबाद बढ़ावैं। जाननहार महासुख पावैं॥
एक कहैं सबहै अभिरामा। नामरूप अरु लीला धामा॥
यहि प्रकार की बातें करहीं। मेरेहित आपुस महँ लरहीं॥
सोबातैं मोकहँ अतिभावैं। सुनौं जाय मैं तिनके ठावैं॥
जैसे बिपुल सुतन की बानी।सुनिहरषतपितुनिजसबजानी॥
तैसेमैं सुनि सुनि हरषाऊं। जाइँजहांजहँ तहँ चलिजाऊं॥
दो० प्रेम प्रशंसा बिनय युत बेग बचनये आहिं।
तेहितेहोत अनन्द चुरफुरउरलागत नाहिं॥
भक्तनके लक्षण सकल सुखद सुनायेतोहिं।

जिनकरिकैपक्षीसरिसनिजबशकीन्हेनिमोहिं।
सुनि नरेश अतिशय सुखपायो। संतनपदपुनिपुनिशिरनायो॥
देवदूत तेहि अवसर बीरा। लैबिमान आयेनृप तीरा॥
कृष्ण चरण शिर नाइ नरेशा। चढ़िबिमान गवन्योसुरदेशा॥

गीतिकाछंद॥ सुरलोकगवन्योभूपनृपतमकूपकेदुखनाशेहू। लखिदेवबरषिप्रसूनप्रभुतबयदुनतेपरकाशेहू॥ करिदानबशअभिमानकेनृप द्रोहहरिजनतेठयो। तेहिपापपायेतापद्विजकी शाप दरशनतेगयो॥ असजानिमनअनुमानिकबहूंसंतकोनसताइयो। बनिपरैकीजैसेवनहिं बनिपरैतौशिरनाइये॥ यहिभांतिकेसुनि बचनयमकेगणनअतिसुखपायहू॥ शिरनाइदण्डउठाइतबसब मृत्युलोक सिधायहू॥

दा० संतन को उत कर्ष जो कहै सुनै नित नेम।
बढ़ै भाव भक्तन बिषे कहै रघुनाथ सुक्षेम॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथ दासरामसनेहीकृतनृगप्रसंगसंतलक्षणबर्णनोनाम द्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२॥

दो० सुमिरि रामसियसंतगुरु गणपगिरा सुखदानि।
धर्मशास्त्र मतकहौं कछु मनुअस्मृतिजु बखानि॥
सुनि संतन की बिपुल बड़ाई। पुनि शौनक बोले शिर नाई॥
नाथ कहौ अस कौन उपाई। जा करिजीव सुखी होइजाई॥
कौन देवके सुमिरन जूटै। जेहि ते पितर नरकते छूटै॥
कौन देवहै सब फल दानो। सुनत सूत बोले मृदुबानी॥
शौनक सुनौ सत्य मोहिं पाहीं। राम समान आन सुर नाहीं॥
जिनके सुमिरण ते सुर सारे। बिनप्रियासही होत सुखारे॥
जिमि तरुमूल निषेचन माहीं। डारपातफल सब हरिआहीं॥
असजियजानिसकलबिधिदासारामहिंभजहिंतजहिंसबआसा॥

तीनि प्रकार भजन हरि केरा। ब्यासमुवन शुकदेव निवेरा॥
निष्कामी जो रामहिं ध्यावै। तासु बिवश प्रभुआपु रहावै॥
मोक्ष काम करि कोई सेवै। ताको राम मोक्ष पद देवै॥
सर्ब काम करि सेवै दासा। ताकी हरि पूजहिं सबआसा॥
ऐसे प्रभु के शरणौं आई। जासु कृपा अनु कृपा भलाई॥
अपर देव सेवै करि दुःखा। होइ प्रसन्न देहि जग सुःखा॥
जो सेवा बिधि बनै न कोई। कोपि बिनाश तासु करै सोई॥
ताते नारायण सम देवा। नहिं तिहुंकाल सत्ययह भेवा॥
दो० सर्बशास्त्रअवलोकिकै पुनि २ कीन बिचार॥
ध्यान योग मंगलकरन है रामै ततसार॥
जो निज पितर चहै निस्तारा। तौ हरि भक्ति करै बिस्तारा॥
जैसे क्रास महीपति तारे। सुनि शौनक पुनि बचनउचारे॥
हेप्रभु केहि प्रकार नरहारी। तारे पितर कहौ बिस्तारी॥
केहिबिधि भक्तिकरी हरिकेरी। बोले सूत सुनौ मनु फेरी॥
शेषर पुर इक बस्ती कहेऊ। क्रास नाम तामें नृप रहेऊ॥
अन्तसमय यम गणचलिआये। मारिबांधि निजलोकसिधाये॥
देखि भानु सुत लेखा लीन्हा। पुनि दूतनकहँआयसु दीन्हा॥
डारौ जाय नरक नृप एहू। चौदह लाख बर्ष दुख देहू॥
आयसु पाय नरक ढिग लाये। पीब रक्त जामें कृमि छाये॥
चाकल षोड़श योजन केरा। सोरा योजन गहिर निबेरा॥
परे जीव बूड़ैं उतराहीं। एकौ पल सुपास जहँनाहीं॥
तरे कीट तन करैं बेहाला। जारहिंमध्यअगिनिकीज्वाला॥
ऊपर यमगण मारहिं नाना। देखित्रास नृप क्रास डेराना॥
ताही नरक मांझ नृप केरे। पुरिषा रहैं एकोत्तरि हेरे॥
भूपहि लखि रोदन तिन ठाना। सुनिमहीपअसबचन बखाना॥
कोतुम हौ जो हमहिं निहारी। लागेहु रोदन करन पुकारी॥
हेनृप हम हैं पितर तुम्हारे। तुम हौ पुत्र हमारे प्यारे॥

बोले भूप बहुरि तिन पाहीं। काहे परेउ नरक के माहीं॥
कीतुम दान कबहुं नहिं कीन्हा। कीतुम बिप्रनकहँदुख दीन्हा॥
की संतहि बोलेहु कटु बानी। बोले बहुरि पितर सुत जानी॥
दीन्ह पुत्र शय्यादिक दाना। गजरथ बाजि पालकी नाना॥
पूजे देव बिपुल बहु भांती। बिप्र जेवाँये दिन अरु राती॥
ये सब कीन्ह द्रव्य पर आनी। ताते भई पुण्य की हानी॥
जीव मारि बहु कीन अहारा। ताते पावा नरक अपारा॥
जीव बधे कर पातक भारी। गावत कबिकोविद श्रुतिचारी॥
पुनि गुरुते हरि मंत्र न लीन्हा। ताते नरक बास यम दीन्हा॥
जेहि प्रभुनखशिख देह सवाँरी। जहँ तहँ रक्षा कीन्हि हमारी॥
तासु भजन हम कीन्ह न भूली। काहेन पुत्र अधो मुख झूली॥
अब लग रही तुम्हारी आसा। कबहुंक ह्वैहैं हरिके दासा॥
तब हमार होई निस्तारा। बसब जाइ सुरलोक मँझारा॥
सो तुमहूं हरिभक्ति न कीन्ह्यों। आइ निरै महँ बासा लीन्ह्यों॥
कह नृपजो अब छूटन पावहुं। तौ तुमका सुरलोक पठावहुं॥
ह्वै हरिभक्तभजहु भगवानहिं। जात पावहु पद निर्बाणहिं॥
सुनि बोले यमगण रे बंगा। प्रथमैं क्यों न रँगेहु हरिरंगा॥
अब यमजाल परेहु जब भाई। तब हरिभजन केरिसुधिआई॥
जैसे कोउ गृह पावक लागे। कूप खनावत अति अनुरागे॥
परत धार जिमि बबुर बवावै। होत युद्ध गढ़ नींव डरावै॥
तथा तुम्हार मनोरथ कारन। असकहिलगे नरकमहँडारन॥
तेहिअवसर इक हरिजन आये। तिन्हैं देखि यमके गण धाये॥
पद शिरनाइ कीन्ह अतिआदर। लाये बैवस्वत ढिग सादर॥
देखि कृतांत उठे हरषाई। करि दण्डवत लीन्ह उरलाई॥
कनक सिँहासन आसन दीन्हा। पद पखारि पादोदक लीन्हा॥
धूप दीप करि दोउ कर जोरी। लागे अस्तुति करन बहोरी॥
देखि प्रभाव नृपहु ढिग आवा। राम भक्त सों बिनती लावा॥

नमो नमो तुम पतितन तारन। नमोनमो प्रभुबिपतिनिवारन॥
नमो नमो तुम पर उपकारी। मोहिं नरक ते लेहु उबारी॥
सुनि बिनती भे संत दयाला। रबिसुत ते बोले ततकाला॥
याको छांड़ि फांसते दीजै। इतना कहा हमारो कीजै॥
करहि जाइ हरिभक्ति नरेशा। मिटहिं जाहिते सकलकलेशा॥
संतन कहा मानि यम लीन्हा। तुरतहि छांड़ि नरेशहिदीन्हा॥
ऐसे हैं हरिभक्त कृपाला। सहजनिकसिनरकरहिंनिहाला॥
छूट भूप मृतलोकहि आवा। मृतक देहनिज प्राण समावा॥
उठत नृपति भे लोग सुखारे। सकल कहैं बड़भाग हमारे॥

दो० तब महीप यमलोक की कथाकही सब गाइ।
जेहिबिधिदेखे पितरनिज दीन्होंसंत छोड़ाइ॥

यमपुर हम निज नयनन देखा। बिन हरिभक्तिमहादुख पेखा॥
तातेभक्ति करब अब हमहूं। जाते नरक न जाई कबहूं॥
बिप्र बोलि शुभ घरी सोधाई। केहि दिन शरण रामकीजाई॥
पत्रा लखि द्विज बचन उचारा। प्रातहि गुरुमुख होहु भुवारा॥
अस सुनि भूप दान बहु दीन्हा। करिसनमानबिदातब कीन्हा॥
जबते नृप हरि शरण बिचारी। तबते भे सब पितर सुखारी॥
बैठे निकरि नरक के पासा। कहैं कि सुत होई हरिदासा॥
कब हम जाब अमर पुर भाई। असकहिहुलसहिंहँसहिंठठाई॥

दो० तावत भरमत पित्र जग पिण्ड हेत हरिवार।
यावत कुल में कृष्णकर भक्त न होत कुमार॥

पद्मपुराणेश्लोक

तावत्भ्रमतिसंसारेपितरःपिण्डतत्पराः।
यावत्कुलेसुतःकृष्णभक्तियुक्तोनजायते॥

स्कंदपुराण

पचंतिनरकेपितरोन्नृत्यंतेचमुहुर्मुहुः॥
मद्वंशेबैष्णवोजातःसमेत्राताभविष्यति॥

इहांपुरोहित कीन्ह बिचारा। सबबिधिगा रोजिगार हमारा॥
जब राजा हरि का जन होई। ज्योतिष मंत्र न मानी कोई॥
नहिं अब धेनु बेढ़ाई कबहीं। पांच सातका देई हमहीं॥
सुनी ज्ञान जब सन्तन केरा। भाई नहीं बचन तब मेरा॥
हरि सेवा में मन चित देई। आनदेव को नाम न लेई॥
ताते सो अब करौं उपाई। जाते होइ न बैष्णव राई॥
सुनिबोलीद्विजभामिनितबहीं। नृपके भवन जाहु तुम अबहीं॥
रानीते अस कहउ बुझाई। शय्या निकट राउ नहिं आई॥
सुनि द्विजलै पंचांग सिधाये। तिसरे पहर भूप गृह आये॥
रानी लखि उठि माथ नवावा। आशिर्वाद दीन बैठावा॥
पत्राखोलि कही द्विज बाता। फेर्योबिधितुम्हार अहिवाता॥
सब बिधि बनारहै तवसाजा। पै अब चाहत होन अकाजा॥
कौन अकाज भूप जो काल्ही। लेई गुरुदिक्षा प्रण पाल्ही॥
तब तुम्हार सबभांति अकाजा। राजि पाटि सब छोड़ी राजा॥
भक्ति ज्ञान में मन चित लाई। घरको काम सकल बिसराई॥
तुम्हरे निकट न आई कबहीं। चलि होई तीरथ जब तबहां॥
ताते करहु यतन तुम सोई। जाते भूप न बैष्णव होई॥
कौनि यत्न कीजै सो गावहु। रूप मोहनी केर बनावहु॥
करि कटाक्ष मोह्यो नृप आजू। कामबिवशलखि कीन्हेउकाजू॥
बिप्रहि बिदा दर्विदै कीन्हा। अपना रूप रचन मनदीन्हा॥
जहँ लग त्रियन केर शृंगारा। अंगअंग अति सकल सवाँरा॥
निशा पाइ पति सेज सिधाई। हास बिलास कीन्ह सुखपाई॥
जब अनंग बश भूपहि जाना। पकरिखूटकरि बचन बखाना॥
स्वर्गलोक ते तुम फिरिआयहु। हमहिंनकछु दीन्हेउँसबपायहु॥
बोले नरपति मांगहु प्यारी। जो कछु इच्छा होइ तुम्हारी॥
बिधि हरिहर को सांची दीजै। तौ हम कन्त मांगु बरुलीजै॥
तब महीप त्रैदेवन केरी। खाई सौंह हरषि बहुतेरी॥

सुनि बोली पति यह बरदीजै। जहां राज तहँ भक्ति न कीजै॥
भक्ति किहे बड़ होत अकाजा। ताते मैं बरजत हौं राजा॥
दान पुण्य भल करहु भुवाला। जाकर फल पावहु ततकाला॥
सुनि महीप बोले अकुलाई। बनेहु न मांगत बर दुखदाई॥
जपतप यज्ञ दान बहु करहीं। भक्तिज्ञान बिन जीवनतरहीं॥
किहिनिदानतिन भक्तिबिहाई। तेगिरगिट अहिगजभे आई॥
ताते अब मोहिं आयसु देहू। कीजै भक्ति परम फल येहू॥
रानी सुनि पुनि वचन उचारा। प्रथमैं क्यों बाचा तुम हारा॥
देखहु शिव दधीच कस कीन्हा। बाचाबश आपन तन दीन्हा॥
नृप हरिचंद बड़े रजधानी। बाचा भरिनि डोम घर पानी॥
मधुकैटभ जिनकी महि मांटी। बाचाबश दीन्हेनि शिरकाटी॥
असुर गया सुरदानव अहई। बाचावश्य अधोमुख रहई॥
दशरथ देन कहेउ बरदाना। बचन न तजेहुतजेहुसुतप्राना॥
विष्णु बचन चपला मते हारा। तेहि ते आपन दधिसुतमारा॥
सोतुम छांड़त निज मुखभाखी। ब्रह्माविष्णुशिवहिकरिसाखी॥
परेहुभूप दुबिधा महँ कैसे। गहिमुख साँप छछूदरि जैसे॥
तजहुं भक्ति तौ नरकहि जैहौं। बाचा तजे अधिक दुख पैहौं॥
यहिबिधिनिजमनठीकजोआनी। दीन्हिसिछांड़िभक्तिअज्ञानी॥

दो० कल्प लता तजि मूढ़ जिमि किंशुक लावै कोइ।
सोइ कीन्ही नृप कासहू समुझे चहुं भल होइ॥

इतिश्रीबिश्रामसागर सबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथ दासरामसनेहीकृतराजाकासआख्यानबर्णनो नामत्रिचत्वारिंशोध्यायः॥ ४३॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरा सुखदानि।
बरणोंभारत की कथा कुचि तान्यौ मत आनि॥

तजतहिं भक्ति दूत यम केरे। पुरिषा बहुरि नरक महँ गेरे॥

ऊपर से मुद्गर शिर दयऊ। बिबिशतयोजन भीतरगयऊ॥
जब उछरत तब मारत धाई। कहैं कि अबक्यों उछरतआई॥
जेहि सुतकी तुम आश लगाई। द्विज रानी तेहि छला बनाई॥
दो० जानि बूझिनृप राम की दीन्हिसि भक्ति बिहाइ।
आपुहि परिहरि मन्दमति यही नरकमो आइ॥
यह सुनि नरकी करहिं पुकारा। केहि खल भुरयो पुत्रहमारा॥
द्विज हत्या ताके शिर दीन्हा। बैष्णव होत मनेजेहि कीन्हा॥
तेहि सम पापी अपर न पावा। हरष माहिं जेहिहमैं रोवावा॥
ऐसेबचनसकल मिलि बोलहिं। उछरहिंकबहुं२शिरखोलहिं॥
तेहि अवसर तहँ नारद आये। नरकिन ते असबचन सुनाये॥
परे अधोमुख पतित अपारा। तुम काहे बहु करत पुकारा॥
हे मुनि हमरे कुल नृप क्कासा। होन चहत राहै हरि दासा॥
दीन्हों बरजि ताहि अबकोई। तेहिते हमैं महा दुख होई॥
अजहूं जो ताको समुझावै। कोटि यज्ञ कीन्हें फल पावै॥
सुनि नारद के लागी दाया। नरकिन ते असबचनसुनाया॥
जो मैं सुत समुझावों तोरा। सत्य बचन नहिंमानी मोरा॥
जे जड़जीव हवैं जगमाहीं। सन्त कहा तेमानत नाहीं॥
कहैं कि धनहित करहिप्रबोधा। समुझै नहिं भक्तनका बोधा॥
नरकिन कहा सुनहु महराजा। ऐस बचन न बोली राजा॥
प्रथम देखिगा दशा हमारी। सुनतै अस्तुति करी तुम्हारी॥
जो कुजाति नहिं मानहिंबाता। गगरा खोदि देखायहु साता॥
गाड़ बीच अजिर के माहीं। मोहर भरेनृप जानत नाहीं॥
इतना सुनि मुनि तुरतसिधाये। बेगि भूप के मन्दिर आये॥
मुनिहिं बिलोकि दंडवत करेऊ। हाथ जोरि अस्तुतिअनुसरेऊ॥
धन्य आजु हम धन्य मुनीशा। तुम्हरो दरश दीन जगदीशा॥
जीवहि सुरलभ बस्तु अनेका। दुरलभ सन्त समागम एका॥
अब भोजन का कहिये भेवा। केहि बिधि मिलै रसोई देवा॥

कह नारद आदि क्षिति केरा। ससि बिष्टा सम जलमधुहेरा॥
शास्त्रन कानि केहू की राखै। पदुमपुराण बचन असभाखै॥

गौरीतंत्र श्लोक॥

कृष्णमंत्रविहीनस्य पापिष्ठस्यदुरात्मनः॥
श्वानबिष्टासमंचान्नं जलंचमदिरासमं॥ १॥

पद्म पुराणे॥

अवैष्णवास्तुयेबिप्रा चण्डालादधमास्स्मृताः॥
तेषांसंभाषणस्पर्शसोमपानादिबर्जयेत॥ २॥

स्कंद पुराणे॥

अवैष्णवगृहेभुक्ता पीत्वावाज्ञानतोपिवा॥
शुद्धिश्चांद्रायणेप्रोक्ताइष्टापूर्तंवृथासदा॥ ३॥

राम मंत्रतुम सुना न काना। आज्ञा मांगत कौने ज्ञाना॥
नरतनलहिहरिभक्तिनकीन्ह्यो। झूंठेजगत माहिं मनदीन्ह्यो॥
देख्यो तुम नृपयमपुरसासति। तदपिहृदयनहिं आई दहसति॥
बड़े भागते छूटन पायो। इहां आइ पुनि ज्ञान गवाँयो॥
प्रसवसमयजिमित्रियपतित्यागै। दुखबीते फिरि तासों पागै॥
तेहि प्रकार तव मतिभइराजा। जानिबूझिनिजकिहेउअकाजा॥
पुरिषा देखिनरक महँ आयहु। भक्तिकौलकरिसुधिबिसरायहु॥
बोले भूप सुनहु मुनि ज्ञानी। रूप सवाँरि छला मोहिंरानी॥
मांगिसि वर करि कौलकरारा। कहिसिकरौजनिभक्तिभुवारा॥
तबमैं ताहि बहुत समुझावा। वाकेमन तनकहु नहिं आवा॥
बाचा की सुनि कानि बिचारी। तेहिते हमहरि भक्तिबिसारी॥
कह नारद सुनिये नृप भेदा। नारि सुभाव कहत असवेदा॥
रहित अचार बिचार बिहीना। परम भयाकुल छलबलपीना॥
चंचल बुद्धि चपल अवगाही। सदाअकच्छलागिमुखस्याही॥
श्रवण नासिका भेद अभंगा। बिगतप्रसादमलिन सबअंगा॥
इतने अवगुण नारि मझारा। कसन करै नृप तव अपकारा॥

दुष्टनारि मत मानैं सोई। तव समाजनीचेर जो होई॥
जेजेभे भामिनि बश राजा। तिनसबहिनकाभयउअकाजा॥
शशि शृंगीऋषिबिधि सुरराई। अपर प्रसंग सुनो मनलाई॥
कुंडल नाम रहै द्विज एका। उग्रबुद्धिघर द्रव्य न नेका॥
निर्द्धन जानि तासु की नारी। नितउठि देहि हजारन गारी॥
इकदिनद्विजनिजपुस्तकलीन्हा। उठि परदेश पयाना कीन्हा॥
तेहिमग इक तड़ागलखिपावा। करिमज्जनशिरतिलकलगावा॥
पुनि हरिकथाकहनद्विजलागा। बांबी मध्य रहै इकनागा॥
तेहि हरि कथासुनी सुखमाना। तपनिमिटीकछु हृदय जुड़ाना॥
लागे करन बिसर्जन जबहीं। आवानिकटनिकसिअहितबहीं॥
मोहर एक धरि बोला बानी। को तुमअहउ कहउसुखदानी॥
कुंडल कहा बिप्र हम होई। विद्याधर जानत सब कोई॥
विधि अनकृपापरमदुखपायन। अब धनहित परदेशसिधायन॥
बोला सर्प दूरि जन जावो। हमका हरि की कथा सुनावो॥
मोहर एक देबे नित तोहीं। काहुइपै न बतायहु मोहीं॥
यहसुनिद्विजमनहरषितभयऊ। निकटहि रामलाभकरिदयऊ॥
लाग सुनावन बिबिधि पुराना। पावहि एक मोहर नितदाना॥
भा धनवान महल बनवावा। शुभगबाजि निजद्वार बँधावा॥
भूषण बसन अनेक प्रकारा। पहिरै आपु सहित सुतदारा॥
एकदिन भवन परोसिनिआई। बोली करकलते हरुगाई॥
तुमतौ रहिउ दुखित धनहीना। किनतुमका यहसम्पतिदीना॥
बाली बिप्र बधूसुनु माई। को जानै कहँवाँ पतिपाई॥
जो तुमते पति भेद न गावा। तौ केहिकाम धाम धन पावा॥
पुरुष नारि ते अन्तर करई। तौ सम्पति पावक महँपरई॥
तहिते पूंछेहु आजु सँभारी। असकहि चलीगई सो नारी॥
द्विज भामिनि तबरही रिसाई। दीन्हेसिअभरणसकलचलाई॥
द्विज पुस्तकपढ़िघर जबआवा। दुखित देखिअसबचनसुनावा॥

कौनि व्यथा तोरे मनमाहीं। सोसबकहउप्रियामोहिंपाहीं॥
कैयोबार बिप्र जब बूझा। बोली तब तुमका नहिं सूझा॥
रहेउ रंक अब सम्पति लहेऊ। कितसों हमते भेद न कहेऊ॥
सुनि बोला द्विज शिरकरधारी। याहीहित कीन्हेउ रिसभारी॥
भूषण सजहु तजहु मन खेदा। सुनो कहउं मैं धनकर भेदा॥
पुर दक्षिण है एक तड़ागा। तेहितट रहत हवै यकनागा॥
दिन प्रति ताहिपुराण सुनावों। मोहर एक तहँवांमैं पावों॥
इतना सुनिउठि भोजनकीन्हा। पतिसुत तिन्हैं जेंवावै लीन्हा॥
निशा पाय द्विज सोवन लागा। बोली सुतते करि अनुरागा॥
सरके निकट आजु तुम जावो। सर्पहि मारि द्रव्यखनिलावो॥
सुनि पोथी कुदारि गहिलयऊ। भोर होत सरके तट गयऊ॥
तक्षक दीख बिप्र सुत आवा। लखि कुदारि मनशोचबढ़ावा॥
कीन्ह बिप्रजब कथा प्रसंगा। निज बांबीते सुनहि भुजंगा॥
तब द्विजबिबिधि रागिनीफेरी। तदपिन लागिघाततेहि केरी॥

दो० करन बिसर्जन लागजब तब निकसा सो ब्याल।
मोहर एक चढ़ाइकै बहुरि फिरा ततकाल॥

भीतर भवन हलन नहिं पावा। ऊपर दुष्ट कुदारि चलावा॥
कछुक पूंछ कटिगै अहि केरी। काटिसिघुमरिमरातेहिबेरी॥
इहां बिप्र जाग्यो परभाता। सुतकित गा पूंछी यहबाता॥
बोलीत्रिय कछु कामहिं गयऊ। सुनिब्राह्मणकेबिस्मयभयऊ॥
उठा तुरत द्विज अहि ढिगआवा। मृतकतहां निजबालकपावा॥
रोदन कीन्ह लीन उरलाई। कीन्हक्रियाबिधिवतघरआई॥
कछुदिन बादि सर्पढिग आयो। धरि धीरजअसबचनसुनायो॥
आय पुराण सुनहु यजमाना। केहि कारण हमतेदुखमाना॥
बोला अहि अब सो रस गयऊ। जबतेतुमबनितहिकहिदयऊ॥
तुम्हरे सुतकर शोच अपारा। हमरे लूमकेर दुखभारा॥
तेहिते जाहु घूमिनिज धामा। अब हमते तुमते नहिं कामा॥

यहसुनि बिप्र पलटि गृह आवा। सुतकरदुखकछुधनदुख पावा॥
देखहु भूप नारि बश भयऊ। द्रव्यलाभ सुत दूनहु गयऊ॥
जैसे बिप्र कीन्ह निज हानी। तेहि प्रकार तवमतिबौरानी॥
दो० भवगतभजन छोड़ाइ निज धर्म दृढ़ावै कोइ।
ताहि त्यागिये शत्रु सम परमहितूकिनहोइ॥
तज्यो पितै प्रहलाद मा भरत बिभीषणभाइ।
गुरुबलि ब्रजबनिताबरनिभेसबमंगलदाइ॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथ दास रामसनेहीकृतकासनारदसम्बादकुण्डलप्रसंगबर्णनो नामचत्वारिंशोऽध्यायः ४४॥

दो० सुमिरि रामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि।
महभारत सदग्रंथकी कहौं इतिहास बखानि॥
अपर सुनो परसंग सुनावों। जनीचेर का रूप लखावों॥
जब भारत कर भा आरंभा। चले पांडुसुत गाड़न खंभा॥
दो० बोले तब सहदेव ते प्रमुदित चारो भाइ।
होइ जीत जेहिभांतिसों साइति देहुबताइ॥
कह सहदेव सुनहु बलवाना। प्रथमैं उनत कीन बखाना॥
अब तुमका केहि भांति बताई। तेहिते सगुनसुनहु यकभाई॥
इस्त्री चेरि पुरुष जो पावो। ताहि आनि कुरुक्षत्र गड़ावो॥
ऐहैं चलि जम्बुक तहँ दिनते। सकल भेद तुम पैहौ तिनते॥
यह सुनि ढूंढ़न भीमसिधाये। घूमत एक नगर महँ आये॥
तेहि पुर रहत रहै यक तेली। सुनहु तासुकी रीति नवेली॥
बैठी पलँग तासु की बामा। अपना करहि धामकर कामा॥
झारि पोतिघर जलभरिलावै। कूटि पीसिपुनि अशन बनावै॥
ताहि पवाइ खाय तब अपना। बहुरिकरै सब टहल अलपना॥
एक दिवस गै आगि बुझाई। रविदिन मांगि फिरानहिंपाई॥

तब बनिता बोली ता केरी। है पग लाग महाउर मेरो॥
जो तुम कन्ध चढ़ावहु मोहीं। आनिदेउँ मैं पावक तोहीं॥
सुनतहि लीन्हेसि कन्ध चढ़ाई। चला मुदित मनलाजबिहाई॥
मांगै जाइ अग्नि जेहि द्वारे। ताल बजावहिं बालक सारे॥
प्रमदासम हँसिहँसिअसबोलै। भले आगिये मांगत डोलै॥
कोउ निलज्ज कहिदेवै गारी। कोउ कहै नीच डारिदे नारी॥
करहिंकुबुद्धिनीइहिबिधिबाता। हमैं न असबर दीन्ह बिधाता॥
पुरुष देखि पुरुषन ते कहईं। येदोऊ निलज्ज बड़ अहईं॥
जो इमि होती नारि हमारी। डरतेन ताहि जानते मारी॥
एक कहै अस दैव न करई। दुष्ट नारि नर पाले परई॥

दो० दुष्ट भार्य्या मित्र शठ उत्तर दायक भृत्यु।
सर्प सहितगृहबासरिपु सबलसोजीवतमृत्यु॥

यह सब चरित भीम जबदेखा। जनी चेरिनिश्चय करिलेखा॥
नारि उतारि ताहि धरि लायो। कुरुक्षेत्र के माहिं गड़ायो॥
आपु रहे छिपि चढ़ि तरु डारा। आये तहँ तब बहुत सियारा॥

दो० तेहितेलीके अंग सब सूंघे एक सियार।
बोला मांस अशुद्धहै हम नहिं करब अहार॥

जो हम याको भक्षण करिबे। कोटिन बर्ष नरक महँपरिबे॥
तब जंबुक सब पूछन लागे। है अशुद्ध केहि कारण पागे॥
सुनि जंबुक तब उत्तर दीन्हा। यहिकबहूंशुभ कर्म न कीन्हा॥
नारिहि के डर डरत रहावा। हरि गुरु जनपदशीशननावा॥
तेहिते शिर अशुद्ध है भाई। जानिबूझिहमकेहि बिधिखाई॥
सुनिअशुद्धगुरुमंत्र न लीन्हेसि। दृगमलीनजनदरशनकीन्हेसि॥
मुखअशुद्ध हरि नाम न टेरिसि। गरअशुद्ध तुलसीनहिं गेरिसि॥
करअशुद्धकुछकिहिसि न दाना। उर अशुद्ध दण्डवत न ठाना॥
उदर अशुद्ध प्रसाद न खाइसि। पग अशुद्धतीरथनसिधाइसि॥
श्रुति सियार सुत बोला ताता। कीन्ह्यो तुम अशुद्ध सबगाता॥

हमें लागिहै भूख अपारा। कहौ काहि अब करी अहारा॥
तब जंबुक सब शिशुन प्रबोधा। आजुकेदिन सुतकरहुसमोधा॥
काल्हि युद्ध होई यहि ठावै। खायहु पल जितनामनभावै॥
चलिहैं अस्त्र शस्त्र बिधि नाना। जुझिहैं बड़े बड़े धर्म वाना॥
भक्षण कीन्हे जिन कर मांसा। होई हमहिं देवपुर बासा॥
पुनि सियार सुतबोले बाता। को जीती को हारी ताता॥
जंबुक कहा जीतिहैं सोई। प्रथमैं ध्वजा रोपिहैं जोई॥
लखि यह सगुनभीमघर आये। बलकनसहितसियारसिधाये॥
देखहु नृप त्रियके बश भयऊ। डरकरिरामभक्ति तजिदयऊ॥
जंबुकहू नहिं खाइनि ताही। तैसी गति नृप तुम्हरी आही॥
अति अकाज रानी तव कीन्हा। भक्तिमाहिं बाधा करिदीन्हा॥
करै कहा अबला कर सोई। तोहि समान पतित जो होई॥
यह सुनि राजा बहुत लजाना। माथ नाइ अस बचन बखाना॥
साँचहु मैं निज कीन्ह अकाजू। अस प्रभुनाम सुनावहु आजू॥
नारद कहा तयारी कीजै। तबतो राम मंत्र हम दीजै॥
यह सुनि नृप मंत्री हक रावा। भीतर बाहर भवन लिपावा॥
कुम्भ पुराण सकल करि दूरी। नूतन कलश धरे जलपूरी॥
बिप्र बैष्णवन सकल बोलाये। गुरुमुख होत जानिसबआये॥
भई भीर नृप द्वार अपारा। बाजहिं ताल मृदंग सितारा॥
गन्धर्ब करहिं राम गुण गाना। लखिसमाजभूपति हरषाना॥
तब बोले ऋषिते कर जोरी। अब का आयसु होत बहोरी॥
कह नारद रानी ढिग जावो। ताहू ते आयसु लै आवो॥
जो न मुदित मन आज्ञा देही। लाग्यो मारन तुरतै तेही॥

दो० भले नाथ कहि भूप तब गे रानी के पास।
बोले आयसु देहु अब होई हरिके दास॥

सुनि रानी अस बचन उचारा। नृप हरिगाहै ज्ञान तुम्हारा॥
हमतुमका बहु बिधि समुझावा। तदपि तुम्हारे मन नहिंआवा॥

इतना सुनि नृप मारन लागा। बोली तुरत सहित अनुरागा॥
हे पति मैं यहि बिधिपरकाशा। हमहूं तुम होई हरि दासा॥
बैष्णव कंथ अबैष्णव नारी। ऊंट बैल कर जोत बिचारी॥
पुरके लोग सुनत डर पाये। गुरु दिक्षा हितसबचलिआये॥
तब नारद अति करुणा कीन्हा। बाहु मूल रामायुध दीन्हा॥
ऊर्द्ध पुण्य पुनि तिलकलगायो। द्वादश मंत्र सहित सोन्हायो॥
धरयो बहुरि हरिमिश्रितनामा। पहिराई तुलसी की दामा॥
तेहि पाछ कछु आहुति कीन्हों। राम मंत्रमहि पालहि दीन्हों॥

दा० राम मंत्र गुरु बदन ते जेहि उर करहि प्रबेश॥
होत शुद्ध सो तुरत इमि कहत संहिताशेष॥
सर्ब मंत्र ते अधिक है बैष्णव मंत्र अखेद।
विष्णु मंत्रहू ते अधिक राम मंत्र बद वेद॥
ब्रह्महत्या गुरु तल्पगा स्वर्ण चौरमदिराप।
सर्बन्येव बिहंसि अघ राम मंत्र को जाप॥

जब हरि मंत्र सुना नृप काना। पुरिखा सबचढ़िगये बिमाना॥
पुनि रानी को मंत्र सुनावा। तेहि पाछे आवा सोइ पावा॥
तब नृप द्विजन दक्षिणादीन्हा। सबविधितोषसबनकरकीन्हा॥
सो शोभा सुख बरणि न जाई। रही भक्ति सब पुरमा छाई॥
जहँ तहँ होहिं चरित हरि केरे। जपैं नाम सब सांझ सबेरे॥
कह नारद मैं देखों जाई। तव पुरिखन कैसी गति पाई॥
सुनिमुनिबचनबिदानृपकीन्हा। तब सातोगगरा कहिदीन्हा॥
तव पितरन है मोहिं बताये। असकहिऋषियमलोकहिआये॥
दूतन ते अस पूंछा जाई। नरकी वै कित गये सिधाई॥
सुनि दीन्हेनि उत्तर यमदूता। राम दास भा उनकर पूता॥
तहि ते वै सुरलोक पधारे। छूंछे परे हैं नरक हमारे॥
सुनि नारद के भा सुखभारी। आये चलि बैकुंठ मँझारी॥
बैठ रहैं तहां यम राजा। दूतन सहित आपने काजा॥

जब मुनीश हरिपद शिरनावा। तबप्रभु ऋषिते बचनसुनावा॥
आये हैं रबि सुत फिरियादी। कहैंकि हम बैठे हनुबादी॥
नारद भक्ति दृढ़ाइ तुम्हारी। खाली कीन्हेनि पुरीहमारी॥
जगमहँ सब होइहैं तव दासा। को आई फिरि हमरे पासा॥
तेहिते अब हम जाबनतहँवां। पापी सब आवत हैं जहँवां॥
केतनौ मैं इन का समुझावा। तदपि न मानतमोर मनावा॥
कह नारद हम कीजै काहा। जेहि ते मानिजाइ यमनाहा॥
बोले धर्मराज तुम जाहू। जग में भरमावो सब काहू॥
जेहि ते राम भक्ति तजि सारे। आवहिं तब सबलोकहमारे॥
कह नारद हमते नहिं होई। कोटि उपाइ करहुकिन कोई॥
तुम चाहौ भरमावो जाई। हरिहू कहा भला है भाई॥
जे होइहैं दृढ़ भक्त हमारे। ते नहिं लगिहैं कहे तुम्हारे॥
तजिहैं भक्ति मोरि नहिं कबहीं। सुनिचलिभेरबिकेसुत तबहीं॥
आये भूप कास के ग्रामा। नाउतरूप बना यक तामा॥
लाग हलावन दोउकर शीशा। अपर बजावहिंबाजनबीसा॥
कौतुक देखि लोग जुरिआये। माथ नाइ अस बचन सुनाये॥
किमि होवै हमारि कुशलाता। देहु बताइ कृपाकरि दाता॥
बोला जो चाहौ कल्याना। तौ तुम सेवहु बीर मशाना॥
पूजहु शक्ति भक्ति करि भारी। पावहु तुरत पुत्र धन नारी॥
की भैरवँ मरही का सेवो। अजयापुत्र महिष बलिदेवो॥
इन ते मन बांछित फल पैहौ। जेहिकोपिहौतेहितुरतनशैहौ॥
क्षेतरपालहि पूजहु कोई। तेहि के बिघ्न कबहूं होई॥
पांचहु पीरन में मन देहू। जिनते मनबांछित फल लेहू॥
महाबीर हैं शंकर देवा। मिलहिंनकछुफलइनकीसेवा॥
दानवत्ति बहु हैं जगमाहीं। को जानहिंफल मिलैकिनाहीं॥
राम भक्ति जो बेदन गाई। सोतौ है अतिशय दुखदाई॥
जो नर हरिकी भक्ति प्रकाशै। सुतबित नारि तासु की नाशै॥

रोग भोग बहु भांति सतावै। जहँ निकसै तहँ हँसी करावै॥
यहिविधिकष्टसहै बहु काला। तब कबहूं हरि होइँ दयाला॥
तेहि पर ताहि कछू नहिंदेहीं। मूरख यहि मत कामनदेहीं॥
सुनिसुनि दूतन की असिबानी। हरि तेबिमुख भयेबहु प्रानी॥
राम भक्त जे रहैं सुजाना। तिनतनको बिश्वासन आना॥
जे मति मन्द बिषय रस पागे। ते प्रभु का तजि पूजन लागे॥
बनितन का देहौं इमि सीखा। गलिन २ मिलि मांगहुभीखा॥
लूटि बजार भक्ति कहँ पूजौ। मिटहिसकलदुखसुखनितभूजौ॥
काहुइ यंत्र मंत्र सिखराये। काहुइ भूत चढ़ाय छुड़ाये॥
काहुइदिहिन सुता सुत नाती। काहुइ दीन्हे निधन बहु भांती॥
एकहु बात कबहुं फुर होई। सकल सत्यकरि मानहिं सोई॥

दो० यहि बिधि जग भरमाइकै गेयमपुर यमदूत।
सोई रीति संसार में अजहूं है कह सूत॥

छन्द॥ कहसूतअजहूंरीतिसोईरहीजगमेंछायकै। सचमानि नरसबकरतजेहितेपरतअघमेंआइकै॥ मतिधीरजेगम्भीरजनते झूठमनमेंजानिकै। तजिभर्मनानाधर्महरिकीशरणभेसुखमानिकै॥

दो० राम भक्ति दृढ़करन हित हरन भर्म तमरूप।
बरणीजन रघुनाथतेहि यह इतिहास अनूप॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथ दासरामसनेहीकृतराजाकासकथाबर्णनोनाम पंचचत्वारिंशोध्यायः ४५॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि।
भक्ति रत्न मतकहौंकछु पातांजलजु बखानि॥
कहशौनक नौधा भगति कहौ योग युतमोहिं।
जो बरण्यौ ऋषि कासते सोइ सुनावौ तोहिं॥
भाजबशिष्य नारद कर राजा। बोला तबहितसहितसमाजा॥

नाथ भये सब शरण तुम्हारी। बिन गुरु होत न दृढ़ता भारी॥
जिमि शिशुअंब दूध बिनपीन्हें। मरै न भरै क्षीनता लीन्हें॥
कह नारद सुनु भूप प्रसंगा। हैं हरि भक्ति केर नव अंगा॥
दो० श्रवणकीरतन स्मरण पद सेवन अरचन्य।
बन्दन दास्य सखात्मनय वेदन नवये गन्य॥
दशईं प्रेम लक्षणा जानो। पृथक् २ अस सकल बखानो॥
जो हरि कथा सुनै मन लाई। तासु श्रवण मग हरिउरआई॥
बसि पंकज अघनाशैं कैसे। शरदकाल जल मल हरै जैसे॥
बिषई बिरत बिमुक्त उमाही। हरिगुणसुनन सबनकहँचाही॥
बीत राग हरि चरितते कोभा। ह्वैकरि कोइकिलहैं कहुंशोभा॥
अज गिरीश योगेश्वर आदी। अपरभये जे मुनि श्रुतिबादी॥
रामचरितसुनि कोउन छकन्दा। अवनरुचै तेहि जानहु मन्दा॥
जो नर हरिगुण सुनै न काना। सो खर ऊंटकोलसम स्वाना॥
भयो निरादर भाजन भारी। तेहितें श्वान कह्यो निरधारी॥
असद बात बहु बिधिके परणा। चरत ऊंट सम तातें बरणा॥
बहै भार अहको दिनराती। तेहितें खरसम कह्यों कुजाती॥
अमित अनन्द कथाके माहीं। श्रवण समेत सुनै को नाहीं॥
दो० प्रवरा चात्रिक हंस शुक मीन मच्छिका बयल।
श्रोता द्वादश भांति के मधुवृक तमचुर शयल॥
द्वादश में षट उत्तम जानो। अपर अधम अब दोषबखानो॥
अन्य मान दृग लोग अधीरा। पद छेदक असमज्ज शरीरा॥
बादरसिक निद्रावश मानी। बिनबिश्वास अहितअज्ञानी॥
रुद्र दोष बिन श्रोता होई। चरितामृत तब पावै सोई॥
तातें भूप दोष तजि सारे। सुनो कथा हरि की निरवारे॥
दो० कथा प्रीति ते सफल है मोक्ष हेतु को कर्म।
कथा रहित जो कृत करै सो केवल पयश्रम॥
श्रवण परीक्षित भलकरिजाना। अबसुनु कीर्तन भक्ति सुजाना॥

प्रभुके जन्म कर्म्म बहुतेरे। मङ्गल प्रद जे अहैं घनेरे॥
लज्जा रहित तिन्हैं जो गावै। सोनिश्चय अमिमत फलपावै॥
नारदादि ऋषिजहँ लगरहेऊ। मनुहरिहरिगुणसबहिनकहेऊ॥
राम चरित बरणयो सोइबानी। शुभग सत्यशुचि मंगलखानी॥
हरि बिन बिषम बादिसबधंधा। इमपिप्रोक्त द्वादश अस्कंधा॥
बक्ता पांच प्रकृति के जाना। रबिशशिउडुमणिदीपसमाना॥
बक्ताहू में दोइक होहीं। तजिये योग सुनावों तोहीं॥
पक्षपात धन चाह अधीना। श्रोता नहिं समुझै परवीना॥
प्रश्न करै तेहि उतर न देवै। सार बस्तु सुनि तर्क न लेवै॥
मूर्त्ति बांधिकै बचन उचारै। मूरख सो कैसे उर धारै॥
प्रेम प्रतीत प्रीति बिन तोषा। पूछत बात करै अति रोषा॥
बहुत पाप श्रोता जबकरहीं। तब ऐसे बक्ता शिर परहीं॥

दो० पढ़ि गुणिवेद पुराण हरिभक्ति न कीन्हीसार।
ज्यों पशुचन्दनभारधरि भरमतजेहितेहिद्वार॥

श्लोकआदिपुराणे॥

यथाखरश्चदनभारवाहीभारस्यवेत्तानतुचंदनस्य।
तथाचविप्राश्रुतिशास्त्रयुक्तामद्भक्तिहीनाखरवत्वहंति॥

दो० ज्यों बिधवा के शीशमें सोहै नहिं सेंदूर।
गुण चतुराई रामबिन त्योंहीं जानौ कूर॥
गावै बिधवा अपन कहि बनरा दुलहिन केर।
पति सुखलहै न स्वप्नहू तिमिहरिजनबिनझेर॥
विद्या गोथन वेदचहुं भक्ति दूधजन भक्ष।
पावै बरतावै तनुन लहै किलनबिन अक्ष॥
तेहिते रसिक अनन्यहै कहैराम गुणग्राम।
तब पावै शोभायथा बलित चन्द्र निशियाम॥

कीर्तन शुकमुनिभलकर जाना। अवसुनुसुमिरन भक्तिसुजाना॥
श्रीपति को सुमिरन जो करई। गोपद इव सो भवनिधितरई॥

गणिकायमन गयन्दअजामिल। कीरआदिकबि कटुउधरेकिल॥
बिषइनि भजै बिषय को पावै। रामैसुमिरि रामढिग जावै॥
बिधिहरिहरगणपति अहिराई। सुमिरन ते पाई प्रभुताई॥
हरि सुमिरन सब सुखकोमूला। हरि सुमिरे नाशै सब शूला॥
हरि सुमिरन कीजै जिमिगाई। चरतफिरतशिशुबिसरिनजाई॥
हरि सुमिरन कीजैजिमिकामी। तजिहिय होतनारिअनुगामी॥
हरि सुमिरनकीजैजिमिलोभी। निशिदिनरहै द्रव्य हितक्षोभी॥
हरि सुमिरनकीजैजिमिचातृक। गनै न हानिलाभनिजमातृक॥
रामनाम जिन सुमिरनकीन्ह्यों। तिनजनुसकलधर्मकरिलीन्ह्यों॥
रामनाम जिन हिरदय धारा। तिनका कहा करै संसारा॥
रामनाम कर सुमिरन सांचा। जेहियांचे जगहोइ अयांचा॥
बहुत जन्मको पुण्य बिहीना। रामनाम मुखजात न लीना॥
दंभौते जो नाम उचारै। पावक सम अघतूलहि जारै॥
शत्रुभाव करि जो कोइ ध्यावै। सोऊ होइ मुक्त श्रुति गावै॥

दो० भृङ्गी भयते कीट ज्यों होत भृङ्ग तन अंत।
तैसे अरि अघ त्यागि बपु धरत रूपभगवंत॥
रामनाम के बीच में मनका देइ मिलाइ।
करि हरिसमरघुनाथसोंसहज माहिंछुटिजाइ॥
कलिके कलुषी नरन नहिं आन धर्मअधिकार।
रामनाम इति बर्णयुग जपिकै हैं भवपार॥
तो बड़भागी जीवजे कलियुग में हरिनाम।
सुमिरैं सुमिरावैं सुखद सकल कृतारथ धाम॥
पाप दहन हरिनाम से इतनी शक्ती आहिं।
जितनी पापी नरन को पाप करनकी नाहिं॥
चंडाली जो राम इति रसना करै बखान।
तासँग बैठिय बोलिये भोक्षियश्रुति परिमान॥
यश्चाण्डल रामेति वाचं वदत्तेन।

सहसंवसेत्तेन सहसंवदेत्तेन सहसंभुंजी यात् ॥

दो० रामनाम कलिकामतरु कहत सकलश्रुतिसाध।
लहै कामफल जो धरै उर तजि दशअपराध ॥

सो० दश अपराध सो कौन नाथ कृपाकरि बर्णिये।
सुनो कहौं मैं तौन सनकसंहिता माहिंजस ॥

कुं० गुरू अवज्ञा एक हरि जन हरि निंदा ताप।
गनै ब्रह्म में भेद पुनि करै नाम बल पाप ॥
करै नाम बल पाप नाम परताप न जानै।
निनसरधा उपदेशि दोषिश्रुति शास्त्र न मानै ॥
मानै ठगि रघुनाथ भजै निज इन्द्री कटु उर।
ये दश तजिअपराध जपै तब नाम फलै गुर ॥

दो० तेहिते तुमहूं दोष तजि जपहु नाम निरशंक।
ब्रह्मलोक सुख नहिं रुचै और कहा नृप रंक ॥
सहित दोष निरदोषहू राम नाम जो लेइ।
तबहूं ताकी भाग्य की को अस उपमा देइ ॥

सुमिरन भले कीन प्रहलादा। अब सुनुसेवन भक्ति सवादा ॥
सेवन भक्तिकीन श्री नीके। तेहिते बसी बिशदउर पीके ॥

दो० देव यक्ष गंधर्ब नर असुर इतर कोइ होइ।
जो सेवै हरिपद कमल सद सुख पावै सोइ ॥
हरिपद सेवन बिन मनुज जहां २ चलिजात।
तहां तहां भय युत रहत मृत्यु न छोड़तखात ॥

तेहिते रामचरन नित सेवो। अर्चन भक्ति छठी सुनिलेवो ॥
परमानन्द दानि हरि पूजा। इहिते सुगम उपाय न दूजा ॥
केवल हरि अर्चन के कीन्हें। लहत तोष सुर सकलप्रबीने ॥
जिमि सींचे जर सब तरु तोषै। हरितन होइ पात जो पोषै ॥
मुखते अशन प्रानहीं खावैं। सब इन्द्री तिरपित ह्वै जावैं ॥
प्रभु आनन्द सिंधु सुख धामा। करुणाकर परिपूरण कामा ॥

सो निज पूजा चहै न कबहीं। निजकल्याण हेत करैसबहीं॥
हरिहि पूजि पूजित ह्वै येहू। पावै सुख संपति निज गेहू॥
ज्योंनिजमुख तिलकादिलगावै। सोइदर्पण प्रतिबिम्बसोहावै॥
श्रीपति मान दिहे बिन प्रानी। लहै न कतहुं मान अज्ञानी॥
प्रभु कर मान करै नर जबहीं। हरिहु ताहि सनमाननतबहीं॥
प्रभु आदरेउ धन्य नर सोई। तेहिसम बड़भागी नहिंकोई॥
सकल देव मुनि ताहि सराहैं। चरणरेणु तेहि पावन चाहैं॥
ऐसी है हरि पूजन ताता। पुनि पैसरे केरि नहिं बाता॥
दंभ सहित मद दुष्ट घनादी। करहिंयतन सोश्रम सबबादी॥
नल अंकुर दल दूब चढ़ावै। बिन मदसो उत्तम गति पावै॥

दो० मारु दारु हरिचित्र पवि पुरट मनोमय रत्न।
ये प्रभु प्रतिमा आठ बिधि पूजै जन करियत्न॥

तोटकछंद॥ हरिपूजनषोड़शभांतिकही। प्रथमैआवाहन कीन चही॥ पुनिआसनपादरघाचमनं। अस्नानपटाहुतिसूत्र तनं॥ शुचिचन्दनपुष्पसुधूपदिपं। नैवेदतंबूलबिनयअर्पिपं॥ पर दक्षिणषोड़शभांतिइथं। चरणामृतनाशतकोटिबिथं॥

दो० जलदल चन्दन चक्रदर घंटशिला हरि ताव।
अष्ट बस्तु मिलि होत है चरणामृत सुखदाव॥
फल चरणोदक लिहे कर कहँतक करौं बखान।
भूमि परे पातक तथा अब सुनु दीप बिधान॥
चारि चरण युग देश कटि मुखमंडल इकबार।
सप्त चक्र सर्बांग पर इमि आरती उतार॥
श्रीहरि पूजा अमितफल परमपुण्य सुखदानि।
ताते संतत कीजिये प्रीति सहित हित मानि॥
अबसुनु दूसरिबिधिकहौं जाहिकरतसनकादि।
अग जग रूपअनूप हरि आसन देइ अनादि॥
पाद पुष्टताअर्घ अपि शुचि सनेह अस्नान।

बसनबिनयमखसूत्रगुण चितचन्दनसिकज्ञान॥
धूप बासना दीप निज बोध हरै अबिबेक।
अशुभाशुभ तूलास घृत गोबर्त्तिका अनेक॥
बिरति बह्निकरि अर्पिये बिबिधि भावनैवेद।
प्रेमतांबूल सुगंध पन पाइ मिटत भव भेद॥
सदन सत्य पर्य्यंकपर रामहिं शयन कराइ।
क्षमा दया परचारिका तत्र सु देइ लगाइ॥
यहि बिधि जो पूजन करै हरै सकल संताप।
निरबर्तो की रीति यह केवल हरि का जाप॥

पूजन भले कीन्ह पृथु राजा। पूरब पश्चिम सनकसमाजा॥
छठई बंदन शक्ति अनूपा। प्रभु बंदन सबका सुख रूपा॥
बंदन करै जोरि कर जबहीं। मंगल सो नर पावत तबहीं॥
सुकृत जीव हरि सम्मुख आवै। मन बचक्रम करि शीशनवावै॥
सो हरि धाम मोक्ष सुखलहई। इमिभागवत माहिंबिधिकहई॥
सुकृत प्रणाम प्रभुहि कर कोई। तेहिसमदश अश्वमेध न होई॥
दश अश्वमेधी पुनि जग जावै। कृष्ण प्रणामीब हुरि न आवै॥
मग खसि गिरे व्यथाबश परई। बिवश नाम हरि बंदनकरई॥
तासु महा अघ संचित नाशै। प्रीति सहितफल कौनप्रकाशै॥
बंदन कोन दान पति आछे। अपर भये बहु आगे पाछे॥

दो० हरि प्रणाम महिमाअमित कोकरिसकै बखान।
तेहि ते बंदन राम की करहु मानि कल्यान॥

सतयें भक्तिदास्य असनामा। दास भाव ह्वै सेवै रामा॥
जासु नाम सुमिरत अघ जरई। जासु चरण जलभवरुजहरई॥
जासु कटाक्ष चहै बिधि ईशा। भजैं जाहि सनकादिमुनीशा॥
तेहि प्रभुकेर दास जब भयऊ। कौन कर्म बाकी रहिगयऊ॥
तिन का कछू न चाहो कबहीं। दास भये पुर स्वारथ सबहीं॥
दास भाव बिन जरनि न जाई। इमि दुर्बासा कह्यो बुझाई॥

जो यावत हरिजन नहिँ तावत। सुकृतसदन रागादिचोरावत॥
दास भये धन हर्ता जेते। लगहिं भक्ति साधनमहँ तेते॥
भगवत होत सकल ब्योपारा। होत सुखदशुचिमिटतबिकारा॥
दाससरिसप्रिय प्रभुहि न कोई। रघुपतितिलक सांझहमजोई॥
बैठे जहँ सब सबबिधि चीन्हा। तिलक दास हनुमानै दीन्हा॥

दो० काय बचन मम कर्मकरि सो अरपै भगवान।
बिधि निषेधनहिंनाथ बश दासभावसो जान॥
नारायण को दास जो भयो न लहिबर वृत्ति।
जियतसोशवसमकहतइमि पारासरअस्मृत्ति॥

अष्टम भक्ति सखत्व कहावै। रघुपति सखा परमसुखपावै॥
नंदगोपिका अरु ब्रजबासी। भय मित्रता करि सुखरासी॥
निशिचर पति सुग्रीव निषादा। भये सखाकरि रहितबिषादा॥
अपर मित्र प्रति स्वारथ चाहै। राम सखा सुखतेसुखलाहै॥
अपर सखा कोउ जाइ बिदेशा। तेहि बियोगदुख होइअँदेशा॥
अंतरयामी राम कृपाला। निकट रहत संततसबकाला॥
अपर मित्र में असगुण नाहीं। जस गुण है रघुनन्दनमाहीं॥
यहि ते सबसुख तुच्छ बिचारी। श्याम सुंदर ते कीजै यारी॥
मन मलीन पूरब कृत दोषा। पुनि तामें डारत करि रोषा॥
ताते संसृति पुनि पुनि लहई। किमि उद्धार होइ श्रुतिकहई॥
जिमि कोइकेतुपकरिनदगहेऊ। किमि उतरै फिरिफेनुइगहेऊ॥
बासुदेव बोहित सुख धामा। सकल बिश्व दायकबिश्रामा॥
जबलग तिनमें प्रीति न करई। तब लग कर्म सिंधु नहिंतरई॥

दो० प्रभुपद प्रीति सोहोतही मिटत त्रिबिधि दुखदोष।
सकल सुसाधन केर फल यतनै करिय न मोष॥

नवईं भक्ति सुनो मोहिं पाहीं। आतम अर्पन समकोइ नाहीं॥
जोनिज देहादिक प्रभु पासा। करै समर्पन तजिसब आशा॥
सो निश्चिन्त रहत सब काला। तासुफिकिरिप्रभुकरतकृपाला॥

जिमि कोइवृषभअश्वनिजवेचै। तासु यत्न हित करत निशोचै॥
राम मया भाजन सो अहई। हरि ऐश्वर्य मोक्षते लहई॥
तर्क शास्त्र अरुनय बिधि चारी। अहै जीव कहँ सब सुखकारी॥
तेसब निगम नीति अनुकूला। करैं भली बिधिनहिंप्रतिकूला॥
परम पुरुष श्रीपतिगुणसागर। अन्तरयामी राम उजागर॥
तिनका आतम करैं निवेदन। तौसब सांच जानिये खेदन॥
तनमन हरिहिहि अर्पन कीना। तौ धर्मादिक फल परवीना॥
गुणातीत सोइ अहै बिवेकी। नृप बलिकेरि टेकनिज टेकी॥

दो० तेहितें सर्बसु अर्पिकै निर्भयहरि गुण गाव।
आखिर इकदिनछूटिहैअबसुनशरणप्रभाव॥
देव पितर ऋषि भूतकरऋणीअहै सबकोइ।
हवनश्राद्धअध्ययनबलिकरनिततबमुचहोय॥
नाहितसब बिधिकर्मतजि गहैशरणहरिकेरि।
तबछूटै ऋण पाप कोइ तेहितनसकैनहेरि॥
अथवा ऋण दीन्हे बिना रहैब्योहरआधीन।
सोनरइमिदिनभरैजिमिऋणीधनिकबशदीन॥
याते कृष्ण कृपाल के युगपद सब सुखदानि।
परम कृपालय जानि कै शरणगहौ प्रणठानि॥

जेनर राम चरण सुख कारी। शरणगह्यो जबदृढ़व्रतधारी॥
प्रबलकालतेहिलखि इमिकहई। यह अब हमरे बशनहिंअहई॥

दो० देखौ सुरनर असुर अहि किन्नर खग गंधर्ब।
काल कलेवा ह्वै रहे ब्रह्मादिक जग सर्ब॥
बचत न कोई कालते जहँ तक आवत दृष्ट।
करतग्रासबड़वाग्नि ज्यों योंकहयोगबशिष्ठ॥
ऐसो काल करालसो डरतजासु दिशिदेखि।
जेहरि शरण न गहैंते शठसम पशुकेलेखि॥
प्रेम लक्षण प्रेमकरि रहत न देह सँभार।

दशधा भक्ति कहाव सो यहसबतेअधिकार ॥
दश भक्तिन महँ एकहू जिन राखी उरधारि।
सोइवल्लभ श्रीरामकहँ कहापुरुषकहनारि ॥
सन्तदासअरु शिष्यता पुनिबात्सल्यशृँगार।
जल महि मरुभुकनभसुयेभक्तिपंचरससार ॥
श्रीगुरु देवा दासके चरण कमल धरिमाथ।
कहे भक्ति के अङ्ग सब सुखप्रदजनरघुनाथ ॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथ दासरामसनेहीकृतनवधाभक्तिबर्णनोनामषष्ठचत्वा रिंशोऽध्यायः ४६ ॥

दो० सुमिरिराम सिय सन्त गुरु गणपगिरासुखदानि।
योग शास्त्र मत कहौं कछु हंसो पनिघट जानि ॥
बोले भूप बहुत सुख पाई। बिन गुरुको सद पंथ बताई ॥
पातंजल शास्त्र के माहीं। कह्योयोगकिमिसोमोहिंपाहीं ॥
कह मुनि भले सुनो मनु लाई। सघनस्वल्पकरिकहौंबुझाई ॥
दो० आठ अंग हैं योगके यम नेमासनसाधि।
प्रणायामप्रत्याहारअरु धारणध्यानसमाधि ॥

प्रथमयमअंग ॥

सत्य अहिंसा पुण्य धृत क्षमा अचाह असंग।
ब्रह्मचर्य्य निरभयभवनगुणभुक थिरयमअंग ॥

द्वितीयनेमअंग ॥

शौच धर्म जप तप अतिथि हरिगुरु सेवसँतोष।
सोम तीर्थ उपकार पर निर्छल नेम अदोष ॥

तृतीयआसनअंग ॥

चौरासी आसन कहे तिनमा उभय बिशाल।
एकपदुम दृगशुद्ध मनि सोसाधे शशिशाल ॥

चतुर्थप्राणायामअंग ॥

चतुर्थ प्राणामय करै षट चक्कर को शोधि।
एक अधार स्वधिष्ठान पुनि मनि पूरक का बोधि ॥
चौथा अनहद चक्रकहि पँचवां नामबिशुद्ध।
छठवां आज्ञा समुझिकै जपै मंत्रा शुद्ध ॥
पूरक में षोड़श जपै कुम्भक में चौंसट्ठि।
रेचक में बत्तिस कहै हरे हरे जनि हट्ठि ॥
ज्योंज्यों ठहरै पवन उर त्योंत्यों मंत्रबढ़ाय।
कुम्भक आठ प्रकारकी सुनो कहौं अवगाय ॥
प्रथमैं सूरज भेदनी पूरै पिंगल बात।
रेचै बाँयें रोंकि कछु हरै बायु रुज गात ॥
उभय उजाई पवन की पूरि धरै उर माहिं।
ईड़ा ते रेचन करै कफ रुज लेधर जाहिं ॥
तीसरि शीत जो कारिणी पेय घ्राण ते पौन।
शीशी कहि मुख ते तजै भजै क्षुधा तिरषौन ॥
चौथि शीतली पूरई जीह बदनते प्रान।
रोंकि निवारै नाक तेहि करै वृद्ध ते ज्वान ॥
पँचईं भास्त्रिक श्वास ते भरै तजै अति शिघ्र।
थकेकरैरबिशशिठहरि मिटैत्रिबिधिरुजबिघ्र ॥
छठी भ्रामरी भृंग धुनि भरै श्वास ते बाय।
रेचै ताही शब्द ते मन चंचल ठहराय ॥
सतईं मूर्छा नाम को सुमिरै श्वास उसास।
प्रभुइ मिलावै दुख हरै करै पेट दुख नाश ॥
अठईं केवल जो कही प्रथमैं मंत्र गनाय।
सो कुम्भक मो सिष्टहै जिमि मनुषनमें राय ॥

पंचमप्रत्याहारअंग ॥

पंचम प्रत्याहार जो बिषय ओर मनजाइ।

घेरिलगावै ध्यानमें ज्यों निज सुतको माइ ॥
तबआपुइ बश होइहै जिमि बनियाकर भूत।
तदपिसजगरहिये सदा रिपुसमजानिकपूत ॥

षष्ठधारणाअंग ॥

षष्ठम धारै धारणा पांचो तत्व न केर।
प्रथमैं गुरुगोबिन्द की प्राणपवन हियहेरि ॥
कालज्ञानतेहिलखैजो बरणयोबिबिधिप्रकार।
चक्षु चक्र छाया पुरुष दीप गन्ध ध्रुव तार ॥
भ्रू अदिष्ठि नौदिनजपै घ्राणअलख दिनसात।
तालू लौं जपि पांचदिन एक रसन सुख बात ॥
प्रश्नय बिबिधि प्रकार की हैं सुरही में लेखि।
जो सब समुझा चहै तौ लेइ स्वरोदय देखि ॥

सप्तमध्यानअंग ॥

सतवां अंगहै ध्यानका सोउ चारि बिधि मीत।
पदस्थ पिण्डस्थ रुपस्थवा चौथा रूप अतीत ॥
पदस्थसोजोश्री रामके चरण कमल उर लेइ।
नखशिखलौंछबिनिरखिपुनि पायनमें मनदेइ ॥
करते करते ध्यान यह हरि को प्रापत होइ।
कीकुम्भक करि प्रणव युत जापत पावै सोइ ॥
दूजा ध्यान पिण्डस्थ है सोधे पिण्ड सरोज।
भ्रमर गुफा चढ़ि युक्तिते त्रिवलीकोलहै खोज ॥
रूपस्थ ध्यान तीसर सदा चितवै भृकुटी ओर।
लखैज्योतिउड़मालशशि रबिप्रकाशसबठौर ॥
चौथा रूपातीत सो ध्यान शून्य का होय।
करत शून्यहवै आपहू रहै न भव रुज कोय ॥

अष्टमसमाधिअंग ॥

अठवां किहे समाधि के आपा जात नशाइ।

ध्याता ध्यान जु एकहै मिलै तुरी में जाइ॥
अष्टांगयोग जो मैं कहो सो तुम समुझेउ तात।
अब सुनु जो षट करम में प्रथमें कीन्हे जात॥
प्रथमैं तानों नाक ते डारि दुहै मुख वोर।
दूजा धोती झीन पट निगलि निकारै कोर॥
तीजा बस्थी गुदा ते नीर खेंचि तजि देइ।
चौथागजजल युक्तियुत रोचि उदरिभरि पेइ॥
पँचवां न्यौली कर्म ते नलै बिलोई जाहिं।
छठवां त्राटक दृगनकी पलक लगावै नाहिं॥
अब सुनु मुद्रा पंच बिधि प्रथम खेचरी होय।
सुखमें तासु निवास है बढ़वै जीभ बिलोय॥
दुसरी मुद्रा भूचरी नाशा जासु निवास।
प्राण अपान जुदी जुदी करि देवै यक पास॥
तीजी मुद्रा चाचरी बसै दृगन बिच सोपि।
नाशा आगे दृष्टि धरि देखै अचरज गोपि॥
चौथी मुद्रा गोचरी करत श्रवण में बास।
ज्ञान सुरतिएक होतहै अनहद शब्द प्रकाश॥
पँचईं मुद्रा उनमुनी बसै सो दशयें द्वार।
पावै सिद्ध समाधि तहँ होय बासना क्षार॥
बन्धन चारि प्रकार सुनु महाबन्ध पुनि मूल।
जालंधर उड्यान चहुं हरै हृदय की शूल॥
योगक्रियारघुनाथ सब बरणी मति अनुसार।
गुरुबिनसधतनसमुझितेहि कीन्ह्योंनहिंबिस्तार॥
योग तपस्या के किहे मिलै ऋद्धिअरु सिद्धि।
तिनमें बहै न चतुरसोइ अबसुनितिनकी वृद्धि॥
प्रथमैं अणिमालघु करै दूसरि महिमा मोट।
तीसरि लघिमातूल सम गरिमा करैबड़ोट॥

पँचईं प्रापतचहुं तहां फिरि आवै अति हाल।
छठी प्रकाम सुवपु धरै सतइ ईसता जाल॥
बशीकरन सिधि आठवीं करै चहै तेहि बश्य।
रामभजनबिनवादिअबसुनयकमनिधिदस्य॥
महापद्म अरु पद्म पुनि कक्षप मकर मुकुन्द।
शंख खर्ब नीलाठये नवई निद्धि जुकुंद॥
ऋधिसिधिभईतौकयाभयोजोनभज्योरघुबीर।
खग बहु उड़त अकाशमें कृमि बहु नांघत नीर॥
लोक रिझायेहानि बड़ि लाभ तुच्छ सनमान।
वाह वाह कहि भांड़के सर्प डसन गे प्रान॥
तेहिते त्रय बिधि कीजिये हरिको सुमिरन सार।
सत्य सत्य मिति नाथ फिर कहौं सहितबिस्तार॥

चौबोलाछंद॥ सुनुसुमिरनकीबातकहौंअबतोहिंसे। जेहितेइंद्रिनसहितअचलमनहोहिरे॥ पदमासनकोकरैनतौसिधजानिकै। गरुदगडसमराखिचिबुकउरआनिकै॥ नाशापरकीदृष्टितिर्कुटीटाकको। सुमिरैमांसउसासरामहीनामको॥ रटतोमिलैमिठासआशआगेपरै। अग्निफूलसेप्रथमपुरहलागतझरै॥ कछुदिनमेंलखिपरैदीपकीज्योतिजू। पुनितारनकीमाहँबिंदुद्युतिहोतिजू॥ सनइरसइरसोमसूखहुदेखई। सहसकमलपरपरमआतमहिंपेखई॥ ड़ीबिरहकीलाघपायसुखरामही। झिलमिलझिलमिलजगततेमेंभाषही॥ ज्योंजलनिधिमेंबूड़िबिलोकैमाहिंजू। दशदिशिदरजलैऔरकछुनाहिंजू॥ बाजैअनहदनादतहाँदशभाँतिजो। बरतिनकीरीतिरहनिद्धैजातजो॥ प्रथमभवँरगुंजारअंगपुलकावई। निसुननेपरनादसुआलसआवई॥ तीसरधुनिसुनिशङ्खप्रेमपीड़ागै। चढ़ैअमलसुनिघंटशीशघूमनलगै॥ पंचमबाजततालअमीरसावही। षष्ठममुरलितजिकयठतरेसोइपावही॥ सप्तमभरीसुनबढ़ैछबिमूरकी। अन्तरयामीहोयलखैगतिदूरकी॥ अष्टमअक

निमृदङ्गनादअनहदसुनै। अपरनजानैकोइकालयहतिहुंगुनै॥ न वमनफारीसुनतअगोचरहोइजू। चहैतहांचलिजायनदेखैकाइजू। पुनिहोवैस्थूलदशासबदेवकी। दशईकेहरिनादसुनतअहमेवकी॥ गाँठिकठिनखुलिजायहोयसोब्रह्महो। सतचितआनँदरूपमिटैसब कर्महो॥ जिमिहिमिमलिमिलिउदधिकहावैउदधिहो। होयबहुनि सँगबहुनिदहतजोसंगहो॥ करैसदायहध्यानबैठिएकांतमें। अल्प अशनअनुरक्तरहैरसशांतमें॥ नाहितनिजपगपानिमूंदिनवद्वार को। सुनैसुरततशब्दअनेकप्रकारको॥ भाषतजनरघुनाथसनेही रामके। भयेयहीकरिसन्तनिवासीधामके॥ जोचाहैहरिभक्तिभजै अवतारसों। करैध्यानसबअंगसमुझिगुरुद्वारसों॥ जपैइष्टकोनाम प्रेममनठानिकै। सदासर्बगतईश सबकोजानिकै॥ सुंदरश्याम स्वरूपइषदउरआवहीं। ब्रह्मलोककासुखनतबतेहिभावहीं॥ अंत भावनासरिसलहैभगवंतको। प्रभुताकरप्रभुपुनि प्रतिपालकसंत को॥ अल्पइष्टकोअल्पभूरिकोभूरिहै। चाहवतकोनिकटचाहबिन दूरिहै॥ कहतउपनिषदवदसोईशवपारहै। जोजनकरणीकरैकर णिहीसारहै॥ करणिहीहैऋद्धि करणिहीसिद्धिहै। बिनकरणी नहिंहोतकिसीकी वृद्धिहै॥ ताते जनरघुनाथ सुकरणीकीजिये। अशनबिनानहिं होतत्रुटसुनिलीजिये॥

दो० सिफत करै को खाँड़की धरै न मुख अभिराम।
लहे स्वादरघुनाथकिमितिमिसुमिरनबिननाम॥
हरि सुमिरन कीन्ह्यों नहीं कैसे सुख सरसाय।
हरदी जरदी तब चढ़ै जब मरदी भल जाय॥
सुमिरन बिन जानै कहा कोइ हरि नाम प्रभाव।
जिमि माणिकके मोलको मानिक परखै पाव॥
कुटिल कृतघ्नी कूरते राम तत्व जनि गाय।
अन्धे कर हीरा परी देई दूरि चलाय॥
राम तत्व गुरु भक्त ते कहिये जानि कृतज्ञ।

पदिक पारखी लेइगो होय न क्योंकर अज्ञ ॥
वेदरुशास्त्र पुराणकर कहेउँ जो ब्यापकमत्व।
अबसुनुभाषौं स्वल्पमें तिन सबहिनकोतत्व ॥
कुं० चारि वेदके अंगपट ग्राह्य सूत्र ब्याकर्ण।
शिक्षाज्योतिषछन्दबिधिपुनिनिरुक्तनिजबर्ण॥
पुनि निरुक्त निज बर्ण वेदके चहुं उपवेदा।
ऋग्का आउरतस्य चिकित्साशास्त्र अखेदा ॥
यजुर्वेद कर धनु वैदतत युद्ध शास्त्र कहि।
सामकेर गन्धर्व तस्थ संगीत शास्त्र सहि ॥
सही अथर्बणकोअरथ शिल्पशास्त्रयुत धारि।
अपरमिमांसा आदिहैं हैं षट शास्त्र बिचारि ॥

चरपटछंद ॥ तत्वमसी कहै सामवेद। ब्रह्म जीवहै प्रकृति भेद ॥ प्रज्ञानदऋग्वेद बयन। शीवस्वयं आनन्दअयन ॥ ब्रह्म अस्मिपद यजुरभाषि। चेतनसबमें है भरतसाखि ॥ अंआतमा अथर्बण आह। मेरी सबकोइ भरतचाह ॥ सकलबाक्यको यही अर्थ। ब्रह्मजीव मायाअनर्थ ॥ अबसुशास्त्रमत सुनुसुजान। जेहि बिधि मुनिवर करत गान ॥

दो० प्रथम मिमांसा शास्त्रके जैमिनिमुनि आचार्य्य।
धर्मबिषे रघुनाथभनि स्वग्गादिक फलकार्य्य ॥
दुतिये बैशेषिक शास्त्र तस्याचार्यकणाद।
शून्य पदारथ ज्ञान फल भावाभाव बिवाद ॥
न्याय शास्त्रगौतम ऋषय माष्यो तर्क बिशेषि।
प्रमानादि षोड़श अरथ बोध प्रयोजन लेखि ॥
चतुरथ पातंजल लियो योगशास्त्र सुख मूल।
बिषयनिरोधनचितबिरति नाशक संश्रितशूल ॥
पँचवां शास्त्र जु सांख्यके कर्त्ता कपिलयोगीश।
प्रकृतिपुरुषनिर्णयबिषे हेतुत्रिबिधिदुखखीस ॥

षष्ठम शास्त्र वेदांत के आचारय मुनि व्यास।
ब्रह्मजीव की एकता बिषयमोक्ष फल तास॥
सो० सर्ग बिसर्ग अस्थान पोषण उक्ति मनोतरपि।
मुक्ति निरोध इसान आश्रय दशपुराण मत॥
दो० वेदस्मृति पुनि संहिता आगम निगम पुराण।
एक बाक्यता सबन कै बैद्य एक भगवान॥
एफ नगर के बहुत पथ सरल सूध चलिजात।
अन्त प्राप्ति एकै नगर त्यों शास्त्रन की बात॥
वेद शास्त्रन सहित जो लखै काव्य की रीति।
तौ न होय सन्देह कछु ज्यों पुत्रन की प्रीति॥

अरिलछन्द॥ चौहटहाटसमान वेदचहुं जानिये। बिबिधि भांतिकीबस्तु बिकततहँ मानिये॥ जोजेहिरुचैसोलेइदेइधनधाम को। परिहांलीन्ह्योंजन रघुनाथरतनहरिनामको॥ पावनपर्बत सरिसवेद अरुशास्त्रहैं। बिबिधिभांतिकीधातुरहततिनमाश्चहै॥ जोजेहिरुचैसोलेइ भलैहितमानिजू। परिहांसन्तन लीन्हीभक्ति मणिनकी खानिजू॥

दो० वेदबिपिनि बूटीबचन हरिजन किमि आकार।
खरी जरी तिनके कने खोटी गहत गवाँर॥
श्रीगुरुदेवा दासके चरण कमल धरि माथ।
इतिहासायन ग्रन्थ यह पूरकीन रघुनाथ॥

गीतिकाछन्द॥ रघुनाथ गुरुपदमाथधरिकह्यो रामयशहित मानिकै। कल्याण कर्ता पुण्यमततो पापहर्ता जानिकै। कहि हैं जे सुनिहैं सहित नेह बिदेह गति पैहैं सही। मन काम करुणा धामको शुचि नाम सो दृढ़ करिगही॥

दो० राम चरित गावत सुनत बिघ्न करत जो कोइ।
जन्म जन्म तेहि उदर में रोग जलंधर होइ॥
बिश्रामोदधि ग्रन्थमें तीनि अयन हैं तात।

इतिहासायन कृष्णायन रामायण सुखदात॥
प्रथमायन परमान गनाई। उनइस सै सत्तर चौपाई॥
दोहा छसै पचास सोहाये। उनहत्तरि सोरठा गनाये॥
कुण्डलिया चौबिस पहिचानौ। तोटक छन्द अठारह जानौ॥
कुकुभा चारि मालिका दोई। अष्टपदी तेरह हैं जोई॥
तोमर उनइस चरपट साता। हरियक आठ भुजंगप्रयाता॥
सुनि मधुभार सरपिका बारा। रोला मनु अश्लोक अठारा॥
बरवै तीन सवैया चारी। युग पंकज बाटिका निहारी॥
शशि समानिका यक्ष सुन्दरी। दोधक तीनि सुप्रिया दुंदरी॥
यकइस छप्पय तारक चारी। हैं छब्बिस गीतिका करारी॥
हरिगीता कुकरहत मराली। चिन्तामणि मधुहिरणि गोपाली॥
कामाकमलबिजय हरिलीला। निशिपालिका मनोहर शीला॥
श्रीअमृतगति अमृत युक्ता। एक एक ये छन्दै मुक्ता॥

दो० अर्द्धभुजंगी संयुता करषा द्वै द्वै धीर।
शशिमुखदीपकपाद कटि चारिचारिपुनिबीर॥
बीसचतुष्पद हंसकल उभय अरिल्ल औसान।
चारिसहस पुनिपाच शत है अश्लोक प्रमान॥
हरि प्रेरित रघुनाथ जन जोकछु कीन बखान।
बिश्रामोदधि के बिषे सो जानी बिद्वान॥
बिद्वन बिनजाने कहा बिद्वन को पैशर्म।
जैसे बंझा इस्त्री प्रशव पीर को मर्म॥
दुर्जन देखै दोष पर पेखै नहिं गुण शील।
लक्ष मुहरके महल में खोजत छिद्र पिपील॥
संस्कृत प्राकृत पारसी बिबिधि देश के बैन।
भाषा ताको कहत कबि तथा कीन मैं ऐन॥

श्रीबिश्रामसागरेरघुनाथदासकृतेइतिहासायनखंडसमाप्तम्॥

—०—

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ बिश्रामसागर ॥



श्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतकृष्णायन खण्डप्रारम्भः ॥

भुजंगप्रयातछंद ॥ नमोशारदानारदाज्ञानबुद्धिं । नमोगुरुग णेशंहरंबिघ्नसिद्धं ॥ नमोरामघनश्यामकामंस्वरूपं । नमोजान-कीजक्तमाता अनूपं ॥ नमोभारतंजयलषणशत्रुआरी । नमोकेस रीनन्दनंसुक्खकारी ॥ नमोदीनदानीसदाशिवभवानी । नमोबि ष्णुकमलंनमोब्रह्मबानी ॥ नमोमीनबाराहनरसिंहकूरम । नमो बावनंपरशुरामातिशूरम् ॥ नमोकृष्णबलबिर्ष्यभानंकिशोरी । नमोकालिकेदेवत्रयतीसकोरी ॥ नमोसारयूगंगभूभानुधर्मं । नमो वेदव्यासंनिगमहर्णभर्मं ॥ नमोऋद्धिआशीसहसबुद्धिराशी । नमो सन्त आनन्तमुक्तिप्रकाशी ॥ कहत दासरघुनाथ युगहाथजोरे । करौ सर्बऊपरकृपादृष्टिमोरे ॥

दो० जाते कृष्ण कृपाल के कहौं चरित चित चोर ।
अर्थ अमितआखरनमित होइरमितलखिथोर ॥

राम भक्तिकी सुनि प्रभुताई । पुनि शौनक बोले शिर नाई ॥
नाथ बचन तव अमी समाना । तृप्त न होत उदधिममकाना ॥
तेहिते अब करुणा करिगावो । कृष्णचरित कछुमोहिंसुनावो ॥
सुनि सुमंतु बोले हरषाता । भलो प्रश्नकीन्ह्यो तुम ताता ॥
सुनो कहौं हरि चरित सोहाये । जौन परीक्षित ते शुक गाये ॥
सो सब करि संक्षेप बखानो । आदिहि ते तामें मन आनो ॥

द्वापर कृष्ण लीन अवतारा। कीन्हें चरित अनेक प्रकारा॥
कलि आवत गवने निज लोका। सुनि पांडवनकीनअतिशोका॥
राज्य परीक्षित को सौंपाई। अपना गले हेवारे जाई॥
विष्णु रात जबते नृप भयऊ। परजनकहँबहुबिधिसुखदयऊ॥
एक दिवस का सुनो हेवाला। बिजयहेत निकसामहिपाला॥

दो० एक ठौर देखत भयो वृषभ एक यक गाय।
भय वश भागे जात दोउ यकनरमारतजाय॥

तेहि के चिन्ह नृपन के ऐसे। करतब करत नीच जन जैसे॥
तब तौ भूप निकट चलिगयऊ। वृषभ धेनु ते बूझत भयऊ॥
को तुम अहौ जात कित भागे। यह को है मारत केहिलागे॥
कह्यो वृषभ भल निश्चयनाहीं। बोली तब सुरभी नृप पाहीं॥
एहैं धर्म धरणि हम आनू। कलि के भय ते भाग जानू॥
कलिमलमलिनकरी सबप्राणी। बरणाश्रम के धर्म न जानी॥
बिप्र सुमारग पगनहिं देहैं। बेचिहैं वेद धर्म दुहि लेहैं॥
बिबुध कुपंथ निरत दिठियारे। केहि अवलंबहि अन्धबिचारे॥
क्षत्री छल मय कलिमल मूला। बंचक बिप्र वेद प्रतिकूला॥
बनिक महाजन साह सुनामा। बचन मधुरअतिकरतबबामा॥
शूद्र रहित निज धर्म बिचारू। अशुभजीवका अशुभअहारू॥
धर्म सु तीरथ संत समाजी। तहँबिशेष कलिकुटिलबिराजी॥
काई सुरसरि बिमल तड़ागा। फूलब फलब समयबिनबागा॥
तिनकरफलपुनिदुरितदुकाला। बिबिधिव्याधिबशजीवबिहाला॥
सुकृती लघु जीवन खल नाना। दातानिधन कृपिण धनवाना॥
याचक बहु जग कोइइकदानी। होइहैं अगणित बाचकज्ञानी॥
भूमि बीज बिन षटरस स्वादा। पाटथोर बड़बाद बिवादा॥
नृप सरोष सब प्रजा दुखारी। कबधौं मिटी देव सब गारी॥
काल कर्म महिपाल अधीना। बरणत वेद सोई मतिहीना॥
प्रीति सकपट अकारण कोहा। करब मातुपितु गुरुते द्रोहा॥

दोहगा सुतियसोहागिन चेरी। गुनवग्याति अच्युत कुलकेरी॥
ठाकुर कूर सचिव मति हीना। होइहैं पुरुष नारि आधीना॥
धनी कुलीन गुनागर सोई। धनी सुसाधु यदपि खलद्रोई॥
साधु सुशील सुजाति सुजाना। धनबिनसहिहैं दुखअपमाना॥
बकता बिपुल सुनी नहिं कोई। गुरुशिषअन्धबधिर मतिहोई॥
उपदेशक आचरण मनीना। बेचिहैं धनहित नामनगीना॥
चतुर चोरभट जे बट पारी। सबनरनारि सुमनरुचिकारी॥
गिरही रंक यती धनवाना। शूद्र पुराणिक बिप्र किसाना॥
निरबल साधुसकलखलकामी। दास सुजातिनीच जनस्वामी॥
मृतिका पात्र अभूषण केशा। परिकर बसन बिछौना शेशा॥
जटिल कुभक्षक सिद्ध शरीरा। परधन पचवैं ते बड़ धीरा॥
जीवन थोर दुराशा भारी। सत्य कहब ते होब लवारी॥
चलिहैं सुरुचि अनेक न पंथा। होइहैं लुप्त सुभग सद ग्रंथा॥
सोइ सदग्रंथजहां हरिनामा। धर्म बिबेक भक्ति अभिरामा॥
सुत पितुदूषक करबिनब्याहे। पुनि रिपु होब नारिमुखचाहे॥
दो० तीस बर्ष की आयुनर होई कलि अधिआइ।
अष्ट अब्द की कामिनी जनमी सुत पतिपाइ॥
सुरुचि कुसंग अरुचि सतसंगा। तुलसिहिहँसब सराहबभंगा॥
पति बिरोध परपति रत नारी। पण्डित बाजब परमलवारी॥
कवि करि शाखीशब्द बखाना। निन्दिहैं हरिहर वेद पुराना॥
तजि कुल कुटुम्ब होब बैरागी। तिनहुन माहिं ईर्षना लागी॥
भेष बिशद बातन में शूरा। भक्ति भजन में कादर कूरा॥
जोकोइ हरि सुमिरन परकाशी। करिहैंसबमिलि तिनकीहासी॥
गांजा चरस तमाल उड़ाई। होई कलि तेहि केरि बड़ाई॥
जोतिहैं हर नहिकै इक बर्द्धा। रही न नेकु धर्म की सर्द्धा॥
बिद्या बनिज कृषी सेवकाई। होई फल लघुश्रम अधिकाई॥
दो० तरुबड़ झाऊ बिटप सम सुरभी अजासमान।

मेघ बर्षि हैं ओश सम बये न जमिहैं धान ॥
कलिके दोष कहे कछुगाई। सुनहु जे अहैं गुनौ सो राई ॥
कलियुग मनकर पातक नाहीं। पुण्य पुनीत मनोरथ माहीं ॥
बाचक पाप जाइ पछिताये। सरयू सरिहरि पदजा न्हाये ॥
काया ते पातक जो होई। बिन भोगे छूटत नहिं सोई ॥
सतयुग देश ग्राम त्रेताही। द्वापर कुल कलिमें करजाही ॥
कलिमें राम भक्त तनु धरिहैं। ते बहु जीव कृतारथ करिहैं ॥
रामभक्ति करि करि नरनारी। भव सागर तरिहैं यह भारी ॥
काल कर्म गुण प्रकृति सुभाऊ। भक्ति समीप जात नहिंकाऊ ॥
कृतयुग जो गति ध्यान किहेते। त्रेतायुग मख दान दिहेते ॥
द्वापर युग हरि पूजन ठानी। पावत रहैं जौन गति प्रानी ॥
सो गति कलिहरिके गुणगाये। पैहैं नर जपि नाम सुनाये ॥
कलि केवल परमारथ हेतू। राम नाम भवसागर सेतू ॥
साधन नाम सिद्ध फल नामा। जेहिनप्रतीतिताहिबिधिबामा ॥
धर्म चारि पद कलियक दाना। जेहितेहिभांति किहे कल्याना ॥
जब शुभपंथसकल मिटिजाई। तब कहुं हरि अवतरिहैं आई ॥
सुनिन्नृप कोपिचला कलिओरा। रे खल नाम सुने नहिं मोरा ॥
तब कलिडरपि चरण मेंपरेऊ। बहुत भांति अस्तुतिअनुसरेऊ ॥
जो कछु आयसु होइ तुम्हारा। सो हम कीजै याही बारा ॥
जब लग हम जगरानकरीजै। तब तक आपन अमल न कीजै ॥
देहु मोहिं अस्थान बताई। जहँहम बसनकटक युतजाई ॥
दूत चौर गणिका मदपाना। कनक बसहु इतने अस्थाना ॥
सुनिन्नृप मुकुट बैठ सुखपाई। सुरमतिमिटी असुरमतिआई ॥
चला भूप कछु तृषा सतावा। शृंगीऋषिके आश्रम आवा ॥
ध्यान स्थित लखिमनअनुमाना। हमें देखिठानिसिबकध्याना ॥
मृतक सर्प धनुकोर उठाई। कंठ लपेटि चल्यो हरषाई ॥
सुन्यो सुवन शृंगी ऋषि केरे। आवा तुरत पिताके नेरे ॥

दो० पन्नग कंठबिलोकि कै दीन्हेसि शाप रिसाइ।
सतयेंदिन नरपालको काटै तक्षक जाइ॥

काढ़ि उरग तबपितहि जगावा। भूपति को वृत्तान्त सुनावा॥
शापदीन सुनि अति रिसियाने। कीन्हे निपट अकाज अयाने॥
जेहिके चलत बिबिधिसुखकीजै। ताहि कि चहीदण्ड असदीजै॥
शुचि सेवक कछु चूकै कबहीं। चतुरस्वामितेहि तजतनतबहीं॥
धर्मवान जाई नृप ऐसा। नहिंजनियत अबआवैकैसा॥
अस कहिऋषिचलिभेचितचेता। भूपहि बोध देनके हेता॥
यहां महीपति मुकुट उतारा। तबमनशोचकीन्ह अधिकारा॥
कौन कर्म कीन्ह्यौं मैं आजू। होई कछु बड़ दोष अकाजू॥
जो याकर फल मोहिं बिधाता। देइ अक्षततन तौभलिबाता॥
तेहि अवसर ऋषि पहुंचे आई। लखिनृपपर्‌योचरणअकुलाई॥
बोले ऋषिभइ तुम्हें शरापू। सजग होउ अबहींते आपू॥
कह नृप अति बड़ दोष हमारा। थोरेहिमा तवतनय निवारा॥
नृप तुमकछु अपराध न कीन्हा। होनहार है परबल चीन्हा॥
सुरमुनि दनुज नाग नर माहीं। होनीटारि सकत कोउनाहीं॥
हिरण्यकशिपु दशकंधर कंसा। औरौ भये भूरिदिति बंशा॥
जीवन हित बहुकिहिनि उपाई। कालपाइ कोउ बचे न राई॥
गरुड़ कपोतै चह्यो बचायो। अजगर के मुखमें धरिआयो॥
होनहार जो सुन्दर होई। तौ जग मारिसकै नहिंकोई॥
कनककशिपु प्रहलादै डाटा। का करिसके ठाट बहु ठाटा॥
बालि बधन सुग्रीवै चाहा। कहौ बैरकरि कीन्हिनिकाहा॥
चंद्रहास का सब जगजाना। का कीन्हिसिकरियत्रदिवाना॥
अंबरीष पर रिस अति कीन्ही। मुनिबर कौनि बड़ाईलीन्ही॥
सचिव सुधन्वै चह्यो जरावा। शंखलिखित फलआपुइपावा॥
सुरुचि चह्यो ध्रुव बरहिबिनाशा। रामकृपाअबिचलभयोदासा॥
पांडुसुतन कहँ बहुत सताइनि। दुरयोधन कछु कीन्हेपाइनि॥

ब्रह्म अस्त्र तब ऊपर पेरा। द्रोण पुत्रका कीन्हिसि तेरा॥
जाकी मौत निकट जब आवै। तेहिरजु केर सर्पङ्क जावै॥
तेहिते होनहार है जेती। नीकि जबूनि होतिहै तेती॥
संत चहैं कछु देहिं मिटाई। अपर न टारिसकै कोइराई॥
अस कहि ऋषिनिजआश्रमआये। भूपतुरतसुनिसहजसुभाये॥
राजकाज तजि सकल अवासा। आइकीन गंगातट बासा॥
व्यास पराशर आदि मुनीशा। जुरेआइ तहँ बहु अवनीशा॥
कोउ कहैं करो भूप गोदाना। कोउ मुनि बरत बतावै नाना॥
दो० तेहि अवसर शुकदेवजी आये नङ्ग धरङ्ग।
ताल बजावत बाल बहु डारत लै रज अङ्ग॥
शुकहि देखि जे रहे अखाड़े। ज्ञान वृद्धलखि भे सबठाड़े॥
आसन दीन भूप सनमाना। आपनजन्म धन्यकरि जाना॥
बोले बहुरि जोरि युग पानी। कहो भद्रकी बात बखानी॥
हे नरेश मन शोच न कीजै। नृपखट्वांग बात चित दीजै॥
उभय घरीमें भइ गति जाकी। तुम्हैं सप्तदिन जीवन बाकी॥
हरि चरितामृत पान कराई। तुम्हैं तारि देहौं मैं राई॥
अस कहि कहन भागवतलागे। लागे सुनन भूप अनुरागे॥
प्रथमें कछु कामना देखाई। पुनि प्रभु चरित कहे हरषाई॥
जग उत्पति अस्थित संहारा। ब्रह्म निरूपण ज्ञान उचारा॥
भक्ति योग बैराग बिबेका। भा अस्कन्ध समापत एका॥
तब दूजे में लाग लगावा। पुनि कछुयोग कृपाकरिगावा॥
बिधि नारद की कथा बखानी। चौबीसौं अवतारहि जानी॥
जग उद्भव कहि पूरण कीन्हा। तब अस्कंध तीसरो लीन्हा॥
ऊधो मिलन प्रभास बिषादा। कह्यो बिदुर मात्रै सम्बादा॥
सप्त बिकार सहित ब्रह्मण्डा। रूप बिराट कहत भे अण्डा॥
सूक्षम थूल काल की करणी। पुनि ब्रह्माकी उत्पतिबरणी॥
बधिहिरण्याक्षधराजिमिआनी। बाणीकी उत्पत्ति बखानी॥

शंभु मनु सतरूपा केरी। कही कथा त्रैसुता निबेरी॥
पुनि कर्दम का कह्यो बिहारा। नव कन्यन ते सृष्टि अपारा॥
देवहुती अरु कपिलक ज्ञाना। बरणिचौथअब करतबखाना॥
दक्ष यज्ञ जेहि बिधि भइभंगा। सती मरण कर कह्योप्रसंगा॥
ध्रुव चरित्र पुनि तिन करबंशा। कही कथा पृथु केरि प्रशंसा॥
पुनिप्राचीन मखै जिमिकीन्हीं। कहिनि सीखनारद जोदीन्हीं॥
तूर्य पूजि पंचम गहि पानी। बरणी प्रियब्रतकेरि कहानी॥
ऋषभ केर अख्यान सुनावा। भरथ मृगी करिजोदुखपावा॥
पुनि जड़भरथ रघूगण ज्ञाना। कह्यो भूप भा नारिअजाना॥
दीप सिंधुगिरि सरिता धरणी। रबिशशि उड़मरयादाबरणी॥
ज्योति चक्र पाताल प्रमाना। बरणे नरक महा दुख नाना॥
षष्ठम अजामील इतिहासा। धर्म दूत संवाद प्रकाशा॥
दो० सहस एकादश पुत्र बर दक्ष किये उत्पन्य।
नारद ज्ञान सुनाइ कै बिपिनि पठाये धन्य॥
तब तिन साठि सुता उपजाई। तिनते सृष्टि भई अधिकाई॥
कश्यप के जन्मे सुत नाना। सुरगुरु हरिका बैर बखाना॥
विश्वश्रवै बधबासब कीन्हों। हत्यालागिबांटि जिमिदीन्हों॥
इन्द्र वृतासुर युद्ध बखाना। नहुष भये जिमि पन्नगयाना॥
चित्रकेतु की कथा सुनाई। भे उनचास पवन जिमिआई॥
सप्तम कहि प्रहलाद चरित्रा। बरणाऽश्रम के धर्म पवित्रा॥
अष्टम कहे मन्वन्तर चौदा। गज नारद की कथा मसौदा॥
कूरमकर अवतार सुनाइनि। सागरमथत रत्नजिमिपाइनि॥
समर असुर सुर मक्षकहानी। बलि बावनकी कथाबखानी॥
नवम माहिं रबिबंश बखाना। नृप की कथा कीन तहँगाना॥
च्यमन शंकु की कथा सुनाई। अम्बरीष की कीन बड़ाई॥
सगर भगीरथ अति मनभाये। राम चरित प्रमुदितकछुगाये॥
निमि प्रसंग निर्णय जग केरी। परशुराम की कथा निवेरी॥

दो० रबि शशि बंश मिलाप कहि इलाबुद्ध संयोग।
बरणी शंतनु की कथा पुनि ययाति करभोग॥

पुनि यदुबंश कहा बिस्तारी। जामें प्रकट भये गिरिधारी॥
दशयें कहा कृष्ण अवतारा। बकी शकट तृणावर्त मारा॥
यमलार्जुन तिनकागतिदीन्हों। बत्स्यबकासुरजिमिबधकीन्हों॥
कंस निधन बिधा जिमिपाई। जरासिंध की कही लड़ाई॥
रुक्मिणि हरण द्वारकै आये। औरो चरित दशम बहुगाये॥
गेरहें कहा यदुन कर नाशा। नवयोगेश्वर जनकबिलासा॥
हरि उद्धव का ज्ञान सुनायो। दत्तात्रयद्विजका यश गायो॥
बहुरि भये प्रभु अंतर्द्धाना। सो चरित्र सबकीन बखाना॥
द्वादशयें युग लक्षण गायो। निकलंकी अवतार बतायो॥
होई संभर गढ़ अभिरामा। बिष्णुदत्त ब्राह्मण के धामा॥
दलिमलेच्छ पुनि सतयुगहोई। कुमति सबनकी जाई खोई॥
उतपति तीनि तरहकी भाषी। परलय चारि भांतिकीराखी॥

दो० इतनी कथा सुनाइकै शुक मुनिकीनपयान।
तुरतैअहि काट्योनृपहि आयो दिव्यविमान॥

चढ़ि नरेश हरिलोकहि गयऊ। जयधुनि देवकरतसबभयऊ॥
तब शौनक ते मुनिवरज्ञानी। जनमेजय की यज्ञ बखानी॥
वेदनको साखा उप साखी। मारकंडे की परलय भाषी॥
द्वादश रविकी कथा सुनाई। सूक्षम सकल भागवत गाई॥
जो नर पाठ नेम युत करिहैं। तासु दोष दुखश्रीपतिहरिहैं॥

दो० श्रीगुरुदेवा दासके चरण कमल धरि माथ।
अखिल भागवत केरमत बरण्योजनरघुनाथ॥

पुनि शौनक बोले शिरनाई। नाथ सकल भागवत सुनाई॥
अब अभिलाष एक उरआई। कृष्णकथा सुन्दर सुखदाई॥
दशम बहुरि किरपाकरि गावो। करि बिस्तार पूर्वार्द्ध सुनावो॥
जो उतरार्द्ध नाथ तुम गावा। इतिहासन महँसो सुखपावा॥

तेहितें बालकृष्ण लीला अब। कहौंमोहिंकरि कृपानाथसब ॥
केहि कारण प्रगटे गोपाला। केहिबिधिमार्योकंसभुवाला ॥
बहुरि रुक्मिणी मंगल गावो। भा बिवाहकेहिभांतिबतावो ॥
औरहु किहिनि चरित बहुतेरे। सोसब बदहु देव हित मेरे ॥
बोले सूत सुनहु मुनिज्ञानी। प्रथमें ते सब कहौं बखानी ॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथ दासरामसनेहीकृतकृष्णायनप्रबन्धबर्णनोनाम प्रथमोऽध्यायः १ ॥

दो० सुमिरिरामसिय संतगुरु गणप गिरासुखदानि।
भारथ मत करि कंसकी उत्पति कहौं बखानि ॥
नगर एक मधुपुर असनामा। कालिंदी तट अतिअभिरामा ॥
उग्रसेन रहे तामें भूपा। पवनरेख रमनी रति रूपा ॥
देवक उग्रसेन को भ्राता। तिनहुंकित्रिया मनोहरगाता ॥
इकदिन उग्रसेन की नारी। सकलशृँगारकिहिसिद्धबिभारी॥
सखिन संग लै उपबन देखन। गई पृथक ह्वै लागी पेखन ॥
तेहि अवसर दानव इक आवा। भूप रूप धरिहाथ चलावा ॥
बोली पति ऐसो मत कीजै। दिनरति किहेपुण्यसब छीजै ॥
तेहिमाना नहिं कछु अपयोगा। बरबशकिहिसितासुसँगभोगा॥
तेहि पाछे निज बपु प्रगटावा। नृप पत्नी लखिबचन सुनावा ॥
रे खल नीच छले तैं मोहीं। कोहसि शाप देतहौं तोहीं ॥
बोला मैंहौं दनुज जुझारा। कालनेमि है नाम हमारा ॥
सतयुग समर बिष्णु ते ठाना। शाप न देहु लेहु बरदाना ॥
दो० तुम्हरे हमरे अंशते होई बालक एक।
महा प्रतापी भुजबली जीती भूप अनेक ॥
राखी असुर निकर बल भारे। बिन भगवंत मरी नहिं मारे ॥
सुनत प्रसन्न भई तब रानी। आई जहँ सब सखीसयानी ॥

हँसि बोली बनिता तब ऐसे। बिगलितभये बसन तवकैसे॥
धावा कपि एक निकट हमारे। आइन भागितासु भयमारे॥
तेहिते अब चलिये निज धामा। सुनि आईं गृहनिज२ बामा॥
गर्भ अवधि सुखसहित बिताई। माघशुक्ल कुज तेरसि आई॥
जन्मा सोइ बालक अधराती। भये उपद्रव नाना भांती॥
उग्रसेन बहु द्रव्य लुटाई। कंस नाम बुधराखिनि आई॥
भा जब बड़ा बालकन संगा। खेलन जाय करैतहँ दंगा॥
फोरै कूप भरत जल देखै। भुजबल मस्तन काहुइ लेखै॥
मगध देश यकरोज सिधावा। जरासंध को जाइ हरावा॥
तिनके रहे सुता युग आछी। लावातिन्हैं परणिसहसांछी॥

दो० नाम अस्ति प्रापति मनहुं मन्मथ कीकरबाल।
लग्योकरनसुख सदनबसि तिनयुतकंसभुवाल॥

एक दिवस भूपति ते बोला। तोहीं करैगो राज्य अडोला॥
असकहिकीन्हिसि कैदअभागा। अपना करन राज सुखलागा॥
असुर मयाबी बिपुल बटोरे। जे रिपु समर मुरैं नहिं मोरे॥
तिन्हैं संगलै यक दिन धावा। जीतिनिकरन्नृपपुरफिरिआवा॥
अपर सुनो देवक की बारी। नाम देवकी रहै कुमारी॥
तिन को व्याह करन के काजा। खोजवाये बर जहँतहँ राजा॥
सूरसेन के सुत बसुदेऊ। सबहिन कही इन्हैं बरिदेऊ॥

दो० तब नरेश बसुदेव को दीन्हीं सुता बिवाहि।
दोउदिशिभा उतसाहअतिसोकापै कहिजाहि॥
हय गज स्यन्दन हेम पट रत्न अनेकन दीन।
याचक सब परतोषिकै बिदाबहिनिकरकीन॥

पठवन चला आपु सुख मानी। तेहिक्षणभई गगनइमिबानी॥
यहि कन्या के बालक होहीं। अठवां सुत मारी नृप तोहीं॥
सुनि नृपउतरिकेशगहिलीन्हों। खड्ग काढ़ि मारनको कीन्हों॥
तब बोले बसुदेव पुकारी। प्रमदा बध पातक है भारी॥

तेहि ते याहि छांड़ि नृप दीजै। बोला तुम कछु शोच न कीजै॥
आगे तरु बिष फल फलै कोई। डारै ताहि काटि भल सोई॥
यहि हति तुम्हैं परणि हौंआना। सुनि बोले बसुदेव सुजाना॥
नृप कछुतवभगनी नहिंघालक। रिपु तुम्हार ह्वै इनकरबालक॥
जबहीं सुत प्रगटी जग आई। देहौं तुम्हें तुरत मैं लाई॥
सुनिबिनतीदीन्हिसितब त्यागी। आये दोउनिज गृहअनुरागी॥
कछु दिन गये समय जबआवा। प्रथमैं पुत्र देवकी नावा॥
लै बसुदेव गये नृप पासा। जानिसि हैं सांचे हरिदासा॥
बाल बिलोकि दया उर आई। कहिसिशोच निजसुतलैजाई॥
तेहि अवसर नारद तहँ आये। छिप्रनिधनहित बचनसुनाये॥
कंस कहा लरिकाई कीन्ह्यो। जानिबूझिनिज रिपुतजिदीन्ह्यो॥
सुनि महीप अस बचनउचारा। अष्टम सुतहै काल हमारा॥

दो० तब नारदलिखि बक्रगणि सकल भयेबसुसोइ।
को जानै नृप शत्रु जो प्रथमैं आवा होइ॥

अससुनिकंस शिशुहि धरिमारेउ। यहिबिधि षटबालकसंहारेउ॥
तब देवकी महादुख पावा। मनहींमन श्रीपतिको ध्यावा॥
कंस बंश मम कीन्हेसि खीशा। यह बिपदा हरिहौ कबईशा॥
बढ़े पाप पृथ्वी गरुआनी। शिव बिरंचि ते बिनती ठानी॥
सब मिलिगये जहां भगवाना। अस्तुतिकरतभये बिधिनाना॥
सुनि बोले लखि दीन मुरारी। निर्भय होउ देव मुनि झारी॥
धरि हौं मैं नर तन अब आई। हरिहौं सकल भूमि गरुवाई॥
करिहौं पूर मनोरथ सबके। भाव बिबश कारज जबतबके॥
आयसु सबहिं दीन पुनि एहू। गोकुल जन्म जाइ तुम लेहू॥
वेद रचन का दीन रजाई। गोपी होउ सकल तुम जाई॥
पाय रजाइ सबन सोइ कीन्हा। आपुबोलिनिजमायहिलीन्हा॥

दो० कह्यो देवकी के गरभ है सतवां मम अंश।
ताहि रोहिणी के जठर करिआवो निरसंश॥

सुनि सोइ करत भई हरिहांसा। जाना सबन गर्भ मा नाशा॥
अठयें बास आपु हरि लयऊ। बदन प्रकाश चंद्रसम भयऊ॥
अंग सुगंध बढ़त छबि जाई। कंस दिहिसि लखिबंदि डराई॥
कर हथकरी निगड़ पग डारे। जड़ि कपाट पहरू बैठारे॥
तिन ते कहेसि होयसुत जबहीं। सुनि तुम हमें जनायो तबहीं॥
यहि बिधि गये कछुक दिनबीती। जेहिहरिप्रकट सुनहुसोरीती॥
भादौं मास पक्ष अँधियारा। उड़प रोहिणी अरु बुध बारा॥
तिथि अष्टमी रैनि अँधियारी। झिमिकि २ बर्षत बरबारी॥
प्रभु आगमन जानि सुर आये। करिबिनतीपुनिगगनसिधाये॥
द्वलिगे सकल पटल के तारे। भे निद्रा बश सब रखवारे॥
अरु बसुदेव देवकी दोऊ। छूटि गये बन्धन ते सोऊ॥
जब प्राचीदिशि शशिदरशाना। प्रकट भये तब श्रीभगवाना॥
क्षीर सिन्धु गो लोक निवासी। शोभासदन सकल सुखरासी॥
शीशबसन श्रुति कुण्डललोला। उरबिशाल बनमालअमोला॥
शंख चक्र गदा पद्म बिराजै। मणिभुज चारिबिप्रपदभ्राजै॥
दो० पीत बसन उपबीत उर राजत नयन सरोज।
अँगअँगपर रघुनाथजन वारतअमित मनोज॥
लखि बसुदेव ब्रह्मकहँ चीन्ह्यों। अंजुलिजोरिदण्डवतकीन्ह्यों॥
पुनि उठि कह्यो तुम्हें मैं जाना। परम पुरुष हौ तेज निधाना॥
परम ज्योति अद्वैत अबिकारी। निरगुणब्रह्म त्रिगुणतनुधारी॥
कंसापुर त्रासत निशि भोरा। हरहुनाथ मम संकट घोरा॥
पुनि मुनि प्रभुहि देवकी जानी। बंध त्रासयुत बिनयबखानी॥
अहो पुराण पुरुष अबिनाशी। निजानन्द निर्गुण गुण राशी॥
काल ब्याल ते मनुज डेराने। सर्ब लोक कहँ जात पराने॥
तजत न मृत्युजहां चलिजाहीं। निरभय होत कतहुं सो नाहीं॥
तव पद पदुम प्राप्त जो होई। पद रक्षा सुख पावत सोई॥
मृत्यु डेरन लागी तव ताहीं। सेवत चरण कमलजो आहीं॥

ऐसे तुम मम उदर निवासी। है नरलोक बड़ी उपहासी॥
बोले तब श्री पति सुनु माई। जेहि ते तव मन संशय जाई॥
पूरब जन्म माहिं तुम मोहीं। याचेहु बरतुम सम सुत होहीं॥
भक्त बछल मैं बिरद बिचारा। भयउंआइ तेहितनय तुम्हारा॥
कंस महा खल सुनतै आई। तौ मोहिं गोकुल देहु पठाई॥
यशुमतिके उपजी मम माया। लावहु तेहि उठाय करि दाया॥
कछुदिन नन्द भवनकरिलीला। मिलबतुम्हेंपुनिबन्धुसमीला॥
असकहि शिशु ह्वै रोवन लागे। देखि मातुपितु अति अनुरागे॥
नार बेवार समेत उठावा। लै बसुदेव चले तम छावा॥
कालिंद्री जब लगे मँझावन। यमुना बढ़ी छुवन पद पावन॥
गुलफ जंघ कटि गरतक आई। शिर धरि ठाढ़ रहे डर पाई॥
लखि प्रभु पाछे पाउं पसारा। परसि बहीं मुरवन तक धारा॥
ऊपर शेष सहस फन छाये। इत उतहरि तरिगोकुल आये॥
प्रबिशे महरि भवन के माहीं। प्रगटी सुता तिन्हैं सुधिनाहीं॥
शिशु सोवाइ तिन आगेदीन्ह्यों। लै बालकी गवनपुनिकीन्ह्यों॥
निवसत निलै बहुरि पट लागे। बन्धन परे पौरिया जागे॥
सुनि कन्या का रोदन जाना। भासुत नृप ते जाय बखाना॥
सुनत कंस आपुइ चलि आवा। तब देवकी बहुत समुझावा॥
तदपिनखल मानिसि परतीती। लीन्हेंसिछीनि सुताबिपरीती॥
पटकन लाग शिला पर नीचा। करते तड़पि गई नभ बीचा॥
बोलत भई कंस तव हंता। प्रगट होइ चुकाहै कहुं अंता॥
सुनि नभ गिरा उठा अकुलाई। गिरा देवकी के पग धाई॥
मैं अपराध कीन सुत मारे। होनहार सो टरत न टारे॥
कंस ज्ञान उपदेशत कैसे। दीप प्रकाशत आनहिं जैसे॥
कह देवकी सुनौ हे भाई। निजकृत कर्मन तोरि लगाई॥
जो जसकरै सो तस फल पावै। बिन समझे पर दोष लगावै॥
दुख सुख प्रद जगमें नहिंकोई। मन माने कर संभ्रम होई॥

यहसुनिउठिनिजमन्दिरगयऊ। सचिवबोलिअस बूझतभयऊ॥
कहौ कहा अब करैक होई। जन्माकहु अन्ते अरि सोई॥
बोले दुष्ट सुनो महराजा। याकी तौ है सहज इलाजा॥
दो० एक बरष के बीच मा जो सुत जनमे होइ।
डारहु सकल मराइ तुम आपुइ बची न सोइ॥
सुनत बोलाइसि असुर समूहा। कह्योकिमारहु शिशुकरिहूहा॥
चले जहां तहँ आयसु पाई। लागे करन पाप अधिकाई॥
यह इतिहास कही मनमानी। अब गोकुल की सुनो कहानी॥
रोदन तहँ जब कीन मुरारी। जागी महरि शोर सुनि भारी॥
बालक देखि परम सुख पावा। गोमय चन्दन भवन लिपावा॥
गोपुर कलश बिचित्र धराये। नवल बधुन मिलि मंगलगाये॥
ध्वजपताक तोरण पुर छाये। देवन हरषि सुमन बरषाये॥
नंद सहस दश धेनु मँगाई। बिप्रन कहँ दीन्हीं हरषाई॥
मुदित नारि नर बीथिन डोलैं। जयति २ जय सुतकी बोलैं॥
उड़त गुलाल सकलतन सींचा। मारग मध्य मची दधिकीचा॥
बाजहिं बाजन नाचहिं नारी। हँसि २ देहिं नन्दकहँ गारी॥
नारदादि सनकादि मुनीशा। कौतुक लखतफिरत अजईशा॥
बहुत कहां तक कहौं उछाहू। प्रगट भये जहँ त्रिभुवन नाहू॥
जातक कर्म वेद बिधि कीन्हा। बहुबिधिदान याचकनदीन्हा॥
पुनिलै नंद क्षीर दधि छेगू। कंसै देन चले मिलि नेगू॥
मधुपुर आइ चढ़ाइन भेंटा। सबन कहा इनके भा बेटा॥
बहुत नीक कहि भीतर तेरे। तहां बैठाइ गयो उठि डेरे॥
तुरत लिहिसि पूतनहिंबोलाई। आवहु मारि नन्द सुत जाई॥
दो० चली तुरत नव नारिबनि सजितन भूषणचीर।
जहर उरोज लगाइ कै आई यशुमति तीर॥
पुर पतनी भौचकि रहीं रूपवान लखि तासु॥
बिन बूझे आसनदयो बरणि भागिनिजआसु॥

सो० लालहिलखिदुलराइ देखिदुचित्ती महरिको॥
लीन्ह्योगोदलगायदीन्ह्योमुखबिषसहितकुच।

लागे पियन कृष्ण करि जोरा। भागी करत छुड़ावत शोरा॥
लीन्हे खैंचि प्रान पुर पासा। योजन डेढ़ माहिं बपु भासा॥
दीन्ही गति जननी की ताही। कोकृपाल अस मनिये जाही॥
कौन पुण्य या कीन्ह्यो भारी। जाते पीन्ह्यो दूध मुरारी॥
रतनदाम दुहिता बलि केरी। बावनबपुछलि लखि बहुतेरी॥
मनमें चहिसि पियावों क्षीरा। सोइ इच्छा पूजी यदुबीरा॥
कृष्ण तासु कुचपर इमि राजैं। जिमिघनशिशुगिरिशृङ्गबिराजैं॥
भय बशलाग निकट नहिंजावैं। दूरिहि ते पाषाण चलावैं॥
हाइ हाइ करि यशुमति धाई। लिहिनिललहिलखिगोदउठाई॥
भवन आनि दीन्ह्यो बहु दाना। कह्यो बचायो हरि भगवाना॥
पुरबासी सुनि देखन धावैं।बकिहिबिलोकिबिधिहिशिरनावैं
करि रक्षा मोहन तन केरी। कहेंकि केहुइंदिहेउ मतिफेरी॥
यहां नंद नृप आयसु पाई। मित्रै मिलन चले हरषाई॥
कुशलप्रश्न कहि करिसनमाना। बोले पुनि बसुदेव सुजाना॥
कालाधीन देह नहिं नेमा। बिछुरि मिले समअपरनक्षेमा॥
भले कृपाकरि दरशन दयऊ। अतिसुखमिलासुनासुतभयऊ॥
जाहु बेगि निज मन्दिर ताता। करत फिरत तमचरउतपाता॥
रक्षा करत सुतन की रहियो। करुणा दृष्टि रामकी चहियो॥
गोकुल आइ दीख सोइ हाला। लगे बतावन सब नर बाला॥
खंड २ करि ताकर अंगा। जारत कढ़ी सुगंध प्रसंगा॥
एक दिवस कागासुर आवा। पकरि तासुशिर तोरिबहावा॥
पूर्व बिप्र बादी यह रहेऊ। भइगुरुशापभुगतिगतलहेऊ॥
जन्म नक्षत्र परा पुनि आई। पूजन हित बटुरे कुल भाई॥
श्यामहिं शकट तरे पौढ़ावा। महरि काममें चित्त लगावा॥
गई भूलिमोहिं निपट बिसूरा। मारी लात शकट भो चूरा॥

सुनिलरिकनसुखपितुअरुमाता। दौरि लगाइनि पुत्रहि गाता॥
अचरज मानि कहैं नर नारी। टरी कान्ह की करिवरभारी॥
तृणावर्त तेहि पाछे भेजा। प्रभुइ परे देखा सुठि सेजा॥
गरू गोपालहि लखि महतारी। जागतिदिहिसिरहैं तहँपारी॥
बोंड़रङ्क कीन्ह्यों अँधियारा। लीन्ह्योगहि गागगनमझारा॥
गरू भये प्रभु सधा न भारू। गिरा महीतल भा संहारू॥
दल थंभन नृप पंडुर देशा। दुरबासा दतमिठ्यो कलेशा॥
छातीपर खेलत सुत पाइनि। नन्दमहरिनिजभागमनाइनि॥
बिप्रन बोलि दान बहु दीन्हा। गोप बधुन तब लेता लीन्हा॥
दइउ दीन सबके घर बारा। तुम्हें काम है बहुत पियारा॥
चौथेपन देख्यो सुत आंखी। तदपिन प्रीतिप्राणसमराखी॥
कहैं रघुनाथ निरखि प्रभुवोरी। थकितहोहिंजिमिचंदचकोरी॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदास
रामसनेहीकृतश्रीकृष्ण जन्मउत्साहपूतनाकागासुर
तृणावर्तबधबर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः॥ २॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु गणपगिरासुखदानि।
कहौं दशमकी रहसि कछु कृष्णखंड की आनि॥
कभू महरि मुख चूमि कै बदन पयोधर देत।
कभू झुलावत पेलने कभू लाय उर लेत॥
यहि सुखमें कछुकाल बितायो। अन्न पराशन को दिन आयो॥
नन्द बहुत सामा मँगवाई। मधु मेवा पकवान मिठाई॥
साइतिसमुझिश्यामसुखदीन्ह्यों। बिप्रबंधुपुनि भोजन कीन्ह्यों॥
दिन दिनबढ़न लगे हरि कैसे। शुक्लपक्ष कर निशिकर जैसे॥
प्रगटी तन अति चंचलताई। गहै न एकौ छिन थिरताई॥
अगिनिकीशशुकनखीश्रृंगारण। धरतकरततहँ महरिनिवारण॥
बत्स पूंछ गहिकभूभगावैं। पुरजन पकरिमातु ढिगलावैं॥

एक दिवस आये द्विजएका । किहिनिरसोइं सहितविवेका ॥
पुनि तहँ भोग लगाइनि वोटा । पावत दीख नन्द का ढोटा ॥
कह्यो महरि ते बहुरि कराई । भोग लगत पुनि पहुंचेआई ॥
तब यशुमति दबकी सुनिलेहू । पुनि २ मोहिं बोलावतयेहू ॥
दो० यहि झूंठे संसार को भावत झूंठी भक्ति ।
फुरअहिलखिरघुनाथजिमिभागहिंत्रियासुशक्ति ॥
कछु दिन गये गर्ग ऋषि आये । नाम धरण बसुदेव पठाये ॥
लखि ब्रजपति पूज्योसब भांती । कहिनिजभागधन्यदिनराती ॥
सुरसुख दुख प्रद तुममुददाता । आजु गोद देखे दोउ भ्राता ॥
शंकर्षण बलभद्र रुरामा । कहे तीनि अग्रज के नामा ॥
बासुदेव अरु कृष्ण कन्हाई । इनके नाम अपर बहुराई ॥
मातुल रिपु परतिय रतचोरा । होइहैं निलजनिडरबरजोरा ॥
साधु बिप्र गो पालन करिहैं । अभिमानिनकीअहमितिहरिहैं ॥
मातपिता को आनँद देहैं । नृपसुखसहितजगतयशलेहैं ॥
औरौ फल बहु कहे बुझाई । आये भवन दक्षिणा पाई ॥
एक दिवस खाई हरि माटी । लरिकनकहामहरिसुनिडाटी॥
मुख पसारि देखरावत भयऊ ।उदरबिलोकिबिसरितनगयऊ॥
देखा सकल बिश्व मुख माहीं । कौनि सोबातजो वामें नाहीं ॥
सुर नर असुर नाग नभ चारी । रबिशशिडुड़सरिसरदधिभारी॥
स्वर्ग नरक यमकाल निहारा । बिधि हरिहर बैकुंठबिहारा ॥
इहिबिधिसकलबस्तु दिखराई । मूंदिलिहिनिपुनिबदनकन्हाई॥
चकृत भई स्वपन मैं देखा । सांचोसांच किनयनन पेखा ॥
भा बिबेक सुत ईश्वर चीन्हा । बहुरि कृष्णमायाबशकीन्हा ॥
कहै रघुनाथ धन्य ते प्रानी । जे ऐसे प्रभु सों रति मानी ॥
इकदिन इक ग्वालिनघरजाई । लागे माखन खान चोराई ॥
निज परछाहँ मुकर लखिबोले । तुमहूं खात कह्यो जनिखोले ॥
सुनिमृदुबचनहँसी सोइ बाला । भीतर ते भागे नँद लाला ॥

इक दिन गये अपर घर बारा। छींके ते नव नीत उतारा॥
तेहिक्षणधनिआइनि चलिआई। बोले तासों बचन बनाई॥
कूदत रही एक मंजारी। मैं उतारि कीन्ही रखवारी॥
भले करत तुम दोष लगावा। जानि पड़ा अबहींकलिआवा॥
तेहिं तब कहा खाय तुम लेहू। मोहिं नीक नहिं लागत येहू॥
इकदिनगे इक भवन बहोरी। सींके लखि दधि पेंदी फोरी॥
आवत तासु वचन सुनि चीन्हा। निकसेतुरतपकरितेहिलीन्हा॥
पूछत भइ कस भागे जाहू। बोले तब तेहिते सुरनाहू॥
कहिये कह दुखमें दुख होई। मैं नर मुण्डित की गति सोई॥

दो० सेदज दुख बिन कच भयो लग्यो घाम अकुलाइ।
धर्योबाग सिर बेलफल गिर्यो अधिकदुखपाइ॥

मैया मोहिं उठि मारन धाई। तेहिआयनु तवभवन लुकाई॥
तहँदेखी दधि खात बिलारी। सोइडेरइहौंते भागेन प्यारी॥
सुनि तेहि दीन तुरतही छाँड़ी। दौरि उतारिस आइ दुधाड़ी॥
इकदिन धाम अपर के गयऊ। माखन घटलै भागत भयऊ॥
ते सब दिन पति देहिं उरहना। महरिनमानै तिनकर कहना॥
इक दिनगे कमला के धामहिं। धाइधरिसितेहिदेखतश्यामहिं॥
गोपी कहैं चलो जहँ माई। नितकी कसरि निकारी जाई॥
बोले श्याम मोहिं नहिं शंका। बिन कीन्हेनहिलगतकलंका॥
यशुमति निकट देखावन लाई। भये तासु पति तुरत कन्हाई॥
बोली महरि भई हँसि बौरी। खसमै पकरि देखावन दौरी॥
पतिमुखलखि लज्जितह्वै भागी। कह्यो कहामैं मंद अभागी॥
इक दिन पकरि लयाई आना। ह्वैगे तासु तनय तब कान्हा॥
खात खसम सुत सबके चीन्हा। हमरै पुत्र निबलकरिलीन्हा॥
यक दिन प्रभुसब सखाबोलाये। तिनते कौतुक बचन सुनाये॥
अहोमित्र गोपिन घर चलिये। खाइयदधिभाजनदलिमलिये॥
जो वै मिलि पकरैं बर जोरी। तुम सहाइ हूज्यो तब मोरी॥

यकमतिलखिकोउसकतनजूटी। जिमि बुधि सेनबिहँगगाछूटी॥
एक मते ह्वै पंगुल अंधा। बच्यो अग्निते चढ़ि परकंधा॥
असकहिकृष्ण चलेअभिलाषी। लागे संग सखा भल भाषी॥
बदहिं परस्पर सुनिये मीता। चलत मही पर लागत भीता॥
एक कहैं तुम कादर भारी। हम हरिहैं करिहैं कह नारी॥
अपर कहैं भागब भय देखी। शून्य सदन प्रबिशे इक पेखी॥
सौंज खाइ अरु कपिन लुटाई। निकसिगये,तब सोतियआई॥
देखि बिनाश करत भइ शोरा। दिनहीं में को आयो चोरा॥
निकट जाइ बोली इक बाला। मैं पैठत देख्यों नँदलाला॥
मनमें भई पुकारौं तोहीं। गुंगी केहुं कर दीन्ही मोहीं॥
इतने में ताहू के धामा। हलि गोरस खायोघनश्यामा॥
लगी पुकारन घर जब आई। नाहक मैं तव भवन सिधाई॥
जो कोइ बीच जबर के परई। लोमड़ि सम दुख सोऊ भरई॥
दधि माखन पकवान अनेका। खाइ गयो राख्यो नहिं नेका॥
पुनि काहू के मंदिर धसेऊ। देखि लीन तेहिसबकाग्रसेऊ॥
कह हरि साधु हमारे आये। बाबा भोजन हेत टिकाये॥
मैया मोहिं पठयो तब तीरा। माँगि लाव दधि माखन क्षीरा॥
आये हमैं भई बड़ि बारा। माँगों कासों शून्य अगारा॥
सखा बुलाबन आये अबहीं। चलो चह्यो तै आई तबहीं॥
जो चित चहै देहु अनुरागी। धन्य भाग्य परस्वारथ लागी॥
साधु सिंह सम चरित रहावै। भावहीन लखि मृतक नखावै॥
लाल बदन की सो सुनिबानी। बोली हँसि मनमें संकुचानी॥
प्यारे जो ऐसी है बाता। तौ मेरो सो तुम्हरो ताता॥
संचित घृत दधिमाखनक्षीरा। हरषित आनिधर्योहरितीरा॥
चले सखन के शीश धराई। लागे सब मिलि चौहटखाई॥
यह कौतुक सब गोपिन देखा। बंचक धूत छली अतिलेखा॥
बोली एक तासु घर आई। आजु भली तू गई ठगाई॥

सुनि सो कहत भई हे बाला। मति बौराइ गयो लै लाला॥
जाइ श्याम ढिग बोली बानी। झूठ बखानिबस्तु कत आनी॥
लाल कही हम झूठ न भाषा। मैं महंत येसब शिषि साषा॥
ढीठ जानि सो मारन दौरी। भागे दधिमुख मारि हथौरी॥
इकदिन गये भवन में आना। जड़िकपाट लागे दधिखाना॥
ताही क्षण धनिआइनि आई। टेरत बार बार अकुलाई॥
कह्यो श्याम भल टेरन देहू। निरभय बस्तु खाइतुमलेहू॥
तेहि जब द्वार खुलतनहिंजानी। तब पर मांगि निसेनीआनी॥
भीति लगाइ चढ़ी छति जबहीं। कृष्ण खोलि पटभागेतबहीं॥
नष्ट भ्रष्ट गृह देख्यो जाई। लगी देखावन सखीबोलाई॥
बाहेर कढ़त भयो यह दाहू। कहौ इहां किमि करियनिबाहू॥
जो यशुमति ते जाइ पुकारैं। लखि नदान तहँहमहीं डारैं॥

दो० जिमि अबूझ नृप के रहैं बातन केर निआउ।
यतिहि चढ़ावत सूरिपर चढ्योबात सुनिराउ॥

जो प्रथमें मोहिं होतो ज्ञाना। मेरे घर आयो है कान्हा॥
तौ गहि भवन यशोदै लौती। सुतकी सब लीला देखरौती॥
तब जानी मम साथिनि रामा। बीते समय बुद्धि किसकामा॥
इकदिन इककर पकरि लुटावा। सुनिजननीमृदुबचन सुनावा॥
तुम्हरी कृपा लह्यो सुत मोहू। देहु अशीष करो सब छोहू॥
मोहिं प्राण ते बहुत पियारो। बिन अपराधजातनहिंमारो॥
निज नयनन देखिहौं जबबीरा। देहौं दण्ड धरहु मन धीरा॥
और दंड तुम कछू न कीजै। यक दुइबर धमकी दै दीजै॥
नृप बिन नीति प्रीति बिनसारे। बिगरि जातसुतबहुत दुलारे॥
नीति निपुण नर बात ते लाजै। सूप बजाये सुत रन भाजै॥

दो० यक दिन गे गृह एक के बैठे देख्यो ताहि।
पाछे ते मूंदे नयन सो साँगे को आहि॥
दई सयन सब सखनसों लैगोरस समुदाय।

गये निकरि जब दूरि तबआपहु भगेबिराय॥
जिनकेघर नहिंजाइँते बिधितेकहैं निहोरि।
कब ऐहैं हमरे भवन खैहैं माखन चोरि॥

तब ताही के मंदिर जाहीं। प्रीतिसमुझिदधिमाखनखाहीं॥
खटक सुनत तुरतै भजि जावैं। उरहनके मिसि देखन आवैं॥
सुनिसुनि श्यामबदनकी बानी। प्रमुदित होइँ बातसोइठानी॥
एक दिवस मिलि गोप लुगाई। भवन आइ बोलीं सुनु माई॥
अबै तौ कान्ह बरष षट केरे। करत रहत छल बल बहुतेरे॥
बड़े भये धौं करिहैं काहा। यही अँदेश बड़ो ह्वै राहा॥
चितवतजेहितन मृदुमुसक्याई। सो बिन मोलै जात बिकाई॥
डटी बस्तु फिरि ताहि न छाँड़ै। माखन हित सबके घरमाँड़ै॥
करि जानै बहु भाँति बहाना। कोधौं गुरूमिला नहिंजाना॥
बधे बच्छ तजि धेनु पियाई। सोवत लरिकन देत जगाई॥

दो० कभू अँधेरे भवन में आयो रहत दुराय।
पाछे दीप जगाइ कै भाजत ताल बजाइ॥

बोली महरि सुनौ हे भैया। तुम्हरे बिधि दीन्ही बहुगैया॥
दधि माखन भावै सो खाहू। परघर कत चोरन को जाहू॥
माखन चोर कहैं सब नारी। सुनितोको नहिं लागतख्वारी॥
फिरत धरावत मेरो नामा। मातु न देत होइ गो धामा॥
पर अकाज कीन्हे का पावत। नाहकनिरमलपितहिलजावत॥
मातुबचन करि श्रवण कन्हाई। बोले तब नम्रता जनाई॥
हे मइया मैं खेलन जाहूं। काहू के घर कछू न खाहूं॥
येई मोहिं पकरि लै जावैं। नारि भेष करि संग पिसावैं॥
कबहूं गोमय हेल धरावैं। कबहूं घर की टहल करावैं॥
कबहुंक जुरि मिलि ठाढ़ीहोहीं। गावैं आपु नचावैं मोहीं॥
मारि गुलेञ्चनमेहनति लेहीं। तेहिपर आइ उरहना देहीं॥

दो० सत्य कहत बुध बाम को पलटत लगैन देर।

तियइ लख्योपतिकुपथमें पतिहिकरेउ तेहिजेर॥
हमहूं निरबल बिप्र सम करैं काल गुदरान।
आखिर अहि रघुनाथभनि है न भेक करजान॥
औरौ सुनो कर्म इन केरे। मलें सु अंग अंगमा मेरे॥
कबहुंक पकरि मिजावें पीठी। कबहुं तकैंतिरछी करिदीठी॥
कबहुंक हमें द्वार बैठाई। आपु सहित पति पौढ़ें जाई॥
सुनि गोपी बोलीं मुसक्यातैं। सुनोमहरि निजसुतकी बातैं॥
कहती हौ जानत कछु नाहीं। भरे सकल गुन इनके माहीं॥
तुम्हरे निकट साधु से दीसैं। हैं खोंटे अति बिश्वा बीसैं॥
झूंठकि साँच साँच की झूंठी। करत रहत यह विद्या मूठी॥
दो० सुना रहै कोउ चतुर नर नृप की मेटि प्रमान।
बचि आयो घर बधत इन तहूके काटे कान॥
सुनि यशुमतिकहसहितसनेहा। तुम जानो की जानैं येहा॥
तुम्हरी इनकी बात अगूढ़ी। बूझिन परत मोहिं मतिबूढ़ी॥
यकदिन महरि श्याम को लैकै। परी पलँग पर तकिया दैकै॥
लागी कहन कथा सुखदाई। जिमि अवतारलीन रघुराई॥
बालबिनोद बिवाह उछाहू। बिपिनगवन भूपतिकर दाहू॥
भरत सनेह लषण सेवकाई। कहि खरदूषण केरि लड़ाई॥
कहेउ जानकी केर हरण जब। कहँधनुशरकहिकृष्णउठेतब॥
यशुमति डेरपि उछंग लगायो। बोलि सयानेहिं फूंकडरायो॥
कबहुं करावैं भोजन नाना। कबहुं सिँगारैं रूप निधाना॥
कबहुं बस्तु मांगैं हठ ठानी। जेहितेहि भांति देतसोरानी॥
कबहुं धेनु रचि पसरु चरावैं। कबहुं भूपबनि नीतिसिखावैं॥
दो० जाकेकुलकी रीतिजस गहत शिशुहु सोइ बाट।
नृपसुत सुत्री के गयो तहउँ ठट नृप ठाट॥
यकदिन कह्योमातुमोहिंदाऊ। आजुसखनबिचबहुतखिझाऊ॥
मोसे कहैं मोल को लीन्हों। नंन्द बदलि बसुदेवै दीन्हों॥

मात पिता गोरे तें कारो । वै सूधे तें कुटिल लबारो ॥
सुनिमा हँसि अंचल मुख गेरो । मैं जननी तवतें सुत मेरो ॥
बहुरिकहेउमोहिंबिपिनिलवाई । कहिहाऊ आवत कुदल्याई ॥
हौं डरि रोइ भगत तव तीरा । सखहुन नेक धरावत धीरा ॥
बोली मातु बुरो तें जानें । फिरिक्यों खेल तासुसँगठानें ॥
अबतें कहो रहब घर माहीं । तौ मैं पकरि पिटावौं ताहीं ॥
तब कछु कान्ह न उत्तर दयऊ । कहैंरघुनाथ हरषि उरलयऊ ॥
ब्रह्मादिक यशुमति सुख देखैं । सर्बाराध्य धन्य करि लेखैं ॥
कह नृप कौन धर्म इन कीन्हा । कृष्ण बाललीला सुखदीन्हा ॥
कहशुकबसु बसुद्रोण प्रधाना । धरा सप्रिय राधे भगवाना ॥
बिधि आये तिनते इन काहा । सर्बाराध्य होय शिशु लाहा ॥
एवमस्तु कहि बिधि तेहिभावा । नंद महरि सोई सुख पावा ॥
प्रथम रहे दश स्यंदन भ्राता । अबलीन्हेउँ निखवखसुखताता ॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसनमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास
रामसनेहीकृतकृष्णदधिचोरीबाक्यबिलास
वर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु गणपगिरा सुखदानि ।
कहौं दशम की रीति कछु ब्रह्मबैवर्तक जानि ॥
यक दिन सुनौ नंद की रानी । मथतरही दधि लिहे मथानी ॥

प्रथुकटि अति उत्तम पट धारे । तापर किंकिणि जाल सवाँरे ॥
सुत अनुराग श्रवत कुच क्षीरा । करवर कुंडल लोल शरीरा ॥
श्रमकन तन प्रकटअति लसहीं । सुमन मालती शिरतेखसहीं ॥
आइ कृष्ण तहँ भोजन मांगे । मथि लीजै तवदीजै लागे ॥
ताही समय दूध उतराना । दौरी तुरत उतारन जाना ॥
तब प्रभु निजमनकीन्हबिचारा । हमते भापय बहुत पिआरा ॥
गहि पाथरु मेटुकी महँ दयऊ । फूटिसकलगोरस बहिगयऊ ॥

यशुमतिदेखिक्रोधकियो भारी। श्रम करि पकरत भईप्रचारी॥
ऊखल में पुनि बांधन लागी। खँगीयुगांगुल रजु पुनिमांगी॥
यहि प्रकार रसरी बहु जोरी। युगअंगुल घटि रही बहोरी॥
गोपी खड़ी कहैं सब नेरे। दरुयो आजु चरित सुत केरे॥
अब तक कहौ मोर सुत सूधा। काढ़त आजु छठी कर दूधा॥
जाना श्याम मातु खिसियानी। लीन बँधाय एक रजु मानी॥

दो० करन गई अस्नान तब महरि मुदित मन होइ।
यमलार्जुन की सुरति करि चले घसीटत सोइ॥
धनपति के सुत जानिये नल कूबर मणि कंठ।
नारद केरे शाप ते भये दोऊ तरु ठगठ॥
जल बिहार युवतिनबिषे देखि नगन मतवार।
होउबिटपकहि पुनि कह्योहरि करिहैं निस्तार॥

निकसे प्रभु तिन तरभें जाई। ऊखल भिरत गिरे अरराई॥
दिव्य पुरुष प्रकटे तहँ दोई। लागे करन बिनय इमिसोई॥

रोलाछंद॥ जयतिजयति जगदीशईशतवचरितअनन्ता। सुनतकहतअघदहतकहतइमिसबश्रुतिसन्ता॥ जयतिमच्छवपुधरणसत्यव्रतप्रलयदेखावन।जयबरहबनिनाथकनकदृगदलिमहिलावन॥ जयकूरमगिरिधरतरतनचौदाउद्धारन। जयनृसिंहहतिहिरण्यकशिप प्रहलादउबारन॥ जयबावन बलिछलनचरणनखसुरसरिजावन।जयतिपरशुधरसहसबाहुअरिबिप्ररिझावन॥ जयतिरामसुरसुखदसन्तमुनिदशमुखगंजन। जयतिकृष्णकंसारिअसुरप्रणतारतरंजन॥ जयतिबोधश्रुतिदोषदनुजकृतपुण्यछड़ावन। जयतिकलंकीनिधननीचक्षितिकरिहौपावन॥ जयतिव्यासवेदार्थशोधिकृतबिविधिपुरानै। जय पृथुपृथवीदुहुनपूजिप्रतिमासबठानै॥ जयतिहंसबिधिसुतनप्रश्नकरउत्तरदान्ह्यों। जयशंभूमनुआदि अजयजिनपरघटकान्ह्यों॥ जयतिऋषभअद्वैतमार्गजरिबुधनदेखाई। जयहयगरदरदनुज्मारिनिगमान्योराई॥

जयतिधेनुप्रदकामप्रगटभेमुनिजनकाजे। जयध्रुवकरिहरिभजन अचलअस्थानबिराजे॥ जयतिधन्वंतररूपजगतआमैंनिरवारक। जयबद्रीपतिशक्रकेरमदमानप्रहारक॥ जयतिकपिलसुतसगर दहनगंगोदधिबासी। जयदत्तात्रयज्ञानभक्तिबैरागकेरासी॥ जय तिदेवऋषिजानिरमापतिइच्छाठानै। जयसनकादिकब्रह्मनिरत गुणसुनिसुखमानै॥ जयइतिचौबिसबपुषधर्योनिजभक्तनहेता। औरौंहोतअमापमापिकोपावैतेता॥ जयप्रभुयाहीरूपममहृदय बस्योछबिसिंधु। शीशनाइरघुनाथनिजलोकमयेदोउबंधु॥

दो० जासुनाम जग जाल ते देत बिनय श्रम छोरि।
सोइ प्रभुजनबश मातुकी तजत न बांधीडोरि॥
खग मृगादि शठआपु ते कीन्हें अधिक महान।
अस प्रभुको निज ईशता तजि राखीजनमान॥

सुनियशुमतिबिलखतढिगआई। बंधन छोरिलिहिनि उरलाई॥ कीरति आदि लगी सबदूषण। गोरसहित बांधे ब्रजभूषण॥ धन गोरस अरु जन्म तुम्हारो। जाते सफल ताहि तुम मारो॥ राम जननि कछु कह्यो न तेहू। मैया इनबिच दखल न देहू॥ ताही समय नन्द घर आय। सुनियशुमतिकोबहुरिसवाय॥ तबसबहिनमिलि कीनबिचारा। इहां होत हैं बिघ्न अपारा॥ चलौ बसी वृन्दाबन माहीं। सकलसुपाससहित सोआहीं॥ चले सकल वृन्दाबन आये। बसे सुथल जेहिका जो भाये॥ श्री वृषभानु खबरि यहपाई। सहित समाज रहे तहँ आई॥ वृकरबि कुंवरि नन्द घर आवै। नन्दलाल कीरति पुर जावै॥ बालक प्रीति परस्पर देखी। तात मात सुख लहे बिशेषी॥ तहां एकदिन नन्द कन्हाई। गये खरिक लगवावन गाई॥ आई तहँ वृषभान दुलारी। नाम राधिकाछबि अधिकारी॥ जासु जठर ते भयो बिराटा। दीन चलाइकृष्ण तेहि डाटा॥ कह्यो न अब तुम्हरे सुत होई। भलीबात ब्रज बिहरत सोई॥

जाके नयनन मध्य निहारा। चौदह रत्न दशौ अवतारा॥
चारि चारि खगमृग फलफुला। लजत जासु बपुदेखिसमूला॥
दो० भजतबिविधिअवतारजब बहुतजन्म करियंत।
तबराधा पद मिलतइमि कह हरि लीला तंत्र॥
जे राधा राधा अस कहईं। रामकृष्ण तिनके बश रहईं॥
हरि ब्रह्माण्ड पुराण मँझारी। कह्यो राध आराध हमारी॥
तेहि प्यारी कोजब हरि देखा। भये मुदित इत प्यारिउपेखा॥
तेहिक्षण झुकि आये घनकारा। नन्ददीखजबअति अँधियारा॥
राधा ते बोले घर जाहू। श्यामै दिहौं सौंपि सब काहू॥
करगहि चलत भई धरिधीरा। आये दोउ यमुना के तीरा॥
तहँ लखि माया की प्रभुताई। मणिमन्दिरशुचि सेजसोहाई॥
श्याम सहित पर्यङ्क पधारी। परतपेखि तेहि तरुण बिहारी॥
कह्यो कृष्ण ऐसी जनि कीजै। मानुष जन्म पालि सुखलीजै॥
इतनी कहत स्वयंभू आये। सुर समस्त सामग्री लाये॥
मंगल मय मंडप तहँ छायो। वेदरीति सब कर्म करायो॥
बिधिवतब्याह होन तबलागा। गावैं सुरीसहित अनुरागा॥
कन्यादान बिधाता दीन्हा। बिधिवतकृष्णचन्द्रसोलीन्हा॥
सबबिधिब्याहिचलनजबलागे। टारहु भूमि भार बर मांगे॥
कहि जब गये भये प्रभुयोबन। पूज्यो प्रिया मनोरथको मन॥
बाल रूप ह्वै पुनि गृह आये। श्री जयदेव चरित ये गाये॥
इकदिनकृष्णबूझि दिनअच्छा। ग्वालन साथ गये लै बच्छा॥
लागे बिपिनि चरावन जबहीं। आयो असुरबच्छ बनतबहीं॥
कृष्ण पूंछ गहि महि दै मारा। मरिगाजबतबसखननिहारा॥
एक दिवस यमुना के कूला। रहे चरावत बच्छ समूला॥
धरिबकरूपबकासुरआवा। लिहिसिलीलिश्यामहिंसहचावा॥
दीनिसिउगिलिअग्निउरजारी। निकसे तुरत चोंचगहि भारी॥
बाल बिलोकि सकल हरषाने। गावत गुणनिज घरनतुलाने॥

इकदिन खेलत रहे मुरारी। आवा निकट प्रलम्ब सुरारी॥
खेलन लाग बालकन संगा। जब तब करै सखन ते दंगा॥
जानि गये बलदेव कुमारा। पकरि ताहि पुह करते मारा॥
दिव्य रूप ह्वै हरि पुर गयऊ। मुनि दुर्लभ कैसे पद भयऊ॥
इनके पूर्व जन्म कर हाला। कहौं सोऊ तुमसुनो भुवाला॥
बक प्रलम्ब केशी बत्सासुर। गंधमदन गंधर्ब के सुत फुर॥
मुनि दुर्बासा शिष्य किये सब। हित उपदेशदियोतिनकोतब॥
पदुम सहस्र बरत तुम धारौ। विष्णुलोक में जाइ बिहारौ॥
लगे करन सोइ धरि उरमाहीं। हरि में प्रीति जनन में नाहीं॥
मिले न तब शिव शरते लाये। दीन्ह्यो शाप उमा लखिपाये॥
होउ असुर तुम चारौ जाई। पतिमुखकृतसुनि करुणाआई॥
बोली हरि कर मृत्युइ पैहौ। असुरयोनि तजिहरिपुरजैहौ॥
तेई असुर ह्वै यह गति पाई। अब सुनु अपरकथा सुखदाई॥
इक दिन सखनसहित नँदनंदा। रहे बिपिन फांदत फरफंदा॥
तहँ अहिरूप अघासुर आवा। इक इक योजन अंग बनावा॥
बदन पसारि रहा तिन तीरा। करि बिचार प्रबिशे सबबीरा॥
श्याम गये जब तब मुखचापा। बाढ़त भये कृष्ण करि दापा॥
उदर फारि पुनि बाहर निकसे।सखनसहितबिषधरलखिबिकसे

दो० भूप वन्तिका पुरी को पुन्यकार मृग बद्ध।
कीन देखि गौतम दियो शाप होइ असुरद्ध॥
करी बीनती भांति बहु वारे तन धन प्रान।
दीन दुखितलखिलोलपुनि बोलेऋषैसुजान॥
ऐहैं जब गोलोकते ब्रज में कृष्ण कुमार।
मृत्यु पाइ तिन हाथते होई तव उद्धार॥

सोई भयो अघासुर आई। अपर कथा सुनिये ऋषिराई॥
एक दिवस गे पुलिन मँझारा। निजनिजभोजनसबनउतारा॥
लागे खान स्वाद मुख गाई। सोसब चरितदेखि बिधिआई॥

चहुं दिशि उड़इवबाल अनन्ता। मध्य बिराजतशशिभगवन्ता॥
देत श्याम सबका सब श्यामै। तबतौ ब्रह्म रह्यो दुबिधामै॥
जिमि भुशुण्ड सँगखेलत गेहा। भये भ्रमित तिमिकृतसंदेहा॥
ये अवतार कवन बिधि आहीं। सबहिन की जूठनि जेखाहीं॥
हमहुं बिवाहि गयन इकबारा। अब कछु चही प्रभावनिहारा॥
अस बिचारि बछरा हरि लैगे। ढूंढ़न चले कृष्ण सब हरिगे॥
बालनहूं को तब हरि लीन्हा। जानाश्यामचरित अजकीन्हा॥
तुरत बच्छ बालक रचिलीन्हें। ज्योंकात्यों कछुजातन चीन्हें॥
माता करै अधिक अस्नेहा। धेनु पियावै तजि नव गेहा॥
सन्तत करै चरित प्रभु सोई। जाना राम अपर नहिं कोई॥
बर्ष एक यहिबिधि चलिगयऊ।इतउतलखिअजबिस्मितभयऊ॥
पुनि सब बाल लखे हरिरूपा। सेवत पद बिधिभव सुरभूपा॥
ब्रजबासी सब बिबुध समाजा। बहुरिदीखप्रभुआप बिराजा॥
बस्तु गई सो चिन्ता भारी। लज्जितह्वैअजहृदयबिचारी॥
देखो अति मेरो अज्ञाना। त्रिभुवनपति तिनतेछलठाना॥
निकट आइ शिर नाइ बिधाता। लागे करन बरण पुलकाता॥
नमो नमो त्रिभुवनपति स्वामी। नमो सकल उर अन्तर्यामी॥
श्याम शरीर पीत पट कांधे। गुंजा भूषण दोउकर बांधे॥
बिम्बाधर आनन छबि सींवा।जलजमालकौस्तुभमणिग्रीवा॥
शीश मुकुट श्रुतिकुंडललोला। अंगअंग प्रति बसन अमोला॥
अरुण अंघ्रि पदुमाक्ष बिशाला। करिकरभुजतिलकावलिभाला॥
कुञ्चित कच नाशिका सोहाई। बेणु बादपर पालक गाई॥
अस स्वरूप मानुषी तुम्हारा। भयो अनुग्रह हेतु हमारा॥
अहै सो इच्छा मय बपु माहीं। पंचभूत की रचना नाहीं॥
असि समर्थ्य नहिंमोहिमँझारी। जानी महिमा अगमतुम्हारी॥
यावत अस बपु हृदय न धरहीं। आतम रूप बिचारैं करहीं॥
तावत ज्ञान परिश्रम आही। असबिचारि बुधत्यागतताही॥

सुनियसदा यशबिमलतुम्हारा। साधुन मुखनिकसत जोसारा॥
काय बचन मत तुमका ध्यावै। तुम्हरे जनमनमें अतिभावै॥
जीवन मुक्त अहै ते प्रानी। जेतव पद पंकज रतिमानी॥
यद्यपि हौ तुम स्वबश अजीता। तद्यपि इनतुमका प्रभुजीता॥
तावत हैं रागादिक चोरा। यावत गृहके बंधन घोरा॥
तावत मोह निगढ़ परै सोई। यावत कृष्ण न तवजन होई॥
भक्तितुम्हारिसकलसुखदाइनि। है कल्याणकरन मनभाइनि॥
तेहि तजि केवल बोधइ लागी। करतयत्न अनुदिन अनुरागी॥
तिन कर रहत परिश्रमशेषा। तरु अस्थूलसघन कसलेखा॥
हौ सुतंत्र तुम अपनी माया। करि बिस्तारतभुवननिकाया॥
तुमहीं शोभित हौ जग भूपा। सृष्टि कालतहँ ब्रह्म सरूपा॥
तुम जग पालन काल मुरारी। संहारण हित तुम त्रिपुरारी॥
भूर जनक नभनखतजे आहीं। काल पाइमापति होइजाहीं॥
हितकारी तुम्हरे अवतारा। तिनके चरितनकेर न पारा॥
तेहिते करुणा दृष्टि तुम्हारी। है सबपर सामान्य मुरारी॥
आपन कीन कर्म हैं जैसे। अनायास भुंजत नर तैसे॥
नमस्कार तिनका बड़भागी। जिनकर मनतवपदअनुरागी॥
ते अनित्य भवसागर एहा। तरत बत्स पदसरिससनेहा॥
तुम अनादि मैं आदि अजानी। मायापतिते माया ठानी॥
तुम्हरे आगेका मैं तनका। वृहद समूहकेरजिमिकनका॥
कहँ मम सात बिता की काया। कहँ तुम अगणितअंडउपाया॥
सकल सृष्टि तव उदर मँझारी। तेहिते क्षमिये गुनह हमारी॥
बाल गर्भ गत चरण चलावै। मातु शोचि अपराध न लावै॥
नहिं यह मिथ्या बात मुरारी। है तुमते उत्पत्ति हमारी॥
जब मैं नाभ कमल ते भयऊं। तब फिरि ताके भीतरगयऊं॥
बर्ष एक शत खोज्यों तोहीं। तबहुं न देखि परे तुम मोहीं॥
तपकरि तहँ देख्यों तव रूपा। कोटि भानु समतेज अनूपा॥

तमकरि अन्ध चक्षु अभिमाना। तुमते पृथक ईश मैं जाना॥
तुमम नाथ दास मैं तोरा। क्षमहु देव अब अवगुण मोरा॥
दया योग्य मैं अहौं तुम्हारी। ईशनके तुम ईश खरारी॥
सुनि बिनती चतुरानन केरी। पोंछे दृग प्रभु निजपट फेरी॥
जाहु धाम कह कृपा निधाना। तजिमद मोहतर्क बिधिनाना॥
सुनिअजपदरजधरिशिरगयऊ। बच्छबाल लै आवत भयऊ॥
जहँ तहँ धरिनिजलोकसिधाये। बरष बटोरि कृष्ण तब आये॥
बोले बालक सुनिये ताता। तुमबिननहिंखावादधिभ्राता॥
लागे बहुरि सकलमिलिखाना। बिधिछलबलकाहूनहिं जाना॥

गीतिकाछंद॥ जानानकाहू मरमभोजनखाइअसबोलतभये। फलताललागहैं सबसखामिलिखानकेहितबलिगये॥ धरिरूप रासभकेरधेनुकअसुर यकतहँआयहू। पगपकरिपटकेहुबिटपपर बलिरामसबहुनपायहू॥

सो० बलिसुतसहसिकनाम हरिजनबनअप्सरालखि।
भामुनि थल बशकाम दीन शाप उद्धार कहि॥

दो० सोई यह धेनुक असुर भयो गयो गति पाइ।
मातन ते रघुनाथ सब कही कथा घर आइ॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथ दासरामसनेहीकृतकृष्णबलबंधनयमलार्जुनउद्धार राधिकाबिवाहनब्रह्माबच्छहरणधेनुकबधकरन कथाबर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः ४॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु गणप गिरा सुखदानि।
कहौं दशम की रीति कछु गर्ग अदित मत आनि॥

ाल चरित बरने अति पावन। और सुनो जेहैं मन भावन॥
कदिन रामै भवन बिहाई। अपना गये चरावन गाई॥
हुंचे जब कालीदह तीरा। पियत भये गोबालक नीरा॥

मरे तुरत पुनिकृष्ण जियाये। सुरभिननिजनिज बच्छुपियाये॥
लागे खेलन गेंद कन्हाई। चढ़े बिटपशिशुमारि सिधाई॥
उछरि गेंद कालीदह गिरेऊ। ताही संग कूदि प्रभु परेऊ॥
गये सपदि काली के तीरा। निरखिचपटिगासकलशरीरा॥
निबुकि चढ़े ताके शिर कूदी। गरुये ह्वै डारे फन खूंदी॥
चला रुधिर मुख चक्षुन तेरे। शिथिल अंगभे बिनमद केरे॥
नाथि लीनतब कृष्ण कृपाला। बिनवत भई तासुकी बाला॥
नौमि कृष्ण भंजन भय भारी। नटवर भेष सुभग सुखकारी॥
पति अपराध क्षमिय भगवाना। मोहबिवश महिमानहिंजाना॥
सुनि बिनती बोले यदुराई। रौनक देश बसहु अब जाई॥
है हमते खगपतिते रारी। अनत गये डरिहै सो मारी॥
सब अहि देत रहैं भोजन तेहि। वसरीपरहमदीननहितयहि॥
भिरति भिरेनहमहूं धरि धीरा। हारि परायदुरेन यहितीरा॥
इहां शाप सौभरि ऋषिकेरी। तेहिते गरुड़ करत नहिंफेरी॥
कबहुं बैठि तरु उगिली मांजरि। कहमुनिपुनि आवतजैहौजरि॥
मेरो चरण चिन्ह तवमाथा। लखिअबबोलीनहिंखगनाथा॥

दो० पूर्व जन्म को भूपतैं मद बश ममपद माथ।
लिह्योदिह्योतजिसिरसितेहिभयोसर्पमदमाथ॥

इहां निकट ठाढ़े ब्रजलोगा। रोदनकरहिंसकलबश शोगा॥
यशुमति नन्दन धीरज धरहीं। संकर्षन उपदेशहि करहीं॥
धरहु धीर गुण गुणिमनमाहीं। कतहुं जाइकृष्णहि भयनाहीं॥
तेहि अवसर उछरे यदुनाथा। काली सहित चढ़े तेहि माथा॥
लागे करन निरत पुनि कान्हा। हरषे सकल मिले जनुप्राना॥
उतरे जब तब अहिशिर नावा। कुटुंबसहितरौनकहि सिधावा॥
कृष्णहिं सब भेंटैं पुरबासी। तातमात प्रमुदित चरदासी॥
तेहिदिन रहे सकल तेहिघाटा। असुर एक एक ठौरे डाटा॥
चहुंदिशि झांखर रूंधि बनाई। तेहिबनदीन्हिसिआगि लगाई॥

भये बिकल सब शरण पुकारे। करिदव पान तुरंत उबारे॥
रोहित चिन्हन नेकु लखाना। आये भवन करत गुणगाना॥
तेहि अवसर बरषा ऋतु आई। सचराचर सबकैं सुखदाई॥
निज निज गृह सबछावनलागे। जिमिचेतहिं बुधजरपनआगे॥
उमड़ि घुमड़ि नभजलधरआये। दानदेन जनु सुधनिकधाये॥
बगुल पांति सोहतयहिभांती। जिमिसुकृतिनउर टेकसोहाती॥
निर्तहिं मोर मुदित घनदेखी। गृहीबिरक्तजिमिहरिजनपेखी॥
बरषत जलथल अलभय चीन्हे। जिमि संपतिरघुपतिकेदीन्हे॥
भई कीच नर चलत निहारी। जिमिसज्जनजगमाहिंबिचारी॥
बोलत दादुर नहिं अलसाता। जिमि शठ करतअकारणबाता॥
तड़ितघमकिफिरिजातबिलाई। जिमिजगतनधनसुततियभाई॥
बटुरि नीर आवत सरमाहीं। जिमिसदगुणसबसज्जनपाहीं॥
दो० जोतहिं बवहिं किसानमहि ऋतुकर बीज प्रमान।
जिमि शुभ साधन करि करहिं युगकरधर्मसुजान॥
प्रबिट पाइ तृण संकुल जामा। बिषयसंगजिमिबहुबिधिकामा॥
बिबिधि जीव प्रगटे महि आई। प्रजा बढ़त जिमिनृपबरपाई॥
जरत जवास आपने दोषा। जिमिकुलनाशहोतद्विजरोषा॥
फलफरिबिटपअवनि झुकिआये। जिमिसुसाधुसुखसम्पतिपाये॥
लागत मधुर बचन पिक केरे। जिमिहरिचरित सन्तमुखतेरे॥
प्रगटत कबहुं छिपत इमिभानू। यथा सुसंग सुसंग ते ज्ञानू॥
दो० बरष्यो जल परना जम्यो ऊसरमें तृण कोइ।
हत भागिनके ज्ञानजिमि कथौ सुने नहिंहोइ॥
चली क्षुद्र सरिता उमड़ि जिमि थोरेधन नीच।
अचलहोत जल जलधिमहँ यथाजीव हरिबीच॥
द्वै महिना की वृष्टि ते भयो अन्न संपुष्ट।
राम नाम के रटे जिमि होत भक्त जन तुष्ट॥
यहिबिधि बरषा ऋतु के माहीं। बन बकुरूतिनसमकुदलाहीं॥

कबहुं तोरि फल खेलैं गोली। बोलैं कबहुं द्विजन की बोली॥
कबहुं करैं षट पद गुंजारा। कबहुं कीशबनि कूदहिंडारा॥
कबहू बकहवै बेनु बजावैं। देव नारि तन सुधि बिसरावैं॥
गोवृषभादि विपिनि पशु जेते। मुख तृणदाबि सुनैं धुनि तेते॥
बत्स गहेमुख थनरहि जावैं। नचहिं मोर मुदथोर न पावैं॥
खग सब शब्द सुनैं अगुरागे। यमुनाजल बहि सकतनआगे॥
आतपते पावस ह्वै जावैं। पावस से आतप दरशावैं॥
उठैं फूलि तरु शिला पसीजै। मुनि जन सकल प्रेमरसभीजै॥
ब्रजबासी सब रहैं निहारी।फरकिउठहिंशिरशिवशिरधारी॥
बन्द करहिं जब तब सबजागैं। प्रमुदित ह्वैनिजकारजलागैं॥
एकदिन श्यामसखन युतभाये। चलत २ मुंजाबन आये॥
चहुंदिशि ते दावानल लागी। जाइ कितै गो बालक भागी॥
शरण भये तब नयन मुंदाये। देखैं सब दव बाहर आये॥
मास दिवस भरि गोप कुमारी। देवी की पूजा अनुसारी॥
कात्यायनी कृपा अब कीजै। नन्द सुवन हमका पतिदीजै॥
खात पियतअरु सोवत जागत। हरिपरिहरिचितअंतनलागत॥
अजहुंजासुमन होइ मगनअस। कृपासिंधुहरि होइँ तासुबश॥
दो० एक दिन सब करती रहैं यमुना में अस्नान।
चीर हरे तहँ आइकै औचट श्याम सुजान॥
लटकाये पट कदम कि डारी। मांगहिं सबमिलिगोपदुलारी॥
चीर देब तुम्हरो हम तबहीं। जलते बाहर ह्वैहौ जबहीं॥
निकसीं सब करतबकरिओटा। बोले बिहँसि नन्द के ढोटा॥
दोउकर जोरि बिनयरबिकीजै। करत भई सब तब अबलीजै॥
पूजेहु तुम जेहि हेत भवानी। सो हम प्रगटभयन बरदानी॥
जबतक जगकी लाज न खोवै। तबतक मोहिं न प्रापतहोवै॥
अस कहिअमित बनाये अंगा। कीन्हों केलि सबन के संगा॥
कमला ललिता बिमलबिशेषा। चन्द्रावलि सुखमादिक शेषा॥

सब तब सबके सदन बिहारी। जात कहत एकएकहि प्यारी॥
सयन बयन सुनि गोपिन केरे। करि ओढ़र आवहिं चलिनेरे॥
एकदिन गे राधिका निकेता। बैठारिनि निज ढिगकरिहेता॥
श्याम बदनलखिआपनिछाहीं। अपर नारि जानी मनमाहीं॥
कीन मान हरिनेह जनावा। दूती बनि बहुभांति मनावा॥
कबहूं बैठैं पनिघट जाई। काहूको शिर धरैं उठाई॥
काहूकर घट डारैं फोरी। ते यशुमति ते कहैं निहोरी॥
यकदिन दधि बेंचन के हेता। चलीं सकल ब्रजबधू सचेता॥
सखन सहित यदुनन्दन हेरी। मारग बीचलिहिनि सबघेरी॥
दीजै दान जान तब पैहौ। हठ कीन्हे पाछे पछितैहौ॥
डगर डगर में चलहु कन्हाई। समुझि न लागै बहुत मोटाई॥
शिरपर कंस कबहुं सुनिपाई। सकल तुम्हैंबँदिमाहिं डराई॥
कंसहिं मारि मिलैहौं क्षारा। उग्रसेन को करहुं भुवारा॥
हरिहौं सकल भूमिकर भारू। याही हितभा मम अवतारू॥
झूठ बात मत बोलौ लाला। धेनु चरावत फिरत बिहाला॥
लकुटी हाथ कमरिआ कांधे। मांगि खात दधि सबकेरांधे॥
तेतुम ईश बनत हौ सोई। बातनते नहिं भूपति होई॥
यक युवती पुनि अहिरगवाँरी। तुमका जानौ भूति हमारी॥
ब्रह्मा शिव ध्यावैं नित हमहीं। ऐसी दशा भई मिलि तुमहीं॥
तुरत चतुर्भुज रूप देखावा। लखि बिश्वाससबन के आवा॥
बोलीं सब हमहैं तवदासी। भावै सो कीजै अबिनाशी॥
प्रमुदित कीन बिहार बिहारी। फिरि आईं निजभवननिहारी॥

दो० एक सखी उनमत्त ह्वै टेरै सबके द्वार।
लेकोइश्यामै मोलदधि लीन्हीनन्दकुमार॥

अति बहुकेलि गोपिकन केरी। संक्षेपै मैं कछुक निवेरी॥
सुनहु एकदिन एक ठिकाने। गये चरावन सखा भुखाने॥
चौबे करत रहैं तहँ यागा। पठये लावहु मांगि बिभागा॥

जाइ सखन जब भोजन मांगे। सुनिकटु बचनकहनसबलागे॥
आये घूमि कहिनि सब खोले। अब तुमजाउतियनढिगबोले॥
द्विज बनितनते भाषिनि जाई। बिपिनि भुखाने राम कन्हाई॥
तुम्हरे ढिग पठइनि है हमको। सुनि आनन्दभयोअतिसबको॥
बिबिधि भांतिके भोजन कीन्हे। क्षिप्रै चलीं थारकर लीन्हे॥
आइ कृष्णके आगे राखे। प्रेमसहितसबहिनमिलिचाखे॥
एककेर पति रोंकिसिधाई। पतितजिमिलीप्रथमसोआई॥
दरशन पाइ छकित भईं सारी। कहतभयेतबबिपिनिबिहारी॥
जाहु भवन अब डरेहुन काहू। तवसेवा करिहैं तवनाहू॥
सुनि समोद आईं अस्थाना। तबसब द्विजलागे पछिताना॥
हमरे सकल यज्ञ धिरकारा। धृक हमरे बलबुद्धि बिचारा॥
धृकबिद्या पढ़िवो सबजानौ। धृक हमरे जपतप व्रतदानौ॥
धृककुल मद अभिमाननिछ्यनू। होइ कृष्णते विमुखजोभयनू॥
धनि पत्नी येहरि मनभावन। इन्हैं परशि हम ह्वैहैं पावन॥
धेनु चराइ जाइँ जब धामा। अवलोकहिं छबिमिलिसबबामा॥
कार्तिक बदी चतुर्दशि आई। घरघर व्यंजनकरहिंलोगाई॥
यशुमति भोजन बिबिधिबनाये। कृष्णचंद्रलखि बचन सुनाये॥
आजु कौन उत्साह तुम्हारे। सुरपति की पूजन है प्यारे॥
ब्रजबासिन के इष्ट बिड़ोजा। जासु कृपासुख बाढ़त रोजा॥
बर्षत जल तृण जामत जाते। चरत धेनु पय प्रगटत ताते॥
रहियो दूरि छुयोजनि लाला। रूसि रहैगो देवबिशाला॥
बोले मन मोहन सुनु माई। यामें हरिकी कौन भलाई॥
ईश रजाइ जाहि भय जोई। शिर धरिसदाकरतसब सोई॥
कोइ सिरजै पालै संहारै। कोइ बरषै करखै कोइ जारै॥
इन्द्र कहा करि सकत बिचारा। नीक जबून हाथ करतारा॥
बहु दिनते पूज्यो सुरराई। काहुइकबहुंदिहिसिकछुआई॥
तेहिते अब छांड़ौ सुर दूजा। गोबर्द्धन की ठानहु पूजा॥

जेहिके ऊपर धेनु चरावत। सदाताहितुम सबबिसरावत॥
निकट रहत सबते बड़देवा। तेहितजि करत आनकी सेवा॥
जबहीं तुम पुजिहौ मनमाना। ह्वै प्रसन्न देई बरदाना॥
याही बात चतुर्भुज रूपा। कही स्वप्न में पुरुष अनूपा॥
निज निज कर्म बचनका अक्षा। ताते तुम्हें चही गोरक्षा॥
सब ब्रजमें यह बात प्रकाशी। कौसल करन लगे पुरबासी॥
सबके मन आई सुनि लीजै। जोकछु कृष्ण कहैंसोइ कीजै॥
श्याम समान हितूनहिं कोई। प्रभुताई निज नयन न जोई॥
सुनिसब निजनिजआश्रमआई। शकटन में सब सौंज भराई॥
नाना बिधि पकवान मिठाई। बिबिधि मूलफलफूल खटाई॥
सालन शाक अनेक सोहाये। जोति २ सब शकटसिधाये॥
बाल वृद्ध योबन नर नारी। चले सकल मन आनँदभारी॥
बाजैं बाजन बिबिधि प्रकारा। गावहिं गीत बधू मिलिसारा॥
पहुंचे जब गोबर्द्धन पाहीं। टिके सप्तत्रय योजन माहीं॥
समाचार सुनि जहँ तहँ तेरे। आये औरौ लोग घनेरे॥
कार्तिक सुदी प्रतिपदाके दिन। बोले कृष्णनन्द ते यहि छिन॥
प्रथमैं तुम पूजौ गिरि राजा। तेहि पाछे सबगोप समाजा॥
पूजत भये नन्द हरबागे। पाछेसकल चढ़ावन लागे॥
प्रकटे कृष्णरूप धरि दूजा। थूलबिशाल अनेकन भूजा॥
श्याम शरीर मुकुट शिर नीका। कुण्डलमाल मनोहर हीका॥
पीत बसन पहिरे सुठि झांगा। चक्षु चपल अलकैं जनुनागा॥
लागे खान उठाइ उठाई। लखिहरषे सबलोग लुगाई॥
तिनते कृष्ण कहत भे तबहीं। देखे तुम ऐसे सुर कबहीं॥
जो प्रत्यक्ष तव पूजन खाता। तुम्हरी कृपा मिलै अबताता॥
ललिता सखी गईं सबजानी। राधाते बोली मृदुबानी॥
देखौ श्याम केरि चतुराई। आपु पुजावत आपुहि खाई॥

दो० भलीबस्तु रघुनाथ सोइ जोलागै हितश्याम।

नतरु भई बादिहि गई ज्यों पानी के दाम ॥
एक सखी गृह भोग लगावा। कर पसारि ताहूकर खावा ॥
भोजन करि बोले प्रभु याही। मांगहु बर जोभावै जाही ॥
जोजेहि रुचा सोई तेहि मांगा। बोले नन्द सहित अनुरागा ॥
नाथ देहु बर यह मम कामा। नीके रहैं कृष्ण बलरामा ॥
सुनहु नन्द तव पुत्रन केरा। सदा होय कल्याण निवेरा ॥
सहित समाज रहौ तुम आछे। एकबात होई मम पाछे ॥
ताको तुम तनकौ मत डरियो। जो कछुकृष्णकहैं सो करियो ॥
असकहिदिहिनिवांटि परसादा। अन्तर्द्धान भये सहलादा ॥
हनुमत बचन लागि यदुराई। परसिपरबतजिनदीन बड़ाई ॥

दो० सेतु करत भा पूरसुनि दीन्ह्यों ब्रजमें त्यागि।
मिलेन दरशन मोहिं तोहिंद्वापरमेंएकलागि ॥

ऐसे प्रभु निज जनकी बानी। करतसांच सुनिकोन प्रमानी ॥
जयति २ कहि करत बड़ाई। आयेपुरलखि लोग लुगाई ॥
तब बासव अति कोपत भयऊ। बोलि मेघपरलय के लयऊ ॥
ब्रजबासी सब गये मोटाई। देहु बहाइ सहित गिरिजाई ॥
टुक टावर के कहेहमारी। दिहिनित्यागिमखगिरिहिजोहारी॥
कौनि बात बड़िबरनि सिधाये। बनवृत बात बज्र ब्रज आये ॥
घेरि घुमरि जल छांड़न लागे। सकलकोप हरि पद अनुरागे ॥
तुरत गोबर्द्धन लीन उठाई। ब्रजपर दिहिनि छत्रसमछाई ॥
नखपरधरे देखि ब्रज नारी। एक एकते कहैं बिचारी ॥
चोरि चोरि तव माखन खायो। सोसखिश्याम कामअबआयो ॥
यशुमति कहै निहारि निहारी। सब परशक्र बिपतियहडारी ॥
केहू नहिं गिरिराजहि धारा। हमरे सुत भारू कह ठहरा ॥
लेहु लेहु अबते कोइ लेहू। लालहि नेक उसासी देहू ॥
हौं अहीर की है कछु दाया। तबमोहन मातै समुझाया ॥
सप्त दिवस मुदिरन बन पीटा। काहूके तन परी न छीटा ॥

त्रिभुवन पति जिनकररखवारा । को करिसकै तासु अपकारा ॥
वृत सब घन चलि भयेलजाई । सहस अक्ष सुनि उठाडराई ॥
आयो तुरत कृष्ण के पासा । चरण नाइशिरबचनप्रकाशा ॥
नमो कृष्ण भंजन महि भारा । अखिललोक नायककरतारा ॥
जगत पिता गुरु अजभगवाना । रक्षक धर्म दलन खलनाना ॥
मैं अपराध कीन अति भारी । क्षमहु नाथ अबचूक हमारी ॥
जाना नहीं तुम्हें मैं ईशा । ताते करन चह्योव्रज खीशा ॥
जो जाते कछु पावत होई । मिलै न ताहि करैरिस सोई ॥
हम तुम्हार सब भांति बसाये । कामधेनु लीजै प्रभु ल्याये ॥
बोले कृष्ण तजहु सब शोका । धेनु समेत जाहु निज लोका ॥
भोग्यो निज अधिकारसदाहीं । भूले मोहिं बहुरि सुखनाहीं ॥
आये सुरपुर आयसु मानी । देखि प्रभाव सभा हरषानी ॥
सब मिलि कहैं कृष्णहैं रामा । इन्द्रहु जासु करत परनामा ॥
गोवर्द्धन की आहि कृपारी । भुज चूमति यशुमतिमहतारी ॥
कहै रघुनाथ चरित हरि केरे । भवसागर के बोहित बेरे ॥

इतिश्रीविश्रामसागरसबमतआगर ग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदास
रामसनेहीकृतकृष्णायनेचतुर्मासाचीरहरणदानलीला
गोवर्द्धनलीलावर्णनोनामपंचमोऽध्यायः ५ ॥

दो० सुमिरिराम सिय सन्तगुरु गणपगिरा सुखदानि ।
कहौं दशम अस्कंध की रहस रीति कछुजानि ॥
इन्द्रहि श्याम स्वर्ग पहुंचायो । ब्रजबासिनलखिअतिसुखपायो॥
बसे बहुरि सब निजनिज गेहा । यकदिन तहां चरितभा येहा ॥
नन्दहि बरुण दूत लै गयऊ । कृष्ण जाय पुनिलावतभयऊ॥
सुनी सबन प्रभुता अभिरामा । अबसुनियेजिमि जीत्योकामा ॥
यक दिन देखि शरदउजियारी । बन में आवत भये मुरारी ॥
हरिहितगुनि ऋतुगणतहँआये । सफलबिटपनहिंजाहिंगनाये ॥

डोलत त्रिबिधि पवन सुखदाई। लखितहँ प्रमुदितह्वैयदुराई॥
तिरभंगे ह्वै बेणु बजाई। सुनि गोपी सब आतुर धाई॥
दो० कोइसुततजिकोइ सेजतजि कोइ भूषण कोइचीर।
कोइ पयतजि कोइपाकतजि आईं जहँ बलबीर॥
बोले लखि ब्रजराज तुम कीन नरक को काम।
सासु ससुर पितुमातुपति तजिआइउ यहिठाम॥
तेहि ते अबहीं जाहु पराई। सुनि गोपी बोलीं अकुलाई॥
यह तौ दोष नाथ तेहि लागै। अपर पुरुष ते जो अनुरागै॥
हमरे पति तुमहीं महराजा। यामें कहौ कौन की लाजा॥
त्रिभुवन नाथ प्राण पति देवा। फुर मिलि तजिये झूंठीसेवा॥
जो इमि रहै हिये निठुराई। क्यों बंशी तुम फूंकि बजाई॥
आवै कोइ आसरा लगाई। लागै दोष देइ दुदलाई॥
तेहिते नाथ रहस अब कीजै। सूधै सूध जवाब न दीजै॥
बिलपत रुदतबदत इमिबाला। देख्यो कृपासिंधु छबिजाला॥
माया ते तब कह्यो गोपाला। रचहु रहस मंडल ततकाला॥
योजन पांच माहिं अभिरामा। रचत भई बँशी बट धामा॥
गीतिका छंद॥ छबिधामबंशीबटजहां मणिजटितकंचनकी मही। तहँरासमंडलरच्योमोहन जातसोकापैकही॥ नवसात सहसजुगोपिकासजिसाज सबठाढ़ीभईं। यकएककेमधिएकमूरतिकामकीशोभामयी॥ रघुनाथतिनकेबीचजोड़ीराधिकानँदलाल की। वपुएकरूपअनेककीन्हेंखबरिनहिंयहिहालकी॥ मिरदंग ताल्सितारबहुमुरचंगबेणुसरंगिका। सुरमन्दबाजतबांसुरीगति मिलतउठत तरंगिका॥ करजोरिनिर्त्ततछोरि कहुंमुखमोरिशिर नीचेकरें। पगभूमिपटकनिबाहु झटकनिग्रीव लटकनिमनुहरें॥ मृदुहंसहिंहेरहिंघुमरिझुकिगतिघूंघुरुनकी लावहीं। तताथेई तताथेईतताथेईकहिगावहीं॥ कोइडारिकरगरश्यामकेमुरली छिनाइबजावही।कोइतानपूरनकान्हसँगकोइपकरिउरचपटावती

हँसिलेतगोदउठायमोहनहाथअंगनि पैधरैं । लखिदेवनभपर सूनबरषैंहरषिसबजैजैकरैं ॥ मणिकंठउरबनमालबरशिरमोर मुकुटबिराजहीं । पटपीतकिंकिणिकाछनीकटिकानकुंडलछाज हीं ॥ अँगअंगप्रतिबहुविधिबिभूषण अलकश्रमकनझलकहीं । पदकंजनूपुरबेणुकरमुखपानभरछबिछलकहीं ॥ यहिभांतिनाचत गोपिकासब थकितछै झुकिझुकिरहीं । कहिंमाल पायल चंद्रिका खसिपरीनकबेशरिकहीं ॥ अतिश्रमितलखिनँदलाल तिनपर सुपटपवनदुरावहीं । उरझेबिभूषणहारबेनी कमलकरसुरझाव हीं ॥ असप्रीतिकेबशश्यामलखि सुरअङ्गनामनमेंकहैं । धनि धन्यगोपीधन्यजिनके संगहरिक्रीड़तरहैं ॥ करजोरि हृदयनिहो रिविधिते कहैंयहबरदीजिये। हमहोहिंदासीब्रजबधुनकीकृष्ण पदरतकीजिये ॥

दो० कृष्णहि मारुत करतजब देखत सब ब्रजबाम।
मनमें भा अभिमान तब हैं हमरे बश श्याम ॥

जानि गये सो मद भगवाना। तुरत भये तहँ अन्तर्द्धाना ॥
त्यहिपर होत अधिक अनुकूला। दलततासु हरिमद दुखमूला ॥
एक सखी का कर गहिलीन्हा। गोपी बेष संग बन कीन्हा ॥
त्यहितबनिज मनमांझ बिचारी। मैंहौंश्यामहिं बहुत पियारी ॥
बोली पग ते चला न जाई। लेहु मोहिं निजकंध चढ़ाई ॥
लीजै चढ़ि बैठे मुसक्याई। चरण उठावत गये हेराई ॥
बिनप्रभु बाल बिकल मैं कैसे। जलचरबिनजलब्याकुलजैसे ॥
शोचत हरिहि न पावत बामा। बिकल पुकारत आरत नामा ॥
हे ब्रजराज राज दुख मोचन। हे गोपीपति बारिज लोचन ॥
चरण शरण मैं दासी तेरी। कृपासिंधु लीजै सुधि मेरी ॥
यहिबिधि रुदत परी तरुबाला। पछिलिनकाअबसुनोहवाला ॥
ढूंढत फिरहिं सकल उनमस्ता। जड़जीवन ते बूझहिं रस्ता ॥
हे बट हे पाकरी करीला। तुम देखे मोहन गुणशीला ॥

हे चल दल हे नींब पियारी। तुम कितहूं देखे बनवारी॥
हे रसाल हे पनस सुजान्हा। तुम आवत देखे इत कान्हा॥
हे यामुनि हे गूलरि तूता। तुम देख्यो यदुपति के पूता॥
हे दाड़िम हे कुन्द चमेली। तुम देखे गिरिधर अलबेली॥
हे गुलाब बेला कचनारा। हे बदरी हे हरसिंघारा॥
हे नीबू अँबरूत सरीफा। तुम देखे गोपाल हरीफा॥
मोमसिरी के कदम तमाला। तुम देखे नरहरि नँदलाला॥
दो० हे कृष्णा उष्णा द्विजा पथ्या क्रमुका कन्द।
हे बश्वा लंगूल अछ तुम देखे नँदनन्द॥
यहि प्रकार सब वृक्षन तेरे। भेंटि भेंटि पूंछै हरि हेरे॥
जब न कछू उत्तर तहँ पावैं। निदरितिन्हैं बांशहि गरिआवैं॥
हे बंशी तैं बड़ी गवाँरी। अपने कुलकी रीति बिगारी॥
सवैया वेमगदापगअन्यनकोतुम चालिबो आछेनहूकोनिवारेउ।
वेजल थाह बतावतहैं तुमप्रेमअथाहके बारिद पारेउ।
बेवरबास बसाइभले तुम बासछोड़ाइ उजारिमेंडारेउ।
कहियेकहाहरिकीबँशुरीतुमआपनबंशकोनामबिगारेउ।
दो० बिरह बहनि तोमें भरी है तू बंशी सांच।
फूंकिफूंकिहरिगहतपरितदपिआंगुरीनांच॥
जोतैं श्यामैं ते न हेरानी। तौपरपीर जाइ किमि जानी॥
आगे चलि सो सखी निहारी। भेंटि कह्यो कितगये बिहारी॥
त्यहितब आपनि कथा बखानी। कितयोंगये हमहुंनहिंजानी॥
बोली नवललिता मुख जोई। श्यामसरिससखिनिठुरनकोई॥
कहराधिका श्यामका कीन्हा। केहिअभिमानदुःखनाहिंदीन्हा॥
बिधिकरि गर्बबिपुल बिधिदेखे। शंकर भये काम बश लेखे॥
लोमश लखि सिमरीकी माला। बसे बिपिन में दशरथलाला॥
नारद वानर कर मुख पावा। धीमर कर हनुमान बँधावा॥
हरिके कहे काथ नहिं सुनेऊ। गरुड़ भुशुण्डि पुरहशिरधुनेऊ॥

दशमुख दरपि पराजय पाई। कुशते निज बलराम जुझाई॥
ज्ञान गर्व सनकादिक करेऊ। शाप देइ जगमें अवतरेऊ॥
गिरे ययाति स्वर्ग ते भूमा। गजबश ग्राह बहुत दिनझूमा॥
गिरिअरिगुरुयोन मोसम दूजा। हरी तस्य गोवर्द्धन पूजा॥
तापस धरी शिला शिर फेरे। जरे पंख सम्पाती केरे॥
बसु बशिष्ठ मुनिते मद कीन्हा। तेहिगांगेय मनुष्य तनलीन्हा॥
द्रुपद द्रोण ते अहमित ठानी। भइ तेहि अर्द्धराज्य की हानी॥
बिद्या मद जब कीर्ति बिमाते। रिसकरि रम्भ जरायो ताते॥
शुक्र सुता अरु नृपतिय ओड़ी। मदते भइ शरमिष्ठा लौंड़ी॥
करि कंदर्प दर्प तनु जरेऊ। जहनुपान गंगा कर करेऊ॥

दो० प्रभुइदुखितलखि लषणके भयो गर्बतेहिठाम।
बिछुरत नारि सनेह बश जरत निवार्योराम॥

त्यहिते श्यामहिं दोष न दीजै। जसमदकिह्यो तैसफल लीजै॥
बोली अपर सखी चलिकै अब। रहसकरो मिलिहैं मोहनतब॥
आइ सबन कीन्हीं सोइ रचना। बिबिधि भांतिके बोले बचना॥
कोई कृष्ण बनी कोइ प्यारी। आदिहिते लीला बिस्तारी॥
लागीं प्रेम सहित जब गावन। तुरतहि प्रकट भये मनभावन॥
अपर कर्म तुष्टत चिर काला। प्रेमते प्रकट होत ततकाला॥
छबि अनपार सकै को गाई। लखि ब्रजबधू उठीं हरषाई॥
काहू प्रीतम कर गहि लीन्हा। काहू बाहु कंध निज दीन्हा॥
काहू कटि पट पद उर धारे। तृप्तनहोत अस बचन उचारे॥
महाराज तुम ब्यास बनो अब। संशयचित हम प्रश्नकरैंसब॥
तीनि भांति प्रानी जग बीचा। यक उत्तम मध्यम यकनीचा॥
बिन सेवा जो करै सनेहू। उत्तम प्रभु कर लक्षण येहू॥
सेवा लखि जे प्रीति बढ़ावैं। ते मध्यम की पदवी पावैं॥
अधम अनन्य दास बिसरावैं। बिन सेवा तेहि कौन चलावैं॥
इनके लक्षण कहौं बुझाई। जेहि सुखलहैं न संशयजाई॥

गूढ़ गिरा सुनि गोपिन केरी। कृपासिन्धु बोले हँसि हेरी॥
बिन सेवा जे प्रीति बढ़ावैं। ते सुकृती उत्तम गति पावैं॥
उभय हिये जहँ स्वारथ जानो। तहां न धर्म सनेह पिछानो॥
जो सेवा लखि अरु बिन सेवा। प्रीति न करै सुनो तिनभेवा॥
तिनमहँ जानहुँ चारि प्रकारा। आतम राम एक निरधारा॥
दूसर जानहुं पूरण कामा। लहैं बस्तु तद्यपि निष्कामा॥
तीसर अतिशय मूढ़ बखाना। भलअनभलजेहिपरतनजाना॥
चतुरथ गुरु द्रोही दुख पावै। जोशठ कृत उपकार मिटावै॥
तूर्य सुनत गोपी मुसक्यानी। समुझि श्याम बोले मृदुबानी॥
अहोप्रियेतुम जसचित आन्यो। तथा मोहिंकबहूंमति जान्यो॥
म्वहिंसेवक प्रिय प्राण समाना। करौंबियोग तासुहित जाना॥
लखतरहौं मुखरुख जब तबहीं। तुमते उऋण नहीं मैंकबहीं॥
तजि दुर्जन गृह बन्धन घोरा। कीन्होंआय भजन तुममोरा॥
कौन बस्तु असि है संसारा। जाहि दिये होई उद्धारा॥

दो० यहिप्रकारके बचन सुनि पुनि गोपी हरषाय।
लागीं स्वइलीलाकरन कृष्णसहितसुखपाय॥

कीन्हीं बिबिधि भांतिते क्रीड़ा। सो बर्णत मोहिं लागतब्रीड़ा॥
भै यामिनि अरधावधि केरी। शिथिलभईंसबभामिनि फेरी॥
आईं भवन होत भिनसारा। बरणा कछु है चरित अपारा॥
जो यह चरित सुनै तजि मोहा। लहै सो प्रेम भक्ति संदोहा॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघु
नाथदासरामसनेहीकृत कृष्णरासलीला
बर्णनोनामषष्ठोऽध्यायः॥ ६॥

दो० सुमिरिराम सिय संतगुरु गणपगिरा सुख दानि।
बरणौं श्री भागवत की कथा मनोहर जानि॥
रहसचरित सुनिकह्योनृप श्रुतिअविहितयहबात।

कही हरी परतिय बरी सत्य सुनौ सोइ तात॥
समरथ को नहिं दोष कछु रबि बुध गंग समान।
जिमिबिष कीन्ह्यों पानहर पचैसकत कोउआन॥
सो० भाव बश्य भगवान कृपा सिंधु निष्काम चित।
तजि कुतर्क मति मान सुनौ चरित हरिके सुखद॥
केहू भांति हरि पद चित लावै। श्याम धामसो निश्चय पावै॥
यक दिन सुनो गोपमिलि सर्वा। गये रहे हर पूजन कर्वा॥
तहाँ एक आयो चलि नागा। नन्द रायको लीलन लागा॥
परो शोर हरि मारी लाता। छुवत भयो बिद्याधर ताता॥
करिदण्डवत् कथा निज भाखी। गा सुरपुर उर मूरति राखी॥
एक दिवस मोहन ब्रज बाला। करहिंकलि आवा तेहिकाला॥
शंखचूड़ धनपति कर दूता। लै भागा यक सखी अधूता॥
बधकरिहरितेहित्रियसोलीन्ही। छीन सुभगमन रामहिदीन्ही॥
यक दिन कंस असुर यक पेरा। आवा धरि बपु बिरषभ केरा॥
डहँकत फिरत उड़ावत छारा। पकरि सींग तुरतै प्रभुमारा॥
पुनि केशी आवा हय रूपा। देखि डरे ब्रज लोग कुरूपा॥
घर बाहर निकसै कोइ नाहीं। तबगिरिधर आयेतेहि पाहीं॥
दो० लाग चलावन चरणदोउ पकरि लीन्ह पगश्याम।
दिहिनि फेंकि शत धनुषपर गिरा जाइ जनुधाम॥
पुनि रिसकरि धावा मुख बाई। कृष्णदीनि निजबांह चलाई॥
बाढ़ी भुजा तलफि मरि गयऊ। लखिसबग्वालनकेसुखभयऊ॥
यक दिन श्याम सखनके संगा। खेलत रहे तहां धरि अंगा॥
बालक बनि व्योमासुर आवा। खेलन लाग न जाने पावा॥
वृक बनि शिशु यक एक उठाई। सबगिरि गुफादुराइसिजाई॥
तब यदुनाथ गये जिय जानी। लरि मारा तुरतै अभिमानी॥
सुनिसुनिबधसुभटन करकाना। तबसुभोजपतिअति अकुलाना॥
बोला सकल सभा ते ऐसा। ऋपुबधहितअबकरिये कैसा॥

कहत भये सब मल्ल सँघाता। लेउ बोलायपहाँ दोउभ्राता॥
ऐहैं रंग भूमि चलि जबहीं। मल्लयुद्ध करि मारब तबहीं॥
सुनि बारता भूप मन भाई। तुरत लिहिसिअक्रूर बोलाई॥
मधुबन जाउ तात मम कामा। लावहु बोलि कृष्ण बलरामा॥
धनुष यज्ञ देखन के काजा। कह्यो बोलाइ नितुमकाराजा॥
शपदसाजिनिजु स्यन्दनदीन्हा।करिबहुबिनयबिदापुनिकीन्हा॥
कार्तिक बदी त्रयोदशि भोरा। चढ़ि अक्रूर चले ब्रज ओरा॥
करत बिचार आजु हरि चरणा। देखिहौंजायसकलदुखहरणा॥
अंकुश कुलिश सहित ध्वजरेखा। ध्यावत तिन्हे शम्भुअजशेषा॥
प्रगक शीश मैं नावब जाई। लैंबकि मोहि उर लेहैं लाई॥
दहिने मृग बिलोकि हरषाने। करत मनोरथ ब्रज नियराने॥
नित्य निरामय निरमल नीका। परपदतेप्रिय त्रिभुवनपीका॥
उतर परे रथ ते तेहिं बारा। लागे लोटन धूरि मँझारा॥
यामें परे कृष्ण पद पावन। निकसे कै हैं धेनु चरावन॥
भेंटहिं पादप अस जिय जानी। इनके तर बिहरे सुख दानी॥
चलि न सकत तनसुधिनपरेखी। दृग जलबहत चहतकबदेखी॥
प्रेम बिचारि कृष्ण बलरामा। लै गोंवैं आये तेहि ठामा॥
परे चरण अक्रूर निहारी। उर लगाइ तबलीन बिहारी॥
रूपनिहारि छकितभयो नयना। अतिसुखदीनबोलिमृदुबयना॥
लाये भवन हरष युत लीन्हा। नन्द महरि बड़आदरकीन्हा॥
सेज बिछाइ सुभग बैठाये। षटरस भोजन महरि बनाये॥
जेंवत भये बैठि सबसंगा। अँचै बहुरि आये परयंगा॥
बोले तब दंपति हरषाता। गमनकवनहित कीन्ह्योंताता॥
सकुचे कहत रहत नहिं राखा। पठवा भूप हमैं अस भाखा॥
सहित गोप नन्दहि लै आवो। दधि घृतक्षीर जहांतक पावो॥
पुनिधनु मख देखन के काजा। हरिहलधरहिं बोलाइनिराजा॥
सुनि अस बचन बाणसमलागे। यशुमति दीखकालजनुआगे॥

बोलत भई बिकल ह्वै बानी। हे अक्रूर भूप मख ठानी॥
तहां कहौ मम बालन केरा। कौन कामहैं जो नृपटेरा॥
वहां चही भुजबल जिन माहीं। त्यहिते मोंसुत जैहैं नाहीं॥
बोले कृष्ण जाब मैं माई। धनुषयज्ञ देखी नहिंकाई॥
आवब बेगि बबाके साथा। असकहिनिठुरभये यदुनाथा॥
बिकल महरि बहु बचन बखाने। एकौ अंकरहत नहिं जाने॥
ब्रजपतिते बोली बिलखाई। लायो संग फेरि द्वउ भाई॥
यहिबिधिभईसकल निशिनाशा। कृष्ण पितातें बचन प्रकाशा॥
लैदधि दूध चलहु तुम आगे। गोपन सहित सखासँगलागे॥
चले नन्द शकटन चढ़ि गोपा। बाल वृन्द पथ तकैंसचोपा॥
कछुक बार बीते द्वउ भ्राता। रथपरभे सवार हरषाता॥
त्यहिक्षण शोक रहा पुर छाई। महरिदशाकछुबरणि न जाई॥
ब्रज बनितन जब सुनाहवाला। धाईं सब ह्वै निडरबिहाला॥
आइ निकट बोलीं कित जाहू। चलहु घूमिजोनिजभलचाहू॥
सुफलकसुत इनका का कहिये। नीति बिचारि मष्ट ह्वैरहिये॥
दो० कामदार कामी कृपिण कन्या मांगन लोय।
येपरपीर न पेखईं होनी होय सो होय॥
सुनि गोपिन के बचन बिहारी। समयसाध्यसुरमुनिहितकारी॥
बोले बिहँसि बनज करजोरी। एक अरज अब सुनिये मोरी॥
धनुष यज्ञ कबहूं नहिं पेखी। जोतुम कहौ तो आई देखी॥
सुनि सबके मन करुणा आई। आवहु देखि कहेनि अकुलाई॥
चले तुरतरथ हांकि बिहारी। सकल चित्रसी रहीं निहारी॥
पादप वोट होइ रथ जबहीं। एक एकते भाषैं तबहीं॥
देखो वोहरि को रथ जाई। कमलनयन कर पटफहराई॥
जबनभ गरद परी नहिं देखी। फिरीं सकल मनशोचबिशेखी॥
पुनि२ निरखहिंदिशिमनमाली। कहवृषभानुसुता सुनु आली॥
क० पीछेहिक चितवत नयनममबारबारपाछेनपरतपगकाहि

मनदीजिये। पवननभईहोपताकहूअवरनाहिंरथकेनभईअङ्गकैसी
अबकीजिये । धूरिहूनभईहरितनलागिजातीसंगखगहूनभईजो
उड़ाय दर्शलीजिये। आईबिलखातजिमिमाखीमधुजातछोरिजि
योनहिंजातपै दरशआशजीजिये ॥
गोपिनिकी कछु बिरहबखानी । अबसुफलककीसुनहुकहानी ॥
कृष्णहिंलखियुवतिनआधीना। तब अक्रूर बिचारहि कीन्हा ॥
इन्हैं सुन्यो हम हैं अवतारा । गोपिन के बश निपटनिहारा ॥
यहि प्रकारकी संशय आनी । जानिगये प्रभु अन्तर्य्यानी ॥
लागे जब अक्रूर नहाई । यमुना में निज मूर्त्तिदिखाई ॥
जल भीतर जब डुब्बीमारी। देखिपरे तहँ राम बिहारी ॥
शिर निकारि पुनि रथपरपेखे। कैयोबार यहीबिधि देखे ॥
भये निमग्न हूऊ करजोरी । दिब्य दरश तहँ दीखिबहोरी॥
सेवत सुरमुनि सिद्ध बिधाता। लागे बिनयकरन पुलकाता ॥
नौमि कृष्ण अद्वै अबिनाशी। ब्यापकब्रह्मसकल घटबासी ॥
मायाब्यक्त बिरज बागीशा। श्रुतिकहँ सर्बपाणि पदशीशा ॥
यहिबिधिकीन्हबिनयबहुजबहीं। भयेअदृश्यबहुरिहरि तबहीं ॥
ब्याकुल ह्वै आये रथतीरा। कहहरिकिह्योअस्नानगम्भीरा॥
तबसुफलकसुतगहिदोउचरणा। बोले प्रभुमैं तुम्हरी शरणा ॥
तब प्रभाव प्रथमें नहिं जाना । तेहिते मैं अभाव मन आना ॥
करत नाथतुम लीला कैसे । बहु बिधि स्वांग सलूकाजैसे॥
तब प्रभु दानपतिहि समुझावा। चलेआइ मधुपुर नियरावा ॥
सुफलक सुत बोले करजोरे । प्रथमैं चलौ नाथ गृह मोरे ॥
आउब एक दिवस तव धामा। अस कहि उतरिपरेतेहिठामा॥
सहित समाज रहे पुरबासा । तेहिदिनतहां भईनिशिनाशा ॥
दो० भोर भये प्रभु नन्द ते बोले प्रेम जनाय।
मधुपुर आईदेखि अब सखनसहितदोउभाई ॥
आवहु देखि तात हरुगाई । काहू ते जनि कर्यो लराई ॥

आयसु पाइ चले हरषाता। श्रीदामादि सखा सँगभ्राता॥
नवल नारि सम पुरी निहारी। भयेमुदित नखशिखसिंगारी॥
जात रजक ते कहा कन्हाई। देउ हमैं बरपट पहिराई॥
बोला निज मुख देखौ नीरा। भूप बसन तुम जाति अहीरा॥
सुनिबलभद्र बिघन करिडारा। पहिरिनिपटसबनिजअनुहारा॥
दरजी बायक नाम बिलोकी। बसनसाजितन भयोअशोकी॥
आगे मिला सुदामा माली। रचिपहिरायसि हारसुजाली॥
लीन्हिसिमांगि कमलपदप्रेमा। ज्ञान बिशुद्ध भक्ति दृढ़ नेमा॥
आगे लखी कूबरी जाता। कंसहि खौर लगावन गाता॥
कहत भये तेहिते यदुराई। देहु हमारे खबरि लगाई॥
छकितभईछबिदेखिगोपालहि।निरभयखबरिलगायसिभालहि॥
तब मोहन पगते पग चापी। चिबुकसुकरगहि ऊपरआपी॥
मिटिगा तुरतहि कूबर तासू। भयादिव्यतन बिमलप्रकासू॥
बोली चलहु नाथ मम गेहा। रौरे योग्य भयो बपु एहा॥
पूरण प्रीति देखि कर जोरे। कह्यो अपर दिन आउबतोरे॥
आगे चले नगर की नारी। अवलोकहिं छबिचढ़ीअटारी॥
भूषण पट पहिरे बिपरीता। कोइअंग अघट कोइअँगरीता॥
एक एकते प्रमुदित कहईं। ये देखौ यशुमति सुत अहईं॥
इनसम सुभग न कोउ संसारा। धनिगोपीसँगकिहिनिबिहारा॥
कोइ बसुदेव देवकी केरे। कहत दुराइनि यशुमतिसेरे॥
चहुंबिधि बिधिपूजीनिजइच्छा। श्रवणचित्र अरुस्वप्नप्रतिच्छा॥
एक कहैं अब कंस कुचाली। मल्ल युद्ध हित बोलेसिआली॥
कहँ मुष्टिक चाणूर बिशाला। कहँ ये मृदुल नंदके लाला॥
अपर कहैं बलमें अति भारी। बिपुल असुर इन डारे मारी॥
भले प्राण कंसहु के हरहीं। आपु राज्य मधुपुरकी करहीं॥
यहिबिधि आपुस में बतलाहीं। बरसैंसुमन जहां चलिजाहीं॥
कोइ लक्षण नायक के तूला। दक्षिण धृष्ट संग अनुकूला॥

द्वादश हावभाव कोइ करहीं। निजसरूपकोइरतिमदहरहीं॥
सखा जो रसिकशिरोमणिकेरे। निरखहिं तियन भांतिबहुतेरे॥
कुं० कोइस्वकीयपरकीयकोइ कोइ सामान्या नारि।
बियःसिंधि मुग्धा कोई मध्या प्रौढ़ा चारि॥
मध्या प्रौढ़ा चारि कोइ श्रेष्टा अन श्रेष्टा।
कोइ ज्ञाता अज्ञात कोई जेष्ठा आ जेष्ठा॥
कोइ धीरा आधीर लक्षिता कोइ गुप्तायन।
मुदित बिदग्धा कोइ कोइ कुलटा अनुसायन॥
कोइ उक्ता स्वाधीन बात सज्या कोइ दुखिता।
कलहं तरिता कोइ बिप्र लब्धा कोइ रुखिता॥
कोइ खण्डिता अभिसारका आगतपतिकाहोइ।
प्रोषित पतिका धीन पति गर्बित देखी कोइ॥
यहिबिधिलखियुवतिनकेलक्षण। आपुस में बतलाइ प्रतक्षण॥
रंगभूमि आये यदुराया। शक्र धनुष गहि तोरिबहाया॥
मारनि करे रहैं रखवारे। आये बहुरि टिके जहँ सारे॥
नन्द गोद लै असन कराये। पुनिसुनिदोउभाइनसमुझाये॥
दो० करौ अचगरी मति इहां निरदै नृप को गाउँ।
भले तातरघुनाथ मणि मुख मन औरै दाउँ॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदास
रामसनेहीकृतश्रीकृष्णमथुराआगमनबर्णनोनाम
सप्तमोऽध्यायः॥ ७॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपगिरासुखदानि।
कहौं दशम अस्कन्ध को केशव कथा बखानि॥
रजक निपातन धनुदलन असुर शरणबरजोर।
सुनि जहँतहँ रघुनाथ जन परो नगरमें शोर॥
यह सब खबरि कन्स जबपाई। तबतौ अधिक उठा अकुलाई॥

लीन्हेसि बोलि मल्ल बलभूरी। आवैं तब तुम डार्‌यो चूरी॥
द्वार कुबलया गज ठढ़िआवा। अयुत नाग बल तामें पावा॥
कहिसि महावत ते गोहराई। प्रविशत ते डारैं चपवाई॥
असुर सकल बैठाय ठिकाने। आपु बैठ उत्तम मंचाने॥
तब बोलवाइसि राम गोपालू। नन्दसहित सब आवैं ग्वालू॥
समाचार सुनि सकल सिधारे। आये रंगभूमि के द्वारे॥
बोले कृष्ण टारिले पीला। सुनि तेहि दृष्टि सामने ढीला॥
लागे ताहि खेलावन दोऊ। दूरिहि ते देखत सब कोऊ॥
कबहूं तर ऊपर चलि जावैं। कबहुंक पाछे ताहि हटावैं॥
एक बार हनि मुष्टिक मारा। गिराअवनि करिघोर चिकारा॥
मस्तक बिथकि हंस गतभयऊ। राम उपारि एक रद लयऊ॥
रंग अवनि तब भये सुभेखा। जेहिजसभाउ तैस तिनदेखा॥
मल्लन मल्ल तियन रस रूपा। गोपन सजन नृपन नरभूपा॥
पित्र न शिशुकोबिदन बिराटा। भोज राजनिजुकालहि डाटा॥
योगिन तत्व बैष्ण जिन इष्टा। यामें कही भावना श्रिष्टा॥
बैठे सकल सुभासन पाई। बोला तब मुष्टिक ढिग आई॥
हे बल कृष्ण अखाड़े आवो। भूपहि निज करतब देखरावो॥
मम तव धर्म यहै है ताता। भूप प्रसन्न करी सोइ बाता॥
बोले प्रभु जानत सब कोई। मल्ल युद्ध बिन मेर न होई॥
जो विचार बिन भूप करावै। अवशि राज्यताकीमिटिजावै॥
देखै ताहि महा अघ लागै। देइ छोड़ाइ न तौं उठिभागै॥
हम बालक तुम मेरु समाना। कुस्ती केर मर्म तब जाना॥
पुनि गरीब गोचारन हारे। कहि बिधिलरियेसंगतुम्हारे॥
हमैं कहा भटकावत इतही। खेलत रहतपुलिनमें नितही॥
सभा बीच काहे कदराता। ठाढ़ भये तब दूनौ भ्राता॥
हरि चाणूर भिरे भुज ठोंकी। मुष्टिक संग राम रिस रोंकी॥
लागे लरन पेच करि नाना। लचकतकटिहरिपदमुरझाना॥

अति सुकुमार देखि पुर नारी। कंसहि देहिं अनेकन गारी॥
हाय दुष्टके दया न आवत। मृग सिंहनकर युद्ध करावत॥
सभा मध्य ऐसो कोइ नाहीं। समुझावै कंसहि छुटिजाहीं॥
इतने माहिं कृष्ण चाणूरहि। पटकिंदीनमहि मराहजूरहि॥
देखि राम मुष्टिकहि पछारा। सल तोसल तबभये तयारा॥
पटकिनि तुरततिन्हें तेहिलागे। अपर मल्ल सब देखत भागे॥
बोला कंस निरखि भय पाई। करहु नगर बाहेर दोउभाई॥
दो० नंद संगजे गोप हैं लूटि लेउ तुम झारि।
उग्रसेन बसुदेव को अबहीं डारौं मारि॥
सुनत कृष्ण ढिग पहुंचे जाई। पकरिशिखा महिदीन गिराई॥
काढ़े प्राण घसीट घसीटी। डारे सकल निशाचर पीटी॥
लखि सुर हर्षि सुमनबरषाये। कढ़िलावत यमुना तट ल्याये॥
तहँ बिश्राम कीन मनभावा। सोइ बिश्राम घाट कहवावा॥
पुनि पुर आइ पिता अरुनाना। छोरि बन्दिते अति सनमाना॥
आपु आपुको घृगता दीन्हीं। मात पिता की सेवा कीन्हीं॥
सुनि बसुदेव देवकी हरषे। गोद लगाइसकल सुखकरषे॥
दीन्ही उग्रै राज बहोरी। तब यदुपति बोले करजोरी॥
कीजै राज्य कृपा करि आपा। हमरे हय ययाति की श्रापा॥
तरुण अवस्था पितहिनदयऊ। तेहितेयदुकुलमहि बिनभयऊ॥
कीजै तुम निधरक सुख भारी। मैं लेहौं सब काम सँभारी॥
बहुरि नन्द ते बाले आई। ग्वालन सहित आपु ब्रजजाई॥
हमकछु दिनरहिकै यहिग्रामा। आवब चले तुम्हारे धामा॥
निजसुत सरिस हमेंतुम पाला। तेहितेनहिंबिसरबतिहुंकाला॥
जननी ते कहियो परनामा। बिसरिजाइजनिगिरिधररामा॥
हम तिनको बहुभांति खिझावा। उनके कबहुं अभाव न आवा॥
गोपिन ते कहियो कुशलाता। कछुदिन में ऐहैं दोउ भ्राता॥
सुनि असबचन नन्द दुखपावा। ठगिसे रहे बचन नहिं आवा॥

श्रीदामा बोल्यो तब बानी। कृष्ण कहा तव बुद्धि हेरानी॥
अपने मात पिता को त्यागी। परघर रहिहौ रोटिन लागी॥
कौन बस्तु कमती घर तेरे। जो नौकरी करौ नृप केरे॥
घरवैहौ निज पितु कर नामा। तेहिते चलौ आपने धामा॥
भल कीन्ह्यो जो कंसै मारेउ। उग्रसेन कर काज बिचारेउ॥
राज्य पराई देखि लुभान्यो। यहीएक अनरथ मनआन्यो॥
जो सुख है हमरे ब्रज माहीं। सो सुख तीनि लोकमें नाहीं॥
तन धन जाइ जाइ बरु प्राना। तबहूं ह्वै परबश नहिंरहना॥
बोले कृष्ण तात तुम भाखी। सोइ सत्य हम हिरदे राखी॥
परि यह राज्य न है पर केरो। सब प्रकार तुम जान्यो मेरी॥
आगे चलहु सकल तुम आछे। सहित राम हम आवत पाछे॥
सुनत गोप ब्याकुल भये कैसे। गइमणिछीनि फणिककीजैसे॥
यद्यपि घट पट बहु पहिराये। तदपिबिरह बशएक न भाये॥
तब प्रभु करि उच्चाटन दीन्हे। चले सकलमन आनँद कीन्हे॥
आये जब वृन्दाबन माहीं। यशुमतिदोखकान्हबलनाहीं॥
लागी करन बिलाप घनेरा। नन्दकह्यो कछु जोर न मेरा॥
जो जो यदुपति कहा सोगावा। तदपि न मनमें धीरजआवा॥

दो० यहां कृष्ण बलराम कहँ यदुपति दीन जनेउ।
पुनि पठये दोउ पढ़न को पुरीवन्तिका मेउ॥

आये चलि संदीपन ग्रेहा। लगे पढ़ावन सहित सनेहा॥
प्रथम वेद बिधि दीन बिचारी। पुनि पढ़ाइ विद्या दश चारी॥

कुं० ब्रह्मज्ञान यकजानिये उभय रसायन कूर्य।
तीसर स्वर धारण निपुण वेद पाठहैं तूर्य॥
वेद पाठ है तूर्य पंज ज्योतिष पहिचानौ।
छठोकहतब्याकरणधनुपबिधिसप्तमजानौ॥
जानोबसुजलतरणनवमबैद्यकदिशिकृषिपर।
रुद्रकोक रबिवाजिचढ़नतेरहीं जु नृत्यकर॥

बोध चतुरई चतुर दश बिद्या पाइ अशर्म।
पढ़ीकृष्णरघुनाथअबकहतकलाबिधिब्रह्म॥

चामरछंद॥ बाद्यगीतनृत्यनाट्यलेखबज्रबेधनं। तंदुलामिषालिरंगकार्षपर्षिकंधनं॥ पुष्पतल्पगंधकल्पदंतचपलरानजू। दामघर्णिसेनकर्णिवारिवाद्यवागजू॥ नोरघातचित्रजात मालइंद्रजालजू। पट्टपानि भूषनानि ग्रन्थकीटभालजू॥ पाककारकौं चुमार बीनबेणु जोगजू। करणबेंधनी शृंगारपानरस प्रयोगजू॥ शूचिकर्मयातु मर्मसुत्र कीड़नोलिजू। वाकदक्षकवललक्षदुष्टबंचिकालिजू॥ ग्रंथपाठ छिन्नकाठ नृत्य ज्ञान दायकं। काव्य पूरकं नेवाररज्जुरीतिनायकं॥ तर्करीतिबास्तु प्रीतिस्वर्ण कारकारजू। रंगज्ञानवृक्षवानमेखमुर्गमारजू॥ कीरशालिकाप्रलापशत्रुधीउचाटनं। केशमार्जनंमकर्षमुष्टिवस्तुडाटनं॥ देषभाषिनीमलेच्छफूलसंदनानिकौ। यंत्रमंत्रकाबिरोधमानसीपिछानिकौ॥ पिंगलाबिधानकोशशोसकार्य्यसाधनं। छलउपाइरक्षकायजयददेवराधनं॥ द्यूतखेलबालझेलओरबैरतोषनं। बासदादिकृतबिचारसबसारकोशनं॥ चौसठेकलाकहीमुनीशआदिमासजू। सोलिखी बिश्रामसिंधुमध्यदेवदासजू॥

चौंसठि दिन में विद्या सारी। पढ़त भये श्रीकृष्णमुरारी॥
विद्या निधि विद्या अभिलाषी। संप्रदाय की सींवा राखी॥
बिदा होत बोले हरि येहू। गुरुदक्षिणा मांगि प्रभु लेहू॥
कहत भई तब गुरु तिय बानी। पुत्र हमार दीजिये आनी॥
बूड्यो सुनि सागर में गयऊ। पंचजन्य कहँ मारत भयऊ॥
मिला न तब कीन्हों पछितावा। चले बहुरि यमपुर में पावा॥
दीन आइ सोइ बालक श्यामा। लहि अशीशआये निजधामा॥
भक्तबसल त्रिभुवन द्युतिदीपति। सबउर अंतर्यामी श्रीपति॥
एक दिवस कुबिजा के गयऊ। अतिअद्भुत गृहदेखत भयऊ॥
बिबिधि बस्तु संयुक्त सोहावन। धूप दीप मंडित मन भावन॥

चंदबसन उपधान बिशाला। पानदानपुनि बिपुलमसाला॥
श्यामहि देखि उठी हरषाई। सखिनसहितउठिसेजहिलाई॥
आपु सुतन पट भूषण सजिकै। तकतखड़ीखोड़शबिधिभजिकै॥
प्रथम समागम समुझिलजानी। अपरअलीगहिप्रभुपहँ आनी॥
प्रमुदितकरितेहि सँगभगवाना। रमे कृपा करि कृपानिधाना॥
कोक कलाकरि सरस बिहारी। काम तपनि ता केरि नेवारी॥
पुनि प्रसन्न ह्वै बचन उघारे। रमौ ककुकदिन संग हमारे॥
प्रभु प्रेमाशिक रूप न गुणके। बचनाबिचारि प्रीतियुतउनके॥
एवमस्तु कहि निजगृह आये। उद्धव सहित तस्यगुण गाये॥
सुपनेखा रामहिं लखि मोही। कामसहित कुबरीभइ सोही॥
कौनेउ भाउ प्रभुइ जो ध्यावै। लहै सही फल मृषा न जावै॥

दो० जो ककु लीला जगतमें सोसब रघुपति केरि।
कलाअंश कहुं स्वयंबपु धारिकरत हियहेरि॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगर ग्रंथउजागरश्रीरघु
नाथदासरामसनेहीकृतकृष्णखंडकुबरीगृहआग
मनोनामअष्टमोऽध्यायः॥ ८॥

दो० सुमिरि रामसिय संतगुरु गणपगिरा सुखदानि।
भँवरगीत हरिमीत मत शुककृत कहतबखानि॥

हे नृप जानि यदुन में श्रेष्ठा। सखाश्याम को भाग्य बरेष्ठा॥
शिष्य बृहस्पति को बड़ ज्ञानी। कृपा सिंधुब्रजकी सुधिआनी॥
तिन उद्धव कहँ लीन बोलाई। ज्ञान मान खोवन मन आई॥
बोले तात जाहु ब्रज माहीं। लावहुखबरिमिलीसुधिनाहीं॥
नंदबबा के गहियो पाऊं। बिसरिजाइँ जन हमरोनाऊं॥
पालागन मैया ते कहियो। कृपाकरत बलकनपर रहियो॥
गोपिन ते सुठि योग सँदेशू। बरणयों तुमतजिसकलअँदेशू॥
जो वे कहैं बचन सुनि सहवी। करिबिवाद पुनिजरीनदहवी॥

चरणपरसिचढ़िरथहि सिधाये। ब्रजरबिअस्तसमय चलिआये॥
रज मंडितपुर सुरभिन पाछे। वृषडोलत खगबोलत आछे॥
राम कृष्ण गुण गावैं पुरजन। धूपदीप करि पूरित लखिवन॥
प्रमुदित ह्वै प्रबिशे पुरमाहीं। खबरि पाइ निजपुत्रन पाहीं॥
पुर नर नारि परमसुख माना। राम कृष्ण आवतहैं जाना॥
वैसे स्यन्दन वृषभ बिशाला। वैसे मुकुट पीत पट माला॥
निकट जाइ ऊधव को चीन्हा। हरषशोक मनमें तबकीन्हा॥
नन्दपवँरि पहुंचे सुनि जबहीं। निकसिमहरिआईढिगतबहीं॥
श्यामसखालखि चरण पखारे। सुंदर अष्ट शिला बैठारे॥
मुदित बनाय असन करवाये। अचवनकरि जबसेजहिलाये॥
तब यशुमति बोली जल डारी। हैं नीके बल कुंजबिहारी॥
पालि पोषि हम कीन्ह बड़ेरे। बाजत पुत्र देवकी केरे॥
जबते गये सुधिउ नहिं लीन्ही। धाइउ के नाते तजि दीन्ही॥
लीन्हे छीनि प्राण बसुदेऊ। तबते तात न आने केऊ॥
हमहीं जाइ तासु घर रहतीं। दासीह्वै सुखदेखन चहतीं॥
बैरी भये कुटुम्बी मेरे। जाननदीन्हिनिनिरखिनिवेरे॥
शूल होत नव नीति निहारी। मोहन के मुख योगबिचारी॥
प्रातै खात रहे दधि रोटी। को अब देत होइगो ओटी॥
कीन्हे चरित लालमन जोई। सुमिरिसुमिरिअबआवतरोई॥
निशि न नींद दिनलगतनभूखा। हन्तबदनब्रजपति कररूखा॥
गवन श्रवै पयतृण नहिं चरहीं। बछरनसहितसकलहुंकरहीं॥
बालक तरुण जठर सब लोगा। भये क्षीणतनश्यामबियोगा॥
हमआपनि किमिदशा बखानी। दीन्होंकाढ़िनयन निजपानी॥
ऐसे दुख देने को रहेऊ। तोकत दावा ते निरबहेऊ॥
इन्द्र कोपते नाहक राखा। गिरिहि छांड़िदेतेकरिमाखा॥
कठिन शोक निशि बासरकेरा। दीन लालकरि मधुपुर डेरा॥
जीवत सकल दरश के लागे। पुनि कबहूं देखब हरि आगे॥

कह्यो तात कब ऐहै भैया। कबमोहिं गोहरैहैं करिमैया॥
कब गहिकै दधि मथत मथानी। कबमँगिहैं माखन हठिठानी॥
एक दिवस मैं रिस बश बांधा। सोसुधिकरिदुखहोत अगाधा॥
कह्यो जाइ आवैं घर अपने। अबकबहूं नहिंबांधब सपने॥
माखन खात न बरजब रोसी। उरहन देत न सुनब परोसी॥
जलसुतारि जापतिकर जाना। तासु मातुसँग पठवब नाना॥
मैं जानत सुख तिन्हैं न होई। हठि राखतहवै हैं सब कोई॥
काह करों परबश भे ताता। कहुंकहुं गुणहुहोत दुखताता॥
शुकसारिक जो पढ़ते नाहीं। तौ कत परत पिंजरे माहीं॥
शब्द बेध शर नोन चलौते। अंध श्राप कत दशरथ पौते॥
रवि शशिजोनहिंकरतप्रकाशा। तौ संततकत फिरत अकाशा॥
जो न होत रघुपति के दाया। तौबनदुखकत सहतनिकाया॥
जोन लालको आवत जान्यों। तब देवैं ते बचन बखान्यों॥
जो रखती हौ हम पर नेहू। तो सुत पठइ हमारे देहू॥
जो कोइ कोटिन लाड़ लड़ावै। तदपि लाल हमते सचुपावै॥
तुम्हरे पुत्र सही सुनु माई। एकबार मुख जाइँ देखाई॥
यहिबिधि बचन कहत बहुभाये। तेहिक्षण नन्द खरिकतेआये॥
भेटे उठि उद्धव पुलकाई। लीन्हें निज आसन बैठाई॥
लागे बूझन कुशल सप्रीके। हैं बसुदेव देवकी नीके॥
नीके रहत कृष्ण बलरामा। कछुआगमनकहिनिनिजधामा॥
तोतल बचन बोलि सुखलागी। बड़ेभयेसुखदीन्हिनि त्यागी॥
हमहूं ते कछुबना न जाना। जगतपिताबालककरिमाना॥
कोमल चरण खरस अधिकाई। तहँ उनते हम गो चरवाई॥
उनवाहू में करेउ न रोषा। गुणगहिजुखमछिपाये दोषा॥
हरिकी बात हरीते बनई। थोरेहि में जरि उठते मनई॥

दो॰ नाम लेइ जेहि युवतिको नहिं सुहाइ सुनितासु।
राम जानकी के कहे तुष्टत तेहि पर आसु॥

यहिबिधि नन्द करतपछितावा। तब उद्धवअस बचन सुनावा॥
अहो नन्द यशुमति तुम दोऊ। शील सुकृत की मूरति होऊ॥
क्योंकि रामकृष्ण भगवन्ता। प्रणतपाल दुष्टन के हन्ता॥
तिनके चरणकमलचितुलायो। यहितेअधिकनकछुश्रुतिगायो॥
हरिहिं आपु सुमिरत हौ जैसे। तन मन धन वारण करितैसे॥
तुमते तात न बाहर वोऊ। बेचौ जहां बिकै तहँ दोऊ॥
जब तब बात तुम्हारी गावैं। कहत कहत गदगद ह्वै जावैं॥
चलत कहिनि पालागन बाता। उऋण न हमतुमते पितुमाता॥
प्रति पालन तुम कीन हमारा। होइहै युगयुग सुयश तुम्हारा॥
देखौ त्रिभुवन पति गिरिधारी। चाहत करुणा दृष्टि तुम्हारी॥
बातन होइ बोध केहि भांती। जाको रहै सकल सुख जाती॥
हरिगुण कहत भईनिशि नाशा। बोले द्विजअलिलीनिसुबासा॥
दीप जोरि गृह गोप लुगाई। लगीं मथन दधिहरिगुणगाई॥

दो० तब उद्धव वृषभान पुर चले रजायसु पाइ।
मारग में अवलोकि रथ मिलीं गोपिकाआइ॥

गिरिधर की अनुहारि निहारी। बोलीं तब गोपन की वारी॥
आप गवन इत कितते कीन्हों। जानिपरतमोहनसुधिलीन्ह्यों॥
बोले तब उद्धव हम आये। मधुपुर ते ब्रजनाथ पठाये॥
परम मित्र हैं कृष्ण हमारे। हम हैं उन के बहुत पियारे॥
सुनि सब बैठि गईं तेहि ठौरा। बोलीं कहौ कान्ह करब्यो रा॥
उद्धव नन्दनँदन हैं नीके। हम सबहिनके जीवनर्ज के॥
कब ऐहैं कछु कहिनि बखानी। शोभा शील गुणनकी खानी॥
गिरि अरिसुतरिपु पुरीबिताई। अजहूं नहिं आये सुखदाई॥
उद्धवहमसब श्याम बिहीना। बिकलरहतजिमिजलबिनमीना॥
निशिन नींद दिनअसननभावैं। नयनपलक समकलपबितावैं॥
हरि बिन सेज भयानक लागै। कारागार सरिस गृह जागै॥
शीतल मंद सुगंधित बाई। लागत मनहुं अग्नि ते आई॥

बिरह बह्नि सब अंग जरावत। जरि न जातलोचनजलनावत॥
हमते श्याम करीहै ऐसे। बधिक करैं पक्षिन ते जैसे॥
प्रथमें प्रीति आपही जोरी। पाछे नाव मांझ सरि बोरी॥
तुम ऊधो आये भल कीन्ह्यों। हम सब का अवलंबनदीन्ह्यों॥
सुनियत रहै संत परमारथ। करतरहत सोइ दीखयथारथ॥

दो० सजनस्वारथी नरन की स्थारथही तक प्रीति।
खगमृगजारअसारलखितजतसुथलसिखिरीति॥
बहुरंगी जित तितहि सुख यक अंगीकर अंत।
जिमिगणिकानिधरकरहत दहतसतीबिनकंत॥

तिमि ऊधो हरि हमको जानैं। श्याम चहैं मानैं नहि मानैं॥
सुनि ऊधो गोपिन की बानी। योग सँदेश न सकत बखानी॥
सुफलकसुतै परी कठिनाई। उत आज्ञा इत प्रेम अघाई॥
धरि धीरज पुनि काढ़ी पाती। बोले बांचि जुड़ावो छाती॥
हम ते नाहिन बनी बनाई। चितवत गली छुवतजरिजाई॥
आपु कृपाकरि बांचि सुनावो। श्याम मुखामृत बचन सुनावो॥
सुनि ऊधो तब बांचन लागे। लागीं सुनन बैठि सब आगे॥
गोपी सकल सुनौ मम बचना। भूलहु मति माया की रचना॥
जो कछु गोगोचर में आवै। माया कृत सो थिर न रहावै॥
छांड़िदेउ तेहि ते असनाई। निरगुण ब्रह्म जपहु मनलाई॥
पूरण है सब घट में सोई। कौन सो ठौर जहां नहिंहोई॥
पांच पचीस तीनि घट तेरे। पृथक रहत पुनि बिमलबसेरे॥
सो हम तुम तुमसे अरु मोसे। क्षणहूमात्र बियोग न होसे॥
आत्म आत्मसे हम प्रकटावैं। पालन करि पुनिनाश करावैं॥
रचत सकल निज माया जाते। कार्य अन्त पुनि कारण तातें॥
कारज तजि कारन मन लावो। जेहिते सकल परम पदपावो॥
निरमल नीर भरा तव नेरे। मरत पियासन तेहि बिनहेरे॥
तजि कुसंग येकान्त पसीजै। द्वादश संयम नियम करीजै॥

सूक्षम भोजन स्वल्प पियासा। करहुत्यागिबसु भोगबिलासा॥
पदुमासननिरमलकरि मनका। शोधत रहौ सदा निजतनका॥
पूरक कुंभक रेचक करहू। उलटि ध्यान त्रिकुटीको धरहू॥
सोह शब्द माहिं चित राखौ। मनते सकल कामना नाखौ॥
दश प्रकार अनहद सुनिपावो। कौतुकबिबिधदेखिछकिजावो॥
यहिबिधि योगज्ञान जबगावा। तब गोपिनअधिकौदुखपावा॥
दो० यथा बैद औषधि करै बिन पहिचाने रोग।
सो औषधि लागै नहीं उलटिबढ़ै तेहिशोग॥
तेहि अवसर इक मधुपतहँ आयो करि गुंजार।
बैठि गयो राधिका के चरण कमललखिसार॥
तब सब गोपी मधुपर ढारी। लगीं कहन ऊधो ते सारी॥
मधुकर तुम पगते उड़ि जाहू। श्यामशरीर निठुर सब आहू॥
पहुंचत तहां फूल जहँ फूले। सूखो लतन जात नहिं भूले॥
रूप रहसि सब गिरिधरकेरी। है रौरे में गुन्न न हेरी॥
आई बकी पियावन क्षीरा। डारिनिताहि मारि बलबीरा॥
सुपनेखा रघुपति पहँ आई। नाक कानतेहि लिहिनिकटाई॥
बलि बावनहि सुसर्बसु दीन्हा। तबहु तासु तन बंधन कीन्हां॥
ब्याहुकिहिनिहरिहरकागांसी। पुनिआपुहिमिलिठानिनहांसी॥
कोयल सुतहि काग प्रतिपालै। ऋतु बसंततेहि तजिउड़िचालै॥
उरगै दूध प्रीति ते प्यावै। उलटि अमी सो बिष ह्वै जावै॥
केचुलित्यागिनसुधिफिरिलीन्हीं। तैसे श्यामहमैं तजि दीन्हीं॥
यामें भूल न उन की भारी। कारेन की करनी है कारी॥
परगट जिन कीन्हें युग ताता। क्यों न कहैं यहिबिधिकोबाता॥
तथा तुमहुं कछुअघटित नाहीं। रूप छुड़ाइ गहावत छाहीं॥
ऊधो श्यामहिंलाज न आवत। तेहिपर सुनियत दक्षकहावत॥
हम का ज्ञान योग लिखिभेजा। आपु रहतकुबरी की सेजा॥
जिमि गणिकानिजकस बैठानै। औरेन ते बैराग बखानै॥

तेहि के बचन कहौ को मानै। तैसे श्याम देत हैं ज्ञानै ॥
यक तौ अंधकूप में डारी। हेरत पंथ न परत निहारी ॥
तेहिपरतुम निजज्ञान सुनावा। मानहुं मुख ऊपर ते तावा ॥
ऊधो तुमहौ चतुर सुज्ञानी। देश काल लखि कहिये बानी ॥
जाके मलै अनल सम तावै। तेहिके कहा गरल लगवावै ॥
हम बनितन को चाहियभोगा। तिनकाआइ सिखावत योगा ॥
धरत मराल न सुत शिरमेरू। जिन ते चलै न पगभरिसेरू ॥
ऊधो कछु तुम्हरी न लगाई। संगति केर दोष लगिजाई ॥
रस लम्पट गिरिधर न लवारा। क्यों न होउतिनसंगखुवारा ॥

कुं० लम्पटकी संगतिकिहे द्वादश गुण नशि जात।
प्रथम सत्य पुनि स्वच्छता अरु संयमकी बात ॥
अरु संयम की बात मौन ब्रत माया जानौ।
सम दम दया सुबुद्धि सहन शीलता पिछानौ ॥
प्रभुतायश नहिं रहतबसतहिरदय महँ कम्पट।
कपिलबचनबुधिजानिकरतनहिं संगतिलम्पट ॥

दो० जो कहौ ऐसे पुरुष ते क्योंतुमकीन्ह्यों प्रीति।
कर्म लिखा तेहि का करै जरै सलभकी रीति ॥
प्रेमिहिंमरन न लखिपरै करैहरषि तन अर्प ॥
जिमिगजकुरँगपतंगअलि झषपिकपरिवासर्प ॥
मित्रहि चैन न मित्र बिन कैसो करै बिगार।
जिमि गृहजारैअग्नि पुनि होतअग्निकोप्यार ॥

बोली अपर सखी सुनि लेहू। नाहक दोष श्याम कर देहू ॥
उन में कछु लंपटता नाहीं। प्रीतिपाय परबश ह्वै जाहीं ॥
तदपि रहतनिरलिप्त बिशेखा। पथ लहियमुना में तुम देखा ॥
जो कहो अबकाप्रीति न हममें। रहतनकोउ इक रसहरदममें ॥
जो कोइ है प्रभुता श्रीवानै। तेपर बेदन सुनै न जानै ॥
देखौ शेष धरे महि भारी। सोये तेहिपर जाइ मुरारी ॥

अब नँद नन्द भये महराजा। जो कछु करैं उन्हैं सबछाजा॥
दिनप्रतिपावकसरिससोहावन। बोली अपर सखीयहिभावन॥
प्रभुता की कछु लाग न होई। चेरी संग गई मति खोई॥
कैसो चतुर होइ किन कोऊ। नीच संग करि बिगरतसोऊ॥
परम प्रबीन केकयी रानी। चेरिसंग तै मति बौरानी॥
गृह जलगद पदपवन समाना। पाइ कुयोगिनको बिनसाना॥
ऊधो ब्रह्म सबै तुम कहेऊ। अबहीं भयो कि आगेहुरहेऊ॥

कुं० ऊधो जब जब पापते उठत धरणि अकुलाइ।
तबतबक्योंसुरमुनिसकल हरिहिपुकारतजाइ॥
हरिहि पुकारत जाइ आपुकिन धरिधरि रूपा।
हरैं बिश्व को भार होइँ जो ब्रह्म स्वरूपा॥
तेहि ते बाद बिवाद त्यागि कहिये पथ सूधो।
बिनप्रभु सेवक भाव तर्‌यो भव निधिको ऊधो॥
मायाबाद मदांधकरि भूषित भयो जेहिज्ञान।
सोहँअस्मि ब्रह्मसो पुनि पुनि करत बखान॥
पुनि पुनि करत बखान कुत्र ऐश्वर्य्य मतीते।
कुत बिभुता कुत भूमि कुत्र सरबज्ञ गतीते॥
तहिते ब्रह्म न जीव अहौ तुम सुख बश काया।
बुन्द कहै मैं सिन्धुहोइ किमिबिनहरि माया॥

दो० जो कहौपृथ्वीसम बरम्ह घटसम जीव अनेक।
ताहि लखौ वा ना लखौ अन्त होब सबएक॥
एक भयो तौक्याभयो पुनि नहिं गदी कुखाल।
तेहि ते मायाबाद तजिभजो नन्द को लाल॥
ऊधो तस्कर कयद में परो कहै हौ भूप।
तौ का छूटै करम बश त्यों तुम ब्रह्म स्वरूप॥
ईश्वर आपु स्वतंत्र है जित चाहै तित जाइ।
सर्ब शक्ति जाके बिषे भाव सरिस दरशाइ॥

सोहं सोहं जपत हैं जहँ तक अग जग जीव।
राम कृष्ण सुमिरे बिना लहैं न कोई पीव॥
ऊधो तुम्हरी बात इमि जिमि रोगी हितमाड़।
जो जेंवत हैं सेर भरि सो किमि होवै चाड़॥
कर्म योग तब तक करै जबतक प्रेम न होइ।
प्रेम पाठ पढ़ि क्यों पढ़ै कक्का किक्की सोइ॥
ऊधो तुम्हरी बात सुनि भयो न हमरे रोष।
अपनोइ खोटो दाम तौ परखैये का दोष॥
बोली अपर सुना हम ऐसा। कहत श्याम हैं ब्रजधौं कैसा॥
गोपिन को सुनि नाम लजाहीं। चित्रधेनु लखि सकुचतआहीं॥
भूलि गई माखन की चोरी। खात रहैं घर सकलढिढोरी॥
जो यह बात रहै मन माहीं। तौकतकिहिनिरहसहमपाहीं॥
प्रथमें ज्ञान बिराग सिखावत। जेहिते कछु मनहूं में आवत॥
जब हम रँगी श्यामके रंगा। तबलखि पठवा ज्ञान प्रसंगा॥
मधुकर को तजि सुरसरिबारी। कूप खोदि जल पीवै खारी॥
गो तजि आक दुहै को बौरा। को तजि पारस मांगै कोरा॥
कोतजिश्यामसगुण मणिचारू। खनतफिरैकलिअगुणपहारू॥
रूप रेख कछु जाके नाहीं। तौ का करब शून्यके माहीं॥
अगुण सगुण युग ब्रह्मकहावत। सोतेहि भजतजाहिजोभावत॥
दो० यथा विरोचन कुमुद दोउ हैं बिराट के नैन।
काहुइभावत दिवसपति काहुइ शशिमें चैन॥
तेहि प्रकार हम श्याम उपासी। हैं सबहींबिधि उनकी दासी॥
मुक्ति भुक्ति हमको नहिंचहिये। प्रेम भक्ति किरपाकरि कहिये॥
जो कल ज्ञान कहे बिन नाहीं। तौचलिजाउ बनारस माहीं॥
हमरे तौ मन एक रहावा। गयेउ श्यामसँगबहुरिनआवा॥
को अब अगुण ईश अवराधै। को यकान्त में आसन साधै॥
तलफत दृगबिन लखे किशोरा। को चितवै भृकुटी की ओरा॥

जरत रहत निशिबासर अंगा। कीन्हेबिनगिरिधरण प्रसंगा॥
तुमजो कहतहरि हिरदयमाहीं। शीतल हमैं करत कतनाहीं॥
ब्रह्म अंश कैसे हैं कान्हा। मातै भुवन वोदर में नान्हा॥
मुख पसारि देखरावत भयऊ। तबका ब्रह्म प्रथक रहिगयेऊ॥
कारण ते कारज है नीका। यथा कंद ते दररस फीका॥
कारण अगर रहत हैं संगा। कारजअतर बिकत सोमहँगा॥
तुमहीं कारण में मन लावो। हमैं श्याममें प्रीति दृढ़ावो॥
जोहरितजिकरिघासहि चरहीं। तौ हमहूं जप योगहिकरहीं॥
भदाहि हंस मीनतजि मोती। तौहमहूं सब ध्याइय ज्योती॥
जो रण सूर तेग तजि देवैं। तौ हमहूं तुम्हरो मत लेवैं॥
अडल बिहंगमहिं बैठें हारी। तौ हमहूं निर्गुण मतधारी॥
जो चातक सर कर जल पावैं। तौहम ब्रह्म श्यामतजिध्यावैं॥
पशु पक्षी निज टेकहि करहीं। हम मानुष कैसे परि हरहीं॥
ऊधो तुम बिरही हौ नाहीं। नहीं दास नहिँ मित्रनमाहीं॥
बिरही मीन जलहि अनुरागै। बिछुरत प्रीतमके तनु त्यागै॥
दास भाव पपिहा में जाना। बिनस्वाती जल करै न पाना॥
गरजि तरजि रबि डारत मेहा। तदपिबढ़तदिनप्रतिनवनेहा॥
मित्र कमल बिन लखे तमारी। तुरत जातहै सम्पुट मारी॥
मधुकर हम चात्रिक सम अहईं। बिना श्याम हमऔरनचहईं॥
या तनको बिधि फेरि बनावै। तबहूँ मोहन मोहन लावै॥
जो तुच काढ़ि दुंदभी साजै। सोऊ लाल लालकहि बाजै॥
गाड़ि देइ मृतिका है जामैं। बिरछ फूल फल उचरै नामैं॥
मुये अंग की है यह रीती। जीवत किमि छूटतहै प्रीती॥
बोली अपर भली बिधि हेरे। कठिन लोग हैं मधुपुर केरे॥
जिनकी संगति परि नँदलाला। सीखत भयो योग कर हाला॥
हमहूँ को आये बहकावन। फूंकन चहत सुमेरु उड़ावन॥
मधुकर आपन योग दुरावो। हम पूंछैं सो बरणि सुनावो॥

ब्रज में कब ऐहैं बनवारी। कब हरिहैं चूनरी हमारी॥
कब दधि दान मांगिहैं रोंकी। हमहूं अब हठकरब न कोकी॥
करिहैं रहस केलि अब आई। खैहैं माखन कबै चोराई॥
कब बजाय मुरली मन म्वैहैं। कब दुरिके हमरे घर स्वैहैं॥
नेहिसुखहित हमभइन कनौड़ी। सो सुख अब लूटत हैलौंड़ी॥
कीन्हिसि कौन तपस्या भारी। ज्यहितेपाइसिपतिगिरिधारी॥
कब अब सुनब हमारे लागी। दीन्हों श्याम कूबरी त्यागी॥
कहियो मधुप श्याम ते जाई। कहाँ गई ब्रजकी चतुराई॥
किहे सनेह सयानप दुक्खा। रहतनसुमतिसयानपसुक्खा॥
हम युवतिन कहँ लिखतबिरागा। आप परे चेरी के रागा॥
अपना गुरू भये संयोगी। केहि प्रकार हम होई योगी॥
जो गुरुहीन निजमद्र न चीन्हा। तिनशिष्यनकोकबसुखदीन्हा॥
जो गुरु कुटुंब जाल में बाँधे। तौ शिष्यकेकिमि काटै फाँदे॥
जोगुरु काम क्रोधमें जरई। तौशिष्यको कबशीतल करई॥
जोगुरु है तृष्णा बश लोभी। सोशिष्यकोकिमिकरैअछोभी॥
जोगुरु है पाथर की नावा। सो शिष्यकोकबपारनपावा॥
जोगुरु को कछु पढ़ि नहिं आवै। तोशिष्यको केहिभांतिपढ़ावै॥
ज्यहिते आपु दशापर आवैं। तब हमको लिखिबोगपठावैं॥
ज्यहिते कछु लागै उपदेशा। करहिं सकल योगीकर भेषा॥
जोजल जरन आपही लागै। तौतजि मीन कहांको भागै॥
लखि गोपिन को प्रेम प्रमाना। बिसरि गयोउद्धव को ज्ञाना॥
करत भयो गुरु गोपिन कैहां। पाइनि एक अनन्यब्रत तैहां॥
रहे मासषट तिनके पासा। देखत डोलै कुंज बिलासा॥
भैमधुबन की प्रीति बहोरी। बोले गोपिन ते करजोरी॥
तुम सब अहौ प्रेमकी खानी। ज्यहिबिधिहमउतकर्षबखानी॥
चातक मीन चकोर मृगाऊ। धारणकिहिनितुम्हारसुभाऊ॥
हमते जबतब प्रीति तुम्हारी। वर्णत रहैं मुदित बनवारी॥

उद्धव हमतन कोटि बनाई। करैं गोपिकन की सेवकाई॥
तबहूं कछु उद्धार न मानी। ऐसी मम सेवा उन ठानी॥
ज्ञानकेमिसि तिनमोहिं पठावा। झाईं तजि हरिरूपहि पावा॥
अब करि कृपा देहु बर एहू। बढ़ै कृष्ण पद नित नवनेहू॥
खग पशु बिटप लता तनु पाई। जन्म जन्म ब्रजबसियेआई॥
तुम्हरे चरण कमल की धूरी। प्रापत होइ भागते भूरी॥
दो० जो मैं कीन्ही ढीठता हरिको आयसुमानि।
करेहु क्षमा अपराधसोअनुगआपनोजानि॥
उद्धव तुम जानत सुख दायक। हमहैं कौन बड़ाई लायक॥
लोक वेद तजि करतब ठाना। त्यहितेनिन्दतसकलजहाना॥
तुमहौ तात सराहन योगा। क्षमावन्त सबभांति बिशोगा॥
हम अहीर बहु भांतिन केरे। कहे कठोर बचन बहुतेरे॥
तुम्हरे माप न तनकहु आवा। धन्यधन्यजननी जिनजावा॥
उद्धव कृपा श्याम की चाही। निकटहुदूरिउभयभलआही॥
दो० बन बरही बारिद बियत लक्षान्तर रवि पद्य।
बिलखकुमुदशशिसुखलहतलखिसनेहनिजसद्य॥
बिन सनेह उप दूरि बिशेषी। युगअंगुलश्रुतिपरत न देखी॥
चिरंजीव रहैं दोउ भाई। मधुपुर करहिं राम सुखपाई॥
उद्धव हमरे दोउ कर लाडू। मिलैतौअनिभलहरितजिआडू॥
जो न मिलब तबहूं भल जानौ। भयोसुयशतिहुंलोकपिछानौ॥
कह हम जाति बरण कुलहीना। श्रुति मर्य्यादसोउतजिदीना॥
कहँ हरि श्रीपति पालक सगरे। सोसबबिधि कहवावत हमरे॥
इतउत फिरिफिरि ब्रजहीभावै। जिमि परिवा छुतुरीपरआवै॥
सत्य बचन तब झूंठ न आहीं। हरिनिजजनबशसदारहाहीं॥
कह उद्धव अब आज्ञा दीजै। तौहम गमन मधुपुरी कीजै॥
तीनि दिवसकर आयसु भयऊ। त्यहिकेबीतिमासषट गयऊ॥
हमरी सुधि न बिसारब देवी। सब बिधिजानि आपनो सेवी॥

बिछुरन बिरह सबनके जागा। कीन्हेनिबिदासहितअनुरागा॥
रथचढ़िचलिनिजआश्रम आये। समाचार यदु नन्दन पाये॥
पठवत भये दूत यदुनाथा। आये भवन तुरत त्यहि साथा॥
भेंटे श्याम सखै मनलाई। बूझतभे ब्रजकी कुशलाई॥
सुमि उद्धव सब बातप्रकासी। तुमबिनदुखितरहतब्रजबासी॥
यकदिन आओ दरश दिखाई। सुनत बचन बोले यदुराई॥

गीतिकाछंद॥ यदुनाथबोलेसुनहुउद्धवधोटाबासीजेअहैं। तिनपासमैंनितरहतहौंवेनेकुन्यारेनारहैं॥ ममश्वासवेदनकीऋचाहैं गोपिकनकेदुखकहा। सुनिहैंजेकहिहैंचरितितिनकेनाशिहैंसंकट महा॥ जोकहौंरहतबियोगक्यहिहितसुनहुसोउनिकामहू। यक दिनगयोयकसखीघरहौंद्वाररासिसिदामहूं॥ तहँआइप्यारीच-हतप्रविशोसखारोंकतरिसठई। नहिंमिलहिंहरिशतबर्षतोहिं त्यहुंकहीसोइसोईभई॥

सो० यद्यपिहौं तिन तीर तदपि न देखत शापबश।
धरिहौं बिबिधि शरीर करनचरितबहुभांतिके॥

दो० उद्धव गोपिन केर कछु कह्यो ज्ञान दृढ़नेम।
पढ़ै सुनै रघुनाथ तौ बढ़ै इष्ट पद प्रेम॥
प्रेम बिना पावै नहीं प्रीतम को दीदार।
ताते जन रघुनाथ तें करु उद्यापन सार॥
प्रेम नवारी ऊपजै दिये न आवै दाम।
प्रेम जगत रघुनाथ तब जब सुमिरै हरिनाम॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथ दासरामसनेहीकृतकृष्णायनगोपीउद्धवसम्बाद बर्णनोनामनवमोऽध्यायः॥ ९॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपगिरासुखदानि।
दशमस्कन्धभागवतकी अबकहौंकथाबखानि॥

गये कृष्ण सुफलक सुत गेहा। पूजालहिकहि सहित सनेहा॥
चाचा तुम हस्तिन पुर जावो। बोध देय कुंती को आवो॥
असमय परे पांडुसुत छोटे। परबशपरिसुखलहत न पोटे॥
चले पांडु घर आये सोई। देखि मिली कुन्ती उठि रोई॥
आसन देत भई अनुरागी। पूछनं गति नैहर की लागी॥
नीके हैं पितु मात हमारे। भाभी भ्रात कृष्ण बल प्यारे॥
करत कबहुं सुधि भाइन केरी। देत त्रास धृतराष्ट्र घनेरी॥
सुनि बोले अक्रूर बिहारी। सुखीसकलसुधि करततिहारी॥
कहिनि कृष्ण फूफू से कहियो। चिन्ता कछुचितमें जनिगहियो॥
आवतहैं हम कछु दिन माहीं। चली गयारि तिनकी तबनाहीं॥
पुनि धृतराष्ट्रपासचलि गयऊ। सुहृद बचन जसबोलतभयऊ॥
पाण्डु मरे तुम गद्दी पाई। पालहु सबहिँ एक सम भाई॥
चले अनीति अयश जग पैहौ। देह तजे ध्रुव नरक सिधैहौ॥
करै जो पाप सुमति भ्रम पाई। त्यहि फलहोत ताहि दुखदाई॥
अपर जे अहैं कुटुम्बी सारे। अन्त रहत हैं सबही न्यारे॥
खलभल पापपरत शिरअपने। त्यहिते पापकरेहु जनि सपने॥
इमि बहु कह्यो तासु हितबानी। सुनि धृतराष्ट्र न हिये समानी॥
बोला गर्वे अन्ध बेइमाना। होई जो करिहैं भगवाना॥

दो॰ यहिबिधिसुनिसमुझायपुनिपँचहुंनकादुखहेरि।
बिदा भये धृतराष्ट्र ते आये मधुपुर फेरि॥

समाचार यदुपतिहि सुनाये। त्यहिक्षण अपरविघ्नझुकिआये॥
रथ चढ़ि उभय कंसकी बामा। मगध देश आई पितु धामा॥
बिबिधि भांतिते रोदन कीन्हा। जरासंधसुनि धीरज दीन्हा॥
यदुन सहित सबहरिबलरामा। पठवों कंस निकट तब नामा॥
अस कहि दल तेइस अक्षौनी। लैकै चला प्रबल है होनी॥
अक्षोनी ह्वै भांति बखानी। लघु दीरघ सोउ दीजैजानी॥

लघुअक्षौहिणी प्रमाण॥

कुकुंभीछंद॥ यकइससहसआठसौसत्तरिरथीहोइँजहंजानौ। तेतनेहीगजनाथ अश्वपति छांछठिसहसपिछानौ॥ एकलाखनव सहसतीनिशतसाढ़ेपैदरजोई। जनरघुनाथबिचारिकहततबएक अक्षौहिणिहोई॥

दीर्घअक्षौहिणी प्रमाण॥

दो० अयुत नाग त्रै अयुतरथ योधा लख दशलक्ष।
तुरंगकोटिछत्तिसकहत पदचरयहदिरघक्ष॥

आइ मधुरपुरी लीन्हिसि घेरी। सुनिपहुंचे हरिबलत्यहिबेरी॥ देखतै कहन लगी कटु भावा। बंध बधिकसुनि बचनसुनावा॥ तात सुनहु तुम नीति निधाना। हमसमक्षमावन्तनहिं आना॥ निज बहु बार कंस के टारे। अपने पाप गये पुनि मारे॥ पर अपकार किहे दुख भारी। खनतगाढ़ तेहि कूप तयारी॥ त्यहि पर आपु चढ़े अति रोसी। हानिछांड़िकछुलाभ न होसी॥

दो० कीन्हिकुनह बिनगुनह जिन तिनसुख सुनानपाव।
सहसबाहु सुरनाथ भृगु त्रै सुत नृग राव॥

त्यहिते स्वपुर जाहु फिरिअबते। बालक मूढ़ साधु भय कबते॥ शूर सुमुख नहिं सुयश सुनावैं। पुरुषारथ करि प्रकट देखावैं॥ जाना काल निकट तव आवा। तातै बोध बिपर्य्यय पावा॥ कह हलधर यहसब कोइजानै। लातक मनइँ बात नहिंमानै॥

कुं० सुर तुष्टत हैं भक्तिते द्विज तुष्टत लखि दान।
सुहृदतुष्ट उपकार लखि खलतुष्टत पदत्रान॥
खल तुष्टत पदत्रान प्रीति ते तुष्टत नारी।
सेवावश शुचिस्वामि साधुआदर बशभारी॥
नृपतुष्टतगुणगणकथनरिपुतुष्टतभुजबलप्रचुर।
त्यहिते यहि परतोषिये समरयुद्धकरिसुरेसुर॥

सुनत जरासुत उठा रिसाई। डारहु मारि सैन कहँ राई॥

चहुंदिशि घेरिलिहिनिरिपुकैसे। रबिहि धूम धनपावक जैसे॥
लागे चलन बिबिधि हथियारा। शक्तिशूल असि बान कुठारा॥
इतउत भिरतगिरन कोइलागे। कोइभटमुरत जुरतकोइआगे॥
चढ़ी अटारिन पुर नर नारी। लखिलखिशोचकरैंअतिभारी॥
कोइक्षण इमपि खेलाये योधा। पुनि दोउबन्धु करतभे क्रोधा॥
क्षणमें दलि सबसैन सोवाई। जरासन्ध को दीन बचाई॥
ज्यहिते बहुरि लयावे पापी। बहीरुधिरकी सरित अनापी॥
रथ सुरेथ भुज मीन समाना। शिरकच्छप गजग्राहप्रमाना॥
कचसेवार सम धनुष तरङ्गा। आयुध परे बिटप जनु भङ्गा॥
भवँर चर्म्म मणि कंकण झारी। प्रकटीसरिबलकृष्णबिहारी॥
दै दै ताल योगिनी नांची। प्रथमन की परवीसी माची॥
गृहप गीध गोमायक लोलैं। छांड़त मूड़ कपाली डोलैं॥
इमिदलदलि प्रभु मथुरहिआये। मागधसूत बिजयगुण गाये॥
बरषि सुमन सुरपुर नर नारी। बहुबलिकरि आरती उतारी॥
मगधाधिप की लूटि जो आई। सोसब यदुपति पास पठाई॥
नृप जोजाहिं दीन सोलयऊ। मुखियामुखसमचहीसोभयऊ॥
जरासन्ध निज नगरहि आवा। दलबटोरिपुनिलरनसिधावा॥

दो० तेइस तेइस क्षोहिणी लै लै यकइस बार।
आवाचढ़ि बलकृष्ण सब करतभये संहार॥

यह यश कालयमन सुनिपावा। तीनि करोरि यमनलै धावा॥
तब बिश्वकर्मा ते यदुराई। सागर बीच पुरी बनवाई॥
द्वादश योजन मधि हेमालै। त्रिबिधिबतासकालतिहुंचालै॥
चौहट हाट सुगन्धन छिरिकी। लागे जहँतहँ फाटकखिरकी॥
दामिनि सो पताक फहराहीं। जलथलबरणिजातसोनाहीं॥
बन उपबन बाटिका अनेका। रतन सुसर्ब एक ते एका॥
सोवत यदु सब तहां पठाये। अपना राम यमनपहँ आये॥
कृष्णै जब देखिसि निजआगे। काढ़ि खड्ग धावा प्रभु भागे॥

धवलागिरि कन्दर में जाई। मुचुकुन्दहि पटदीन ओढ़ाई॥
आपु रहे छिपि सो चलिआवा। पीताम्बरलखि चरणचलावा॥
दो० जोनहिं जानत जासु गुण सोशठ निदरत ताहि।
सबजगपूजहियतिहिजिमि श्वानदेखिधरिखाहि॥
लागत लात खोलि दृग दयऊ। कालनेमि तुरतहिजरिगयऊ॥
दरश दीन तब यदुपति आई। जटितबसनभूषण छबिछाई॥
अद्भुत रूप निरखि नृप बोला। नाथअहौ तुमकौन अमोला॥
की त्रय देवन में कोइ होऊ। की रबि अग्नि चंद्रमा कोऊ॥
पूजन के तुम योग गोसाईं। मैंहौं निशि दिन तवशरनाईं॥
मोहिं जगाय जरा कोइ प्रानी। भयोहमार परम हित जानी॥
कह प्रभु हे नृप प्राण पियारे। जन्म कर्ममें बहुबिस्तारे॥
नाम अनंत न संख्या कोई। गनत थके बहु कबिता सोई॥
मेरेउ गति गनने की नाहीं। कहतसुनतऋषिभवतरिजाहीं॥
अब जनहित भंजन महिमारा। भयों आइ बसुदेव कुमारा॥
कंस आदि बहु शत्रु निपाते। यमनेशहि लायो तेहि नाते॥
रिपु जराइ पुनि तुम्हैं निहारेंउ। एक पन्थ द्वै कारज सारेंउ॥
अब बरु मागु रुचै जो तोहीं। नाथ भक्ति दीजै निज मोहीं॥
मैं निद्रा बिषया सन करिकै। बादि बयस खोई अब तरिकै॥
तब प्रभु भजन भाव समुझाई। पुनि बद्री बनदीन पठाई॥
कह नृप कौन रह्यो बड़ भागी। बोले व्यास सुवन अनुरागी॥
नृप मुचकुंद अवधके जानौ। पर उपकारी एकहि मानौ॥
कीन्हि देवतन केरि सहाईं। बहु दिन गये रहा कोइ नाईं॥
इन्द्र मुदितहोय कहबर लीजै। बोल्योमहिप मुक्तिम्वहिं दीजै॥
भूपति मोक्ष कहां हम पावै। एतौ हरिके पास रहावै॥
तौ फिरि नींद घनेरी देहू। जरै जगावै सो सुनि लेहू॥
सुनितिन एवमस्तु कहिदीन्हा। तबते यहां शयन इन कीन्हा॥
दो० निद्रहि कस सुख सेजमहि तृषितहि कहघटसुद्धि।

कामिहिकसभय लाजजग क्षुधितहिकसबलबुद्धि ॥
सोवत काल यमन पग मारा। त्यहिअघ अधमभयोजरिछारा॥
पुनि प्रभुगे मधुपुर मिलिदोऊ। मारे मुसलमान सब सोऊ॥
तेहि क्षण जरासंध चढ़ि आवा। रामकृष्ण सो दल लखिपावा॥
लरे कछुक पुनि भागत भयऊ। गौतम गिरिऊपर चढ़िगयऊ॥
गेरा योजन केर निहारी। जरासंध तब दीन प्रजारी॥
निकरि द्वारकै गे दोउ भाई। ह्वैगा भूधर भसम बनाई॥
जरिगे जरासंध असजाना। आवा बहुरि भवन हर्षाना॥
इहां सकल यदुबंशिन काहा। चहीकीन हलधरकर ब्याहा॥
शहर अरुणती रेवत भूपा। तासु सुता रेवती अनूपा॥
ताके संग होत भा ब्याहू। वेद विधान सहित उतसाहू॥

दो० सँस्कार जाकर जहां मिलत सो ताहि विशेषि।
त्रेता की कन्या बरी द्वापरमें बर लेखि॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघु
नाथदासरामसनेहीकृतकृष्णायनजरासंधसमर
बर्णनोनामदशमोऽध्यायः॥ १०॥

दो० सुमिरि रामसिय संतगुरु गणपगिरा सुखदानि।
नीतिसहितरुक्मिणिहरणहरिकृतकहतबखानि॥

अबबिवाह रुक्मिणिकर सुनहू। रमतसुभये कृष्ण हरिउनहू॥
कुंडिनपुर भीषम नृप हेरे। जनमा एक सुता तिन केरे॥
रुक्मिणिनामज्योतिषिनराखा। सबगुणधामश्यामपतिभाखा॥
दिन दिन कन्या बर्द्धत कैसे। शुक्लपक्ष कर चन्द्रा जैसे॥
खेलन संग सखिन के लागी। इकदिन यकबोली अनुरागी॥
रुक्मिणि तें नित खेल बिगारा। लुकतिकिठौर करतउजियारा॥
सुनि हँसि गृहगमनी सुखपाये। त्यहिक्षणतहँनारदऋषिआये॥
देखि रूप गुण मनमें जाने। कृष्णचन्द्र से आइ बखाने॥

कुंडिनपुर महँ भीष्म कुमारी। रुक्मिणिहै सो योग बिहारी॥
तब ते बसी हृदय पति सुरकी। सुनहुंकथा पुनि कुंडिनपुरकी॥
इकदिन सुयश याचकन गावा। कृष्ण केर भूपति सुनिपावा॥
तबनिजभवनगवावत भयऊ।सुनिरुक्मिणिनिजउरधरिलयऊ॥
करत भईं संकल्प अनंगा। बरिहौं मैं इनहीं के संगा॥
इक दिन भीषम देखि बिचारी। भई बिवाहन योग कुमारी॥
सब भाइन ते पूछेसि बोली। बरियेकाहि रुक्मिणीखोली॥
तब सब लोगन भूप गनाये। नाना देशन के नहिं भाये॥
तब छोटा बालक नृप केरा। रुक्म सेन बोला यहि बेरा॥
तात रुक्मिणी कृष्णहिं दीजै। नवल नात बसुदेव ते कीजै॥
सुनिनृपसहित सकल पुरबासी। बोले बात कही इनखासी॥
सेवक सुत बड़ छोटहु जानी। हितकी बात कहै सो मानी॥
आदि पुरुष जिनके घर जनमें। मारिनि कंस असुरबहु बनमें॥
को मिलिहै इनते बल भाई। सुनि बोला बड़ पुत्र रिसाई॥
बोलहु बचन सँभारि सुनीती। जानत तुम न कृष्णकी रीती॥
षोड़श बर्ष नंद के राहा। तब अहीर सब काहू काहा॥
आंढ़ी कामरि गाय चराई। जातिहु तासु न जानी जाई॥
कोऊ नन्दकेर सुत गावै। कोई यदुपति केर बतावै॥
अबतक भेद न काहू पावा। यहधौं कृष्ण कौनको जावा॥
प्रभुता वेस न लेशमें बासी। उग्रसेन की करत खवासी॥
दा० तिनकेसंग बिवाह करि कहौ मिली फलकौन।
लायकते कीन्हों चही बैर प्रीति अरुगौन॥
लोभसो भल जहँफलअधिकाई। चाटे ओस पियास न जाई॥
नगन न्हाय सोकाह निचोवै।ज्यहिधननाहिंसोकाकोउखोवै॥
त्यहिते भूप चँदेली केरा। है शिशुपाल प्रतापी हेरा॥
ज्यहिघर परम पराते गादी। आवत होत राज्य नहिंबादी॥
ताको ब्याहि रुक्मिणी दीजै। कृष्णकेर अब नाम न लीजै॥

सुनि नृप सहित लोग पछिताने। रहे साधिचुप सकल डराने॥
सबल शत्रु नृप नीच गोसाईं। इनते हठ कीन्हें न भलाई॥
मूरख ते न कही हरि गाथा। गिरि खोदै परै पाथर हाथा॥
अस मनगुणिगमने कहि बीसा। जबरकि राह कहतफुरशीसा॥
तब तहँ रुक्मबोलि बटुलीन्हा। लगनसोधाइपठइपुनिदीन्हा॥
जाइ बिप्र शिशुपालहि दीन्हा। टीका बड़े भाव ते लीन्हा॥
दो० यदपि कह्यो बहु भीष्म नृप चह्यो कृष्ण को देन।
तदपि न बूझेउ बैर थल लालच ग्रसित सुखेन॥
तब शिशुपाल व्याह हितफूली। लोक वेद बिधि करीससूली॥
दै कर भेंट बिदा करि ताही। न्यो त्यो बड़े बड़े नृपचाही॥
आइ बिप्र भीषमै सुनावा। बड़ी धूम ते आवत तावा॥
बेगि व्याह की करहु तयारी। तुरत गुणी जनलीन हँकारी॥
अति बिबित्र माड़ौ तनवावा। मंगलगान सकल पुर छावा॥
एक सखी बोली मृदु बानी। रुक्मिणि भई बड़ी तुमरानी॥
अस सुनि कहत महीप कुमारी। मन वचकर्म मोपतिगिरिधारी॥
क्षिप्रहि बिप्रबोलि यकलीन्हा। लिखिकै पत्र तासुकर दीन्हा॥
दीजै जाइ कृष्ण के हाथा। बहुरि उन्हैं लायोनिजसाथा॥
तौमैं बड़ तुम्हार हित मानौं। रौरे दीन कृष्णपति जानौं॥
यह सुनि चला द्वारकै आवा। कृष्णचंद्र को पत्र देखावा॥
महाराज सुनि सुयश नवीना। तबते मैं तुमका पति कीन्हा॥
मिलन केर आशा दृढ़ भावा। वेदनहूं याही बिधि गावा॥
जाकर प्रेम सत्यहै जामें। सोत्यहिमिलत न संशययामें॥
अब म्वहिंलेनचहतशिशुपाला। जिमिमृगपतिकरभागशृगाल॥
त्यहिते सत्य बचन अविनाशी। कीजै मोहिं आपनी दासी॥
जोनहिं लेहौ खबरि हमारी। तौतन त्यागब शपथतुम्हारी॥
दो० जिमि रघु रक्षी सुरभि बन रक्षी मृग पति मेख।
त्यहिप्रकार म्वहिंरक्षिये प्रणतपाल प्रभुलेख॥

ऐसे बचन बांचि बनवारी। आवा भरि नयनन में बारी॥
तुरत उग्रते आयसु लीन्हा। रथचढ़िगमनसहितद्विजकीन्हा॥
पहुंचे जब कुंडिन पुरजाई। उतरे भूपति की फुलवाई॥
त्रिभंगीछंद॥ देखीबनवारीजनुतपनारीअचलअगारीथिरन रहैं। परिरहतदिगम्बर पुष्पवतीबरनिरखिरूपनरमोहलहैं॥ लहैगर्भितगर्भैंदिनप्रतिअर्भैंअर्पतसर्बैंपर्सकरैं। परसतपतिपावैं तदपिसोहावैं सवतिनभावैंभाग्यबरैं॥बोलहिंबहुबोलानिजनिज टोला धरिधरिचोलाबिपुलसखी। श्यामहिंजनुसारी रहीहँका रीहर्षितप्यारीप्रेमलखी॥
इहां रुक्मिणी करत बिचारा। अजहूं नहिं आये करतारा॥
पुनि पुनि चढ़ि महलों परजावैं।चहुंदिशिचितैंविकलफिरिआवैं॥
इतने में द्विज आइ बखाना। मनहुंलह्यो जलशालिसुखान॥
प्रमुदित ह्वै दीन्ह्यो बरदानू। जाहु सदा रहिहौ धनवानू॥
बहुरि कह्यो हरिते उरधरियो। देवी पूजन में म्वहिं हरियो॥
पाछे ते आये बलदेऊ। छप्पन कोटि यादवा तेऊ॥
सुनिमहिपालमिलनचलिआवा। सोसबहाल रुक्मसुनिपावा॥
बोला नृपते ऐसे दिनका। कौने इहां बोलायो इनका॥
जहां जात तहँ करत बखेरा। भीष्मकहा कछुमोहिं न बेरा॥
तिसरे पहर नगर दोउ भाई। आये लखिकहैं लोग लोगाई॥
जस गुणरूप तैस सनबंधा। जिमि सुठिसोनेमाहिंसुगंधा॥
इनके दरश माहिं सुख जैसो। मुक्तिहुमाहिं न होई ऐसो॥
दो० गौरश्याम सुखमा सदन बदन बिलोचन चारु।
सहित बसनभूषणबसहु उरसिअहंजिमिहारु॥
यहिबिधिकहिसबहिनसुखपावा। शिशुपालहितबरुक्मजनावा॥
अब सब खबरदारते रहना। आये हैं उपाधि के गहना॥
तब शिशुपाल समूह सिपाही। पठैदिये रक्षाहित ताही॥
इत उत गई कनात तनाई। देवी पूजन कुवँरि सिधाई॥

संग सखी सोई बिधि बारा। कीन्हे तन षोड़श शृंगारा॥
कुं० मज्जनपटअंजन तिलक स्रककुंडलताम्बूल।
बेसरिअँगिया किंकिणी कंकन पायलमूल॥
कंकन पायल मूल सुनूपुर कुंकम बेनी।
यइ षोड़श शृंगार त्रियन के औरहु श्रेनी॥
श्रेनीमानहुं मदन केरि निकसी मदगंजन।
गीतसाथरघुनाथकरत सुनिमुनिमनमज्जन॥
रोलाछंद॥ कोइपद्मिनिसुकुमारिलाजयुतसहितसुगंधा। कोइ चित्रिनिसमरूप चहतउपबाधप्रबंधा॥ कोइशंखिनियुतरोसदया बिनबेगिप्रचारै। कोइहस्तिनि बड़उदरपयोधरकमरकरालै॥ कोइस्वकीयसुख दुक्खमाहिंनिजनाथैजानै। कोइपरकियपरपुरुषकेरसंगछिपिकैठानै॥ कोइगुणरूपाशक्तप्रेमबशकोइरसध्यावै। कोइसामान्यादर्बिलोभबसप्रीतिबढ़ावै॥ संधिभयःकोइअकुचजनतियोबनकोइमुग्धा।कोइज्ञाताअज्ञातबपुषबयभोगनिरुग्धा॥ कोइमध्यासामान्यकामयुतलाजजनावै। कोइप्रौढ़ापरवीनअधिकरसकेलिसोहावै॥ कोइधीराहतबिंगकोईआधीररिसाती। कोज्येष्ठापतिप्रीयकनिष्ठाकोइकमचहती॥कोइगुप्तागतिअलखकोईपरप्रीतिलक्षिता।कोइमुदितासिकमिलनबिदग्धाकोइसुरक्षिता॥ कोइअनुसयनादुखितजासुसंकेतनशान्यो। कोइकुलटाआतृप्तचितचिरठौरलोभान्यो॥ कोइस्वाधीनास्ववशकीननाहैनिजगुणते। कोइउक्ताकेहेतनआयो प्रीतमसुनते॥ बासकशय्याकोइकंतको आगम देखै। कोइकलहंतरिता दिनिदरिकरिशोचबिशेखै॥ कोइखण्डिताअपरपासलखिपतिहिरिझावै। द्विजलब्धाकोइजौनपतिहिसंकेतनपावै॥ कोइअभिसारिनि आपुजाइ कीहरिहिहँकारै। प्रवृतिपतिकाकोइजासुपतिगमनबिचारै॥ कोइप्रोषितपतिकाहिकंतपरदेशमजाको। आगमपतिकाकोइहोइउतकंठाताको॥ कोइदूखितादुखितहेातलखिबाधकजानै। कोइगरवितपतिरूपअधिक

कोइजेठरप्रमानै॥ आईकरतकलोलसकलदेवीकेपासा। पूजन कीन्हींकुवँरिकृष्णकीकरिउरआसा॥

दो० और सखीजे संगकी करि प्रणाम कहैं बात।
यहि कन्याके कृष्णपति देहुदयाकरि मात॥
पूजनकरत न पतिहि जबपेख्योमहिपकुमारि।
लगीकरनअतिशोचतबयहिबिधिहृदयबिचारि॥

कुं० बीसन बुड़की मैं दई मुकता लग्यो न हाथ।
सागर केर न दोषयह निज अभाग रघुनाथ॥
निज अभाग रघुनाथ नाथऋतु सबहिफुलावै।
पातन लहै करील ढीलको ताको गावै॥
गावत सुनै न बधिर भानुद्युति तमचरदीसन।
रहतगंधबिन बेनु मलयढिगयहिबिधिबीसन॥
मन चाहतहै मिलन को मुख देखन कै नयन।
श्रवणचहतसुखप्रदसुन्यो श्यामसुंदरके बयन॥
श्यामसुन्दर के वयन सैनबश होन न पावत।
हायदई का करौं यतन एकौ न लखावत॥
आवत एक प्रतीत अहै प्रभु प्रणतपाल घन।
शरण समुझिसुधि लेहैंलेहैंपुनि लेहैंठीकमन॥

दो० यहिबिधि मनमें ठीकदै चली चहूं दिशिहेरि।
इतने में हरि आइ तहँ परदा दीन्ह्यों रोरि॥
कुवँरि कुवँर को रूपलखि भे मुर्छित भटसर्व।
करगहि रथ बैठारि प्रभुचले गजि नृप गर्ब॥
जोरावर ते नहिं चलत छल बल बुद्धिउपाइ।
टटकन टरै न गाज जिमि मेखनत मृगराइ॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथ दासरामसनेहीकृतकृष्णायणरुक्मिनीहरणब र्णनोनामएकादशोऽध्यायः॥ ११॥

दो० सुमिरिरामसिय संतगुरु गणपगिरा सुखदानि।
नीतिसहितरुक्मिणिकथाहरिकृतकहतबखानि॥

यहि बिधि जबश्रीकृष्ण मुरारी। हरि चलिभे भीषमककुमारी॥
तबतौ जरासंध अस कहई। धृगधन्वी हम सबको अहई॥
जिनके जियत गोप नृपवारी। हरिलैगोजिमिशिवहरिनारी॥
यशी पुरुष कहँ अपयश होई। मरणनीकभल जियननसोई॥
अस कहि गहि आयुधसबदौरे। धरुधरु मारुमारु कहिबौरे॥
इत हलधर यादव लै धाये। भिरिगे ठौर ठौर भटपाये॥
पैदर ते पैदर हय ते हय। रथिनते रथी जुटेगय ते गय॥
छूटे चक्रबान बिकराला। तोमर परशुशक्तिसमकाला॥
मुदगर शूल भुशुण्डि सोहाई। पुनि कृपाण ते मची लराई।
कोटिन मुण्ड धरणि परगिरहीं। धरु२ कहिकबंध बहुभिरहीं॥
भूत प्रेत योगिनी कराला। मुदितभयेखग श्वानशृगाला॥
यहि बिधि सैननृपन की नाशी। शंख शब्दकीन्ह्यो बलराशी॥

दो० जरासंध शिशुपाल दोउ गये तुरतही भागि।
धीरजदै शठ रुक्म तब चढ़ा रुक्मिणीलागि॥
जैसे पांखी की दशा देखत पांखी आन।
तद्यपि कूदन दीपमें अस बिमोह बलवान॥

आगे बढ़ि कृष्णहि ललकारा। जातकहां करि बिघ्न हमारा॥
रह्यो डहँकि कदरन के बीचा। जानहुं आजु आपनी मीचा॥
असकहि निकटआइ प्रभुपाहीं। मारिसि गदा माँझ उरमाहीं॥
पकरि कृष्ण शिर काटन लागे। कहरुक्मिणी जोरि करआगे॥
बंधु भीष मोकहँ प्रभु दीजै। इतना कहा चेरिकर कीजै॥
मोछ मुड़ाई राखि पुनि चोटी। पाछेबांधिलिहिनि निजजोटी॥
कटक निधनि आये बलभाई। सनोमान करि दीन छोड़ाई॥
बोले हरि ते उचित न कीन्ह्यो। बंधुविरूपबिरचि दुखदीन्ह्यों॥
राजा सुत दुख पावा होई। लघुमति हमें कहब सब कोई॥

बंधु करै सो बध कर कामा। तदपिन हतिये हितपरिनामा॥
जो बहुलाभ कुसंगम होई। तदपि न कीजै संगति सोई॥
होइधनी धन रहित जो कीजै। तदपिताहिलघुप्रकृतिनलीजै॥
जोन होइ बल देन को दाना। तपपि न तजियसमसनमाना॥
घटै प्रीति जो मित्र ते कबहूं। मुखते उघरि न जूटिय तबहूं॥
जोनिशिदिवस न हरिभजिपैये। तदपि न सांझ सुबू बिसरैये॥
जो नरनारि होइ दोउ त्यागी। तदपिरक्षिये जिमितृणआगी॥
परहित करत प्राण जो नाई। तदपिन तजिये कबहुंभलाई॥
दो० रारिरोग रिपु अग्नि नृप करत तपो धनब्याल॥
जो ये होवैं लघु तदपि सजग रहिय सबकाल॥
बनिक बामबैरी बिकल ब्यसनी चुगुल अजान।
करैं कोटि सोहैं तदपि इन बिश्वास न आन॥
जो कामी नर कृपिण कहि करै आपनी रिन्द।
तदपि अकार्थ न दीजिये विद्या बिन्दरुजिन्द॥
जो सुर भूसुर साधु की सधै न सेवा भाव।
तदपि न निन्दाकीजिये नाहिंसुनिय करिचाव॥
उत्तम विद्या नीचते मिले जो दीन्हे मान।
तदपि तासु ते लीजिये शिरपर धरि आसान॥
जो कबहूं सतसंग ते उदय होय वैराग।
तदपि एकही बार कुल धर्म न कीजै त्याग॥
जोसब तीरथ मिलै करारी। तदपि न तजिये हरिपदबारी॥
जो कबहूं गुरु रहै रिसाई। तदपि निहोरि चूक बख़्शाई॥
जो धन हित विद्या लघु केरी। पढ़ि तद्यपि लीजै निज हेरी॥
जो शुचिदास कबहुं फिरिजाई। तदपि ताहिक्कै नर्म मनाई॥
जो अपने ते बनै न नेकी। तदपि अपरको करत न छेकी॥
जो श्रुतिशास्त्र मुखागर चहिये। पढ़तसुनतनित तद्यपिरहिये॥
जो अति कष्टहु ते सतसंगा। मिलैतदपिनित करियप्रसंगा॥

सुरस सन्त कछु कहैं न यद्यपि। करियेअदबमानलखितद्यपि॥
दो० कबिबुध गुरु तिय सुतसुहृद द्विजमरमी शठभाय।
जो यह करैं अनीति कछु तदपि तरह दै जाय॥
पुनि रुक्मिणि ते गिरा उचारी। तजहुशोच निजबंश बिचारी॥
क्षत्रीकुल बिधि असनिरमायो। अवनिरवनियनधामलोभायो॥
भ्रातै भ्रात हतै करि कोहा। भूपकने अस पातक मोहा॥
सो गुण हम में एको नाहीं। सबकर हित चाहैं मनमाहीं॥
हितू प्राण ते प्रिय अधिकाई। सलभजरैं नहिंदीप लगाई॥
बहुरि बिवाह आठ बिधि तेरे। धर्मशास्त्र में मुनिन निबेरे॥
दो० ब्राह्मदैव परजा पती आर्ष असुर गन्धर्ब।
राक्षसबहुरिपिशाचअबसुनहुब्याहबिधिसर्ब॥
कुकुंभीछन्द॥
सालंकारदानकन्याकोब्रह्मकहावैसोय। दानदक्षिणामेंकन्या कोदेतदेवसोहोय॥ तुमदोउमिलिसबधर्मकरौकहिदेइप्रजापति जानौ। लैद्वैधेनुदेतदुहिताजोसोईआर्षपरमानौ॥ सुप्तप्रमस्त नकीकन्यनकोहरिबीसोइपिशाचा। बरैकुवँरिबधिबन्धुसोराक्षस नृपैपरतयहराचा॥क्वैसकामकन्याकरपकरैब्याहसोगंधर्बकहिये। असुरअनीतिप्रीतिनहिंपौरुषयहउतमहिनचहिये॥
त्यहिते हम क्षत्री के बालक। कीनिअनीतिननिजकुलचालक॥
सुनि बैदरभी अति सुख पायो। मोहजनित बिषादबिसरायो॥
रुक्म लाज बश भवननगयऊ। निजदासनते बोलत भयऊ॥
पहिले पुरुष ते बात जोकहिये। कृतबिनमुखन देखावैचहिये॥
ताही ठौर नगर यक डारा। नाम भोजकटुता कर धारा॥
सब जाती सनमानि बसाई। रह्यो तहां सुतनारि बोलाई॥
इत शिशुपाल कह्यो बिलखाई। अबहमजाबन निजपुर भाई॥
हँसीकि बात कही नहिं जाई। मूरुखचन्द बने इत आई॥
जरासन्ध कह भूपन तीरा। हानि लाभ रहतै है बीरा॥

हम नहिं प्रथमै इनते हारे। पुनि दोउबन्धु शैलपर जारे॥
त्यहिते तात तजहु गति मनकी। दारुयोषिता समगति तनकी॥
समुझिसोकवि सुखशोकनगहई। बर्तमान सब बर्तत रहई॥
मूरुख गई बस्तु को शोचैं। द्रव्य पाय जेहि धर्मन रोचैं॥
मूरुख करी कृत्य को मानैं। हितकी बात न मनमें आनैं॥
मूरुख पन्थ चलत में खावैं। मूरुख हँसतमाहिं बतलावैं॥
मूरुख शठ ते करैं बिवादा। खरचैं द्रव्य बित्तते जादा॥
मूरुख करैं सबल ते बैरू। मूरुख बर राखैं अनगैरू॥
मूरुख बिन मतलब कटु बोलै। मूरुख पाप अपर के खोलै॥
मूरुख ह्वै बिच तीसर फांदै। मूरुख बात बामकी कांदै॥
पूरुख निर्द्धन के धन धरई। मूरुख वृद्धमाहिं तिय बरई॥
मूरुख बहिनि सार सँग भेजै। मूरुख जाइ पराई सेजै॥
मूरुख कर्म क्रिया ते हीना। मूरुख चलै न पति आधीना॥
मूरुख मद मांगत में करई। मूरुख प्रीतिजोरि पुनि लरई॥
मूरुख निजमुख निजगुण गावै। मूरुख बालक मुंहै लगावै॥
मूरुख त्यागी ह्वै धन जोरै। मूरुख बिनमतलब फलतोरै॥
मूरुख दखल देइ बिन जाने। गहै चपलता गुरु अस्थाने॥
सबते बड़ मूरुख त्यहि चीन्हा। नरतनजिनहरिभजननकीन्हा॥
त्यहिते तुम मूरुख के लेखे। मिली न मिली बस्तु अनमेखे॥
यहिबिधि सबभूपन समुझावा। तबलजातनिजभवनसिधावा॥
पहुंचे कृष्ण द्वारका तीरा। सुनिकै उग्र लई बहु भीरा॥
आगे लिहिनि धूमते आई। राजमहल लाये सुखपाई॥
कीन्ह बिवाह वेद बिधि तेरे। लागे रहन सकल सुखमेरे॥
कह नृप रुक्मिणि पूर्व मँझारी। करीपुण्य असि कौनिउबारी॥

दो॰ तीनि अंशते जानकी लीन रहैं अवतार।
वेदवतीस्वइरुक्मिणी सतभामामहिभार॥

कृष्ण रुक्मिणी केर शृँगारू। कहतशेष नहिं पावहिं पारू॥

तौमैं किमपि कहौं मति थोरी। पायपिपील कि सागर बोरी॥
कछुदिन बादि रुक्मिणी जावा। बालक नाम प्रद्युम न पावा॥
शोभा सदन मदन अवतारा। हरिप्रतिबिम्बमनहुंअतिप्यारा॥
दो० सम्बर राजा पवन ह्वै हरि लैगा रिपुजानि।
दीन्हेसिडारि समुद्रमहँ लील लीन मीनानि॥
धीमर मीन पकरिस्वइ लीन्हा। जाइ भेंट सम्बर को दीन्हा॥
चीरत सुत निकसा महिपाला। सौंपिदीनरतिकात्यहिकाला॥
पांच बरष का मा जब बारा। भेद पाइ सम्बर को मारा॥
लै रति संग द्वारकै आये। मानहुं प्राण रुक्मिणी पाये॥
भा तब आनँद सहित बिवाहू। बसी सदन रतिसह नरनाहू॥
दो० श्रीगुरु देवा दासके चरण कमल धरि माथ।
कृष्णायण यह अयन को पूरकीन्ह रघुनाथ॥
द्वितिया अयन कहौं समुझाई। पन्द्रहसै पचास चौपाई॥
दोहा एकसै सत्ताइस जानो। सोरठचारि सोऊ पहिंचानो॥
रोला छन्द नवै हैं सोई। नवै कुंडलिया यामें जोई॥
कुकुभा छंद तीनि हैं भ्राता। तीनि गीतिका यामें ताता॥
दो० भुजँग प्रयाता एक है एक सवैया छन्द।
एक कबित चामर सु यक एक त्रिभंगी कंद॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतकृष्णायनरुक्मिणीमंगलप्रद्युम्नउत्पत्तिअरुरति संगबिवाहबर्णनोनामद्वादशोऽध्यायः॥ १२॥

इतिकृष्णायनखण्डस्समाप्तः॥

——o——

श्रीगणेशायनमः

अथबिश्रामसागर॥



श्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतरामायण बालकाण्डप्रारम्भः॥

श्लोक॥

बपुबनजबिनीलंलोकलावण्यधामंसुखनिधिसमशीलंलोहिताक्षंबिशालं॥ करधनुशरधारीक्रीटकंपिंगवस्त्रं बिधिहरिहरमीशंजानकीशंनमामि १॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु गणपगिरासुखदानि।
कहौं ब्रह्मखण्ड पुराण मत रघुपतिखण्डबखानि॥
श्रीगुरुदेवादास के चरण कमल धरि माथ।
बर्णत सीताराम गुण सुखप्रद जन रघुनाथ॥
कथा अलौकिक कुशल सुनि करै न मन संदेह।
राम अनन्त अनन्त गुण कतहुं होइगो एह॥
हाथजोरि बोले बचन पुनि शौनक अभिराम।
कयहि कारण अवतार जग लीनपरात्पर राम॥

सो० सुनि सुमन्त सुखपाइ बोले मुनिहरि गुणसुनहु।
जो बरण गिरिराइ गिरिजा प्रति सोई कहब॥

एक समय कैलास मँझारी। बैठे रहे उमा त्रिपुरारी॥
नन प्रसन्न शंकर कर जानी। बोली शिवा जोरि युगपानी॥
राम सच्चिदानन्द निकेता। नरतन धरेनि नाथकयहिहेता॥

कीन्हेनि चरित कौनबिधिकरे। सो सब नाथ कहौ हित मेरे॥
ज्ञानहु तेपि श्रवण सुख भारी। सनकादिक जहँ रमे बिचारी॥
सुनि शंकर बोले मृदु बानी। धन्यधन्य तुम धन्य भवानी॥
रामचरित पूछेउ सुखदाई। सो अब सुनो कहौं मैं गाई॥
कीन चहत लीला हरि जबहीं। ठाढ़ करत हैं कारण तबहीं॥
जैसे बिशिष चलावै कोई। प्रथमै धरत निशाना सोई॥
उभय देव जानै अभिमानी। अरिकरिशरण भये भयमानी॥
तीसर हेतु मनुहिं बरदाना। दीन रहै प्रभु कृपानिधाना॥
तूर्य युद्ध जानुकिहि देखावन। पंचमजग बिराग उपजावन॥
षष्टममुनिजन सुमिरण कीन्हा। भक्तबसललखिदरशनदीन्हा॥
सप्तम देखि धरम की हानी। अष्टम प्रीति जनककी जानी॥
नवम बचन बिधि के बहुतेरे। कीन्हे चहैं सांच त्यहि तेरे॥
दशम दशानन सबै सताया। बधन हेत प्रगटे रघुराया॥
यहिबिधि हेत हजारन जानौ। इतनेही हित जन्म न मानौ॥
पुनि गिरिजा बोलीं करजोरी। राम कथा पर प्रीति न थोरी॥
नाथकहौ केहिबिधि जगदीशा। बपुधरिनिधन कीन्ह दशशीशा॥
केहि बिधिभवनबसेसुखकारी। सुनि लागे तब कहन पुरारी॥

दो० इक रावण जय बिजय में युगुल जलंधर आप।
तीसर रावण शंभुगण चतुरथ भानुप्रताप॥

यहिबिधिकल्पकल्पप्रतिरावण। होतकरत हरि बपुधरिपावन॥
ज्यहि कारण साकेत बिहारी। प्रगटे तासु कथा सुनु प्यारी॥
नाम प्रताप सखा प्रभु केरा। महि अवतरेउ आइ प्रभु प्रेरा॥
सत्यकेतु नृप केकय देशा। तस्य भवन जनु उयउदिनेशा॥
नाम प्रतापभानु बल धामा। कीन्हराजरिपु दल अभिरामा॥
एक बार बन गयो शिकारा। तहांकपटमुनि असुर निहारा॥
तिन्हैं लोभ बश चीन्ह्यों नाहीं। गुरुबनिकिहेसिपाकघरमाहीं॥
गोपल अशन भई नभ बानी। बिप्रन शापदीन्ह दुख मानी॥

राक्षस होउ कुटुम्ब समेता। ते जहँ भये सुनौ सो हेता॥
ऋषि पुलस्त्य सुत ब्रह्मा केरे। रहे तप करत मेरु के नेरे॥
तहँ तृणबिन्दराज ऋषिरहेऊ। कन्या तासु क्रांतिकर कहेऊ॥
सखिनसहितसोदिनप्रतिआवै। कलबल मुनिके निकटमचावै॥
सुमिरण ध्यान बनै नहिं राई। तब पुलस्त्यअसकहा रिसाई॥
आस पास जो हमरे आवै। प्रमदा पुत्रवती ह्वै जावै॥
कन्या गई रहा अवधाना। जबतृणबिन्दुध्यानकरिजाना॥
तबसोइ सुतामुनिहिंबरिदयऊ। त्यहिते बिश्रवाकोसुत भयऊ॥
बड़ो भये पितु आयसु पाई। करन लाग तप कानन जाई॥
दो० भरद्वाज मुनिके रहै कन्या सुयशा नाम।
बिश्रवसहिबरिदीनतिननेहसहितअभिराम॥
तिन के भये कुबेर बिधाता। कीन्हेउ ताहि यक्षपति ताता॥
तदपि एलबिल दिनप्रति आई। करहिंमातु पितुकी स्यवकाई॥
यहि बिधि बीते बरष अठारा। तब कुबेर निज हृदयबिचारा॥
जो मम पिताअपर त्रियबरहीं। तो दुनहुन की सेवा करहीं॥
मय दानव यांच्यो अभिरामा। माया देवि सुवक्षा नामा॥
तिन के हित निज दूतपठावा। सुनि मयदानव बचनसुनावा॥
बिप्रै भिक्षा मांगन चाही। हमनिज सुताबिवाहबताही॥
औरौ बचन कहे कटु नाना। दूत धनद ते आइ बखाना॥
सुनि कुबेर निज सैन बटोरी। चढ़े तहां भै मारु न थोरी॥
लाये तिन्हहिं जीतियहि रीती। दीन्ही पितहिपरणिसहप्रीती॥
बिबिधिभांति कीन्ही तिनसेवा। देखि प्रसन्न भये मुनिदेवा॥
सांझसमय लीन्हेनि रतिदाना। यद्यपि मुनिवर दोषबखाना॥
भई गर्भ संयुत यहि भावा। जन्मसमय कर अवसरआवा॥
उलकापात होन तब लागे। गर्जे मेघ समय बिन आगे॥
रबिशशिग्रहन पवन चलिजोरा। दिनकी रातिभई अति घोरा॥
कांपि उठी महिदेव डेराने। सब बिप्रन के पेट पिराने॥

दुष्ट मुदित मुनि भये मलीना। अग्नितेजहत नखद्युतिक्षीना॥
उदित केतु नभ जम्बुक बोले। श्रुतिदलकोरलखेबिधिखोले॥
प्रथमै सुत देवी युग जाये। रावण कुम्भकरण कहवाये॥
कहुं कहुं कहत केकसी माता। सोजयबिजय समयकीबाता॥
भय सुवक्षा के सुत पाछे। त्रिजटा अग्र बिभीषण आछे॥
माया सुत जन्मे कर लेखा। खरदूषण त्रिशिरा सुपनेखा॥
जब कछु भये सयाने नीचा। करैं उपद्रव कानन बीचा॥
खग मृग एकहु बधन न पावैं। तपत मुनिनकहँजाइ सतावैं॥

दो० मारन मोहन बश करन उच्चाटन अस्तम्भ।
आकर्षण सब भांति के पढ़ैं सदा करि दम्भ॥

निश्चर प्रथम सुरन रण भाने। बंचेते रहे पताल दुराने॥
तिन निजबंशअवनिपर जान्यो। छिपिकरिआवागच्छसुठान्यो॥
यकदिन दनुज पूज्य असकहेऊ। करहु तपस्या जोसुख चहेऊ॥
अमर बिना जग स्वप्न सरीखा। लागेतपन सकल सुनिशीखा॥
अरध अधि रबिदिशिदृगदयऊ। दिव्यसहसदश संवतगयऊ॥
महाकठिनतपलखिबिधिआयो।दशमुखखललखिबागबोलायो॥
बैठि गिरा तेहि जीह मँझारा। तब बिरंचि बर मांगु उचारा॥
बोला सुनि रावण हम नाहू। नरहरि तजि न मरैं करकाहू॥
एवमस्तु कहि अज तहँ आये। जहांबिभीषण ध्यान लगाये॥
सुजन जानि बोले अनुरागी। भावै सो लीजै बर मांगी॥
कह्यो बिभीषण दोउ करजोरी। हरिपद प्रीति बढ़ै प्रभु मोरी॥
एवमस्तु कहि पुनि धरि धीरा। पहुँचे कुम्भकरण के तीरा॥

दो० ताहि देखि बागीश निन मनमेंकीन्ह बिचार।
जोयह नित भोजन करी नाशी सब संसार॥

सो० करियहि भांति बिबेक प्रेरिगिरा फेरी उपल।
मांगेसि बासर एक जागहुं सोवहुं मास षट॥

कहि अस्थातु बहुरिबिधि डोले। खर दूषण त्रिशिरा ते बोले॥

तिन मांगा हम होई बीरा। अन्त समय जाई हरि तीरा॥
देखि सो त्रिजटा शीश नवावा। होइ प्रीति हरिपद बरपावा॥
पुनि लंकिनी नवायो शीशा। बोली तब त्यहिते बागीशा॥
शाखामृग तुमका जब मारी। तब छूटी यह देह तुम्हारी॥
दिव्य रूप धरि हरि पुरबासा। होई तब निश्चर कर नाशा॥
यहिविधिबिधिसबकाबरदीन्हा। पुनिनिजलोकपयानोकीन्हा॥
दशमुख जो अजते बर पावा। प्रमुदितह्वै सोइकबिहिसुनावा॥
कह्यो शुक ह्वैगे बड़ि भूला। नर बानर क्यों तज्योसमूला॥
बोला कौन चूक इन लागी। डरै वृथातृण दारुहि आगी॥
असकहि लागकरन ठकुराई। निश्चर निकर रहे तहँ आई॥

दो० मय तनया मन्दोदरी हेमाते संजात।
बरिदीन्ही त्यहिरावणै समुझिसबलभलनात॥
नारि मनोहर पाइ कै उठा अधिक हरषाइ।
कुम्भकरण त्रिशिरादि पुनि ब्याहे पांचौ भाइ॥

सानन्दनि वृकदन्त कुमारी। सोभय कुम्भकरण की नारी॥
नग दन्ती केहरि मखजाई। सेा बल्लभा बिभीषण पाई॥
रदभख के कन्या त्रै बरणी। खरदूषण त्रिशिरा की घरणी॥
बनितन सहित सुपांचो भाई। करहिंभवनसुख शोक बिहाई॥
यकदिनदशमुखपितुपहँगयऊ। त्यहिक्षणधनपतिआवतभयऊ॥
बैठे धनद पितहि शिरनाई। मुनिकीन्ह्यो आदर अधिकाई॥
कछुक काल रहि आयसु मांगी। गये कुवेर भवन अनुरागी॥
आदर अधिक पिता कृत देखी। रावण उरभा क्रोध बिशेषी॥
खलन केरि ये लक्षण आहीं। परप्रभुता लखिजरिबरिजाहीं॥
उठि ऋषिढिगते मन्दिर आवा। जननी ते वृत्तान्त सुनावा॥
त्यहि तब कहा धनदये आहीं। कंचन की लंका में रहईं॥
चारो तरफ सिंधु है जाके। अमरपुरीनहिं समसरिताके॥
सो लंका तव नाना केरी। बसे आपु मम पितहिखदेरी॥

सुनि दशमुखअति उठारिसाई। दलले लंक गरेरेसि जाई॥
प्रथम कुबेर युद्ध अति कीन्हा।पुनिह्वैश्रमितत्यागिगढ़दीन्हा॥
भागत देखि निशाचर राई। लीन्हेसि पुष्पकयान छिनाई॥
लंक बिलोकि परम सुखमानी। कीन्ही तहँ रावण रजधानी॥
यथा योग्य पुनि निश्चर नाहू। दीन्हे भवन बांटि सब काहू॥
तब कुबेर निज कुटुंब समेता। अलकापुरी बसाइ सचेता॥
आपु गये सुरपति के तीरा। सकल व्यवस्था कहीअधीरा॥
सुनि सुरेश सब देव बोलाये। हनिनिशानलंकहिचढ़िआये॥
दशमुख लै निकसा कटकाई। होइ इन्द्रते लगी लराई॥
अस्त्र शस्त्र छूटें बिधि नाना। अगिणितअसुरहोइँबिनप्राना॥
बासव कोपि बज्र यक मारा। गिरा मूर्छितब अवनिमँझारा॥
निज गजते तनु मर्दन लाग्यो। मानहुंश्रमितजानिअनुराग्यो॥
कुंभकरण तब भिरेउ प्रचारी। व्याकुलभयेअदितिसुतभारी॥
रबि सुत सैनबिचलनिजजानी। झपटि दंड मारेउ उरतानी॥
रावण अनुज दंड गहिलयऊ। सहजैनिज मुखमेलत भयऊ॥
राखि उदर शठ सोवन लागा। षट महिना बीते पुनि जागा॥

दो० भयो तासु उरदाह तब उगिलिदिहेसि यमदण्ड।
तमकि लीन महिषेश पुनि मारेहु दण्ड प्रचण्ड॥

लागतशिर त्यहिपीर न व्यापी। भयो नींदबशपुनिखलपापी॥
तब हरिहने दण्ड अधिकाई। सोवत सो अधिकहु सचुपाई॥
मुरछा ते तब रावण जागा। पुनि देवन ते जूझन लागा॥
नख भुज दंड धनुष शरलीन्हे। मारिबिबुधसबव्याकुलकीन्हे॥
लखिदिग्गज चिक्करिढिगआये। धनुष बाण सब काटि बहाये॥
गहेसि तिन्हें तबभुजा पसारी। मरि द्वीरदन दशन प्रचारी॥
दश मुखके उरलागहिं कैसे। शिलामांझ बिन फरशरजैसे॥
लखि रावण तनकी कठिनाई। तब सब दिग्गज चले पराई॥
धनद इन्द्र तब गे बिधि पासा। शीशनाइसब हाल प्रकाशा॥

कह बिरंचि सुनु शक्र सुजाना। रावण है तपबल बलवाना॥
त्यहिते तुम जनि करहु लराई। गिरिखोहन मा जाहु पराई॥
सुरनसहित सुमिरहु करतारा। बिनहरि को दुख मेटनहारा॥
स्रष्टा बचन सुनत मन माने। देवन ते तब आइ बखाने॥
शीख पुरन्दर की लहिकाना। सबहुनगिरिबनकीन्हपयाना॥
जाय दशानन सैन समेता। सोधिसि देवन केर निकेता॥
जो सुर पुर घर मारग पावा। तिन्हैंपकरि निजलंकहिआवा॥
रावण लंकहिगा सुनि काना। बसे अमर पुनिनिज२ थाना॥
सुर पुर बिबुध बसे सुनि पावै। तब खल दलबै आतुर धावै॥
रहैं सजग जब आवत जानैं। भागि जाहिं सुरसमरनठानैं॥
एक दिवस अहमित अधिकाई। श्वेत दीपमें पहुंचा जाई॥

दो० युवतिन ते बोला बलकि कहां गये सुरबंक।
तिन्हैं जीति संग्राम में तुम्हैं जाहुं लै लंक॥

सो० सुनिएकजरठरिसाइपकरिपछारिउछारिनभ।
दीन्हिसिसिंधुबहाइह्वै अचेतनिकसासुतल॥

पुनि धरि धरि ठोंकि भुजबीशा। बलि ढिगजायनवायेहुशीशा॥
बैरोचन सुत आदर दयऊ। कुशल बूझि तबबोलतभयऊ॥
तव प्रसाद सब आनँद होई। सुर सन्मुखहोइ सकतनकोई॥
तुमहूं निज शत्रुहिगहि लीजै। चलिमहिलोकराजनिजकीजै॥
कहबलि कनककशिपु के मंडन। पहिरिलेहुतुम सुतदुखखंडन॥
लाग उठावन उठा न कोई। याही पौरुष ते जय होई॥
जिनये अबल सब अंगन घारे। ते भट गे एक छिनमा मारे॥
तेहिते भवन जाहु लै प्राना। चला तुरतमनमाहिंलजाना॥
बावन दीख जात अभिमानी। लीन धराइसि सुनिकेपानी॥
मारत लात जात गरिआवत। निज २ द्वारे फिरैं देखावत॥
दीन देखि प्रभु दीन छुड़ाई। पंपापुर तब गरजा आई॥
प्रथमें बालि बहुत समुझावा। सुनेसिनतबगहिबगलचपावा॥

संध्या करिघर बांधिसि आनी। छोरि दीन लखि तारा रानी॥
तब हरिपुर रेवातट गयऊ। सहस बाहु तहँ क्रीड़तरहेऊ॥
जलअस्थंभकिहिसितेहिजाना। पकरिपाणि हय शाले आना॥
शिरन दीप धरि नृत्यकरावा। सुनिपुलस्त्यमुनिजायछुड़ावा॥
लज्जित ह्वैकुलगुरुढिगगयऊ। निज वृत्तांत सुनावतभयऊ॥
कह कबि नरहरि दिढ़ेउबराई। तेहिते तुम बर बिजयनपाई॥
तासु शोच चित धरहु न ताता। मैं जो कहौं करहु सो बाता॥
अबतुम निज उरशिवपदधरहू। जपतप जाल भालमखकरहू॥
अभिमत बर शंकर ते लीजै। बिश्वसुबशकरिपुनिसुखकीजै॥
सुनि तुरतै गा सिंधु समीपा। लाग करन तपदनुज महीपा॥
बीस सहस्र बर्ष तप कीन्हा। माल यज्ञमें पुनि मनदीन्हा॥
बरष पांच शतनिज कर नीचा। हुने शीश पावक के बीचा॥
यहि बिधि मखकृतदेखिपुरारी। कहेनिमांगुवररुचिअनुहारी॥
सुनि बानी बोला दश भाला। अजरअमरमोहिंकरहुकृपाला॥
कह शंकर सुनु बचन हमारे। बिधिके अंक टरहिंनहिंटारे॥
तयहिते जो तप कीन्ह्यो भारी। तुव तन बलहोई अधिकारी॥
शीश समर्पि दिह्यो तुममोहीं। एकके कोटि देब मैं तोहीं॥
शिव बर अचल पाइ मनभावा। हर्षसहित निजमन्दिरआवा॥

हरिगीतिकाछंद॥ आवाभवननिज कटकसाजिसुरेशपरधावत भयो। गयभागिहरिबैकुंठ तजिलखिक्षीरदधिबलिढिगगयो॥ सोइपहिरिभूषण सकलतनमनमाखिकपिपतिपुरढर्‌यो। मिलि बालिजोरीमित्रता सुनिसहसभुजहूसोइकर्‌यो॥

सो० अमर नागनर यक्ष गंधब किन्नर बरसुता।
जीति बरेसि परतक्ष बचे न लागे हाथ जे॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागर श्रीरघुनाथ दासरामसनेहीकृतरावणोत्पत्तिअरुयुद्धबिषेजयपरा जयबर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः १॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु गणप गिरा सुखदावि।
कहौं वृहद सम्मत कछुक कोकिल काव्यबखानि॥
यहिबिधिरावणबिगतबियोगा। करैलाग सुर दुर्लभ भोगा॥
पल भक्षै अरु मदिरा पावै। सन्तत सुरमुनिमनुजदुखावै॥
मयजेहिपति कृतरुचै न लेशा। जब तब करै नीति उपदेशा॥
सो शिष दशकंधै नहिं भावै। नीच नीचही कर्म सोहावै॥
एक दिवस नारद तहँ आये। प्रथमै दशमुख सभासिधाये॥
दण्ड दोय ताकी रुचि गाई। पुनिमय जाघरगे ऋषिराई॥
करि प्रणामसबबिधिसनमानी। आसन दै बोली मृदुबानी॥
देव देखि मोहिंनिजपतिकरणी। संशय होत जात नहिं बरणी॥
ताकर होई कौन हवाला। त्रिकालज्ञ फुर कहौ कृपाला॥
बोले मुनि तप बल बिबुधारी। करत और करिहै सुखभारी॥
पुनि सुरमुनि हितत्रिभुवनशोई। सूर्य्यबंश अवतरिहैं आई॥
पितु निदेश करिहैं बन पावन। तिनकी रवनि हरी तबरावन॥
लंकहि जब जगदम्बा आई। तूल सरिस कपि लंकजराई॥
सेतु बांधि ऐहैं प्रभु पारा। कुटुम्ब सहित करिहैं संहारा॥
होब सुखी सुर बिप्र समाजू। करिहैं अभय बिभीषण राजू॥
असकहि कुंभकरण ढिगगयऊ। सुनिमयजाउरअतिदुखभयऊ॥
करि बिचार मन राखिसि गोई। हरि इच्छा होई सो होई॥
कुम्भकरण तेहिअवसर जागा। मुनिहिंदेखिउठिचरणनलागा॥
कछु हरिगुण ऋषिताहिसुनाये। पुनिमुनिबरबिधिलोकसिधाये॥
कुम्भकरण पुनिसोवतभयऊ। यहिबिधिकछुककालचलिगयऊ॥
त्रिपुल पुत्र भे रावण केरे। सब विद्या बल बुद्धि घनेरे॥
बारिद नाद जेठ सुत ताका। प्रथम जासु सुभटनमहँसाका॥
सो जब बोस अब्दकरि भयऊ। तबतप करन हेत बन गयऊ॥
बर्ष सहस्त्र किहेसि तप भारी। आय शक्ति तब गिरा उचारी॥
मांगु तात बर निज मन भावा। मेघनाद अस बचन सुनावा॥

यान लोप सब साज समेता। देहु एक मोहिं कृपानिकेता॥
जेहि पर चढ़ि करिमैं मैदाना। जीतहुं सकल बीर बलवाना॥
सुनि स्यन्दन तब दीन्ह्यो देवी। बोली बचनजानि निजसेवी॥
यहि रथका तुम धरेउ छिपाई। अतिरण कठिनपरै जब आई॥
दो० तब यहिपर आरूढ़ह्वै जायहु ब्योम मँझार।
युगुल यामकरि युद्धतहँ जितिहौसुभटअपार॥
जो त्यागी द्वादश बरष नींदनारि अरुअन्न।
सोसुत मारी तोहिं जग अपर न मारी जन्न॥
सुनि शिरनाइ मुदितगृह आवा। रथदुरिधरिणुनिबनहिंसिधावा॥
तपकरि बर लीन्हिसिशिवतेरे। समर समय भयहोय न मेरे॥
एवमस्तु कहिगे गिरिराई। पुनि आवा गृहशोच बिहाई॥
एक दिवस लै सुभट अपारा। सुरपतिके बनठनिसिशिकारा॥
सुनि बासव अतिबहुत रिसाना। चढ़ि ऐरावत कीन पयाना॥
मेघनाद लखि चाप चढ़ाई। मारे शर गजके बहुघाई॥
लागत शर बिद्रुम करि क्रोधा। धावा पटल मरे तहँ योधा॥
पुनिगजझपटिधरनितेहिगयऊ। बारिद नादतुण्डगहिलयऊ॥
सुरपति मारे वज्र घनेरे। लागत मनहुं कुसुम करिकेरे॥
नाग शूंड़ि तेहि छांड़ी नाहीं। लावागहिलकहि पितुपाहीं॥
देखि पराक्रम निज सुतकेरा। दशमुख के सुख भयो घनेरा॥
बोलि सकल बाजन बजवाये। उत्सव करि बहु रत्न लुटाये॥
लंकहि गे हरिविधिसुनिकाना। आये जहँ रावण बलवाना॥
हंसारूढ़ बिधातहि देखी। दशमुख उर भा हर्ष बिशेषी॥
पुत्र सहित उठि नायो माथा। दर्शन दै मोहिं कियो सनाथा॥
अबसो कहौ आयो जेहि हेता। तब बोले अज कृपानिकेता॥
बारिद नाद धन्य बलधामा। अबते इन्द्रजीत भा नामा॥
शक्रहि देउ अमर पुर जाई। अब तुमते नहिं करी लराई॥
ब्रह्म बचन सुनि कह्यो सुरारी। बचन तुम्हार सकै को टारी॥

कहिसि जाउसुरपति निजगेहू। प्रभु प्रसाद कछु पुत्रहि देहू॥
तब बिधि बाणशक्ति एकदयऊ। निष्फलहोबन असकहिगयऊ॥
सुनि घननाद बहुत हरषाना। नागलोक तबकिहेसिपयाना॥
जहँ बासुकी तहां चलि गयऊ। देखि नगरअति गर्जतभयऊ॥
सुनिधुनिअहिपतिव्यालबटोरी। आइ घेरि लीन्हेनि चहुओरी॥
दोउ दिशि ते शर छूटन लागे। भीजे सकल रुधिर ते बागे॥
चौदह दिन तहँ भई लराई। तब सब पन्नग गये पराई॥
रहे अकेले अहिपति जाना। गहिसिझपटिलघुदामसमाना॥
तुरतहि निज लंकहि लैगयऊ। रावण कहँ दरशावत भयऊ॥
पुनि लावा निज मंदिर बीचा। बांधेसि सेज शिराने नीचा॥
बासुकि उर भइ पीर अपारा। तब फणीश असबचनउचारा॥
दण्ड चहौ सो हमसे लीजै। जीवत मोहिं छांड़िअब दीजै॥
कह घननाद सुनहु अहिनाहू। कन्या दंड देहु घर जाहू॥
उरग राज तेहि जानि प्रचंडा। देन कही निज दुहितादण्डा॥
सुनि घननादछांड़ि तबदयऊ। हर्ष बासुकी के कछु भयऊ॥
लै आये निज लोकहि ताही। दीन सुलोचनि सुता बिबाही॥
अति सुंदर घरनी जब पाई। आवा तब लंकहि हरषाई॥
मात पिता पद शीश नवावा। पुनि पत्नी युतनिज गृहआवा॥
लाग करन सुख शोच बिहाई। अपर सुनो अब ताकर भाई॥
अक्षयकुमार सघन बन गयऊ। महा कठिन तपसाधतभयऊ॥
सहस वर्ष बीते हरिआये। मांगु तात बर बचन सुनाये॥
तब तेहिकहा सुनहु भगवाना। देहु मोहिं यक तीक्षण बाना॥
जेहि ते रण रिपु जीतहुं भारी। देकर शर अस कह्योपुरारी॥
यहि बिशिखैलै घर सुत जाहू। कपियकतजिजितिहौसबकाहू॥
सुनि समोदनिज मंदिर आवा। त्यहिक्षण मदोदरि सुतपावा॥
बीस व्यालयुतसुनि बिबुधारी। राखनयोग न मनसिबिचारी॥
हयाननतें कहेउ बोलाई। आवहु याहि गाड़ि कहुं जाई॥

दूत दाबि नैऋत्य सिधावा। पृथ्वी खोदितोपि तरआवा॥
रघुपति चरित करनहित आगे। मरा न सो बालकतेहिलागे॥
खाइसि खनि माटी यक मासा।पुनिगानिकरिनीरनिधिपासा॥
त्यहिलखिराहु जननिअनुरागी। भवनलाइनिज पालनलागी॥
यक दिन तहां शुक्र चलिआये। बोले पुत्र कहां यह पाये॥
क्षाया ग्रहनि कह्यो तब गाई। जेहि विधि उदधि तीरतेलाई॥
दनुज पूज्य पुनि बचनउचारा। यह है रावण केर कुमारा॥
आदिहि ते सब चरित सुनाये। अहिरावण धरिनाम सिधाये॥
निज उत्पत्तिसुनी त्यहिजबहीं। कूदि परा सागर महँ तबहीं॥
निकसा तुरत बितल महँजाई। तहां रहै अहिपुरी सोहाई॥
सत्तरि योजन बसत ललामा। चामी करके अति सुठिधामा॥
दर्बी कर तहँ रहे भुवारा। सोबासुकी केर सग सारा॥
तासु पुरी लखि कौतुक नाना। पुनिगा जहँ नितहोत पुराना॥
तप प्रभाव तहँ सुनिअधिकाई। सपदि बिपिनिपहुंचाहरषाई॥
बनमें लखी नदी यक बहई। कामदना देवी तहँ रहई॥
सुथलसमुझितहँ ध्यानलगावा। संबत चौदह सहस बितावा॥
सबबिधिदेखिसमाधिअडोली। बरंब्रूहि तब देवी बोली॥
इष्टबचन सुनि बहु करजोरी। मांगिसिबर करिबिनयबहोरी॥
अमरन ते अधिकी सुख करहू। जीतहु त्यहिज्यहिकेसँगलरहू॥
दो० शेष महेश दिनेश सुर ईश अजीश अनन्त।
मरौं न काहू हाथमैं होउँ निशाचर कन्त॥
पितहि कीन्ह अपमान हमारा। सोऊ मोहिं याचे एक बारा॥
सुनि देवी बोली सुनु ताता। करिहौंतुमबहुबिधि सुखगाता॥
त्रेता शेष समय दश शीशा। याची तोहिं जोरि भुजबीशा॥
मारी तुम्हें न कोउ जगमाहीं। कपियक मम बाचाबशनाहीं॥
तेहिप्रभुते जनि किहेउकुचाली। तौतू अजरअमर कहिचाली॥
रहन लाग तहँ दनुज कुमारा। अगणितखगमृगकरैअहारा॥

यहि बिधि बर्ष पांचशत बीती। तबखल करनलाग अनरीती ॥
बिबिधि भेष धरि अहिपुरजाई। अजगज हयखर डारहिखाई ॥
एक दिवस दर्पी कर राजा। धरनगये त्यहि सहितसमाजा ॥
अहिरावणकरि कठिन लगाई। दीन्हें सकल नाग बिचलाई ॥
तब दर्बिक अनन्त पहँ गयऊ। सब वृत्तान्त सुनावत भयऊ ॥
सुनि बोलेकरि शेष बिचारा। अहिरावणतप बलअधिकारा ॥
त्यहिते नहिं ऐहौ बरिआई। कन्या दे मिलि राहौ जाई ॥
तब दर्बिक बोलवावा ताही। दीन्हीं बिबिवतसुता बिवाही ॥
कुन्दनि नाम पाइ बर नारी। हस्तिन ते तब गिरा उचारी ॥
अब सब होउ बिगत संदेहू। करिहौं मैं कानन महँ गेहू ॥
अस कहि कामदना ढिगआवा। योजन नवकर नगर बसावा ॥
असुरन सहित रहै त्यहि माहीं। करनलाग सुख सांगिनजाहीं॥
बासव चरित जौन मैं गावा। आदि रमायन में सो पावा ॥
जो रिपुकर प्रभाव कहै कोई। सो त्यहि घातक कर यशहोई ॥
त्यहिते राम लषण हनुमत कर। बरन्योंबीर्यन असुरन करबर ॥
यहिबिधि सुत दशकंधर केरे। भये भूमि रिपु देवन केरे ॥
जो सबहिन के चरित सुनावौं। बाढ़ै कथा पार नहिं पावौं ॥
औरौ निकर निशाचर बीरा। मेघनाद आदिक रण धीरा ॥
कुरुमुख खरमुखकरि बरनादा। जंबुक भाल कुमुद कर वादा ॥
कुलिश दन्त श्वानानन पापी। अधम केतु शूकर मुख दापी ॥
कुम्भनिकुम्भ अकम्पन शूरा। केश प्रकेश महिष भप क्रूरा ॥
कूट प्रहस्त समान न रोखी। तारा अस्त बखत भप दोषी ॥
खर दूषण त्रिशिरा मतिअंधा। बक बिरांध अति कायकबंधा ॥
कालनेमि सुबाहु मारीचा। ऊर्द्धकेश मंजारा नीचा ॥
धूम्रकेतु लवनासुर सारे। एक एक जग जीतन हारे ॥
इन सबके संयुत दश भाला। करै लंक बसि राज बिहाला ॥
श्रीविश्रामसागरेमेघनादअहिरावणबिजयोद्वितीयोध्यायः ॥ २ ॥

दो० सुमिरिरामसिय सन्तगुरु गणपगिरा सुखदानि।
वृहद रमायण कहौंकछु कौशल चरितबखानि ॥

एक बार सँग लै कटकाई। विश्व बिजय हितचलाबजाई॥
फिरि आवा तीनों पुर माहीं। सन्मुख समर कीन केहुंनाहीं॥
तब रावण मन कीन गुमाना। हमसम सुभट न जगमेंआना॥
तब सबयोधा लिहिसिबोलाई। आदर करि निजढिग बैठाई॥
त्रिभुवन भेद लेन के हेता। बांटन लाग्यो देश निकेता॥
निशिचर अर्ब पचास समेता। काशमीर पठवा खर केता॥
सोरठ देश दशानन गयऊ। नब्बे अर्ब असुर सँग दयऊ॥
मूकरेश करनाटक दीन्हा। खर्ब सवाव असुरसँग कीन्हा॥
मंजारा मालवै पठावा। उभय अर्ब तमचर लै धावा॥
बक बकत्र निशिचरणा धीरा। खर्ब अढ़ाई सँग लै बीरा॥
मारवाड़ कर कानन बीचा। आय रहा अघमाधम नीचा॥
भेपासन भट लै दश अर्बा। चला कलिंगदेश सह गर्बा॥
गेरह अर्ब असुर लै तारा। बंग देश कहँ मुदित सिधारा॥
बीस सहस्त्रआस्थ भपलयऊ। अरुणा मृत्तिका देशहिगयऊ॥
अर्ब ऊर्द्ध कचनर भप पाई। मगह देश आवा हरषाई॥
चौदह अर्ब खुर्ज नख पाये। मुख विषलै गुजरात सिधाये॥
असितकोटि षाड़सखललीन्हेउ। आरब देश पयाना कीन्हेउ॥
अयुत कोटि भट लै मारीचा। संग सुबाहु ताड़का नीचा॥
गाधिपुरी ढिग कानन भारी। रहे आय तहँ खलअघकारी॥
लक्ष अठारह सहस छियासी। लवनासुर लै खल बलरासी॥
घन बन कोलपुरी के पासा। हर्ष सहित तहँ कीन्हेउबासा॥
मनु सहस्त्र लै भट बलवाना। दण्डकबन इनकीन पयाना॥

दो० प्रथमै खरदूषण उभय तीसर त्रिशिरा बीर।
चौथ बिराट कवन्ध कहि पंचम सबरणधीर॥

शत शत योजन बन बिलगाई। रहे कटक लै पांचौ आई॥

यहिबिधिसकल देश दशशीशा। दीन्हेंबाँटि अधम रजनीशा॥
जहँ तहँ बिबिधि भेषधरि चरहीं। हिंसा करत न नेकहु डरहीं॥
कौनिउ बात कतहुं लखि पावैं। तुरत आइ रावणै सुनावैं॥
भुजबलबिश्वस्ववश करिमाखा। सुभट स्वतंत्र न एकहु राखा॥
मण्डलीक पति पाय प्रकाशा। कीन्हिसिसकलदेवनिजदासा॥
आयसु जासुदिहिसि करिजोई। सन्तत सभय भजैतेहिसोई॥
सादर वेद बिरञ्चि सुनावै। दरशन देन पुरांतक आवै॥
यम प्रतिहार पाक भख करई। शक्रापयद छत्र शशि धरई॥
झारू दार पवन बलरासी। महा मृत्यु धोवत पगदासी॥
बरुण कुबेर नाग नर देवा। आयकरैं सबयहि बिधिसेवा॥
एक बार कैलाशहि गयऊ। सुमनसमानसुकरधरिलयऊ॥
मनहुं जोखि भुजबल थलराखी। आवाभवन गवन अभिलाषी॥
यहि प्रकार बीते बहु काला। एकदिवस कर सुनहु हवाला॥
घननादादि रहैं जे बीरा। तिन्हैं बोलि बोला रण धीरा॥
सुनौ रहैं सुर शत्रु हमारे। तेतौ भे सब बिबश बिचारे॥
बिष्णुबिबुध दिशिवारक बारा। आये तहँ मैं मुष्टिक मारा॥
शत योजन पर गरुड़ समेता। गिरे जाइ फिरिफिरे न खेता॥
सुख सहाय बिन सन्मुख तेऊ। कब तक रहिहैं दुरे दुखेऊ॥
अब एक बचा रहत भगवाना। जाहिजपत मुनि सन्तसुजाना॥
सो न परत कहुं दृष्टि हमारी। त्यहि जीतनहित बातबिचारी॥
साधुन बश सो रहैंश्रुति गावै। जोवै अर्पत सो वो पावै॥
त्यहिते सन्त सतावो जाई। जप तप करन न पावैं भाई॥
जब ह्वै हैं यहि बलते हीना। तब तेउ मिलिहैं आइअधीना॥
तब मरिहौं की छुड़िहौं देखी। कीन चही रिपु सुवशविशेषी॥
सुनिधाये जहँ तहँ तमचारी। लागे करन उपद्रव भारी॥
योग यज्ञ कोइ करन न पावैं। बिप्र धेनु जन धरिधरि खावैं॥
हरि हर घर पुर देहिं जराई। श्रुतिपुराण कोइ सकै न गाई॥

जो जन दान पुण्य परकाशै। पकरिताहिखल बहुबिधित्रासै॥
जेहि बिधि होइ धर्मकै हानी। सोईकरै अहनिशि अभिमानी॥
बाढ़े पतित पाप समुदाई। तबतो अवनि उठी अकुलाई॥
धेनु धामधरि गइबिधि लोका। कहत भईनिजबिपतिसशोका॥
धीरज दै अज कह्यो बुझाई। यामें कछुनहिं मोरि बिसाई॥
तेहिते सकल देव यक बेरी। करहु सप्रेम बिनय प्रभु केरी॥
दीन दयाल दीन जन जानी। करबकृपामिलि अस्तुतिठानी॥
जय जयजय नगपतिसुखकारी। जयजय करुणासिंधु मुरारी॥
जय जय माया रहित अनन्ता। जयजय दुराधर्ष भगवन्ता॥
जयजयअबिगतअलख अनूपा। जयजयसतचित आनँदरूपा॥
जय जय वेद भूमि उद्धरता। जयजयबिबुधसंतहितकरता॥
जय जय सृष्टि उपावन हारे। जय प्रभु संकट हरौ हमारे॥
रावण असुर देत दुख भारी। पाहिनाथ हमशरण तुम्हारी॥
इमि अमरन जबबिनय सुनाई। गई गिरा तब गगन सोहाई॥

दो० अबसब निरभय होउ सुर भूसुर संत सुभाय।
तुम्हरे हित कौशलपुरी धरिहौं नरतन आय॥
कौशल्या दशरथ भवन लै स्वछन्द अवतार।
करितहँ बाल चरित्रपुनि मरिहौं शत्रु तुम्हार॥

सुनिनभ गिरासकल दुखदाता। हरषेसुर सुनि सहितबिधाता॥
तब ब्रह्मा देवन ते भाषा। अबसब होउजाइ मृगशाखा॥
हरिहितसदल बिबिधिहरषाई। धरतभये कपि बपु जगआई॥
जो अवतार सबन के कहऊं। बाढ़ै ग्रंथ पार नहिं लहऊं॥
रहे पूरि महि गिरि बन नाना। प्रभु मारग चितवैं बलवाना॥
यह सब चरित सुनाबिबुधारी। जनूमतही हत करबबिचारी॥
बसत सकल ममबश रबिबंशी। तेका सकिहैं मोहिँ बिध्वंसी॥
तद्यपि सजग रहे का हानी। दिये असुर करिकछुतहँथानी॥
उत्पति मरण आदि कछु होई। करि संमत पहुचावैं सोई॥

भये दलीप भूप जब आई। जानि असुर सब दियेउठाई॥
सुनि रावण बल देखन आवा। द्विज लखिसबरानिन बैठावा॥
पूजत पद प्रगटेसि निज रूपा। भागीं भवन भीरु मनि भूपा॥
तब रावण सरयू तट आयो। अर्चत तंदुल नृपति चलायो॥
पूछा लोगन ते तब कहेऊ। धेनुहि हरि एकमारन चहेऊ॥
सुमिरत सपदि सालिहों प्रेरे। शत शर ह्वै लागेहरि केरे॥
सुनिदशमुखमन अचरजआवा। देखा जाय मृतक बन पावा॥
समुझि प्रताप गयोनिज धामा। नृपते हाल कहा नृप बामा॥

दो० रावणकृतसुनिअवधपति चंगुल भरिजललीन।
पवनमंत्रपढ़िक्रोध युत दक्षिणदिशितजिदीन॥
भयेबिशिखदशलाखलखिकहनृपलंकहिजाहु।
सहित त्रिकूट समुद्र महँबोरिफिरहुतेहिनाहु॥

सो० चलेपवन गति मोरि जातै उलटावन लगे।
मय तनया कर जोरि दोन दोहाई नृपतिकी॥
इहां नकोउनृपआहि सुनिआयेमहिपालढिग।
अकनि कह्योगुरुपाहि वइमुनिरहौचुपाइअब॥

इमि दशसहस बर्ष चलिगयऊ। रघु राजा तब परचो दयऊ॥
मारुत बान ढहत गृह लागे। बनिताबिनयबचनसुनित्यागे॥
बहुरि भये अज अवनिपकानन। मांझदेखि रणरच्योदशानन॥
अनिल अस्त्र ते कटक समेता। दीन ताहि पहुंचाय निकेता॥
तेजवान लखि रहा चुपाई। तेहि पाछे भे दशरथ राई॥

दो० दश सहस्रबिकर लखै दशौदिशा रथजाहि।
दशशिर रिपुप्रगटैसुवन कहिये दशरथ ताहि॥
सुनि रावणनिज दूतमुख मांगि पठायो दण्ड।
हरि शर प्रेरे भूप कहि जड्यो कपाट प्रचंड॥

जो रावण पट लेय उघारी। तौ हम कर देई बिन रारी॥
मन्दिर द्वार गये सब मूंदी। रहा उघारि असुरपति खूंदी॥

टसक्यो पटन भटक मुख मोरे। मिली मार्ग मय जाकर जोरे॥
तब रावण नभ बात बिचारी। बिपिनिजाइकीन्हि सितपभारी॥
बरंब्रूहि ब्रह्मा जब भाषा। बोला तब दशमुखअभिलाषा॥
दशरथ नृप बीरज ते सोई। जग में पुत्र न प्रगटै कोई॥
सुनि सृष्टा मनमें दुख माना। एवमस्तु कहि कीन पयाना॥
तब दशमुख कौशलपुर गयऊ। कौशल्यै हरि लावत भयऊ॥
सहित मजूषा सागर जाई। राघवमच्छ दिहि सिसौंपाई॥
चतुरानन धरि रावण रूपा। लाये मांगि सुता सोइ भूपा॥
बनमें धरि बिधिगे निजलोका। तहँ सुमंतुपटखोलिबिलोका॥
कन्या ते बोले मृदु बानी। तुमहौ किनकीसुता सयानी॥
तब कौशल्या गिरा उचारी। हम हैं कौशल राज कुमारी॥
नहिं जाना को बन में लावा। सुनि सुमंतु तुरतै उठवावा॥
लै आये कौशल पुर तामा। रादन होत रहै नृप धामा॥
जाय मजूषा भूपहि दीन्हा। जेहिबिधिमिलासोबर्णनकीन्हा॥
बोले नृप तुम को हौ ताता। कह सुमंतु सुनियेप्रभु बाता॥
अवध पुरी नृप दशरथ नामा। धर्म धुरंधर सब गुणधामा॥
बल निधिलै निधिरघुकुलदीपा। तासु सचिवहमअहनुमहीपा॥
सुनि राजा बोला कहि धन्या। तव नृपका बरिहौं मैं कन्या॥
तुरतै नाऊ बिप्र पठावा। नृपके टीका आइ चढ़ावा॥
चली बरात बिपुल नरनाहा। बड़ी धूमते भयो बिवाहा॥
बिदा कराइ फिरे जब धामा। मगखरादि रोक्योसुनिनामा॥
कौशल्यै पल भुनि थलराख्यो। शिवबरदानअभयगुरुभाष्यो॥
आपसमर करि असुरबिडार्‌यो।देखिबिजयसुरजयतिउचार्‌यो॥

दो० तहँ बिरधासन सुतसुता नामसागरा आनि।
दीन्ही ब्याहिसुमंतुकहँसुभगगर्गकुलजानि॥

दीन्ह्यो दायज बिबिधिप्रकारा। भये मुदितमुनिसहितभुवारा॥
पुनिह्वै बिदानिलय निजआये। बहु बिधि दानयाचकनपाये॥

तब केकयी सुमित्रा परनी। तिन पाछे ब्याहो बहु घरनी॥
करहिं सदा सेवा सब रानी। पालैं भूप प्रजहि सनमानी॥
नव सहस्र संबत चलिगयऊ। तबनृपके मनबिस्मय भयऊ॥
त्रयपन गे चौथो अब जाता। हमैं पुत्र नहिं दीन बिधाता॥
बिन बालक सुख कौने काजा। सकल जानिदुखकेरसमाजा॥
जलबिनसरजिमिगृहबिनदीपा। तिमिबिनअंगजमलिनमहीपा॥
यहि बिधिकरिबिचारमनमाहीं। आये चलि बशिष्ठ के पाहीं॥
माता पिता गुरू बड़ भाई। साधुन के ढिग आपुइ जाई॥
चरणनाइ शिर आयसु मांगी। निज कामना कही अनुरागी॥
दुख सुख मंत्र औषधी दाना। सुहृदबिनानहिंकरियबखाना॥

दो० सुनि बशिष्ठ बोले मुदित भूप धरहु मनधीर।
कहैं हैं तुम्हरे चारिसुत गुणसागर बरबीर॥

अब तुम सुत बिभांड के जावो। शृंगी ऋषै इहां लै आवो॥
हैं नृप निकट प्राग में आये। लोमपाद मख हेत बोलाये॥
पठै अप्सरा कानन माहीं। छल करि सोलाई नृप पाहीं॥
रहै अवृष्टि तासु के देशा। मख कराइ भे सुखी नरेशा॥
ऋषिहिशापडरजेहिबिधिचाही। दीन्हीं शान्ता सुता बिवाही॥
सुनतै नृप निज मंदिर आये। हय गज बाहन बिपुलसजाये॥
रहीं सातसै साठिउ रानी। द्वादश तीनि तायफा जानी॥
मंत्री मित्र सैन अवगाहा। सबके सहित चले नरनाहा॥
पुर बाहेर निकसे नृप जैसे। लागे होन सगुण तहँ ऐसे॥
देखा नकुल निडर दधि मत्सा। बिप्र तिलक युत गोसहबत्सा॥
पूरण घट पट पीत निहारा। बायें मधुप करत गुंजारा॥
दीप अन्न गणिका कृत गाना। औहाती त्रिय खाये पाना॥
नारि ससुवन फूल फल देखे। दहिने पगबग ठाढ़े पेखे॥
चील्ह श्वानमुख भक्ष समेता। श्रुति धुनि आनँद होतनिकेता॥
दहिने मृग मिल तीतर कागा। सारस मोर शोर भललागा॥

खंजन उत्तर दक्षिण प्राची । बायें दिशि खर जंबुकराची ॥
मन महँ हर्ष चलत पर होई । त्यहिसमसगुन औरनहिंकोई ॥
हरि उत्पति कर कारण पाई । मानहुं सांच भये सब आई ॥
यहि बिधि दशरथप्रागहिआये। लोमपाद मुनि लेन सिधाये ॥
लाये निज मंदिर सनमानी । तब नृप नृपते बात बखानी ॥
लोमपाद सुनिअति सुख पावा । शृङ्गी ऋषिते जाइ जनावा ॥
तुम्हैं लेन आये अवधेशा । जाहु नाथ अब इनके देशा ॥
राम जन्म कर आगम जानी । भूप संग चलिभे मुनिज्ञानी ॥
अवध नगर आये ऋषिनाथा । पुरबासी सुनि भये सनाथा ॥
सरयू तट तहँ भा मखसाजा । जुरे बिपुल बैखानस राजा ॥

गीतिका छंद ॥ नृप सारयू के तट कियो आरम्भ जब मख केरजू । सुनिरत्ननानाभांतिहयगजभूपलायेढेरजू ॥ तहँलियेअ-गणितहेमघटद्विजभरेउदकललामजू । यज्ञान्तकेअस्नानकार कमहामंगलधामजू ॥ अरुऔषधिनकोसुरसदीन्ह्योंऔषधीश पठाइजू । बिधिबिष्णुश्रीसलिलेशसिद्धीशंभुगनसुखपाइजू ॥ दिशिपूर्वपश्चिमऔरदक्षिणसिंधकोबरबारिजू । नवरत्नखचितसु कुंभआयेभरेसहसनभारिजू ॥ धनदियोधनदपठाइबहुरहैयदपि इतकमनाहिंजू । अमरेशपठयेदेवतासबगुप्तरक्षकताहिजू ॥ अति ऋद्धिमेंमहिपालशोभितभयोबरुणसमानजू । जबतबयथोचित कर्मकृतकियगुरनिदेशप्रमानजू ॥ महिदेवभोजनरत्नदानसुदेइ आहुतिपर्मजू । यजित्पितकीन्ह्योंसुरनकहँसबभांतिसोंसहधर्मजू ॥ सुरबिप्रआदिकबरणचारोभरेमोदललामजू । बसुअन्नदान महानआहुतिपाइकैअभिरामजू ॥ ऋषिनारदादिकवेदविदबहुल सतबेदीपासजू । लखिपूर्णमखदिनअग्निकीन्हपकरीबिनयप्रकाशजू ॥ जययज्ञपतितुमदेवतनकेबदनहौअभिरामजू । तुमकरतपा वनजगततातेअहैपावकनामजू ॥ हौबहतहव्यसुकहततातेहव्य बाहसमर्थजू । पुनिजातवेदसनामयातेभयेवेदत्वदर्थजू ॥ हरि

चित्रभानुसुरेशअनलहिरन्यरेतारामजू । हौस्वर्गकेतुमद्वारदाता ज्वलनशिखिसुखधामजू ॥ विंगेशविश्वानरछवर्गसुभूरितेजस सर्बजू । सुकुमारसूभगवानरुद्रहिरण्यगर्भअखर्बजू ॥ ऋषिबिप्र देवतदनुजकेतुमयज्ञकारकआमजू । जगधूमकेतुवहेतुहैतवपापना शकनामजू ॥ हेसारभुकतुमदेहुहमकासुमनवांछितफल्लजू । करैंहो मजोमंत्रपढ़ियहहोयतोकरभल्लजू ॥

दो० शृङ्गाऋषि तब प्रीतिते दीन्हीं आहुति सार।
प्रगटे पावक तेज निधि लीन्हे हबिकर थार ॥

बोले रबि नृप हबि यह लीजै । यथायोग निज रानिन दीजै ॥
ह्वै हैं बालक चारि अनूपा । जो प्रथमैं बरणो ऋषिभूपा ॥
असकहि भे भुक अंतर्द्धाना । सुनिसमाजसकलौसुखमाना ॥
तब नृपलीन्ह्योबोलि बिचित्रा । कौशल्या केकयी सुमित्रा ॥
गुरु बशिष्ठ हरि बाट बताये । चारि भाग भूपाल लगाये ॥
उभयदीन कौशल्यै तहियां । तीसर भाग केकयी कहियां ॥
चौथ भाग के युगुल बनाये । कौशिल्या केकई गहाये ॥
तिन मनमुदितसुमित्रहिदीन्हे । निज २ भागपाइसोइलीन्हे ॥
यहिबिधिरूप शील गुणखानी । भईं गर्भ संयुत तिहुंरानी ॥
दिन दिन तेज बढ़त तनजाई । मनहुं उगे बिधुमंदिर आई ॥
सुख समेत कछुकाल बितावा । रामजन्मकर अवसर आवा ॥
भे अनुकूल सकल शुभ योगा । प्रमुदित बिश्व चराचरलोगा ॥
बन उपबन फूले तरु नाना । शीतल मंद चलै पव माना ॥
ब्रह्मादिक नभचर नभ आई । बरषि सुमन दुन्दुभी बजाई ॥
गावहिं गुण गंधर्ब सरागा । अस्तुतिकरहिं देवमुनिनागा ॥
चैत शुक्ल शशिकर्क प्रमाना । नखतपुनर्बसुअभिजितजाना ॥
मध्य दिवस बिश्रामद जानी । प्रगटे तबत्रिभुवन सुखदानी ॥

चौबोलाछंद ॥ चैत्रमाससितपक्षछपाकरबारजू । नौमीदिन श्रीरामलीनअवतारजू ॥ नीलजलदतनश्यामकामछबिकोटिजू ।

अरुनअलकबिचसुमनधरेजनखोटिजू ॥ शीशमुकुटमणिजटितज
गमगतजालजू। श्रुतिमेंकुण्डललालितितिलकदिहभालजू ॥ कम
लनयननासिकासमेतबुलाकजू। जनुकबिकुजगुरुराहुबसेशुक्रहा
कजू ॥ बिंबाधरबरबदनरदनदमकेंघने। भृकुटीकुटिलकपोलगो
लगहबरबने ॥ कंबुकंठकलबचनबिसदकौस्तुभलसै। उरमोति
नकीमालमनहुंघनमेंबसै॥भुजगभोगभुजदण्डचण्डधनुशरलिहे।
कटिनिषंगसबअंगअलंकृतहैंकिहे ॥ परदेहींपटपीतपिछौरीपाट
की। युगुलजरकसीजामदामअनघाटकी॥चरणकमलमुनिबिमल
जिन्हैंनितध्यावहीं। अंकुशादिबहुचिन्हसदामोहिंभावहीं ॥देखि
अलौकिकरूपभूपकोशलसुता। बोलीजयजगदीशचरितवअद्भु
ता॥बरणिनजानैंवेदभेदबिनखेदजू। प्रणतपालसबकालकुटिल
कृतछेदजू ॥ जयअनंतसुरसंतकंतभगवंतजू। जनमनमानसहंस
बंशबिचरंतजू॥ कोटिकोटिब्रह्माण्डरोमप्रतिजासुजू।सोममजठर
निवासबड़ीउपहासजू॥ तबप्रभुपूरबकेरिकथासकलौकही। पुनि
बालकरूपलगेरोदनसही ॥ सुनिनृपरानीसकलउठींहरषाइकै।
कौशल्यापहँतुरतपहूंचीआइकै ॥ दीखसुवनसुखराशिसकलसौं
दर्यकी। कीनकृतारथहमेंकृपामुनिवर्य्यकी ॥ खबरिपाइअवधेश
परमआनँदलह्यो। बाजहिंबाजनबोलिबजनिहनतेकह्यो॥ आप
सुमंतुसमेतगयेचलिधामको। शिशुमुखसुखदबिलोकिकरेउपर
नामको॥ पठयेकुलगुरुबोलिसहितमुनिआयहू। त्रिभुवनपतिहि
निहारिमहासुखपायहू ॥ करिमज्जनमहिपाललीनकुशहाथमें।
मुदितलगायेतिलकद्विजनकेमाथमें॥ नंदीमुखनिजपितरपुजाये
हितबरे। गुरुजनद्विजपहिराइपायँसबकेपरे॥ गोगजहयरथहेम
रत्नबांछितदये। बहुरिबन्धुबरमित्रमानमंडतभये ॥ मागधबंदी
सूतजाहिजिनयाचहू। सोइसोइदीन्ह्योंताहिनकोईबाचेहू॥बिप्र
बैश्यनृपशूद्रनिधनबाधनमये। रामनिछावरिलेनभिषारीसबभये॥
नगरनारिनरवृन्दबिलोकनधावहीं। सहजसिंगारसवांरिमनोज

लजावहीं ॥ अंतहपुरधुरजाइउतारैंआरती। निरषिपुत्रकोरूपस्व रूपबिसारती ॥ धन्यआजुकोदिवसधन्यअबकीघरी। धनिरानी कीकोखिजहांजन्मेहरी ॥ धन्यहमारेभाग लागफलफूलमें। करैं निछावरिछोरिगहनअनकूलमें ॥पुरुषोत्तमपरसादचुकैनहिंनेकहूं। याचकहवैहवैभूपगयेबहूतेकहूं ॥ बाजैंबाजनबिपुलअप्सरानाच हीं। गावैंगंध्रबगीतसमयसुखमाँचहीं ॥ देवदुन्दुभीदेइँसुमनबर सावहीं। मृगमदकुंकुमसीरअबीरउड़ावहीं ॥ बंदनवारपताकके तुसजवायहू। गोपुरकलशसुरंग अधिकछबिछायहू ॥ बालकवृद्ध जवानजहांतहंडोलहीं। सुरधरिमानुषरूपभूपजयबोलहीं ॥ तेहि क्षणडावरकेरढाढ़ियकआयहू। राजहिशीशनवाइसुबचनसुनायहू सुनिरौरेकरसुयशपैजहमहूंकरी। निजभूषणसबदेहुरुकुमगेराध री ॥ चलतदेखिबड़पुत्रकह्योअसटेरिकै। दशदन्तीममहेतलयायो हेरिकै ॥ बोलामाँझिलतनयतुरँगतेतीसजू। लायहुममहितमांगि ग्रामगुरुबीसजू ॥ पाछेछोटाडिम्बकह्योडँडभरनका। लायहुमहि षीमांगिबयालिसलरनको ॥ तब बोली मातासुऐसही आयहू। ममहित तेरहुथान पालकी लायहू ॥ पानदान परधान टहलुई तीनिजू। सुनिनृपहर्षसमेतसोजसबदीनिजू ॥ यहिबिधिदानी देखिदासरघुनाथजू। लीनिभक्तिबरमाँगिलागिगैहाथहू ॥ जो यहमंगलगावैसुनैसप्रीतिजू। बसैसोहरिपुरजाइमिटैभवभीतिजू॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथ दासरामसनेहीकृतरामजन्मउत्सववर्णनो नामतृतीयोऽध्यायः ३॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु गणपगिरा सुखदानि।
कहौं भुशुण्डी चरितकछु लोमस भणित बखानि॥
राम जन्म के समय को उत्सव शोभा सुक्ख।
बरणि सकैं नहिं शेष मैं कहा कहौं यक मुक्ख॥

जो यह नवमी रहै उपासा। सो नर बसै राम के पासा॥
वेद पुराण कहत सब कोई। यहिसमबरतअपर नहिंहोई॥
जन्मस्थान दरश जो करई। सो रबिसुत पुर पाँव न धरई॥
जन्मभवन के उत्तर कोना। बीसधनुषपर महलसलोना॥
तामें पुत्र केकयी जावा। दशमीके दिन परम सोहावा॥
दक्षिण ओर सुमित्रा धामा। तीसधनुषपर अतिअभिरामा॥
जन्मे उभै सुवन तिन तामें। रुचिरदिवस हरितिसरेजामें॥
षट तिल यव त्रै अंगुल होई। चतुरांगुल कर मुष्टिक सोई॥
षट मुष्टिकका दण्ड बखाना। अष्ट दण्ड का धनुष प्रमाना॥
केकै भवन सुमित्रा केरे। भई भीर मग मिलत न हेरे॥
यहि अवसर मुद मंगल शोभा। कहिको सकै देखि मनलोभा॥
दश स्यंदन उरभा सुख जैसा। बरणि सकै को जग में ऐसा॥
तेहि क्षण योजन माँगत जोई। ताहि देत हँसि भूपति सोई॥
देश देश के याचक आये। हय गय रत्न अनेकन पाये॥
भये रङ्क ते सब धनवाना। जहँ तहँ करैं बड़ाई नाना॥
अति प्रसन्न ह्वै देहिं अशीसा। जियें सकलसुतकोटिबरीसा॥
अवधपुरी शोभा अधिकाई। जनु देखन बरषा ऋतुआई॥
अगर धूम घन घटा समाना। बाजत बाजन गरजत जाना॥
बंदीगण गुण बरणत मोरा। भवन वेद ध्वनि दादुरमोरा॥
बरषत सुमन देव रँग भूरी। कर्दम मन कुंकुम कस्तूरी॥
बिबिधि जीव नर संकुल राजैं। बिपुलबिटपतृणहरितबिराजैं॥
जहँ तहँ कलश दामिनी चमकैं। मन्दिर मनि खद्योती दमकैं॥
मुदित धेनु सुरनरमुनि धरनी। आक जवास असुरक्षयकरनी॥
सम्पति पाथ बटुरि पुर लागा। याचक पूरण भये तड़ागा॥
बचन बदत सब जहँ तहँ डोलैं। झन्न झन्न जनु झींगुर बोलैं॥
यह सबचरित जाय तबजाना। जब उरबसैं आय भगवाना॥
निज निज नगर देवमुनि भूले। देखत फिरैं बीथिकन फूले॥

नाचहिं चपल अप्सरा नाना। हरष समेत देहिं नृप दाना॥
रत्न जटित पलना लैं आवा। बढ़ई नेगु सुइच्छित पावा॥
कजरौटा लै दीन लोहारा। देखि भूप नग दये अपारा॥
मालाकार अग्रधरि डाली। पारे जलज थार भरि माली॥
नृपकर बाल सुबनिक ममाला। मन भावत बर दीन भुवाला॥
यहि प्रकार ते सब पुरबासी। पायनि नेगु दास अरु दासी॥
कौतुक देखि भूलि रबि गयऊ। मास एक कर बासर भयऊ॥
खबरि पाइ उरधरि नृप ढोटा। बिमन गये रबि परबतवोटा॥
अस्त भये रजनी तब आई। बाजहिं घरघर अवधबधाई॥
गई रोशनी सब पुरसाजी। लागी छूटन आतशबाजी॥
जरे कमल फन्नूसैं झाड़ैं। मानहुँ भये नदिन मनिआड़ैं॥
स्वाँग अनेक बिदूषक करहीं। सबनरमगनबिलोकतफिरहीं॥
जासु उदर बस भवन अपारा। सोवत सेा प्रभु सूप मँझारा॥
सपनेहु जेहि मन खेद न होई। कहां २ करि रोवत सोई॥
पालत विश्व सकलसुखपावत। कौशल्यात्यहि क्षीरपियावत॥
महिमा जासु जात नहिं जानी। तिन्हैं गोदलै बैठत रानी॥
दो० जाहि महेश विरञ्चि मुनि सुमिरत ध्यान लगाइ।
तिनके तन नित सरगरी तेल लगावत आइ॥
सुनौ शिवा सन्तन सुखदाई। भक्ति बछलता प्रभुदिखराई॥
यहि बिधि बासरपाँचबितायेा। छठवें दिवस छठी करवायेा॥
जाति बंधु नृप नेवति जेंवाये। भूसर सकल दक्षिणा पाये॥
देखि महोत्सव सुरमुनि सारे। प्रमुदित निज२भवन सिधारे॥
बरहें दिवस जेा बरहों कीन्हा। पुनिबहुदानद्विजनकहँदीन्हा॥
कछुककाल सुखसहितबितावा। नाम करण का अवसरआवा॥
गुरु बशिष्ट नृप बोलि पठाये। बिप्रन सहित तहांचलिआये॥
उठि नरेश सबहिन शिरनावा। षोड़श भांति पूजि सुखपावा॥
लोक वेद बिधि मुनि करवाई। शिशुनसहिततिहुंरानिबोलाई॥

आईं मुदित सुवासिनि सङ्गा। उमा रमा शारद धरि अङ्गा॥
मिलि लललनमा भई शरीका। देखैं बाल बिनोद हरीका॥
चारु चौक बैठीं सब रानी। शोभा शील सुकृत की खानी॥
गोद मोद निधि बालक लीन्हें। चितवतबड़भागी मन दीन्हें॥
रक्षा ऋचा ऋषिन उच्चारी। गणपगौरिद्विज साधुपुरारी॥
सबसब बिधि पुजाइ अनुरागे। गणिगुणिनामधरनमुनिलागे॥

दो० जासुतेज चर अचर में ब्यापक ब्योम समान।
तासु राम अस नाम जो सुख सागर भगवान॥
बिश्वभरतसोइभरतभनिभवभञ्जनगुणजासु।
जेहि सुमिरे रिपु होइहत नाम शत्रुहन तासु॥
सब लक्षण युत होइ जो जानै जिय के काम।
रामानुजप्रिय भूमिधर तस्य लषणअसनाम॥
तेबड़ भागी जीवजे करिहैं इनते प्रीति।
पैहैं बिन श्रम सकल फल जैहैं जगरिपुजीति॥
यहिविधिसुन्दरनामसु निहरष्योसबरनिवास।
दीन दान सनमान निज गेमनमुदितनिवास॥

सो० पुनि कछु दिनमें आइ पहुँच्यो प्रासनअन्नकर।
सुनि पुर लोग लुगाइ हरष सहितसबसेकहैं॥

छंद॥ सखिआजुश्रीअवधेशसुतकोअन्नप्रासनआहिजू। चट चलहुचलिअवलोकियेचखचकृतनाहतकाहिजू॥ सुनिसकलसाजिशिँगारआईंअमितमुदमङ्गलजहां। लखिललकिलीन्ह्योंलाइरानिनदीनआसनजसचहा।बहुभांतिकेभएसकलब्यञ्जनबिबिधिबिधिमिष्टान्नजू। नृपजातिबंधुबोलाइपठयेपरतपहुंचेकानजू॥ तब कौशिलाकेकैसुमित्रासुवननिजनिजउबटिकै। अन्हवाइतनपहिराइभूषणबसनसुन्दरडुपटिकै। पुनिकनकथारभराइजाउरिधरीघृतमधुलाइकै॥ महिपाललैलैमुखजुठारतउठींयुवतिनगाइकै। परकारषटरसकेरजहँलौंसकलअधरछुवायहू। पुनितनकजलते

पोंछिआननजननिढिगपहुंचायहू । हियहरषिशिशुमुखचूमिसु-
न्दरिसकलदुलरावेंलगी॥ अनपारभैजेवनारनिजरुचिसरसतहँ
रहैंकाखगी। यहिभांतिसुखदिनरातिभोगतधन्यपुरनरनारिजू ॥
रघुनाथकौशिलनाथसुतछबिनामपरबलिहारजू ॥
दो० बरष गाँठि पाछे भई गई दगाई बाढ़ि।
बिप्रनदीन्हींद्रव्यबहुलीन्हींकीरतिगाढ़ि ॥
बारे हिते पति भृत्य ज्यों रामलषण कै प्रीति।
भरत शत्रुहन की रहत तेही तरहकी रीति ॥
श्याम गौर जोरी दोउ देखी । जननिजनकसुखलहैंबिशेषी ॥
लै उछङ्ग बहुबिधि दुलरावैं। छबिबिलोकितृण तोरिबहावैं॥
रूप शील निधि चारौ भाई । तदपि राम शोभा अधिकाई ॥
मेचक मुदित कलेवर पीना । पहिरे पीत झाँगुली झीना ॥
उनमुख चिकुर चिक्कने सोहैं । शिर चौतनी अमोलिकमोहैं ॥
ललितभालमसि बिन्दु बिराजै। भृकुटीकुटिलश्रवणअतिभ्राजैं॥
कठुला कण्ठ बाघनख नीका । नीरज नयन मयनशरसीका॥
द्वै द्वै दशन कपोल अनूपा । बिम्बाधर आनन द्विज भूपा ॥
चिबुक चारु नासिका सोहाई। लटकनकीलटकनिमोहिंभाई ॥
पङ्कज पाणि पहुँचियां राजैं । नखद्युतिलखिमुक्काहललाजैं ॥
उरबर बाल बिभूषण पेखा । नाभि गँभीर उदर त्रैरेखा ॥
कटि किंकिणी कुघरि डगडोलैं। झुनु झुनु झुनु झुननपुर बोलैं ॥
पद पाथोज जनित तल जोहैं। चारुचिन्ह अरतालिस सोहैं ॥
स्वस्तिक अष्टकोन श्रीकेरा। हल मूशल पन्नग शर हेरा ॥
नभ नीरज रथ बज्र अघाता । ऊर्द्ध रेख सुरतरु सुख दाता ॥
अंकुश ध्वजअरु मुकुट छबीला। चक्र सिंहासन दण्ड नबीला ॥
चमर छत्र नर यव अरु माला। दक्षिण पदये चिन्ह बिशाला ॥
गोपद पृथ्वी कुम्भ पताका । जम्बूफल अरधात्रक बाँका ॥
द्वरषट कोण त्रिकोण गदारा। जीव बिन्दु सरयू सरिधारा ॥

शक्ति सुधा थल त्रिबली मीना। पूरण बिधु बंशी बर बीना॥
धनुष तूण चन्द्रिका मराला। बाँयें पद ये चिन्ह बिशाला॥
एक एक कर अमित प्रभावा। महा रमायण में शिव गावा॥
सन्त सहाय करन के हेता। दृढ़करि धारे कृपा निकेता॥
इन सब चिन्हन युत रघुराई। बिचरतअजिरजननिसुखदाई॥
जानु पाणि किलकत तहँडोलैं। कल बलबचनमधुरहँसिबोलैं॥
कहैं मातु कब चारिहु भैया। हमैं बोलैहैं कहि कहि मैया॥
कब कर बाण धनुहियां गहिहैं। कब चलि राजसभा में जैहैं॥
कबहुँक करमोदक पकरावैं। जो माँगैं हँसि ताहि खवावैं॥

दो० जासु शक्ति ते चराचर चलत खात हरियात।
तासु पाणिगहि आँगुरीअजिर चलावतमात॥
कला रूपधरिधरणिजिन लीनिएकपग नापि।
सोइचढ़ि सकत न पलँगपर रहत देहरीचापि॥

कबहुँक हँसि नृप गोदै आवैं। कबहुंककिलकिमातुढिगजावैं॥
कबहुंक परि पेलना में झेलैं। कबहुंक बिबिधिखेलौना खेलैं॥
जिन्हैं काल सब काल डेराई। सो प्रभु देखि डेरतनिजझाँई॥
जासु अजाबश शिव चतुरानन। नाचत सो प्रभु नाचतआँगन॥
दम्पति प्रेम बिवस भगवाना। बाल बिनोदकरत बिधिनाना॥
एक दिवस करि मातु बिबेका। असन सँवारे भाँति अनेका॥
इष्टदेव श्री रंग सभावा। बसन ओटकरि भोगलगावा॥
तेहि क्षणतहँ शिशु पावतदेखा। पेलना निकट गई तहँपेखा॥
पुनिइतलखिपुनिउतलखिपावा। कौशल्या के मन भ्रमछावा॥
मातहि बिकल जानि रघुबीरा। देखरावा निजथूल शरीरा॥
सादेतीनि कोटि बपुवारा। कच कचप्रति ब्रह्माण्डनिहारा॥
अण्ड अण्डप्रति आनिबिधाता। अपरबिष्णुशिवसुरदिशित्राता॥
अगणितरबिशशिसरितताड़ागा। किन्नरखगपशुनरमुनिनागा॥
पितर पिशाच निशाचर जाती। काल कर्म गुण नाना भांती॥

देखी माया सबै नचावै। लखी भक्ति जोतिन्हैं छुड़ावै॥
देखे द्वीप उदधि तरु खण्डा। देखी अवधिसकल ब्रह्मण्डा॥
अण्डकोस प्रति आपन रूपा। देखासोइशिशु चरितअनूपा॥
हाथ जोरि तब बिनती ठानी। जयप्रभुगुणातीत गुणखानी॥
जगत पिता तुम अज भगवाना। मैं बिन ज्ञान पुत्र करिमाना॥
सुनि बिनती बोले रघुराई। हमें छाँड़ि केहि पूजत माई॥
हम तव भक्ति बिवस तव तीरा। गइउँभूलिलखिबालशरीरा॥
तेहिते मैं निज भूति देखाई। काहूते जनि दिह्यो बताई॥
कौशल्या तब बचन सुनाया। अबमोहिंजनिव्यापैतवमाया॥
एव मस्तु कहि पुनि भगवन्ता। ह्वैगे बालक रूप तुरन्ता॥
देखि मातु फिरि दूध पिवावा। ईश जानि अति प्रेम बढ़ावा॥
कबहुँक लै पौढ़ै सुठि सेजा। कबहुँक लेहि लगाइ करेजा॥
कबहुँक कहै नींद किन आवै। हित करि मेरो लालबोलावै॥
कबहुँक करि सब तन शृङ्गारा। पठवैं जहाँ भूप दरबारा॥
देखि नरेश लेहिँ उर धारी। चितवैं नर सबपलकबिसारी॥
जोकोई निज निकट बोलावैं। प्रीति परखि ताके ढिगआवैं॥
मुनिजन ध्यान लगावत जाही। पुरजन अछत खेलावतताही॥
सबै सुलभ तिनका सबतीरा। जिनपर कृपाकरैं रघुबीरा॥
एकदिन काग भुशुण्डी तेरे। किये चरित अति अद्भुतहेरे॥
कछु दिनमें कन छेदन आवा। हरषिसखिनतेसखिनजनावा॥

गीतिकाछंद॥ सखिआजुनृपसुतकेरहेकनछेदनोचलिदेखिये दमदानहरिगुणगानजीवनजन्मकरफललेखिये॥ नवसातसाजि शृंगारआईअयनजहिरचनारची।चहुंभाइकरनगहाइदीन्ह्योंमाल पूरीगुरसची॥ हरिहँसतबिहँसतब्रह्मलखिधकधकीमातनकेहिये भरदेतरोचनसींकतेश्रुतिनीरधूरैकरिलिये॥ अतिचतुरलीन्हेछे-दिक्षिप्रैउठेशिशुअकुलाइकै। भरिनयननीरजनीरजननिलीन हृदयलगाइकै॥ मणिबस्त्रमुक्ताकरिनिछावरिदीनमहिदेवनघने।

पहिराइपुरजनसकलमानहुँमाररतिबपुबहुबने ॥ सुरअङ्गनामी अवधबासी सरसदासीकेनहीं । रघुनाथउपमादेइ तबजबहोइ त्रिभुवनमेंकहीं ॥
यहि प्रकार जब चारिउ भ्राता । बड़े भये परि जन सुखदाता ॥
चूड़ा कर्म आइ गुरु कीन्हा । नृपबहुदानद्विजनकहँदीन्हा ॥
अनुजसखा सब मिलिनिजसेरे । खेलैं खेल महीपन केरे ॥
भूप रसोई जीमन आवैं । जबतब मातु बोलावन जावैं ॥
क्रीड़ा शक्त देखि सब भाई । बोली तब कौशल्या माई ॥
अहो लाल हे लछिमन भैया । भरत बत्स रिपुसूदन कैया ॥
अब क्रीड़ा दिशि चित्त न दीजै । देर भई चलि भोजन कीजै ॥
बैठे बाट बिलोकत राजा । क्षुधितभयेसब सखासमाजा ॥
इमि सुनि प्रेम बचनचलिआवैं । बैठि भूप ढिग भोजन पावैं ॥
कौनेउ दिन आवैं नहिं टेरे । जननी धरन जात तबनेरे ॥

दो० मातहि आवत देखि प्रभु ठुमुकु ठुमुकु चलिदेत ।
झपटि कहत तब भूपपह लै आवत करिहेत ॥

सुभगशरीर सुरभि रज लागी । झारि सु अंचलते अनुरागी ॥
लखि नृप निकट लिये बैठाई । मिलि जेंवत तब चारिउभाई ॥
इत उत चितै चलेपुनि भागी । अरुणअधरहँसिजाउरिलागी ॥
पुनि आवैं जहँ बालक सारे । देखि मातु पितुहोंहिंसुखारे ॥

दो० नृपरानिनकरभाग सुखसम्पति सुयश सुभाउ ॥
मैंका वरणौं एक मुख कहि न सकैं अहिराउ ।

खेलत देखि नारि पुरकेरी । जाइ भवन भजि आवैफेरी ॥
पुनिघर घूमि सखिनते कहईं । जेकोइ पवरि परोसे रहईं ॥
जबते मैं नृप तनय निहारा । तबते रुचत न जग ब्योहारा ॥
अस मनु होइ खेलावहि करहूं । टरौं न परि गुरुजन कहडरहूं ॥
कबहुंक निकसि दुवारे आवैं । लै उछङ्ग पुरजन घर लावैं ॥
बदन चूमि कर राखि मिठाई । रुख लखि महल देइ पहुँचाई ॥

कबहुंकचुनतबिहँग लखि पावैं। हाथ पसारि धरन तब धावैं॥
उड़ि जब जात करत मचलाई। शुक शारिक दै राखत माई॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथ
दासरामसनेहीकृतश्रीरामचन्द्रबाललीलाबर्णनो
नामचतुर्थोऽध्यायः ४॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपगिरासुखदानि।
कहौं भुशुण्डीके चरित कछु रघुबंश बखानि॥
यहिबिधिबालचरितप्रभुकरहीं। देखि लोगउर आनँद भरहीं॥
यक दिन एक सलूका आवा। नृप के द्वारे कोस नचावा॥
देखि राम ठानी मचलाई। कहेंकि मोहिं कपि देहुमँगाई॥
भूप मँगाइ देन बहु लागे। तदपिन लेत रुदतपुनिआगे॥
तब नृप भाष्यो गुरु ते जाई। सुनि बशिष्ठ बोले हरषाई॥
दो० नेहिहितरावतरामजी सो मरकट है आन।
सुनौ तासु उत्पत्ति मैं तुमते करौं बखान॥
उत्तर दिशि सुमेरु गिरि भारी। तहँ केशरी रहत बन चारी॥
तासु परम पति बरता नारी। नामअंजनी छबि अधिकारी॥
तेहि यकबार कीन शृङ्गारा। ठाढ़ी गिरिपरपवन निहारा॥
बपुधरि तन स्पर्श सु कीन्हा। लखिमोचहीशाप कटुदीन्हा॥
बोलेतब नभ सुत सुनु प्यारी। मम स्पर्श सकल तनुधारी॥
तेहिते मोहिं शाप जनि देहू। हम बरदान देन सो लेहू॥
होई तुम्हरे सुत बलवाना। रामभक्त गुणरूप निधाना॥
असकहिअनिल अदर्शितभयऊ। सुखयुतकछुककालचलिगयऊ
कार्तिक बदी चतुर्दशि बारा। शनिकदिनभाप्रगटकुमारा॥
लखि पितुमातु कीन उतसाहा। लागे सुत सेवन जसचाहा॥
प्रात अरुणरबि निरखिफलंगा। ग्रसतभयो फलसरिसपतंगा॥
झपटि बज्र मारा सुर राई। चिबुक मध्यतेहि मुरछाआई॥

देखि पवनसुत लीन उठाई। राखी रोंकि समीर रिसाई॥
चढ़े उदर सब देवन केरे। आये तब आसुग के नेरे॥
करि बिनतीसुर सकल सुजाना। लागे देन सुतहि बरदाना॥
कह ब्रह्मा होई बजरंगी। लगी न ममशर शक्तिअभंगी॥
बोले बृहद जरी नहिं आगी। इन्द्रकह्योममकुलिशनलागी॥
हर त्रिशूल यमदण्ड सुनावा। बारि न बूड़ै बरुण बतावा॥
बाली शक्ति भक्ति लखि नेकी। बचनमोर यहिसकै न छेंकी॥
दो० यहिबिधि सब बिबुधनदये बर बरदाननि होरि।
सुनि प्रसन्न भे श्वसन तब छूटी पवन बहोरि॥
प्राणदान देवन जब पाये। महाबीर कहि भवन सिधाये॥
हनूमान हनि दुरमति नासा। लागे रहन मातु पितु पासा॥
जब तब जाइ मुनिनकेतीरा। डारै फोरि कमण्डल नीरा॥
बिटप तोरि गिरिशिखरढहावै। बलअति भूरि अंग धुनिह्वावै॥
ऋषिनशाप तब दीन बिचारी। भूलि जाहु निज पौरुषभारी॥
जब जब कोई सुरति कराई। तबफिरि तुम्हरे बलह्वैआई॥
रहे तहां कछुदिन हरि आसा। पुनिगे पढ़न सहस गोपासा॥
लागे पढ़न जोरि कर आगे। करत मुखागर उन्मुख भागे॥
बिद्या सकल पाइ अस भाषा। मांगौ जो तुम्हरे अभिलाषा॥
बोले रबि मम सुत सुग्रीवा। रीक मूक पर रहत सदीवा॥
तिनके तीर रहो तुम जाई। मिलिहैं तहां तुम्हैं रघुराई॥
गुरु अनुशासन मानि बिधाता। रहत भानुसुत के ढिग ताता॥
राम लाषण बोले तेहि हेता। लेहु मँगाइ ताहिकरि चेता॥
तुरत भूप भट भूरि पठाये। सकल सुकंठपास चलिआये॥
जोनृप कह्योसो बर्णनकीन्हा। सुनिसुकण्ठ तुरतै कपिदीन्हा॥
लै आये मन्दिर हरषाई। देखि राम उर लीन लगाई॥
हनूमान के अति सुख भयऊ। मिलिलघुरूपतहांहोयगयऊ॥
जहँ जहँ खेलैं राम सुरंगा। तहँ तहँ कपि राखैंनिजसंगा॥

दो० यकदिन यक शिशु अंधको डारीरज प्रभुदृष्टि।
वोरहन दै रघुनाथ तेहि देखरायो दै विष्टि॥

एक दिवस यक बानिक आवा। बेचनहितनग नृपहिदेखावा॥
लै रघुनाथ कूप में डारा। देहु वहैं हँसि भूप उचारा॥
तुरतै वृक्ष कूपते जामा। लागेलाल अमोलिक तामा॥
फरत झरत पुनि लागत भारी। लै लै जात सकल नरनारी॥
सात दिवस भै लूटि बिशेषी। पुनिसो विटप परानहिंदेखी॥
यह लीला लखि भूपति साहू। चकित रहेमन परम उछाहू॥
यक दिनएक बधिक चलिआवा। अद्भुत पक्षी नृपहि देखावा॥
देखि राम लै दीन उड़ाई। बोला खग सोइ देहु मँगाई॥
सुनि प्रभु तासु पक्ष महिगाड़ा। भा तरु तुरत जमें जलडारा॥

दो० लागत फल फूटत तुरत निकसत उड़त बिहंग।
बैठत महलन पर धरन धावत बालक संग॥
पुरबासिन पाले सबनि देखे बिहँग अनूप।
सुनि सुनि तहँ लैलै गये देश देश के भूप॥
बधिकै दीन्हीं दबि बहु भा सबके सुखसोत।
यह प्रभुता कछु बहुत नहिं इच्छाते जगहोत॥

यहिबिधिसानुज राम सुशीला। आठबरसकीन्हीं शिशुलीला॥
जब पौगण्ड भये सब भाई। पढ़न हेत पठये रघुराई॥
गुरु पद जाइ नवाये शीशा। लगे पढ़ावन मुदित मुनीशा॥
पढ़त भये प्रथमें बिन खेदा। सामदाम अरु दण्डबिभेदा॥
मिलि सनेह कीजे सोइ सामा। खान पान धन दीजे दामा॥
भेदसो सबलहि फेरि मिलावै। दण्डमार दुख त्रास देखावै॥
राजन के लक्षण ये जानौ। तिन पाछे असपढ़ौ बखानौ॥

दो० बरण वेद उपबेद अँग आदि शास्त्र उपशास्त्र।
सकल पुराणौ संहिता तंत्र सुमंत्र कलास्त्र॥
निकस्यो नहीं तबर्ग के अंतका अक्षर शुद्ध।

जान्यो तब रघुनाथ सुनि हैं गुणबिषे बिरुद्ध ॥
अचिरकालसब बिद्या लीन्ह्यो। बहुबिधिगुरुहिंदक्षिणादीन्ह्यो॥
भये मुदित मनपितु अरु माता। खेलन जाहिं जहांसबभ्राता ॥
देखि लोग सब होंहिं सुखारी। थकित बिलोकैं छबिनरनारी ॥
यौबन जठर अपर जे बारे। लागहिं सबन प्राणतेप्यारे ॥
सुदिन समुझियकदिननरनाहा। दीन जनेऊ सहित उछाहा ॥
नित्यानन्द निरोधि अपारा। क्षणक्षणबाढ़तअवध मँझारा ॥
पुरबासी सब ताके माहीं। रहैंनिमग्न सुरति कछुनाहीं ॥
नारदादि मुनि दिन प्रतिआवैं। चारुचरितचहि चहुँदिशिगावैं ॥
सुनि सुर सकल सराहहिं प्रेमा। सुमन चढ़ावैं हित निजक्षेमा ॥

दो० यकदिन ध्यान बशिष्ठ मुनि करतदेखिऋषिदेव।
कह्यो बिघ्न करवाइकै प्रगट गोद किन लेव ॥

एक दिवस प्रभु सरयू माहीं। अनुजसखनयुतमुदितनहांहीं ॥
असुर एक रावण कर प्रेरा। मगर रूप धरि मुखमें गेरा ॥
निकसे सपदिताहि हरिमारी। सुनिपुरजन सबभये सुखारी ॥
जिन जिनके बालक तेहिखाये। दीन्हे काढ़ि मनहुँ धरिआये ॥
मातन दीन्ह्यों दान अपारा। गुरु प्रसाद कल्याण हमारा ॥
इमि पौगण्ड अवस्था माहीं। किये चरितबहु बरणिनजाहीं ॥
पुनि सब बंधु भये कैशोरा। रूप राशि पुरजनचितचोरा ॥
दिन प्रति सरयू करि असनाना। बहुबिधिदेइँद्विजनकहँदाना ॥
कबहुंक चढ़ि निज नाउ मँझारा। खेलैं दृग जामध्य नेवारा ॥
कबहुंक सानुज सखा सुजाना। खेलैं गेंद जाइ चौगाना ॥
कर कर कंदक घूमत कैसे। हरिपदबिमुख जीवजगजैसे ॥
कबहुंक चढ़ि बर बाजि नचावैं। पुरबासी लखिअतिसुखपावैं ॥
कबहुक बदि ठानैं घोड़ दौरा। धरिनिजनिजमोहरैंयकठौरा ॥
भरत संग जब बाजी लागै। तब प्रभु कसेरहैं निज बागै ॥
कहैं सकल हारे रघुराई। जीते भरत भावते भाई ॥

सुनि बकसत हय गय पटहीरा। प्रमुदित होइँ पाइ सबबीरा॥
कबहुंक अनुज सखन के साथा। बिचरहिंपुरधनुशरगहिहाथा॥
यकदिन इक मज्जन कृत नारी। देखन लगी तासु महतारी॥
बोली बसन विना कोइ देखी। को असइन्हैंछांड़िमोहिंपेखी॥
तैं नृप तनै न अबै निहारे। परे दृष्टि तेहि अंग हमारे॥
कबहुंक जाइ अखारे न लरहीं। अनुजसखनयुतकसरतकरहीं॥
कबहुंक राखि निशाना मारैं। मज्जन करिपुनिगृहपगुधारैं॥
देखि मातु अतिशय सुख पावैं। नृपयुत भोजन हेत बोलावैं॥

मंजुछंद॥ जेवनबैठभूपमौलिनिजसंगसुवनलैचारीजी। सहि तसनेहपरूसनलागीं लषणलालमहतारीजी॥ मोहनभोगमखा नेकीहविमधुरमलाईधारीजी। खोवाखांड़खरिकखरजूरीखाजा खुरमाखारीजी॥ मालपुवामाधुरि मधुमिश्रीमलिमाखनमेंडारी जी। पन्नीपूपपटपरीपापरपाकपिराकपनारीजी॥ मोतीचूरमूरके मोदकवोदककीउजियारीजी। सेमईसेवसैंजनासूरनसोवासरस सोहारीजी॥ उज्जलभातुभटाकरभरता भाँतिभाँतितरकारीजी। मूंगमाखमरहटकीपहितीचनक कनकसमदारीजी॥ बरीबरीक बराबहुबिधिके ककरीकटुकटहारीजी। पाकरिकलीफलीमुनितरु कीकूष्माखडकचनारीजी॥ परवरपोइपकौरीपालक पेठासनरुचि कारींजी। अरुईआँबअँबिरतीअदरखअँवराअमितअचारीजी॥ रोटीरुचिरमिहींमैदाकीघृतमेंबोरिनिकारीजी। मेथीमरससेमिदल सरसोंसोवासुचिसुरवारीजी॥ चौराइतोराइतो तोरईमुरइमुरब्बा भारीजी। डुभकौरीमुंगछौरीरिकवछ इँडहरक्षीरछँछौरीजी खट्टी कढ़ीकरेलाकुंदुरूकेला फलफलहारीजी॥ गरीबदामछोहाराकि शमिशपिस्तादाखअपारीजी। खेखसाखीचचेड़ाघेवरघनगुंझा गुदियारीजी॥ फेनीफूलनिमोनाडँडसारूप रतालूग्वारीजी। जलितजलेबअँदरसाबुकुनूदधिचटनीचटकारीजी॥ यहिबिधि चारिभांतिषटरसकेव्यजनबिपुलसँवारीजी।कनकथारमनिजटित

कटोरनिभरिभरिधरेअगारीजी ॥ पञ्चकवरकरिजेवनलागेलखि हरषींनृपनारीजी । शीतलजलसरयूकरवासितपीवतबारहुबारी जी ॥ कहतकौशिलाभोजनकीजै बहुरिनपीजैबारीजी । गयनअ घाइमायअबहमतेतनकौटरतनटारीजी ॥ दशस्यंदननन्दनसुखरु खलखिउठेउतिष्ठबिचारीजी । अनुगआइअचवनकरवायो करअँ गुछायोझारीजी ॥ दीनतँबूलअरगजाकुमकुमलीन्ह्यों अवधबिहा रीजी । सीथप्रसाददासदासिनिमिलिपायोसरबपछारीजी ॥ जे हिजूठनिकोसुरमुनितरसतपरसतकबहुंनडारीजी ।सोईजनरघुना थमाथधरिपावतबारहुबारीजी ॥ देवदनुजनरनागरागयुतजननज गदीशअगारीजी। जोजेवनारामकीगावैतामुखकीबलिहारीजी॥

तोटकछन्द ॥ कबहूंबनजाइशिकारठनैं । मृगयादिकसाउजना हिंहनैं ॥ जबशूकरनाहरदृष्टिपरैं । तुरतैनिजबाजिनतेंउतरैं ॥ ल खिरामकहैंहथियारधरौ । यहितेअबएकहिएकलरौ ॥ करियुद्ध पछारतजौनसखा । तेहिदेतइनामैंश्रीरामलखा ॥ निजधामपठा वतसाउसो । घरआवतगाबतराउजसो ॥ रघुनाथकहैंयहिभाँति प्रभू । नवनित्तचरित्तकरैंबरभू ॥

यक दिन यक शूकर बनआवा । घुरघुराइ प्रभुसन्मुख धावा ॥ गहिपद पटक्यो भूमिभुजासू । छूटत भयो दिव्य बपु तासू ॥ अस्तुतिकरि अस बचन उचारा । पूरब प्रभुमैं रह्यों भुवारा ॥ एक दिवस तब जन लखिपावा । बशअभिमान न शीश नवावा ॥ निन्दा करि निज मंदिरआयों । तेहि अपराध कोलतनुपायों ॥ अबतव दरश दूरि दुखभयऊ । अपकहिपरमधाम कहँगयऊ ॥ यक दिन मैं नाहर ते भेंटा । तेहिशठ प्रभुपर कीन झपेटा ॥ साधि बाण मारा रघुराया । तनुतजिसोहरि लोकसिधाया ॥ यहिबिधिबनशिकारमिलिजाई । पावन करैं जीव रघुराई ॥ खगमृगनिरखिनिकटचलिआवैं । तिन्हैं न कबहूं भूलि सतावैं ॥ जे उतपात करैं गति हेता । तिन्हैं देइँ हति कृपानिकेता ॥

दो० एकदिवस यकसिंहने बधी बिप्र की गाय।
गरजत डोलै पुरनिकट कोई पास न जाय॥

सुनि रघुपति कसिकटिपटबांधा। धनुष चढ़ाइ पानिशरसाधा॥
मुदित जाइ सन्मुखललकारा। खलहो सजग तोहिं मैं मारा॥
इतना सुनि सन्मुख सो धावा। पञ्चबाण मुख मारि गिरावा॥
तुरत भयो सो गंधर्ब रूपा। बिनतीकरिनिजहालनिरूपा॥
महाराज मैं गंधर्ब अहऊं। इन्द्रसभा नितगावत रहऊं॥
एक दिवस नारद तहँ आये। नाथचरित तब बरणिसुनाये॥
तेहि समाज मैं हँस्यों ठठाई। सुनिमुनि बोलेबचनरिसाई॥

दो० सिंहनाद सम करत सठ होउ जाइ हरिहार।
मरिहैं निजकर राम जबतब होई उद्धार॥
यहितन पायों अमित दुख अबसबनाशेशोक।
असकहि पद शिरनाइकैजातभयउनिजलोक।

तब नृप पहँ आये रघुराई। तहां बिप्र ठानी मचलाई॥
कहत सुरभि सोई मम दीजै। भूपति भनत अपर बहुलीजै॥
तब राघव बोले सुनु ताता। झरितरु बहुरि न लागै पाता॥
गई बीति बय पुनि कहुँ आवै। समय चूकिफिरिकापछितावै॥
तेहिते तजहु आश तेहिकेरी। अपर धेनु लीजै बहुतेरी॥
तदपि न बिप्र तजी हठताई। देखा चहत राम प्रभुताई॥
तब प्रभु कहा लषण ते जावो। बिप्र समेत ढूंढ़ि गोलावा॥
चढ़ि रथगये प्रथम यमलोका। लखिउरभाँतिनके सुखशोका॥
षोड़श भाँति पूजि सनमानी। हाथ जोरि बोले मृदु बानी॥
नाथ कौन हित आयहु आजू। आयसु होइ करियसोइकाजू॥
बोले लषण बिप्र की गाई। दीजै आनि होइ जो आई॥

दो० सुनिबोले यमराय पांचकोश तक अवध में।
जो कोई मरिजाय सोनहिंआवत धाममम॥

करम करत भल पोच घनेरे। तिनकर न्याउ हाथ हरिकेरे॥

जैसे राज सभा कर कोई। तेहिते कछु भलअनभलहोई॥
तासुनिसाफ करै सोइ राजा। नाहिंनकछुकोतवालटेकाजा॥
सुनि रथचढ़ि चलिभे ततकाला। जाइ बिलोके सकलपताला॥
पुनि चढ़ि सातौ स्वर्ग ढुंढ़ाये। तेहि पाछे बैकुण्ठहि आये॥
रहत जहाँ श्रीपति भगवाना। कीन दण्डवत तिनसनमाना॥
पूंछे ते बरणा निज हेता। तिन तब कहा जाउ साकेता॥
योजन कोटि पचास अगारा। रहत राम इच्छा आधारा॥
दो० जहां न पावकपवनपवि चन्द्र सूर्य्य नहिंकोय।
रहत एक रस सर्बदा राति दिवसनहिं होय॥
सुनि चलिभे देखा सोइजाई। बसत रतनमय छविअधिकाई॥
चारि द्वार त्यहि पुरके हेरे। बाजत बाजन भांति घनेरे॥
उत्तर बसत महा बैकुण्ठा। महाबिष्णु जहँ रहत अकुण्ठा॥
बिरजा बिमल बहत पुरतीरा। मज्जन सन्तसकलमतिधीरा॥
ज्योति एक जहँ जरत निराशा। कोटि भानु समतेज प्रकाशा॥
योगी जन जेहि सादर ध्यावैं। अन्तसमय त्यहि माहिंसमावैं॥
पूरब द्वार जनक पुर सोहै। दक्षिण चित्रकूट मन मोहै॥
पश्चिम दिशि गोलोक निहारा। जहां करत गोपाल बिहारा॥
षोड़श संबत केरि अवस्था। बपु छबिलखि कोहोयनमस्था॥
पहिरे भूषण बसन अमोला। मृदु मुसक्यानिमनोहरबोला॥
दो• पीत बसन बनमाल उरकर मुरली मुख पान।
परिकर सहितसमूहसखि सोहत इमि भगवान॥
रहतीं हैं सुरभी त्यहि माहीं। पूछा जाइ लषण तिन पाहीं॥
ब्राह्मण की कपिला इत आई। सुनिदीन्हीं गिरिधरन मँगाई॥
मुदित मध्य साकेतै आये। मंदिरबिपुल बिचित्र सोहाये॥
जो रचना निरखी कहुं नाहीं। सो सब देखी ताके मांहीं॥
दिव्य परू सब तहां के बासी। पटबिकार बिननित्यसुपासी॥
आगे सीतहि देख्यो जाई। रूप अनूप अमित प्रभुताई॥

जासु अंश उपजैं गुण खानी । अगणित लक्ष उमा ब्रह्मानी ॥
अगणित सखी करैं सुठि सेवा। अगणित अली लिहेकरभेवा ॥
अगणित अनुग करैं परणामा । अगणितसन्त उचारहिंनामा॥
अगणित शक्ती हरि गुण गावैं। तिनमा तेंतिस मुख्यकहावैं ॥

रोलाछंद ॥ श्रीभूलीलाक्रांतिकृपा योगीईशाना। उत्कृष्णा भीषनीचन्द्रिकाकूराज्ञाना ॥ पुण्यापरवीकलाकीर्त्तिअहलादिनि क्रांता। भाबिन्याशोभनालंबिनीविद्यासाता॥ईलानुग्रहमहोदया उन्नतीसुबिमला । छातानंदनिशुभदसत्यसोकाहितबिमला ॥ एशक्तीतेंतीससदासियभृकुटीदिशिलखि । करैंविश्वकरकाजस बनकेसहससहससखि ॥

इन सबहिनकी कीरति करणी। महारमायण में शिव वरणी ॥
सहित बिप्र लक्ष्मण शिरनावा। करिसनमान निकट बैठावा ॥
प्रीतम के गुण पूंछन लागी । कहे सकल लक्ष्मण अनुरागी॥
हाथ जोरि द्विज बूझत भयऊ । स्वामी कौन कहां तवगयऊ ॥
हमरे पति महि अवध मँझारा। लीनजाइ नृप गृह अवतारा ॥
कछु दिन में हमहूं तहँ आई। जनक नगर प्रगटब अँगनाई ॥
सुनि शोभन अतिशय हरषाना। रामै सकल लोकपति जाना ॥
अब तुम जनि भरमौसबधामा। मूंदौ नयन जाहु निज ग्रामा ॥
नयन मूंदि देखैं तहँ नाहां। बैठे राज सभा के माहीं ॥
बोले राम धेनु निज पायो । तब शोभन चरणनशिरनायो ॥
धन्य धन्य तुम धन्य नृपाला। धन्य तुम्हारे चरित कृपाला ॥
प्रथमै में तव सुना प्रभावा। जड़मति मनविश्वास नआवा॥
ताही ते ठान्यों हठ भारी । देख्यों प्रभुता अमित तुम्हारी॥

दो० तव समईशनईश कोइ तव पुर सारिस न ग्रामा।
तव चरितनसमचरितनहिं तवजुनाज समनाम ॥

में प्रभु कीनि ढीठता भारी। सो क्षमिये जन जान अनारी ॥
सुनिहँसिप्रभुबहुबिधिसनमाना। तात करेहु जनि अनतबखाना ॥

भले नाथ कहि निजगृहगयऊ। पुरबासी सब हर्षित भयऊ॥
यहि बिधि रामचरित्र निकेता। करत चरित भक्तन सुखहेता॥
यकदिनसुरऋषिआवत रहेऊ। मग मिलिलोमशसेअसकहेऊ॥
चलौ आजु श्रीरामहिं देखौं। जीवन जन्ममुफलकरि लेखौं॥
सुनिसुनिकह्योसहितअभिमाना। थिर ह्वै करौं ब्रह्मकरध्याना॥

दो० यहिबिधि आवत जातबहु बिश्वबिषयरघुराय।
इनते तौ हमहीं भले अचल ब्रह्म रहे ध्याय॥
परब्रह्म श्रीरामहैं हरण अखिल दुखभार।
सुन्यो न जब तब देवऋषि आये अवध मँझार॥

यहि क्षण तहां रामकी माया। व्यापी लोमशको यहि भाया॥
उमड़े सिंधु सकल दिशि तेरे। बहे ऋषै परितिन के फेरे॥
प्रथम प्रलयसमबच्यो बिचारा। पैरत आये प्राग मँझारा॥
लख्यो अछैवट में हरि रूपा। कह्यो मोहिं राखौ सुर भूपा॥
बोले हरि राखन हित तुमका। है न रामकी आज्ञा हमका॥
इतने माहिं लहरि के साथा। अपर अंड में गे ऋषिनाथा॥
तहौं अछैवट पर हरि पाई। कहूं कह्यो नहिं राम रजाई॥

दो० इमि अगणित अंडनबिषे गलखि गह्यो नकोय।
यमयातना शरीर सम पायो दुख अतिसोय॥
तब मुनिकह्योकि रामको जिनकी आज्ञानाहिं।
लीन्ह्यो जिन साकेतपति जन्मअवधपुरमाहिं॥

तिनकीजायविनय जब करिहौ। तब तुम दुखसागरते तरिहौ॥
नाम रूप अरु लीला धामा। रहत नित्य ये होत न खामा॥
हमैं न ढूंढ़े मिली कृपाला। लहरि संग पठयो तबकाला॥
जल आवरनु अवध चहुं फेरा। तम्बू सम तानो तहँ हेरा॥
पुरबासी सब सुखसों जहवां। रहतचहतनहिंदुखकसकहवां॥
तब लोमशऋषि रघुपति केरी। कीन्हीं बिनय भांति बहुतेरी॥
सुनि प्रभु सेवक ते बोलवायो। रामहिंलखिमुनिशीशनवायो॥

कह्यो नाथ बिन कृपा तुम्हारी। कोइ करतूति न सकै उबारी॥
तुम सब नाथन के हौ नाथा। जीव दशा सब तुम्हरे हाथा॥
चहौ मशक को ब्रह्म बनावो। बिधिहिमशककरिलोकमनावो॥
दो० असकहिलहिआनन्द सुनि गौनेनिजथलफेरि।
पंथ स्वयंशिर लखिकियो नारद को गुणहेरि॥
सो० राम मंत्र को पाइ आइ चरित रघुनाथके।
बरणे तब ऋषिराइ अस प्रभाव श्री रामको॥
यक दिन राम पतंग उड़ाई। देव लोक सो पहुंचीजाई॥
तहँ हरि सुत जयंत की नारी। अतिबिचित्रत्यहि चंग निहारी॥
दो० मनमें किहिसि बिचार इमिजासु गुणी असिआहि॥
सो पूरब कस होइ धौं हँसि गहि लीन्हेसि ताहि॥
तब प्रभु हनूमान ते भाखी। देखौ कयहि पतंगगहिराखी॥
तुरत पवनसुत जाइ निहारी। देहुछांड़ि पुनि गिरा उचारी॥
बोली जासु चंग यह आही। दरशन तासु कीन हम चाही॥
ताही ते याको हम गहेऊ। आइ अनिलसुत प्रभुतेकहेऊ॥
सुनि हरि कहा कहौ तुम जाई। चित्र कूट महँ देव देखाई॥
हनूमान चलि तासों भाषा। दिहिसिछांड़िमनकरअभिलाषा॥
तब रघुनाथ खैंचि सो लीन्ही। निशिगृहआइ बियारूकीन्हीं॥
मणिमय पलँगा गयो बिछावा। क्षीर फेनुसम बसन सुहावा॥
कीन शयन तापर जगत्राता। प्रात जाय बोली ढिगमाता॥
भोरभये जागहु रघुराई। मुखछबि परजननीबलिजाई॥
रबिहि बिलोकिगयो तमभागी। ज्ञानउदयजिमिमोहबिरागी॥
शशि नक्षत्र भे मलिन सुभाये। जिमिसबगुण दारिदकेआये॥
लागे लुकन निशाचर कैसे। हरि सुमिरण ते पातकजैसे॥
उठे फूलि सरसिज रबि देखी। जैसे सुजन सुजन कहँपेखी॥
तिनपर मधुप करत गुंजारा। जनुतम बपुधरिशरणपुकारा॥
बोलतबिहँग बिबिधि बिधिटेरे। मानहुं मुनिबहु गुणगणतेरे॥

प्रमुदित कोक कुमुद बिलखाने। हानि लाभजिमि पाइअयाने॥
अनुज सखा बोलत यहिभांती। जिमिचातक चाहै जलस्वाती॥
बन्दीगण बिरदावलि भाषैं। याचक द्वार खड़े अभिलाषैं॥
सुनत उठे तब अवध बिहारी। देखि मातु आरती उतारी॥
मित्र बन्धु स्यवकन पद बन्दे। दान पाइ याचक आनन्दे॥
पुनि सरयू तट जाइ नहाने। सबबिधिसाधुबिप्र सनमाने॥
जहँ तहँ सुनैं कथा करिनेहा। करि प्रणाम आवैं पुनि गेहा॥
दो० एकबार रघुनाथ लै संग सुजन समुदाइ।
तीर्थाटन करि सबन को दीन्हीं बिशद बड़ाइ॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतरामचरित्रबर्णनोनामपंचमोऽध्यायः॥ ५॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि।
घटजसंहिता केरमत कहौं कछु गरुड़ बखानि॥
यकदिनप्रभु लागेकरन निजस्वरूप करध्यान।
पवन तनय अवलोकिइमि मनमें कृत अनुमान॥
इन्हैं सुना हम सबके स्वामी। ब्रह्मादिक जाके अनुगामी॥
सुमिरण ध्यान करत हैं सोऊ। इनहुन के ऊपर है कोऊ॥
पूछत प्रभुते तिन हँसि काहा। परब्रह्म किमि जावै चाहा॥
निकटौ दूरि निबाहु न होई। जैहौं क्षिप्र न मगकटु कोई॥
मुंदरी दै उत्तर दिशि तेरा। कुधर खण्डबन हले घनेरा॥
लोकालोक अद्रिके आगे। अन्धकार पावक थल त्यागे॥
शत संबत पर गये निकेता। बुढ़िया एक मिली तहँ सेता॥
ब्रह्मकहां मृत लोक पधारे। सह समाजभे दशरथ बारे॥
पुनि देखे रघुपति आसीना। बिधिहरिहर सेवतपदलीना॥
दो० करत दण्डवत पुनि तहां कोई पर्‌यो न देखि।
पीताम्बर को खूंट लै आये अवध बिशेषि॥

करत प्रणाक राम हँसि कहेऊ। आयो देखि ब्रह्म कसरहेऊ॥
कह कपि तुमहीं हो सब ठौरा। तुमते परे नहैं कोइ औरा॥
बोले प्रभु तुम पहुंचे नाहीं। अबहींफिरिआयोम्वहिंपाहीं॥
तब पवनज पट चिन्ह देवावा। रघुपति करखंडित तसपावा॥
गिरे चरण कहिधनितवलीला। जनमनसंशय ममन सुशीला॥

दो० यकदिन पदचापत गुन्यो इन्हश्रुति कहैअरूप।
ह्वैअरूप पुनिसुनि बिनय देखरायो निजरूप॥

यकदिन सखनसहित रघुबीरा। खेलत भे सरयू के तीरा॥
बिहँग रूप धरि रावण आवा। घात पाय शठ चहत उठावा॥
जानि राम बिन फर शरमारा। गिराजाइ निजलंक मझारा॥
सात दिवस पर मुरछा जागी। समुझिप्रताप लाज उरलागी॥
तब दूतन ते कहिसि बोलाई। तपसिन ते लावहु कर जाई॥
आयसुपाइ आइ हठ कीन्हा। सुनिभरिकुम्भरुधिरतिनदीन्हा॥
कह्यो जाइ रावण के पासा। यहि घट ते होई कुलनासा॥
गणन जाइ दशमुखै सुनाई। आवहु गाड़ि जनक पुरजाई॥
शंभु सभा श्रुति बाद मझारा। प्रथमैं रहा जनक ते हारा॥
तेहि गसते तहँ कुम्भ पठावा। दूत गाड़िमिथिला पुरआवा॥
हरि इच्छा तहँ परेउ दुकाला। बिनजलभे सब जीवबिहाला॥
लखि बिदेहबुध लीन बोलाई। बूझे ते तिन युक्ति बताई॥
उदक हेत शुभ यज्ञ करावो। कनक केर लै हल बनवावो॥
जोतौ अजिर सहित निजरानी। होई वृष्टि सकल सुखदानी॥

दो० सुनिनृप कीन्हीयुक्तिस्वइ जोतत अजिर मझार।
प्रगट्यो सिंहासन सुभग अद्भुत तेज अपार॥
चारिसखी चारोंतरफ लीन्हें मुरछल हाथ।
मध्य बिराजत भूमिजा रूप राशि रघुनाथ॥
वेदवती रिपु बधनहित तजन होत महिअंश।
एक रूप ह्वै प्रगट भइ आदिशक्ति निमिबंश॥

देखि बिदेह बिनय तब ठानी। भई तुरत कन्या लघु जानी॥
सखिन सहित सिंहासन सोई। अन्तर्द्धान गयी तब होई॥
रोदन सुनत सुनयना रानी। लीन उठाइ गोद सुखमानी॥
सुनिपुरजन सब भयो सुखारी। देखन उठि धाये नर नारी॥
भूपति दान दीन बिधि नाना। यथा मनोरथ जाकर जाना॥
दिन दिन कन्या बर्द्धत कैसे। शुक्लपक्ष कर चन्दा जैसे॥
छठों बारहीं अन्न परासन। कीन नरेशनिगमअनुशासन॥
नाम करण दिन नाम कढ़ावा। बुधन जानकी नाम बतावा॥
नारद आइ धर्‌यो तब सीता। जगतजननिसबभांतिपुनीता॥
सुर रंजन भंजन खल हेता। प्रगट भई नृप तव संकेता॥
सकल लोक पतिप्रभुसुखराशी। मिली इन्हैबरजोअबिनाशी॥
औरौ लक्षण युक्ति समेता। कहि मुनिबरगे ब्रह्म निकेता॥
सुनिऋषिबचनमालगुहिलीन्ही।सोनिजउरसियधारणकीन्ही॥
जनक बंधुजा सखिन समेता। खेलैं जहँ तहँ रूप निकेता॥
बाल वृद्ध यौबन नरनारी। लागहि सबै प्राण ते प्यारी॥
पुनि नृप निपुण पढ़न बैठाई। अचिर काल सब विद्यापाई॥
यह चरित्र भाष्यो भवसेतू। अब सुनुसिया स्वयम्बरहेतू॥

दो० एक समय मिथिलेश अति शंकर कर तपकीन।
आइ कह्यो हरमांगु बर तब नृपबोलयलीन॥
नाथ इष्टजो आपुकर ज्यहि श्रुति नेतिबखान।
तेहि देखौं भरि नयनमैं यहबर देहु न आन॥
सुनि शिव दीन्ह्योधनुषजोमिलारहै बिबसाथ।
कह्यो कि पूज्यहु यहीत मिलीआइममनाथ॥

सुनि बिदेह प्रभु हित अनुरागे। नित्त नेमकरि पूजन लागे॥
यकदिन सियसेवा ढिगजाई। लीलै लीन्ह्यों धनुष उठाई॥
देखि जनक अतिअचरज माना।त्यहिक्षणतहांकठिनप्रणठाना॥
जो लेई शिव चाप चढ़ाई। सो नृप मम कन्या बरिपाई॥

लिये बोलि कारीगर भूरी। रंग भूमि बिरची तिन रूरी॥
चहुंदिशि चामीकर असथाना। तासु मध्य मणिमयसंचाना॥
दश सहस्रमिलिमल्लबिशाला। लावत भये धनुष मखशाला॥
देश देश प्रति पत्र पठाये। सुनि सुनि भूप अनेगनआये॥
बन उपबन पुरपंथ निकेता। उतरे निजनिज सैनसमेता॥
सुनि दशमुख बाणासुर आवा। प्रथमै निजनिज पौरुषगावा॥
रावण धर्‌यो धनुष तब जाई। बहु बिधिबलकरि रहाउठाई॥
उठा न नेकु चप्यो कर गाढ़े। अतिबल कीन कढ़ातब काढ़े॥
सभा मध्य करि कपट बहाना। जातभयेनिजनिज असथाना॥
भूपहु दिन प्रति बिपुल उठावैं। टरै न जब तब दुन्दिमचावैं॥
यहि बिधि बीते कैयौ मासा। अब सुनुमुनिबरकीइतिहासा॥
गाधिसुवन नन्दन बन रहहीं। यज्ञारम्भ कीन जब चहहीं॥
तबतब असुरकरहिं अपकारा। लखिमुनिबरनिजहृदयबिचारा॥
मानुबंश प्रगटे रघुराई। लोचन सुफल करहुं तहँजाई॥
लावहु मांगिसुभग दोउ भ्राता। ते दलिखल हवैं हैं मखत्राता॥
क्वार कृष्णऋषि दिवससिधाये। नौमी दिन कोशल पुरआये॥
देखी बननि अवधपुर केरी। तीनि लोक ते सकलअनेरी॥
पुर चहुं ओर कनककर घेरा। उपबन बाग मनहुं मधुसेरा॥
बसुदिशि बसु दरबार बिराजैं। आठ आठ सैनापति राजैं॥
रहैं बेद घाटिका परमाना। जाहि भवन जब आवैआना॥
बिधि हरि हर धनपति रदएका। बसत मनों धरिरूप अनेका॥
बापी कूप तड़ाग घनरे। मणि सो पानि मधुर मधुनेरे॥
बिस प्रसून बिकसे बहु रङ्गा। कूजत खग गण गूंजत भृङ्गा॥
मणिमयमहल बिशाल अपारा। मानहुं नभ तिन ऊपर धारा॥
चित्र बिचित्र अनेक बनाये। कनककलशशशिसरिसस्वहाये॥
ध्वज पताक तोरण नव ठाटा। देहरी बिद्रुम कुलिश कपाटा॥
चहुं हट हाट फराकन हींची। बीथा सकल सुगंधिन सींची॥

आवत जात निकर नर नीके। गज रथ बाजि भावते जीके॥
बाजन बिबिधि भांति के बाजैं। मत्त गयंद अनेकन गाजैं॥
कतहुं मल्ल गण भिरैं प्रचारी। कतहुं गीत गावैं मिलि नारी॥
कतहु बिप्र बर वेद बिचारैं। कतहु सन्त जन नाम उचारैं॥
कतहु हंस शुकसारिक बोलैं। कतहुं केकि पारावत डोलैं॥
मध्य ग्राम नृप धाम अनेका। बननि बिशाल एकते एका॥
भूप सभा शुचि की रुचिराई। देखत बनै बरणि नहिं जाई॥
दो० आवैं जाइँ अनेक नृप झुकि झुकिक रैं प्रणाम।
राजत कोशल राज जहँ सुरपति ते अभिराम॥
उत्तरदिशि सरयू सरि बहई। अमल अपाप आप सो अहई॥
आपु अधोगति कुचि तब चालै। औरहि देत ऊर्द्ध पद हालै॥
बाँधे घाट मनोहर नाना। जहँ तहँ जीव करैं अस्नाना॥
निकट निवास मुनिन के रूरे। सुमन बाग तुलसिका हजूरे॥
देखत मुनि बर पुरकी शोभा। सरयू तट आये मनलोभा॥
मज्जन कीन मुदित जल खावा। ऋषिआगमननृपतिसुनिपावा॥
सचिव सहिततहँ आवतभयऊ। करि सनमान सदनलै गयऊ॥
नाये सब रानिन पद शीशा। दीन्ही मुदित मुनीश अशीशा॥
गहे चरण पुनि चारों भाई। पृथक् पृथक्ह्वै आशिष पाई॥
भये प्रेम बश रामहिं देखी। चपल दृगन परिहरी निमेखी॥
षोड़श भांति पूजि महिपाला। बोले बचन नाइ पद भाला॥
भूरि भाग हम तुम्हैं निहारा। आपुकहौ केहि हित पगुधारा॥
सुनहु नरेश तपोबन माहीं। करन देत मख निशचर नाहीं॥
त्यहि हित याचन आयों ताता। दीजै राम लषण दोउ भ्राता॥
सुनिसुनि बचन बाणसम लागे। बोले भूप बहुरि भय त्यागे॥
दो० याचक जन नाहक किये जगत पिता संसार।
हितअनहितननिबाह कछुमांगनहीको कार॥
बिबिधि यतन कीन्हेंमिले चौथेपन सुतचारि।

निपटनिठुरनिरमोहतुम माँगेहुनाहिंबिचारि ॥
कहँ सुकुमार सुवन मम बारे। कहँगिरिसरिसअसुरभयकारे ॥
जे धनुशर गहि जानत नाहीं। ते कैसे लरिहैं रणमाहीं ॥
राम सनेह सहित सुनि बानी। ह्वैप्रसन्नपुनि कहमुनिज्ञानी ॥
तव देखत हैं राम नदाने। अहहिंसबलअतिचतुरसयाने ॥
इन कर रूप प्रताप जहाना। जानत तवगुरु सरिसमहाना ॥
स्यहिते देहु लेहु करि नामा। याही हेत धरेउ बपु रामा ॥

दो० तुम कहँ याचक जगत में बादि बिधाता कीन।
सोनहिं भूषण दानि के कोबरणत लघुपीन ॥

कह नृप सत्य झूठ कछु नाहीं। रामप्राण प्रिय दिये न जाहीं ॥
हमतव संग चलीसजि साजा। तुमते नहिं होई यह काजा ॥
धरणि धामधन चहोसो लीजै। केवल त्यागि राम कहँ दीजै ॥
मोह बिबशह्वै करत बिवादा। त्यागत निजकुलकी मर्य्यादा ॥
इतना कहत क्रोध उर जागा। महिपताल नभहालनलागा ॥
सुरनर अहि सब उठे डराई। चाहत होन प्रलय का भाई ॥
तब वशिष्ठ मृदु बचन प्रकासा। कीजै कृपाजानि निज दासा ॥
राजा ते बोले सुनिलेहू। बालक इन्हैं मुदित मन देहू ॥

दो० इनहीके तप तेज बल बधि तमचुर मख राखि ॥
ऐहैं अलमंगल सहित सर्ब बिजयशिव साखि।

सुनि नरेश तब सहित सनेहा। दीन्हे सौंपि सुवन कहि येहा ॥
नाथ हाथ घर बन मग जाता। तुमहीं हौ इनके पितु माता ॥
बिश्वामित्र लहे दोउ भाई। मानहुं रंक महा निधि पाई ॥

छंद ॥ मानोमहानिधिपाइतबमुनिरायह्वैसंतुष्टजू। बोलेअ
होतुमधन्यनृपनिजराजनयमेंपुष्टजू ॥ हैअर्थसबतवसिद्धियातेधर्म
रक्षतिजोअहौ। पुनिसुखासीनस्वधीनदीनमलीनपथनाहींगहौ ॥
जोपूर्बपित्रपितामहादिककीरहीसदवृत्तिजू। सोअर्थधर्मसुकाम
मेंतबभईनहिंनिरवृत्तिजू ॥ मोहिंदेतरामहिंकिहेउकष्टसोनष्टपथ

नाहींरहै । रघुनाथप्रेमबिहीनकौनेधर्मफलपायोअहै ॥ तुमगहत
होनहिंकालकौन्यो मूढ़मूढ़नकीदसा । पल्लवतफूलतफलतमुख
सोंसबैरसतुम्हरीरसा ॥ शतशौचधीरज दयामृदुतपतोषक्षमा
गम्भीरहौ । निरमानमतिबलवान ज्ञाननिधानहरपरपीरहौ ॥
बशकरनभीतिदेखाइभीरुइश्रेष्ठहितगहेबिनयहौ । समनूनकोक
रितेजराखतस्वबशतुमदिनदिनैहौ॥ तुमभ्रातपितुगुरुमित्रकोरिपु
वोरलखिबधकरतहौ। अरिअंततकसमसन्ततितिबचनप्रियअनुसर
तहौ ॥ तुममारिप्रतिपक्षीनपाछेकृपाकरिकृतबोधहौ । पुनिचपल
पथकोकर्मलायकदेतफलकरिसोधहौ ॥ बिश्वासहूकेनरनतेनहिंर
हतकबहुंनिशंकहौ । हैजासुनहिंबिश्वासतासोंसदाशंकितअंकहौ॥
जेचारलायकतिन्हैकरिकैचारभेजतदेशहौ । बहुभेषधरितेखबरि
लावतलखतत्यहितुमबेसहौ । तुमसदारहतप्रसन्नसबसेनिठुरका
रजकालहौ ॥करिमंत्रराखतगुप्तसन्ततसावधाननृपालहौ ॥ तुम
जातदीननदीनपैकृतकार्य्यचहतनसाथहौ ॥ निःशेषकार्य्यनकरत
परकोरखतकछुनिजहाथहौ । तुमप्राप्तभयकोदेखितासोंहोतअभ
यसंहारिहौ । जोकार्य्यआगेहोइगोतेहिप्रथमलेतबिचारिहौ ॥ पु
निदेशकालस्वभाग्यमाफिककार्य्यमेंमनुदेतहौ । करिसाधुबिप्रन
तोषआशिरबादतिनसोंलेतहौ ॥ तुमत्यागिमतनास्तीकतालसल
खतआमदखर्चहौ । गजअश्वगढ़भटकामकारकआदिस्वरकीअर्च
हौ ॥ श्रमथोरफलबहुविधिसोजानतप्रजनकेपुरनामहौ । रघुना
थमालाकारसमतुमकरतजगकोकामहौ ॥ जलअसनघनपटअस्त्र
अनुपमकियेबहुअर्जितसहौ । हैंभूपजेतवबश्यतिनकोसंगनितली
न्हेरहौ ॥ निरबंधुपंगुअनाथइनकोकरतनितपालनअहौ । बुध
बेदमंत्रनकोभिवादनकरतकरिलालनचहौ ॥ करलेतबनिकनते
तिन्हैंघरकुशलपहुंचावतअहौ । रणदानमेंनहिंगहतलालचचप
लतामनमेंगहौ ॥ होलेतकारजजासुसेत्यहिदेतसम्पतिभूरिहौ ।
हरिभक्तननबचक्रमरहतअधर्मनेनितदूरिहौ ॥ निजकुटुम्बपाल

समानसुखप्रदभयेसुतजिनकेहरी। हौंसकतत्यहिनप्रशंसिदेतअ
शीशजीवहुबयचरी॥

पुत्रनहित करोशोच न किनका। कोऊन है दुखदायक इनका॥
सुनिकै सकल मातु अकुलानी। करिहैंबिघन रामजियजानी॥
तुरतै प्रभु निज माया प्रेरी। त्यहितबहरी प्रीति सबकेरी॥
दुवादशी दिन पारण करिकै। पुर बासिनको धीरज धरिकै॥
पहिरि बसन भूषण प्रति अङ्गा। कटितरकस कर शरशारङ्गा॥
जननि जनक पद शीश नवाई। पाइ अशीस चले हरषाई॥
चलत दीन हनुमानै छोरी। कछु दिनमें बनमिलबबहोरी॥
कहत सुतन इतिहास हरीका। देख्यो आइ तपोबन नीका॥
परिवा दिवस ताडुका धाई। रामहिं मुनि बर दीनदेखाई॥
रुकिगे प्रभु अवलोकत नारी। द्विज द्रोही बधदोष न मारी॥
बैरोचन जा दीरघ जिह्वा।सुरपतित्यहिमार्योलखिलिह्वा॥
भृगुभामिनि निश्चर हितकारी। नारायण त्यहि आपुसंहारी॥
परशु राम गंजी निज माता। तिमितुमयाहिहतौगतिदाता॥
गुरु आयसु सुनि नीतिनिधाना। बरजि तून ते काढ्यो बाना॥

दो० कढ़त एक धनु चढ़त दश कर्षत भे शत बाण।
तजतसहस तन लागङ्क लक्षगये त्यहि प्राण॥

तनु छूटत भै सुंदर भामा। अस्तुति करत गई हरिधामा॥
लखि प्रभाव मुनिमाया कीन्ही। विद्या निधिका विद्यादीन्ही॥
ज्यहिते लाग न क्षुधा पियासा। अस्त्र शस्त्र बिधि तेजप्रकाशा॥
पुनि मुनिते बोले रघुराई। निरभय यज्ञ करो तुम जाई॥
आयसु पाइ करन मख लागे। बैठे प्रभु रक्षा हित आगे॥
खबरि पाइ सुबाहु मारीचा। धावा बिपुल संग लै नीचा॥

गीतिकाछंद॥

धवाबिपुललैनीचबीचहिंरामबिनफरशरहयो। शतयोजनाग्र

बिचारिकारजपारसागरकेगयो॥ पुनिअग्निअस्त्रसुबाहुजार्योलष
नसबसेनाहनी। हरषेसकलसुरसंतबरषिप्रसूनकहिरघुकुलमनी॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदास
रामसनेहीकृतबिश्वामित्रमखरक्षणोनामषष्ठोऽध्यायः ६॥

दो० सुमिरिराम सियसन्तगुरु गणपगिरा सुखदानि।
अगिन बेष मति कहौं कछु पद्म पुराण बखानि॥
करिअबिघ्न मख ऋषै दोउ भैयन दीन अशीश।
रहे तहाँ निज दूत सुनि पठयो तिरहुत ईश॥

दूत आइ मुनिबरै सुनायो। सहितसमाजबिदेहबोलायो॥
हेत समुझि बोले मुनि बाता। देखनचलहु धनुष मखताता॥
भले नाथ करि कृपा निकेता। चलेगाधिसुत ऋषिनसमेता॥
हरि दिन एक शिला लखिपाई। कह मुनि पद प्रभुदेहु छुवाई॥
कारण कौन सकल मुनि बरणी। गौतमशाप पाक रिपुकरणी॥
यक दिन इन्द्र सुरन ते कहेऊ। मम त्रियतेबरतियकहुँचहेऊ॥
देवन रबि रबि शशिहि बतायो। अधिकअहल्यासुनितहँआयो॥
सुनि मुनिगे तमचुर सम बानी। गौतम बपु बासव रतिठानी॥
कहेउ गंग छल तुम्हरे गेहा। भवन आइलखि कहबचनेहा॥
यक भग हित तुम आयो हमरे। होइँ सहस भगसबतनतुम्हे॥
कहेउ अहल्या तैं पबि रूपा। कै सब कष्ट सहौं सुर भूपा॥
बिनय सुनत बोले हरि चरणा। छुवत तोर होई निस्तरणा॥
इन्द्रस्तुति सुनि कहमुनिभाषी। धनुगुनिसुनिहोइहैंसबआँखी॥
बहु दिनते पथ लखत बिचारी। सुनिप्रभुपदरजदीनिनिहारी॥
परसत चरण भई बर नारी। संमुख कै अस्तुतिअनुसारी॥

दो० जय जग दीश्वर सर्ब पर प्रेरक प्रकृति प्रभाव।
अद्वै ब्रह्म अनादि सुर राम अकाम सुभाव॥
त्वत्पद पल्लव महत्पद पुण्य यशा श्रितजेखु।

भवधिबत्सपद परम्पद पदबिपदानहिं तेखु ॥
जे बिषइक जग जीव जड़ कर्मक्रियायुतमान।
ताही के मदते छके माया मोहित ज्ञान ॥
ते नर आश्रित होत नहिं तव पदपंकज नाथ।
भूलीसुधि शुभपन्थकी बिषय कुपन्थसोहाथ ॥
इमि करि बिनयभक्ति बरपाई। हर्ष सहितपतिलोक सिधाई ॥
मुदितसकललखिगतिश्रमिरामा। जाइ गंगतट कीन प्रणामा ॥
पूछा प्रभु किमि आई गंगा। कौशिकमुनिकहसकलप्रसंगा ॥
भूप भगीरथ तप करि लाये। पुरिखाजहिबिधिस्वर्गसिधाये॥
जासु प्रभाव मुनिन बहु गावा। साइसुबोधिताक्यहिनहिंपावा॥
मुनिस समाज सप्रेम नहाने। दीन दान भूसुर सनमाने ॥
सुनिसबऋषिनसहित रघुबीरा। पहुंचे जाइ जनक पुरतीरा ॥
दो० देखे बन उपबन बिबिधि बापी कूप तड़ाग।
मुनिसोपान पियूष ज्यहि पानकरत श्रमभाग ॥
चामी करघर सबन के चौहट हाट अनूप।
धनिक बणिक बैठे मनहुं धनदधरे बहुरूप ॥
मिथिलापतिके महलकी शोभाकिमिकहिजात।
जहँ बिहरत श्रीजानकी अखिललोककी मात ॥
दमयन्ती रति बिधुमती जात रूप श्रुतिगात।
लाजत मदन मयंक लखि सीताजूको मात ॥
रविते मणि शशि शम्भुते जो पावनते गंग।
लहीअधिकछबि त्योंलहोनिमिकुलसीयप्रसंग ॥
जहँ तहँ टिके नरेश बहुबलबाहन जिनसाथ।
शुचिआश्रयलखिमुनिनयुतउतरेतहँऋषिनाथ ॥
सो० खबरिपाइमिथिलेशसहितसचिवभटभूरिद्विज ॥
आये जहां ऋषेश नाये मुनिपद शिर सबन।
दीन अशीस निकट बैठाये। बूझी कुशल दरश तवपाये ॥

राम लषण कर रूप निहारी। जनकसहितसबभयेसुखारी॥
जोरि पाणि बोले मुनि तेरे। नाथ कहौ येसुत किनकेरे॥
मुनिकुलतिलककि नृपकुलजाये। कीदोउ ब्रह्मरूप धरि आये॥
इन्हैं देखि मोहिं भा सुख जैसा। नहिंप्रियलागब्रह्मसुखतैसा॥
की भरिजन्मयोगहम कीन्हा। ताकाफलबिधिवतबिधिदीन्हा॥
कह मुनि सत्य कह्यो तुम ताता। येप्रिय सबै जहां लग गाता॥
कौशल लेश दशरथ बल जाका। जानतदशमुख सुरपुरसाका॥
तिनके तनय मनोहर चारी। लक्ष्मण राम भरतरिपुआरी॥
उभय रहे अवधेश निकेता। लायोंमांगि मिथुनमखहेता॥
असुर मारि ममयज्ञ कराई। पदरजसतमुनितियगतिपाई॥
धनुष यज्ञ सुनि तवपुर आये। भले नाथ दृग सफल कराये॥
निज समाजते पुनि सुख दानी। गाधिसुवन कीकथा बखानी॥
इनकरबिभव जात नहिं जाना। तेज पुंज अति क्रोध महाना॥
जासु समुझि तपतेज बिधाना। अजहूं डरत रहत सुरताना॥
मुनि वशिष्ठ के पुत्र अनेका। जिन मारे नहिं छोड़े एका॥
जन्मि क्षत्रि कुलभे द्विज बर्णा। सृष्टि दूसरी लागे कर्णा॥
तप बलते जिननदी आमाना। करी कौशकी पुण्य महाना॥
गोत्रि शंकुकरि गुरु अपराधा। दियो शरण ताको निरबाधा॥
ऐसे जिनके कर्म अनेका। सुनिमुनि बोलेसहितबिवेका॥
दो० एक लोक परलोक नहिं यक परलोक न लोक।
एक सुखी दोउ लोकमें तिनमा तुम गत शोक॥
सुनहु भूपसब भूप कहावैं। निजरक्षा कोइकरि न सकावैं॥
तुम साधे नृप दूनहुं लोका। करत भयोसबप्रजाबिशोका॥
नाथ कृपाकहि सहित समाजा। आनिउतारे शुभ थल राजा॥
षोड़श भांति पूजि सह चेता। हरष सहित तबगये निकेता॥
दो० पहर तीसरे कह्यो प्रभु मुनि पदशीश नवाइ।
लषण दीख चाहत नगर आवहु तानदेखाइ॥

आयसु पाय चले दोउ भाई। खबरि सकलपुरबासिनपाई॥
बालक वृद्ध तरुण नर नारी। धाये निजनिजकाज बिसारी॥
देखैंजब रघुपति बपु आई। अंग अंग प्रति रहे लोभाई॥
करहिं बात सब आपुस माहीं। इनसम रूपवन्त कोउनाहीं॥
बिधि हरिहरहें बिश्व बिशाला। तेमुख चारिभुजा बिकराला॥
मदन अतनु शशिरहत न पूरा। अपर जीव अस कोहै रूरा॥
कोइ कहै धन्य नगर इनकेरा। संतत जहँ येकरत बसेरा॥
धन्य सकल पुरबासी अहहीं। जबतब जे अवलोकत रहहीं॥
कोइ कह धन्य मातु जिनजाये। कोइ कहै धन्य दरशहमपाये॥
कोइ कहै भागवती नृप जाई। बिधि जसकातसदेतमिलाई॥
कोइ कहै अबै कठिन हे कामा। कोइ कहै धनुष तोरिहैं रामा॥
कोइकहै ये बालक महि घोरा। देखत छोट अहैं बरजोरा॥
जिनमग शिला उधारी एका। मखहित मारे असुर अनेका॥
कोइ कहै ऐसहि करै बिधाता। तौ हमका सबकासुखदाता॥

दो० बाणी रूप अनूपबर बरण बामते बाम।
कहैंबामबिधिबिधिकरीबामदेवधनुबाम॥

कोइ कहै इन्हैं भूप जब देखी। तजिप्रणकरीबिवाहबिशेखी॥
कोइ कहै प्रथम नरेश निहारे। प्रणनहिं तजी लाजके मारे॥
कोइ कहै धर्म कर्म भल सोई। ज्यहि पाछे पछितावन होई॥
कोइ कहै मनमें करो उछाहू। होई राम सिया कर ब्याहू॥
कोइ कहै जो बिधिवशअसहोई। तौकृत कृत्य होइ सबकोई॥
बारबार नृप सुता बोलैंहैं। देखब जबतब चालन ऐहैं॥
कोइ कहै हम चाहैं नृप ढोटा। होइँ न कबहूं नयनन ओटा॥
कोइ कहै भाग चही असमाई। सूतोमें नहिं सिंधु समाई॥
जोन होत बड़ि भाग्य हमारी। तौनमिलत मिथिलापुरप्यारी॥

दो० फिरिकीसी थिरकी फिरैं खिरकिन प्रति नवनारि।
शिरिकिन तजिरघुनाथछबि निरखैंपलकबिसारि॥

जबज्यहि नयन ओटचलिजावैं । भई हानि अस बचन सुनावैं ॥
एककहै तुम भले निहारे । भइसखिबैरिनि लाज हमारे ॥
आवत निकट बदन पट दीना । भरिनयननअवलोकिनलीना ॥
एककहै बरबस मन मोरा । हरि लीन्ह्योंसांवरो किशोरा ॥
एककहै अस जगमें कोहै । इन्हें बिलोकत जोन बिमोहै ॥
कोइ कहै सत्य वचन सखितेरे । इन चित चोरि लिये सबकेरे ॥
अबधौं बिधिकब दरश देखाई । रंग भूमि फिरि देखब जाई ॥
कोइ कहै सपने कीनिधिजानौ । बिनसनबंधबादिसुख मानौ ॥
कोइ कहै जोबिधि होईदाहिन । तौ इनते धनु उबरै चाहिन ॥
नाहित दरश दूरि इन करे । अबला बपु कछु होत न हेरे ॥
यहिबिधिनिजनिजमतिअनुहारी । करैं बात जहँ तहँ नरनारी ॥
शोभा सागर अनुज समेता । सुलभ दरश सब काहुइदेता ॥
रंग रास पुनि देख्यो जाई । अति बिचित्र रचना मनभाई ॥
बालक जो ज्यहि ओर बोलावैं । प्रेमबिवशप्रभुत्यहिदिशिजावैं॥
सबके नाम कहैं मृदु बचना । तुम भलि तात देखायोरचना ॥

दो० जाकी इच्छा ते रचत माया अंड अनेक ।
सोप्रभुचितवतचकितचित भक्तबछलहितएक ॥
लोचनसबकेसुफल करिलषणसहितरघुनाथ ।
उतरे जहँ तहँ आइ के मुनि पद नायो माथ ॥
अर्द्ध निशा सोये सकल शौचक्रिया करि प्रात ।
समयपाय आयसु चले सुमनलेन दोउभ्रात ॥

त्रिभंगीछंद ॥ पहुंचेनृपबागासहअनुरागादेखतलागाअतिनीका । जामेंऋतुराजासहितसमाजारहतविराजानितहीका ॥ नानातरुफूलेसकलसमूलेमधुकरभूलेगुंजारैं । खगबिबिधिकलोलैंजहँतहँबोलैंजनुनिजटोलैंहंकारैं ॥ सरमध्यसोहानामणिसोपानाजलचरनानाकमललसैं । त्यहितटअतिनीकासदनसतीकाछबिजनजीकाचोरिबसैं ॥ अद्भुतफुलवाई सकलमझाई पुनिदो उभाई

प्रेमपगे। मालीगणजेतापूछिसचेतामुदितसुमनदललेनलगे॥
दो० त्यहि अवसर सीता तहाँ आई सखिन समेत।
मातु पठाई मुदित मन गिरिजा पूजन हेत॥
मज्जन करिसर सखिनयुत गईगौरि के धाम।
पूजियथोचितमनहिंमन मांग्योबर अभिराम॥
सो० एक सखी तजि संग देखे बालक जाय दोउ।
आई सहित उमंग बूझे ते बोलत भई॥
सुनहु सखी यहि बाग मँझारा। आये हैं द्वै सुभग कुमारा॥
गौर श्याम छबि धाम किशोरा। चितवतचितचोर्योजिनमोरा॥
रूप अनूप सकौं किमि भाषी। नयन अबैन बैन बिन आंखी॥
कह्यो एक द्वै हैं सखि सोई। जिन मोहे पुरजन सब कोई॥
बर्णत जहँ तहँ रूप बिशेषी। देखन योग चलहु सखिदेखी॥
आगे करि सोइ सखीपियारी। चलीं सकल चहुं ओरनिहारी॥
बिटप ओट जब देखे जाई। गईं अपनपौ सबै भुलाई॥
बैदेही जब रामहिं देखा। गिरी मूर्च्छि महिप्रेम बिशेषा॥
रूपबिशिख बिषबिछुरन लागा। जोन गिरै अघतौ नहिं लागा॥
धरि धीरज तब सखिन उठावा। लेहु देहुनृप सुत सुनिभावा॥
पुनि सन्मुख दरशे दोउ भ्राता। सहज सोहावन पावनगाता॥
दो० सारँग दृगसुखपाणि पद सारँग कटि बपुधार।
सारँग धर रघुनाथ छबि सारँग मोहन हार।
अंग अंग छबि देखि जुड़ानी। पितुप्रणसमुझिब हुरिपछितानी॥
सकलसखिननिजमनअसघाहा। हठ परिहरि नृपकरै बिवाहा॥
तौ सब के मन होइ अनंदा। अपर अधिपसँगकारज मंदा॥
इत जानकिहि देखि रघुबीरा। बोले लक्ष्मण ते धरि धीरा॥
दो० तात तकहु छबि राशि यह जनकसुताहैसोइ।
ज्यहिहितधनुमखहोतसुनि बटुरेनृपसबकोइ॥
जासुअलौकिकरूपलखिसहसस्वच्छमनमोर।

भयो क्षुभितनिजसीवतजि सोगतिजानैकोर ॥
कह्यो लषण होतब्य जो सो प्रथमै दरशात।
करतबातइमितातत्तन मनअटक्योसियगात ॥
इतैसखिनलखिगहरुनिजउरहरिमूरतिलेखि।
आईगौरिनिकेतपुनिखगमृगमिसिदिशिपेखि ॥
यथा पुत्र पितु प्रोक्तते चिन्तामणिम्वहिंदेह।
दरशैदीरघ धाम कहु फिरि आवै कहैयेह ॥

कमलछंद ॥ तिमिसीया। लखिपीया ॥ हितबर्ण।लगिकर्ण ॥

त्रिभंगीछन्द॥ जयजयभवभामिनित्रिभुवनस्वामिनिमृगपति गामिनिज्ञाननिलं। तड़ितांगअनूपंअद्भुतरूपंमुखद्विजभूपंपाकदिलं ॥ भुजचंडचिकालंधृतकरबालंकृतजनपालंकामप्रदं। सुरनरमुनिबंदनिअसुरनिकंदनिभूधरनन्दिनिकूटकृदं ॥ जयजलजविलोचनिरतिमदमोचनिपरहितशोचनिकंकबिधे। भवबिभवप्रकाशिनिकलिमलनाशिनिस्ववशबिलासिनिनीतिनिधे ॥ अतिअमितप्रभावावेदनगावातदपिनपावापारकुतं।बिघनेशषड़ाननममतिमाननऋधिसिधिशासननेमयुतं ॥ जेजेतवचरणंस्मृतिनिरणंतेवरबरणंलब्धफलं। पतिपदरतिलागीतियअनुरागीसोबड़भागीहोतहलं ॥ अबमोपरदायाकुरुमहमायाप्रगटनगायागुनजानी। सुनिइत्थंवचनंगौरिसुरचनंबोलीवचनंमृदुबानी ॥

जय जय श्री मिथिलेश दुलारी। जयजगजननिजनकमनुहारी॥
जय जगमगत बिभूषन चीरा। तड़ितबरनबपु कृबिगम्भीरा ॥
जय जगदुस्तर दरश तुम्हारे। करि करुणाबिचरत नृपद्वारे ॥
जय भवभय भंजनि सुख देनी। बिधिहरि हरबन्दत सुरसेनी ॥
जयजपतप करिसुगतिजे चहहीं। बिनतव कृपानसपनेलहहीं ॥
सबकेपरे वेद ज्यहि गावै। सो तव सुमिरन ते कर आवै ॥
दिव्य बर्ष शत शंकर ध्याया। राम गुरू कै पंथ बतायो ॥
तव तव दरशन ते सुख लहेऊ। इमपि अगस्त संहिताकहेऊ ॥

शेष सहस मुख दशमुख बानी। तव महिमा नहिंसकतबखानी॥
हम समान तव कोटिन दासी। नयननिरखि नितकरैं खवासी॥
सोतुम मातु बिनय मम कीन्ही। निजजन जानि बड़ाईदीन्ही॥
चतुर काछ काछे जब जैसा। तब तहँ नाच देखावै तैसा॥
त्यहिते लेहु अशीश हमारी। पूजै मन कामना तुम्हारी॥
नारद बचन सदा उर धरेऊ। पाइ परीक्षा पुनि परिहरेऊ॥
सुनिसियसकुचसहित उरराखी। चलीपूजिपुनिगृहअभिलाषी॥
सीतहि जात जानि रघुराई। चित्र चारु हद लीन बनाई॥
अनुज सहित आये गुरु पासा। सुमन दीन सबहालप्रकाशा॥
अर्चन करि मुनि बचन उचारे। होइँ मनोरथ सिद्ध तुम्हारे॥
सुनि मनमुदित भये दोउ भाई। भागतदिवस निशा तब आई॥
प्राचीदिशिशशि देखि सोहाना। सियमुखसरिसनपुनिअनुमाना॥

दो० बढ़तघटतनित मढ़तनभ दिनमलीन रिपुराहु।
सियमुखसमकिमिहोइशशिदीनदुखदसबकाहु॥
गौरि गिरा समकहियकिमि शैलसुताबाचाल।
रतिअनंगपति सिंधुजा चपलानुज जेहिकाल॥
छबिपयोधि गिरिप्रेम अहि शामासुर सबजोइ।
इमि मथिकाढ़ै लक्षजो सोउनसिय समहोइ॥
यहिबिधि ते अँग अंगकी उपमा करत बिचार।
भई निशा सबनाश पुनि देखिपरा भिनसार॥
बोले लक्ष्मण ते लखहु अरुण उदय भे तात।
काहुइतौ अति सुखद है काहुइदुखदलखात॥

सुनि सौमित्र कह्योमृदु बानी। प्रभु प्रताप पूखन पर आनी॥
जिमि रबितम गंज्योकरिदापा। तिमितवबल बिदलीभवचापा॥
उठिहैं फूलि कमल सब सन्ता। होइ हैं पुरजन मुदित अनंता॥
भृगुपति गतिमयंक द्युतिक्षीना। नृपगण छ हैं नखत मलीना॥
खल उलूक दुरि हैं तजि धीरा। छ हैं चक्र बाक यक तीरा॥

गूढ़ गिरा सुनि प्रभु मुसक्याने। एक दिना बन जाइ नहाने॥
नित्त नेम करि सहित समाजा। त्यहिक्षणबोलि पठाये राजा॥
सतानन्द तहँ आइ बखाना। ऋषिनसहितमुनिकीनपयाना॥
लागे लोग अनेकन संगा। धाये बिपुल प्रथम महिरंगा॥
चहुँदिशि फिरत बिचार समेता। त्यहिअवसर आनंद निकेता॥
रंग भूमि आये दोउ भाई। जनु शोभा मधि शोभा छाई॥
जिन ज्यहिभांति भावना आनी। तिन तस देखेसारँग पानी॥
योगिन तत्व नृपन नृप श्रेष्ठा। बुध बिराट भक्तन निजइष्टा॥
सुरननाथ असुरन सम काला। शिशुनसुहृदमनसिजबपुबाला॥
जनक जनक रानिन यामाता। मिथिलापुरबासिनबहुनाता॥
बैदेही देख्यो ज्यहि भांती। उरअनुभवतनसोकहिजाती॥
सबके मन भरोश अस आया। अवशिचापत्वरिहैं रघुराया॥

दो० भई भीरअति जनक लखि सेवक दिये पठाइ।
यथा योग सब काहुतिन आसन दीन्ह्योंजाइ॥
रंग भूमि मुनिनाथ कहँ सकल देखाई भूप।
बोले कौशिक धन्य नृप रचना किह्यो अनूप॥
सब मंचन में मंचयक अद्भुत बननि बिशाल।
त्यहि ऊपर सब मुनिन युत बैठाये नरपाल॥
धनुष ध्वंस नभरंग महि उड़गन लोग अपार।
राम लषण युग चन्द्र सम ऊगे सभा मँझार॥

चितवैं सकल राम की ओरा। जिमिमयंकदिशिबिपुलचकोरा॥
कोइ कोइ नृपन नृपनते भाषा। चलहुभवनपरिहरिअभिलाषा॥
धनु दलि सिय बरिहैं रघुराई। तुम कत तजिहौ मानबड़ाई॥
बिनहु दले पैहैं जय माला। सुनिबोले तबकुटिलनृपाला॥
टूटे धनुष कठिन है ब्याहू। बिन भंजे को बरी कुजाहू॥
कालहु कसन होइ यक जोरा। सियहितसमरकरबहमघोरा॥
सुनि बोले तब सज्जन राजा। गाल बजावत तुम्हैं न लाजा॥

कनककशिपु स्वरनावक बीरा। सहसबाहु मधुकैटभ धीरा॥
जिनते बिजय न काहू पाई। तुमजितिहौअबबलअधिकाई॥
परम सुभट अवधेश कुमारा। बरिहैंसिय मथिमानतुम्हारा॥
जीतन हार न कोउ जगजावा। करै चहै सो गाल बजावा॥
जगतपिता रघुपति कहँ जानौ। जगजननीजानकिहिपिछानौ॥
त्यहिते दुरबासना नेवारी। भरि लोचनछबिलेहु निहारी॥
नहिंमानौ तौ खंधक जाहू। हमैं मिला नरतन करलाहू॥
त्यहि अवसर मिथिलेशपठाये। सभा मध्य बन्दी गण आये॥
भुज उठाइ बोले तहँ दोऊ। सूनहुसुप्रणनृपकर सबकोऊ॥
भुवन चतुर्दश केर भुवारा। बैठे हैं यहि सभा मँझारा॥
जो लेई शिव चाप उठाई। सोबरबिजयसहित सियपाई॥
सुनि हरषे अबिबेकी भूपा। कसिकसिकमरचलेअहिरूपा॥
निज निज इष्टसुरन शिरनाई। हुमकि धरहिं धनु उठैनराई॥
बल बिबेक गरुवातम शोभा। फिरहिंहारिधनुकरवशलोभा॥

दो॰ लज्जितहवैदशसहसनृपमिलिकरिकिहिनिबिचार।
लावहु डारी तोरि धनु पुनि लखि लेव पछार॥

दश सहस्र इक संग भुवाला। रहे उठाइ न नेकहु हाला॥
हसन योग भे ते नृप कैसे। बिन बिराग संन्यासी जैसे॥
जे नृप रहैं चतुर मति धीरा। तेनहिं जाइँ शरासन तीरा॥

गीतिकाछंद॥ नहिंजाइँतेधनुतीरदेखिबिदेहबदगहवरहियो। सुरनागनरनृपअसुरआयेसुनतजोहमप्रणकियो॥कोकहैकर्षनिके रकाहुनअवनिअल्पछोड़ायहू। बरबिजयकीरतिकुंवरिपावनहार ब्रह्मनजायहू॥ त्यहितेसकलतजिआशनिजनिजभवनगवनवस बंजू। भटहीनमहिकहिअवनकोईबीरठानैगर्ब्बजू॥ जोबातयहज नत्योंप्रथमतोनेमनहिंकरतोमिदं। किनरहैकुंवरिकुमारिकर्मनध र्म्मत्यागतकोविदं॥

सुनत बचन पुरजन अकुलाने। सकल सभाके नृप सकुचाने॥

शरसम बचन लषण के लागे। बोले उठि रघुपति के आगे॥
नाथ जनकअति अनुचितभाषी। काहू की कछु कानिन राखी॥
त्यहिते जो तव आयसु पावों। तौ इनको बीरता देखावों॥
कंदुक इव कर गहि ब्रह्मंडा। धनुष समेत करहुं शतखंडा॥
नाथ शपथ जो अस नहिंकरहूं। तो फिरि हाथन धनुशरधरहूं॥
दो० यहिप्रकार के बचन जब बोले लषण सरोष।
डग मगानि महिकुधरसुनि पायोसुरमुनितोष॥
जनमन मुदित जनक सकुचाने। सिय समेतपुरजन हरषाने॥
सैनन प्रभु अनुजहि चुपवावा। सहित सनेह निकट बैठावा॥
तब बोले ऋषि प्रभु ते बाता। अबउठिशिवधनु तोरहुताता॥
उठे तुरत गुरु आयसु पाई। सहज स्वभायचले शिरनाई॥
हरषे सुनि मुनि जन प्रभु केरे। देखि बिदेह कही ऋषितेरे॥
नाथ राम जीते मन लोभा। त्यहिते भई अधिकतनशोभा॥
धनुके कर्षण योग न आहीं। बरजिलेहु त्यहिते जनिजाहीं॥
भूप करहु मति बिस्मय कोई। इतते कठिन कोदण्ड न होई॥
रामहिंचितै जनक की रानी। बोलीं बिलखि सखिनतेबानी॥
देखो सखि यहि सभा मँझारा। बैठे हैं बुधिवंत अपारा॥
यहि अवसर सबकी मतिखोई। उठि रघुपतिहिनबरजतकोई॥
गरुव कठोर कहां शिव चापा। हारे सकल भूप करि दापा॥
त्यहिहित अब बालकै पठावैं। हंस सुवन कहुं मेरु उठावैं॥
सुनिबोली गुरु तियतिनपाहीं। तेजवन्त लघु गने न जाहीं॥
कहँ पावक बन दहत प्रचंडा। कहँ बावननाप्यो ब्रह्मण्डा॥
कहँ रबि कहँतम तोम बिनाशै। कहँ आंकुशकहँकरिहिसत्रासै॥
प्रणव मंत्र यक अक्षर जाके। बिधिहरिहर सुरसबबशताकें॥
भृगुसुत ब्यमन पेटते कढ़िकै। असुर पुलोमहिजारयोबढ़िकै॥
बालखिल्य अंगुष्ठ प्रमाना। सुरपति को मरद्यो तिनमाना॥
जिमि कुंभजदधि पीनपिछानो। त्यहिबिधितुमधनुरामहिं जानो॥

सुनि भरोस रानी मन आवा । तब तहँलखि सीतादुखपावा ॥
कमठ पृष्टि सम धनुष कठोरा । कहँ सावँलमृदु गातकिशोरा ॥
प्रथम जाइ धीरज उर आना । कहत तात प्रण दारुणठाना ॥
हे गणेश गिरिजा गिरि राई । राम भुजन पर होउ सहाई ॥
हे पिनाक तव काज बिशेषी । होउहलुक रघुपतितनदेखी ॥
दो० जो हमरे मनक्रम बचन गतिन अपरसुर केरि ।
तौ करिहैं भगवान म्वहिं रघुनन्दन की चेरि ॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुना
थदासरामसनेहीकृतरामरंगभूमिआगमनोनाम
सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

दो० वेदन मुख रघुनाथ सुनि करी निबेदन देह ।
वेदन मग भेदन करौं जो वेदन सो नेह ॥
जो निजचेरि करब प्रभु नाहीं । तौतजितनुमिलिहौंतुमकाहीं ॥
यहिबिधिसियप्रणकीन्ह्योंजबहीं।धनुदिशि प्रभुअवलोकेतबहीं ॥
लषण लख्यो अब चाहत तोरा । दियेसजगकरि कुधरकठोरा ॥
आपु चापि महिब्योम सोहावा । तब रघुपति हरचापउठावा ॥
प्रथमसोशशि मंडल समभयऊ । पुनित्यहितीनिखंडह्वैगयऊ ॥
एक गयो नभ एक पताला । एक गिर्योत्यहिठौरकराला ॥
गहत उठावत तोरत माहीं । रहे सबठाढ़ लखाकोउनाहीं ॥
यह शीघ्रता बहुत नहिं तासू । पलमा करै बिश्व चहुनाशू ॥
पाछे तासु भई धूनि घोरा । रह्यो पूरित्रिभुवन महँशोरा ॥
गड़गड़ानगिरितरुमहि खसेऊ । कमठकोलअहिपतिकसमसेऊ॥
दिग्गज गिरन भिरन नभलागे । सुरबिमानरबि चलतनआगे ॥
चपिगे महिलखि सकलभुवारा । जनक हृदयसुखभयोअपारा ॥
हरषे सब पुरजन नर नारी । सियहियभाअतिआनँदभारी ॥
जयजयजय कहि सुर समुदाई । बरषि सुमन दुंदुभी बजाई ॥

तब बिदेह रामहि सह प्यारा। सिंहासन ऊपर बैठारा॥
पुनि तहँ तनया बोलि पठाई। सखिन समेत सभामहँ आई॥
पहिरे बसन बिभूषण नाना। दहिनेकर जयमाल सोहाना॥
सियशोभालखि सकलभुवाला। भये अपनपौ रहितबिहाला॥
रामै चक्रित चितव बैदेही। कहां गये मम परम सनेही॥
रघुपति ढिग लै गईं सहेली। देहु माल प्रीतम उर मेली॥
प्रभुछबिलखि सियकंकनमाहीं। रही टेकि कर टारत नाहीं॥
धरि धीरज पुनि माल उठाई। सकुचसहितहरिउरपहिराई॥
देखि देखि रघुपति उर माला। सुरनरमुनि सबभयेनिहाला॥
पुनि सिय करगहि कंचनथारी। हर्ष सहित आरती उतारी॥
सखिनकह्योपतिपदगहुवाला। कुवतनगुनिमुनितियकरहाला॥

दो० पहिरे कर नवरतन प्रिय तिय भय धरत न हाथ।
प्रीति अलौकिक समुझि कै मन बिहँसे रघुनाथ॥

सखिनसहित पुनिचलीनिकेता। तब सब भूपन के भा चेता॥
कुटिल महीप श्वान ज्यों जागे। जहँतहँगाल बजावन लागे॥
कोइ कहै सीतहि लेहु छिनाई। कोइकहै धरिमारौ दोउभाई॥
जो बिदेह बरजै कछु लेशा। लेहु लूटि तिनहूं कर देशा॥
सुनिअनन्तकरिसरिसमतकहीं। सरिसबन्धुभयबोलिनसकहीं॥
बोले तब नृप साधु सयाने। समुझिबूझिमतिहोउ अयाने॥
जो लक्षण सुनि पैहैं कबहीं। भये न रहौ मनो तुम तबहीं॥

दो० वारण ते बारण कहूं होइ जुवारण नाहिं।
लागीवारण बधनरिपु इन्है सुवारणमाहिं॥
धृतिदिमाकबलबाँकपन मानसहिततवनाक।
कीन्ही नाश अनाशही दैकै हाँक पिनाक॥

त्यहि ते तजि कटु बचनउछाहू। देखो राम सिया कर ब्याहू॥
यहिबिधि बादैं बिपुल नृपाला। अबसुनु परशुराम करहाला॥

रोलाछन्द॥ गाधिराजकीसुतारूपकैसीअसनामा। भृगुसुत

ऋचिकहजाइअश्वदेवरीललामा ॥ भृगुबोलेबरमाँगुउमयसुतदी
जैदेवा। यकहमकायकपितहिभलेकरियज्ञकरेवा ॥ ह बिकरकरिद्वै
भागकह्योयाकोतुमखायो। होईसुतद्विजप्रकृतिमातुकेनृपगुणगा
यो ॥ देतभागगाबदलिबहुरितपसीबरमाँग्यो। सोईभयेयमदग्नि
जननिकेकौशलराग्यो ॥ तिनकोसदलबशिष्ठजेवाँयोनन्दनिबल
ते। गोमांगतगेहारिभयोतापसत्यहिचलते ॥ तपप्रभावऋषिराव
ऋषिनमेंप्रकटकहाये। रच्योस्वर्गमखहेतमाँगिरामैजेलाये ॥ य
मदग्निहिपरसेनरेणुकासुताबिवाही। भेसुतशरमेंबड़ेपरशुधरवि
ष्णुकलाही ॥ यकदिनतिनकीमातुचित्रसेनहिं लखिमोही। कह्यो
पिताशिरकाटुकेहूनहिंकाट्योओहो ॥ होउसकलजड़रूपरामसु
निशीशनिपाता। बरलैचेतनबन्धुकरेज्याईपुनिमाता ॥ यकदिन
सहजसुभायहरिगोरामहत्योत्यहि। पितुअरिभोसुततासुतेहोतेबि
पुलबारमहि ॥ बिनक्षत्रिनकेकरीबरीबिप्रनकहँसाई। रहिमही
न्द्रगिरिमध्यसिन्धुतेसुनतचलोई ॥

इत नृप मूढ़न की गल मदरी। मिटननपाई जबतक सगरी ॥
त्यहि अवसर आये भृगुनाथा। लीन्हें धनुशर फरशा हाथा ॥
गौर बर्ण शिर जटा बिशाला। अरुणनयनउरतुलसिकमाला ॥
सहजहु चितवें जासु कि ओरा। सोजानै जिवलीन्हेंसि मोरा ॥
जहँ तहँ देखि देखि नृप भाजे। बहुतेन रूप नारि के साजे ॥
बहुत सभय चरणन शिर नावैं। पितासहित निजनाम बतावैं ॥
जनक सहित सिय नायोशीशा। भृगुनन्दनलखिदीनअशीशा ॥
कौशिक ऋषिलै दोनों भाई। मुनि पद मेले नाम बताई ॥
रामहिं देखि रहे ठगि ऐसे। बोले पुनि अनजानत जैसे ॥
जनक जुरी केहि हेत समाजा। सीय स्वयम्बर है महराजा ॥
आगे धनुष टूट महि देखा। बोले तब करि क्रोध बिशेषा ॥

छप्पय ॥रेजड़जनकबताउधनुषकौनेयहतोरा। सोतजिसपदि
समाजनिकसिआवैममओरा ॥ नाहितनृपसबमारिदेशतवचौपट

करिहौं। तीनिलोकमेंढूढ़ितासुकरमदसंहरिहौं॥ सुनिबिलखेपुर नारिनरहरषेकुटिलनरेशसब। हृदयनहर्षबिषादकछुबोलंश्रीरघु नाथतब॥ सुनहुनाथसबसाथप्रबलभावीलखिपरई। जोकृततिनु कैकुलिशकुलिशतिनुकाससमकरई॥ कहांशंभुकोदंडकहांहमबाल कवारे। होनहारकररोपदोषशिरपरयोहमारे॥ यथातारफलपा किकैपतितहोतखगनामभव। जोभावैसोकीजियेसबप्रकारहमदा सतव॥ सुनहुरामसोइदाससदाजोसेवाठानै। करैशत्रुकरकामता हिकोदासबखानै॥ त्यहितेहरकोदण्डआजुजेहिखण्डाहोई। सहस बाहुसमसमुझितासुगतिकरिहौंसोई॥ भृगुपतिकेरस्वभावसुनिभ ईसियाअतिशोचवश। तबतिनतेमुसक्याइकैबोलेलषणकुमारअ स॥ सुनहुबिप्रपनवालबहुतधनुहींहमतोरी। तबनकिहेउरिसक बहुंआजुकेहिहेतनथोरी॥ तवजननीकरपापपापत्रिपुरासुरकेरा। अपरनृपनकरपापचापचितचेतिसबेरा॥ रघुपतिभुजतीरथबिषेत जेसिप्राणगतिहेतत्यहि। बिनसमुझेरघुनाथपरकरतरोषपरितोष नहिं॥ रेबालकमतिमन्दमोहिंतूज्ञानसिखावत। सबधनुहिनिकी सरिसशंभुकोदण्डबतावत॥ सहितरामसियतोहिंखेदिबनमांझ जुझैहौं। नृपदशरत्थैमारिसकलपुरजनहिरोवैहौं॥ मरतैभूतल तापिकैबहुरितपैहांतापबहु। जोनकरहुंअसशिवशपथतौनकहावौं नामयहु॥ सुनिबोलेपुनिलषणमृपाकतमारतगालै। ईशचहेसो करैअपरतेरोमनहालै॥ सबधनुएकसमानकौनयामेंअधिकाई। छु वतैटूटपुरानघुननडारारहैखाई॥ जोनहिंप्रियलहनामतौलीजैअ परधराइमुनि। बिप्रनकीकछुकमीनहिंसुनिबोलेभृगुनाथपुनि॥ रे नृपबालकमंददेखुपरशाकीआरा। ज्यहितेबधिबहुभूपछीनिछोनी बरजोरा॥ कोजानैकैबारसौंपिबिप्रनकहँदीन्ही। तोकोबालकस मुझिढीलयतनीहमकीन्ही॥ अबतेपरखुप्रभावममयमजनिपितर रोवाउनिज। नाहितडरिहौंमारिफिरिनिपटहिजानुनमोहिंद्विज॥ हेमुनिकतहरबारदेखावतमोहिकुठारी। फूकनतेतृणउड़तउड़तन

हिंभूधरभारी ॥ जोतुमहोतेउसुभटतदपिहमरेकुलमाहीं। विप्रधे नुसुरसायुलरतइनतेकोइनाहीं ॥ बधेपापहारेअयशसबविधिभला जाखाइगम । असबिचारिमनमारितवसहियतहैंकटुबचनहम ॥ गाधिसुवनसुनिलेहुअहैयाबालकखोटा। जानचहतयमलोकललि तपरिहरिनिजजोटा ॥त्यहितेलीजैवरजिकछुककहिमुयशहमारा॥ नाहितसबकेअक्षतआजुखलजाईमारा ॥ कौशिकसमुझ्योमनबि षेमुनिजानतहैंबालये । असनबिचारतजगतपतिहैंकालहुकेकाल ये ॥ हँसिबोलेपुनिलषणसुनतमुनिसुयशतुम्हारा। तुम्हैंअक्षतको कहैअहैअसकोसरतारा ॥ जोनएकमुखचुकै करौदशबीशमँजूरा। त्यहितेसबसुनिलेइँसपदिङ्कैजावैपूरा ॥ शूरनबरणतशूरताकादर करतकलापघर । समुझिपरतम्वहिंकछुकदिनकीनसरहँगीआप बर ॥ सुनिलक्ष्मणकेबचनजनकमनमाहिंडेराहीं । पुरबासीह्वै बिकलबदैंआपुसकेमाहीं ॥ देखौभूपकिशोरगोरजेतनोहैंछोटा। ते तनोखोंटलखातडरतनहिंमनकरमोटा ॥ भृगुनंदनकरिकोपतबप रशुसुधारेउहायगहि । रेबालककरुसमरइतनाहितधरुधनुबाण महि ॥ कहअनन्तयहिभांतिहमैंजो अपरप्रचारत । तौफिरदेख त्यौसमरचहैसोह्वैमाहारत ॥ पूजेपरिसकरैगुरूकरपदलोपैपु नि। पदपरिरोपैपांवनीचकेकरमिदंसुनि ॥ बोलेबिश्वामित्रतब क्षमहुजानिअज्ञानजू । बालककेगुणदोषदोउगणतनजेबुधिवा नजू ॥ सुनिबोलेभृगुनाथयाहिजोअबतकराखा । सोसबशील तुम्हारभारते कीननमाखा ॥ नाहितकाटि कुठारउरिनहोतेउँ गुरुतेरे । तबमनमें सुखहोतशोकमिटते उरकेरे ॥ गाधिसुवन मनमेंकह्योमुनिसमअज्ञनआनकोउ । इन्हैंबिचारत खाण्डमय अयमयजानतनाहिंदोउ ॥ कहेउलषणपितुकेरकरजजननीशिर दीन्हेउ । गुरुकरऋनरहिगयोचहतहमतेसो लीन्हेउ ॥ गये बहुतदिनबीति ब्याजु बढ़िगाबहुभाई । लीजैब्योहरु बोलितु रतमैंदेहुंगनाई ॥ चरहिसकतकरिअचरप्रभुअचरहिजो करिदेत

घर। तासुअनुजपरपरशुधरकैसेसकंचलाइकर ॥ सुनोजनकमुख तनकअहैबालककटुबादी। मरनकहतममहाथचहतनहिंदेखनसा दी ॥ बेगिकरोदृगओटचहौजोयाहिबधावा । पाछेदिहेउनदोष कालयाकरबलिआवा ॥ परमकठिनममनामसुनिगर्भश्रवैं नृपर- वनिसब । ताहिजरावतजंतुजड़सुनिबोलेहँसिलषणतब ॥ सुनो बिप्रजोतुम्हैंनीकउतसाहनलागँ। तौलीजैदृगमूंदिदेखिकोइ परै नआगे ॥ नाहिंत बनभजिजाहुबोलिपठवानहिंकाहू । जरतहोय जोगातपैठिजलमांझनहाहू ॥ बैदहिबोलिदेखाइयेज्वरकरहोइन दोषउर। सुनिकोपेभृगुनाथअतिडरेनारिनरजानिफुर ॥ लखिबो लेतब रामकामहौंनाथबिगारा। मोपरकीजैरोषदोषबिनबालकबा रा ॥ देखिधरेधनुबानकहिसिकटुजातसुभायन । जो औत्यौमु निभेषपरतप्रमुदिततवपायन ॥ हमरेकुलकीरीतियहकालहुतेना हींडरैं। क्षमहुचूकअनजानकीसंतसदादायाकरैं ॥ सुनिबोलेभृगु नाथरामरिसजावैकैसे। अबहूंतकतव बन्धुबिलोकतटक्करजैस ॥ जोनयाहिफलदीनकीनकरिरोषकहाहम। गर्भश्रवैंनृपनारिनिक टठाढ़ोबैरीमम ॥ बहतनकरबरदहततनुकटुकुठारकुंठितभयो। किधौंबसीकरुणाहियेकीस्वभावसोफिरिगयो ॥ सुनिबोलेपुनि लषणनाथ मैंदासतुम्हारा । टूटधनुषनहिंजुरीकिहेरिसबारहिं बारा ॥ जोअतिशयप्रियहोयकछुकतौकरियउपाई । बोलिगु णीद्वैचारिबहुरिदीजैजोरवाई ॥ बैठिजाहुकरिकृपाअबपायनके रिपुहोउजनि। नयनतरेरेरामतबगेगुरुपहँतजिकटुबकनि ॥ सु निभृगुपतितबकोपिबचन रघुपतितेभाषा । इतशठबिनवतमा हिंभुरैउतसोदरराखा ॥ करुममसम्मुखसमरनतौत्वहिंडरिहौं मारी । निपटैबिप्रनजानुअहौंमैंरिपुमदहारी ॥ धनुषतोरिअह मितभईमानहुंजीत्यो जगतसब ।सोतवअकड़मिटाइहौंसुनिबोले रघुनाथतब ॥ हेमुनिकहौंबिचारिबढ़ौजनिअबअधिकाई ।जोहम निदरबबिप्रअपरकोशीशनवाई ॥ परसतटूटपिनाककरबहममद

कपहिहैता। स्वामिहिसेवकसमरकहौंकसहेतनिकेता॥यहप्रभुता प्रभुबंशकीअभयहोयतुमतेडरै। गूढ़गिरासुनिरामकीभयोज्ञान परशाधरे॥ तबबोलेहरामधनुषश्रीपतिकरयेहू। आकर्षहुगहि पानिमिटैजेहिममसंदेहू॥ छुवतैचढ्योपिनाकदेखिभृगुपतिपछि-ताने। मारहुममगतिकूटछूटशरसकलनशाने॥ जान्यहुरामप्र-भावतबपुलकिगातयुगजोरिकर। लागेपुनिअस्तुतिकरनजयरघु कुलमणिमानहर॥ जयजगदीशदयालजयतिसुरद्विजप्रतिपालक। नयमुनिमानसहंसजयतितमचरकुलघालक॥ जयशोभा सुखसिंधुजयतिकरुणागुणआगर। जयबलबिपुलबितंशजयति रघुबंशउजागर॥ जयजगजावतजीवकी तवपदप्रीतिनहोइहैं। तावतसंश्रितशोकतेछूटिनसुखमेंसोइहैं॥

दो० जो मैं अनजाने कहा सो क्षमियो दोउ भ्रात।
असकहि शीश नवाइ मुनि मुदितभयेबनजात॥
हरषे लखि पुरलोग सब बरषे खेचर फूल।
बाजे बाजन बिबिधि बिधि भाजेप्रतिअनुकूल॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथ दास रामसनेहीकृतपरशुरामबनयात्राबर्णनोनाम अष्टमोऽध्यायः॥ ८॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि।
बरणौं मानस मतकछुक नाटकचरित बखानि॥
तब बिदेह मुनिते कह्यो होइजो आयसु नाथ।
करौंसो सुनिकह गाधिसुत भयोब्याहुधनुहाथ॥

हरिगीतिका छन्द॥ भयोब्याहयद्यपिसाथधनुकेतदपिदूत पठाइकै। लीजैदशरथहिबोलिसहितबरातब्याहैंआइकै॥ भल देवकहिलिखिभेवदीन्ह्यो पत्रलैधावनचले। कार्तिकबदीप्रति पदादिनलियबोलिकारीगरभले। तिनतेकह्योपुरसकलसाजहु

सुभगभवनबितानजू । शिरराखिमनअभिलाष लागेकरनगुण निरबाणजू ॥ बिरचेकनकमयरंभखंभअचंभमरुमणिपातजू । तिमिघँवरिघनिफणिबोलिलोहितसुमनमंजुलखातजू ॥ सुरचित्र मित्रसरोजधारेद्रव्यकलिअलिधेनुजू । असतारबन्दनवारमुक्ता हारहरितसुबेनुजू ॥ चहुंओरद्वीपअजोरकुलिकरिगुलिकचौकपुरा यहू । ध्वजकलशचामरछत्रसौरभपरिसतरणतुरायहू ॥

दो० जिमिसुरगतसोपाणमणिजटितलसैदिशिचारि ।
बिधिवत कीनबितान तिमि तिष्ठनहितनरनारि ॥

कहँतक कहौं तहांकी सामा । जहँदुलहिनिदूलहसियरामा ॥ नृपगृहसरिससबन निजसाजे । शोभा निरखि देवपति लाजे ॥ बसत लक्ष जहँ कपट सरूपा । तहँकरबिभव किजाइ निरूपा ॥ कौशल नगर सकल नरनारी । राम लषण बिन रहे दुखारी ॥ कौशल्यादि कहैं नृप रानी । बीरजननिसुत बादिबियानी ॥ राजहु के रहैं प्रिय अधिकारी । मुनि लैगयो ठगोरिसिढारी ॥ तबते मिली न खबरि यथारथ । दलन दोषदुख प्रदपरमारथ ॥ यकुतौबन पुनि अनुगणलीन्हे । ऋषिप्रसन्न हितहमहुनदीन्हे ॥ क्यहिपठई जो खबरि लयावै । भे दिनबहु अब कछू न भावै ॥ त्यहि क्षण दूत अवधपुर आये । फणिदिनसुनिनृपनिकटबोलाये॥ करि प्रणाम पाती तिन दीनी । लागे पढ़न प्रेम रस भीनी ॥

चौबोलाछंद ॥ स्वस्तिश्रीश्रीपत्रीसुभस्थानजी । कोशलपुरधु रपहुंचेनृपकरकानजी ॥ लिखीविदेहनगरतेबिश्वामित्रकी । मिलि बांचनेअशीशसहितसुरपितृकी ॥ कुशलक्षेमतवतनयअहैंसममाथ जू।तिनहूंकेरप्रणामचरणधरिमाथजू ॥ रौरेपुण्यप्रतापअचलममम खकरी । तारिनिपदरजडारिअहल्याअघभरी॥धनुषयज्ञपुरजनक जुरेनृपभूरिजू । गजइवपंकजरामसोडार्योतोरिजू ॥ सीताहूजय मालतिन्हैंपहिरायहू । भृगुपतिकरिअभिवादनबनहिंसिधायहू ॥ अबशुभसाजिबरातआइसुतपरणिये । सुनिनृपमुदयशलह्योसो

कैसे बरणिये ॥ जिमिकाहूकेक्षेत्रक्षीणसबलैलये। ह्वैप्रसन्नतिन सहितग्रामकैयोदये ॥ धरिधीरजपुनिकह्योजनककैसेलखे। महा राजकहुंछिपतकुमुदपंकजसखे ॥ सुनतभरतरिपुदवनदौरिआयेत हां। पूछतप्रियदाउबंधुकुशलयुतहैंकहां ॥ तबभूपतिपत्रिकादई सोबांचेऊ। भयेप्रफुल्लितगातअधिकसुखमाचेऊ ॥ लागेनिछावरि देनमुकुरकाननदये । लखिसमोदनृपसचिवसहितगुरुपहँगये ॥

दो० दीन पत्रिका बन्दि पद बांची मुनिसह मोद।
कह्योकिसुकृतीनरनकहँअवनिअम्बकी गोद ॥
जिमि सबसरितासिंधुमेंजाहिंयदपि अनयास।
तिमि सुख सम्पति आवहीं धर्मवान के पास ॥
तुम सम सुकृती पुरुष को भयोअपरतनुधारि।
राम सरिस सुत जासु युग कौशल्यासी नारि ॥
सपदि सजाइ बरात बर चलहु भलेकहि तत्र।
पुनि आये रनिवास सब बोलि सुनायो पत्र ॥
भईं मुदित रानी सकल दीन्हिनि बिप्रन दान।
पुर बासिन के हरष सुख कोकरि सकै बखान ॥

हरिगीतिकाछंद ॥ करिसकैकौनबखानसरिसबिमानगृहसब हिनसजे । रचनाअलौकिकदेखिनिजचितलेखिचतुराननलजे ॥ नृपधामअतिअभिरामतामधिबन्योदिब्यबितानजू। बिधुबदनिशो भासदनिसुन्दरिकरहिंमङ्गलगानजू ॥ कतहूं पढ़ैंबटुवेदकतहूं ब न्दिगणबिरदावली। कतहूंटिकेअवनीपआयनेवतनृत्यकरावली ॥ देखतफिरैंपुरलोगबन्दनयोगसुरमुनिगातको । तबअवधनाथबो लाइसचिवनकह्योसजौबरातको ॥ त्रिभंगीछंद ॥ दीन्ह्योजबआ यसुमंत्रिनकायसुपाइरजायसुसवधाये । लागेहरषातहिसजनब रातहिबरणिनजातहिजोल्याये ॥ कुंजरबहुकारेबड़मतवारेपरेवो हारेलकलकैं । गजघंटजोबाजैजनुघनगाजैअतिछबिछाजैधंकध कैं ॥ कंचनकीढारीकसीअँबारीमणिमयसारीपचरंगी । बैठेतिन

माहींनृपहरषाहींदेखिलजाहींनिरअंगी ॥ बरबाजिअनेकाएकते एकाचलनिबिबेकाजिनमाहीं। कबरेकोइकारेश्वेतललारेबिबिधि सँवारेठेहनाहीं॥ छमछम्मछमक्कैंछुवतचमक्कैंफुरकिधमक्कैंपगभूमैं। भरतादिनवीलेकुंवरछबीलेधनुशरकीलेचढ़िघूमैं ॥ गजरथबहुते रेअश्वनकेरेवृषभघनेरेअतिसोहैं । सुखपालअपाराशुतरसवारा परेवोहारामनमोहैं ॥ भालेबरदारेझंडिनवारेअगणितधारेफुलवा ई । लीन्हेबहुताजीआतशबाजीबिपुलसमाजीगुनगाई । सुंदर चौपालाएकबिशालाजलजप्रबालामणिनमयो। तामध्यबिराजै बालकछाजैचमरढराजैइतउतयो ॥ बाजैंबहुबाजनबिबिधिअवा जनआणिकताजनपैधमकै । बांधेहथियाराबीरअपारातुपकत याराअशिचमकै ॥ पकवानमिठाईरुचिरबनाईशकटलदाईनिज संगा। चोपैसमियानातंबूनानाछकरनपानाअरुभंगा ॥ रेशमी गलीचादीरघबीचाछकड़नपबीचालदवाये। कंचनकेघैलाअतरभ रैलासुमनसजैलाखँधवाये ॥ धनबिपुलसँदूखनभरेबिभूषनबस नअदूषनअतिनीके। अप्सराअनेकानृत्यकरैकाभांड़भड़ेकादृढ़जी के ॥ यहिभांतिबरातासजिभेताताचलीसमातानहिंमनमें । सु निसुनिनरधावहिंदेखनआवहिंशीशनवावैंनृपमगमें ॥ भयेस गुनअनंताहितभगवन्तासुरमुनिसन्तातिनमाहीं । गुरुसहितनरे शामनहुंसुरेशालसतबिशेपालघुनाहीं ॥

क० ॥ करतबरातकोपयाननरनाहजबसुरगणआसमानदेख तबहारहैं। डेढ़कोटिहैंमतंगऔतुरंगतीसकोटिपालकीपचीसकोटि पैदरअपारहैं ॥ भारबरदारसवासातकोटिऊंटजातिसेवकसमूह पांचकोटिबाजदारहैं । रथसवातीनकोटिदशरथरायजीकेसाठिला खनौहजारसांड़ियासवारहैं ॥

दो० जहँ तहँ करतनिवासमग पहुँचे पुर मिथिलेश ।
लेन चले अगवान सुनि साजिसमाज सुबेश ॥
कनककलसकोपरण भरिभोजनबिबिधिप्रकार ।

दधि चूरा भूषण बसन लै लै चले कहार ॥
बर बरात अगवानिन देखी। इतउत भये अनन्द बिशेखी ॥
हर्षि परस्पर भे यकभेला। पुनि कछुदूरि चले बगमेला ॥
जनु पश्चिम कर सागर भारी। आवत ताहि चला लै टारी ॥
सकल सौज नृप आगे कीन्ही। लीन्हीहर्षियाचकन दीन्ही ॥
पूजनकरि सब भांति सोहावा। जनवासे महँ आनि टिकावा ॥
सुनिसिय सिद्धीसकल बोलाई। भूप पहुनई करन पठाई ॥
सुरपुर के जे भोग बिलासा। दिये पूरि तिन सबके पासा ॥
सिय प्रभुता रामहिं लखि पाई। अपर जनक की करैं बड़ाई ॥
पितु आगमन जानि दोउ भाई। मुनिवर संग चले हरषाई ॥
आये जहँ जनवासे भूपा। चलेबिलोकितृषित जनुकूपा ॥
कीनप्रणहु मुनिपद धरि शीशा। नृपहिगाधिसुतदीनअशीशा ॥
पुनि पितु चरण परे दोउ भाई। मुदित भूप उरलिये लगाई ॥
विप्रन सहित वशिष्ठहि बन्दे। पाइ अशीष भये आनन्दे ॥
भरत सबन्धु मिले सुख मानी। सकल समाज भेंटिहरषानी ॥
कुशलप्रश्न कहि तिष्ठत भयऊ। सहितदेवजनु मन्दिर नयऊ ॥
नाकनटी नृत्यहिं करि गाना। कौतुककरहिं बिदूषक नाना ॥
भूप निकट सोहैं सुत चारी। मुदितभयेलखि पुरनरनारी ॥
बिधिके वेद भये काउ कहई। अपर बदैं अब आये अहई ॥
दहिने दिशिहैं लक्ष्मण रामा। बायें भरत शत्रुहन नामा ॥
धन्य भूप भल देव मनाये। जो सुत चारि मनोहर पाये ॥
धन्य बिदेह सुनयना दोऊ। धन्य सुतासुत हमसबकोऊ ॥
जिन सियसहित सुवनचहुं हेरे। पुनि देखब विवाह इन केरे ॥

दो० ओनतालिस दिन लगनते आई प्रथम बरात।
त्यहिते पुर आनन्दअति सकललोग हरषात ॥

बिधिते बिनय कहैं यहि भांती। देहु बढ़ाय दिवस अरु राती ॥
गये बीति बासर यहि भावा। लग्नकेर दिन जादिन आवं ॥

हिमऋतु मार्गमास सुखमूला। ग्रहतिथिनखतयोगअनुकूला॥
लगनशोधि विधि नारद हाथा। पठैदीन जहँ तिरहुत नाथा॥
गनी जनकके गनिकन खोली। हर्षिकही तिन अहै अमोली॥
सुनि विदेह बोले सुखपाई। अवधपतिहि लै आवो जाई॥
सतानन्द तब साजि समाजा। आये जहँ जनवासे राजा॥
कोशलेश कर विभव विलोका। अतिलघुलागतिहैं सुरलोका॥
भयो समय पग धरिये नाथा। साजिसमाज चले तिनसाथा॥
लखिसुर सकल सुमन बरषाये। चढ़िचढ़ि यान जनकपुरआये॥
पुर शोभा लखि देव लोभाने। निजनिजलोकसबनलघुजाने॥
विधिहिभयो अचरजअतिभारी। निजकरणीनहिंकतहुंनिहारी॥
शम्भु कहेउ जनि भर्म भुलाहू। देखहु राम सियाकर ब्याहू॥
जासु किये हम तुम सबकोई। यहिपुर आजु बिराजत सोई॥
सुनिसुबचन सुख लह्यबिधाता। आगे दीख दशरथै जाता॥
सबन बीच नृप सोहत कैसे। अमरन मध्य अमरपति जैसे॥
चढ़े तुङ्गतंवरम माहीं। बिबिकर कनक लुटावत जाहीं॥
चौपाले मधि रघुपति सोहैं। बिधिहरिहर सुरदेखिबिमोहैं॥
विष्णुविधिहिबिधिभवैसराहैं। बम्द्रगलखिदिशिसुरसुनिकाहैं॥
बड़भागी भे चक्षु हजारा। असकहि मिले बरात मझारा॥
रामहिं देखि नगर नर नारी। करहिं आरती हाथ पसारी॥
आवत जानि बरात सुनयना। लागी साजसजावन अयना॥
विबुध बधू धरि कपट स्वरूपा। मिलीं मादि रनिवासे भूपा॥
देखि सबन सनमान्यो रानी। चीन्हेबिना प्राणसम जानी॥
समयसमुझिसबसखिन समेता। चलींमुदित बर परछनहेता॥
गावैं गीत मनोहर नाना। सुनि छूटैं तपसिन के ध्याना॥
दुलहै देखि अधिक हरषानी। भई प्रेमवश प्रफुलित रानी॥
लोक वेद विधि करि सुखपाई। अर्घ्य देत तर मंडफ लाई॥
प्रीति सहित आसन बैठारी। कनक थार आरती उतारी॥

मणिमय मांडवछवि यहिभांती। देखिपरी तहँ अगणितबाती॥
भूषण बसन निछावरि करहीं। याचक पाइ मोद उर भरहीं॥
मिले मुदित मन समधी दोऊ। सो उपमा कहिसकै न कोऊ॥
देत पांवड़े अर्घ सोहाये। सादर जनक मंडफै ल्याये॥
आसन दीन सबहि सनमानी। पूजे बिप्रवृन्द मुनि ज्ञानी॥
सहित बरात दशरथै पूजा। मानि ईशसम भाव न दूजा॥
रामचन्द्र मुख चन्द्र सोहाना। चितवैं सकल चकोर समाना॥
समय समुझि बोले ऋषिराई। बेगि कुंवरि अब आनहु जाई॥
पुनि उपरोहित की बर बानी। चलीं सियै लै सखी सयानी॥
पद कसना रमना रव छाई। मनहुं मदन मोहनी सोहाई॥
चन्द्रमुखी तड़ि इव मृगनयनी। सकलमनोहरकोकिलबयनी॥
सिय शोभा नहिं जाइ बखानी। जगदम्बिका रूप गुणखानी॥
आवत देखि बरातिन सीता। कीनमनहिंमन प्रणतपुनीता॥
सुतन सहित दशरथ हरषाने। बरषि सुमन सुरहने निशाने॥
पहुंची जब मंडफ बैदेही। लागे शांति पढ़न मुनि नेही॥
कुल गुरु गौरि गणेश पुजाये। प्रकट लेन पूजा सुर आये॥
सुरपुजाइ शुभ आसन दीन्ह्यो। पुनिमुनिबोलिसुनयनैलीन्ह्यो॥
जनक सव्यदिशि सोहत सोई। मनहु सुकृति छबिमूरतिजोई॥

दो० कनककलशकोपररुचिरभरिपियूषनिजपानि।
लागे धोवन बर चरण नृपरानी सुखमानि॥
जेपद बसत महेश उर ध्यावत मुनिजन ढेर।
ते पद पद्म पखारहीं धन्य भाग्य नृप केर॥

करतल जोरि कुंवरि बरदोऊ। शाखोचार कीन मुनि सोऊ॥
पाणिग्रहण यहि पाछे भयऊ। कन्यादान भूपबर दयऊ॥
करिसुहोम गँठि बंधन रागी। प्रमुदित होन भांवरैं लागी॥
मणिमय थंभ रही छबि पूरी। निरखत मनहुंमदनरतिभूरी॥
भये छकित सब देखन हारे। फेरा फेरि ऋषिन बैठारे॥

राम सियासिर सेंदुर दीन्हा । मनहुंउरगशशि भूषितकीन्हा ॥
पुनि दोउ यक आसन बैठारी । देखि लोग सब भये सुखारी ॥
कहै रघुनाथ तहां की शोभा । बरणिसकैजगअसकबिकोभा ॥
दो० बनी बनी जाकी जनी लगतजनी दधि केरि ।
बनोबनो जाको जनो कृष्ण जनोजनु हेरि ॥
तब बिदेह मुनि आयसु पाई । लीन्हीं तीनिहुं कुंवरिबोलाई ॥
नाम मांडवी गुण मय चीन्हीं । सोनृपब्याहि भरतकहँदीन्हीं ॥
परम सुशील उरमिला नामा । सो लक्षमणहिंबरीअभिरामा ॥
श्रुतिकीरतिछबिजाइ न बरणी । रिपु सूदनहिं भूपसो परणी ॥
राम सरिस भे सकल बिवाहा । त्रिभुवन में भरिरहा उछाहा ॥
सबर सुन्दरी राजहिं कैसे । जिय युत बिभुन अवस्थाजैसे ॥
कुं० बपुष बितान बिचित्र मधि जीव अवध अवधेश ।
जाग्रतअवस्थाश्रुतिसुयश बिभुबिश्वकरिपुदेश ॥
बिभुबिश्वकरिपुदेश स्वपन मंडवी बिमलमति ।
बिभुतेजैक सो भरत उरमिलाउदित सुखीपति ॥
उदित सुखोपति केरबिभुप्रागैकेलक्ष्मण अदुख ।
तुरीसिया बिभुरामजीअन्तरयामी दिबिबपुख ॥
कुंवरि कुंवर अनुरूप निहारी । मुदितभये सुर नर मुनिनारी ॥
अवधराज लखि अति मनभाये । क्रियनसहिनजनुचहुंफलपाये ॥
दो० अर्थ क्रिया आधीनता धर्म कि श्रद्धा शक्ति ।
काम क्रियाकरतव्यता मोक्ष के केवल भक्ति ॥
श्रुति कीरति रिपुहन अरथ भरत मंडवीकाम ।
धर्म धरणिधर उरमिला मोक्षजानकी राम ॥
नृपमणि दायजुदीन अति हयगजरथ हथियार ।
भूषण पट गो रतन गण दासीदास अपार ॥
लीन अवधपति मुदित मन दीनजाहिजो आस ।
उबरि रह्यो याचकन ते सो आवा जनवास ॥

तब बिदेह तहँसबनकी बहुबिधि बिनतीकीन्ह।
सुनिसनमान्योअवधपति मुनिनआशिषादीन्ह॥
पुनि दशरथ ननवास सिधाये। देवन देखि सुमन बर पाये॥
तब बनितन मुनि आयसु पाई। लरिकन कोहबरचलीं लवाइ॥
गोर श्यामछबि अमित अनंगा। ब्याह साज सोहै सब अंगा॥
कमल नयन चितवत चितचोरैं। देखि देखि युवती तृण तोरैं॥
कोहबर लाइ सकल अनुरागी। लौकिक रीति करन तहँलागी॥
प्रभुइ उमा लहकवरि सिखावैं। सीतै श्री शारदा बतावैं॥
निज करमणि बहुरूप निहारी। प्रेम बिवश सियसकत न टारी॥
हास बिलास भयो बहु भांती। पुनि आये जहँ सकलबरानी॥
बहुरि रसोई भई तयारा। बोलि पठाये जनक भुवारा॥
परत पावड़ै मंदिर आये। चरण छालि चौकिन बैठाये॥
सुतन सहित दशरथ पग धोये। आसन देइ सुवारन जोये॥
लागे ते परसन पनवारा। षटरस ब्यंजन बिबिधिप्रकारा॥
नानाबिधि पकवान मिठाई। दधि गोरस फल फूल खटाई॥
बरणि न जात देखि अनुरागे। पंच कौर करि जेंवन लागे॥
बधू विलोकि लगीं गरियावन। सुनहु राम दूलह मनभावन॥

दो० बने फिरत जो आपके गुरुही बिश्वामित्र।
तौ क्यहिबिधि रघुनाथतुम कारजकरौ पवित्र॥
जनक सुताकेजनक को जनक कहत सबआहु।
कौन कौन के जनक ये याको करहु निबाहु॥

सुनियतअजकेसुत दशस्यन्दन। दश स्यन्दन के भेअजनन्दन॥
यह अवरेव परीक्यहि भांती। समुझिपरतअससकलबराती॥
मुदित होइ सब सुनि इमिगारी। अमुकै परसौं कहैं पुकारी॥
यहिबिधिसबहिनभोजनकीन्हा। आदरसहित आचमन लीन्हा॥
देइ पान पूजे मिथिलेशा। जनवासे आये अवधेशा॥
इतिश्रीबिश्रामसागरेरामचंद्रबिवाहबर्णनोनामनवमोध्यायः ९॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि।
कहौंकलेऊ मत ककुक कोशलखंड बखानि॥

निशा निरखि सबसोवन लागे। बड़े प्रात कोशलपति जागे॥
प्रात क्रियाकरि आयसु पाई। चारि लाख वरधेनु मँगाई॥
बिप्रन का दीन्हीं नरनाहा। गजरथबाजिजाहिज्यहिचाहा॥
कीन्हें याचक सकल सुखारी। यथा अभ्र दैक्षेत्रन वारी॥
त्यहि अवसर नृप मंत्री आये। करन कलेवा भूप बोलाये॥
उठे कुवँर पितु आयसु पाई। चढ़ि चढ़ि घोड़नचले सिधाई॥
कोइ अरबी जंगली पहारी। चिर चेंचक चंपा खंधारी॥
कोइ कबुली अंबोजकोइ कच्छी। बोत मेमना मुंजी लच्छी॥
कोइ किसमी भुठार फुलवाई। गर्रा गुराठ जुमिल दरिआई॥
श्याम करण कुम्मैद पठानी। टांघन तुरकी पचकल्यानी॥
मुसकी सबज इराकी पोपे। पीन नवीन बिशाल अदोषे॥
सकलअलंकृत चलनि सुठीका। सबते तुरँग रामकर नीका॥
बिश्व बिमोहन हेतु बिचारेउ। बाजिमेष जनुमनसिज धारेउ॥
पहिरे पट भूषण तनमाहीं। चपल तुरंग नचावत जाहीं॥
मनहुं मेघयुत उडुगण दामा। जात नचावत ऋषि अभिरामा॥
देखैं जहँ तहँ लोग लुगाई। कहे जात हैं चारों भाई॥
पहुंचे जब सब जनक आगारे। कनक पलँग रानिन बैठारे॥
बहु बिधि के भोजन धरिआगे। नेग पाइ निज जेंवन लागे॥
अचवन करि बैठे तिनपासा। लगीं करनतियहास बिलासा॥
एक सखी बोली तुव माई। क्यहिहितसुतजनमेंहविखाई॥
कह्यो रामकत बूझत येहू। निकट नरेश परीक्षा लेहू॥
अपर बसन करण्यानिजओरा। मिले चोर तुम सब चितचोरा॥
त्यहिक्षण लक्ष्मीनिधिकीनारी। सिद्धि नामलेसखिन सिधारी॥
सहजानन्दनि मदन मंजरी। चंद्रकला कमलाक्ष अंजरी॥
चन्द्रमुखी चंद्रावति योगा। बिमला उतकर्षिनि प्रियभोगा॥

चित्रा चितरेखा ईशाना । कृपा कांचणी सत्या ज्ञाना ॥
सुदंकसा चंद्राननि हंसी । सुधा मुखी मुख मंजु प्रशंसी ॥
माधुर्या उज्वल बिष दाक्षी । चरुशीला अतिशीला साक्षी ॥
औरौ अली अनेक अनूपा । सहित सिद्धि आईं अल भूपा ॥
रघुपति छबिअवलोकि जुड़ानी। बोली बिहँसि हासकीबानी ॥
सुनियत लालकाम अतिनीका । तब अंबनि कीह्यों त्यहिपीका ॥
हमचित चोरि सासुपहँ आयो । तुमहीं देखत बदन दुरायो ॥
बोली सिद्धि रावरे भगिनी । ऋषिकिमि बरीहरीनतमगनी ॥
कह्योलषणजसलिख्योलिलारा। तैसेहोत टरत नहिं टारा ॥
हम नरेश सुत जनक योगीशा । भयो ब्याह भावीबश दीशा ॥
कबते राज कुमार कहाये । पाल्यो ऋषै ऋषै उपजाये ॥
हलते भल तापस सब दिनके । लेवो लालहमहुंशिखितिनके ॥
बोली कलावती सिधिभगिनी । लक्ष्मीनिधिकी सारिसुलगनी ॥

दो० एककुमार पुनि मुनिनसँग रहियहि रसकीबात ।
सिरुयोकहांऋषितियनपहँ कीदारकढिगतात ॥
कहेउ शत्रुहन सत्य परि तुमहुं कुमारी आहु ।
तुम कहंपायोज्ञान यह की कोई करिअसनाहु ॥

बोली चन्द्र कला करि टेकी । तुम साधुन के बंधुबिबेकी ॥
रौरे को रस हास न चाही । पर स्वारथी संतगति आही ॥
हमहूं सुनि अस्नेह तुम्हारा । दरश हेत द्वारे पग धारा ॥
सइउ चीन्हिबिन कहे पतीजै । तनधन ते सेवा अब कीजै ॥
गर्प डसित को जो नहिं झारै । लगै दोष नत मंत्र बिसारै ॥
यहिबिधि बदि बातें सुखलेवै । निजनिज रुचि सबरामै सेवै ॥
कहेउ सिद्धिहम नारि अपावन । परएकगुणहुदीन्हजगजावन ॥
ज्यहिते नेह करै अनुरागी । सर्बसु जाहु सकैनहिंत्यागी ॥
तिमि तुमते ठानी हम प्रीती । करौ निबाहसमुझिनिजरीती ॥
कह प्रभु मोहिं सनेह समाना । प्रियन कछू यह जानजहाना ॥

तुमप्रियप्राणसरिसमोहिंमासे। मांगि बिदा गवने जनवासे॥
बोली बहुरि जीति हमलीन्हा। दिहलफेरिमुखहमतजिदीन्हा॥
यहिबिधि बातन सबन हराई। जनवासे आये सब भाई॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथ दासरामसनेहीकृतरामबिवाहकलेऊकरनबिधिबर्णनो नामदशमोऽध्यायः॥ १०॥

दो० राम रमतजो सबन में सबजहँ रमैं सो राम।
रामहिं लखिरघुनाथजन लहतस्वबांछितकाम॥
नित नव आदर करैं नरेशा। भूपै चलन देत नहिं देशा॥
कौशिक कहीजनक सुनिलीजै। बहुदिन भये बिदा अब कीजै॥
भले नाथ कहि सभा मँझारी। जहँ तहँ लागी होन तयारी॥
सुनि निश्चय पुरजन अकुलाने। जिमि चकवाक जातरबिजाने॥
जनक बिबिधि मेवा पकवाना। दीन्हे पठै पंथ अस्थाना॥
बीस सहस सेंदुर सजवाये। स्यंदन सहसपचीससोहाये॥
तुरँग लाख सुरभी युग लाखा। महिषी लक्ष सवाई भाषा॥
कनक बसन मणि भूषण भूरी। अनगनभाजन शिविकारूरी॥
औरौ बस्तु अनेक प्रकारा। प्रथम पठाई अवध मँझारा॥
तब बिदेह गुरु सचिव बोलाई। कह्यउ लयावो भूपहि जाई॥
सुनि मंत्री तित जाइ सुनायो। बिदाहेत मिथिलेश बोलायो॥
दशरथ सुनिलै दूलह संगा। तथा बरात साजि बहुरंगा॥
राज भवन गवने लखि लोगा। हर्ष शोचबश भये बियोगा॥
एक एकते कहैं बिशेषी। आजुलेहु भरिदृग छबिदेखी॥
भूरिभाग बिधि दरशन दीन्हे। सो अब जात तयारी कीन्हे॥
भूप भवन जब पहुंचे जाई। बैठारे सबहिन सचुपाई॥
बिनती भई परस्पर नाना। समसमधी तिनसमकोआना॥
जनक बिदाहित सौज मँगायो। देखि साभसब अचरजपायो॥

मणि अनमोल अनेक अपारा। कनक गनैको कितने भारा॥
भूषण सुभग एकते एका। भरे मजूषा चित्र अनेका॥
बसन रूम पट पाट अपारे। परमरम्य अतिशयगुण भारे॥
भाजन मणि हाटक रजुकेरे। अति बिचित्र बहुभांतिघनेरे॥
मेवाचिर उतम पकवाना। धरे कूट इव सुख प्रदनाना॥
शस्त्र सकल स्यंदन गजपांती। शिविकासुतर सुहेंसबजाती॥
औरौ बस्तु भांति बहु राखी। हाथ जोरि अस्तुति तबभाषी॥
हे अवधेश बिमल यश केतू। सकल काम परिपूरण सेतू॥
मैं निलज्ज यह सौज देखाई। जिमिकोइस्वर्णसुमेरुहिलाई॥
पर प्रभु ईश बड़े जे अहईं। तिनकी रीति वेदइमि कहईं॥
दास फूल फल जल जो देहीं। प्रभु त्यहिअधिकप्रीतितेलेहीं॥
असबिचारिम्वहिं दृढ़बिश्वासा। पुजिहौ मममनकी तुमआशा॥
सुनि नरेश निजकरशिरधारी। गदगद ह्वै असगिरा उचारी॥
करिय कहा मिथिलेश बड़ाई। जिनघर हमहु प्रतिष्ठा पाई॥
निजसमसबबिधिमोहिंकरिलीन्हेउभयलोकअनबधियशदीन्हे॥
यामें अचरज अहै न कोई। मलय समीप कुतरु हरिहोई॥
जो गुरु लघु लघुता न नेवारी। सोउ छोट कछु होतनभारी॥
मिलें परस्पर कंठ लगाई। जय जय धन्यधन्यधुनिछाई॥
यथातथा बिधि विवि बिलगाने। बरषे सुमन देव सुख माने॥
तब बिदेह लहि आनँद भारे। निजकर सब दूलह सिंगारे॥
मणि भूषण पट परम सोहाये। नख शिखकवरबिचित्ररचाये॥
यद्यपि सब अनप्राकृत सामा। तदपिलगतलघुतनअभिरामा॥
पुनि नरेश प्रभुपद सद गहेऊ। नरतन धरे केर फल लहेऊ॥
मनमें कहत लोग सुत चाहै। कन्याका कछु कमती आहै॥
जो जानकी न होत हमारे। रामचन्द्र किमि औतेद्वारे॥
बिप्र वेद धुनि करि हरषाने। दान मानदै नृप सनमाने॥
सकल बराती तब पहिराये। यथायोग्य जोज्यहिजसभाये॥

बंदीजन गण गुणी अपारा। रुचिलखि दानदीनअनपारा॥
तं तहँ सकल अनूप सोहाहीं। लोकपाललखिजिन्हैंलजाहीं॥
रघुपति छबि माधुरी अनन्ता। रहे देखि सुरनर मुनिसन्ता॥
बहुरि सुनयना धाम हँकारे। मित्र मंडली सहित पधारे॥
रानिन देखि लहेउ सुख भारा। बैठारे सब करि सतकारा॥
दिव्य जलजमनि कनकाभरना। बसन रम्य उत्तम बरबरना॥
नख शिख दूलह सकलसजाये। सखन समेत बिचित्रसोहाये॥
नारिवृन्दजिमि शशिहिचकोरी।निरखहिंप्रभुछबिपलकनमोरी॥
सिया मातुकर जोरि रसाला। कहेउबत्सतुम दोउकुलपाला॥
सुनिये जीवन प्राण अधारा। बिनती यह ममबारहिं बारा॥
भूप सचिव हम सब चरदासी। जाति बंधु जहँतक पुरबासी॥
सबहिं प्राण प्रिय सुताहमारी। कबहूं लागि न तातिं बयारी॥
दृगपुतरी इव सब दिन पाली। निरखतरहिनयथामणिब्याली॥
तुम्हरे कर निबाहु तिन केरा। करहु सो मोद लहैं मन मेरा॥
असकहि कुंवर लगाये छाती। कीन निछावरि नानाभांती॥
परी चरण समुझाइ सुभाये। पाइ अशीश मंडफै आये॥
तब नृप बिदा किये शिरनाई। जनवासे आये हरषाई॥

दो० अंतहपुर रानी सकल बिकल नारि लै संग।
मणिपट दिव्य अमाप बर सजे सुतन केअंग॥
नखशिखसाजिस्वरूप सखि लखिवारेतनप्राण।
चलननिकटगुणिलहैं दुख कोटिनमरणसमान॥

सो० सासु ससुर गुरुदेव भूसुर सन्त अनन्त हित।
करेहुसुपतिकीसेव असकहिलिहिनिलगाइउर॥

ने मतिधीर नारि बय भारी। तिन मन अतिकठोरताधारी॥
कीन्ही बिलग सुता महि तेरे। रोवैं मिलैं अपर स्वर टेरे॥
सुनि धुनि द्रवैं दारु पाषाना। चेतन की को करै बखाना॥
सुता कहै मेरी महतारी। लीजै सुधि लखिदीनहमारी॥

सुनि महि मातु गिरी मुरझाई। दौरि रवनि टेकिनिसमुदाई॥
शुक शारिक जे पिंजर भीरा। हाय सिया कहि तजैंशरीरा॥
तिनकी दशा अनैसी देखी। दिये संगकरि प्रेम बिशेषी॥
पुरजन बिकल बियोग घनेरे। मृत्यु मिलै मांगैं बिधि तेरे॥
जनकहि देखि मिली लपटाई। ह्वै अधीर धरिधीर छुड़ाई॥
मंत्रिन दिब्य बिमान सजाये। मनहुंमहिपगृहअपरसोहाये॥
अशनबसन आदिक बहु सामा। सेज पीठिलोवर सुखधामा॥
बस्तु समस्त अनूपम सारी। आनि यानमहँ धरी सुधारी॥
तिनमा आनि कुंवरि बैठाई। त्रयलख नृपजाहित सेवकाई॥
अरु दीन्हे बहु दास पुनीता। बिकललोग गावहिंगुणगीता॥
उठे बिमान देखि सुर हरषे। हनिनिशान कुसुमावलिबरषे॥
पाछे भूप चले पदचारी। पठवन कन्या प्राणपियारी॥
मंत्री पुरजन जे गुण भारे। नृपसँग सकल जात मनमारे॥
आवत पुरपथ चले बिमाना। शिविकाकरि हरि घेरे नाना॥
नगर नारिनर निरखि मनावैं। हेबिधिकुंवरि बेगिफिरिआवैं॥
बाहर नगर रुक्यो जब आना। नृपढिगजाइ कीन सनमाना॥
बत्स न रोवहु रहौ चुपाई। बेगि लेब मैं तुम्हैं बोलाई॥
ज्यों त्यों करि धीरज उर धारा। बिदाकीन मन कष्ट अपारा॥
पूजि बिप्र अवधेश सिधाये। मंगल मूल सगुन बहु पाये॥
जयजय कहि सुर बर्षहिं फूला। बाजेबाजन बिबिधि समूला॥
नृप करि बिनय महाजन फेरे। याचक सब परितोषि निवेरे॥
तब बिदेह बोले अनुरागी। नाथमोहिं कीन्ह्यो बड़भागी॥
कौशलेश समधिहि सनमाना। पुनिप्रभुतेमिलिबचनबखाना॥
राम करहुं किमि सुमुख बड़ाई। वितानन्द तुमसब सुखदाई॥
सेवकसमुझिदरशम्वहिं दीन्ह्यों। सबबिधितेआपनकरिलीन्ह्यों॥
तदपि एक बर दीजै अबहूं। मन तवपद परिहरै न कबहूं॥
सुनि रघुपति ससुरै सनमान्यो। पितुबशिष्ठकौशिकसमजान्यो॥

दो० भरतलषणरिपुसूदनहिं मिलेबिनयकरिराय।
शीश नाइ बरपाइ सब बन्धु चले हरषाय॥
कौशिकमुनि पदनाइ शिर बोले तिरहुतराज।
नाथ कृपा तव दासके भये सिद्ध सब काज॥
सो० सकल मुनिन शिरनाइ पाइअशीश बिदेहतब।
फिरेभवन पछिताइ प्रमुदितचली बरातइत॥

गीतिकाछन्द॥ इतमुदितचलीबरात बालकबाजि जातनचा वहीं। मगलोगलखि रघुनाथछबि निज जन्मको फलपावहीं॥ बरबास करतनिवासशुभदिन अवधपहुंचेआइकै। पुरनारिनर सुनिसकल जहँतहँचलेदेखनधाइकै॥ नृपधाम अतिअभिराम कौशल्यादि रानिनजानेहू। अनुरागबशङ्कै शिथिल मङ्गलचार पुनिसबठानेहू॥ दधिदूबतंदुलतुलसिदल फलफूलघन निशि आरती। धरिथाररवनिअपारगावतचलींमानहुंभारती॥ जबद्वार गईबरातप्रमुदित मातुसबपरछतभईं। करिवेदबिधिकुलरीति पावँड़देत मन्दिरलैगईं॥ तहँचारिसिंहासनसुतिनपरकुंवरिकुंवर पधारेऊ। पगधोइकरिआरतिनिछावरि बिबिधिबस्तु उतारेऊ॥ अवलोकि सुतबरबधुनयुत आनन्दबश जननीभई। जिमिमूक पावैवाक्य पारसरंकअंधाखीगई॥ मिलिकरैंलौकिकरीतितबसुत अश्नुपासकुचावहीं। सुरपितरपूजिपुजाइमांगें नीकसकलरहा वहीं॥ महिपालबोलिबरातदीन्हेयानपटभूषणभले। शिरना इपाइरजाइरामैराखिउरनिजपुरचले॥ पुरनारिनरपहिराइसेव कछुकितसबयाचकभये। तबभूपसहितबशिष्ठभूसुरसन्तअन्तः पुरगये॥ शिरनाइसबअन्हवाइरानिनबिबिधिअशनजेंवायहू। करिदानअतिसनमान देतअशीषसकलसिधायहू॥ पुनिपूजि गुरुहिनवाइशिर सुतसम्पदाआगेधरेउ। निजनेगुमांगिबशिष्ठ रामहिंराखिउरघरकाढरेउ। तबभूपरानिनसहितबिश्वामित्रकी पूजाकरी। करजोरिदीननिवासभीतरभवननिरखवहरघरी॥

पुनिपूजिप्रियापाहुनअमरगणसुमनबरषिसिधायहू । तबबोलि द्विजगुरुज्ञातिसुतन समेतभोजनपायहू ॥ गावेंबधूंमलिगीतअच वन कीननिजधामनगये। तबभूपरानिनतेसकल मिथिलेशगुन बरणतभये ॥ भयेमुदितसबतवकहेउ लरिकाश्रमितउसनींदअ हैं । करवाइयेअबशयनगे बिश्राममंदिरजहँरहैं ॥ मणिजटित पलँगबिछाइ पटुमृदुशुभ्रसींचिसुगंधसों । पौढ़ाइचारौभाइबो लीमाइकरुणाकंदसों ॥ किमितातमारेहुअसुरगण किमिबिप्रब नितहितारेहू । किमिकठिनभंजेउशंभुधनु किमिपरशुधरहिंने वारेहू ॥ भयकाजसबमुनिकृपाते बलिजाहुंभुजचापनलगी । परताषिप्रभुसबमातुपुनि भेनींदबशतेरँगरँगी ॥ बरबधुनलेसब सासुसोईनागमणिसमगोइकै । भैभोरलागेपढ़नबंदीरामजागं सोइकै ॥ करिशौचबिप्रनदानदैसहबंधुनृपजहँतहँगये । अव लोकिबिधिसुतगाधिसुतसबसभायुतहरषतभये ॥ शिरनाइबैठे गुरुपितैइतिहासमुनिलागेकहै। यहिभांतिनितनवहोतमङ्गलबर णिकोपारैलहै ॥ मांगेबिदाऋषिनाथदितकरिबिनयरघुपतिराख हीं।समुझेबिशेषितयारतबकरजोरिनृपअसभाषहीं॥ सुतधामधन तवनाथरानिनसहितमैंसेवकसदा । प्रभुकरतरहियोक्षोहसबपर दरशदेवयदातदा ॥ पुनिपरेचरणसनेहसहितअशीशमुनिसबको दई । सियरामछबिउरराखिऋषिबनचलेबरणतपहुनई ॥ रघु वीरपंद्रहबरषकेपटअब्दकीश्रीजानकी। भयेव्याहद्वादशवर्षरहि पुररामलीलाआनकी ॥ महिदेवसन्तनहेतसोसमुझतसुखदमन भावनी। अबिबेकवन्तनमोहप्रदकोविदनबिरतिबढ़ावनी ॥ सि यरामजन्मबिवाहमंगलमुदितसुनहिंजेगाइहैं । रघुनाथतेप्रभुकृ पाकरिहरिजगहमेंसुखपाइहैं ॥

दो० श्रीगुरुदेवा दासके चरण कमल धरि माथ।
बालकाण्ड संक्षेप करि बरणा जन रघुनाथ॥
दधिसुत भगनी पतितनय तासुत जननी अंत।

शैलसुतापति आदि भुज कहैं राघव सुतसन्त ॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथ
दासरामसनेहीकृतबालकाण्डसमाप्तम्नाम
एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

इति ॥

———*———

श्रीगणेशायनमः

अथविश्रामसागर॥



अयोध्याकाण्डप्रारम्भः॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि।
बरणौं मानसमत कछुक अध्यातमहि बखानि॥
जबते आये ब्याहि प्रभु नित नवमंगल होत।
मुदित रहत पुरनारि नर तातमात गुरुगोत॥
इकदिन बिश्वावसु तहां कियो गान गन्धर्ब।
सुनिप्रसन्नह्वै स्वपुरत्यहिकह्योरहनहितसर्ब॥
त्यहि कहइन्द्र निदेश बिन मैंनसकत रहिअन्त।
कह्यो केकयी बसत है हमरे बल सुर कन्त॥
हमरे आवत रिस करत अस तुमगये मोटाइ।
पठइ पत्रिका बानकर लखि नृप रहे चुपाइ॥
मनमें समुझे केकयी लिखि पठये बच बंक।
हमरिउ लागी घाततब हमहूं देब कलंक॥
लिखि पठयो बिश्वा बसुहि कह्यो जोकाहैभूप।
यह सत्योपाख्यानकी मैं कहि कथा अनूप॥

यहि बिधि द्वादश बरषै बीती। एक समय की सुनिये रीती॥
केकय नृप सुत केकय नामा। अवध आइकह्यो नृपतेकामा॥
खर मुख देश हमार उजारा। त्यहिहित दीजै भरत कुमारा॥
गुरु निदेश सुनि भरतैदीन्हा। केकय सुवन गवनतब कीन्हा॥

बिदा होत पर रामलषण दोउ। सचिवसुवनसँगसुखानन्दसोउ॥
गे कछुदूरि पठय फिरिआये। सानुज भरत नगर नियराये॥
केकय चलि आगे लय गयऊ। लखि आनन्दसबन सुरभयऊ॥
बिप्रन ते तब होम करावा। खर मुख सुनत सयन लैधावा॥
भरत समर करिमारो ताही। निरभय भये देश जसचाही॥
नेह बिबश ह्वै मातुलकेरे। रहत तहां सो चरित निवेरे॥

दो० यहां राम सिय लषणलखि सगुनकहैयहबात।
समुझिपरत आवत भरत भये बहुतदिनजात॥
बरष अठारह की सिया सत्ताइस के राम।
कीन्हीं मन अभिलाष तब करनो है सुरकाम॥
ताही क्षण तहँ देव ऋषि बिधिसँदेश कहोआइ।
पूजी प्रतिमा सहित प्रभु बिदाकिये समुझाइ॥
एक दिवस श्री अवधपति मनमें कीन बिचार।
रामहिं दीजै राज अब भा पन चौथ हमार॥

गुरुहि पूंछि नृप कीन तयारी। मंगल सामा सकल सवाँरी॥
जा कछु नृप अभिषेकमचाही। फल दल जलमँगवायोताही॥
बाजहिं पुर गह गहे निशाना। नाक नटी नाचैं करि गाना॥
सेवक सचिव कहैं नर नारी। धन्य भूप भलि बातबिचारी॥
प्रमुदित बदैं एक ते एका। देखहु कालिह राम अभिषेका॥
अमरन सो उत्साहन भाई। बोलि बिघन हित बाग पठाई॥
नाम मन्थरा केकयि चेरी। आइ गिरा ताकी मति फेरी॥
पुर रचना त्यहि दीख नबीनी। पूछे ते काहू कहि दीनी॥
राम राज्य सुनिशर सम लागे। अनमन गई केकयी आगे॥

दो० मम सोदरकी राज जिन बावन ह्वै हरि लीन।
करोबिघ्न तिमि महूँ अब ज्यहिलगि सेवाकीन॥

यहि बिधि करत बिचारकुबुद्धी। तजत आँशुकरिप्रथमकिसुद्धी॥
भरत मातु बोली का भयली। जानिपरतलक्ष्मणसियदयली॥

हमैं सीख देई कत कोई। तवदुखलखिभा म्वहिंदुखसोई॥
बरत अग्नि शिर ऊपरआई। सेा तुमअभय जानिनहिं पाई॥
कौन वृहद बीते दिन आजू। पैहैं काल्हि राम युवराजू॥
सुनि रानी अतिशय हरषानी। लगी देन भूषण निज पानी॥
जेा तव बाक्य सत्य यह होई। फिरि देहौं जेा मँगिये सेाई॥
हमैं रीझ तुम देहौ काहा। तुमहीं का नहिं होई लाहा॥
रामचन्द्र जब राजिहि पैहैं। कौशल्या तब तुम्हैं सतैहैं॥
जिमि कद्रू बिनतै दुखदीन्हा। चित्रकेतुतिय अनभल कीन्हा॥
सुरचि सुनीता को सुत बनमें। पठै दीन सुख नाहिं सपनमें॥
शुक्र सता सरमिष्टै कष्टा। दीन कीन निजपतिको नष्टा॥
सहित गरलभे सगर सयानी। भई बांझ सब शशिकी रानी॥
यदपि सवति तवसरलसुभाऊ। करपरिकृअसिकरतघनघाऊ॥
भूप करत तव आदर भारी। देखिसकीनहिंसवतितुम्हारी॥
तव सुत पठै नन्यौरे दीन्हे। लेत राज निज पुत्रहि लीन्हे॥
सुवन सहित करिहौं सेवकाई। नाहित रहिहौं पितुघरजाई॥
समुझि परतम्वहिं बिश्वा बीशा। परी बिपति सब तुम्हरेशीशा॥
जोकहौ राम चहत अति मोहीं। निरबल में रिपु मित्रहु होहीं॥

दो० जिमिबनजारतअग्नितवपवनसखाहोयजाइ।
सोइमारुत कृश देखि कै दीपै देत बुझाय॥

सो० सुखददुखदशशिहोइलहिरविबसुश्रुतिचौथग्रह।
मृगमयुजहिबिनतोइदहतकहतमग छतजजम॥

त्यहिते अबहीं करहु उपाऊ। ज्यहि न होइ पाछे पछिताऊ॥
द्वैबर नृप थाती सो लेहू। सुतहि राज रामै बन देहू॥
एकतौ दुखित काज मुख डारी। दूसर सुर संग्राम मँझारी॥
सुनि प्रतीत रानी मन आई। हरि इच्छा तुम जानहु भाई॥
कोप भवन पहुंची तजि साजा। भावी बश आये तहँ राजा॥
कोप भवन मंथरहि बतावा। सुनि नरेश मनमें भय पावा॥

सुरपति सुहृद दनुज अरिजोई। कालहुते न डरहि रण सोई॥
तियरिस सुनिभे कंपित गाता। कामकृपाननिशितअतिताता॥
धरि धीरज रानी ढिग गयऊ। शीशपरसिकरबोलत भयऊ॥
क्यहिकारणकीन्ह्यो रिसप्यारी। को तव दूसर है तनुधारी॥
दो० कहु क्यहिरङ्कहि नृपकरौं नृपै रङ्क करि देउं।
तव अरि अमरहु होइ त्यहि बधकरि पायेंपेउं॥
कहौ खोलि निजकोप प्रसंगा। भूषण सजहु मनोहर अङ्गा॥
ह्वै प्रसन्न चितवहु मम ओरा। आजु भयो मन भावत तोरा॥
ह्वैहैं काल्हि राम युवराजा। हरषसमयतुमदुख उपराजा॥
सुनि नृप बचन भयोदुख भारी। दिहिसिपाणिनिजशिरतेटारी॥
पुनि धरि कर बोले अनुरागी। जोभावै सो लीजै मांगी॥
तवहित कछुन अदेव हमारे। सुनिकैकयितब बचन उचारे॥
मांगु मांगु बर जब तब कहऊ। लेत देत फिरि कछू न अहऊ॥
आगे देन कह्यो बर दोई। अबतक मोहिं मिल नहिंसोई॥
सुनि नरेश हँसिबोलै लीन्हा। कब मांगेहुकबहमनहिंदीन्हा॥
हमरे कुल यह प्रकट प्रशंसा। बचन न जाइ जाइ बरु हंसा॥
झूंठे दोष देहु जनि प्यारी। लेहु मांगि किन ह्वैके चारी॥
जोपति शपथ राम की कीजै। तौहम मांगि उभयबरलीजै॥
हँसि नृप राम शपथ तब खाई। सुनिबिगसरिसउठी हरषाई॥
प्रथम देहु बरयही समाजा। भरतहि बोलिकरहुयुवराजा॥
दूसर राम धाम तजि राई। चौदह बर्ष बसैं बनजाई॥
सुनि नरनाह मूर्छि महि परेऊ। मनहुं तरङ्गिनिते तरुगिरेऊ॥
धरि धीरज पुनि आंखि उघारी। पुरहकिरातिनिसरसनिहारी॥
बोली बहुरि सुनौ नर नाहा। भरततनय तव होइ न काहा॥
जासुराज सुनिमा दुखभारी। प्रथम देन कत कह्यो पुकारी॥
कह नृप सत्य कहौंतोहिं पाहीं। भरतराजसुनिदुखम्वहिंनाहीं॥
दूसर बर मांगेहु दुख रासी। सांचहुसांचकि कीन्ह्योंहांसी॥

त्यहिं प्रिय राम रहेंअति आगे। आजुकठिनक्यहिकारणलागे॥
जो कृत बैरिहु कर उपकारा। सोकिमि करी मातु अपकारा॥
ज्यहि दुख दुसहदेतसब काऊ। मैं तोसे निज कहौं सुभाऊ॥

दो० रहै भानु दिन दिवस बरु रहै मीन बिन नीर।
राम बिना ममप्राण नहिं रहिहैं सुमुखिशरीर॥

कु० नारद ऋषै प्रभाव नृप संजय सुत मल हेम।
होतजानि हरि हरिहतन करिकछुलह्योननेम॥
करि कछु लह्योननेम तरकि तलफ पुनिभलते।
हरिपरिभव हित गोपगृहप पाल्योगोपलते॥
तेस्वासिंहहिं देखि दबकि बिलमाहिं लुकान्यो।
मिल्यो सुरभिकोपाप समुझि पाछेपछितान्यो॥
पछितान्यो तिमि तुम्हैं शोचतौ परी बिशारद।
मूरख की रघुनाथ इमपि कृत होतन नारद॥

त्यहितेपुनि मांगहु म्यहिं पाहीं। रहैं रामपुर बनहिं न जाहीं॥
ज्यहिते हमहुं बरष दुइ एका। देखैं भरत राज्य अभिषेका॥
सुनि बोली ओढ़र जनि करहू। निजकुलरीति हृदयमहँधरहू॥
देखौ शिवि दधीच हरिचन्दा। सहेधर्महित दुख अति मन्दा॥
मधुकैटभ शिर बिष्णुहि दयऊ। बिट बहुलै कछुकष्ट न भयऊ॥
बोलि बचन जिन नहिं प्रतिपारे। कहत वेद तिनके मुख कारे॥
त्यहिते तजहु सत्य जनि नाथा। पठवहुजाहि बिपिनिरघुनाथा॥
जोन प्रात जैहैं मुनि बरणा। तुमहिं अयशहोई ममरणा॥
सुनिपुनिनृपबहुबिधि समुझावा। होनहार त्यहि तनक न भावा॥
गिर्योभूमि ह्वै बिकल भुवाला। जानेहुतियमिसिआयहुकाला॥
हृदय मनावत शंभु बिधाता। करहुकृपा ज्यहिहोइ न प्राता॥
गुरु गणेश शारदा भवानी। रहैं राम तजि घर ममबानी॥

दो० भेषजसुर अभिषेक जन नेक न निरफल जात।
कालबिबशजगजालजिमिनौचढ़िजलबहिजात॥

यहिबिधिबिलपतभयोबिहाना। बाजे जहँ तहँ द्वार निशाना॥
बंदी गण गुण गावन लागे। प्रमुदित प्रिय पुरबासी जागे॥
सुनि नरपतिहिन नेकु सोहाई। समर समय जिमि गारीगाई॥
प्रात बशिष्ठ सभा महँ आये। लखि सुमंतु ते बचन सुनाये॥
सदा प्रथम आवत नर नाहा। आजु गहरु भै कारण काहा॥
बेगि खबरि तुम लावहु जाई। चले सुमंतु परम चपलाई॥
गये कोप मन्दिर सुनि बाता। सभय उलंघी ड्योढ़ी साता॥
दो० प्रथमतरुणयुग जेठरपुनि बालकक्कोवा चारि।
पंचम योबन बिरध षट सप्तम गौरी नारि॥
आगे जाय केकयिहि देखा। परे बिकल तहँ भूप बिशेषा॥
शीश नाइ बोले मृदु बानी। भूप परे कस बिबरन रानी॥
रामहिं प्रथम लयावहु जाई। भूप कुशल तब बूझ्यो आई॥
नृप रुख पाय सुमंतु सिधाये। बे मन राम के मन्दिर आये॥
देखि पिता सम प्रभु सनमाना। पूछे ते तिन हाल बखाना॥
चले तुरत प्रभु अग उघारे। देखि लोग सब भये दुखारे॥
पहुंचे जाइ जहां नृप रानी। बोले राम जोरि युग पानी॥
जननिजनक क्यहिहेतुदुखारी। करियसोकृतज्यहिहोइँसुखारी॥
सुनहु राम दुख मूल सनेहू। बढ़ी न सुख यदि कढ़ी न येहू॥
हानि लाभ सुखदुख किन होई। कहिय देनत्यहि दीजै सोई॥
बिबि बरमें माँगे इन पासा। भरतहिराज तुम्हेंबनबासा॥
धर्म केतु कछु कहत न बानी। तुमते सबै करो सोइ जानी॥
सुत सोइ जोपितु सुयश बढ़ावै। अयश देइ त्यहिसुतको गावै॥
सुनि केकयि के बचन कठोरे। बोले राम अमी जनु बोरे॥
अति लघु बात पितै दुखभारी। अपर हेतु कछु है महतारी॥
भरत शपथ मैं सत्य बखाना। कारणआन मोरनहिं जाना॥
तब रघुपतिगहि नृपहि उठावा। हाथजोरि असबचन सुनावा॥
तात तरकितन तजहु गिलानी। मंगल समय मोद उरआनी॥

जोजननी याचे बरदाना। तामें अति हमार कल्याना॥
दो० यकतौ बन मुनि जन दरश भरत प्राण पिय राज।
पुनिनिदेश पितुमातुकर म्वहिं बिधि दाहिन आज॥
ऐसेहु पर निज करहुं न काजा। जानेहुम्वहिं मूढ़न कर राजा॥
मूढ़ सो सत्रह बिधि के जानो। कहे पूर्व मनु तैस वखानो॥
महिषरीछंद॥ कहैंइमपिपूरबमनुस्वयंभूमूढ़सत्रहहोतजू। जनजोअशिष्यहिकरतशिक्षातौनपहिलपोतजू॥ हैजौनसेवतदारदिहिधनदेतदूजोतौनजू। करितौनतोजोरक्षिशत्रुहिकुशलचाहतजौनजू॥ हैसोचतुर्थजोकथतनिजमुखकर्मकारजपूर्बजू। जोबैरठानतप्रबलसोंह्वैनिबलपंचममूर्खजू॥ मूढ़छठवोंकरतकुत्सितकर्मजोगुरुज्ञानजू। गुणकहतश्रद्धाहीनसोंसोमूर्खसतवोंख्यातजू॥ गुरुगोत्रतियसोंकरतनिंदितकर्मअठवोंतौनजू। जोपुत्रतियगतिमानचाहतनौमसोअयभौनजू॥ निजबीजजोपरखेतडारै दशममूरखखेदजू। हैसोएकादशमूर्खतियसोंकहतजोनिजमंत्रजू॥ अरुदेनकहिनहिंदेतजोसोमूढ़द्वादशगन्थजू। जोभेदजानेबिनाजलपततौनतेरहोंअन्यजू॥ जोचतुर्दशवोंमूढ़गुणतनकर्मकोफलपायजू। अरुपंचदशजोयाचकनसोंकहतकटुरिसक्षायजू॥ जोदानभोगनकरतसोरहोंमूढ़सोधनवानजू। निजबंधुभागहिहरणचाहतसप्तदशमनदानजू॥ जोलखतलोकप्रलोकनहिंसोमूढ़सबमेंश्रेष्ठजू। सोउपाइऐसोसमयतजबनभजबहवैअसपष्टजू॥

दो० धृतिशम दम शुचितादया सतिप्रिय सुबचननेम।
आनँद बर्द्धन शमन अघ दोउदिशि दायकक्षेम॥
मोह दीनता भूप के करत सकल गुण नाश।
तातेदोउ तजि राखिये स्वधरम सहित हुलास॥
सुत तिय तन धन धाम सोइ जासों सधै स्वधर्म।
ताते देहु निदेश म्वहिं बन हित परिहरि भर्म॥
सुनि नरेश अतिशय अकुलाने। मोह बिवश रघुनायक जाने॥

करि प्रबोध पर्य्यंक सोवाये। बिदाहोन हित हर्षि सिधाये॥
आये प्रथम जानकी धामा। देखि दीन आसन अभिरामा॥
बोले प्रभु म्वहिं पितु अरुमाई। आयसु दीन बसहु बन जाई॥
धर्महेत धर्मज्ञ नृपाला। प्रकट सुआयसु चाहियपाला॥
चौदह बर्ष बास करि प्यारी। ऐहौंफिरि तुमरह्यो सुखारी॥
सांसु स्वसुर की सेवा करेउ। नारि धर्म मो हिरदय धरेउ॥
कानन भय दुख नाना रंगा। नाहित लै लेत्यों निज संगा॥
जो हठवश चलिहौ सँगप्यारी। तौगालव सम होब दुखारी॥

दो० गालव कौशिक केरशिखि कह्यो दक्षिणा लेहु।
सेवा ते संतुष्ट हम हमैं तुष्ट नहिं येहु॥
श्यामकरण हय आठशत हठ लखि बोले लाउ।
सुनिमुनिगयो ययातिनृप निकट बिचारिनभाउ॥
पूंछि प्रयोजन तिन दई कन्या सो लै बिप्र।
नृप हरश्व ते कह्यो यह लेहु देहु हय क्षिप्र॥
एक सुवन जनमाइ तिन दीन्हे दुइ शत बाज।
तिमिकाशीश उसीर्णपति अरप्यो अर्भककाज॥
दुइशत मिले नतेहु पर तबमुनि मानिगिलानि।
रोये बिश्वामित्र ढिग असहै हठ दुख दानि॥

सुनि बोली तब जनक दुलारी। सुनहु प्राणपति बिनयहमारी॥
अनुज अम्बपितु सुतसुख नाना। पिय बिनप्रमदै प्रेत समाना॥
त्यहिबिधि नाथमोहिं जगमाहीं। तुमबिनसुखदकतहुंकोइनाहीं॥

दो० रहै चन्द्र बिन चन्द्रिका रहै मीन बिन पाथ।
तो घरमें मोहिं राखिये बहुत कहौंका नाथ॥
देखि प्रीति बोले चलहु संग चली हरषाइ।
सुनेहु लषण बन जातप्रभु ढिगआयेबिलखाइ॥

शीश नाइ शोचत मन माहीं। म्वहिं प्रभु संग लेहैंकी नाहीं॥
देखि बिकल बोले रघुराई। धरि उर धीर रहो घर भाई॥

भवन भरतनहिं प्रियरिपु आरी। तात मातु मम बिरह दुखारी॥
जो मैं तुमहिं चलौं लै साथा। ह्वै हैं पुर जन निपट अनाथा॥
ज्यहिनृप राज प्रजा दुख पावै। अवशिअधिपसो नरकसिधावै॥
अस बिचारि रहिये गृह भाई। करहु मातु पितुकी सेवकाई॥
भव भय हरण मातु पितु सेवा। बिमुख निरयभाषत महिदेवा॥
सुनिलक्ष्मण अतिशयदुखपावा। पदशिरधरिअसबचन सुनावा॥

दो० नाथ बात जो कही तुम ताहि करैं नर सोइ।
कीरतिसुगतिबिभूतितिय तनुजजाहिप्रियहोइ॥

मोहिं एक प्रभु तुम ते नाता। अपरनजानहुं गुरु पितु माता॥
त्यहिते तजौ न किंकर जानी। सुनि रघुपतिबोले मृदुबानी॥

दो० तात मातु ते बिदा ह्वै आइ चलो मम साथ।
जाय सुमित्रा के चरण भय युत नायो माथ॥

बोली देखि दुखित कस ताता। तब तहँ लषणकही सबबाता॥
सुनि गइ सहमि सुमित्रा रानी। धरिधीरज बोला मृदु बानी॥
तात राम सिय तव पितु माता। रहिहैंजहां अवध सुख दाता॥
जोबन जात राम सुकुमारा। तौ घरमें का काज तुम्हारा॥
त्यहिते बन तिनके संग जाहू। लेहु बत्स जग जीवन लाहू॥
मोहिं समेत भयो बड़ भागी। जोतव रामचरण रति जागी॥
करेहु तात सोइ बात बिचारी। ज्यहिनरामसियहोइँ दुखारी॥
सुनि लक्ष्मण उठिशीशनवायो। पाइ अशीश राम ढिग आयो॥
तब प्रभु सहित जानकी भ्राता। आये जहँ कौशल्या माता॥
चरण छुवत निज उर बैठारे। भई गहर कत बचन उचारे॥
बोले तब रघुपति सुनु माता। बनकीराज्य दीनम्वहिं ताता॥
आयसु देहु मुदित मन ताते। कुशल आइपद देखिय जाते॥
कौशल्यहिसुनिअतिदुखभयऊ। मनहुंछीनिसुखसुरबसुगयऊ॥
बोली कयहि अपराध भुवारा। राजदेन कहि बिपिननिकारा॥
सचिव सुवन तब बात बखानी। सुनिव्याकुल ह्वैबोली बानी॥

दो० सुर अरिते दधि भक्ष ते रण बन पिता निकेत।
हे बिधि राखे मोहिं तू यही देखावन हेत॥
धरिधीरज बोली बहुरि तात कह्यो अतिनीक।
पितुआयसु सब धर्म मय बकत वेददै ठीक॥

जो मैं कहौं रहौ सुत घरमा। बढ़ै बैर शिर चढ़ै अधर्मा॥
त्यहिते अवशि जाहु बन भैया। आयहु बेगि जाइ बलि मैया॥
सिय एकहु दुख जानत नाहीं। इन कर लाड़सह्यो बनमाहीं॥
मैं बहु भांति सिखावन दीन्हा। तदपिचलतहितहठप्रणकीन्हा॥
लषण लाल अतिशय सुकुमारे। रहतन तेउ सँग जात तुम्हारे॥
रूखभूख मुख इन करदेखी। सहिनसक्योसुधिलिह्योबिशेषी॥
ह्वै स्वतंत्र बन दूनों भ्राता। करेउ न कबहुं जीवकर घाता॥
चलेहु सोई ज्यतना चलि जावै। कहेउ सँदेश इतै कोइ आवै॥
म्वहिं सम नारिअभागिनिकोई। भई न अहै न आगे होई॥
जो जनतिउं आगे दुख एहा। तौनहिं करतिउं नृपते नेहा॥
जात बिपिनि मम बालक बारे। देखि न निकसत प्राणहमारे॥
अस कहि अवनि गिरीमुरझाई। प्रभुजननीबहुबिधि समुझाई॥
पुनि धरिधीर भाषि सुतबच्छा। लागि करन अंगन की रक्षा॥

रोलाछंद॥ नमोबिष्णुपदपातुजानुतिबिक्रमबीरा। कटिहिरक्ष गोबिंदनाभिअच्युतरणधीरा॥ गुल्मपातुपदुमाक्षउदरहरिउरश्री नाथा। भुजमधुसूदनपातुकुक्षपृथ्वीधरसाथा॥ कंठजनार्दनपातु कृष्णमुखमंडलसोहै। करणमूलबाराहघ्राणदामोदरजोहै॥ नेत्र निरंजनपातुभाललक्ष्मीनारायन। केशवपातुकपोलसर्बतनचक्र धरायन॥ पूर्बपातुपुरुषोत्तसदाग्नेयगरुड़ध्वज। दक्षिणदिशिनर सिंहपातुनैऋत्यचतुर्भुज॥ बासुदेवबारुणयपातुबायव्यबिश्वंभर। रामरक्षकौबीर्यशंखईशानगदाधर॥ कमलनाभिअधऊर्धपातुजल गिरिबनबावन। व्याघ्रसिंहतेपातुसदाशंकरमनभावन॥ भूतप्रेत बैतालब्रह्मराक्षसछलकारी। अग्निचौरबिषबीछसर्पतेपातुमुरारी॥

वरविद्याउपयंत्रमंत्रपरतंत्रजहांलौं। माधवसकलनिवारुमारुरुज शूलतहांलौं॥ यहिबिधिरक्षाकीनिदीनिपुनिसुखदअशीशा। सहि तलषणसियचलेनाइजननीपदशीशा॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघु नाथदासरामसनेहीकृतबनयात्रानृपबिषादब र्णनोनामद्वादशोऽध्यायः॥ १२॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्त गुरु गणपगिरा सुखदानि।
बरणौं मानस सहित कछु अगिनि बेस कृतआनि॥
कछुक शोच चितकछुक उछाहा। आये बहुरि जहां नरनाहा॥
भेसुनि बिकल सकल पुरबासी। मनहुंदशहुदिशिलागिदवासी॥
करशिर धुनहिंभागिबिन जानी। मन मलीन तन दशा भुलानी॥
कोइकहै भल न केकयी कीन्हा। कोइकहै नृपकाहेक बरदीन्हा॥
कोइ कहै बिधि चाहै सो करई। कोइ निज कर्मनके शिरधरई॥
कोइ कहै भरतहु कर मत होई। सुनिकर कान्हराखिकहैकोई॥
लागत अघ अस किये बखाना। राम भरत कहँ प्राण समाना॥
अगिनिहोइ जलबरुनभ फूला। भरत न होब राम प्रतिकूला॥
यहिबिधि कहतसुनत सबधाये। बिरहबिकलनृप मंदिरआये॥
भइ अति भीर भूप दरबारा। बरणि न जाइबिषादअपारा॥
त्यहि अवसर कै सुधि जब आवै। अजहुं दरार अवनि उरजावै॥

दो० तबरघुबर सिय लषणयुत नृपपद शीश नवाय।
कह्यो बिदा म्वहिंकीजिये तात बिषाद बिहाय॥
निरखि भूपशिशु रूप उठि लीन्हे हृदय लगाय।
ह्वै बशधर्म सनेह कछु कह्यो न रह्यो चुपाय॥
देखि केकयी तमकिकै मुनिपट भाजन दीन।
बोली पहिरहु जाहु बन जो चाहौ हित कीन॥
अनुजसहितबलकलपहिरि करिपितुमातुप्रणाम।

कृष्णपक्ष बैशाखदिन छठे चले बन राम॥
बिप्र बधू बर केकयिहिं रहीं बहुत समुझाय।
ते नहिं कीन्ह्यो कानतब चलींअधिक दुखपाय॥
कह्यो भूपतब सचिवते रथपर लेहु चढ़ाइ।
बन देखाइ अन्हवाइ सरि लावहु तात फिराइ॥
तुरत बाजि रथ साजिकै गये राम के तीर।
सुनि बिनती आरूढ़ भे सिया सहित द्वबीर॥
चले अवध शिरनाइ सब पुरजन लागे साथ।
प्रभुफेरत नहिंफिरतसो खगमृग बिकलअनाथ॥
जाइरहे तमसा निकट प्रथम दिवस बिननीर।
करुणामय भे दुखित तब देखि सबनकै पीर॥
लोग श्रमित गे सोइ तब कह्यो सचिव ते राम।
खोजि मारि रथ हांकिये नाहिंत बिगरत काम॥
आयसु पाय चढ़ाइ रथ हांक्यो खोज दुराइ।
जागि लोगभे बिकल तब जब न लखे रघुराइ॥

राम राम कहि खोजन लागे। रथ कर चिन्ह न देख्योआगे॥
फिरि आये धृग आपुहि जानी। करदम मीन घन्य करिमानी॥
राम दरश हित जपतप नेमा। लगे करन पुरजन युत प्रेमा॥
इहां रामसिय सचिव सभाई। शृंगमेरु पुर पहुंचे जाई॥
उतरि कीन सुरसरि असनाना। यतने माहिं भीलपति जाना॥
लै फल फूल भेंट तहँ आवा। कीन्हिदण्डवतलखिसुखपावा॥
उठि रघुनाथ लीन उरलाई। पूंछी कुशल पास बैठाई॥
नाथ कुशल सब बात हमारे। पद पंकज दुखदलन तुम्हारे॥
आपु कहां इत कीन पयाना। तब रघुपति सबहालबखाना॥
सुनि निषाद मन भयो बिषादा। बोल्योबहुरिसहितअहलादा॥
तुम प्रभु होउ इहां के राजा। हम सबसेवक सहितसमाजा॥
चलहु भवन प्रभु कहतिनपाहीं। ग्राम जानकी आज्ञा नाहीं॥

तब सिंसुपा तीर लयगयऊ। कुश साथरी बिछावत भयऊ॥
त्यहिपर उतरि सबनफलखाये। शयनकीनिपुनि सहजसुभाये॥
सोवत प्रभुइ निषाद निहारा। दुखित लषणते बचनउचारा॥
दो० जे सोवत रहैं मणि पलंग पुरट महलकेमाहिं।
तेपौढ़े कुश साथरी बिधि जुबाम क्यहिनाहिं॥
सुनि बोले सौमित्र कछु बिधि करदोष न होइ।
निज कृत कर्म अभंग फल भोगतहैं सबकोइ॥
राम सच्चिदानन्द घन रहित समस्त बिकार।
करतचरित सुरसन्तहित धरिस्वतंत्र अवतार॥
अस बिचारि दुखपरि हरिनेहा। करहु राम पद पद्म सनेहा॥
मृग तृष्णा सम जग व्यवहारा। सत्संगति हरिसुमिरनसारा॥
तात परम परमारथ सोई। जो रघुबीर चरण रति होई॥
यहि बिधि कहतसुनतभा भोरू। जागेसकल सुनत खगसोरू॥
करिस्नान शिर जटा बनाये। लखि सुमंत्र तबबचन सुनाये॥
नाथ कह्यो म्वहिं कौशल नाथा। बन देखाइ लै आयो साथा॥
कह प्रभु तातसकल तव जाना। धर्म न दूसर सत्य समाना॥
सोमैं सत्य तजहु किमि जानी। अयशहोइ पुनि धर्मकिहानी॥
त्यहिते तात जाहु घर आजू। नाहिंत हाइ अवय अकाजू॥
कह्यो पितासन बिनय हमारी। ममहित करैं न संशय भारी॥
जननिन ते कहियो शिरनाई। आवत सपदफिरे द्वउ भाई॥
कह्यो भरत जब मंन्दिर आवैं। करहुराजि ज्यहिसबसुखपावैं॥
गुरु पितु मातु बचन अनुहारी। करतकछूतेहिंलागिन ख्वारी॥
यदु यमदग्नि गणेश हरीके। चरित चारु जग प्रचुरपरीके॥
तुमपितुसम ममबिनय तुम्हारी। करेहुसोज्यहिनृपरहैंसुखारी॥
असकहि चले सबै शिरनाई। सुरसरि तट आये रघुराई॥
मांगी नाव न केवट लावा। कहै तुम्हार मरम मैं पावा॥
पाहन ते कीन्ह्यो मुनिनारी। त्यहिते कठिन न नाव हमारी॥

यहिते पलत मोर परिवारा । नाथ न जानहुं अवर प्रकारा ॥
सुरसरि पार जान जो चहऊ । तौ प्रथमै कलश कछु सहऊ ॥
लेन देहु म्वहिं पदरज धोई । मानुष करण मूरि है सोई ॥
धोये बिन न देहौं जलयाना । लषण कोपकिन मारहिंबाना ॥
सुनि बाणी प्रभु केवट केरी । बिहँसे सियलक्ष्मण तनहेरी ॥
बोले पुनि लीजै परछाली । कमठ पृष्ठ लावा जल हाली ॥
पद पखारि जल कीन्ह्यो पाना । सुरन देखि बड़ भागीजाना ॥
नाव चढ़ाइ पार तब कीन्हा । शीश नाइ जब चालै लीन्हा ॥
सिय मुद्रिका देन प्रभु लागे । बोला सहित जोरिकर आगे ॥
तुम केवट भवसागर केरे । नदी नार के हम बहुतेरे ॥
हमरी तुमरी कसि उतराई । नापित नापितकी बनवाई ॥
सुनि प्रभुताहि भक्ति बरदीन्हा । पुनिसुरसरिमहँमज्जनकीन्हा॥
करि बिनती सिय नायहुशीशा । दीन मुदितमन गंग अशीशा ॥
तब प्रभु सखै कह्यो घर जाहू । बोला तब भीलन कर नाहू ॥
जैहौं जहँ तहँ तक पहुंचाई । फिरिहौं तब प्रभु कुटी बनाई ॥
सुनि चलिभे प्रभुसहितहुलासा । त्यहि दिन भयो पथमें बासा ॥
नौमी दिन तीरथ पति गयऊ । तिरबेनी जल मज्जत भयऊ ।
बिप्र वृन्द सनमानि सिधाये । भरद्वाज के आश्रम आये ॥
कीन दण्डवत सहित समाजा । उर लगाइ बोले ऋषि राजा ॥
आजु सुफल मम जप तप ज्ञाना । तीरथ बरत योग मख दाना ॥
धन्य जन्म जग जीवन भारी । भयों कृतारथ तुम्हैं निहारी ॥
अब करि कृपा देहुबर मोहीं । काय बचन मन सुमिरौं तोहीं ॥
जबतक तव पद प्रम न होई । तबतक सुख न लहै नरकोई ॥
अस कहि मधुर मूलफल दीन्हें । सबनसहित प्रभुभोजनकीन्हें ॥
त्यहिनिशि रहिकरिप्रातस्नाना । मुनिहि नाइशिर कीनपयाना ॥
ग्रामनिकटज्यहि निकसहिंजाई । थकितहोहिंलखिलोगलुगाई ॥
एक एकते कहैं बिचारी । ए बालक बनयोग न प्यारी ॥

दो० कोइ कहै इनकेमातपितु हैं कठोर मम जानि।
कोइकहैं होंय नहोंय हरि निकसेमानिगलानि॥

कोई कहैं नृप सुवन शिकारी। बन बिचरतमिलिगै सुरनारी॥
कोइ कहै बरबस भूप कुमारी। बरि भागे बन भवनबिसारी॥
कोइ कहै काम बाम लै रूरी। चढ़े शम्भु पर बैर बिसूरी॥
कोइ कहै बिप्र शाप बश आहीं। सिद्धि समेतसिद्धिकोइजाहीं॥
कोइ कहैं ठग लिहे ठगोरी। ठगतफिरतमनमतिकरिभोरी॥
कोइ कहै एसुकृती हैं कोई। निज परलोक सुधारत सोई॥
उदय भये कछु भाग हमारे। भरि नयनन जो इन्हैंनिहारे॥
यहि बिधि की तरकैं करिभूरी। पूंछे निजनिज जाइ हजूरी॥
कह्यो रामसति बचन तुम्हारे। फलत भाव जस ओर हमारे॥
त्यहि अवसर तापस यक आवा। करि बिनतीहरिधामसिधावा॥

दो० मग बासिन सुखदेत इमि उतरे यमुना जाइ।
मज्जनकरि हरिसखहितबबिदाकीनबरिआइ॥
चलेलषणसियसहितप्रभुकरियमुनहिंपरनाम।
उतरेसीतहिश्रमितलखि बटतरुतरढिगग्राम॥

एक अली लखि गइ निज गेहा। कहत सखिनतेसहितसनेहा॥
सखि यहि ग्राम पथिक द्वैआये। गौर श्याम छबिधामसोहाये॥

दो० तिन संग सुन्दरि एक जेहि लखिलाजतजगमेव।
चारि सुमन फल चारिपशु बिहँगचारिश्रुतिदेव॥

सुनि पुरजन सब देखन धाये। उतरे प्रभु जहँ तहँ चलिआये॥
नखशिख सुभगस्वरूपनिहारी। सीता ढिग आईं मिलिनारी॥
पूंछहिं हे स्वामिनि सुकुमारे। ये दोउ बालक कौन तुम्हारे॥
देवर लषण कह्यो सियबैनन। निज पति प्रभुइबतायो सैनन॥
कौशल पुरहै इनकर धामा। नृप दशरथ के सुत अभिरामा॥
कारण कौन फिरत बनमाहीं। कोमल पद पदत्राणहु नाहीं॥
सासु सवति कीन्ह्यो उतपाता। दियबन बरषसात अरुसाता॥

सुनिसियबचनसकलबिलखानी । बोलींबिधिगति जातनजानी ॥
निपट निठुर चितकरत जोभावै । नीके माहिं जबून लगावै ॥
शशि शीतल घटबढ़ सकलंकी । कोमलकुबलैकिहिसि कटंकी ॥
रूप कल्प तरु जल निधिखारी । नीचधनिकबड़ बिप्रभिखारी ॥
इनकर रूप अनूपम कीन्हा । त्यहिपाछेकाननलिखिदीन्हा॥
जोपै इन्हें दिहिसि बनबासा । तौकतकीन्हिसिभोगबिलासा॥
यहि बिधिकहिसबआपुस माहीं । बोलीं पुनि रघुपतिके पाहीं ॥
आजु रहौ चलि हमरे धामा । आखिररहादिवस यकयामा ॥
कह प्रभु हमैं दूरिहै जाना । असकहिउठिबनकीन्हपयाना ॥
लखि सब लोग उठे अकुलाई । मनहुं गई गृह सम्पतिआई ॥
दृगजल पूरि कहत बरजोरी । फिरतकरेउ इतकृपा बहोरी ॥
हरि इच्छा जस समयबिलोकी । करब तथा थल पठये रोकी ॥
प्रभु सियलषणजात इमिलागा । भक्तिसहितजनु ज्ञानबिरागा ॥
मगमें देखि ज्योतिषी कहईं । राज चिन्ह सबतुम्हरे अहईं ॥
सोबन बिचरत बिन पदत्राना । ज्योतिष झूठ हमारे जाना ॥
बहुरि बिचार करहिं गनि आछे । होई राज कछुक दिन पाछे ॥
जो देखैं सो संग सिधावैं । घूमहिं तबजब बहुसमुझावैं ॥
जिन सिय राम बटोही हेरे । भव दुख दूरिभये तिनकेरे ॥
अजहुं जासु उरवह छबि आवै । निश्चय सो परधाम सिधावै ॥
मग निवास करि प्रातसिधाये । बालमीकि के आश्रम आये ॥

दो० कीन्ह दण्डवत मुनिहिं प्रभु लीन बिप्र उरलाय ।
लषण राम सिय रूप लखि भये मुदित ऋषिराय ॥
कंद मूल फल अमी सम दीन्हे करि सनमान ।
भोजन करि परि भृत्यते बोले राम सुजान ॥
नाथ चतुरदश बरषमो बन दीन्हों महि पाल ।
सुथल बतावहु निरबिघन तहां रहौं कछु काल ॥
कहमुनि नाम नरेश शिर धरहु करहु निज तंत्र ।

अद्भुत चरित तुम्हार लखि कोन भूलिहै मंत्र॥
अकथ अलौकिक रूप तव तर्कि सकै नहिं केउ।
जानै सोइ करिकृपा तुम जाहि जनावोदेउ॥
निज रहिबोहित बेश्म जो पूछेउ सोसुनि लेहु।
कहैं सुनैं तव चरित जे तस्य हृदय तवगेहु॥
मंत्रराज तव जपहिं जे रटैं निन्तर नाम।
निरद्वंदौ निस्पृह सदा तस्य उरसि तव धाम॥
परत्रिय जानै जननि जिमि परधन गरल समान।
सम लोष्टा सम कांच नहिं तस्य मनसि तवथान॥
जाति पांति धन धाम तजि तुम्हैं रहै लवलाय।
जिनके मन मंदिर बसहु सिया सहित दोउभाय॥
तिनके मान न मोह मद तव दासन में नेह।
काम क्रोध कटु रहित जे तेमानस तवगेह॥
तव उछिष्ट भोजन करैं तव प्रसाद पट लेहिं।
बसहु तासु उर रामजे क्षुधितहि भोजन देहिं॥
दुख सुख समुझैं एकसम शांतशुद्ध चितमौन।
जगत रीतिते रहितजे तस्य उरसि तव भौ न॥
षट बिकार मय बपु लखैं आतम रहित बिकार।
करैं सदा सत संगजे तिन उर भवन तुम्हार॥
श्रीसम सेवैं गुरु चरण नावैं द्विजपद माथ।
बरणैं नाम प्रभाव नित तहां बसहु रघुनाथ॥
तप तीरथ ब्रत दान करि मागहिं तवपद प्रीति।
बसहिं तस्य उरपद्म जे चले राग रस जीति॥

औरहु इमिबहु आश्रम अहईं। बसेउरामतुमलखिसुखतहईं॥
यहिअवसर समसुथलजोचहऊ। तौचलि चित्रकूट में रहऊ॥
बरणत सुर मुनि संत बिधाता। चित्रकूट चिंतत फल दाता॥
भले राम कहि कीन पयाना। आइ कीन पयसरि अस्नाना॥

हरि दिन कामदगिरि प्रभुआये। समाचार सुर संन्तन पाये॥
आइ सबन पद नाये माथा। नाथ आजु हमभये सनाथा॥
परण कुटी युग सुभग बनाई। निजनिजलोकगये सुखपाई॥
पुनि सुनि आये कोल किराता। कंद मूल फल धरिधरिपाता॥
देदैभेंट ज्वहारि ज्वहारी। निरखिरामछबिहोइँसुखारी॥
करि सनमान राम बैठारे। तिनतब प्रभुते बचन उचारे॥
पतित जानिप्रभुदरशनदीन्ह्यों। हमसबकाहुकृतारथ कीन्ह्यों॥
अब तुम इहैं बसहु सब मासा। सकल सौंजकर अहैसुपासा॥
हम तव दास सहित परिवारा। आयसु देत न करब बिचारा॥
करि परि तोष बिदा प्रभुकीन्हे। चलेभवनचरणनचित दीन्हे॥
जबते राम बसे बन आई। तबते भयउ सकलसुखदाई॥
फूलहिं फलैं बिटप बहुभांती। सुरतरुसमबिहरतअतिपांती॥

दो० करि हरि कपि वृक कोल मृग बिचरत बैरबिहाइ।
प्रेम विवश चलि जाहिं तहँ जहँ दरशतदोउभाइ॥

गीतिकाछंद॥ चलिजाहिंजहँतहँबंधुदोउ तबदेखिसुरतापस कहैं। येअहैंबड़भागीसकलजेप्रभुइअवलोकतरहैं॥ हिमशैलसुर तरुजह्नुजागिरिगहनपयसरिदेखहीं। तहँभाग्यजानहिंतुच्छआ पुहि तिन्हैंबड़करिलेखहीं॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथ दासरामसनेहीकृतश्रीरामचित्रकूटआगमनोनामत्रयो दशोऽध्यायः १३॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु गणपगिरा सुखदानि।
बरणौं मानस मत ककुक आग्निवेश कृत आनि॥
चित्रकूट प्रभु जिमि बसे सो मैं कह्यों बखानि।
अबसो सुनहु सुमंत जिमिअवध गये दुखमानि॥
केवट ह्वै हरिते बिदा जब आयो निज ग्राम।

देख्यो परे सुमंत महि रटैं राम हा राम ॥
जाइ निषाद बिषाद बश लीन्ह्यो गोद उठाइ।
चर्चि चढ़ाये रथ बिषे बहुत भांति समुझाइ ॥
लीन्हेंसेवक बोलि निज दीन्हें करि तिन साथ।
चलत न हयहिहिनात दिशि देखिदेखि रघुनाथ ॥
इत उत ऐंचत अटत मग लेत जो हरिको नाम।
चितवतत्यहितन हरिदिवस पहुंचे कोशलग्राम ॥
पुरप्रवेशनहिंकरिसकत तकतसचिव निशिओर।
जैसे जाइ चोराइ गृह सबकर समुझा चोर ॥
मनमें करत बिचार म्वहिं देखि पूछिहैं लोग।
कौन उतरु देहौं तिन्हैं नृप रानिन तब भोग ॥
निकसतनिठुर न प्राणमम रहतकौन सुखलागि।
धृगजीवन रघुवीर बिन जरत न बपुबिरहागि ॥
उभयघरी निशि गत गये कौशल्या के धाम।
सुनिनृप उठिउरलाइ कह कहु सुमंत कहँराम ॥
तब सुमंत बोले समुझि धीर धरहु उरनाथ।
हानि लाभ जीवन मरण दुख सुख सबकेसाथ ॥
सबका कीन प्रणाम प्रभु सीता लषण समेत।
आपु गये बन बचन लगि मोहिंपठै दुखहेत ॥
सुनिमहिपाल बिहालह्वै गिर्योधरणिपछिताइ।
अन्ध शापकी सुरतिकरि कही सबन समुझाइ ॥
सत्रिय बिश्वदेवान्धसुत श्रवणबध्यो जगजानि।
तजिहौ तनसुतबिरहइमिदिहिनिशापदुखमानि ॥
पतंगिका के पूंछ में सींक चलाई जौन।
लह्यो तासुफल महा सुनि शूलतहां हमकौन ॥
कट्यो शंभु को लिङ्ग जहँ जलजासन को माथ।
मिटत वर्म दश भानु जहँ तहँ हमका रघुनाथ ॥

सत्य कहत श्रुति कर्म बिन भोगे छूटत नाहिं।
राम रटनिते मिटत जिनि चूना परि निशि माहिं॥
राम मातु बोली बिलखि नाथ धरहु उरधीर।
तौमिलि हैं सिय राम फिर शोभसुनी रघुबीर॥
हाय राम सिय लषण कहि हाय राम बश शोक।
तृनसम हरिहित त्यागितनु भूपगयो सुरलोक॥
लखि लागीं रोवन रवनि गुण बल तेज बखानि।
बिलपहिं दासी दास सब पुरजन परिजन जानि॥
यहि बिधि बीती राति सब प्रातकाल मुनि आइ।
शोक मिटायो सबन कर बिबिध प्रसंग सुनाइ।
कह वशिष्ठ मन धीरज धरहू। धर्म बिचारि शोच परि हरहू॥
जोजन मत सो मरत विशेषी। देह दशा यह अघटित देखी॥
कनककशिपु हिरण्याक्ष सरीखे। गणिनकेरगुणगुणियतलीखे॥
सगर सहस भुज आदि नरेशा। सुमिरन मात्र रहो अवलेशा॥
जिनके रथ पहियनते सागर। भयोसो भये कालबशनागर॥
पूर्व कर्म अनुसार जहाना। हरतमौतकरिविविध बहाना॥
प्रथम सृष्टि जब रची बिधाता। लहै न कोइतहँजीव निपाता॥
तबरचि मौत बधायसु दीन्हा। अयशसमुझित्यहिरोदनकीन्हा॥
आंशुन ते भय रोग घनेरे। कह बिधिये सब संचरतेरे॥
इनके ओट हरो तुम प्रानी। करत सोईबिधि आज्ञामानी॥

दो० मेदिनिमेरु मजादि सुर सो एकदिन नशिजात।
गजश्रुति सम नर आयुचर ताकी कौनबिसात॥
लही बड़ाई भूपवर हरिहित परि हरि देह।
षट बिकार परते परे आतम आनँद गेह॥
छेदि सकै नहिं शस्त्रज्यहि पावकसकै न जारि।
मारुत सकै न शोषि यहि बोरि सकै नहिंबारि॥
जिमिबिहाइ जीरण बसन धारत मनुज नवीन।

तिमि देही तनु जीर्ण तजि नूतन गहतप्रवीन ॥
आदिअन्त अव्यक्त है मध्य जासु कछु व्यक्त।
तेहि आतम के हेतु की करहु कल्पना त्यक्त ॥
रोये जो मिलिजाइ त्यहि रोवै भलै पुकारि।
जो न मिलै रघुनाथ तौ धीरज धरै बिचारि ॥
सज्जन के संसर्गते कस्य न मानस ताप।
मिटी मिटतमिटिहैंन सुनित्याग्योसबनकलाप ॥
तेल नाव तनु राखि नृप लिये दूत युग बोलि।
बेगिहिलावहु भरतकहँ कहेउ न तुमकछुखोलि ॥
चले चार इत पवन जिमि उतै भरत दोउभाइ।
दीख भयावन स्वप्न निशि धावत पहुंचे जाइ ॥
भूतादिन तहँ पहुंचे जाई। गुरु निदेश सुनि दोनहुभाई ॥
चपल बाजिचढ़ि तुरत सिधाये। कुछू दिवसनिजनगरहिआये ॥
पुर प्रविशत भे अशकुन भारी। परे देखि सबजीव दुखारी ॥
लोग मिलैं नहिं कुशल सुनावैं। गवैं ज्वहारि ज्वहारिसिधावैं ॥
गे चलि प्रथम केकयी गेहा। बैठारे तिन सहित सनेहा ॥
पूंछि कुशल निज नैहर केरी। बोले भरत तासु तन हेरी ॥
भूप कहां सुरलोक पधारे। कारण राम बिरह के मारे ॥
दुख कि देत रहैं युवराजू। काहेनदिहिनि किहेउमैंकाजू ॥
कौन काज नृप पद तबहेता। लिहेउँ दिहेउँ रामै बन चेता ॥
राम कौन सुत सवति केजानी। सवति कौनि कौशल्या रानी ॥
बोलत कस कहँ राम सभाई। गे बन बंधु सहित महिजाई ॥
सुनिमहिमुरछि गिरेदोउभ्राता। कहिहा रामलषण सियताता ॥
हा पितु स्वर्गलागिप्रिय तोहीं। रामहिंसौंपिगयउ किनमोहीं ॥
हा सिय राम लषण मम पाछे। सहिहैं दुखबन मुनिपट काछे ॥
ह्वै जननी तैं अस बर मांगे। हरे सकल सुख एकहि लागे ॥
जातैं यहै रहै उर धारे। जनमत मोहिं मारि किनडारे ॥

राम सबहि प्रिय प्राणसमाना। तैं किमितिन्हं कहे बनजाना॥
भूप प्रतीति कीन भल तोरी। मरणकाल कछुमति भइभोरी॥
भूप लगाइ न दोष तुम्हारा। दुख कर मूल अभाग हमारा॥
अब दृगवोट बैठु उठि जाई। त्यहिक्षण तहां मंथरा आई॥
लखि रिपुदवन लात इकमारी। गिरी भूमि हा हाय पुकारी॥
पकरि केश इत उत घसिलावा। पर अपकार केर फल पावा॥
भरत साधुलखि दीन छुड़ाई। कौशल्या गृहगे दोउ भाई॥
राम मातु उठि हृदय लगाये। जनु बनरामलषण फिरिआये॥
रोदन करि पुनि हालसोबरना। राम गमन बन भूपति मरना॥
जन्ममरणफलभलनृपलीन्हा। म्वहिं बिधिबिरचिबज्रकरिदीन्हा
मातु गिरा सुनि दुख रसबोरी। बोलेभरत बिलखि करजोरी॥
मातु मृषाम्वहिं बिधिजनमावा। मम पाछे सबहुंन दुखपावा॥
केकयि सुत अपयश अधिकाई। मातु मतेम्वहिं कौन बताई॥

दो० जो अघगोद्विज मातु पितु सुततिय मारे होइ।
जो मम सम्मत होइतौ म्वहिं अघलागे सोइ॥
शिव निरमायल पलभखी मद व्यभिचारीचोर।
जो गति पावै सोइ म्वहिं मिलैमानि मतमोर॥
जेश्रुतिनिंदक हरिबिमुख सतसंगति न सोहातु।
तिनकी गति म्वहिंमिलहिजो होइमोरमतमातु॥
मातु भरत के बचन सुनि बोलीशुचि सुखधाम।
रामहिं प्रिय तुम प्राणसम तुम्हैं प्राणसमराम॥

सो० तात मातु मत माहिं तुम्हैं कहैं मतिमन्द ते।
सुगति लहैंगे नाहिं असकहि लिये लगाइउर॥

यहिबिधिबिलपत रैनि सेरानी। होत प्रात आये मुनिज्ञानी॥
करि प्रबोध भरतहि समुझावा। उठे तुरत गुरु आयसु पावा॥
नृपतन छालि बिमान बनाई। राखी मातु सकल समुझाई॥
गंधसार समधी बहु लीन्ही। दाह क्रिया सरयू तटकीन्हीं॥

पांडुपीर घाते श्रुति रीती। दीनितिलांजुलिसबनसप्रीती॥
गौरपक्ष ग्यारसि दिन जाना। कीन भरत दशगात्रबिधाना॥
द्विजहि दान दीन्हेउ सबभांती। तिसरेदिनभइ त्यरहीं शांती॥
पितुहितभरतकीनि जसकरणी। सोमुखसहसहु जाइनबरणी॥

दा० एकादिन गुरुजन सकल जुरे सभामंधि आइ।
शोच बिबश लखि भरतते तब बोले ऋषिराइ॥

चामरछंद॥ सुवनसुनिलीजिये। सबनसुखदीजिये॥ दृगन जलपोंछिये। नृपहिकतशोचिये॥ छप्पै॥ शोचियद्विजनिजधर्म त्यागिजोरहैबिषैरत।शोचियनृपनयरहितसहिततमतोषपोषगत॥ शोचियबणिकबजाइपाइधनधर्मनठानहिं।शोचियतियपियछलनि शूद्रबिप्रहिअपमानहिं॥शोचिययतीबिरागबिनतियनशोचियसब भांतिभल। सुरदुरलभतनुपाइजिनभजेउनरामहिंछांड़िछल॥
शोचन योग न जनक तुम्हारे। नीतिनिरतत्रिभुवनउजियारे॥
प्राण पुत्र तजि राखे बचना। प्रगटी प्रेमप्रीति की रचना॥
अस जियजानि शोचपरिहरहू। पितुआयसु सो शिरपरधरहू॥
तुम्हैं राज्य दैंगे नृप ज्ञानी। पालहुप्रजहि परमहितमानी॥
सुरपुर नृप पर तोषै पैहैं। राम लषण सिय सुनिहरषैहैं॥
यामें दोष न निगम बतावै। ज्यहि पितु राजिदेइ सोपावै॥
सुनि सुमित्र कौशल्या बोली। गुरु आज्ञासुत अहै अमोली॥
पुनि पितुबचन जाइ बलिअंबा। हाउ तात सबका अवलंबा॥
सुनिमृदुबचन भरत अकुलाने। बोले सबन नेह बश जाने॥

दो० यदपिमातुपितुगुरु बचन बिन बिचारचहिकीन।
तदपि मोह बश उतरु में देत क्षमेहु लखिदीन॥

प्रथम पिता प्रण पूर निबाहा। रामलषणसियबन भलचाहा॥
जोमोहिं राजिदेत बर जोरा। यामेंहित तुम्हार की मोरा॥
ममहित सो रघुपति पद सेवा। अपर उपाइ न जानहु देवा॥
हित तुम्हार हमते किमिहोई। केकयि सुवन जान सबकोई॥

ज्यहिं उदगरिसबकादुखदीन्हा। कारणते कारज कटु चीन्हा॥
मनमुखमूल सरिस सुखदायक। धर्मशील चाहिय नरनायक॥
तेहितें सबै कहौं शिर नाई। आयसु याहि देहु हरषाई॥
प्रातकाल रघुपति पहँ जावों। जरनिमिटै जब दरशन पावों॥
भरत बचन सुनि सबहरषाने। बोले मुनि तब परम सयाने॥
शोक सिंधु बूड़त अवगाहू। तुम अवलंब दीन सबकाहू॥
मातु मते जो तुम्हैं बताई। सोशठ कीट नर्क दुख पाई॥
अवशि चलहु बन जहँ अवधेशू। गेनिज निज गृह पाइनिदेशू॥
भरत बोलि सुचि सेवकलीन्हे। भवन भँडारसौंपि सबदीन्हे॥
सचिवहिदीन तिलक करसाजू। बिपिन देवगुरु रामहिंराजू॥
होत प्रात चढ़ि पुरजन जाना। सबन कीन बनओर पयाना॥
ज्यहि राखहिं गृह रक्षा हेता। सो कहैहरिबि नजरैनिकेता॥
शुक सारिका पिंजरन बोलैं। अधिक उचाट कपाटन खोलैं॥
चढ़िचढ़िरथऋषि द्विजनसमेता। चले सकलबन रघुपति हेता॥
शिविका सुभग समूह सँवारी। चढ़िगवनीमुनितियनृपनारी॥
जेष्ठादौ बिबेक कहि साद्दे। भरत शत्रुहन चले पयादे॥
भरतहि देखि लाग अनुरागे। तजितजियान चलनपगलागे॥

दो० कौशल्या ढिग जाइकै कह्यो चढ़ौ रथ तात।
ह्वैहै पुरजन बिकलअति सुनतचढ़े दोउभ्रात॥
प्रथम दिवश तमसा रहे उभय गोमती तीर।
तिसरे दिन बससई ढिग प्रातचली सबभीर॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजारश्रीरघुनाथ
दासरामसनेहीकृतभरतचित्रकूटगमनोनामचतु
र्दशोऽध्यायः॥ १४॥

दो० ज्येष्ठकृष्ण चतुरथ दिवश शृंगमेरु नियरान।
आवतभरत निषादसुनिगुणि फसादबिलखान॥

प्रथम मातु मिसि दीनबन अबलै कपटसमाज।
चढ़े राम सिय लषण पर करन अकंटक राज॥
जोन होत यह बात उर तौ न लेत दल साथ।
उभयभांति गुहज्ञाति सब बोलिलिये रघुनाथ॥
तिनके कहेसिसजग सबहोहू। परिहरि तात सुतन करछोहू॥
सम्मुख समर भरत ते करहू। राम हेतु तनु तजि भव तरहू॥
चतुर चित्रनीते मनिलेहीं। मूढ़ रतन कौड़ी लगि देहीं॥
भले नाथ कहि भट अनुरागे। कसिकसि अस्त्र शस्त्रभे आगे॥
सबनिज कटक देखि गुहराजा। कहेसि जुझार बजावहु बाजा॥
त्यहिअवसर भइ बांयँ छीका। शकुनिनकहा शकुन यहनीका॥
रामहिं भरत मनावन जाहीं। तुमते होब रारि कछु नाहीं॥
राम नाथ सुनि सब से कहेऊ। मैं अबजात सजग तुम रहेऊ॥
लेहौं भेद भरत कर जाई। प्रीतिअप्रीति न छिपतछिपाई॥
कंद मूल फल सुरसरि नीरा। घटन भराइ गयो तिन तीरा॥
मुनिहिं कीनलखि दण्डप्रणामा। दीनिअशीशसमुझिप्रियरामा॥
भरत बिलोकि तुरत रथत्यागा। चलितेहि मिलेसहितअनुरागा॥
भेंटत देखि देव अनुकूला। जयतिजयतिकहि बरषैं फूला॥
कहँ वशिष्ठ कहँ भरत निषादा। भेंटतताहि सहित अहलादा॥
यह हरिशरण केरि प्रभुताई। नीचहु होत पबित्र लखाई॥
पूंछी कुशल भरत ताकेरी। अब सबभांतिकुशल भइ मेरी॥
समुझिमोहिजे प्रभुहिनभजहीं। तेजग बंचक सबसुख तजहीं॥
बहुरि मिले रिपुदवनि कुमारा। पुनि सबरानिनकीन जोहारा॥
दिहिनिअशीशलषणसमजानी। पुरजनलखि हरषे सुखमानी॥
कहैं सकल यह है बड़ भागी। भेंटैं जाहि राम अनुरागी॥
तब निषादनिजलोग बोलायो। घरबन बाग सकल झरवाये॥
प्रथमै सब सुरसरि तटगयऊ। करि मज्जन सुखपावतभयऊ॥
मांगि मांगि रघुपति पदनेहा। टिके आइ जहँ तहँ तरु गेहा॥

तब गुहपति बहुअशन मँगाये। कंद मूल फल सबहिंन खाये॥
भरत सखा कहि लीन लेवाई। गे जहँ रैनि रहैं रघुराई॥
कुश साथरी देखितरु श्यामा। परिक्रमा करि कीन प्रणामा॥
दो० सजल नयन ह्वै सखा ते बोले सकुच समेत।
हाय रामसिय लषणबन सहतबिपतिममहेत॥
जनक सुता अतिशै सुकुमारी। सासु ससुर पतिप्राणपियारी॥
लोने लषणसरिस शुचिभ्राता। भयो न अहै न ह्वै है ताता॥
मृदु मूरति रघुपति सुकुमारे। जीव चराचर सबहिं पियारे॥
ते सोवत बन दर्भ डसाई। बिधिगतिमतिकछुजानिनजाई॥
जिन्हैं प्राणसम पितु महतारी। जोगवत रहैं नगर नर नारी॥
तेबन बिचरि फूल फल खाहीं। देखि हृदय मम फाटत नाहीं॥
धृगधृगधृग म्वहिं बारहिंबारा। धन्य तात प्रणभल प्रतिपारा॥
सुनि बोला करजोरि निषादू। जानिबाम बिधि तजहुनिषादू॥
नाथ आपु प्रिय रामै भारी। करत रहे उतकर्ष तुम्हारी॥
धरहुधीर सुख समुझि प्रनामा। करहुसखन चलिगये मुकामा॥
हरिगुण कहतभयो भिनसारा। करि मज्जन सब भये तयारा॥
केवट नाव अनेक मँगाई। उतरि सकल चलिभेहरषाई॥
सानुज भरत पयादे देखी। शुचिसेवक सकुचाहिं बिशेषी॥
तिसरे प्रहर प्राग चलि आये। करि अस्नान सबन शिरनाये॥
बिप्रन दान दीन बहु भांती। मांगि रामपद प्रीति सोहाती॥
जानि कामप्रद तीरथ नाथा। बोले भरत जोरि युग हाथा॥
सब फल दायक तुमभगवाना। दीजै आजु सुकृत म्वहिं दाना॥
दो० चहौंनसुगति न सुमतिसुखऋद्धिसिद्धिनहिंनेहु।
बढ़ैरामपद प्रीति नित यही दान म्वहिं देहु॥
शशि चकोर घनमोरधनकृपिनमकर मधुरीति।
चातक स्वातीते अधिक प्रभु पद बाढ़ै प्रीति॥
जोकहो प्रथमें तजि तिन्हैं कत गवनेहुपरभौन।

अंबअनुग अज्ञान ते अघ न होय अस कौन ॥
सो० भरत बचन सुनि सार भई त्रिबेणी में गिरा।
तात तजहुकुबिचार तुमरामहिं प्रियप्राणसम ॥
बेणी बचन भरत सुनि हरषे। कहि बड़ साधु सुमनसुरबरषे ॥
भरद्वाज पहँ गे दोउ भाई। कीन दण्डवत मन सकुचाई ॥
ग्रीषमऋतु पुनि मैजल भारी। पद झलकत झलकाजनुबारी ॥
लखि मुनीशउठि हृदय लगाये। देइ अशीश निकट बैठाये ॥
कहिऋषितुमसकुचत कततातो। अचल ईशगति बाम बिधाता ॥
रामहि प्रिय तुमसम नहिंकोई। तव मतकहब लहबअघसोई ॥
पलतेहुप्रजहितदपि नहिंफीका। प्रभुपद प्रेमकिह्यो अतिनीका ॥
तेहिपर कहि कलंक बड़ येहू। हम सबका उपदेशहि देऊ ॥
समुझिपरतमोहिं असनिरबहेऊ। राम कृपा मूरति तुम अहेऊ ॥
बालकबिधि समसुयशतुम्हारा। हरण ताप तम पाप अपारा ॥
भरिनयननछबिनिरखितुम्हारी। हम आपनिबड़िभागबिचारी ॥
दो० सब साधनकरफल लहा लषण रामसिय दर्श।
तेहिपलकर फल अबभयो भरत त्वया स्पर्श ॥
सुनिमुनिबचन भरततबबोले। पुलकि गात जललोचन लोले ॥
नाथ मोहिं नहिंपितुकर शोचा। नहिंदुखजियजगकहैंकिपोचा ॥
बिगरै परलोक लोकन शंका। नहिंकछुडरबिधि भयोकिबंका ॥
एकहि कष्ट हृदय मम भारी। लषण राम सिय होत दुखारी ॥
यहि आमय की औषध आवै। तब कछु और बात मन भावै ॥
कह मुनिकरहुन शोच तुम्हारे। सब दुखमिटिहैं प्रभुइ निहारे ॥
आजु होउ तुम अतिथि हमारे। भलेनाथ कहि कटक सिधारे ॥
तब मुनि करिबिचार सुखपाई। ऋद्धिसिद्धिअणिमादिबोलाई ॥
कह्यो करहु सबहिन की सेवा। हरषीं सकल पाइ बड़ देवा ॥
प्रथम कनकमय महल सुहाये। कैयो योजन माहिं बनाये ॥
दीन्ह्यों बास सुरुचि सब काहू। सुभगसेज स्रकसरसउ काहू ॥

अशन बसन बर भोग अनेका। दिये तोपि तिनयकपर एका॥
दासी दास अप्सरा नाना। बाग तड़ाग बिबिधि पौमाना॥
सुर दुर्लभसुखलहि सबलोगा। बिसरेघर बनबिरह बियोगा॥
भरत बिलोकिमुनीश प्रभाऊ। भयो राम पद अधिकहु चाऊ॥
चक्र बाक सम रैनि बितायो। प्रातनहाइ मुनिहिशिर नायो॥
बर बिराग बिपेंद्र निहारी। मुदित दिये सँग सेवक चारी॥
आयसु पाय सुसैन सिधाये। बीचबास करि यमुनहिं आये॥
रघुपतिबरण निरखि बरवारी। हरषत भये सकल नर नारी॥
भरत भाव भणि सकतन शेषा। अपरकबिहि अतिअगमविशेषा॥
जिमि मनमलिनमनुष्यनकैहां। दुर्लभ ब्रह्मानँद जग मैहां॥
तेहिनिशिरहितहँउठिभिनसारा। एकै खेव भये सब पारा॥
करि अस्नान चले शिरनाई। देखि कहैं मग लोग लोगाई॥
का दोउ राम लषण हैं सोई। होती संग सीय कहै कोई॥
सैन साथ पुनि मानस खेदा। तब इक सखी कह्योसबभेदा॥
सुनिसो कथा सकल अनुरागीं। भरतहि बहुरि सराहनलागीं॥
कैकयि योग न सुत ये अहहीं। एक कठोर बिधातै कहहीं॥
भली भई भव भूत बिगारी। एक कहै अस कहौ न प्यारी॥

दो० राज्यहरणपुनिपितुमरण बिपिनचरणजगदीश।
दैव करै ऐसी बिपति परै न काहू शीश॥

यहिबिधिजहँतहँग्रामनिवासी। कहैं सुनैं सुमिरैं सुख रासी॥
भरतहि जिन देखे मगलोगा। तिनके सकल मिटे भव रोगा॥
सहित समाजजहां पगधारहीं। महि कोमल तरु छायाकरहीं॥
यह बड़ि बात भरत कै नाहीं। जिन्हैंराम सुमिरत मन माहीं॥
लखि गुरुते बोले सुर राजा। बनीबात अब होत अकाजा॥
रामहिं भरत मनावन जाहीं। असकछुकरहु मिलैजेहिनाहां॥

दो० कह सुरगुरु हरिभक्त जो कोऊ करत कुचालि।
परतपलटितेहि शीशसोइज्योंरजरबिहिउछालि॥

सेवक की सेवा किहे हरिहि होत परितोष।
करै भक्त ते बैर जो जरै राम के रोष॥
यद्यपि यक रस एक प्रभु गहत न सारासार।
तदपिसुभक्तनहितकरत समअरुबिषमबिहार॥

असजियजानि तजहुअबिचारू। सुमिरहुभरतचरणसुखसारू॥
सुनि सुरपति उर धीरज आवा। बरषि सुमन पदप्रेम बढ़ावा॥
पूछत प्रभु भरतहि चलि आये। नयनिवास करि प्रातसिधाये॥
सबके उर अभिलाष बिशेषी। कब सियरामलषणमुखदेखी॥
तब निषाद गिरिवरहि देखावा। प्रेममगनसबहिन शिरनावा॥
सुमिरत नाम दरश की आशा। उभयकोशचलिकीननिवासा॥
प्रातकाल उठि चले बिशेषा। इत सियस्वप्न प्रातअसदेखा॥
पुरजन सहित भरत जनु आये। सासुआनबिधि सबदुखताये॥
सुनिप्रभु कह्योस्वप्न भलनाहीं। कीन स्नान शोच मनमाहीं॥
उत्तर दिशि देखी नभधूरी। दुरे आइ खगमृग तहँ भूरी॥
तबतौ चकित उठे रघुराई। आइकिरातन खबरि जनाई॥
भरत आगमन सुनि रघुबीरा। भये प्रेमबश पुलक शरीरा॥
पुनि मनशोच कीन रघुराऊ। उत सुरहित इत बंधु दबाऊ॥
बहुरि समुझि मन भये सुखारे। भरत कहे महँ अहैं हमारे॥

दो० लषणलख्यो प्रभुशोचबश उठेधनुषशरसाधि।
बोले सम्मुख जोरिकर सहितक्रोध अहलादि॥

नाथ कनक रसना प्रभुताई। पावत पुंस जात बौराई॥
वेनु नहुष भुज सहस सुरेशा। शशित्रिशंकुयशबिदितत्रिदेशा॥
अरु कृतवीर्य्य दक्ष गति गाई। सुरती में नहिं सिन्धु समाई॥
भरत साधु बड़ रहे सयाने। तेउ राज्यपद पाइ भुलाने॥
बिपिन यकाकी समुझिसुभाये। करन अकण्टक राज सिधाये॥
जो मन में यह बात न आवत। तौकेहिकरिहरिकटकसोहावत॥
प्रथममातुमिस किहिनिखोटाई। समय पाइ फल लागत आई॥

भरतहि आजु सबन्धुप्रचारी। नाथ शपथ रण डरिहौंमारी॥
अति अपमान रजहिंनहिंसोहैं। हम नृपतनय कराबधु ओहैं॥
सुनत बचन लोकप भयमानी। तब तहँ भई गगनइमिबानी॥
ऐसे बल हैं तात तुम्हारे। परबध करत न कछुअबिचारे॥
सकुचे लषण राम सनमाने। तात बचन तुम सत्य बखाने॥
भरत सरिस शुचि बन्धुजहाना। भयो न अहै तात तवआना॥
गरुड़ैचहुं रजु अहि गहि खावै। गोपद बूड़ि घटज बरुजावै॥
भरतहि होब न नृप मद भाई।बिनशकिपयनिधिइषदखटाई॥
गुणअवगुणमयजगबिधिकीन्हा॥ भरतहंसजलतजिपयलीन्हा॥
यहि बिधि प्रभु इत करतबड़ाई। उतै भरत पयसरित नहाई॥
सकल समाज राखि तेहि तीरा। आपुचले जहँ सिय रघुबीरा॥
संग निषाद नाथ लघु भ्राता। बिबिध कुतर्ककरतमगजाता॥
कैकेयि सुत लखिचहैं तजिदेहीं। सेवक समुझि अपनकरिलेहीं॥
तजेहु अतजेहु मोहिं गतियाहीं॥शिशुतजिमातुपितहिकितजाहीं॥
यहि बिधि ठटुकतबढ़तअधीरा। आये चलि प्रभु आश्रमतीरा॥
फूले बिटप अनेक प्रकारा। खगमृगमधुकर करतबिहारा॥

दो० पाकरि जंबु तमाल चुत तामधि बटतर श्याम।
तेहितर सरिता तटबनी परणकुटी अभिराम॥
बहु तुलसी तरु सुमन चरु रुचिरबेदिका एक।
होत कथा नित आइ तहँ बैठत साधु अनेक।

थल शोभा जब भरत निहारी। मिटेसकल दुख भये सुखारी॥
चले प्रणाम करत दोउ भाई। पहुंचे जब रघुपति पहँ जाई॥
उठे तुरत प्रभु जबै निहारा। कहुं धनुशर कहुंतूणबिसारा॥
धाइ उठाइलाइउरलीन्ह्यो। मिलनिनिरखिसुरजयजयकीन्ह्यो॥
प्रीति प्रतीति भरत रघुवरकी। बिधिहरिहरसुरसकहिंनतरकी॥
हौं केहिभांति कहौं मतिथोरी। मिले लषणते भरत बहोरी॥
राम सखहि भेंटे हरषाई। मिले शत्रुहन प्रेम बड़ाई॥

केवट लषण शत्रुहन भेटे। पुनि दोउ बंधु सिया पद लेटे॥
दीनि अशीश सहित बैठारे। भे अनुकूल विलोकि सुखारे॥
तब केवट वर बचन सुनाये। प्रभु मुनि मातु लोगसबआये॥
गुरु आगमन सुनत रघुवीरा। गये जहां सरितटसब भीरा॥
मुनिहिं प्रणाम कीन दोउभाई। प्रेम समेत लिये उरलाई॥
बिप्र विप्रबनितन शिर नावा। आशिरबाद सबन ते पावा॥
आरत लोग समुझि सुरत्राता। पलमा सभै मिले दोउ भ्राता॥
पुनि देखी सब मातु बिहाला। प्रथम केकयिहि मिलेकृपाला॥
पदपरि प्रभुतेहि कीन सुखारी। बहुरि सकल भेंटी महतारी॥
मिले सुमित्रहि पुनि दोउ भाई। कौशल्यै भेंटे अकुलाई॥

दो॰ अति सनेहबश मातुदोउ बंधुलिये उरलाइ।
तेहिक्षणभयोविलापजसतसकापै कहिजाइ॥
सो॰ भेंटि सबैदोउभाइगुरुहिकह्यो पगधारियो।
मुनिकर आयसु पाइ उतरेजलथलदेखिसब॥

द्विजगुरु सचिव मातुलै साथा। आये निज आश्रम रघुनाथा॥
सिय उठि मुनि पद नायोमाथा। उचितअशीशदीनिऋषिनाथा॥
पुनिगुरुत्रियद्विजप्रियपदलागी। दीन अशीश सबन अनुरागी॥
सासुन सकल मिली बैदेही। लखि लखि सबैलाइउरलेही॥
तब मुनीश सबका बैठाये। प्रथम कछुक हरिचरितसुनाये॥
पुनिनृप सुरपुर गमन जनावा। सुनिसिय राम दुसहदुखपावा॥
करहिं विलाप लषण युतरानी। सोकरुणा नहिं जाइ बखानी॥
तब बिधिसुतदीन्ह्योबहुज्ञाना। सबहिन जाइकीन्ह असनाना॥
दशमदिवसरह्योतेहिदिनचीन्हा। बरतनिरजलासबहिनकीन्हा॥
प्रातहि जो ऋषि आयसु दिहेऊ। सोप्रभुसहितप्रीतिते कहेऊ॥
करि पितु क्रिया वेदविधि रीता। मदन दिवस भे शुद्ध पुनीता॥

सो॰ परम पुनीता जोइ कोइनजानततासु गति।

नरनाटककृतसोइ करतनिजानुगभाववश ॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथ दासरामसनेहीकृतभरतचित्रकूटआगमनराममिलाप बर्णनोनामपंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरा सुखदानि।
बरणौंमानस मतकछुक अगिनि बेषकृतआनि ॥
कौशल पुरबासी सकल सुखप्रद परवत पास।
बसतकसततनुलसतलखिनशतजगतकीआस ॥
तब रघुपति गुरुतेकह्यो नाथबिकल सबलोग।
लखिमोहिंयुगसमजातपलनहिंफलभक्षणयोग ॥

बोले मुनि तुम सुनहु कृपाला। प्रथम लोग सबरहे बेहाला ॥
जबते कीन्हिनि दरश तुम्हारे। तबहीते सबभये सुखारे ॥
तेहिते रहन कछुक दिन देहू। भले नाथ कहिगे निज गेहू ॥
लागे रहन मुदित नरनारी। देखिशैल सबहोइँ सुखारी ॥
पयसरि करहिं त्रिकालसनाना। कंद मूल फल लैलै नाना ॥
कोल किरात मुदित लै आवैं। धरिधरि आगे शीश नवावैं ॥
देहिंलोग धन लेहिं न सोई। कहैं हमार भला किमि होई ॥
तुम सुकृती हम बनचर पापी। राम कृपा भय दरश कलापी ॥
प्रिय पाहुन तुम सबसुखदाता। सेवा योग न कोन बिधाता ॥
फल दललेहु दीन जन जानी। रीझत साधु प्रेम पहिंचानी ॥
सुनि मृदुबचन सकल अनुरागे। तिनके भाग सराहन लागे ॥
प्रीति बिलोकि लेहिं फलफूला। खुशीहोहिंतबलखिअनुकूला ॥
यहि बिधि लोगसकलहरषाहीं। बासरबीति पलकसमजाहीं ॥
सबके मन इच्छा यह होई। जहँ सियराम तहैं सबकोई ॥
सियकरि सब सासुन पदसेवा। किहिनिसुबशकोइजाननभेवा ॥
यहिबिधिऋषिबासरचलिगयऊ। द्वितियादिनसबबटुरतभयऊ ॥

भरत बशिष्ठ राममुनि रानी। निजमतिसरिसकहैंसबबानी॥
तेहिक्षण जनक दूत युगआये। प्रभुइ देखिभे दुखितसुभाये॥
बूझत गुरु बिदेह कुशलाई। बोले तब सुचार शिरनाई॥
प्रभुअबकहहुकुशल केहिलागी। कुशल हेतु सो भयो बिरागी॥
नतरु कुशल गै अजसुत साथा। मिथिलायुतभइअवधअनाथा॥
नृप परलोक सुना जब राजा। भयेबिकलतबसहितसमाजा॥

दो० पुनि धीरज धरि अवधपुर दूत पठाये चारि।
खबरिकही तिनआइतब आपुइचले बिचारि॥
किहिनिनिवासनमगकहूंचलतभयेदिनतीनि।
आइपहूंचेखबरिहित तबमोहिं आज्ञादीनि॥

जनकागमन सुनत रघुबीरा। आनन चले संग बहु भीरा॥
पुरजन सुनि सब भये सुखारी। कहैंकि रहब बहुरिदिनचारी॥
गिरिवर देखिजनक रथ त्यागा। कीनप्रणाम सहित अनुरागा॥
मग श्रम स्वल्प न काहूं पावा। मनु प्रभुपास प्रथमहींआवा॥
इत उत लोग सकल नियराने। लागे मिलन प्रेम रस साने॥
जनक मुनिन पद नायउ माथा। ऋषिनप्रणामकीन रघुनाथा॥
मिले बिदेहैं बंधु समेता। लै आये सह प्रीति निकेता॥
दोउसमाज मिलिभये बेहाला। रहन ज्ञान धीरज तेहिकाला॥
भूप रूप गुण शील बखानी। रोवहिंसकलबिकलनृपरानी॥
रामहिं देखि अधिक उरदाहा। हाइ बाम बिधि कीन्हें काहा॥
सुर नर मुनि सब भये दुखारी। नृप बिदेह की दशा निहारी॥
मोह बिवश भे जनक सुज्ञानी। यहरघुपतिपद प्रीतिपिछानी॥
जप तप योग बिरति बिज्ञाना। राम प्रेम बिन व्योम समाना॥
मुनिवर सबहिं बोधबहुदीन्हा। रामघाट तब मज्जन कीन्हा॥
उतरे सब जहँ तहँ जल तीरा। तेहिदिन सकलरहे बिननीरा॥
प्रात सबन उठि कीन सनाना। कोल किरातबात सुनिजाना॥
कंद मूल फल सरस सोहाये। भरिभरि भार भूरि भटलाये॥

मुनिवर पठै जनक पहँ दीन्हे। सैनसहित नृपपारण कीन्हे॥
यहि बिधि भे गत बासर चारी। प्रभुहिदेखिसबलोग सुखारी॥
दो० दोउ समाज कहैं नारि नर अब न जाब घरदूरि।
सिय रघुपति सँगरहब बन सुरपुर ते सुखभूरि॥
ज्येष्ठशुक्ल जिष्णुग दिवस जनक राज रनिवास।
आयहु सुनिसबकाश तहँ जहँ सियकीसबसासु॥
कौशल्या सादर बैठारी। श्रवतनयनजलसकलदुखारी॥
सियामातु बोली बिधि करणी। परमकठिन कछुजातनबरणी॥
देखहु बिष बायस बहुतेरे। मधुमरालकहुं मिलतन हेरे॥
जन्म बिवाह उछाह अपारा। कहँवहसुखकहँयह दुखडारा॥
लषण मातु कह ऐसे अहई। बालचरित समकतजो रहई॥
कौशल्या कह बिधिहि न दोषू। निज कृत कर्म केर सब रोषू॥
म्वहिं न शोच भूपति कर कोई। नहिं बनजात रामसिय सोई॥
गूढ़ सनेह भरत कर देखी। यही एक मोहिं शोचबिशेषी॥
तेहिते देबि कहेउ नृप पाहीं। बहुरे लषण भरत सँगजाहीं॥
भरत शील गुण प्रेम बड़ाई। कहैं शेष पर सकैं न गाई॥
जब तब मोसे बदै महीपा। भरत भये हमरे कुल दीपा॥
कनक कसौटी चढ़ि खुलि नाई। पुरुष परखिये अवसर पाई॥
सुनिबरबचन सकलबिलखानी। धरहुधीर पुनि कह्यो सुबानी॥
लषण मातुतब कह्यो सप्रीती। देबि दंडयुग यामिनि बीती॥
कौशल्या कह अब थल जाहू। हमरे तब पति हाथ निबाहू॥
सुनि बोली अस काहे न कहहू। राम मातु दशरथ प्रियअहहू॥
अगीकार करै गुरु जाही। तृणगिरिसमप्रतिपालतताही॥
तव हित हरि कोइका अनुसरई। रबि सहाइ कहुं दीपककरई॥
दो० रामलषण सिय जाबबन करि सुरमुनिको काज।
फिरि ऐहैं निज नगर तब पैहैं त्रिभुवन राज॥
याज्ञवल्क्य नारद इमि काहा। झूठ न होव सत्य हम चाहा॥

असकहि सियहित बिनयसुनाई। आई निज थल करत बड़ाई॥
प्रियपरिजनहिं मिलीं लखि सीता। मे सब बिकलमोहमदजीता॥
जनक सियहि उर लीन्ह्योलाई। बोले पुनि धरि धीरज राई॥
पुत्रि पबित्र द्वऊ कुल कीन्हों। पावनसुयशसकलउरलीन्हों॥
सुनिपितु बचनसिया सकुचानी। रैन रहे भल यहां न जानी॥
लखि रुख भे प्रसन्न पितुमाता। पठइनि तबतहँ भेंटि सुगाता॥
सिया मातु तब पतिहि सुनाई। कौशल्या कृत भरत बड़ाई॥
सुनि पुलकित तन बोले राऊ। ऐसे हैं प्रिय भरत प्रभाऊ॥
हम वशिष्ठ मुनि बहु अवगाहा। मिली न भरत बुद्धिकी थाहा॥
योग भोग युत नय मैं राऊ। किमि जानोंहरिजनकरभाऊ॥
भरत भाग्य गुण शील बिचारा। शेष कहैं पर लहैं न पारा॥
महिमा भरत केर सुनु प्यारी। जानैं राम न सकैं उचारी॥
तौ फिरि अपर सकै को गाई। चिरिया उर कहुं सिंधुसनाई॥
दो० लषनहिं फेरहु भवन तब कहौ भरत बन जान।
जोंमैं पावहुं थाह कछु प्रीति प्रतीति अमान॥
राम भरत कै बात प्रमाना। जानैं राम भरत नहिं आना॥
इमपि भरत की करत बड़ाई। हर्ष सहित सब रैनिबिताई॥
प्रात काल करि मज्जन नीरा। जनक वशिष्ठ भरत रघुबीरा॥
कौशिकादि पुरजन अधिकाई। बैठे सब बटतरु तर आई॥
बोले तब राघव ऋषि तेरे। नाथ सहत दुख लोग घनेरे॥
जो आयसु मोहिं होइ गोसाईं। सो मैं करौं दासकी नाईं॥
बोले मुनि तुम धर्म जहाजा। कसनकहौयहिविधिमहराजा॥
अस कहि बहुरि भरतते भाषा। कहोतातनिजमन अभिलाषा॥
बोले भरत जोरि कर दोऊ। अवसरसमुझिकहतसबकोऊ॥
बैठे जहँ प्रभु त्रिभुवन त्राता। पुनि कौशिकमुनिउमैबिधाता॥
तुम प्रभु बिधि गति छेकनहारे। सचिव जनक तुम ठौरहमारे॥
औरौ ऋषि बैठे बहु ज्ञानी। तहँहौंलघुकिमिसकहुं बखानी॥

जो तुम सब कर आयसु होई। सोइ हित मानि करैं सबकोई॥
कहमुनि मम सम्मत सुनिलीजै। जो कछु राम कहैं सोइकीजै॥
त्रिगुण आदिदै जहँ लगिप्राणी। राम रजाय सबन शिरजानी॥
कौशिक सचिव भरत सबिदेहा। सबन कह्यो भल सम्मतएहा॥
जानि राम निज ऊपर भारू। बोले पुनि मुनिते श्रुतिसारू॥

दो० नाथ शपथ सुनिसोंहजग भरत सरिस शुचिभाइ।
भयो न है नहिं होन अब बहुत कहौं का गाइ॥
जो गुरु पद रज शिरधरै लोक बेद बड़ तौन।
तेहि पर रौरे की कृपा भरत सरिस जग कौन॥

मुखपर कयहिबिधिकरौं बड़ाई।सकुचतिसुमतिसमुझिलघुभाई॥
भरतै पोचकहै जो कोई। महा मूढ़ पापी है सोई॥
मातहि दोष देइ सोउ मूढ़ा। जानि न जाइ ईश गतिगूढ़ा॥
मातन में अति प्रिय सोइ माता। भाइन में प्रिय भरत सुभ्राता॥
भरत देइँ मोहिं आयसु जोई। शम्भु शपथमैं करिहौं सोई॥
सुनि प्रभु बचन डरे सुरराई। पठवत शारद सो नहिं आई॥
तब बासव शठपर अपकारी। निज उच्चाट सबन शिरडारी॥
जनक भरत मुनिसचिवैत्यागी। सुरमाया सो सबके लागी॥
मन उच्चाट भये सबकेरे। क्षणस्वहात घरक्षण बनहेरे॥

दो० बोले तब मुनि भरत ते तात कहौ अबसोइ।
ज्यहिते जावतजीवजग सबहिनकर हितहोइ॥
सुनि मुनिते बोले भरत देव कह्यो सतिभाव।
मैंजानत निजनाथ कर अतिशयसरल सुभाव॥
जननि जनक सोदर सखा सेवकसचिवपरोस।
काहुन देख्यो आजुतक प्रभुकर बदन सरोस॥

सबपर कृपा कटाक्ष लखाई। तदपि प्रीति मोपरअधिकाई॥
शिशुपन में खेलत प्रभुसंगा। कबहुंनकिहिनिमोरमनभंगा॥
जोकछु बस्तु अनोखी पावैं। मोहिंदिये बिनआपु न खावैं॥

मद्दूं आजुतक अति पृथुजानी । प्रभुसम्मुख कछुबात न ठानी ॥
निशिदिनरहीदरश अभिलाखा । सोसनेह बिधिमोर न राखा ॥
सेवक धर्म स्वामि स्यवकाई । सोतजि गयो करन अघमाई ॥
पुनि प्रभु मातु पिता गुरु बानी । परिहरि पहुंचेउ पासप्रमानी ॥
ऐसेहु अघ प्रभु गने न राई । शरण जानिलीन्ह्योंअपनाई ॥
ऐसे प्रभुइ न हौं अनुसरहूं । सेवक ह्वै सम्मुख हठकरहूं ॥

दो० निज स्वारथ हित स्वामिते हठैसो सेवक पोच ।
जोम्वहिं आयसुदेहिं प्रभु सोइकरौं तजिशोच ॥

सुखद बचन सुनि सब हरषाने । भरतहि धर्म धुरंधर जाने ॥
राम भरतते बचन उचारे । तात रहत महि पुण्य तुम्हारे ॥
जोहमहीं पर राख्यो बाता । तौ अब कहौं सुनो हे ताता ॥
जोप्रथमैं पितु अयसु दीन्हा । हमैं तुम्हैंसोइचाहिय कीन्हा ॥
जिनगुरु पितुपतिगिरा न धारी । तिन जानहुतेहिडार्योमारी ॥
अस जिय जानि मानिहितभाई । पालहुप्रजहिअवधिभरिजाई ॥
होइहि तुम्हैं न लेस कलेशू । शिरपर गुरुसुमंत मिथिलेशू ॥
मद्दूं बिपिन रहि अवधि बिताई । ऐहौं सपदि भवन सुखपाई ॥

दो० सुनि रघुपति के बचन मृदु भाभरतैं संतोष ।
मनहुंलह्योफलजन्मकरमिटेसकलदुखदोष ॥

बोले बहुरि जोरि युग हाथा । तिलक साज सबलायोनाथा ॥
सो अबकहा करिय रघुवीरा । कहप्रभुचलहुचलीऋषितीरा ॥
अत्रैमुनि जहँ देइ बताई । तहँ धरि देहुकामफिरिआई ॥
असकहि चलेगये मुनि धामा । करत भये सब दण्डप्रणामा ॥
आदर करि मुनिबर बैठारे । भरत अत्रिते बचन उचारे ॥
नाथ नीर सब तीरथ केरा । धरिय कहां सोकरहु निवेरा ॥
कह मुनिहै यक कूप रसाला । लोपतसोपि नकौन्यउकाला ॥
ताहीमें जल राखहु ताता । सुनितबभरतकीनिसोइबाता ॥
भरत कूप कहवावत सोई । पीवतजल निरमल मनहोई ॥

दो० पुनि प्रभुते बोले भरत नाथ जो आयसु होय।
आवहुं तीरथ देखि सब राम कह्यो भलसोय॥
पाइ रजायसु चले तब जहां जहां चलिजात।
नेम प्रेम लखि भरतकर मुनिननमन सकुचात॥
पांच दिवस में सकलबन देख्यो भरत ढिंढोरि।
हरि दिन प्रातस्नान करि प्रभुते कह्यो बहोरि॥
दीजैमोहिं अधारकछु ज्यहिलखिअवध सिराय।
सुनि दीन्हीं निज पादुका भये मुदित मनपाय॥
जननिजनकगुरुसचिव प्रिय पुरजनसखासुभ्रान।
भेंटि सबन कीन्हे बिदा चले सकल बिलखात॥
त्यहिक्षण माया सुरन की सबका भई सहाय।
नाहिंत रघुपतिबिरह ते घरन सकतकोउ जाय॥
बैठे प्रभु सिय अनुज युत परनकुटी के माहिं।
करत बड़ाई भरत की इत बरणत सब जाहिं॥
त्यहिदिनरहि यमुनानिकट उभयभीलपतिग्राम।
तीसर बासा गोमती चौथल अवध मुकाम॥
भूतादिन आये अवध जनक रहे दिन चारि।
जहँ तहँ सबनि बसाइके निज पुर गयेसिधारि॥
भरत सुदिवस स्वधाइ कै पुनिगुरुआयसु मांगि।
सिंहासन प्रभु पादुका बैठारी अनुरागि॥

गीतिका छंद॥ बैठारि प्रभुपदपादुकाशिरनाइअनुजबोलाइ कै। सोंपाइपुरजनमातुसबतबआपुआयसुपाइकै॥ पुरदक्षिणायो जनएकनंदिग्रामगुफावनायहू। लागेरहनफलपातभषिजगभोग सबबिसरायहू॥ सुनिअवधसुखसुरराजलाजतधनदधनुलखिरा गही। त्यहित्यागिदोन्ह्योभरतकिंमिजिमिमधुपचम्पकबागही॥ रघुबीरपियपुनिबंधुत्यहिजड़मोहिं मायाकिमिसकैं। जेअहैंसनमुख रामकेतेउतासुतननाहींतकैं॥ यहभरतचरितपुनीतपावनकरन

मुनिवर्णनकर्‌यो। रघुनाथकरिसंक्षेपकछुबिश्रामसागरमेंधर्‌यो॥ कहिहैंजेसुनिहैंमुदिततिनकीप्रीतिप्रभुपदबाढ़िहै। नशिहैंसकल दुखरामधामनजातकोऊआड़िहै॥

दो० श्रीगुरुदेवा दास के चरण कमल धरि माथ।
भरत चरित संक्षेपकरि कहा कछुक रघुनाथ॥

सो० हरिहर जनगुण गूढ़ मूढ़ न लखैं बिमूढ़बिन।
जिमि संश्रित आरूढ़ मूढ़ न जानत जीवगति॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुना थदासरामसनेहीकृतअयोध्याकाण्ड संपूर्ण नामषोड़शोऽध्यायः॥१६॥

———*———

श्रीगणेशायनमः ॥

अथबिश्रामसागर ॥

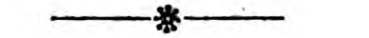

आरण्यकांडप्रारम्भः ॥

दो० सुमिरिराम सिय सन्तगुरु गणपगिरा सुखदानि ।
बरणौं नाटक मत कछुक आदि रमायण जानि ॥

भरत चरित्र कहे कछु ताता । अब सुनिये रघुपतिकी बाता ॥
सीता अनुज समेत कृपाला । बसत कामता पर सबकाला ॥
चहुंदिशि सघन लता तरुनाना । मनहुंकाम रतिरचित बिताना॥
शीतल मंद सुगंधित बाऊ । डोलत बोलत बयकरि चाऊ ॥
तामधि फटिक शिला अतिसोहै । उपमा देनहार अस कोहै ॥
तहँ यक दिन प्रभु निजकरतेरे । चुनि प्रसून स्त्रकरचे घनेरे ॥
सीतहि पहिराये सुख मानी । तिलककरनिकिमिजाइबखानी॥
त्यहि प्रकार मिथिलेश कुमारी । प्रभु के अंगन सजे सँवारी ॥
बैठे सहित सनेह सानकी । आश दोऊदिशि प्रेमपानकी ॥
करहिं प्रकाश पास मनिझारी । रही छिटकि पूनौउजियारी ॥
त्यहि निशिनारि जयन्ता केरी । आई तहँ लै सुमुखि घनेरी ॥
रघुपति रूप बिलोकि जुड़ानी । नृत्यगान कीन्ह्यो कलबानी ॥
मन भावन बर मांगि सिधाई । सो सुधि कतहुं जयंतै पाई ॥
इरषा बश बायस बपु बनिकै । मार्‌यो सियपद चंगुलभरिकै ॥
रुधिरदेखिप्रभु तृणयकलीन्हा । ब्रह्ममंत्र पढ़ि पाछे दीन्हा ॥

ज्यों ज्यों भागत जात जयन्ता। त्यों त्यों बढ़त बाण बलहंता॥

दो० बज्री बेधा बिरूपा क्षय क्षपादि सब पास।
गयोदयोनहिंरहनक्यहुंकिमपिजानिनिजनाश॥
सुखद दुखद ह्वैजात तब जब रोषत रघुबीर।
बिकल देखि त्यहिदेवऋषि कहिपठयेप्रभुतीर॥
ह्वै निराश दुरबास सम आइ नाइ शिरबयन।
बोल्यो सम्मुखजोरिकर जयप्रभुकरुणा अयन॥
जय जगजीवनजगतपति प्रणतपाल तुम एक।
रक्षिसकत नहिं बिपतिमें अपर जो ईशअनेक॥
दीन बचन सुनि शत्रुके समुझि बाणगतिभेद।
एकनयनकरितज्योत्यहिज्यहिनहोइफिरिखेद॥

यहि प्रकार प्रभुसहित सुपासा। शास्त्रमास तहँ कीन्ह्योबासा॥
अवध लोग तहँ भरे रहावैं। बीसक जाइँ पचीसक आवैं॥
तब प्रभु निजमन आन्योठीका। बनकर नगरभयो नहिंनीका॥

दो० मांगि बिदा सब ऋषिन ते क्वारमास शुभजान।
सहित लषण सियरामदिशिदक्षिण कीनपयान॥
प्रथम गये अत्रैभवन कीन्ह्यों दण्ड प्रणाम।
लीनलाइ उर बिप्र लखि छबि पूजे सब काम॥
प्रमुदित आसनदीन शुचि फल दल मूल पवाइ।
लागे पुनि अस्तुति करन मुनिबर प्रेमबढ़ाइ॥

नाराचछंद॥ नमामिरामराघवेशदेशनाथनायकं। महेशशेष ब्रह्मधर्मसेव्यमानदायकं॥ दयालदासदुःखदोषदर्पदम्भगंजनं। मुनीन्द्रवृन्दभूमिसाधुदेवधेनुरंजनं॥ भजन्तिजेनते पदारबिन्द बांछितर्कमें। पतंतितेप्रभंतिसंश्रितादिअंतनर्कमें॥ त्वमेकसर्ब कालबिश्वपालमूर्विजापतिं। ददामिजेत्वदाश्रितंसुयोगिदुर्लभं गतिं॥ अनूप श्यामसुन्दरं स्वरूपकोटिकामते। चरंतिशक्तिसा

नुजंपरार्थस्वर्गनाघ्रिते ॥ स्वछंदसानुकूलजक्तमूलमक्तबत्सलं।
भवांघ्रिमध्यमेंसदाबसंतिबुद्धिनिर्मलं॥
सुनिमुनि बिनय रामसुखपावा।तबसियमुनितियपदशिरनावा॥
अनुसूया लखि मिली सप्रीती। दीनअशीश सुखदजसिरीती॥
उप पधारि पट भूषण काढ़े। जे पाये हरिते निज गाढ़े॥
सीतहि पहिराये हित जानी। रहतनवल नित बोली बानी॥
सुनु स्वामिनिजगभामिनिकेरा। पतिही देवन दूसर हेरा॥
अंध बधिर किन होइ निकामा। करि अपमान पतैतम बामा॥
पतिब्रत करै छांड़ि जलजोखा। बिनश्रमपरपदलहै न धोखा॥
तुम्हैं प्राणप्रिय राम सुजाना। यामेंजग हित कीन बखाना॥
सुनिसिय सुखलहि नायोमाथा। तब मुनिते बोले रघुनाथा॥
सो० नाथजाउं बनआन आय दीजै जानि जन।
सुनिमुनि परम सुजाननाइशीश बोलेबहुरि॥
दो० तुमसमनाथ न नाथकोउसुन्दरसरलसुभाउ।
मैं सेवक कैसे कहौं नयन अयन ते जाउ॥
मुनिपदपंकज नाइ शिरबिनयबचनबहुभाषि।
चलेलषणसियसहितप्रभुनिजमूरतिउररा।षि॥
प्रभुइ चलतलखिगिरिमगदेहीं। घनसुछांहमहिमृदु ह्वै लेहीं॥
जहँ तहँ मुनि आश्रम बहु भावैं। जाइ जाइ सबके शिर नावैं॥
पूजैं सकल सुरुचि भव भांती। चलैं प्रातबश सुथल सुराती॥
अग जग मगबासी लखिकहईं। द्युतिभाभवनका बनयेअहईं॥
निकसिगये गुण कहैं बिसूरी। जबते देखे पथिक हजूरी॥
तबते माझ मनताचे अटका। खरीगोष्ठ नहिंसांगत लटका॥
यहिबिधिबन नांघत प्रभुजाहीं। मिलाबिराधअसुर मगमाहीं॥
महा बिशाल रूप बिकराला। हाथत्रिशूल गहे मृगजाला॥
प्रभुइ पेषि बोला कुबिचारी। साधु भेष तुमहौ छलकारी॥
हरि आन्यो काहू की बामा। लिहेफिरत बनसंग ललामा॥

असकहिगहिसियसपदिसिधावा। लखिरघुबीरदुसहदुखपावा॥
दो० प्रभुइ बोधदै लषण तब छांड़े बिशिष कराल।
उरलागतभोबिकल तजि सियधावाजनुकाल॥
धावत लखि त्यहि देव डेराने। खगमृग मुनिलै जीवपराने॥
गिरिसम बपुषवेगपव माना। फूटहिं पबि टूटहिं तरुनाना॥
लषणमारि तन जर्जर कीन्हा।महि गिरिउठतमरतनहिंचीन्हा॥
तब प्रभु मुनिशर मारिगिरावा। दिव्य देंहदै स्वपद पठावा॥
अस्ति तासु खनिगाड़िकृपाला। सीतै लै पुनि चले रसाला॥
सुरपति लै तहँ स्यंदन आये। करिप्रणामनिजलोकसिधाये॥
बिचरत प्रभुसिय लषणसमेता। पहुंचे ऋषि शरभंग निकेता॥
निरखिराम छबिअतिसुखमाना।मनहुंक्षुधितलहिअसनअघाना॥
करि हरिबिनय भक्तिबरमांगी। योगानल तनुतजि बड़भागी॥
चढ़ि बिमान बैकुण्ठहि गयऊ। भेदभक्तिहित मोक्ष न भयऊ॥
आगे मुनि बहु मिले प्रवीना। भेंटि भेंटि सबका सुखदीना॥
सो० कुंभजशिष्य सुजान नाम सुतीक्षणराम जन।
प्रभु आवत सुनिकान धायो करत मनोर्थबहु॥
दो० बिसरी तनसुधिप्रेमलखि उरप्रगटे सियराम।
गौर श्यामबहुकामछबिनिरखिलह्योबिश्राम॥
तब प्रभुतिन ढिग जाइबखाना। उठहुप्राण पियबिप्र सुजाना॥
उठत न जब जान्यो भगवंता। भये चतुर्भुज हृदय तुरंता॥
रामरूप जब उर नहिं देखा।उठेबिकलजिमिमणिबिनशेषा॥
आगे सानुज सिय रघुराई।लखिहरष्योजिमिगतनिधिपाई॥
कीनि दंडवत प्रभु उरलाये। आश्रम आनि पूजिमनभाये॥
करि बिनती मांग्यो बर एहा। बढ़ै नाथ पद नित नवनेहा॥
सीता लषण सहिततुम स्वामी। बसहु स्वांत मम अंतरयामी॥
एवमस्तु कहि राम सिधाये। मुनि समेत कुंभजपहँ आये॥
राम प्रणाम कीन ऋषि देखी। लियेलाय उर प्रेम विशेषी॥

कुशल पूछि आसन बैठारे। पूजन करि मृदुबचन उचारे॥
आजुभयो म्वहिं आनँद कैसे। चातक पाइ स्वातिजल जैसे॥
बैठ प्रभुसब दिशि मुनिवृन्दा। चितवैंमुखचकोरजिमि चन्दा॥
कह हरिमंत्र देहु म्वहिं वोही। ज्यहिते मुनि मारौं सुरद्रोही॥
बोले मुनि मोहिं बूझत काहा। तुम्हरेभजन ज्ञान कछुलाहा॥
ज्यहिबशसुरमुनिअजत्रिपुरारी। सो माया किंकरी तुम्हारी॥
काल कराल सकल जगखाई। सो तव डर डरपत रघुराई॥
ते तुम बूझत मनुज समाना। दीन्हेउमोहिं सुयश मैंजाना॥
ऐसे आपु अनुग हित कारी। तिन्हैं त्यागिसुरअपरसँभारी॥
भव निधिपार चहै पुनिलीन्हा। श्वानपूंछगहि जिमिमतिहीना॥
पर वह पार न पावै कबहीं। तिमितवभजनबिनानरसबहीं॥
देहु सुभक्ति मोहिं रघुराई। अबसो कहँउ बसहु जहँजाई॥

दो० पंचबटी गुण गण जटी टटनि टटी नट रास।
अघटघटी दुख सुख पटी कुटी करौ तहँबास॥

सो० दण्डक नृप मुनिजातभोगीसुनिदिय शापतिन।
गिरि बालू दिन सात जरेउ देश सो स्वक्षिये॥
मुनि अनुशासन पाइ पंचबटी सिय अनुजयुत।
आये कौशल राइ भे प्रसन्न शोभा निरखि॥

कुं० राम लषणसिय पदपरत मिटी शापऋषिकेरि।
भयो दिव्य बन बिटपतहँ मिले गीधपतिहेरि॥
मिले गीधपति हेरि पिता इव प्रीति बढ़ाई।
गोदावरी समीप रहे दलकुटी गढ़ाई॥
कुटी डारि जबते परे सरे सबन के काम।
बरणि सकै को तासु यश जहँ राजैं नित राम॥

आवैं तहँ अनेक ऋषि राजा। होइ सदा सतसंग समाजा॥
एक दिवश लक्ष्मण शिरनाई। बोले प्रभुते आयसु पाई॥
नाथ बात सब बिधि तुमजानौ। मैं पूछौ संक्षेप बखानौ॥

जग समुद्र मधिको आधारा। गुरु कृपाल पद पोतनिहारा॥
गुरुको जो देवै हित बोधा। शिष्य कौन जो सुनै प्रबोधा॥
बेधित को बिषया अनुरागी। कोबामुक्तिबिषय जिन त्यागी॥
नर्कसो कौन घोर निज देही। तृष्णा त्यागि स्वर्ग सुखयेही॥
तमो द्वार किं किंकर नारी। मोक्ष मार्ग सतसंग बिचारी॥
सोवत को जग रहे जे टेकी। जागत किंसद असद बिबेकी॥
कोबा शत्रु निजेन्द्री मीता। सोई सुहृद तिन्हैं जिनजीता॥
रंक कौन ज्यहि तृष्णा चोषी। धनीसोको सब बिधि संतोषी॥
महा अंध को जो मदनातुर। निज भलकरै सोई बड़चातुर॥
क्षमावंत को त्यहि श्रुति कहई। पुरुष बचनसुनिजो नहिंदहई॥
मृतककौन ज्यहि कीरतिनाहीं। जीवत जासु सुयश जगमाहीं॥
दीरघ रुजकिं यह संसारा। औषधि तासु अनूप बिचारा॥
दो० कोहौं आयौं कहांते कित जैहौं कासार।
कोमैं जननी को पिता याकोकहिय बिचार॥
किं अनीति जहँ वेद बिरुद्धा। परम तीर्थ किं निजमनशुद्धा॥
बिन प्रतीति को कंचन कांता। सेवा करन योग को सांता॥
किंज्वर चिन्ता चितकी जानौ। शठकोजो बिन धर्म पिछानौ॥
लाभ कौन बड़िभक्ति हमारी। हानि न भज्यो मोहिं तनुधारी॥
कोबा शूर सुभावै जीते। भूषणकिं जो शील न रीते॥
विद्याकिं जो भेद मिटि जाई। भेद अविद्या है दुखदाई॥
लज्जाकिं नहिं करै बिकारा। महावीर जिन मनहिंप्रहारा॥
धीरजवंत बली अति कोबा। सुमुखि कटाक्षन मोहै जोबा॥
दुखकिं अनित्य बस्तु में नेहा। सुख प्रदको ममचरणसनेहा॥
पातक मूल लोभ लखि परई। पढ़न सुननकीकुपथबिसरई॥
त्यागीको जो मनबच काया। करि सतकर्मभजै फलपाया॥
सत्य बचनकिं जोमोहिं लीन्हें। पंडितकिं बिकार तजिदीन्हे॥
मम स्वरूप जानै सोइ ज्ञानी। मूरुखकिं सुदेह अभिमानी॥

पंथ कवनि जामें मोहिं पावै। दानी जो मम भक्ति बतावै॥
महा पतित को हिंसा चारी। धन्य कौन जो पर उपकारी॥
कोबा श्रेष्ठ निरत हरि कर्मा। नीच कौन जो करै कुकर्मा॥
संग्रह योग कहा गुण मेरे। जाइनि कितै कुसंगति नेरे॥
तपकिं बिषय भोगपरि हरई। दया जो भूतद्राहनहिंकरई॥
किंयम जाल सुतामस मोहा। प्रेमकहांजहँनहिंतनछोहा॥
साधु कौन जाके उर दाया। हरिते बिमुखकरैसोइमाया॥
दुख सुख समसबकालतितीक्षा। किंविज्ञान विवेक परीक्षा॥

दो० हौंनहिं तनमन बचन बुधिजाति बरण कुलएक।
मैंहौं चेतन सबन में याको कहत विवेक॥
थावर जङ्गम सबन में जहँ तक जीव जहान।
समन रूप निश्चय भयो सोइ अनन्य विज्ञान॥
जीव ईशमें भेदकिं यतनोइ अहै सदीव।
बद्ध दशामें जीवकहि मोक्षदशा में सीव॥

छप्पै॥ जोजानोचितरूपजीवतालहतकौनबिधि। तौसुनिये हेतातअबिद्यावृक्षपरमनिधि॥ गुणसुपक्षबिनईशबिहँगगुणपक्ष चाहिजब। निवसततापैआइहोतगुणपक्षप्रगटतब॥ यथाबासना भ्रमतनितहैजीवत्वउपाधिइमि। ज्ञानकर्मकरिहोतहैमोक्षबंधश्रुतिकहतइमि॥

दो० जैसे महदा काशते घटाकाश को भेद।
तैसे मिटै उपाधिकेजीवब्रह्मनिरभेद॥

श्लोक॥ सतसंगीबासनात्याज्योधात्मविद्याबिचारयेत्।
प्राणस्फन्दनिरोधन्तेमुक्तिद्वाराचतुर्विधम्॥

पुरुष अयो गिहि ब्रह्मन दरशै। बिनबिरागजिमिज्ञाननसरशै॥
बिरति कहाविधिलोक प्रयन्ता। काक बिष्ट सम समझैअन्ता॥
भूत कहा भय धीरज धामा। परम जापकिं जो ममनामा॥
चुगुल कौन पर अवगुण खोलै। मौनी बचन युक्तिते बोलै॥

पिता विवेकसुमतिसोइ माता। हरिजनमिलनमोक्षसुख ताता॥
दुस्तर किं सब जननि दुरासा। रारि मूल किं केवल हासा॥
पशुको जोबिन सुकृत रहावै। बंधु विपति में कामजो आवै॥
श्रद्धा किं जोमुदित अवालस। क्रिया बिषेदुखसहैनिरालस॥
किं बिश्वास गणै सुनि सांची। तोष कौन निष्काम अयांची॥
निष्ठाकिं करिये जहँ प्रीती। लखि न अभावहोइबिपरीती॥
रुचिकिं रहित शोच सुखपाये। भावक्षमादिसकल गुणआये॥
आशक्ती किं प्रिय बिन देख। रुचतनकछुतनधनकेहिलेखे॥
भोजन किं जगतीनि प्रकारा। उत्तम मध्यम नीच निहारा॥
मधुर मंजु मृदु सात्विक जानौ। तिक्त तातरज गुणीपिछानौ॥
भक्षा भक्ष तामसिन करे। तिमित्रै बिधिके मनुज निवेरे॥
पूजा तीनि भांति की हेरी। प्रतिमा बैष्णव आतम केरी॥
उत्तम आतम मध्यम साधू। कछुक निष्ठ प्रतिमा अवराधू॥
सान्तिसो कौन बिकारबिहीना। निर अभिमान ज्ञानकिंदीना॥
बशीकरण किं कोमल बानी। मारणमंत्र क्षमा बड़ जानी॥
जीव उभय किंबंध बिमोक्षा। सहित रहिय बासना असोक्षा॥
भाग्य सुबाम कुमति परकेरी। जगत मान्यता आसा वेरी॥
परिमलकिं प्रण धन किं धर्मा। करणी बिन बादै बेशर्मा॥
ईश्वर सबपर प्रकृति नियन्ता। बहुबिधिकह्यो जानकीकन्ता॥
सुनि प्रभु बचन लषण हरषाने। बैठ पुनि निजजाइ ठिकाने॥

दो० रत्न माल मतजाल लै भगवत गीता साथ।
रामगीत नवनीत यह बरणयो जन रघुनाथ॥

सो० सुनि गुनिहैं जे जीव पैहैं परमा नन्द ते।
पुनि महिजाके पीव करि हैं तापर अतिकृपा॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथ
दासरामसनेहीकृतरामदण्डकबनआगमनोप्रश्नोत्तर
बर्णनोनामसप्तदशोऽध्याय॥ १७॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि।
बरणौं मानस मतकछुक नाटक रीतिबखानि॥
बीरासन शरचापगहि चहि चहुंदिशि सौमित्र।
लगे बिचारन मन बिषे रघुपतिबचन बिचित्र॥
जनक नन्दनी सहित प्रभु परणकुटी के बीच।
राजत लाजत लक्षलखि रतिपतिप्रिययुतनीच॥
तेहि अवसर रावण स्वसा सुपनेखातहँ आइ।
राम रूप मोहित बचन बोली गर्ब बढ़ाइ॥

त्रिभंगीछंद॥ सुनियेनृपनन्दन सुरमुनिबन्दनमैंहौंराजदुलारी। निजसमसुखमातेपुरुषनतातेअबतकरहिउकुमारी॥ तुमका जबदेखा कछुमनलेखाबिधिकृतयहसंयोगा। त्यहितेनिजदासी करुवनबासीजोचाहौबरभोगा॥ सुनिसियदिशिदृसिकै कहप्रभु हँसिकैहै ममअनुजकुमारा। सिततनतिनकेरीहूजैचेरीसोइसंयोगतुम्हारा॥ हस्तिनितियलायकशशाननायक दुखदायकसुख हरणो। पद्मिनिमोहिंधारौनिरसनिवारौनेतिनेतिप्रभुबरणी॥ तब सो गई धरणि धरि पासा। कहलक्ष्मण मैं उनकर दासा॥ भूपै बरणि कहै हौ रानी। नाहिंत जग टहलुई बखानी॥ यामें कौन सुयश सुख लाहू। त्यहिते महाराज पहँ जाहू॥ सुनि पुनि गई जहां भगवन्ता। तिन फिरिपठई पासअनन्ता॥ बोले लषण तोहिं सो ब्याहै। जो लोकौ परलोक न चाहै॥

दो० तब लजाइप्रकटत भई निज बिकराल स्वरूप।
बदन खोह गिरिश्रृंग शिर नाककान जनु सूप॥

बोली तुमदोउ साधु न अहऊ। परपत्नी घर घाला चहऊ॥ मोहिं देखि जो कीन्हयो हासू। सो फल तुम्हैं देवैहौं आसू॥ सुनि सिय सभय राम गेजानी। वेदबाद नभ कहयो बखानी॥ गये समुझि लक्षमण ततकाला॥ नाक कान बिन कीनकुबाला॥ हाय हाय करि भवन सिधाई। रुधिर श्रवत गै जहँसबभाई॥

बोली धृग तव बीर प्रभावा। तिन पूछा कुलकरि समुझावा॥
दो० सुनि खर दूषण क्रोधकरि असुर सहस दशचारि।
लिये बोलि सँग सब चले अस्त्र शस्त्रभट धारि॥
कज्जलगिरिसम जिन के अंगा। गर्जहिं तर्जहिंसहितउमंगा॥
बाजैं बिबिधि जुझाऊ बाजा। अशकुन होत न मानैं राजा॥
कोउ कहै धरि मारौ दोउभ्राता। लैलीजै ललना भलिबाता॥
कोउ कहै निधनिन आईउनहां। चुपरहिंचहिदनुजेशनसुनहीं॥
यहिविधिवदतनिकटचलिआये। लक्ष्मण ते प्रभु बचनसुनाये॥
सीतै लै गिरिकन्दर जाहू। आवाचढ़ि शिरनिश्चरनाहू॥
लै सिय लषण गये तेहि लाग। चाप चढ़ाइ चले प्रभुआगे॥
जिमि केसरी द्विरद दल हेरी। आइ लिहिनिबग मेल गरेरी॥
देखि अकेले अति सुख माना। बढ़े समा पर जिमि परवाना॥
प्रभुछबिदेखिछकितसबभयऊ। खरदूषण मंत्री ते कह्यऊ॥
दो० येकोउ नृप बालक अहैं नर बर रूप निधान।
अस शोभा भरि जन्महम देखी सुनीन कान॥
सो० यद्यपिकिहिनि कुकर्म तदपि न मारण योगये।
जाइ कहौ तुम मर्म देइँ नारि फिरि जांइघर॥
आइ सचिव रघुपति ते काहा। सुनत बिहँसि बोले सुरनाहा॥
हम क्षत्री मन शंक न आनैं। कालहु ते सम्मुख रण ठानैं॥
सुर रंजन खल गंजन हेता। बिचरतहमबन त्यागिनिकेता॥
जा तुमरे पति होइँ डेराने। फिरैंन हम रण हतैं पराने॥
दूत न खर दूषन ते भाषा। बोला सुनि मारो करि माषा॥
धाये तब तमचर करि शोरा। लखि प्रभु कीन चाप टंकोरा॥
भये बधिर पुनि धीरज धारा। लगेबिबिधि बरसनहथियारा॥
शर तोमर तरवारि त्रिशूला। चक्र परिघपबिशक्ति समूला॥
तिल समान प्रभु काटि निवारे। निजनराच संधानि पवारे॥
जाइ असुर दल काटन लागे। हाइ हाइ करि भट बहु भागे॥

कोइ कहै खरदूषण मतिहीना । इनते आइसमर ज्यहिकीना ॥
सुनि सकोपि बोले तिहुं भ्राता । फिरीजोत्यहिहौंकरबनिपाता ॥
मरण जानि घूमैं अनुरागी । चहुंदिशिमारुमारु रटिलागी ॥
देखि देव सब होइँ अधीरा । निश्चर निकर एक रघुबीरा ॥
राम बाण लागहिं खर भारी । खण्ड खण्डहै गिरहिंसुरारी ॥
शिर धरि धरौ धरौ कहिधावैं । गगन उड़ैवह भगण चलावैं ॥
बहु मरिगे बहु करहत डारे । बहु कहैं कहँ पितु मातुहमारे ॥
बहुतन कंक काक शृगश्वाना । भक्षत करत कटकटी नाना ॥
अन्त्रावलि गहि बहु नभ जावैं । बिपुल बाल जनु गुड़ी उड़ावैं ॥
भूतरु प्रेत पिशाच पिशाची । खप्पर भरे योगिनी नाचा ॥
सो० निजदलबिचलनिहारिखरदूषणत्रिशिरादिभट ।
अगणित अस्त्र प्रचारि प्रभुपर डारे एकसँग ॥
रघुपति सबनिज शरणि निवारे । दशदश बिशिष सबनके मारे ॥
कहि कहि राम तजे तिन प्राणा । बिनश्रम पायोपदनिरबाणा ॥
क्षणमा सकल कटक संहारी । सुमनबरषिसुरजयतिपुकारी ॥
सीता लषण आइ शिर नावा । निरखिश्यामबपुअतिसुखपावा ॥
तब सुपनेखा गइ जहँ रावन । जनु दनुजनकी मौत भयावन ॥
करि रोदन बोली तकि ताही । तोहिंजियतममअसिगतिचाही ॥
समुझि परत अब रहीन राजू । नहिंदेखत निज काज अकाजू ॥
दो० सुनिअकुलानी सभासब कहरावण कहुहाल ।
कहि काटे श्रुति नाकतव काकर आयहुकाल ॥
अनुज गिरा सुनि बोलीबचना । अति अतर्क अवलोकी रचना ॥
द्वै तपसी तपसी बन आये । सुन्दरि सुन्दरि सुन्दरि लाये ॥
हौं लखिहौंलखिहौंलखिबोली । रामन योगन रामन जोली ॥
दो० सो करि कानन कानि तब करीन करीन आन ।
मोबिन कानन कान बिन करीसोकरीनकान ॥
खरदूषण सुनि लाग गोहारी । क्षणमा तिन सब सैना मारी ॥

त्रिशिरादिकबधसुनि दनुजेशा। मनहुं जरे सम भयो कलेशा॥
शूर्पनखै प्रबोधि बल भाषी। भवनगयो बिस्मय मन राखी॥
सुरनरअहि त्रिभुवन महँसोई। मम अनुचरै न निदरत कोई॥
खरदूषण मोहिं सम बलधामा। तिन्हैं कोमारै बिन श्रीरामा॥
जो प्रकटे सुर मुनि हितकारी। तौ करि बैर तरौं भव भारी॥
तामस तन कछु भजननबनई। राम बिमुख गतिवेदन भनई॥
जिननहिं निजपरलोक सुधारा। तौत्यहिबुधि बलजनमेंछारा॥

दो० जो नृप सुत कोउ जाइ तौ हरि लेहौं तिनबाम।
चला अकले थान चढ़ि गा मारीच के धाम॥
पूंछा करि सनमान त्यहि तात चलेहु केहि हेत।
कही कथा दशमुख सकल सुनि बोला शिपदेत॥

सो० मुनिमखमेंम्वहिं राम बिनकरमारेउबिशिषयक।
शतयोजन यहि ठाम आयो क्षिनमा बिकलङ्के॥
खरदूषण करि बैर भे बिनाश ताते सबल।
जो चाहो कुल खैर तौ फिरिजाउ निकेत निज॥
सुनिदशमुखकरिक्रोध बोलाम्वहिंसम सुभटको।
गुरु इव करत प्रबोध चलत न आई मीचु तव॥
करिबिचार रबिपाथ चलामुदित सँगमन गुणत।
मरौं न राघव हाथ चला मुदित मनसँग गुणत॥
भरिनयननछबिआज देखिहौंप्रभुसियलषणको।
तब होई ममकाज जब बधि हैं मृगरूप लखि॥

दो० इत सिय ते कह राम तुम करौ उरागिनि बास।
जबतक करि नर चरित मैं करौं न निश्चर नाश॥

सो० स्वामि रजायसु पाइ वेदवती बपु राखि तहँ।
आपु हृदागिनि जाइ कीन बास हरि पास नित॥

यहँ रहस्य लक्ष्मणहु न जानी। मायाधीश सकल गुणखानी॥
बैठे प्रभु सिय परण कुटीचा। आयो तहँ रावण मारीचा॥

हेम हरिण ह्वै निकसा आगे। लखि जानकी कह्यो अनुरागे॥
हे स्वामी मृग पकरहु पारी। नाहिंतबनी छाल भलमारी॥
कह प्रभु हिंसा अघ बड़जाना। होनहार बश सिय हठ ठाना॥
भक्तबछल प्रभु धनुशर लीन्हा। आश्रम सौंपि शेषकहँ दीन्हा॥
अपना चले कपट मृग पाछे। आवत देखि भाग सो आछे॥
तब शर सजि धाये रघुराई। थकनिनवनिचितवनिम्वहिं भाई॥
प्रकटत दुरत लखत छबि भूरी। लैगा इमि रघुबीरहि दूरी॥
तब प्रभु ताहि तहाँ तकि मारा। हाइलषण असआदि पुकारा॥
पाछे कहि हरुगे सिय रामा। तनुतजिगामुनिदुर्ल्लभधामा॥
इत सीता सुनि आरत बानी। बोली लक्ष्मण ते छल जानी॥

सो० संकट बश तव भ्रात जाहु बेगि सुनि शेष कहँ।
प्रभुइन दुखकहुं मात तुम्हैं सौंपिगे किमितजहुं॥
सुनिसिय बचनकठोर कहेलषण कहँ लषणतब।
रेख खैंचि चहुं ओर चले चकित चित राम पहँ॥

दो० सून बीच लखि रावण यती स्वरूप बनाइ।
माँगो भिक्षा सुनत सिय लगी देन हरषाइ॥

बोला कुटिल बँधी यह भीषा। सो न लेब मैं मानों शीषा॥
माघशुक्ल भृता दिन जानो। वृन्द मुहूरत में पहिचानो॥
भावीबश सिय बाहर आई। चरण बंदि लै चला उठाई॥

दो० जीव ज्योति तनमें यथा अगिनि धूम के माहँ।
तिमि रावणक करपरी सिय स्वरूपकी छाहँ॥

गगन जात रथ बिलपत सीता। हा रघुपति हा नाथ पुनीता॥
हा करुणाकर हा रणधीरा। आरत हरण हरहु मम पीरा॥
हा बलसिंधु लषण सुखदाई। परी तात गोमर करगाई॥
कहे बचन कटु रेख मँझाई। सोक्षमिकरिम्वहिंलेहुछिनाई॥
तुम्हैं कलंक दीन बिन दोषा। ताकर फलपावा अति चोखा॥
जे पति बचन करं नहिं काना। तेउ भरैं दुख हमैं समाना॥

हा पितु मातु दूरि तव धामा। भा केकयी केर अब कामा॥
पठै देउ बन देउ कृपाला। हरिपन्निहि चहै बराश्रृगाला॥
सीता कै सुनि आरत बाणी। भेसब बिकल चराचर प्राणी॥
गीधराज जाना बैदेही। लीन्हे जात असुरपति तेही॥
चला कहत पुत्री धरु धीरा। नीच मीच में आयों तीरा॥
रे रे रावण सुनु मम बाता। तजिजानकिहिजाहुकुशलाता॥
नाहिंत सकुल नाश तव होई। सुनि तेहि काननकीन्ह्योकोई॥
तब खग चपरि चोंचगहिकेशा। रथते महि पटका लंकेशा॥
सियनिजनिलयराखिफिरिआवा। अरिकरधनुशरकाटिगिरावा॥
चोंच चंगुलन तन बिदकायो। मूर्च्छितह्वै पुनिअसिलैधायो॥
पंख काटि सीतै लै भागा। तबखगमहिगिरिशोचनलागा॥
हमते कछु न बनी भलि बाता। पापै करत भयो वपु घाता॥
दशरथ सम सुनि प्रेम न पाला। राख्योसियै न हठियहिकाला॥
भरत राम मुख देखि न पावा। खलकरतबनहिंप्रभुइसुनावा॥
एकै बात भई भलि एहा। राम निहोरे छूटी देहा॥

दो० इतसियबिलपत जातनभ नगपर कपिननिहारि।
दिये डारि निज भूषण रघुपति नाम पुकारि॥
आगे लखि संपाति सुत गहि रथ दीन्ह्यों छोरि।
यहिबिधि लावा लंकतब बोला सियै निहोरि॥
सुमुखि न शोचै नरन हित उनमें कौन प्रभाव।
पितुप्रेरित बन सहत दुख निरबल रंक न राव॥
अकुलअजातिकुजातिपति गतिमतिरहितसभीत।
जटी कपाली प्रिय प्रणत तव दोषिन कर मीत॥
नहिं जानी क्यहि कर्मकरि परिउ नरनके हाथ।
अब जागे बड़ भाग तव जो आइउ मम साथ॥
हमसम सबल न शूरकोउ जेहिबशसुरमुनिसर्ब।
त्यहिते मेरी भार्य्या होउ त्यागि दुख खर्ब॥

सुर कन्या कैयो सहस मंदोदरी समेत।
ह्वै हैं तेरी टहलुई हौं सेवक कहि देत॥
सुनि सिय शोच सकोच बश कछू न उत्तर दीन।
तब तेहि निज ऐश्वर्य सुख सकल देखावैलीन॥
अधिक बिकलभइ जानकी बिभवनीचकर देखि।
यथा बिरहिनी दुख लहै शरद चन्द्रमहिं पेखि॥
सो० पुनि बोला दशशीश देखे मम ऐश्वर्य्य प्रिय।
तब सीता कर रीस कहत भई तृण ओट करि॥
सुनु दुष्टन शिरमौर बिन मराल सर हंसिनी।
निरखि कागकर ठौर मुदितहोत कहुं तिमिमहूं॥
सुनिसियबचन सरोष डरकरिबिपिनअशोकमहँ।
राखिसिहित निजमोष दुरिहविगयेखवाइहरि॥
इहांलषण मृगअरि तहँ गयऊ। अनुजैलखिबोलतअसभयऊ॥
द्वादश बर्ष मास शर बीते। इहां रहत सिय तजी न रीते॥
आजु जनकतनया तुम खोई। कहा लषण ममदोष न कोई॥
आश्रम दीख जाइ बिन सीता। भयेबिकल जनुयोषितजीता॥
इत उत हेरि हांकि हँसिबोली। आवहुनिकसिनकरहुठठोली॥
तुम्हरे कहा कीन मैं जाई। अबकेहिकारण रहिउ कुहाई॥
लषण अरोष लखी जब नाहीं। तबप्रभु मूर्च्छिगिरे महिमाहीं॥
कतहुं बाण धनु पट तूणीरा। लषण उठाइ किये यकतीरा॥
बोले नमि हे नाथ उदारा। सुरमुनिहेतु लियो अवतारा॥
ज्ञाननिधान सबल बुधि माहीं। भूलत मूढ़ मनुज की नाहीं॥
बन्धु बचन सुनि धीरज धारा। बहुरि अज्ञ इव बचन उचारा॥
को बोलत लक्ष्मण तव दासा। हमको तुम राघव बनबासा॥
करत कहा ढूंढ़त प्रिय प्यारी। हाहा सीते जनक दुलारी॥
दो० कहा लषण मिलिहैं बहुरि उठिढूंढ़ौ बन माहिं।
धनु शर तरकस साजि तन पूंछि चले सब पाहिं॥

हे हरि करि कुज दुजदखिलसब परमारथ रूप।
तुम देखी मम प्रीतमा देहु बताय अनूप॥
हे सीते जेहि नेह कहि तजि पितु आरज गेह।
हठि आइउ मम साथ अब कहाकियो सोइ नेह॥
भृङ्ग जलज शुक कुंद पिक करिहरि श्री फलकेर।
मुदित मनहुँ अरि जीति किन हरौ मान इनकेर॥
यहि बिधि खोजत कुंजबन गणगिरि गुफातड़ाग।
गये जटायू खग जहां श्रोणित लखि दुख लाग॥
आगे परा गीध पति चीन्हा। हापितु हाकहिउरधरिलीन्हा॥
पूंछा हाल सकल तेहि काहा। मोहिंबधिसियलैगाखलनाहा॥
रहे प्राण तव दरशन हेता। चलनचहत अब कृपानिकेता॥
सुनि प्रभुपद्म नयन जल ढारी। बोले पांसु जटा ते झारी॥
हे सौमित्र आइ इन शरणा। मोहिंलखिपरयोनपितुकरमणा॥
सहि न सक्यो सोआजुबिधाता। पक्षोपक्षलखिकीन्हिसिघाता॥
पुनि कह तात राखिये देहा। बोला तबखग सहित सनेहा॥
कृपा सिंधु तुम शील निधाना। मोहिंखगखलहिपितासममाना
अस तुम तेहि न भजैंनर जोई। महा मूढ़ हत भागी सोई॥
जासु नाम अगणित गति दाता। कस न मरहुतिनके करताता॥
चारिउ फल न मरण सम मोरे। असकहिमुदितप्राणनिजछोरे॥
राम रूप हे अस्तुति कीन्ही। अबिचलभक्तिमांगिसोइलीन्ही॥
कह प्रभु सिया हरण पितु तेरे। कह्यो न दुख होई सुनु सेरे॥

दो० तुम्हरे पुण्य प्रतापते कछु दिनमें रिपु मारि।
सकुल पठइहौं आइ सोइ सुमुख कहीबिस्तारि॥
भलनाथ कहि नाइ शिर प्रभु मूरति उरराखि।
चल्योगगनलखिसुमनसुर बरष जयजय भाखि॥
पितु ज्यों दीन्ह्यों धाम निज मृतककर्म सबकीन।
ऐसे प्रभुइ बिसारि मन तें चाहै सुख लीन॥

सहित शोक सियकी सुधि आई। बोले लक्ष्मण तै अकुलाई॥
यावत मैं यदि जीवति ताता। तावत जीवत बिश्व लखाता॥
नाहित सुर नर असुर समेता। करिहौं भस्मअखिलजगजेता॥
सुनि प्रभुबचन सभयभवकाँपा। लागे होन अरिष्ट अमापा॥
सहितशंकलक्ष्मण गहिचरणा। बोले अहो दीन दुख हरणा॥

कु० मान्धाता इक्ष्वाकु इम भागीरथ नृप माथ।
रघु दिलीप अज आदिदै यावत तवपितु नाथ॥
यावत तव पितु नाथ लोक तिहुँ तनय समाना।
पालत आये सदै सुयश सकलौ जग जाना॥
तिन कुल कीरति बर्द्ध हित प्रगटे आपु सुजान।
सोकिमिजरिहौ जगअखिलनिरपराधश्रीमान॥

सो० बंधु बचनसुनिराम लज्जित ह्वै लखिलषणकहँ।
लिये लाइ निज धाम बोले पूरब देखि शशि॥

कु० लषण तकहु तरु उये रबि नाथ मलिन ह्वै चंद।
निज कुलकं अकलंक ते तरणि तेज भो मन्द॥
तरणि तेज भो मन्द कमल नहिं फूले ताता।
अहो मित्र दुख दुखी खिलै कैसे जल जाता॥
अहैंनखतप्रफुलितकुमुद शत्रुबिपतिलखिहँसतमन।
पुनि न दीन उत्तर चले घनतरुतररघुपति लषन॥

यहिबिधि प्राकृतमनुज समाना। ढूंढ़त कीन्ह्यो पुरः पयाना॥
मिला बिराध ताहिगति दीन्ही। चले बहुरिशवरी सुधिकीन्ही॥
पूछत फूल भरे मुख तेरे। निबसत बड़भागिनिकेहिसेरे॥
जासु भजन बलवन सुखदाता। करब देखि तेहिशीतलगाता॥
इहांप्रात शवरी जबजागी।लखिशुभसगुनसमुझिअनुरागी॥
राम लषण प्रिय पाहुन मोरे। ऐहैं आजु अनुज युत जोरे॥
ब्रह्मादिक पूजित पद पूजी। मोसमको बड़भागिनि दूजी॥
लहिहौं हौंप्रभु प्रभु निज बाना। दोउदिशिलाभनलाभसमाना॥

दोनन राखि कंद फल फूला। चितवत अम्बसरिसअनुकूला॥
छिन द्वारे छिन भीतर जाई। प्रीति परखि पहुँचे दोउभाई॥
शवरी देखि परी तब पायन। सनमानी प्रभु मास मचायन॥
आश्रम आनि पूजि जस रीती। दियेरुचिरफलदलकरिप्रीती॥
लगे खान प्रभु पुलकित गाता। स्वाद सराहि सराहिनजाता॥
मांगत देत देखि सुर सन्ता। बरषिसुमनकहिजयभगवन्ता॥
त्रिभुवन नाथ नरेश कुमारा। पावत फल तजि ऋषैअपारा॥
अस बिचारि रघुनाथ अरूखे। जान्यो राम प्रेमके भूखे॥
अचै उठे तब शवरी बोली। हाथ जोरि दोउगिराअमोली॥
नाथ रहिउँ मैं अवगुण खानी। कीन्हों तुम मुद मंगलदानी॥

दो० कह प्रभुतें निज कर्मते भई श्रेष्ठ जग बीच।
जोनभजैमम चरण प्रिय सोइशमलीसोइनीच॥
शवरी के सुनि मुनिनिकर आयेढिग अनखाइ।
पूछेउ सरवर शुद्ध किमि होइ कहौ रघुराइ॥
कह प्रभु पावन पुरुष को परसि कीन तुम रोष।
गये स्वच्छहित स्वच्छहू भयो रुधिरतेहिदोष॥
अबते शवरी के चरण धोइ तोइ ता मध्य।
देउ लेउ पावित्र पुनि करत भयो शुचिमध्य॥

सो० ऐसे प्रभुको और जो निज लघुता दासकी।
करै कीर्ति सब ठौर तबहरि शवरी ते कह्यो॥
अबसुधि सीताकेरि कहिये करिगामिनिसुखद।
सुनि शवरी मुख हेरि कहेउ जाउ पंपासरहि॥
तहँ मिलिहै सुग्रीव करेउ मिताई तासु ते।
सोहित करी सदीव मिलिहैं इमि सीता तुम्हैं॥
यहिबिधिबदिसबहाल रामधाम गइत्यागितनु।
तेहिकीक्रियाकृपालकीनयथोचितजननिजिमि॥

गीतिकाछंद॥ जिमिजननिकीगति करैकोउतिमि रामसेवरी

कीकरी। असओरकौनकृपालस्वामीशरणजाकीअनुसरी ॥ प्रभु कहतशवरीकेरयशसहप्रीतिपंपासरगये । मनमुदितमज्जनकीन शोभानिरखिमुनिहरषतभये ॥

दो० भये मुदित मुनि वृन्दतहँ मिले देवऋषि आइ ।
पूछिनि प्रभु ते मोहनिज राम कहा समुझाइ ॥
सो० सकलदोषदुखदानिजानिहर्यो अभिमानतव ।
सुमुखिशोककीखानितेहितेलिहेउबच इपुनि ॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथ दासरामसनेहीकृतआरण्यकाण्डसम्पूर्ण नामअष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

—*—

श्रीगणेशायनमः

अथविश्रामसागर॥



किष्किन्याकाण्डप्रारम्भः॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि।
बरणौं कोकिलमतकछुक वृहदचरित्रबखानि॥
नारद अविचल भक्ति बरु पाइ चले हरषात।
तब सानुज रघुबंशमणि रीकमूक भे जात॥
सबल पुरुष सुग्रीवलखि डरि पठये हनुमान।
द्विजहूवै पूछाजाइ निजु हाल कहा भगवान॥
सो० सुनि मारुतसुत बयन प्रभुइचीन्हि चरणनपरे।
लायेकपिपति अयनमु दितभये सुग्रीव लखि॥
कीन मित्रता भाव जनकसुता की बात सुनि।
सियभूषण कपिराव दिये लिये उरलाय प्रभु॥
कह्यो लषणते चीन्हौं ताता। सुनि सौमित्र कही बरबाता॥
कङ्कण कुण्डल मैं नहिं जानौं। नूपुर नित पदबन्दन ठानौं॥
प्रभुइदुखितलखि कह्योसनेही। तजहु शोच मिलिहैं बैदेही॥
हरषिप्रीति हरि हरिपतिपाहीं। तुमक्यहिहेतबसहु बनमाहीं॥
तब सुग्रीव कहा सब हाला। ज्यहिहितबालिबैरप्रतिपाला॥
सुनि बोले अवधेश कुमारा। मैं मरिहौं रण शत्रु तुम्हारा॥
मित्र मित्र दुख दुखी न होई। बदतवेद शुचि सखा न सोई॥
सुनि सुभाय बोले कपिनाहू। बालिबली बधयोग न काहू॥
अस्ति दुन्दुभी केर समूहा। महा कठिन लागे दश धूहा॥

तिन्हैं एक शर बेधै जोई। मुनिबर बालिहि मारै सोई॥
दो० दूसरदुन्दुभि निधन सुनि इन्द्रताल फलसात।
पठये होइहैं सप्तदिन अजर अमर इन खात॥
नारद आय बालि कहँ दीन्हे गहन मझार।
महिधरिलगे नहान सो करिगा भुजँगअहार॥
हरिसुत लखि बोला बचनेहा। सात ताल जामैं तव देहा॥
कह भुजंग जो हमैं उबारी। त्यहिनिशिनाशतुम्हैंसोइमारी॥
सर्पाकृत सो ताल बिशाला। को यक बाण ढहावनवाला॥
तीसर बर बासवकर साधा। रिपुबल सम्मुख पावतआधा॥
यहिते बालि बधन के माहीं। आवतम्वहिंप्रतीतिप्रभुनाहीं॥
दो० हँसि बोले भगवान तब चलौ देखावो मोहिं।
बधिगिरावों सुसर ज्यहि निश्चय आवै तोहिं॥
भले नाथ कहि प्रभुइ लवाई। दीन्हे गिरिसम अस्तिदेखाई॥
बेधे सकल एकहा बाना। दशयोजन शिरराखिसयाना॥
नभ महितल सब तीर्थ नहाई। राम तूण प्रविशे पुनि आई॥
तब सुग्रीव देखाये ताला। सर्पाकृत सब ढहे कृपाला॥
छूटि भुजंग चला जय भाषी। बरषे देव सुमन अभिलाषी॥
दो० प्रभुप्रभावबलबिपुललखिकपिपतिप्रीतिबढ़ाइ।
निश्चयभइ बध बन्धुहित बोले पद शिरनाइ॥
सुनो नाथ तव कृपा ते मिटे सकल मम शोक।
शत्रुमित्रदुखसुख समधि मनकृतनहिंपरलोक॥
त्यहिते त्यागि मोह मद माया। भजब सदा तवपद रघुराया॥
बालि हमार परम हितकारी। मिलेआइज्यहि आपु अधारी॥
महित बचसुनि कहेउ खरारी। मृषा होतनहिं गिरा हमारी॥
तब सुग्रीव जाइ पुर गरजा। चलाबालि सुनि ताराबरजा॥
रामाश्रित सुग्रीव न जाहू। कहहरिसुत सबबिधिमोहिं लाहू॥
असकहि आवा अर्कज तीरा। भिरे क्रोधकरि दोनों बीरा॥

बालि हृहद बिधु मुष्टिक मारी। बिकल भाग सुग्रीव पुकारी॥
मैं जो कही केशव तुम पाहीं। बालि मोर रिपु सोदरनाहीं॥
कहप्रभुतुम यकसम दोउ आहू। त्यहिभ्रम मैं मारानहि काहू॥
कृपा दृष्टि तकि तुदन मिटावा। सुमनमाल पहिराइ पठावा॥
चैत्र चतुर्दशि सित चित चाड़े। भिरेकालिभुज पुनि पुरडाड़े॥
बिबिधि यतनकरि जूझतजोटा। प्रभु पेखत ठाढ़े तरु ओटा॥
जाना जब सुकण्ठ हिय हारा। साधि बाणबर बालिहिमारा॥
गिरा भूमि ब्याकुल ह्वै बीरा। तब राघव चलिगे त्यहितीरा॥
प्रभुइबिलोकि मोदित उठिवैसा। बोला बचन क्रोधयुत जैसा॥

दो० राम तुम्हार प्रभाव बल मैं घर सुना अपार।
देखा कर्म्म किरातकर कारण रहित बिचार॥

सो० म्वहिंमिलत्योंयहिरीति तुरतमिलौत्योंआनिसिय।
करिकादर ते प्रीति मारेउ बिनअपराधम्वहिं॥

कहप्रभु हम निरबल के संगा। अभिमानीढिग जाहिंनबंगा॥
शरणपाल कुल रीति हमारे। बधातोहिं छिपि शीलकेमारे॥
अनुज बधू कीन्हे निज घरनी। त्वहिंसममूढ़ पतितकोबरनी॥
प्रभु अजहूं अघ बने हमारे। अन्तकाल भे दरश तुम्हारे॥
सुनि कृपाल कह राखौं देहा। अकनि बालिबोला सहनेहा॥

दो० जासु नाम जपि जीव जड़ तरैं करैं मुनि ध्यान।
ते तुम ममआगे खड़े कहत राखु निज प्रान॥
केहिसुखसम्पति लागिअब राखौं सरलशरीर।
सुरतरु खनि रूंधै बबुर को असशठ रघुबीर॥

त्यहिते अब जैहौं हरि धामा। पर यह बर दीजै अभिरामा॥
कर्म्माधीन जहां मैं रहऊं। तहँ तवचरण नेह निरबहऊं॥
अंगद मम समान बलवन्ता। त्यहिकीजै निजदास अनन्ता॥

सो० प्रभु पद शीश नवाइ बालिगयो हरिधाम तब।
पुरजनसुनि दुखपाइ आयेजहँ कपिपतिमृतक॥

तारा शिर उर राखि लागी इमि रोदन बदन।
मैंजो रही पतिभाषि मान्यो शीख न कालबश॥
रामविकलत्यहि जोइ बोलेकरहु न शोचप्रिय।
मिलिबिछुरतसबकोइआपु अकेल न संगकोउ॥
मातु महीपितु शालि कालकृषीकरसरसमुझि।
बोइ प्रथम पुनि पालि लूनिखात ब्रह्मादिसब॥
असबिचारि शोचत नहिं ज्ञानी। कर्म्माधीन देह गति जानी॥
सबदिन यकथल बसत न कोई। पथिक मेघ इव संगति होई॥
भूमि बेकार घटा दिय थाई। उपजतबिनसत बपुष तथाई॥
रहत एक रस धरणी जैसे। जीव अनिथ्या होत न तैसे॥
जोयह भेद न नीके जाने। सो देहादिक सत्य प्रमाने॥
तासु बियोग योग जब लहई। संश्रित परि भुगतै दुखसहई॥
ईश कृपा जब होत बिशेषी। नित्यानित्य परत तब देखी॥
नित्य बस्तु भगवत सनबन्धी। और सकल ममता मतिबन्धी॥

सो० इमिबहु दीन्ह्यो ज्ञान बोधभानु प्रगट्यो तुरत।
मिटातिमिरअज्ञान लिहेसिमांगिहरिभक्तिबर॥

तब सुग्रीव रजायसु पाई। मृतककर्म्म सब कीन बनाई॥
प्रभुलक्ष्मणहिकह्योसजिसाजा। करि आवहु सुग्रीवहि राजा॥
जाय लषण पुर लोग बुलाये। बिप्र महाजन चलिसबआये॥
राजतिलक सुग्रीवहि दीन्हा। बालिसुतहि युवराजा कीन्हा॥
सबबिधि सबै शीख दै धीरा। सह सुकण्ठ आये प्रभु तीरा॥
ढिग बैठाइ दीन उपदेशा। जाहुभवन तजिसकलअँदेशा॥
में सह बन्धु शैल पर जाई। रहिहौं भरि बरषा तहँ छाई॥
तुम युत अंगद कीज्यो राजू। दीज्यो जनिबिसारि ममकाजू॥
भले नाथकहि निलय सिधाये। राम प्रबर्षण गिरिपर आये॥
प्रथम सुरन रचि कन्दर राखे। रामरहनहित चितअभिलाषे॥
जबते प्रभु प्रविशे तहँ आई। सकलसौंज सुखसम्पतिछाई॥

नानारूप बिरचि मुनि देवा। करहिं सदा रघुपतिकी सेवा॥
सन्तत होय सुभग सतसंगा। संशय समाधान बहु रंगा॥
निगमागम मतबिषय पदारथ। कहत सुनत समबोध यथारथ॥
प्राविट काल कन्द नभ घेरे। गर्जत चलत पवनके प्रेरे॥
जनु रबिते बासव महि वोरा। ह्वै ठान्यो संगर अति घोरा॥
की पावसऋतु रवनि नवीली। प्रभुइ रिझावन चली छबीली॥
की संवत की तरुण अवस्ता। की अवनी कीअम्ब बिसस्ता॥
राम अनुज तं ताकी करणी। कही जगत जीवनपर बरणी॥
शरद सुन्दरी सुमति समाना। आइ प्रकाशी पंथ प्रमाना॥
गुणत तासुगति मति बिसराई। बदत बन्धुते मोह जनाई॥
तात तकत बरषाऋतु नाशी। सियसुधिकछुनमिलीकटुखाशी॥
जियत बियत कैसों सुधिपावों।बलकरिबयहिजीतिमहिलावों॥
जिनममहितसुखसकलबिसारे। तिनबिनहमकिमिहोंइसुखारे॥
सुग्रीवहु कहि काज बिसारा। पाइ राज पुर सम्पति दारा॥

दो० जो हमहूं अब बदलिकै बधी बालिसम ताहि।
तो सुनि सब मूरुख हमैं कहैं नसके निबाहि॥
बिरहबचनसुनिलषणतब तमकिलीनधनुबान।
लखिप्रभु पुनि परबोधिकै पठयो कृपानिधान॥
इत हनुमान बिचार करि कह सुकण्ठते जाइ।
रामकाज लहि राजसुख दीन्ह्योतुम बिसराइ॥
सुनिसुकण्ठ डरियों कह्यो बिषयहरोममज्ञान।
अबते पठवहु दूत ते लै आवैं कपि आन॥

सो० कह अंगद यह काम हनुमानै ते होइ है।
नाहिंत दूरि मुकाम चले तुरत सुनि पवनसुत॥

पारपत्र गिरि प्रथमैं गयऊ। गवगवाक्ष ते भाषत भयऊ॥
रामकाज लगि मरकट नाहू। बोल्यो बेगि सहितबलजाहू॥
सुनि कपि असीसंकु सतसाता। लै सँग चले सुभट हरषाता॥

पुनि रेवत कदली बन आये। दुर्द्धर गजते बचन सुनाये॥
सात पद्म कपि असी करोरी। लै दोउ चले तुरत हरिओरी॥
दो० पुनि पहुंचे बलबीर के सुनि कपि तेइसलाख।
साठिसहस शतसंगलै चले करत अभिलाख॥
धुंधमाल गिरि पुनि गये मिले शिखंडी नाम।
सुनिकपि छप्पनकोटिलै चलेकहत जय राम॥
पुनि पहुंचे अर्जुनीगिरि कुमुदै दीन हुकुम्म।
कपि सत्तासीलाख लै गवन्यो चारि पदुम्म॥
पुनिचलिआये तावगिरि मिलेनील बलवन्त।
सुनिकपि षोड़श खर्बलै चले बहुरिहनुमंत॥
सो० बद्री परबत जाय गंध मदनते सबु कह्यो।
सुनत चले हरषाय लै संग गेरा अर्ब कपि॥
पुनि पहुंच अर्जुनगिरि जाई। तारा बखत चले सुधि पाई॥
नब्बेलाख सतासी कोटी। संगसकल मरकट मतिमोटी॥
पुनि सुमेरु परबत पगुधारा। मिले केसरिहि हालु उचारा॥
सुनि दशकोटि लाख नवकीशा। लैसँग चले सहस षटबीशा॥
पुनि कैलास पुलिंदै कहेऊ। जय अरुबिजयअंडसुधिलहेऊ॥
सत्रह संकु कोटि यक कोरी। चयकपि चले चाहनहिंथोरी॥
पुनि बिन्दाचल भूधर आयो। बाणबसन्त सुनत सुखपायो॥
हरिहर कोटि सहस सत लैकै। चले चपल चित चंचल कैकै॥
तड़पे बहुरि बिजय गिरिगयऊ। मिलिरतिमुखतेभाषतभयऊ॥
आठ पदुम नौसै इक्यासी। लै कपिचले सहितसरमासी॥
कूदे बहुरि कास गिरिपावा। मुद मयंदते हाल सुनावा॥
तिन कपि पदुमकोटियकलीन्हें। चले सपदिंप्रभुपदचितदीन्हें॥
जामवंत भूधर पुनि गयऊ। जामवान सुनिसांगत भयऊ॥
धूम केतु निज सोदर तेरे। बाणवृन्द बसु संकु सुडेरे॥
छप्पन कोटि अपर मरु लाखा। लैसँग चले भालु करि माखा॥

पुनि धवला गिरि आइबिधाता। बरणीसकल द्विविदते बाता॥
एक कोटि कपि लाख पचीसा। गवने संग सूम लै तीसा॥
पुनि उदयाचल पनसय लहेऊ। सर्वा सर्ब सल्य ते कहेऊ॥
अदबुद आठ पदुम मुनिलैके। मरकट चले चहूंचित दैके॥
यहि बिधि सबै बुलाइ कपीशा। आइ सुकंठै नायो शीशा॥
यह में गिनती जौन गनाई। बृहद रमायण महँ सो पाई॥
बालमीकिमुनि पुनि कछु जानी। युद्ध काण्ड में कह्योबखानी॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथ
दासरामसनेहीकृतसुग्रीवमित्रतारामप्रवर्षणनिवास
बर्णनोनामऊनबिंशोऽध्यायः॥१६॥

दो० सुमिरि रामसियसंतगुरु गणप गिरासुखदानि।
सर्बरमायण केरमत जो सो कहौं बखानि॥
पवन तनय जहँ जहँकहिआयो। किह्योसोसुनिसुकंठमनभायो॥
त्यहि अवसर लक्ष्मण तहँआये। देहुं जारि पुर बचन सुनाये॥
डरे लोग सुनि बालि कुमारा। आइ पाइ करि क्रोधनिवारा॥
सुनि सूरज सुत उठे डेराई। हनोमान ते कह्यो बुझाई॥
तारा सहित शप पहँ जावो। करि प्रबोध मंदिरलै आवो॥
भले ईश कहि शीश नवाई। बिनतो कीनि लषनकी जाई॥
तारा हँसि बहु बचन सुनाये। करि सनमान भवनलै आये॥
मिले सुकंठ सप्रेम प्रवीना। चरण पखारि बरासन दीना॥

दो० कहा लषण सियकेरि सुधि लीन चाहियेभ्रात।
बोलि पठाये बिपुलकपि आवनचाहत तात॥
असकहि शिबिका रूढ़ ह्वै आये जहँ रघुबीर।
बैठे जनु कैलासपति सोहत श्याम शरीर॥

सो० देखि नवायो माथ हाथ जोरि करि बिनयबद।
तव माया वशनाथ जीवसदा भरमत फिरत॥

बिषय बिवश मुनिदेव मैं पशुकपि कामीमहा।
कीन्हे बिनतव सेव मिटतन इन्द्रीजनितदुख॥
सुनि प्रभु बैठायो सनमानी। सियसुधिलीनचहीसुखदानी॥
ज्यहि हितत्यागिजालतनुराखा। सो न भईअबतक अभिलाषा॥
त्यहि अवसर आये कपि यूथा। नाना बर्ण बिशाल बरूथा॥
शीतोरक्त बिसंगम नीला। कर धुर थूला थूल धुमीला॥
सात ताल सम पृथुल कराला। जिन्हैंबिलोकिलहै भयकाला॥
सब कपि युद्ध बिसारद बीरा। स्वामीहित कारक रण धीरा॥
मिलि लँगूलपति आयसुदीन्हा। सबन प्रणामराम कहँकीन्हा॥
भये ढुकितछबि नखशिखदेखी। धन्यभाग्य अनुराग बिशेषी॥
राम कुशल बूझी सब केरी। बोले तब सूरज सुत टेरी॥
सुनहु सकल मरकट ममबाता। जाते जीव केरि कुशलाता॥
जपतप दान ज्ञान बहु करई। बिनहरिभजननभवनिधितरई॥
दो० बिद्याबुद्धि बिबेक बित धर्म कर्म भलसोइ।
अन्तर्यामी राम प्रभु जाते परसन होइ॥
मुख भुज कटि पदते भये बरनाश्रम हरि सूत।
जोनभजै त्यहि चारि महँ त्यहिजानियेकपूत॥
बरणाश्रम ते भृष्ट ह्वै सोइ परत भ्रम कूप।
पुनि पावत यमयातना निजअघके अनुरूप॥
अस बिचारि कुलछाड़िकै करहुराम करकाम।
मासदिवसमहँआयहू लै सियसुधिअभिराम॥
आई अवधि बिताइ जो सो पाई बड़ दण्ड।
गवगवाक्ष ते कह्यो तुम जावो पूरब खण्ड॥
भलेनाथ कहि माथ नवाये। सात पदुम कपि पाइसिधाये॥
तारा बखत सुखेन मयंदा। कह्यो जाहु उत्तर सहनन्दा॥
गेरा पदुम कीश लै साथा। खोजतचलेबिपिन गिरिपाथा॥
पुनि बसंत शत बीर बोलाये। कह्योजाहु पश्चिमहिंसिधाये॥

सोरह कोटि कीश लै भारी। तब अंगद ते कह्यो हकारी॥
जामवन्त हनुमत नल नीला। सबदक्षिणदिशिजाहुसुशीला॥
दश करोरि बानर सँग लैकै। चले सकल प्रभुपद चितदैकै॥
हनोमान जब नायो माथा। कर मुद्रिका दीन रघुनाथा॥
कहिनिदिह्योसीतहिसहिदानी। फिर्योबेगिममबिरदबखानी॥
सुनि प्रभु बचन चले शिरनाई। ढूंढ़त गिरिबन कपि समुदाई॥
बज्रदंत दानव यक आवा। अंगद त्यहिरण मारिगिरावा॥
मगमें तृषित भये कपि भारी। बिबर देखि प्रविशेहितवारी॥
भवन एक तहँ बिना निकासू। बैठि बामतप पुंज प्रकासू॥
सबहिं न जाइ ताहि शिरनावा। बूझेते वृत्तान्त सुनावा॥
सुनि बोली फलदल जलखाहू। खात भये सबसहितउछाहू॥
पुनि आये जहँ तापस बाला। तबसो कहतभई निजु हाला॥
कुं० हेमाप्सरा की सखी हों स्वयंप्रभा ममनाम।
हरिआनी मय स्वर्गते दुरि राखी यही ठाम॥
दुरि राखी यहिठाम इन्द्र सुनि लैंगेताही।
मैं रहिगइ यहि अयन राखिराघव मनमाही॥
मनमाहीं प्रभुराखि नाम सुमिर्यों नितनेमा।
अब कारज ह्वै गयो भयो पारस मिलिहेमा॥
अबतुम मूंदहु नयन निज जाहु बिवरके पार।
मैं जैहौं रघुबीर पहँ सुनि झांपे दृगतार॥
सुनि झापे दृगतार लखैं तौ सिंधु किनारे।
आपु गई प्रभुपास बहुरि बद्री पगु धारे॥
इहांबिचारहिंकीशमिलिबादिहिबीतीअवधिसब।
मिलीनसीताकेरिसुधिसमुझिपरतभइमीचुअब॥
सो० सुनिकपिशनके बयन निकसा कहि संपातितब।
मिला असन निजअयन देखिपराने कीशसब॥
कहअंगद अनुरागि धन्यजटायू सम न कोउ।

रामहेत तनु त्यागि गाहरि पुर हैं धृग हमें ॥
अनुजनामसुनिसोइठाढ़किहिसिकपिशपथकरि।
जामिउठे परदोइ मार्गअसित दशमी दिवस ॥
निजगति बरणनकीन जरेपंख जिमिज्यहिभये।
पुनि सियकीसुधि दीनिहै रावण पुरबिटप तर ॥
अस कहि गीध गयउनिजगेहा। तब सब कपिन भयोसंदेहा ॥
शत योजन सागर हित तरना। निजनिजबलसबकाहूबरना ॥
पार जानहित सकल सकाने। जामबन्त तब बचन बखाने ॥
हे हनुमान ज्ञान गुणधामा। होई यह तुमहीं ते कामा ॥
ताते निजबल अतुल सँभारौ। हम सबकी जनिबाटनिहारौ ॥
सुनि हनुमंत हरष उर लीन्हा। तेरह योजन करतनु कीन्हा ॥
बोले ऋक्षपते सुनि लीजै। का अब करौंतौनिशिखदीजै ॥
कहौ रावणै आवों मारी। कहौ लै आवहुं जनकदुलारी ॥
इतनी बात करहु तुम ताता। सीतहि देखि कहौकुशलाता ॥

गीतिकाछंद ॥

कुशलातश्रीसियकेरितातसुनाइयेसुधिआइकै। ज्यहिजानिराघवकीशलैगढ़लंकघेरैंजाइकै ॥ करिसमरमारहिंरावणहिंसुरसाधुबंदिछोड़ाइकै। भवसिंधुतरिहैंजीवजड़यहसुयशसुनिअरुगाइकै ॥

दो० सब रामायण के बिषे देख्यों जौन चरित्र।
सोई जन रघुनाथहूं बरन्यो कछुक पवित्र ॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतकिष्किंधाकाण्डसम्पूर्णं नामविंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

—*—

श्रीगणेशायनमः

अथ बिश्रामसागर ॥

सुन्दरकाण्डप्रारम्भः

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु गणपगिरा सुखदानि ।
कहौं आदि कवि कहनि कछु नाटक रीतिबखानि ॥
जामवन्त के बचन सुनि हनोमान बलवान ।
चले लंककहँ हरि दिवस जिमि रघुपतिको बान ॥
सुर प्रेरित बल लषणहित सुरसहि रोंक्यो आइ ।
बदन पैठि पुनि निकसि कै चल्यो आशिषा पाइ ॥
राहु जननि रहि सिंधुमहँ गहिखग करै अहार ।
सोइ छललखि हनुमान त्यहि मारिभये दधिपार ॥
शिवा शापयुत शैल पर गयो भयो नहिं बाल ।
यह नहिं प्रभुताछवंगकी प्रभुप्रताप बश काल ॥
सो० गिरि चढ़ि देखीलंक अतिबिचित्रमुनिमन हरनि ।
फिरत असुर बहुबंक चहुं दिशि रक्षा हेत पुर ॥
करि बिचार कपिशेष दण्डरारि बपु धारि तब ।
निशि गढ़ कीन प्रवेश लखि बोलत भइ लंकिनी ॥
जानत म्वहिं न अयान मम अहार है लंककर ।
सुनि मुष्टिक हनुमान हनत मरीभइ दिव्य बपु ॥
कहत भई करजोरि भयो सत्य बर ब्रह्मकर ।
जाहु नगरभय छोरि सुमिरि रामपदकपि चल्यहु ॥
सब घर हेरे पौन कतहुं न देखी जानकी ।

गये दशानन भौन अति बिचित्र पुष्पक जहां॥
दो० सर्ब काम प्रद सब रतन सर्बकाल ज्यहिमाहिं।
सर्ब सौज देखत बनै बरनि जात सो नाहिं॥
तहँ निशंक दशमुखै निहारा। सोइ गयोकल करत बिहारा॥
चौदह सहस सुनाग कुमारी। जहँ तहँ कनक लतासीडारी॥
देखि भयो हनुमानहिं शोचा। नाहकहरिसिजानकिहिपोचा॥
अबते देइ पठै जो सीता। तौ न होइ यहि पुरते रीता॥
रामकाज लगि सब त्रिय देखी। जनक सुतासो कतहुं न पेखी॥
पुनिगे भवन बिभीषण केरे। रामायुध तहँ अंकित हेरे॥
तबलागे मन करण बिचारा। जागि बिभीषण नाम उचार॥
भयो मुदित कपि सज्जनजानी। यहिते मिले न होइहैं हानी॥
लागे कहन राम गुण धीरा। सुनत बिभीषण आयो तीरा॥
पूछा हाल पवन सुत भाषा। द्वउदिशि भइपूरण अभिलाषा॥
दो० कह्यो बिभीषण जोरिकर कबहुंक श्रीरघुनाथ।
करिहैं कृपा कृपायतन जनपर जानि अनाथ॥
तामसतनकछुभजननहिं नहिंपदकमलसनेहु।
बिनहरि कृपा न दरश तव भयो भरोसोयेहु॥
कहकपिपरमकृपालप्रभुसचिवकियेकपिभाल।
वाकन बुद्धि न रूप कुल तोष हेत तिहुंकाल॥
सो० ऐसे प्रभुहि बिसारि कसन परहिंनरनिरयमहँ।
सुनत भयो सुख भारि पुनिपूछ्योकहँजानकी॥
दीन्ही युक्ति बताइ गे अशोक बन बिशद जहँ।
कनक बिटप समुदाइ नाना चित्र बिचित्रफल॥
खोजत खसत प्रभात गये शिंशपा बिटप तर।
बैठी जहँ जगमात मनहुं विरह मूरति धरे॥
देखि नवायो शीश मनहीं मनरहे बैठितरु।
त्यहिअवसरदशशीशअगगितहँसँगमुखिसब॥

बोला जनक सुतातें बानी। सुनहु प्राणप्रियसुमुखिसयानी॥
मैंसुर असुर नाथ बल धामा। मन्दादरी आदि सब भामा॥
मेघनाद आदिक सुत जेते। तिनकी रवनि रहत जन तेते॥
करहुं सकल शुचि सेवक तोरे। एकबार निरखौ दिशिमोरे॥
तेरेयोग सकल सुख आहीं। तृणधरिबद सीतात्यहिपाहीं॥

छप्पै॥ रेरावणजेअहैंरामचरणनअनुरागी। तेसरिपतिचुल्लव तलखैंललनासमआगी॥ चिन्तामणिअसमवतसरिसखद्योततमा री। स्वर्णमेरुलोष्टवतभूपभृत्यवतबिचारी॥ कल्पविटपतिर्नवत नगरासिभारवतदेह। तौतैंकाहदेखावईमोहिंलघुलंकायेह॥

दो० होतप्रफुल्लित कमलिनी कहुंखद्योत प्रकाश।
कहत बचन मर्य्याद तजिहैतु आपनेनाश॥
सुनि सीताके बचनबर मनहु लगेउरबान।
काढ़ि खड्गमारनउठ्यो तैंममकृतअपमान॥

सो० मन्दोदरिगहिपाणिसमुझायोबहुभांतितब।
बोलिबकीअघखानिकहिसिकित्रासहुजनकजहि॥
मास दिवसके बीच जोनहिं मानी बचन मम॥
तौकटिहौं शिरनीच लज्जित ह्वैगा भवननिज।

दो० विविध रूपधरि राक्षसी लगीं सियै दुखदेन॥
त्रिजटा तब समुझाइकै जात भई निज ऐन।
रामबिरह बसजानकी सबनिनिहोरिनिहोरि॥
मांगहिं पावक देहु जेहि मिटैविपति अतिमोरि।

सुनत पवनसुत हृदय बिचारी। दीन मुद्रिका सनमुख डारी॥
लखि मुंदरी रघुपति करकेरी। बोली बचन तासु तनहेरी॥
श्रीघरबन हम तवयह रीती। अबको करिहित्रियनपरतीती॥
कहुहैं कुशल लषण रघुवीरा। कैसेतैं आई मम नीरा॥
तब हनुमत बोले सह चाऊ। मातु भानु कुल दशरथ राऊ॥
तिनके सुवन लषण रघुनाथा। आय बन बैदेही साथा॥

महिजै तहँ हरिलैगा कोऊ। ढूंढ़त फिरैं बिपिन महँदोऊ॥
गीधराजते सुधि जब पाई। तबतौ अधिक उठे अकुलाई॥
बहुरि सखा सुग्रीवहिंकीन्ह्यों। भूषण पाय थाहसी लीन्ह्यों॥
बरषा समुझि रहे गमखाई। अबकपि अगणित बटुरे आई॥
पठये चहुं दिशि चाहन भूरी। मोते कहिनि नयन जलपूरी॥
लैमुंदरी जाहु तुम ताता। सीतहि देखि कहौ कुशलाता॥
काल्हि मातुमैं लंकहि आयों। खोजत आजु दरश तवपायों॥
रामचरित यहिबिधिसुनिसीता। भई मुदित दुख दारुणबीता॥
बोली जेहिं यह कथा सुनाई। सोअब प्रगट होतकिन भाई॥

दो० सुनि सीताके वचन कपि आयो पुरह लजात।
चूके अवसर सुजनजिमि सज्जनसम्मुखजात॥

कपि स्वरूपलखिसीयसकानी। राम दूत मैं सत्य सयानी॥
तिनके गुण कछु करौं बखाना। शीशनाय बोले हनुमाना॥
कुकुभाछंद॥ प्रथमदयादुखदेखिसकैंनहिंउभयकृपाकरिगहईं अनुकंपाहितकरतनत्यागतकरुणाकष्टनसहईं॥ आनृसंसगुणसहि तदोषहूताकीरक्षाचाहैं। अनूक्रोशनिजशरणिकेरकलिकरतबपुनि पुनिकाहैं॥ दमगुणइन्द्रीदमनदर्पपरिभवदानवसंतापा। समगुणसुमनविरोधबोधबपुपरिपूरणनिसपापा॥ सत्यसदासचकहत गहतलखिप्रीतिप्रतीतिअपावन। क्षमाछिद्रलखिक्षमहिंसदाप्रापतिसौलभ्यसोहावन॥सौशिल्यातजदीनखीनबुद्धिसुधिशरणागत पालै। प्रणतबिधुरबात्सल्यभोगकृतप्रमुदितआपुकृपालै॥ सबउरफुरसर्बज्ञअघटघटनाकरशक्तिसरूपं। रजकृतगणतकृतज्ञमेरुसमसुमिरतभक्तिअनूपं॥ गुणगँभीररहितोरजासुकीगतिमतिजातनजानी। चतुरतिचित्रबिचित्ररचतरचनाअगणितबिचबानी॥थिरसुनामगुणधामअचलअर्पतअनहेतुउदारा। धीर्यधाररिपुमारमोहमधिमानसटरैनटारा॥ शूरसमरसुखलहततेजजगजीवनिनिजबशराखै। बलबड़कारजकरतहोइश्रमस्वल्पनपद्धतिनाखै॥ सौंदर्य्या

सिलअंगसुभगचखचाहतचाहनडोलैं। महामीठमाधुर्यसाम्यसौर भसबतेभलबोलैं॥ भागवानब्रह्मादिधनीबहुजाकेधनतेभयऊ। शिरससुमनसुकुमार्यआर्यआज्वलिअजीतअरिजयऊ॥ शुद्धसुबेष किशोरसौर्यमार्दवविरक्तविज्ञानी। धर्मधामनिष्कामरामरघुनाथ अनाथअमानी॥

दो० कहिकै कहत न गहत गहि दैके देत न काहु।
बधिकैबधतनतजततजिभजेहिभजततवनाहु॥
संग सुमित्रा सुवनते अधिक भरतमें प्रीति।
कइकबार मोसे कहिनिकुटिलकागकीरीति॥

सुनि हनुमान बचन बैदेहीं। जान्यो मन क्रम राम सनेही॥ बोलीं अहैं कुशल दोउ भाई। हमते तात न कछु बनिआई॥ सासु ससुर पति बचन नेवारी। आइन संग सनेह पुकारी॥ अछत देह जब भयो बिछोहा। तजे न प्राण कौन बड़मोहा॥ यहउ सहेउं दुखदुसहअभागी। जरिन गयो बपु बिरहदवागी॥ तेहिते तात प्रीतिकी बाता। जानत झखकरदम जलजाता॥ आरज सुवन दया के सिंधू। सरल सुभाव दीनके बंधू॥ निज दिशि देखिचहैं सोकरहीं। हमरे करम सदा दुखभरहीं॥ सुनिपवनजकह पुलकितगाता। दीन बचन कत भाषतमाता॥ ननके दुख रघुनाथ दुखारी। तव बियोग संभव दुखभारी॥ ऋतु अनरोध शोध बिनपाये। ज्यों त्यों इतने दिवसबिताये॥ नाहित कह रघुपति शरभानू। तमबरूथ कहँ निशिचरजानू॥ जोमैं हठि लै जावों आजू। बिन निदेश बिगरे सुरकाजू॥

दो० त्यहितेकछुदिनधीरधरु कपिनसहित दोउभाय।
आइ तुम्हैं लै जाइहैं अरि हरि पुर पहुंचाय॥
सुनि बोली सियकीश सब हैंसुत तोहिसमान।
तबतौकीन्हेउस्वर्णगिरि सरिस स्वतनुहनुमान॥

सो० बिनकीन्हे करतूति कथत ताहि लघु जानिये।

कालिह कहौंगोभूति धोइसमर सरि बदनमसि ॥
मैं जो सुने कटु बयन कहे जो निशिचर नीचने।
धरि राखे उर अयन समय पाइ सब काढ़िहौं ॥
भइ सीतहि परतीत देखि बुद्धि बल कीशकर।
दीन्ह अशीशसप्रीति अजरअमर सुतहोउप्रिय ॥
सुनि कपिनायो माथ हाथ जोरि बोल्योबहुरि।
क्षुधा लागिम्बहिंमात हरपिकहेउसुतखाहुफल ॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुना
थदासरामसनेहीकृतमारुतनंदनश्रीसीतापतिश्री
रामसंदेशवर्णनोनामएकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि।
कहौंआदिकबिकथनि कछु नाटक रीतिबखानि ॥
मेघनाद ते अधिक प्रिय पुरहुत ते बर बाग।
दशमुख दुखहितखाइ फलकपितरु तोरनलाग ॥
बरजत मारे असुर कछु कछुकगये गृह भागि।
कछुन जनायो रावणहि सुनतलागि जनुआगि ॥

तुरत बोलि मंत्री सुत लीन्हा। लखिकिन्नरकहँआयसुदीन्हा ॥
असी सहस्र सुभट सँग लैकै। आवा निकट दुंदुभी दैकै ॥
हरषे हरिसुत सैन निहारी। बोले जय रघुनाथ खरारी ॥
जय लक्ष्मण सुग्रीव कपीशा। लखि किन्नर मारे शरबीसा ॥
तबहनुमतहँसितरुयकलीन्हेउ। तेहियकविशिषखण्डत्रैकीन्हेउ॥
कपि योजन की शिलाउपाटी। लक्षबाण करि किन्नरकाटी ॥
तब बजरंग रोष करि धायो। पटकिपानिशिरमारिगिरायो ॥
पाछे अपर निशाचर मारे। भागि बचेते जाइ पुकारे ॥
सुनि तब अक्षैकुमार पठावा। उभय लाख भटलै सोआवा ॥
देखि ताहि गरज्यो कपिभारी। भागे हय गय हहरि पछारी ॥

दो० साधि सकल आये निकट कहिकहिबानीविंग।
कूदेहुकपि तिनमध्यइमि जिमिमेघनमहँसिंग॥
कछुक नाय कांड़े करनि कछुमाड़े धरिपाइँ।
कछुक मिलाये धूरि महँ भूरि मसन की नाइँ॥

निजबलबधलखिअक्ष कुमारा। लोह खम्भ लै कीशहि मारा॥
लागत सो मुरछा सी आई। मारं तब लाखन शर धाई॥
भयो चेततन पूरित देख्यो। भानुकिरणिजनुचहूंदिशिलेख्यो
झिटकि देह सब बानगिरायो। गहि गिरिएकअक्षयपर धायो॥
आवत लखि मारे बहु बाना। दहिने करते खस्यो पषाना॥
तुरत बामगहि शिरदै मारा। सहित सूत रथ भा संहारा॥
तासु सचिव सुत पांच प्रचारे। कछु खेलाइ पुनि सोऊ मारे॥
बैठे बहुरि महल पर जाई। बोले लंका दिशि गोहराई॥
मैं हों कोशलेन्द्र कर दासा। बैठ लवाव न कीन्हे नाशा॥
जासु सुभट मन होइ खुशाली। आइ करै सो समर कुचाली॥
अक्षयनिधन सुनि निश्चर राई। मेघनादकहँ लिहिसिबोलाई॥
कह्यो बाँधि बानर कह लावो। मारेहु जनिसुतमोहिंदेखावो॥
आयसु मानि अनी लै संगा। आवा जहँ तहँ कपि रणरंगा॥
लखि पवनज फाँद्यो तिनबीचा। मारे छिटकि अनेकन नीचा॥
पुनि प्रचारि वृषरिपुतेभिरेऊ। मृगपतिसममहिकोउनगिरेऊ॥
भरि अनंग दिन भई लराई। जानायह हरि जीति न जाई॥
ब्रह्मअस्त्र तब साधि चलावा। करि बिचार हनुमान बँधावा॥
लीलै लै आये जहँ रावन। देखाकपिजनु कुधर भयावन॥
अरुणनयन रिसवशअँगजरहीं। सभयदेवसब आयसु करहीं॥
लखि प्रभाव कपि शंकनआनी। बोला तब दशकंधर बानी॥

गीतिकाछंद॥ कपिकौनतूसुतअक्षघातककौनबलरघुनाथके।
रघुनाथकोखरदूषणांतकअनुजलक्ष्मणसातके॥ लषणकोतवभगि
निजानतपरशुधरमदजेहिहरेउ। परशुधरकोसहजभुजरिपुदीप

जेहितवशिरधरेउ ॥ पठवाजुकेहिसुग्रीवकाहरिबालिसोदरजानि
ये। कपिबालिकोतुमरह्योजाकीकांखमेंसुधिआनिये ॥ किमिसि
न्धुनांघेगोपदज्योंकेहिहेतुसियचोरैलखै। सियकोनकन्याजनक
कीतुमबाणगेजाकेमखै ॥ कसबाणसोइबलिसुवनजेहित्यहिबाँधि
नाचनचायहू। कोकहतयहिबिधिपद्मिनीजेहिजलधिमाँझचलाय
हू ॥ शठबाँधिआयसियहीबातनबातयहनहिंआनहै। तवत्रियन
लखिअघलागपुनितोहिंदेनशिक्षाज्ञानहै ॥ देकोनशिक्षादेतयाही
बैरप्रभुसेजनिकरो। परिपाइँसीतहिदेहुसबबिनमौतजातेनाम
रो ॥ कोमारिहैम्वहिंकर्मतेरेकोनतिनतेराखिहै। श्रीरामकरुणा
धामजबतैंशरणमुखतेभाषिहै॥ममशरणत्रिभुवनआजुतोहमशरण
काकीजाहिं रे। नहिंजाइहैतौपाइहैफलकटुककछुदिनमाहिंरे ॥
मृगनारिद्विजकपिनाहहौंखरदूषणांधकनिरबली। म्वहिंभेंटिज
बफिरिजाइहैतबबातककुआगेचली ॥ जबसमररुषिहैंरामतबको
सुभटशायकसहिसकी। सुनिसमुझिबूझतनाहिंबीसहुनयनफूटे
बरबकी ॥ रेपोचकपिनहिंडरतकाकोमोहिंतूशठहैकहा। नहिं
दीनआयसुईशनातरुख्यालकरत्योंजसचहा ॥ रसराजतोहिंकरि
सुभटरसयुतलंकखलखलतोस्वयं। पुटपाककरिसुरपतिहिदेतोघ
नेघरघलतोत्वयं ॥ सुरनागनरदिग्पालसबजगजालजेहिकरतल
अहै। त्यहिशत्रुतेकरिरारिजीवनमरणदोनोंभलरहैं ॥ अबलीनसे
नामापितवनहिसबलकोउमोतेहवै। परडरतआयसुभंगतेनतसब
नकरिजातोसवै॥ सुनिकिहिसिनिश्चरबोलियहकपिकालबशवध
कीजिये।बरबागकीगतिकिहिसिजिमितिमिबाँटितनकोलीजिये॥

सो० सुनि धाये जिमिभूत कह्यो बिभीषण जोरि कर।
नाथ न मारिय दूत घटत कि दधिदलि बूंदयक ॥

अपर दंड कीजै जो चहऊ। तौ बालधि पावक ते दहऊ॥
जेहिते फिरि तपसिन पहँजावै। कपिन समेत इहां लै आवै ॥
एक गये जो मिलैं अनेका। तौ तुरतै तजि दीजै एका ॥

सबहिन कहा मंत्र यह मूला। लगे लयावन घृत पट तूला॥
जहँ तहँ लगे लपेटन बोरी। कपि खेलारकरि लूम बढ़ारी॥
ठौर ठौर पावक पर जारी। उये कोटि रबि किधौं देवारी॥
लघुङ्क निबुकि मेरुसम भयऊ। रावण भवन कूदिचढ़िगयऊ॥

नाराचछंद॥ चढ्योकलांगिधामलूमलामकोउठायऊ। मनों अकाशतेनदीकृशानुकीबहायऊ॥ किलंकलीलनेककालजीहसीप सारेहू। किधौंअनीकअयफसूरसयफसीनिकारेहू॥ किधौंसुरेश चापकी कलापदामिनीमहैं। बिलोकियातुधानसो परातभजहैं तहैं॥फिराइलाइलाइअयनमयनसेलगेलगेबरै।गयन्दछोरिबा जिछोरिऊंटछोरियेखरै॥ अनेकबालबालकी सुतातमातबोलहीं। बचाइलीजियेहमैं समैसमानडोलहीं॥ अनेकनारिमारिरिंभडिं भकाढ़िलावहीं। अनेकडारिडारिबस्तुबारिलेनधावहीं॥ अनेक कंतबीरतेपुकारि बयनयोंकहैं। उठाइलेहुलालमाल जालदेपरो तहैं॥ बिलोकिदेवयोंकहैंकपीशयज्ञसाठनी। सुरारिसौजलंककुंड हाकस्वाहसीमनी। किधौंबिराटकेसुरारिराजरोगजानिजू॥ नि मित्ततासुबदज्यौरभृङ्गाकठानिजू। मथंतिमंदराजकीमनोजफागु खेलई। बिरागधृत्यबोधकोबिमोहबंधुठेलई॥ गिरैकँगूरदूरितेतबै कहैमंदोदरी। बिहाइलोकलाजकानिभागतीनक्योंअरी॥ अरेअ कंपनावकितायकंठकीमहोधरं। लवाइलेहुअद्धगातिपूतनातिसोद रं॥ अनेकबारमैंकहीबुझायहूंबिभीषणं॥नमामिदाढ़िजारकोकुठार बंशतीषणं। निकेतहारअर्द्धउद्धहाटबाटमेंजहां। लुकातजायनीर कीशतीरदेखियेतहां॥ घनेस्वबक्षजातकेनिसातस्वस्तिपावहीं। बोलाइशेषराघवेशजानकीकहावहीं॥ बधूजोकुम्भकर्णकीपसारि पाणिभाषिये। दोहाइरामचन्द्रकेरिमोरकन्तराखिये॥अनेकधाइ धाइजाइरावणैसुनायहू। बिचारिबीरमेघनादसेबलीपठायहू॥अ नेकअस्त्रशस्त्रलायआयमारनेलगे।घुमाइदीनिबालधीपुकारिकूरसे भगे॥ सुमन्त्रजायोंकहीबड़ोबलाइकीशहै। निशंकबंकहूबड़ो

सुनोनऐसदीसहै ॥ बिशालज्वालजानिकोपिमेघबोलियोंकही ।
बुताइदेहुआगिरेबहाइजन्तुकोसही ॥ भलेसुनायचापआयपुंजपा
थकाड़ेऊ । यथासनेहपाइचोगुनीकृशानुबाढ़ऊ ॥ लगीजुअंगअंग
बाणप्राणलैभगेसबै । निहारिरीतिमालवानस्थानबोलियोंतबै ॥
नआहियाहिआपिसूमआहिईशबामता । समीरश्वाससीयकीजु
रामरोषमामता ॥ विडौजब्रह्मबिष्णुरुद्रआदिदेवजौनहैं । डेरात
मोहिंसर्वबंगईशऔरकौनहै ॥ बोलाइकालतेकह्योंलगूललावमा
रिकै । बटोरिभूतप्रेतगक्षदण्डचण्डधारिकै ॥ बिलोकबातजातघा
तकीनिसयनतासुको । उठाइगालमेंधर्योपर्योखँभारजासुको ॥
समेतशंभुभासरामदासपासआयहू । समीतपंकजासनादिबीनती
सुनायहू ॥ दण्डकछंद ॥ जयतिश्रीबातसंजातबिख्यातबलबिपु
लपनबालरबिगालधर्त्ता । लोकलिपिकसीश्रुतिशास्त्रबिद्यानिपु
णनिरससंसारमहिंभारहर्त्ता ॥ जयतिबजरंगरणरंगअरिभंगकृत
कर्मनहिंभर्मऋकमूकबासं ।सत्यसुग्रीवसुखहेतुवृषकेतुबपुबचनम
नकायरघुनाथदासं ॥ जयतिगुणज्ञानबिज्ञानबैरागनिधिनामवसु
जामउरधामधारी । साधुसुररंजनंअसुरगणगंजनंदुष्टमुखभंजनं
बिपतिहारी ॥ जयतिकपिसिष्टपरमिष्टपावकपरमधर्मधुरधर्णहरि
दर्पहन्ता । स्वर्णशैलाभजलदाभबिग्रहबरणबिमलयशशूरबीराग्र
गन्ता ॥ जयतिजनकात्मजाशोचमोचनबिपिननिधननिर्द्वन्ददश
ग्रीवजाता । निपटनिरशंकगढ़लङ्कदाहककामक्रोधमददेवदानन्द
दाता ॥ जयतिशिरश्रवणदृगदेतकटिउदरकरशूलनिरमूलनाभिष्ट
आमं। पातुपूरबदक्षिबिदिशिपश्चिमउतरऊर्धअधसर्बदासर्बठामं॥
जयतिपरयत्रपरमंत्रनेवारणंशाकिनीडाकिनीघोरमारी । भूतयम
दूतबैतालपावकप्रेतचौरबिगबिच्छुअहिबंधनारी ॥जयतिसुरसिद्ध
मुनिवृन्दबन्दितचरणशरणभयहरणधृतकुधरहाथं । अंजनीआनि
दोहाइश्रीरामकीहरहुदुखसपदिरघुनाथनाथं ॥

दो० देहु छाँड़ि यमराज कहँ यही बीनती मोरि।

परवश आयों लरन सुनि दीन गाल ते छोरि ॥
जरत देखि पुर जानकिहि भयो शोच कपिहेत।
लागी सौंपन सबबिबुध बिष्णुहिंप्रीति समेत ॥
बैदेही की सुरति करि हरिहु लाग पछितान।
पुनि अपनी दिशि देखिकै दूरि कीन अज्ञान ॥
बच्यो बिभीषण भवनअरु कुंभ करणकर द्वार।
अपर लङ्कसब जारिकपि कूद्यो जलधि मँझार ॥
पूंछ बुझाइ बनाइ लघु बपुष आइ सिय तीर।
कह्योचिन्हकछुदेहुमोहि जिमिदीन्ह्यो रघुबीर ॥
सुनिसह प्रीति उतारिनिज चूड़ामणितबदीन्हि।
गहबर बोली तातुम भले समय सुधिलीन्हि ॥
जिमिमणिबिनब्याकुलभुजगजलबिनब्याकुलमीन।
तिमि देखे रघुनाथ बिनु तलफतहौं मैंदीन ॥
कह सुत अब कब आइहैं दीनबंधु यहिपार।
देहैं राज बिभीषणै करि निशिचर संहार ॥
बिजय पाइ कबराजिहैं मोहिं सहितदलमाहिं।
देव बंदिते छूटि कब बिनय करब प्रभुपाहिं ॥
कबधौं बिधि पहुंचाइहै फिरि कोशल पुरतात।
भरत शत्रुहन लोगसब कब लहिहैं मुदमात ॥
ह्वै हैं मंगल काज कब पुजिहैं याचक काम।
नखशिखकबअवलोकिहौं रघुपतिछबिअभिराम ॥
शीशमुकुट मणिगण जटित श्रवणन कुंडललोल।
जग मगात कब देखिहौं टोपी दिये अमोल ॥
अलकैं सींची अतरसों निकट कपोलन मुक्त।
भरि लोचन कब देखिहौं कुसुम कलिन संयुक्त ॥
भाल तिलक भासित उरध भृकुटीधनु अनुहारि।
भूरि भाग कब देखिहौं नयनन पलक बिसारि ॥

चंचल चारु बिशालबिवि लोचन मोचन मान।
चितवत दिशि कबदेखिहौं मनकोकरि कुरबान॥
कीरतुंड सम नासिका लटकन की छबि भूरि।
कब चकोर सम देखिहौं मुख मयंक तृण तूरि॥
अरुण अधर दाड़िम दशन रसनचारु मृदुहास।
हेहरि कब अवलोकिहौं शशिकरसरिस प्रकाश॥
मधुरबचन जन मनहरण कब सुनिहौंनिजकान।
चिबुक चारु कब देखिहौं चितवनअमीसमान॥
कम्बुकण्ठ तुलसी सुभग मणि मोतिनकी माल।
उर दीरघ अवलोकिहौं कबत्रिबली सुखजाल॥
भुजबिशालकरिकरसरिसकरतलकमलसमान।
सहित विभूषण देखिहौं कब लीन्हें धनुबान॥
झीनझँगा पहिरे ललित ताऊपर पटपीत।
कब निज नयन सेराइहौं देखि उदर उपवीत॥
कटि केहरि हरिकरधनी पटपरदनी सुरंग।
कब पदपद्म पलोटिहौं जानु पाणि सब अङ्ग॥
मैं सुत कन्त अनन्तकर जानत सरल सुभाउ।
ताते कहत न सहत दुख तुमते कौन दुराउ॥
विरह अग्नितें देखित्वहिं शीतलभय निजदेह।
सोउ कहततुमजानफिर सोइदुखसहब अनेह॥
दीन बचन सुनि सीयके भयोबिकल कपिराय।
नीकि न लागी अमरताछलबलकछुन बिसाय॥
दीन्हों मातु प्रबोध तब होई तुवमन जौन।
चल्यो नाइशिर नादकरि कूद्यो सागर लौन॥
आवत जानि लँगूल सब चढ़े विटप गिरिधाइ।
देखत पहुंचे आइ हनु कुहू दिवस सुख दाइ॥
भये क्षीनते पीनसब शाखामृग यक साथ।

वृहद्रामायण केरमत कहा कछुक रघुनाथ॥

इतिश्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथ दासरामसनेहीकृतहनुमानलङ्कापुरीविध्वंस वर्णनोनामद्वाविंशोऽध्यायः॥ २२॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपगिरा सुखदानि।
सार रमायण कहैंकछु गीतावलि मतआनि॥
सियै रंजि बनभंजिपुनि पुरजराइ मणिपाइ।
आयो मारुत सुतहि लखि हरषेकपि समुदाइ॥
भेंटि भेंटि पूछा सबन हाल कहा हनुमान।
सुनत चले सानन्द ह्वै जहँ सुकण्ठ भगवान॥
मार्ग पञ्चमी शुक्रदिन मधुबन पहुंचे आइ।
खाये फल दल मधु सबन रखवारे बिड़राइ॥
षष्ठीदिनकपिपतिहिमिलिमुदितकहासबहाल॥
सतयेंदिनआये अखिल जहँ रघुनाथ कृपाल॥

चरण परत भेंटे रघुवीरा। सानुज बैठारे निज तीरा॥ जामवन्त तब सकल बखाना। जेहिबिधिकाजकीनहनुमाना॥ सुनत समोह गोदभरि अङ्का। हनुमानहिंपुनिमिलेश्रीरङ्का॥ उपपधारि बूझी कुशलाता। किमिसियखबरिलयायोताता॥

गीतिकाछंद॥ किमि तात लायहु सीयसुधि सुनि पवन सुत पदगहि कहा। प्रभु पासते जब चलेन ढूंढ़त दूरि अक सागर चहा॥ शतयोजन कर तेहि नांघि चालिस कोश तक आरामहै। पुनि हेमके त्रैकूट लङ्क सुवेल सुन्दर नामहै॥ तहँ पांचलाखपपानकेगृह दारुकेनवलक्षहैं। पुनिताम्रकेमुनिकोटि घरश्रुतिकोटिरजकेस्वक्षहैं॥ तेतनेहिकंचनकेरकेवल कोटिपङ्कज रागके। षटकोटितृणकेबंशछदके कोटिशतबहुभागके॥ अस्फटिककेनवकोटिमेचकदामकोटिसहस्रसौ। मैंदीखइतनेनिलयलङ्का

दुर्ग शतयोजनबसै ॥ दशशीशताकोईशजाकेकोपतेत्रिभुवनकँपै।
उपवागतामेंजानकीतवविरहपावकमेंतपै ॥ जहँरहततहँकेविहँग
निजनिजभवनतजिभजिभजिगये । भइभेंटश्वाससमीरतेतित
फिरिनिहुमहँपगदये ॥ कृशगातसोजरिजाततजिदृगबारिनिज
हितराखहीं । तवनामसुमिरतयामआठौ औरकछुनहिंभाषहीं ॥
जबप्राणमीनसमानबिनजलजानितबत्यागोचहै। तबसींचप्रभुगु
णराखित्रिजटाजायमेंदेखीतहैं ॥ शिरनाइदीन्ह्योंमुद्रिकाकहिकुश
लबनभंजनकह्यो । बांधअक्षलंकजराइचूड़ारत्नसीतातेलिह्यो॥ सो
लीजियेरघुनाथलैनिजहाथहृदयलगायहू ।मेप्रेमपुलकितगातशि
थिलनबातमुख आयहू ॥ सुनिशोकसीयबियोगसागरमाँझबूड़न
लागेहू । हनुमानबोहितसरिसलीनउठाइआतुरजागेहू ॥
शीश नाइ बोले हनुमन्ता । केतनिकबात करौप्रभुचिन्ता ॥
कहो रावणहिं दल युत मारों । कहो आनि तवचरणन डारों ॥
कहो लंक लै सागर बोरों । कहो त्रिकूटै घट इव फोरों ॥
कहो लाइगिरि सागर तोपों । कहो पानकरि जलउरलोपों ॥
कहो परों मैं सेन बढ़ाई । तापर सेन उतरि सब जाई ॥
कहो तुम्हें लै सियै देखावों । कहो जानकी आनि मिलावों ॥
तव प्रताप ते सब कछु करिहों । बिननिदेश पथपाउँन धरिहों ॥
ताते जो भावै सो कहऊ । कह प्रभुतुम सुत ऐसे अहऊ ॥
सबबिधिहौं निजमन अनुमाना । तुमसम मोरहितूनहिंआना ॥
प्रति उपकार याग्य म नाहीं । त्यहितेहौंऋणियां तुमपाहीं ॥
सुनिहनुमान सकुचि असभाषा । तव प्रताप मैं का मृगशाखा ॥

दो० धूरि मेरु गोपद जलधि जल पावक भय प्रीति ।
नाथ कृपा जापर करहु विपरीते बिपरीति ॥
सुनि प्रभु लीन लगाइ उर बोले सम्मत नीक ।
माँग्यो जौन रजाइ तुम तात रहे सो ठीक ॥

परमैं निज शायक वरि राखे । रहिहैं क्षुधित तुम्हारे माखे ॥

अरुजगहित लीला नहिं बाढ़ी। मिटी आह दशमुखकी गाढ़ी॥
कर्म प्रधान विश्वमें कीन्हा। देवचहैं निज बदला लीन्हा॥
सोसब फिरि रहिजाई ताता। ताते अब कीजै यह बाता॥
लै कपिभालु चलहु चढ़ि लङ्का। देखौं महूं कैस गढ़ बङ्का॥
कह कपि नाथ बेगिही कीजै। अभिजितसमुझिकूचकरिदीजै॥
दो० सबदिनयहसाइति सुभगजहँ अपयोग नआन।
सुनत अष्टमीदिवसप्रभु रविलखिकीन पयान॥
गीतिका छं० ॥ प्रभुकीनलङ्कपयानजबतबधनुषनिजटंकोरेहू।
सुनिशब्दघोरकठोरचौंकेशंभुविधिमुखमोरेहू॥ भयोकामसकल
निकामशिरसेगंगधाराबहिचली। धरिधीरहृदयबिचारिनिजनिज
काजलागेविधिभली॥ भयबिकलसबदिग्पालचौदहुभुवनकेबा-
सीडरे। दशमौलिसभयबेहालपुरजनगर्भतिनकेगिरिपरे॥ कपि
भालठोंकहिंतालअतिविकरालरदकटकटकरैं। बदिबादकूदहिं
नादकरिहरिसन्नउपरोपरपरैं॥ अतिपीनपरमबिशालकरगिरिवि-
टपधृतचञ्चलमहैं। मुखबिकटलोचनपिङ्गजिन्हैंबिलोकिभयकाल
हुलहैं॥ धरुमारुभुजाउखारुअरिदलडारुसागरतोपई। तेहिदोष
देखवताहिजोतेहिहेततनकोकोपई॥ यहिभांतिमर्कटकटकबोलत
चलतमरुपंगुलभये। शशिभानुलोपेयाननभथलधूरिपरिसरपटि
गये॥ अनिमेंखचहतनिमेखमातलिसहसदृगअकुलानेहू। सुनि
हांकश्रीहनुमानकीपरअपनकाहुनजानेहू॥ बलखातदिग्गजकोल
कूरमशेषशिरहालतमही। मुखमुहुरमुहुरामर्षिकर्षतगईतनकर-
कससही॥ श्रीरामराजतपवनपरजिमिउदयगिरिपररविलसै।
सौमित्रअंगदकंधमानहुंअग्निघरचदाबसै॥ कसमसतइमिमगब
सतबिसयेंदिवसदधितटआयहू। उतरेनिरखिजलराशिफलदल
फूलसबहिनखायहू॥ इतरहतअसुरससंकजबतेलंकगोकपि
जारिकै। सुतसचिवरावणबोलिबूझेउमंत्रकहौबिचारिकै॥
सुनि घटश्रुति बोला अहँकारी। काहे त्रिभुवन सरिसहमारी॥

जो सन्मुख सक नयन मिलाई। असकहिचलाविवस औंघाई॥
तब सक्रोध बोला अति काया। आयसु मोहिं देहु करिदाया॥
अबहींक्षिति नरहरि बिन करहूँ। और मंत्र का बहुत उचरहूँ॥
काम रूप बोला घन नादा। मम प्रभावजग जानत जादा॥
बिधिहरिहरबश किहेउँजुझारू। नरबनरण हितकौनबिचारू॥
कुम्भ निकुम्भ दम्भछलकारी। बोले बिभुता बिदित हमारी॥
कृपा दृष्टि सब देव निहारैं। देखत उच्चासन बैठारैं॥
भोजनहित कहियत तिनपाहीं। हम काहू कर छुवा न खाहीं॥
डाटत बोलि सकै नहिं एक। कपि मानुष हम गनै न नेकू॥
मत्सर रूप अकंपन कहई। हमैं जियतअसकोसियलहई॥
कहा उपाइ करौ अब सोई। नर बानर जेहि बचै न कोई॥
अपर कथा कहिये का क्षोभी। तब भा भनत महोदर लोभी॥
जो आवै अनगन्त करोरी। डारौं खाइ भरै महि झोरी॥
तौ कपिसहस लाख केहि लेखे। जैहैं घूमि न अब हम देखे॥
बोला तब दुर्मुख पाखण्डी। छलकरिहरि आनौदोउदण्डी॥
जो चाह्यों सो कीन्ह्यों पाछे। बद मकराक्ष कपट बपु काछे॥
बिपुल बिप्र जामैं बरि आनी। भूसुर बनिकोइ सकै नआनी॥
जनिबौ करत सकत करिकाहा। सोकिमि जातजासु नरनाहा॥
सुनि प्रहस्त बोला डरपाई। मम मत सीतहि देहु पठाई॥
नारिपाइ जो फिरि चढ़ि आवै। करहु युद्ध जेहि जान न पावै॥
यामें नहिं अधरम की बाता। बोला तब हिंसक नर घाता॥
सकल बस्तु भोगन हित आवै। धर्मा धर्म कहां कहवावै॥
करत बतकही कादर केरी। यहनहिं मारिहिसबनखदेरी॥
नीति कहत हम कादर ठहरे। जानाअब तुम सोइहौ छहरे॥

दो० कह्यो सुमति मन्दोदरी सुनहु कन्त मम बात।
करजामयरिपु अग्नि नृपलघुकरि गनेनजात॥
भुवनेश्वर सरबज्ञ जो गनत छोट तुम ताहि।

मीचु बेसाहत सुकरयहभली बातनहिं आहि ॥
सुत्रनसचिवतवमन्द मतिकहतबचनमुखपेखि।
नगरजरत तबसबनकर लीन पराक्रम देखि ॥
तेहिते श्री मत जानुकिहि पठइ देउ सनमानि।
नाहित दूषण बालिकी होई गतिसतिजानि ॥
नारि बचनसुनि मोहबश बोलामोहिंसमान।
सबल कुटुम्बी नृप धनी परतापी को आन ॥
भागत सुरजेहि नाम सुनिसकीको ताते जूझि।
नान्यो तेहि हैं काल बश परै न ताते सूझि ॥
ब्रूहि बिभीषण नाइशिरतेहिअनुशासनपाइ।
जो चाहौ निज भद्र तौ सीतहि देउ पठाइ ॥
तातराम नहिंनर अधिप अखिललोककरतार।
गोद्विज सुरमहि संतहितलीनमनुज अवतार ॥
जपतप तीरथ ध्यानकरि जिनके दरशनदूरि।
सोप्रभु आयो अछतअधि धन्य भागतवभूरि ॥
मेघनाद भट आदि जे बैठे मारत गाल।
तेकिसकब धरि धीर जब छुटिहैं बान कराल ॥
तेहिते सकल विकार तजि नाउ रामपदशीश।
मिटै सकल अपराध जेहि बने रहैं भुज बीश ॥
सो० सुनि तिरछे करि अक्ष बोला शठ जीवत यहां।
करत शत्रु कर पक्ष जा उतकहि मार्‌यो चरण ॥
करि बिचार शिर नाइ आयो घर निज मातुढिग।
कही कथा सब गाइ सुनि बोली सनमानि सों ॥
कहा भयो जो लात मारी पितु सम भ्रात बड़।
इहाँ रहै कुशलात वहाँ गये नहिं नेकु भल ॥
समुझिबिमाहितबयन चलेउबन्दि सचिवनसहित।
आये धन पति अयन लखिकीन्ह्यों सनमान तिन ॥

कह्यो सकल निज हेतु सुनिकुबेर शोचन लगे।
बोले तब नृप केतु तात किह्यो अति नीक तुम॥
दो० औषधि हित उपदेश बहु करत न लागति जाहि।
रुज असाधि शठ जानिकै तजत सुजन जनताहि॥
पर अवशरण रामकी जाहू। शपदि मंत्र बूझौ मति काहू॥
सुन सुत राम बिमुख जे प्रानी। भूले भव बन गजचढ़ि मानी॥
आगे वृद्ध राक्षसी देख्यो। पाछे सिंह भयानक पेख्यो॥
तबतो गज वह गयो बिलाई। आप कूप गृह गिर्‌यो डेराई॥
दो० तेहि तर ताक्यो काल सम अजगर छाँड़ी नाहिं।
तब गहि दुर्बा आर बल लटकि रहा तेहि माहिं॥
तहँ सुंदरि मधु लागि निहारी। प्रदुदितङ्क तेहि गहेसि अनारी॥
सहित कुटुम्ब उड़ी सब मांखीं। लपटिगईं पगकटिमुखआँखीं॥
पर यक बूंद किहिसि मधुपाना। सो सुख मूढ़ परमसुखमाना॥
श्याम श्वेत विधि मूषक खबा। लागे निशिदिन काटन दूबा॥
चुकिगे जबै गिरा हहराई। तुरतै अजगर लीन चबाई॥
यह गति सब जीवनकी जानो। बिनहरिशरणानकतहुँठिकानो॥
दो० राम शरण बिन कालते बचा रहै भजि आन।
सो शठ अहि भय गरुड़ तजि दादुर पक्षलुकान॥
राम बिमुख जग जीवजे तपत पाप त्रै माहिं।
तेहिदुख नाशन हितयतन बद श्रुति सोइमिआहिं॥
जिमि शिशुहित पितुरोगगद नीर तरनहितनाव।
पालत पावत चढ़त पर चिर कर होत अभाव॥
याते साँचे सुचि सुखद शरण पाल रघुबीर।
केवल ताके शरण बिन मिटै न भव भयभीर॥
सुनिसुखपाइ शिवहिं शिर नावा। मंत्रिनसहितसमोदसिधावा॥
अन्तःकरण सहित जिमि जीवा। हरिहितकैदुखसमुझिअतीवा॥
करत मनोरथ मग इमि जाहीं। शंभुमिलनगुणिअतिहरषाहीं॥

अहो भाग्य मम उदय अपारा। कौनकीन अस शुभआचारा॥
साधु बिप्रकर का अस दीन्हा। कौन अपूरबतप हमकीन्हा॥
जो सर्बोपर प्रभु सुख अयना। देखिहौंजाइआजुभरिनयना॥
निज जनहित श्री बपु प्रगटाये। धरा भार भंजन महि आये॥
शोभा सिंधु दरश जब पैहौं। तबका परमानन्द न लैहौं॥
जेहि पद पद्म भजैं सब संता। बिधिहरिहरसनकादिअनंता॥
जिनके चिन्ह धरा दुख हारी। रजकनपरशितरीऋषिनारी॥
जासु बारि भव निज शिर धारा। जेहिं तारे नग अधमअपारा॥
जिन पद पीठि भरत मन रंजा। धरिहौंमैं शिरु तिनपदकंजा॥
जेहिं कर कमल असुर बहुमारे। भर्म साधु श्रुति रक्षण हारे॥
जेहिँ कर गहि भंज्यो भव चापा। परशत मिटत कालपरतापा॥
करत प्रणाम नाथ मोहिं जानी। मम मस्तकधरिहैंसोइपानी॥
पूंछि हैं जब तब कहिहौं नामा। नाथ होब मैं तोर गुलामा॥
बिन बित निज करिहौं सेवकाई। छाँड़ि कपट हठ मानबड़ाई॥
पहिरब पट उतरे जो पैहौं। बची बचाई जूठनि खैहौं॥
सुनि लेहैं अपनाइ कृपाला। तब होयहौंसबभांतिनिहाला॥
निशिदिन देखिहौंप्रभुकी झांकी। तबका रही करन को बाकी॥
मरतो जाइ कहां बिललाई। यहगति शम्भु कृपाहम पाई॥
निज दिशि देखिशंकमन धारै। हरषैजब प्रभु रीति बिचारै॥

दो॰ यहि विधि करत मनोरथ आये जहँ हरि सैन।
करि बिचार नभ दूरिते बोले गद गद बैन॥
जय सर्बज्ञ कृतज्ञ प्रभु कृपासिन्धु गुण गाथ।
शरण भये पालेविपुलअब मोहिं पालहुनाथ॥
नाम बिभीषण असुरकुल रावण रिपुकर भ्रात।
श्रवण सुयशसुनिशरण तवआयोंलै निजगात॥

सुनिप्रभुबोलिसचिवसबलीन्हा। बूझ्योयहिकाचाहिय कीन्हा॥
कह कपिपति रिपु सोदर येहू। भेद लेन आवा गहि लेहू॥

कह अंगद आखिर बध करना । अबहीं क्यों न हततहैशरना ॥
जामवन्त कह रिपुकर भ्राता । अब हमते यहिते कस नाता ॥
सीय हरीतब क्यों नहिं आवा । देहु जान मुख प्रणत सुनावा ॥
कह नल दूत पठै मत लीजै । ऐसेहि कैसे बिदा करीजै ॥
उत्तम होइ तौ राखहु पासा । नाहित हत तब नील प्रकासा ॥
साँचेहु यह शरणागत आवा । राखिय देव मोहिं असभावा ॥
सभय तजे अघलाग अनन्ता । होइ जो मातपिता कुलहन्ता ॥
कह हनुमन्त सुनहु रघुराया । राक्षसहै न शरण जो आया ॥
बलि प्रहलाद सुकण्ठ यथाधू । जानहु तुम तिनसमयहसाधू ॥
छली न प्रभु तव सम्मुख होई । फिरे सभीत हारते कोई ॥
बहुरि बात कछु कहन न पाई । बीच बिभीषण गिरा सुनाई ॥

दो० अब तब आवत दीनके हरत रह्यो दुख भार ।
अस अभागबड़मोरजेहिसुरतरुकरत बिचार ॥
दीनबन्धु सुनि दीनके बचन उठे अकुलाय ।
कह्यो लषण हनुमानते अबहीं लावहु जाय ॥

सो० लाये करि सनमान पूसबदी भू ता दिवस ।
प्रभु छविदेखिजुड़ानकीन्हिदण्डवतत्राहिकहि ॥

प्रभु उठाइ भेंटे उर लाई । बैठे निज समीप बैठाई ॥
पूंछी कुशल कहौ लंकेशा । दुष्ट संगसम कछु न कलेशा ॥
बोले नाइ बिभीषण भाला । सुमिरण जेतव करत कृपाला ॥
तिन्हैं कुशल मंगल कल्याना । देत विरञ्चि बिनयकरि नाना ॥
जो मूरति मुनिजन मन मारी । करहिंध्याननहिंसकें निहारी ॥
तेहि भरि अंक मिल्योंमैं आजू । यहितेअधिक कवनसुख साजू ॥
कह प्रभु सत्य कहौं मैं तोहीं । दाससरिसप्रिय अपरन मोहीं ॥
जिनके हौं हित अनत न नेहा । तिन हित आय धरौं मैं देहा ॥
असकहिजलसागरकरलीन्हा । तिलकबिभीषणकेशिरकीन्हा ॥
सुनिसुभावलखिकपिसबहरषे । जयजय कहिप्रसूनसुर बरषे ॥

दो० जोपुर कलहकलेशकरि रावण शिवपहँ लीन।
सोप्रभुकुदिनविभीषणहिंतृणआश्रमसमदीन॥
ऐसेप्रभुहिं बिसारि जे करत आनकी आस।
तेशठ धनहित धनिहिंतजिभजतदासकोदास॥
चन्द्रोदय परबोध मत मूलसार श्रक गाथ।
बरन्यो सुन्दरकाण्डशुभसुखप्रदजन रघुनाथ॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागर
श्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतसुन्दरकाण्ड
सम्पूर्णनामत्रयोविंशोऽध्यायः॥ २३॥

—*—

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ बिश्रामसागर ॥

लङ्काकाण्डप्रारम्भः ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु गणप गिरा सुखदानि ।
बरणौं कोकिल कहनि कछु अग्नि बेश मतआनि ॥
प्रात पंचिमी दिवस प्रभु पूंछा सचिव बोलाइ ।
केहि बिधिउबरिय उदधिसुनि बोले निशिचरराइ ॥
नाथ आपु कर एक शर सोखै सागर कोटि ।
तदपि नीति असि सिंधु ते मांगहु सागर बोटि ॥
कह्यो तात भल होइ हित जो कर दैव सहाइ ।
लषण ब्रूहि शर मारिये ईशन सोकी आइ ॥
बोले प्रभु नहिं रुचत म्वहिं साधु अवज्ञा तात ।
स्हिते यह करि लीजिये पुनि वह ठानव बात ॥
अस कहि दर्भडासि दधि तीरा । बैठ करि प्रणाम रघुबीरा ॥
बिनवततीनिदिवस चलिगयऊ । तबप्रभुकोपि शरासनलयऊ ॥
अग्नि बाण संधान्यो नवहीं । लाग्योजरनबारिनिधितबहीं ॥
बिप्र रूप धरि हरि ढिग आवा । रतन भेंट दै पद शिर नावा ॥
नाथ सृष्टि सब तुम्हरी अहई । जेहिजसकीन्ह्योंसोतसरहई॥
अबजस आयसु होइ तुम्हारा । सोई करौं मैं परम उदारा ॥
कहौ सुखाय जाउँ यक बारा । मरि जैहैं जलजीव अपारा ॥
कृपासिन्धु बोले हँसि ताता । कपिदल तरै करौ सोइ बाता ॥

त्यहितब कहा नील नलकीशा। तिनपरसे जलतरत गिरीशा॥
आयसु देहु रचैं ते सेतू। महूं सहाय करब तव हेतू॥
असकहि नौमी दिनसो गयऊ। परारम्भ दशमी ते भयऊ॥
चहुँदिशि शैल देहिं कपि आनी। सो नलनील लेहिँ निजपानी॥
रचहिं सेतु अति सुदृढ़ बनाई। शिव स्वरूप थाप्यो रघुराई॥
कह्यो महातम चिरजग हेतू। तेरशि दिवस सिद्धिभा सेतू॥
बिस्तीरण दश योजन केरा। दीरघ कोश चारि शत हेरा॥
प्रभु नलनीलहि बहुत सराहा। पूजी भुजा सहित उतसाहा॥
प्रात चतुर्दशि लाग उतारा। प्रभुछबि देखत जीव अपारा॥
राजत हनोमान के कांधे। लक्ष्मण बालि तनय के रांधे॥

दो० बिपुलचले जल चरणिकपि बिपुल सेतु असमान।
जैसे भवनिधि तरण हित कर्म उपासन ज्ञान॥

इमिउतरत निशिदिन इकधारा। द्वितियादिवस भये सबपारा॥
पाइ रजाय निकट फल खाये। तृतियादिन सुवेलगिरिआये॥
कोष्ठा टालकगी पुर शृङ्गा। दशमी तक उतरे पल बङ्गा॥
हरिदिन रावण दूत पठाये। दल देखन शुक सारण आये॥
चरचि चपल गहि मारन लागे। राम शपथ दीन्हा तबत्यागे॥
आये तब दशमुख के तीरा। बोलालखिकहुकपिदलभीरा॥
काल बिबश आये यहि पारा। होइ हैं एक दिवसकर चारा॥
पुनि कहुं रहै बिभीषण भीरू। जानि बूझिभा यवकर कीरू॥
बहुरि भाखु तपसिनकी बाता। जिन्हैं निकारिदीनपितुमाता॥
सुनि बोले शुकसारण ऐसे। सुनो कृपाकरि बूझेउ जैसे॥

कुं० सहसलाखकर कोटियक सहसकोटिकरशंकु।
सहस शंकुकर अर्बुद सहस दबुद विर्दकु॥
सहस दबुद विर्दकु सहसकर पद्म प्रमाना।
सो अष्टादश सुने संग यूथप बलवाना॥
बलवानाकपिजालसबकालसरिसहमलखिगहस।

कहत मिलावन लंकतव पंकमाहिं ऐसेसहस ॥
दो० आयसुमिलत न पिलतपुर भयेबिभीषणराज।
तिनते सम्मत बूझिकै करत आपहू काज ॥
सुनि बोला हँसि बादि क्यों करै बड़ाईभूरि।
जासु बिभीषणसे सचिवपरी कि तिनते पूरि ॥
तब शुककह कछु दूरि न भारी। चढ़ि अट्टालक लेहु निहारी ॥
सहित सुमुखभट चर तेहिबारा। चढ़िदेखी कपिकटक अपारा ॥
शुकसारण कहि नाम बताये। अंगदादि जे भट सँग आये ॥
दो० वै अंगद हनुमान वै वै सुकण्ठ नलनील।
वै सुखेन वै रिच्छपति वै दधिमुखसम शील ॥
जटा मुकुट मुनिपट धरे धनुर्बाण तूणीर।
अस्थित हरि मृगचर्मपर सेवत पद बहुबीर ॥
गौर श्याम छबिधाम वै सहित लक्षमणराम।
बैठिबिभीषणपुरहलखिकीन्हिसि मनपरनाम ॥
ओरौ कपिदल दरशिकै बोलाबिहँसि निशंख।
देख्योकौतुककालकरदिहिसि पिपिलकनपंख ॥
इत प्रभु छत्र समेत तकि मार्‌यो शर यकसंग।
मुकुट प्रसून गिराइ पुनि प्रविशा आइनिषंग ॥
देखि अचम्भि रहे सब लोगा। कोइकहै प्रथमभयोअपयोगा ॥
बोला यामें अशकुन काहा। शिरहु खसे भटकरैं उमाहा ॥
तेहिते शयन करहु अब जाई। चलिभे सकल रजायसु पाई ॥
तब मयसुता कह्यो भयभीता। हेपति काल भयो बिपरीता ॥
जे तव सन्मुख सकैं न बोली। ते अब तुमते करत ठठोली ॥
जेहिपुर सकैं बिष्णुनहिं आई। ताहि तुच्छकपि गयो दुराई ॥
जेहि जगनांघि सकैनहिं कोई। तामें सेतु कि गिरिकर होई ॥
जासु नामसुनि सुरभजि जावैं। तापरकीश अशनचढ़ि आवैं ॥
जो सोइर निज करत बिलासा। सोकि जाइफिरि शत्रुनपासा ॥

तुमहूं असहठ कबहुं न ठानी। तेहिते परत बामबिधि जानी॥
अबते परिहरि हठ शठताई। करहु काम किन होइभलाई॥
जेहिं प्रभु मधुकैटभ संहारा। हिरणाकुश हिरणाक्षहिमारा॥
जेहि खरादि बहुभट बधकीन्हें। बालिप्राण इकबाणहिंलीन्हें॥
सोइ प्रभु सेतु समुद्रमें बांधा। बीसहुनयन होहिजनि आंधा॥
मोहिं समेत जगदम्बहि लैकै। पायन परहु रामकहँ दैकै॥
प्रणतपाल प्रभु कृपा अगाधू। तुरतहि क्षमिहैं तव अपराधू॥
बोला सत्य बचन तव प्यारी। पर इकबात न जानितिहारी॥

कुं० शिव निर्माल्य शीशये रघुपति लायक नाहिं।
तेहिते इन्हैं निवारिहौं समर रसाके माहिं॥
समर रसाके माहिं प्रथम बल तिन्हैं देखैहौं।
प्रभु आये जेहि हेत तस्य मन साध मिटैहौं॥
साध मिटैहौं तस्यमैं आपन छांड़ि शरीर शव।
मिलिहौंनिजनाथैवसोंयशगैहैं सनकादि शिव॥

दो० चौंसठि युग निजबाहँबल किह्यों अकंटकराज।
तिन्हैंअक्षत अरिपदपरौं धृग कादरकर काज॥

मम बश सकल जीव जगजेता। ते यहिभांति डरतकेहि हेता॥
जासु बिनाश निकट जब आवै। तेहि बिपरीतक्रियाअतिभावै॥
असकहि सो सोई चुप साधी। जागत निशिबीतीसोउआधी॥
प्रात काल उठि सभा सिधावा। आपनबलसब भटनसुनावा॥
सुनि शठ सचिव सेनपति हरषे। लगे कहन कादर जनकरषे॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघु
नाथदासरामसनेहीकृतश्रीरामसुबेलआगमनो
नामचतुर्विंशोऽध्यायः॥ २४॥

दो० सुमिरिरामसियसंतगुरुगणपगिरासुखदानि।
बरणौंमानसमतकछुकोकिलकाव्यबखानि॥

दशमुखदशहू दिशिदरशि दीन्हेदलपतिपेरि।
आपु जानकी पासकै आयो त्यहि थल फेरि॥

इहां माघ परिवादिन प्राता। अंगद ते बोले सुर त्राता॥
बालि तनय बलबुद्धि बिशाला। लंकहि जाहु जहां दशभाला॥
हित उपदेश दिह्यो तुम झूमी। नहिं मानै तो आयो घूमी॥
भले नाथ कहि माथ नवाई। चले राखि उर प्रभु प्रभुताई॥
पुर प्रबिशत रखवारन रोंका। सुनि युवराजसवन कहँठोंका॥
रावणसुत बिषमुख तेहि दीशा। बोला बढ़ि तें काकर कीशा॥
राम केर को जाकी भामा। हरिलायो पितु अपने धामा॥
सोई राम जिनके लघु भ्राता। तव फूफू का रूप निपाता॥
इतना सुनि तेहि पावँ उछारा। अंगद पकरि भूमि दै मारा॥
देखि असुर सटके तेहि काला। एक एक ते कहैं न हाला॥
पुरजन चहि चटपट दैलेहीं। बूझे बिन बताइ मग देहीं॥
मनमें कहैं दशानन नीचू। सियका आनी सबकी मीचू॥
आवा प्रथम नगर जेहि जारा। यहधौं काह करै करतारा॥
जहँअवनिशि दिन मची लराई। तेहिपुरबसिपुनिकौनिभलाई॥
आवत कपि रावण सुनि पावा। दूत पठै निज सभा बोलावा॥
दशमुख बैठि दीख कपि आई। सहितहंस जनुगज गिरिराई॥
सुरमुनि असुर नाग गन्धर्बा। चितवततेहिभृकुटीदिशिसर्बा॥
हरि लखि उठेसकल इकबारा। बोलातब रिसकरि प्रतिहारा॥

छप्पय॥ पढ़ैनक्योंबिधिबिनयशंभुकतदरशनदेवै। जीवकरैकत शोरधर्मक्योंचरणनसेवै॥ रहैनदूरिदिनेशदेवऋषिस्वरलैगावै। पक्षनसहितकुबेरबेरकरिक्योंनितआवै॥ चंदनबोलैमन्दमतिमा तलिसभानयहअहै। बैठिजाहुगेबैठिसबतबरावणकपितेकहै॥ रेबानरतूकौनदूतहमरघुपतिकेरे। इतआयोकेहिहेतअहंरक्षाहि तनेरे॥ कौनबिपतिशठमोहिंशत्रुशिरपरप्रभुआये। ईशकोपि रघुनाथजासुतुमतियहरिलाये॥ कौनकहतहनुमानकोजेहितेरो

लंकादही। करुणासिंधुसर्बज्ञसोसुनिव्याकुलह्वैयोंकही ॥ जा
यजायकोइजायधायरावणैसुनावै । जेहिसियदेहिबताइरंककर
जिउबचिजावै ॥ सुनिबोलेसबसुभटनाथजोहमचलिजैहैं । उ
जुरकरीकछुशत्रुताहिबिनबधेनऐहैं ॥ तबप्रभुनहिंपठयोतिन्हैंमो
हिं कह्योलखिसाधुसुनि । मोरेहुमनआईदया निजपितुकरतोहिं
मित्रगुनि ॥ तातेआयोंतातबातअबमानहुमेरी । जातेतबभल
होइबचैसबरैअतितेरी ॥ श्रीमदमहिपसुभावजानअथवाबिनजा
नेहु । हरिआन्योजगदम्बआदिभलयहैनठानेहु ॥ सोजसभा
तसभाअजहुंसीतैलैनिजनारियुत । जाहुशरणश्रीरामकेमिटिहैंस
बअपराधउत ॥ रेबानररहुचुप्पबादिबकबादनठानै । बिश्वबिदि
ततेंमोरअभयपरभावनजानै ॥ सुरनरमुनिपशुनागजीतिसबनि
जबशकीन्ह्यों । शिवैदिह्योशिरस्वकरगिरिहिकदुकइवलीन्ह्यों ॥
असमेंपुनिभ्रातासुभटजेहिदेखतदुनियादुरै । मेघनादअससुवन
जोगहिआन्योसुरपतिधुरै ॥ कहअंगदसोसत्यअहैऐसेबलतोरा ।
परनहिंराघवसाथसिंहहितजिमिगजजोरा ॥ जेजेभप्रतिकूलप
रीनहिंकिसीकिपूरी । शठताड़कासुबाहुमिलेखरदूषणधूरी ॥
बिश्वसुभटबलशंभुधनुहरिबैठ्योतेहिधरिदलो । ताकोमिलितजि
मानमदजोचाहैआपनभलो ॥ रेमर्कटममसरिसअहैकोसुभटअना
री । सोकहुकोतवपिताबालिकपिनाथबिचारी ॥ रहारहाकपिरहा
भलेकहुहैसानीके । कछुदिनमेंतहँजाइकुशलपूछ्योनिजप्रीके ॥
रामबिमुखकरजौनफलहोतसोसबनीकेपढ़ी ।जानिबूझिबातैंगढ़त
रढ़तमौततवशिरचढ़ी ॥

दो० मर्म बचन युवराज के सुनि रावण रिस रोंकि ।
बोलामुख मुरभेदहित प्रथमसुकर महिठोंकि ॥

कुप्पय॥हेअंगदबलवंतबालिसुततोहींआही।तवसमजाकेपुत्र
तासुऐसीगतिचाही ॥ जन्मतक्योंनहिमरेउबालिकरनामधरायो।
जेहिडारेउपितुमारितासुशठदूतकहायो ॥ अबतेममदललेसकल

कपितुवकरुनिजराजचलि। हनिरनभलसुसुशत्रुजेआठआठदिशि देइबलि ॥ कहअंगदरेनीचमीचबशमतिबढ़िबोलै। ममननठा नतभेदपवनतेगिरिकहुंडोलै ॥ जासुभृत्यब्रह्मादितासुहमहवैक रिदासा। बोरिदीनकुलकहसिअहसितनिशिचरखासा ॥ तेहि कछुकरतबिचारनहिंसाफलपैहैसपदिबरु। जावतआवतअवधिन हिंतावतभावतसोइकरु ॥ रेरेकपिजगमाहिंमोहिकोहैफलदाई। लोकपालयमकालनमतमोकोनितआई ॥ चहौंजाहिनृपकरोंचहों त्यहिरंकबनावों। उजुरनकरताकोइबहुतकातोहिंसुनावों ॥ कह अंगदतैंअजितअससोगवणऔरैबियो। जठरसहसभुजबालिब लिअवधनृपनजेहिदुखदियो ॥सुनिअंगदकेबचनमूढ़लज्जितहवैबो ला। बालपनेकीबातगाततवनिरबलहोला ॥ कौशलनृपसबजी तिप्रथमअपनेबशकीन्ह्यो। जबतेभयेदिलीपछाँड़ितबतेकरदीन्ह्यो। ताहितजेकछुघटिगयोभयोनमनमेंएकतिल। बिदितबरेहुशिवशि वहिशिवगिरिकरिधारेउयथाशिल। कहअंगदकाभयोशीशजोनि जकरकाटे। बाजीगरबहुकरैंबैठिकौड़ीहितहाटे ॥ कहाभयोगिरि लयोभालुकपिधारेडोलें। तहाँनपायोसुयशआजुरोउनासबबोलें ॥ कहाभयोंसबजगजयोभयोनजोरघुनाथजन। तोसबजानोस्वप्नस मअवनिरवनिसुतधामधन ॥ कहरावणहँसिरामदासतुमहींजोभ यऊ। दिहिनिकालमुखआइलाभयामेंकालयऊ ॥ लीनलोकप रलोकशोकसबतनकेनाशे। मिलिहैंतौतवबियतजियतजबजाबइहां से ॥ तहँऊंतवसुग्रीवरिपुतासुबिभीषणकेरमें। अपरकीशखेहैंअ सुरऐहैंतपसीघेरमें ॥ कहअंगदरेचोरबालिजिनयकशरमारा। भृ गुपतिकरबलदर्पसर्पलीलैसंहारा ॥ खरदूषणत्रिशिरादिदनुजचढ़ि बचेनभागे। तोरिचापसियबरीसकलभूपनकेआगे ॥ यस्यअनुग इकलंकदहिचतुरअंशतवभटदले। तिनसोंतैंलरिहैंकहागालमारि लेचहुभले ॥ कहरावणजोअहैसबलअससवामितुम्हारा। तोपठवत केहिहेतबसीठीबारैबारा ॥ करहिआइकलिकर्मधर्मजोक्षत्रिनकोहै।

रिपुतेठानतप्रीतिलाजनहिंलागतजोहैं ॥ मनकदराइतौजायफिरि भागेकोनहिंहमहनैं। चढ़िआवैजोमौतबशसकलकौनपनकीबनै॥

दो० शशि समुद्र बांधे कहा अभयपरे भुज बीस।
इन्हैंन नांघनहार कोउ सुनि बोल्यो पुनिकीश॥

कुं० कारण ज्ञान अज्ञान का बल निर्बल करअन्त।
कारजते खुलिजात जिमि नारि कपट सुतपंथ॥
नारि कपट सुतपंथ तुम्हैं हम तबहीं जान्यो।
जब धरितापसरूप बिपिनि सियतेछलठान्यो॥
ठान्यो लेखा गृहप गयो घनु रेखा पारण।
आयों मैं न बसीठ राम पठयो यहि कारण॥

छप्पय॥ बोलेकपिसबआजुचलौप्रभुशत्रुहिमारी। कहहरि तेहिबधकिहेकौनहोईयशभारी॥ जिमिमृगपतिहतिभेषशेषस र्वपशिरलीन्हें। तिमिलघुतालघुदानज्ञानमूरुखकहँदीन्हें॥ य-द्यपियहजानततदपिक्षत्रिजातिकररोषअति। तातेअबहूंदीनह्वै सीतैलैमिलुमन्दमति॥ कहरावणनृपसुवनसंगसबकीशलवारा। प्रथमैंआवाएकझूंठहीजायपुकारा॥ हमहींदीनछड़ाइभीरमेंमर्‌यो अक्षसुत। लागिगईगृहआगिकहिसिमैंकीनकामउत॥ तैसेतोहूं नरनको करतबड़ाईकूरगति। मोकोजानतछोटकरिविश्वबिदित जोशूरसति॥ कहअंगदमतिमन्दद्वन्दरतबोलुबिचारी। कल्प बिटप समबिटपसकलसीतासमनारी॥ चिन्तामणिपाषाणसरित सरस्वानसमाना। अभयदानबिज्ञानसरिसलौकिककरज्ञाना॥ पगलीबातें अकनितबअसमनहोतहमारहरि। तोहिंसहितसब लंकलैबोरौंउदधिमँझारपरि॥

कुं० शोचुनशालत सायु फिरि राज करी केहि भौन।
मोहिंजियतकिमि होइनृप तोहिंजियतकहैकौन॥
तोहिं जियतकहै कौन काम बश अयशी मूढ़ा।
जीवत मृतक समानसरुज हरि बिमुखतिबूढ़ा॥

तव शोणित के तृषित पुनिरघुपति के नाराच।
तेहितेराखत रोंकि रिस नाहित बनत्यो सांच॥

छप्पय॥ कहरावणजोहोतहिरसयहिबिधिबलतेरे।तौकतक रत्यौआइचेराईपितुअरिकेरे॥ करतमातुसँग भोगशूरसुतसो तप जानै। मरतनशठबिषखाइबातहमतेबढ़िठानै॥ नरबनरनकीकौन गतितीनिलोकमिलिजोचढ़ैं। करौंसमरसनमुखतभूकभूनपगपी छेपरैं॥ तबअंगदकरिकोपपटकिदोउभुजमहिदीन्हें। गिराअधर मुखमूढ़मुकुटकरमेंश्रुतिलीन्हें॥ प्रेरेप्रभुकेपासधरेपवनजगहि आगे। भूरिभानुसमतेजतरकिकपिदेखनलागे॥ रामबिभीषण केशिरशिभूषितकियेसवांरितित। देखिदेवबोलेबिमलजयजान किपतिप्रणतहित॥ तबतमचरपतितमकिकह्योधरिधरिहरिखा हू। मिलिमारौदोउबंधुबंककपिकलमतजाहू॥ अबतकनीतिबि चारिबचनसुनिरोषनकीन्हा। आखिरचढ्याकपारअधिकअधमैंमु खदीन्हा॥ जिनबलबादतबलकिबलतिनकेअहैनअलपतन। पर तियपरधनपरअहितकरतडरतजोछामछल॥

कुं० तब अंगद कह चरणमम जो कोइ देवै टारि।
फिरैंराम निजधाममैं जाहुं जानकिहि हारि॥
जाहुंजानकी हारि सुनत घननादिक योधा।
लगे उठावन भूरि भूरि बल करिकरि क्रोधा॥
डगमगातमहिसुतलनभउछरसिंधुसुरबिकलसब।
बालिबली के सुवनकरपगनहिं हाल्योनेकुतब॥

छप्पय॥ लखिरावणहियहारि आपुउठिकपिहिप्रचार्यो। चरण छुवततेहिदेखिबचनयुवराजउचार्यो॥ ममपद परेनठीक गहैकिनहरिपदजाई। सुनिसिंहासनसपदिबैठमनमाहिंलजाई॥ कहेसिकौनपनतेइसेक्योंनहिंडारतखाइखर। हँसिकपिकुनपग हाइनिजकहिकैचल्योउड़ाइअर॥

सो० दीरघ एक प्रसाद परपद परसत पतेहु सोउ।

बहुरि चल्यो करिनाद प्रभुपद नायो आइशिर ॥

दो० लखि बोलेरघुनाथ हँसि तातकिहेउ भलकाम।
कहअंगद ममभान नहिं तव प्रभाव सबराम ॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसत्रमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघु
नाथदासरामसनेहीकृतअंगदरावणसम्बादव
र्णनोनामपंचबिंशोध्यायः ॥ २५ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपगिरासुखदानि।
बरणोंमानसमतकछुक कोकिलकहनिबखानि ॥
इहांदशाननअभयनिशि निवसित उरधाखार।
लागे निरतन निर्तकी कौतुक करें अपार ॥
रामलषण कपिभालुसब हँसेसमुझिअभिमान।
सहिनसके सुग्रीव बिन बूझे कीन पयान ॥
दशयोजन कर बीच तहँ पहुंचे एक कुलांच।
सिंहासनते अवनि पर पटक्यो मारि तमाच ॥
गिरान बाचै सँभरिकै भिरा क्रोध करि सोउ।
कर पद मुष्टिक पेंचशिर निजनिज मारे दोउ ॥
यहिबिधि बाजे यामभरि परकोउसकानहारि।
लाग्यो माया करनतब कपिपति चलेबिचारि ॥

इहां न प्रभु सुग्रीवै देखा। भये शोच बश सोधि बिशेषा ॥
इतने में सो पहुंचो आई। बूझे ते सब बात जनाई ॥
कह प्रभुअस अधिपैनहिं चाहा। सोकछु होतरहत गहि काहीं ॥
हमसिय लै काकरतेन ताता। देतेन त्यागि तुरत निजगाता ॥
सुनिनाशत सब कुटुम्ब हमारा। नाथ कृपा को मारन हारा ॥
असकहि पाय रजायसु सोये। उठि प्रभातपुनि हरिपदजोये ॥
दुनिया दिनकरि कटकबिचारा। लंका घेरी चारिउ द्वारा ॥
पूरब दिशि नल नील बिराजा। दक्षिणसैन सहित युवराजा ॥

पश्चिम पवन पुत्र बल धामा। उत्तर रहे अनुज युत रामा॥
मध्य सुकंठ मोह सँग योधा। चहुंदिशिलेत बिभीषणसोधा॥
यहिबिधिपुर निरोधसुनिरावण। चहुंदिशिनिजभटलागपठावन॥
प्राची दिशा प्रहस्त पठावा। याम्या द्वार महोदर आवा॥
मेघनाद दिशि गयो प्रतीचा। रहा दशानन द्वार उदीचा॥
बिरूपाक्ष तिष्ठा मधि देशा। नारान्तक चहुं ओर प्रवेशा॥
यहिबिधि राखिसबन ते बोला। गहिगहिखाउभालुकपिलोला॥

दो० भलेनाथ कहि हाथगहि परशु भिंडअशिसांग।
तोमर मुद्गर शूल सब धाये दैदै बांग॥
बाजे बाजन युद्धके सुनि भट गनै न बोध।
आवत तमचर चाहिकै धाये कपि करि क्रोध॥

गीतिकाछन्द॥ करिक्रोधधायेभालुकपिगहिबिटपपरबतअ नगने। दोउओरतेलागेचलावनअस्त्रशस्त्रादिकघने॥ कोउगि रतकोउउठिभिरतकोउपुरफिरतकोउललकारई। कोउदुरतको उभटमुरतनहिंकोउहटतकोउचढ़िमारई॥ यकसाथसबरघुनाथ बलपलबंगगढ़परचढ़िगये। बिकलाइअसुरनिकायमर्देअपरल खिभागतभये॥ पुरपरेउहाहाकार बिपुलकुमारबनितारोव हीं। दुरिदेहिंगारीदशमुखैअघजासुहमदुखजोवहीं॥ दिशि शीशनिजदलबिचललखिसबतेकहिसिगोहराइहै। घरआइहैंजो भागिसोममहाथमाराजाइहै॥ सुनिसुभटमानिगलानिघूमेजानि बघदोउओरते। करियुद्धकीन्हेंत्रसितबानरभगिचलेगढ़घोरते॥ एकएकदितिसुतदाबिकूदैताहिनीचेराखिकै। बिनप्राणकरिहरि बीरबोलेबचेआरतिभाषिकै॥ हनुमानपश्चिमओरसुनिघननाद केपगमारेहू। रथसूतहतित्यहिबिकलकरिपुनिलंकआइप्रचारेहू॥ इतकूदिआयोबालिबचमिलिउभयरावणगृहगये। लागेढहावनभ वनजहँतहँरामगुणगावतभये॥ कपिखेलकरिडरवाइरामकहाइ तिन्हैंनिवारेहू। फांदेबहुरिरिपुसैनमहँअगणितनिशाचरमारेहू॥

खरभरिपरीसबग्रामतमचरबामशिरधुनियोंकहैं । उतपातकेघर कीशदोऊआजुघरआयेअहैं ॥ केतनेकखगगहिपटकिरावणनिक टदीनचलाइकै । केतनेझिकेप्रभुपासगतितेहिदेतरामबजाइकै ॥ निशिजानिआयेनाथपहँदोउदेखिप्रभुबिनश्रमकरे । हनुमानअंग दगयेथलसुनिभालुमर्कटसबफिरे ॥ अतिरोषपाइप्रदोषबलधा येअसुरजयबोलिकै । कपिदेखिभिरेप्रचारिपुनिसबचलेनिशिचर डोलिकै ॥ निजहारिलखियतिकायआदिकअनिपनिजमायाठनी॥ भयेानिमिषमेंअँधियारसूझनहाथभागीकपिअनी ॥ चहुँओरतेम गमिलबनहिंकचरुधिरवरषतबालुका । लखिराममारेउबिशिख एकमिटिगईमायामालुका ॥ कपिरीछपेखिप्रत्यक्षपलटेबहुरिरिपु भागतभये । तबत्रसितआयेरामपहँपगपरतसबकेदुखगये ॥ य हिभांतिबासरआठनिजनिजघाटकपिकोनपलरे। तबकहीरावण सचिवतेकसकरियइतबहुभटमरे ॥ सुनिमालवंतसुमंत्रबोलेहुआ पुजबतेसियहरी । तबतेकियोबहुबातएकहुतातनहिंपूरीपरी ॥ अबतेसमुझिभलजानकिहिंगहिपाइँप्रभुकहँदीजिये । भयेमूढ़मा रहुतोहिंकापरओटमुखकरिलीजिये ॥ कछुरीतिपुछियतजाहिसों शठअधिकभांतिदेखावई । जिमिकहैकोइगिरिमेरुतेझुकिजाहुआँ धीआवई ॥ तेहितुरतजान्योंकालबशरसनाहिउठिघरकागया। तबमेघनादसदर्पसन्मुखआइअसबोलतभयो ॥ देख्योपराक्रम कालिहममबहुआजुकानिजमुखभनो। सुतबचनसुनिहरषानमनर णशूरसुनिकरखामनो ॥ उठिप्रातनौमीदिवसरथचढ़िसुकृतकपि दलआयहू । कहँरामकहँसौमित्रिकहँहनुमानकहँकचजायहू ॥ सुनिभालुकपिधायेकुधरगहिदेखिसोमारनलगा । लखितासुबा नावरीसबअकुलाइमर्कटदलभगा ॥ तबभिरेलषणप्रचारिबाण नमारितेहिब्याकुलकियो । जबभयोबिनरथसूतजानिसिमारि इनमोकोलियो । तबब्रह्मदत्तप्रचंडशक्तीलषणकहिरदयहनी । महिमुरछिगिरेअनंतरहाउठाइकरिमायाघनी ॥ किमिउठैंजगदा

धारलखिहनुमानमुष्टिकमारेहू । पुनिलातमारिअचेतकरिधरिलं
कऊपरडारेहू ॥ निशिजानितबहनुमानशेशहिलादिप्रभुतहँला
यहू। लखिरामहृदयलगाइभ्रातहिबिरहबचनसुनायहू ॥ हाई
शजगतनदीशमेंइकपोततेंबिरचारहै। पटभक्तिभायपमित्रगुणनि
चढ़ाइअबबोराचहै ॥ हातातजिपितुमातुवनममबिपतिआइबटा
यहू। तिनसाथहोंसुरलोकलौंहँसिप्राणनाहिंपठायहू ॥ निजकर्म
निजकरतूतितेतुमतातसबसुकृतीजये। मैंराखितुमबिनदेहदीघ
लादिशिरअपयशलये ॥ अससमुझिपरतकठोरताममहृदयतेकुलि
शैभई। जोसमुझिआपसनेहतुरतैदरकिदरजनहूवैगई ॥ पितु
मरणभामिनिहरणखगबधदहिनभुजागवाँयहूं। सबभांतिअपने
बंशशुचिमेंकालिमामेंलायहूं ॥ जिनतुम्हेंसौंप्योमोहिंतिनसोंक
हाकहिहौंजाइकै। पियबन्धुखोयोबामहिततेहिसक्योनाहींलाय
कै ॥ कपिभालुजेहिंगिरिगुफनतबसंगमोकोरोचहै। ह्वैहैबिभीषण
कीकवनिगतियहीबड़मोहिंशोचहै ॥ दुखदेखिसकतनरह्योमम
अबहेतकेहिकरुणातजी । जेहिदेतनहिंउठिबोधबीरनकौनबल
धनुशरसजी ॥ धनधामसुततियकुटुम्बजगहैजातपुनिपुनिआव
हीं। पितुमातुसोदरजन्मभरिनहिंमिलतजबतेजावहीं ॥ प्रभुव
चननरअनुहारसुनिकपिभालुसबहियहारेहू। तबरीछपतिहनुमा
नकहँतेहिसमयजानिप्रधारेहू ॥

कह हनुमन्त जोरि युगहाथा। लषण शोचजनि कीजैनाथा ॥
कहौ चन्द्रमें पट इवगारी। अबहीं देहुं अमी मुख डारी ॥
कहौ बिबुध बैद्यहि गहिआनौं। मोतमारि सबके दुख भानौं ॥
कहौ फोरि नभरबिहि निकारौं। रिपु तेहि द्वार राहु बैठारौं ॥
कहौ ब्रह्म हरिहर का आनी। अमर अमर बोलवावों बानी ॥
कहौ पताल जाइ हति नागा। आनों अमीकुण्ड यहिजागा ॥
कहौ देहुं निज देहै त्यागी। अबहीं उठों लषण घटजागी ॥
दो० जो कछुतव मनमें रुचै सो मोहिं आयसु होइ।

नायशपथ क्षणमें करौं प्रभु प्रताप बल सोइ ॥
पवन तनयके बचनसुनि सहितराम कपिभाल।
उठे जागिजिमिमंत्रसुनि सर्पग्रसित द्रुमजाल॥
बोले श्रीपति सत्यसुत सब लायक तुम आहु।
चाही बैद्य सुखेनहैं अरिपुर आनन जाहु॥
पहुंचे तुरत बिचारि तेहि ल्याये सदन समेत।
तासु बचन सुनि पुनिचले शीघ्र सजीवन हेत॥
कालनेमि मगमारिकै सब गण साठि हजार।
रोंकत लूम लपेटि सोइ देखाजाइ पहार॥
देखी जहँ तहँ औषधी तब मन मांझ बिसूरि।
लीलै चले उठाइ गिरि दलिदशमुख भटभूरि॥
किधौं अपत्र पलाश बन किधौंप्रभात लखाइ।
छांड़ि शम्भुगणबहुरिमग ढर्योअवधपर आइ॥

देखि भरत मन असुर बिचारा। बिनुफरबाण हृदयमहँ मारा॥
कपि महि गिरतराम मुखभाषा। पवन साधि द्रोणाचलराखा॥
तेज तासु पुर गयो समाई। ज्यों सरिता सागरमहँ जाई॥
दौरि भरत गहि हृदय लगावा। जागनजबतबबिलखिसुनावा॥
जो रघुपति पद प्रीति हमारी। बहुरि होइ अनकूल खरारी॥
तौकपि होउ बिगत श्रमपीरा। सुनि उठिबैठ रामकहिबीरा॥
भरत रिपुहनै लखि भ्रमछायो। का घररामलषण फिरिआयो॥
पुनि पहिचानिपुलकिशिरनावा। पूंछा सब वृत्तान्त सुनावा॥
व्याकुल ह्वै बोले धृग हमहीं। प्रभुके काज न आयों कबहीं॥
कुसमय जानिकह्यो धरिधीरा। चढ़िशरसपदि जाहु प्रभुतीरा॥
सुनि सहगर्ब बैठ शर जबहीं। सुमन समान उठायो तबहीं॥
देखि प्रभाव उतरि कपि परेउ। शीश नवाइ प्रशंसा करेउ॥
तव प्रताप उर धरि रघुबीरा। जैहौं अति लाघव प्रभु तीरा॥
भले भरत कहि बोले ताता। पाछे सुनि दुख पैहैं माता॥

तेहिते चलि दीजै समुझाई। आइ भवन सब कथा सुनाई॥
सुतघायल सुनि साधु सुमित्रहि। भयोहर्ष अरुशोच बिचित्रहि॥
बोली धन्य सुवन मम आजू। जूझेउ समर स्वामिके काजू॥
पर इक कलक होत बड़िताता। कुसमय भये रामबिन भ्राता॥
पुनि सुभाय रिपुहन ते कहेउ। जाहु तात तुम प्रभु पहँ रहेउ॥
सबबिधिकिह्योभजनसोइसच्चा। नरतन काफल याहीबच्चा॥
सुनत उठे मुद सहित प्रकाशा। बिधि बश सुढरढरे जनुपासा॥

दो० अम्बअनुज गतिदेखि मन मानीसबनगलानि।
बोली रघुपति मातु तब कपिते धीरज आनि॥
प्रथमभेंटकहिकह्योइमिकह्यो कठिनउर अम्ब।
लाल लक्षमण ते ललित लागत अहोकदम्ब॥
बोले मारुतसुवन तब सकल धरहु मन धीर।
कुशल जानकी लषण युत ऐहैं घर रघुबीर॥
असकहि चले समेतगिरि आये जहँ भगवन्त।
औषधि कीन सुखेन उठि बैठे तुरत अनन्त॥
कृपासिन्धुबन्धुइमिले मिट्योसकल दुखभार॥
मुदित भालुकपिजनलह्योसमरपयोनिधिपार।
भेंटिसचिव बूझन लगे बड़ दुख पायो तात॥
कहत न क्षत मेरे लग्यो पीर भई प्रभु गात।
होतपदिककेकान्तिजिमि दुखसुखलहैभुवार॥
शुकमुख जानत पाठ करि अर्थ पढ़ावन हार।
बिमलबचन सुनिशेषके कहनलगे सब बीर॥
राम लषण की प्रीतिकै उपमा क्षीर न नीर॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास
रामसनेहीकृतलक्ष्मणहितरामबिरहबर्णनो
नामषट्बिंशोऽध्यायः २६॥

दो॰ सुमिरि रामसिय सन्तगुरु गणप गिरा सुखदानि।
बरणों मानस मत कछुक सार रमायण जानि॥
पुनि ताही थल पवन कुमारा। धरि आये गिरि वेद अगारा॥
सुनि रावण मन परेउ खभारा। प्रात लगे कपि चारिहु द्वारा॥
मेघनाद पुनि रथ चढ़ि आवा। बर्षिबाण कपिदलबिचलावा॥
दश दश बिशिख सबनके मारे। जहँ तहँ भट करहत हैं डारे॥
पुनिबिधिबचन लागि दोउभाई। नाग फाँसते लीन बँधाई॥
मुदित पिता ढिग लंकहि लावा। रावण देखि परम सुखपावा॥
बिविधि प्रशंसा करि सुत केरी। सीतहि जाइ देखाइसि टेरी॥
प्रभु बन्धनलखि सियअकुलानी। गरुड़ैतब पठयो बिधिज्ञानी॥
आइ सकल पन्नग बिचलाये। पुनि दोउबन्धु कटकमहँ लाये॥
अस्तुतिकरिसुनिरघुपतिबचना। हरिपुरगये गुणत प्रभुरचना॥
इहां बिभीषण हनुमत दोऊ। सोधा दल अचेत सब कोऊ॥
कह्यो बिभीषण रिच्छप तेरे। हैं कछु चेत चलहु गे शेरे॥
जामवन्त तब बघन बखाना। कहो अहैं नीके हनुमाना॥
सुनि दनुजेश कह्यो धरि धीरै। पूछेउ नहीं लषण रघुबीरै॥
तजि कपिपति युवराज समेता। हनुमानै बूझेउ केहि हेता॥
जो होइहै जीवत हनुमन्ता। तौजानो सबजियत अनन्ता॥
जोकदापि गिरि गे हनुमानो। तौतुम मृतक सबनकहँजानो॥
सुनि लंकेश सरस सुख पावा। पवनतनय चरणनशिरनावा॥
आयसु होइ करी सोइ बाता। लावहु चारि औषधी ताता॥
दो॰ एकबिसल्य करनी अहै युग सांवरिनी नाम।
तीसरि संजीवनि पुरत संधानी अभिराम॥
सुनि मारुत सुत तुरतै धाये। आनिजरी सबसुभट जिआये॥
भय सबल सब गाजन लागे। देखि राम लक्ष्मण अनुरागे॥
हरि दिन चढ़ि धुमराक्ष मुरारी। आइ कीनि अति संगरभारी॥
भये बिकल कपि भालु अपारा। दुवादशी दिन पवनज मारा॥

आवा बहुरि अकंपन योधा । महा समरकीन्हि सिसहक्रोधा॥
तेरशिदिन गर्जेहु युवराजा । बहुरि प्रहस्त आइरणगाजा ॥
किहिसिमारि शर जर्ज्जरगाता। परिवा दिन तेहिनीलनिपाता॥
तीनिदिवस तबलरा करीशा । पंचम्यादिन सुनि दशशीशा ॥
कुम्भ कर्ण कहँ आनि जगावा। नानाविधि करिकुटिल उपावा॥
पुनि बहुभांति कराइसि भोजन। बोला सो निज कहौपरोजन ॥
कह रावण हैं मानुष आये । शत्रु समुझिहमतियहरिलाये ॥
सेतु बांधि उतरे यहि पारा। सुभट समूहकिहिनि संहारा॥
मिला बिभीषण जाइ अयाना। मोहिं तोहिं नहिंनेकु डेराना ॥
कपिन सहित तेहि भक्षणकीजै। सहित कुटुम्बमोहिंसुखदीजै॥
सुनि घटकर्ण कह्यो सुरशाली। प्रथमपूंछिकिनकिहेउकुघाली॥
यक दिन बात जनाई थोरी। प्रकटी नहिं सीताकी चोरी ॥
त्रिभुवन पतिसों बैर बढ़ाई। पुनिसुख चहतकहाअयभाई ॥
तातं त्यागि कुटिल पन येहू। जगदम्बा लै रामहिं देहू ॥
जेहिते करौ सकल सुख भेरी। सुनि बोला रावण मुखहेरी ॥
कितौ करौ चलि संगर भारी। कितौरहौपुनि सोइ सँभारी ॥
नाहित भीरु बिभीषण जैसे। परो पाइँ रिपु पायन तैसे ॥
मैं निजबल बिरोध यह ठाना। करिहौंतिमिसबकरकल्याना॥
सुनिघटकर्ण काल कृत जानी। प्रभु दरशनहितमनमें आनी ॥
अनुजै भेंटि समोद सिधावा । लखि रावण बहुसुरापियावा॥
करि मदपान भयो मतवारा। चला कहत कहँ भूप कुमारा॥
हाय हाय करि खेचर भागे । लखितेहि मिलेबिभीषणआगे॥
चरण परसिनिज नाम बतावा। सुनि सराहि प्रभुपासपठावा॥
कहिनि नाइ रघुपति पदमाथा। कुम्भकर्ण यह आवतनाथा ॥
रावण बंधु बिपुल बललाहू । जो त्रिभुवन में बनतनकाहू ॥
उड़ै अकाश व्योमचर मारै । धसै पताल फनिक फनफारै ॥
मणि उतारि लावत है कैसे। उपबन ते पुष्पन को जैसे ॥

बिनही प्रलय प्रलय करिदेतो। जो षटमास न सूतत येतो॥
परप्रभु भृकुटी कुटिल निहारी। लोपहोत भवका तमचारी॥
सुनि कपि भालु चलेकरि हूहा। डारिनितेहि शिरशैल समूहा॥
सुमनसरिस बरषत जियजानी। धावा मुख पसारि दोउपानी॥
कोटिन कपि चपिगे तरताके। कोटिनकर समेटि मुखझांके॥
कोटिन श्रवण नाकमग माखी। निकसहिंजिमिबांबिनतेपाँखी॥
कोटिन दिशा दिशा उड़िभागे। कोटिन प्रभुके पाछे लागे॥
कोटिन हनुमन्तादिक बोले। कोटिन कुणप दुरावत डोले॥
कोटिन गये समुद महँबूड़ी। कोटिन काटि चलाये मूड़ी॥
आगे लखि रघुनाथै पावा। करिप्रणाम मनबचन सुनावा॥
दो० ना मैं आहों ताड़का ना मैं अहौं सुबाहु।
ना हौं धनुमारीच मग नाहों खर कपि नाहु॥
मैंहों देवन केर रिपु आइ करौ रण राम।
ज्यहि चढ़िआयो गर्बकरि सो अब पूजौकाम॥
सुनि सुग्रीव लात यक मारी। पकरि तिन्हैं पुर चलाप्रचारी॥
लखि सबहनन लगे यकसाथा। सासपाइ निकस्योकपिनाथा॥
श्रवण नाक कर मुख ते काटी। गयो रामपहँ असुरै डाटी॥
चला रुधिर तब देखिलजाना। फिरिकपिनिकरकिहेसिबिनप्राना
हनोमान निज लूम लपेटी। डारिन सिंधु मांझजिमिफेंटी॥
धावा तब करि क्रोध कराला। मारिकीशसबकिहिसिबिहाला
नारद आइ कही असि बाता। बधउ बेगि प्रभुप्रोक्तबिधाता॥
शीशनाइ जब कीन पयाना। तब हरि धनुष बानसंधाना॥
मारे शायक बिपुल प्रचारी। धावा मुख पसारि गिरिधारी॥
लखि राघव भुज काटि गिराई। लिहिसिबामकर सोउ उड़ाई॥
बिन भुज गिरि मंदरसमधावा। शीशकाटि प्रभुलंक बहावा॥
लुगड मुगड बिन चल्यो प्रचंडा। तब प्रभुकाटि किये युगखंडा॥
दो० देखि देव बरषे सुमन हरषे मुनिन समेत।

मुदित भालुकपिकटक मधि सोहेकृपानिकेत ॥
अनुज शीश लखिरावण शोचा। असन बसनत्यहिभयेअरोचा॥
रोवहिंरवणि बरणि गुणताके। चला महोदर लै भट बांके ॥
कपि दल आइ समरअतिठाना। एका दिवस हता अनुमाना॥
फालगुन कृष्ण आदिदिन भोरा। चढ़ा नरंतक लै भट घोरा॥
नाना बिधि त्यहि युद्ध मचावा। जाना कपिनकाल निजुआवा॥
हरि बल पाइलरत तेहिचीन्हा। फनिदिननिधनशराननकीन्हा
तब अतिकाय आयरण ठाना। अष्टम्यादिन भेगत प्राना॥
कुम्भकरण सुत कुंभ निकुंभा। आइ किहिनिदोउ युद्धअरंभा॥
लरत लरत दिन पांच बितायें। तेरसि दिवस गये दोउपाये॥
तब खरसुत मकराक्षसि धावा। कपिदलदलतलषणपहँआवा॥
मारे अस्त्र शस्त्र भट नाना। कटै न बपुबिधिकर बरदाना॥
झपटिलषणकहँनिगलिसिधावा॥ मनहुं मयंकहि तुदनदुरावा॥
हाहाकार भयो दल भारी। निकसे लषणउदरतेहिफारी॥
फालगुन शुक्ल प्रथम दिनजूझा। भा रावणै मोह यश बूझा॥
मेघनाद लखि बचन सुनावा। केहि हित तुमअसखेदबढ़ावा॥
जबलग मैं जीवत सुत तोरा। तबलग करहु राज्यबरजोरा॥
देखौ आजु मोर संग्रामा। असकहि चलादिब्यरथतामा॥
एक अदृश्यपुनिनिशिनभगामी। आवा जहां भालु कपिस्वामी॥
गर्जा प्रलय पयोद समाना। सुनि कटु शब्दसबनभयमाना॥
अस्त्र शस्त्र पुनि बरषनलागा। मघा नखतसमअशिसरसांगा॥
गहि गिरितरुकपिजाहिंअकासा। मिलै नकोउ तब फिरैंउदासा॥
भये बिकल कपि भागन लागे। जहांजाइँ मग मिलैन आगे॥
अंगद हनोमान नल नीला। शेष सुकंठ बिभीषण कीला॥
औरौ दुर्द्धरादि जे बीरा। मारिसबनकहँकिहिसिअधीरा॥
पुनि अति समर राम ते ठाना। नाग फांस बसभे भगवाना॥
जासुनाम भव बंधन हर्त्ता। सोकि होइ परबश यशकर्त्ता॥

समय समान चरित प्रभुकरहीं। अस बिचारिबुध भर्मनपरहीं॥
देखा सचन बिकल घननादा। तबभा प्रगट कहत दुर्बादा॥
देखि ऋच्छपति चले प्रचारी। तब तेहि तीव्रशक्तिकिमारी॥
जामवन्त सोइ मारि गिरावा। चरण पकरि पुनि लंकपठावा॥
गरुड़ आइ प्रभु बंधन काटा। भे सब सबल रामजब डाटा॥
गहि गहि गिरिगुरुपादपधाये। मारि सकलनिश्चरबिचलाये॥
मेघनाद मुरछा ते जागा। जायअजयमख करनसोलागा॥

दो० जानि बिभीषण प्रभु सों कह्यो जोरि युगपाणि।
इन्द्रजीत निःकुम्भ लेगा मख हित रिसआनि॥

सो० जब लगि होइ न सिद्धि तबतक ताकोमारिअपु।
पाछे पाइ प्रसिद्धि बेगि न जाइहि जीति रिपु॥

सुनि प्रभु कहालषण ते तबहीं। जाहु तातलै कपि दलअबहीं॥
मख बिध्वंसि पुनि मारेहु ताही। भले नाथ तब आयसु आही॥
असकहि सजि धनुशर तूणीरा। चलेसंग हनुमत युत बीरा॥
जातहि कपिनभंग मख कीन्हीं। मारतलखिधनुहीतेहिलीन्हीं॥
द्वै शर जामवन्त के छेदे। तीनि बाण अंगद के भेदे॥
चारि बिभीषण अंगनि फारे। पांच बिशिष पवनज के मारे॥
एक एक शर सबके दयऊ। पुनि लक्ष्मण परछांड़तभयऊ॥
सकल अनंत काटि महि डारे। पुनि निज बाण करालपँवारे॥
आवत लखि शर भयो अलोपा। छाड़िसि बहुरिशूलकरिकोपा॥
तुरत कीनि शत खंड अहीशा। तबयकगिरिगहिडारिसिशीशा
रजसम करि सोऊ महिपारा। अस्त्रशस्त्र पुनितजेसिअपारा॥
सो तब लषण नेवारत भयऊ। यहिबिधिबीतिमासदिनगयऊ॥
महा युद्ध लखि सुर मुनिसारे। हर्ष शोचबश होइ बिचारे॥
तव लक्ष्मण करि कोप कराला। छांड़ेउ एक नराच बिशाला॥
जातहि शिरभुज काटेउ तासू। गर्जत पुनि मारे शर आसू॥
रामलषण कहि सह अनुरागा। तेरसि दिवसभयो तनत्यागा॥

सुनि बोले अंगद हनुमाना। धन्यमातु तव तोहिं बलवाना॥
कटि तनुपरेउ समर महितामा। दहिनी भुजा गई तेहि धामा॥
शिरलै कीश राम पहँ आये। अनुजहिलखिप्रभुहृदयलगाये॥
फेरि कमलकर छुतहरि लीन्हा। बरषे देव सुमन जय कीन्हा॥
पुनि रघुपतिकपिभालु बिलोके। भये सकलश्रमरहित बिशोके॥
अरि पुर मेघनाद की नारी। पतिभुजलखि मनसंशयधारी॥
दीन्हिकलमखरिकरगहिलीन्हीं।लक्ष्मणकीकीरतिलिखिदीन्ही॥
कोटि कलपजो योग कमावै। सोउनलषण किसमसरिपावै॥
सुनत सखिन युत रोवनलागी। आजु दशानन भयो अभागी॥
करिहैं कीश मंदित पुर फेरी। छूटि बंदि सब देवन केरी॥
कोइ जय लहै हमें का करना। जर्‌यो जगत जोआपनजरना॥
अस कहि भुज पालकी चढ़ाई। आपु बैठि रावण पहँ आई॥
सासु ससुर पद शीश नवाई। रोदन करि सब कथा सुनाई॥
जो पावौं निज पति करमाथा। तौ रचिचिता जरहुंतेहिसाथा॥
मयतनयादि जहां तक रानी। लगीं बिलापकरन दुखमानी॥
सुनिदशमुखहुमुरछिमहिपरेऊ। पुनि धरिधीर बचनअनुसरेऊ॥
सुमुखिसमुझिजियकरहुनशोका। प्रकट नाम याको मृतुलोका॥
मातु भूमि पितु बीज बेसारा। काल किसान जोवतृणभारा॥
पालत पुनि लूटत सोइ खाई। कौन कौन हित रोवै धाई॥

दो० रह्यो न कोई रहैगो पुनि कछु जाइ न साथ।
धन्य भाग्य इन सबन के जो जूझे प्रभु हाथ॥
सब सम जानन मोहिं तू मैं हौं अति बलवान।
देखौ कालिहि कपिन कर मेटिहौंजाइ गुमान॥
वालि बिभीषणपवन बिधि तापसनीलकपीश।
इन सब शीशन सहिततवआनौपतिकरशीश॥
बड़ बिमोह बश जानि तेहि कछू न उत्तरदीन।
नारद के बरबचन तब मयजा बरणन कीन॥

ताते निज हित रामपहँ जाहु सकल तजिशंक।
होइ भूप धरमज्ञ जहँ तहँ कोउ रहै किबंक॥
बहुरिरहत तहँ ससुरतब भय न कछूशिरनाइ।
चली यान चढ़ि भटनयुत पहुंचीकपिदलजाइ॥
सो० लखि हरषे कपिभालु बिनश्रम आई जानकी।
मिटा सकल जंजालभयो सुयश हमसबनकहँ॥
यहि बिधिगई जहां रघुराई। नखशिखलखिदोउबंधुलोनाई॥
कीनि दण्डवत् बिनय समेता। तब लंकेश कहा सब हेता॥
सुनि कृपाल बोले अनुरागी। जो भावै सो लीजै मांगी॥
कहौ देहुं पति तोर जिवाई। भूजहु राज कल्प भरि जाई॥
सुनि सुर मुनि कपिभालु डेराने। बहुरि सुलोचनिबचनबखाने॥
कृपा सिंधु में दीख बिचारी। यहि मरनेते जीवन खारी॥
बिष बदले जो अम्मृत पावै। लेइ फेरि सो मूढ़ कहावै॥
ताते नाथ देहु पति शीशा। दीन देवाइ तुरत जग दीशा॥
दो० मस्तक पाइ हँसाइ तहँ लाई सागर पास।
भईसतीपतिसहितपुनिकिहिसिसत्यपुरबास॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथ
दासरामसनेहीकृतमेघनादबधसुलोचनासतीबर्ण
नोनामसप्तबिंशोऽध्यायः॥ २७॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु गणपगिरा सुखदानि।
बरणौं मानस मत कछुक सार रमायण जानि॥
तेहि दिनभयो न समर कछु दशमुख शोचै लीन।
अहिरावण को यादि करि आकर्षण जपकीन॥
दंड चारि महँ सोतहँ आवा। रावणलखिनिजहालसुनावा॥
सकल सैन कपि भालु न मारी। तातरही यक आश तुम्हारी॥
सुनि बोला यह केतिक बाता। जैहौं लै पताल द्वौ भ्राता॥

देहौं बलि कामद कहँ सोई। जानेहु नभ प्रकाश जबहोई॥
असकहि बिरचिबिभीषण रूपा। गयो जहां लक्ष्मण सुरभूपा॥
सोवत लखि लै गगन उड़ाना। दशमुखदेखिसत्यतहिजाना॥
यहि बिधि सो लैगयो पताला। प्रभुबिनभेकपिभालुबिहाला॥
तबसब हाल बिभीषण काहा। अहिरावण लैगा नरनाहा॥
रहत नागपुर जो कोइ लावै। सो सबको दे प्राण जियावै॥
कह हनुमान तजहु सब शोका। लैहौं प्रभुहि ढूंढ़ितिहुं लोका॥
चले खबरि मग खगते पाई। क्षण महँ अरिपुर पहुचे जाई॥
द्वार पाल मकरध्वज आढ़ा। तासु पूंछि तेहि बांध्योगाढ़ा॥
पुनि लघुबन देवीमठ गयऊ। होतहोम तहँ देखत भयऊ॥
तब तहँ बिकट रूपधरिलीन्हा। गैधसिशक्तिसुतलथलदीन्हा॥
देखि सहित कुल हरषा राजा। प्रगटी देवि भवा अबकाजा॥
नानाबिधि मेवा पकवाना। आनि चढ़ावै पुरजन नाना॥
पावनि बस्तु सकल कपि खाई। पुनिबलिहित आनेदोउभाई॥
बाजहिं बाजन गावहिं नारी। सुनिनिश्चरसबहोंइ सुखारी॥
तब प्रभुते बोले शठ सोई। सुमिरौ जो कोइ तुम्हरे होई॥
सुनि रघुपति तबकीन बखाना। यहि अवसरचहिय हनुमाना॥
मारन हित शिवभे सब ठाढ़े। घन समान कपि गर्जेहु गाढ़े॥
निश्चर डरि अस कहत बिशेषी। क्रोध कीन देवीनर देखी॥
बहुरि गर्जि कपि बपु प्रगटावा। दोउ भैयन दोउकंध चढ़ावा॥
निज लँगूर करकाट बनाई। अशिलै मारेहु खल समुदाई॥
अहिरावण शिर काटि कुमारा। देवी की आहुति में डारा॥
औरौ असुर मिले ते मारे। पुनिलै प्रभुइ चलेहुलखिद्वारे॥
बिनय कीनि मकरध्वज भाये। राजदेइ निज सैनहिं आये॥
लखि कपिभालुसुखीसब भयऊ। बूड़तमनहुं थाहमिलिगयऊ॥
हनुमानै सब लगे सराहै। कह प्रभुइनबिनकोसमआहै॥
बोले पवनतनय शिर नाई। आपु चहै त्यहि देउ बड़ाई॥

दो० यहां दशानन दूत मुख सुनि अहि रावण नाश।
एकादिन निज सैन लखि चढ़ा समर बिनत्रास॥
बाजहिं बाजन बिबिधिबिधि अशकुनहोंइ अपार।
गनहिं न एकहु गर्बबश महिसहिसकत न भार॥
निजनिज नाथ केरि जयभाषी। धाये इतउत भट अभिलाषी॥
कपि करमुकदल संगम भयऊ। जनुघनश्यामश्वेतमिलिगयऊ॥
गर्जहिं मनहुं बाजने बाजैं। चमकहिं खड्ग छटासीराजैं॥
बर्षहिं बाण बूंद जनु भारी। छूटैं तोप गाज जनु पारी॥
भयो अँधेर उड़ी रज कूरा। इन्द्रधनुष बहु लसैं लँगूरा॥
गिरहिं सुभट मन्दिर हहराई। श्रोणित सरितचली उमड़ाई॥
भुज अहि कच्छप चर्म सोहावे। कुंजर अश्व ग्राह द्युति पावै॥
फिरत चक्र आवर्त्त अनेका। उछरहिं शीश सूसिढिगएका॥
भूषण भेक उपल सम रेनू। धनुष तरंग बहै पट फेनू॥
करपद मीन जुकेश सेवाला। दोउ दल कूल बिटपरथजाल॥
बहु भट बहैं चढ़े खगनीचा। जनु नेवार खेलहिंसरिबीचा॥
खैंचैं आँत गीध गहि तीरा। बंशी मनहुं लगाई कीरा॥
भूतरु प्रेत पिशाच पिशाची। मज्जहिं मुदितयोगिनीनाची॥
वीर बिनोद लहैं सर देखी। कायर त्यागहिं प्राणबिशेषी॥
देखि कठिन कोपेहु हनुमाना। मर्दन लगे निशाचर नाना॥
गजते गज घोरन ते घोरा। खरते खर रथते रथ तोरा॥
महिष ते महिप ऊंटते ऊंटा। पैदर ते पैदर दल कूटा॥
कोटिन कर शिर लातन मारे। कोटिन पटकि सिन्धु महँडारे॥
कोटिन हाथ पाय बिन कीन्हें। कोटिन फेंकि गगनमहँ दीन्हें॥
हँसि प्रभु कहैं लषणते हेरी। देखहु लरनि पवनसुत केरी॥
निज दलबिचलदेखि दशशीशा। धावाले धनुशर भुज बीशा॥
जहँ तहँ उड़े कीश भयपाये। यथा पात बाँड़र के आये॥
अंगद हनुमदादि भट भारी। लै लै गिरि मारे यकबारी॥

फूटहिं पबिसो मुरै न नेका। लाग निपातन कीशअनेका॥
दीन्हिसिपूरि दशहु दिशिबाना। भागत कतहुं न मिलैठिकाना॥
बिकल पुकारहिं जहँ तहँ ठाढ़े। पाहि रामलक्ष्मण दिन गाढ़े॥
सुनि लक्ष्मणधनुबाण सिधारा। सरिस आइ संमुख ललकार॥
होउ सजग अब सुन दश भालू। पहुंचेउँ आइ तीर मैं कालू॥
सुनि तेहि अस्त्र शस्त्र बहुमारे। सकलकाटि सौमित्र निवारे॥
पुनि छांड़े निज बाण अहीशा। सूत समेत भयोरथ खीशा॥
शत शत विशिप दशौशिर मारे। मनहुं चलेबहि रुधिर पनारे॥
पुनि शत शर छातीमहँ दीन्हें। बीसहु भुज बरही समकीन्हें॥
धावा बिकल क्रोधकरि भारी। बिधिकीदीन्हिसांगितकिमारी॥
लागत उर लक्ष्मणमहिं परेऊ। रहा उठाइ न नेकहु टरेऊ॥
ज्यहिशिर रजसमभुवनअपारा। तेहि उठाइ किमिसकैलवारा॥
देखि पवन सुत मुष्टिक हनेऊ। ह्वै अचेत अवनी ढनमनेऊ॥
प्रभु लै गयो जहां भगवाना। देखि दशानन अचरज माना॥

दो० चैत्र कृष्ण नौमी दिवस अनुजै लखि रघुवीर।
कहौं कालके कालतुम सुनत उठौ रणधीर॥
पुनि रिपुसंमुखजाइत्यहि बिकलकीन शरमारि।
लखि अचेतनिजनगरतब लैगा सूतनिकारि॥

भवनदीख जब रावण जागा। निज सुमंत्रकहँखोजन लागा॥
रेमतिमन्द भीरु धृग तोहीं। रणते बिमुख कराये मोहीं॥
असकहि दशमी दिवस सचेता। लागकरनमखबिजयके हेता॥
सुनि प्रभु भट पठये बहु आसू। करहु विध्वंस जाइमख जासू॥
अंगद हनुमदादि कपि बीरा। कौतुकही आये तेहि तीरा॥
लखि लागे सब मारन लाता। उठै न सो स्वारथ मनराता॥
तब कपि करन उपद्रव लागे। दिये छोरि हय गय मृगभागे॥
फारे पट बितान घट झोरे। छत्र चमर ब्यंजन गहि टोरे॥
लखि मन्दोदरि उठी रिसाई। दुरा चित्रशाला महँ आई॥

अंगदहू घुसिगे तहँ फूले। बिविधिचित्रपुतरी लखिभूले॥
धाइ धरैं पुनि तजै निहारी। पावै किमि सुन्दरि बनचारी॥
देखि हँसी सुरकन्या एका। गहत बताइ सुनारि अनेका॥
तेहीं देखाई रावण रानी। असुर निकट लायेगहिपानी॥
भूषण बसन परे सब छूटी। कामपुरी जनु शिवगण लूटी॥
आरत बचन पतिहिलखिकहई। जेजस करै सोतस फललहई॥
सीतहि दिह्यो झूठ दुख भारी। देखहु निरगति सांच हमारी॥
नारि बचन सुनि उठा रिसाई। गये भागि कपि जहँरघुराई॥
त्रिभङ्गीछंद॥गंभागिकपीशातबदशशीशागहिभुजबीशाधनुतीरा।
सँगसेनअपाराचलेउजुझारामदमतवारारनधीरा॥इतप्रभुसुरतीरा
कह्योअधीरामेटहुपीराबेगिभले।कटिकसिपटबांधाधनुशरसांधाद
लतप्रबाधाहेतुचले॥लखिइंद्रअजानास्यंदनआनापवनसमानादे
खिप्रभू। हरिदिनतेहिमाहींचढ़िसबपाहींकहौंकिनाहींनीकअभू॥
सुनिसबबनचारीभयेसुखारीदेखिमुरारीकोपठन्यो। कहिबचनक
ठोराशायकघोरातजिचहुंवोराकीशहन्यो॥ह्वैबिकलपरानेसकल
ठिकानेलखिअकुलानेबिशिषभरे। तबरामसुजानापावकबानाछां
ड़ेनानासकलजरे॥दशमुखदिशिदयऊरथबिनभयऊदूसरलयऊ
क्रोधयुतं। पुनिशरबरपाटेसबप्रभुकाटेनिश्चरडांटेबालिसुतं॥क
टिकटिभटपरहांपुनिउठिलरहींबलकरिधरहांयकखोलै। कोटिन
बिनमाथाधावहिंसाथाकहघुनाथाशिरबोलै॥ धरुधरुधरुमारूप
करिपक्षारूकरहुअहारूकोउनबचै। अतिचंचलकीशावधबनरीसा
जोवागीशाभूलिरचै॥ धायेकपिभालूजनुबपुकालूमारिबेहालूअसु
रकिये। नखउदरबिदारैंआंतनिकारैंनिजगरडारैंहर्षहिये॥ लखि
रावणकोपाप्रभुरथतोपादेखिअलोपादेवडरे। हयमारिगिरायेराम
उठायेसंमुखधायेक्रोधकिये॥ करपेउशरदावाश्रुतितकआवातब
करवावायोंबोला। भोजनहितहारूरहतअगारूरामपक्षारूकेयों
डोला॥ सुनिकहौंजुआहूंपूछनजाहूंदशशिरढाहूंकीएका। प्रभुसक

लबतायेअसकहिधायेजाइगिरायेशिरतेका ॥ फिरिभयेनवीनेपु निप्रभुबीनेपुनिहरिदीन्हेपुनिकाटे। पुनिपुनिइमिजामैंरामगिरामैं दशदिशितामैंभरिपाटे ॥ जबअसुररिसाईसाँगचलाईलखिरघुरा ईआपुसही। चहिचल्योबिभीषणजहँरिपुतीषनबदतसुशीषननीच गही ॥ असकहिललकारागदाप्रहारालगतप्रहारासरिसगिरा । मुखश्रवननिदाहाश्रोणितबाहाउठिकरिहाहाबहुरिभिरा ॥ मारै यकएकैअस्त्रअनेकैहरिबलछैकैश्रमितलखा। पवनजतबधायोमारि गिरायोप्रभुढिगआयोरामसखा ॥ रावणहनुमानामेरुसमानाभि रतबहानाअसुरठनै। नभसुरमुनिहेरीदुनहुनकेरीजयजयटेरीटेरि भनै ॥ कपिभालुनिहारेहनुमतिहारेगिरितरुधारेसबधाये। लखि निश्चरभूपाघरिबहुरूपाकीश अनूपाबिचलाये ॥ भागतभटघेरहिं आतुरतेरहिंमुखमेंगेरहिंभुजबीशा। दुरिदेवपरानेबहुरिपुजानेरहे ठिकानेअजईशा ॥ ब्याकुललखिबंदरहँसिकमुकंदरसबदशकन्ध रनाशकिये। पुनिएकनिहारामर्कटधाराधाइअपाराअसुरछिये ॥

दो० पुनि छाड़े निजबाणप्रभु काल सरिसबधहेत।
लागे काटन असुर के यथा हाथ तृण खेत ॥

सो० सात दिवसदिनराति बाजेउ घण्टाधनुषकर।
हरि पूजाकी भांति भये सुभट संहार सब ॥

कुं० घंटाकी परमान अब सुनु जेहि संगर बीच।
नाग अयुत दश लाखहयरथी डेढ़शत मीच ॥
रथी डेढ़शतमीच लहै पैदर दश कोटी।
तब यक नटै कवन्ध कोटिपर खेचर चोटी ॥
खेचर नाचहिं कोटि बिना शिरके निहकंटा।
तब राघवके धनुष केर बाजत यक घंटा ॥

श्लो० नागानामयुतंतुरङ्गनियुतंसार्द्धंरथीनांशतम् पत्तीनां दशकोटिसन्नियतमेनृत्यंन्कवन्धारणे॥ एवंकोटिकवन्धनर्तनविधौ नृत्येत्तथाखेचर स्तेषांकोटिकनर्तनेरघुपतेःकोदण्डघण्टारवः १ ॥

एवंसप्तदिनंख्यातंस्वर्गेमर्त्येरसातले ॥ भवेन्भूरिभटंनाशरामरा
वणसंगरे ॥ २ ॥
दशमुख आपुहि जानि अकेला। लाग करन मायाकर खेला ॥
भूत पिशाच प्रेत बैताला। अमितजन्तुप्रगटे त्यहिकाला ॥
लीन्हें धनुष शिलीमुख चोखे। मारु मारु धरु बोलहिं रोखे ॥
निर्तहिं करहिं रुधिकर पाना। गहे कपाल योगिनी नाना ॥
मुख पसारि दौरैं हम खावा। भागैं कपि तहँ देखहिं दावा ॥
ऊपर ते बरषैं बहु बालू। भये थकित सब मर्कटभालू ॥
शेष सहित क हाय खरारी। सुनिप्रभुमाया सकलनिवारी ॥
देखि सुभट धाये करि हूहा। प्रगटे तेहि कपि भालु समूहा ॥
सम्मुख चले बिटप गिरिधारी। देखि कीश बोले हिय हारी ॥
सब मर्कट ह्वै गे रिपु ओरा। कौन कुशलजोबिधिघरफोरा ॥
आपुइ आपु लखै नहिं कोई। भागे अबकछु जीति न होई ॥
बहुरि हरी माया भगवाना। तब तेहि रचे लषणहनुमाना ॥
लखिकपिभालुसकहिंनहिंमारी। घेरिनि रामहिंधनु गिरिधार ॥
डरे देव कपि प्रभु हर्षाने। पुनि समूह शायक संधाने ॥
छांड़त रिपु शिर काटन लागे। जनु समूह शरते खग भागे ॥
रहे पूरि नभ केतु समाना। छेदे निकर एक यक बाना ॥
लोकलोकगिरिगिरि बन जहँई। भयो राम रावण रण तहँई ॥
सुर नर नाग सबै अकुलाने। जाइ कहा कोउसुखदठिकाने ॥
मारु मारु धरु धरु शिर बोलैं। काल व्याल से खेदे डोलैं ॥
प्रभु काटत शिर बारहिं बारी। मनहुं अनार उड़ै फुललारी ॥
सो० यहि बिधि क्षीणत माथ बीते अष्टादिवसतब।
बोले श्री रघुनाथ सुयश देनहित घटजते ॥
इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथ
दासरामसनेहीकृतरामरावणसमरवर्णनोनाम
अष्टविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुग्णप ग्रिासुखदानि।
सार रमायण केरमत कहौं इतिहास बखानि॥

नाथ थकितभे भुजा हमारे। तद्दपि असुर मरत नहिं मारे॥
ताते यतन करहु जेहि छीजै। कहअगस्त्यमुनिप्रभुसुनि लीजै॥
प्रथम तुम्हारे पितर दिनेशा। जासु प्रतापविदित सबदेशा॥
तिनकी बिनय करहु करजोरी। होइ बिजय आनन्द बहोरी॥
सुनि प्रभु देन बड़ाई हेता। बोले रविदिशि प्रीतिसमेता॥

भुजङ्गप्रयातछन्द॥ नमोमार्तंडंप्रचंडंतमारी। नमोकल्मषामै दुखातंकहारी॥ नमोभानुमेंपातुप्राच्यादिबासं। नमोपातुवेदां गयाम्यार्तनाशं॥ नमोपातुतापेन्द्रदेवप्रतीचं। नमोमेरविंरक्षरक्षें दुदीचं॥ नमोरक्षिगर्भासिइशानदेशं। नमोसंयमापातुदेग्नेसुवेशं॥ नमोपातुनैऋत्यहीरन्यरेतं। नमोपातुवायव्यदेवार्कमेतं॥ न मोमित्र मूर्द्धानिसेधिष्णुमर्द्धं। नमोचारुणंपातुसर्बत्रबर्द्धं॥ नमो मातुसर्बांगसुर्यासंतोषं। नमोजन्ममृत्युर्जराव्याधिशोषं॥ नमोध र्मकामार्थनिर्बानदाता। नमोदोषदारिद्रसंतापहाता॥ नमोबिश्व भूताक्षभूतात्मभूपं। नमोज्ञानबिज्ञानरूपंअनूपं॥ नमोलोकनाथा दिमध्यांतमेकं। नमोतीव्रतेजार्कनामंअनेकं॥ नमोमेकचक्रंरथंदि व्यगामी। नमोकंदकालज्ञकारुण्यस्वामी॥ नमोनिर्मलंनिर्बिलो कंबिरालं। नमोभूषितंभूषणंरत्नजालं॥ नमोस्वर्णसंकासमाकाश बाशी। नमोसज्जनानंददाबेगराशी॥ नमोसूक्ष्मभाबिक्तप्रागल्भ मीशं। नमोब्रह्मबिद्याबिभौबैबलीशं॥ नमोत्रैगुणंत्वंत्रिमूर्तीत्रि कालं। नमोत्वंतुरीयंनिरीहंनिरालं॥ नमोत्वंसुरासुर्मृतासेव्यमा नं। करोसोकृपाज्योंतज्योंशत्रुप्रानं॥ यहीबीनतीदासरघुनाथकी है। यथाबालबानीलेह्योजानिहीहै॥

श्लो० सूर्य्याष्टकंयेनुदिनंपठेन्नरः मध्याह्नकालेशुचिनेमयुक्तः।
नश्यंतिसर्वाणिरुजानितस्यप्राप्नोतिमोदार्थजयाभिरामम्॥

यहिबिधिकरिबिनती जगदीशा। छाँड़ेशर रिपुदिशि इकतीशा॥

यक शर नाभसरामृत शोषा। बीस भुजा काटे करि रोषा॥
दशशिर काटिदशौ दिशिमाहीं। धरि आये रघुनंदन पाहीं॥
बिन भुजशिर धावा करिकोपा। कहां राम रण करहु अलोपा॥
तब प्रभु काटि किये युग खंडा। गिरत भूमि हाल्यो ब्रह्मंडा॥
तासु तेज प्रभु बदन समाना। देखि देव नभ हने निशाना॥
जय धुनि पूरि रही चहुं ओरा। तिनमधि कोशलराज किशोरा॥
कुसुमित किंसुक तरुक बीचा। राजत तरु तमाल जनु सींचा॥
जटा मुकुट सोहत मुनि बीरा। कर कमलन फेरत धनु तीरा॥
राजिव दृगकरि क्रिया निहारे। सुर नर मुनि सबभये सुखारे॥
यह छबि सुखद बसैउर जासू। मोह असुर तब होइ बिनासू॥
पतिबध सुनि मैजादिक रानी। आईं तहँ शिर पीटत पानी॥
रावण गति लखि देह बिसारी। लागीं कहन तासुगुण भारी॥
जेहि भुजबल जीतेउ सुर सर्बा। तनसुखकिह्नेउसकलसहगर्बा॥
सोइबपु बाहु श्वानशिव खाहीं। रामबिमुख कछुअचरज नाहीं॥
जासु कर्म फल चाहिय शोका। तदपि कृपालदीन निजलोका॥
देखि बिभीषण हूं दुख पावा। प्रभुप्रेरित लक्ष्मण समुझावा॥
अनुज क्रिया कीन्ही जसचाही। द्वितिया दिनआये प्रभु पाहीं॥
तबरघुपति लियबोलिअनंतहि। कपि ऋच्छप अंगदहनुमंतहि॥

दो० कह्यो बिभीषण जाइपुर राज्यदेहु जस रीति।
भलेनाथकहि नाइशिर कीन्हों तिलकसप्रीति॥
बाजे बाजन बहु किये युवतिन मंगल गान।
सहितबिभीषण लषणपुनि आयेजहँभगवान॥

तब प्रभु कह्यो पवन सुत तेरे। जनकसुतहि लावहु ढिग मेरे॥
सुनि पवनज अंगद लंकेशा। आइ मातु पद नायो शीशा॥
पूंछी कुशल कुशल सब भाषी। पुनि पवनज बोले मनमाषी॥
मातुतमचरिन तोहिं दुखदीन्हा। तेहिते इन्हैं चही बधकीन्हा॥
कह सीता जनि मारिय ताता। ऋच्छ मनुजकी बरणी बाता॥

सुनिसुख सहितबिभीषणभावा। षोड़श बिधि शृङ्गार करावा॥
शिविका सुभग माँझ बैठारी। लाये सादर जहां खरारी॥
पावक ते प्रकटन के हेता। कहे बचन दुर्बाद समेता॥
सुनि जानकी बहुरि दुखपाई। लक्ष्मण ते पावक मँगवाई॥
चिता रचाइ कह्यो तेहि पाहीं। रघुपतितजिगतिदूसरिनाहीं॥
तौ जल सरिसहोउतुम केशा। अस कहि तामें किये प्रवेशा॥
बिप्र रूप धरि पावक लाये। प्रभुइसौंपि असबचन सुनाये॥
राम बाम दिशि आसन दयऊ। देखि भालु कपिहरषतभयऊ॥
लषण राम सिय शोभा रूरी। निरखि सुमन बरषे सुरभूरी॥
दशरथ सहित राम पहँ आये। लषणसहित प्रभुशीश नवाये॥
बोले तब प्रसाद रिपुमारे। सुनि बिनती सुरलोक पधारे॥
तब बिरंचि बिनती बहु कीन्ही। प्रभुपदप्रीति मांगिसोलीन्ही॥
आइ बिनय तब कीन पुरारी। भल कीन्हे प्रभु बधे सुरारी॥
मन बांछित बर मांगिसिधाये। तब सुरेश बर बचन सुनाये॥
नाथ कृपा करि सुर मुनि रंजे। दास जानि सब के दुख भंजे॥
अब मोहिं जौन रजायसुदेहू। करहुं सो सुनिबोले प्रभु येहू॥
तात देहु कपि भालु जियाई। दिये जियाय अमी बरषाई॥
तब लंकापति बचन उचारा। नाथ करिय कछु अंगीकारा॥
कह प्रभु तोरकोश गृह मोरा। मोर कोश गृह तव न निहोरा॥
करहु कल्प भरि राजमिरामा। अंत समय आयो मम धामा॥
पुनि बोले पट भूषण लाये। कपि भालुन चहिये बरताये॥
कह प्रभु होई गहरु बिशेखी। मम मन है भरतहिकब देखी॥
ताते लै अकाश महँ जाहू। देहु बरषि मिलिहै सब काहू॥
जाइ बिभीषण नभ बरषाये। पहिरिपहिरि सबप्रभुपहँआये॥
नाना जिनिसि देखिकपिभालू। बिहँसि सकलते कह्योकृपालू॥
तुम्हरे बलमैं रिपु रण जीता। भे लंकेश मिलीम्वहिं सीता॥
हाई त्रिभुवन सुयश तुम्हारा। पुनि पैहौ परधाम हमारा॥

अबहिं जाहुनिजनिजगृहभाई। सुनि कपि भालु चले हरषाई॥
दो० सहित जानकी लषणयुत युत्थप सब लंकेश।
फनिदिन पुष्पक यान चढ़ि चले आपने देश॥
लखत लखावत बासनिज आये दंडक तीर।
मिलिघटजादिकमुनिनकहँपुनिगमनेरघुबीर॥
सो० चित्रकूट में आइ परतोषे मुनि साधु सब।
पुनि तीरथपतिपाइ न्हाइदान दीन्हों द्विजन॥
भरद्वाज कहँ मिलि सनमाना। शृंगमेरु पुनि आयउ जाना॥
मिला गुहा अतिप्रीति समेता। पवनजते कह कृपा निकेता॥
जाइ अवध भरतहि सुधि देहू। तिनके रहसिकहेउ म्वहिंतेहू॥
सुनिचलिभेकपि करिपरनामा। आइ रहे तेहिनिशितेहिग्रामा॥
इहां सकल शोचहिं पुरबासी। आवत हैं की नहिं सुखरासी॥
रघुपतिबिरह अनलसबजरहीं। सगुणसमुझिशुभधीरजधरहीं॥
अवधि बीच एकहि दिनजानी। कौशल्यादिमातु अकुलानी॥
फणि दिन रबिभरणीसहचावा। तिसरे पहर गनिकबोलवावा॥
पगपरि पूंछेहु सह अनुरागा। सुनि ज्योतिषी बिचारै लागा॥
कु० तिथिरु पहर संयुक्त करि बारहु तार मिलाय।
देइ सातकर भाग जो बचै तासु फल गाय॥
बचै तासु फलगाइ एकते तेहि अस्थाना।
द्वैते आवन कहत तीनिते मग में जाना॥
चतुरथ पहुंचे आइ ढिग पंचम पुनरावृत्तिबिथि।
षष्टव्याधिसमेतमुनिमृतककहैइमिबिष्णुतिथि॥
दो० यहि बिचारते जानिये आये प्रभु पुर पास।
सुनि सब मातनदान बहु दीन्हेसहितहुलास॥
श्रीविश्रामसागरेरघुनाथदासकृतेरावणबधारुरामायोध्यागमनं नामोनत्रिंशोऽध्यायः॥ २९॥ लङ्काकाण्डस्समाप्तः॥

—o—

श्रीगणेशायनमः

अथविश्रामसागर॥



उत्तरकाण्डप्रारम्भः ॥

दो० सुमिरिरामसियसंतगुरु गणपगिरासुखदानि।
सार्रामायण केरमत कहौं इतिहास बखानि॥
रहा एकदिनअवधिकर भरतसमुझि मनमाहिं।
लागे शोचन बिरह बश धीरज आवत नाहिं॥
तेहि अवसर हनुमान तहँ आये बिप्र स्वरूप।
रटत नाम अवलोकि कै बोले बचन अनूप॥
जासु बिरह शोचत अहौ आवत सो समरत्थ।
लषणजानकीसहितसुनि प्रमुदितमिलेभरत्थ॥
तातकह्यो सन्देश जस तस कछु नहिं जो देहुं।
ताते ऋणिया आप कर होंमैं उऋण न लेहुं॥
देखि भरतकी प्रीति कपि कही रामते जाय।
सुनत चले प्रभु यानचढ़ि पुर ढिगपहुँचे आय॥
भरतशत्रुहनसहितगुरु पुरजनसचिव समाज।
लेनसिधाये रघुपतिहि कहिजननिन ते काज॥
जहँ तहँ सुनि पुर नारि नर धाये दरशन हेत।
एक एक ते कहैं तुम देखे कृपानिकेत॥
कोटिनचढ़िगिरितरुअटनिनिरखैंव्योमबिमान।
कोटिन मंगल द्रव्यलै करहिं राम गुण गान॥

कु० अवधबिराजतआजुयामिनीजिमिबिरहिनित्रियचारु।

पतिआवतसुनि मुदितमन कीन सुतन शृंगारु ॥
कीन सुतन शृंगारु कोटि कटि किंकिणि जानौ।
मणिविद्रुम मय भवन अंग प्रति भूषण मानौ ॥
साजे बसन सुरंग संग सखि चित्र अनेका।
पग नूपुर पुर शोर घोर गति बाजत एका ॥
चंचल अंचल पानि पताका धुज फहराहीं।
ग्राम धामके लोग सकल धाये प्रभु पाहीं ॥
ऊंचअटनि परक्षत्र उचकि चितवत मग फूली।
कनक कलश कुचप्रकट मोदबशकंचुकि भूली ॥
भूली कंचुकि मोद बश नेत्र झरोखा खरब बघ।
यकटकरहैनिमेषतजि नारिरूपभयइमिअवध ॥
दो० भरतहि आवत देखिप्रभु त्याग्योतुरत बिमानु।
सन्मुख चले सनेह बश पठै धनद पहं जानु ॥
प्रथममिलेगुरु द्विजनपुनि गहे भरतप्रभुपाय।
बलकरि तुरत उठाय हरि भेंटे हृदय लगाय ॥
राम शत्रुहन मिले पुनि भरत लक्ष्मण दोउ।
पुरबासी क्षण में मिले बाल वृद्ध सब कोउ ॥
भरत शत्रुहन सीय पद परसे पाय अशीश।
पुनिभेंटेसबकपिन कहँ बिप्रन सहित मुनीश ॥
बाजहिं बाजनबिपुलसुरबरषहिंसुमनसराहि।
द्वारद्वार प्रति आरती करहिं लोग सबचाहि ॥
सुनिसुनि धाईं मातुसब ज्यों बच्छा हित धेनु।
प्रथम केकयी भेंटिपुनि मिलेसबन सुख देनु ॥
एकै दिन गे सबन गृह सब के भोजन कीन।
केहून जानेहु मर्म यह कच उतरावै लीन ॥
प्रात सप्तमी दिवस मुनि कह्योराज्य पद दैन।
सुनि रघुपति सब ऋषिन ते बोलेकोमलबैन ॥

नाथ द्रव्यमदराज्य मद बिद्या मदवपु लेखि ।
जो बन मद तहँराज्यमद सब ते यहै बिशेखि ॥
तेहिपाने कछु सुखनहीं केवल निरय निवासु ।
पुनि चंचल नहिं होत निजु ताते चहैन दासु ॥
सो० नर तन कर फलएक कहत बेद बुध आपुसम ।
परि हरि काम अनेकभजें सदा जगदीशकहँ ॥
सुनि बोलेऋषिनाथ तुमबिन अस को कहैप्रभु ।
सो माया तव हाथ काल कर्म गुण जासुबश ॥
जो सुमिरत तव नाम ते छूटत अभिमान ते ।
प्रभु परिपूरण काम तेहिक होइ श्रीराज्यपद ॥
तेहि ते लेहु राज्य पद राखा । पूजै हम सबको अभिलाखा ॥
भले भाखि पट भूषण साजे । घरघर मोद बधाये बाजे ॥
मंगल द्रव्य अनेक प्रकारा । लैलै आये अनुग अपारा ॥
योजन एक कनक की छोनी । तामधि चंद्र बेदिका लीनी ॥
ताके बीच महल यक रंभा । मणिमयचहुंदिशिषोडशखंभा॥
कोनेन प्रति सुरतरुतहँ आसन । तेहिगृहमध्य रतनसिंहासन ॥
तेहि पर कमल अष्टदल केरा । धरे बिबिध भाजन चहुंफेरा ॥
गुरु बशिष्ठ शुभ सम्मत चाहा । तेहि ऊपर बैठन हितकाहा ॥
कुं० बिप्रन शीश नवाइके सिंहासन श्री राम ।
बैठे श्री सीता सहित मानो रति युत काम ॥
मानो रति युत काम किधौं श्रीयुत भगवाना ।
किधौं तड़ितयुत मेघ किधौं बिद्यायुत ज्ञाना ॥
किधौं सिद्धियुतवृहद रबि कल्पलताप्रदछिप्र ।
छबिशृँगारुधर्म कीर्त्तिलखि बेदउच्चरैं बिप्र ॥
शशिसमछत्रसुकण्ठ कर चवँर बिभीषणहाथ ।
लषण लिहे आदर्श वर अंगद पावन पाथ ॥
अंगद पावन पाथ पान रिपु दल नपवावै ।

बिंजन करत निषाद भरत सबकाढ़ि गलावै ॥
जामवन्तहनुमन्तकरछुरी छबीलीशक्ति असि ।
बचनसुधारसतरनितनचंदनुशिरचंद्रिकाशशि ॥
नाक नटी गुनगम जटी लटी न छुटी अनूप ।
ठटनि ठटी नहिंकछुघटी मननिपटी पटरूप ॥
मननिपटी पट रूप टाहि बिघट हिगतिऊपर ।
झटकिसुकरकटिमटकिलटकिपटकहिपगनूपुर॥
नूपुर पटकहिलटकिछबिलखिमटकैबुधिबाक ।
ता नकटी सुनि चटपटीलहै मनुजमुनि नाक ॥
जान्यौ जब अविशेष की आई घटिका सिष्ट ।
प्रथमैं श्रीरघुनाथ शिर कीन्होंतिलकबशिष्ट ॥
कीन्हौं तिलक बशिष्ठअपर सब तिनकेपाछे ।
करहिं आरती मातु निछावरि पटअलिआछे॥
बिप्रन दीन्हों दान सोईज्यहि जोमनआन्यों ।
नृपन धरी वहु भेंट बंदि त्रिभुवनपतिजान्यों ॥
तब विरंचि करजोरि कै बोलसम्मुख बयन ।
जयरघुनाथअनाथपति प्रणतपालसुखअयन ॥
प्रणतपाल सुखअयनमयन छबिकोटिबिराजै ।
धन्य भाग्य बड़तासु लखाजिनयाहिसमाजै ॥
लखा समाजैआजुमाहिंदानदेहुनिजभक्तिअब ।
सुनितथास्तुबैठे पुरः आये मुदित महेशतब ॥
बंदेहं त्वत्पद प्रभो संश्रिताब्धि दृढ़ पोत ।
परि भवांघ्रि धेयंसदा तीर्थास्पद सुख सोत ॥
तीर्थास्पद सुखसोत नुतंकमलजहरि ईशं ।
प्रणत पाल आभीष्ट द्रोह भृत्यारत खीसं ॥
खीसंकृत अघ ओघ सभ्य श्रा मुनि मानंदे ।
गुणागार मे पातु शरन्निश्याहं वंदे ॥

बिप्र रूप धरि बेद तब बोले गिरा अनूप।
जयजगदीशअजीसपति निर्गुणसगुणस्वरूप॥
निर्गुण सगुण स्वरूप भूपभव पार उतारण।
जेनर तजि तव भक्ति यचत जग सुखकेकारण॥
सुर दुर्लभ तनु पाइते पतत नरक महँ छिप्र।
चरण कमलरति देहुसुनि सबहिन जानेबिप्र॥
बोले बिश्वामित्र तब जय जन बन मन हंस।
रघुकुल कुमुद चकोरशशि शिवधनुकृतविध्वंस॥
शिवधनु कृत विध्वंश बंशयुत असुर निकंदन।
जय सुर नर मुनि पाल कालसबदशरथ नंदन॥
दशरथ नन्दन भक्ति देहु निज मोहिं अडोल।
तब तहँ बाल सरूप आइ सनकादिक बोले॥
जय भगवन्त अनन्त अज अनघ अनामैं एक।
करुणासिंधु सर्बज्ञ शिव सुख प्रद नाम अनेक॥
सुख प्रद नाम अनेक करम तव पावन कारी।
काम क्रोध मद मोह लोभगज सिङ्खस्वरारी॥
जगदधितारनपोत दृढ़ कहतसुनतहरिलेतभय।
बसहुसदा ममउरअयन सीतालषणसमेतजय॥
कह बशिष्ठ कर जोरि तब जय प्रभुरूप तुमार।
बचन अगोचर बुद्धिपर जाने कहा गंवार॥
जाने कहां गंवार परस धरसके न जानी।
प्रकट बिष्णु अवतार वेग निजकीन्हिनि हानी॥
शिव अरधंगिनि दक्ष जाभूमबशबहुसंकटसहा।
खगपति काग भुसुण्ड सेभूले तो जड़नरकहा॥

दो० आपु जनावहु जाहिसो बिनश्रम लेइ पिछानि।
ममउरकरहुनेवाशनित यहिसमाज सुखदानि॥

कु० यहि बिधिसुर नर नाग नृपसबहिनबिनतीकीनि।

तबरघुपतिसब कपिन कहँ निजपरसादीदीनि ॥
निज परसादी दीनि मुकुट लंकापति पावा।
कुंडल लहे सुकुण्ठ भालु हनुमत गरनावा ॥
पीताम्बर युवराजकहँ दीन्हों जामा ऋच्छपहि।
औरौ गहनमँगाइ बपु बच्योन कोई भांतियहि ॥
सबबिधिसबहि प्रसन्नकरि बोले मुनिते राम।
बिपति मांझ एसखा सब आये मेरे काम ॥
आये मेरे काम नाम जिन केर बतायो।
तिनजो कीन पुषार्थ तासुसह प्रीति सुनायो ॥
भरतहुतेमोहिंअधिकप्रियदेहुंकहाअसकवनिनिधि।
लषणचरितकाकहउँजिनसेवाकीन्हीसकलबिधि ॥

सो० सुनत सभा हरषानि जयकहि सुर बरषे सुमन।
शरण सुखद प्रभु बानि पहिरे पट भूषणबहुरि ॥

छंद ॥ पुरवासीनरनारिजेकहैंकिआजबिशखि। नयनसफल करिलीजियेरघुपतिछविदेखि॥ नीलजलदमनिसरिसबपुदिनकर मणिसमतेज। कोटिमनौभवतेरुचिरराजतमनिमेज ॥ रतनजटितमनिमुकुट शिर जगमगतअपार। श्रुतिकुंडलनिजकेतुके दीन्हेंजनुमार ॥ भृकुटीललितलिलाटमें दिहेतिलकसुभास। जनुलायेअलिरबिकिरिनि हितकमलप्रकास ॥ चंचलचारुबिशालद्दगमधिप्राणसोहाव। मानहुंविविखंजनलरैंसुखकरतबराव ॥ श्यामसुकेशप्रसूनघरजनुमणियुतनाग। उतरेमुखशशिअमोहित लखिरिपुडरलाग ॥ बिम्बादाड़िमदशन मंदिरसनसुरंग। कमलकोशमेंकुलिशजनु बसेदामिनिसंग ॥ मन्दहासबोलतमधुरखाये मुखपान। धरकृपादृष्टिकीवृष्टिसोंकरैअमीसमान ॥ कम्बुकण्ठकौस्तुभलसैमुक्तनकीमाल। पयदमध्यसोहीमनो बगपांतिबिशाल ॥भुजअजानुवरजनुवहीयुगयमुनावार। धनुशरतटभूषणभवँरकरकंजउदार ॥ असितशयलउपबीतिउरबोढ़ेउपबीत। लसत

क्षीरसरितामनोत्वपलालखिमीत॥ नाभिशिरसत्रिवलीसुपथरोमा वलिसेबाल। कटिकेहरिहरिकिंकिणीजनुसुरबरमराल॥ कदलि जंघयुगफबरनूपुरअनमोल। पुरटपदुमकेकलिनमेंजनुअलिगनबो ल॥ अरुणचरणचिरचिन्हयुतयुगपदजनखाभ। श्यामरक्तहरिद लनिजनुबैठेजलदाभ॥ बिधिहरिहरध्यावतजिन्हैंसुनिगणतजि साथ। तिनपायनमेंप्रीतिदृढ़ चाहैजनुरघुनाथ॥

दो० यहिबिधि नखशिखरूपलखि मुदितहोंयसबकोइ।
एक एक ते आइ गृह बोली बूझेउ सोइ॥

हेसखि आजु राम छबि देखी। नयनन मम परहरी निमेखी॥
तहँ पुनि बसत अंग प्रभुकेरे। अद्भुत रचना हेरी नेरे॥
युगल कंज दश दलतिन माहीं। बसत मराल उड़त ते नाहीं॥
पिकबक कीरलाल मिलि डोलैं। बैठे घेरि चहूं दिशि बोलैं॥
तिनके मध्य मयन रथ केरे। चक्र बिराजन मणि मयढेरे॥
कमल नाल रति गलकी हासा। रंभा तरु तेहि ऊपर बासा॥
तेहि पर गज करि पर मृगराई। दिव्य बसन ते दीन उड़ाई॥
हरि पर शर मधि भँवरु बिराजै। बिबिधि बरण के पंछी राजै॥
शर पर कनक केर गिरि दोई। तिन पर रहा नीलघन सोई॥
तेहि पर सुमन पंच रँग फूले। ता मधि बैठि परेवा भूले॥
तेहिपरकुसुमकुसुमपरअलिसुत। तेहिपर युगबिंबाफलअद्भुत॥
तेहिपर शुक अतिसैलागतभल। लीन्हे पल्लवचोंच सहितफल॥
शुकतर पिकऊपर बिबि खंजन। खंजन परघनपरशशि रंजन॥
इतउत दिन मणिउदितसोहाये। मानहुँ शशि सहायहितआये॥
शशि ऊपर बहुनखत सोहावन। इन्दुम इन्दु लसतमनभावन॥
तेहिपर गिरि गिरिपर बनसोहै। तेहि बिच लाल पंथमनमोहै॥
तेहि पर मणिधर नागिनिदेखी। तेहि अधदीरघ सरिता पेखी॥
तेहिते बही सरित युग जोई। जलचरबिपुलबिबिधिबिधिसोई॥
फूले कमल मिथुन एक संगा। कीड़त बिहंग जानि बहु रंगा॥

सुनत सखी सो देखन धाई। मुदित भूप के मंदिर आई॥
दम्पति रूप देखि हरषानी। आई भवन तोरि तृण पानी॥
दो० यहि बिधि सायं काल भो रहे दीप पुर पूरि।
मनहुं शेष आये मिलन किधौं धरणि सुतभूरि॥
तब मुनि मुदित रजायसु दीन्हा। संध्या बंदनसबहिन कीन्हा॥
राज्या सभा पुनि बैठे आई। हरषि पहरभरि रयनबिताई॥
सेवक आइ कही तब बाता। चलहु भवनप्रभु बोलतमाता॥
उठे तुरत पुरु जन शिर नाई। गे निज भवन रजायसु पाई॥
आये रघुपति जहँ महतारी। अनुज सियायुत कीनबियारी॥
अँचवनकरि पुनि बीरा खादी। हनुमदादिजनलिहिनिप्रसादी॥
बोला सुखचलि सोवहु श्यामा। आये तब प्रभु कंचन धामा॥
देखि सखिन हँसि पांयपखारे। मणिमय अठसिल्या बैठारे॥
सुक सुगंध मेवा पकवाना। धरे कनक भाजन भरि नाना॥
सुर नर नाग सुता अनुरागीं। नृत्य गान मिलि करनेलागीं॥
देखतही गे सोइ कृपाला। लखि प्रभातबोलातब साला॥
उठहु नाथ जगनाथ हमारे। बिधि हरि हर मुनिठाढ़े द्वारे॥
मिलिसबहिनकहँ दरशनदीजै। याचक सकल अयाचककीजै॥
बिहंग बचन सुनि उठे खरारी। देखि सखिन आरती उतारी॥
प्रीति सहित दातूनि कराई। मिले सबन पुनि द्वारे आई॥
बिप्रन दान देइ बहु रंगा। सेवक सखा अनुज लै संगा॥
जाइ कीन सरयू अस्नाना। देखिलोग सुख लहैं निदाना॥
पूजन करि पुनि मन्दिर आये। मुदित मात तब असनकराये॥
कछुक बार करि सयन कृपाला। पुनिसबमिलिआयेनृपशाला॥
राम राज्य बैठे जब तेरे। त्रिभुवन दुःख मिटे सब केरे॥
कामधेनु भय भूमि सोहाई। मांग मेघ देइ जल आई॥
चारिहु बर्ण धर्म निज चरहीं। कोउ काहू ते बैर न करहीं॥
बाल वृद्धयोबन नर नारी। सबकै प्रभु पद प्रीति अपारी॥

रघुपति चरित सुनै नित कहई। परमानन्द मगन सब रहई॥
अजहूँ जे हरि पद मन लावैं। राम राज्य कर सुख ते पावैं॥
रघुपति चरित सुनैं जे कहहीं। निश्चयते अव्ययपद लहहीं॥

दो० राम चरित्र बिचित्रअति कहिकोइलहैकिपार।
सुखप्रद निजमति सरिसमैं तुम्हैं सुनाये सार॥
सुनिहरषे श्रोतासकल धन्यभाग्य निज जानि।
कहत दास रघुनाथअब सहितजोरि युगपानि॥
हे प्रभु सीतानाथ तुम जस फुरमायो मोहिं।
तसमैं भाष्यो ग्रंथ यह सो अर्पतहौं तोहिं॥
श्रीगुरु देवादास के चरण कमल धरिमाथ।
राम चरित सुखप्रद कछुक बरणो जनरघुनाथ॥

तोमरछन्द॥ श्रीरामचरणप्रताप। कछुकीनकिरपाआप। तेहि नाथचरितसिखालि। अबकहतगुरुपरनालि॥

कवित्त॥ श्रीरामानुजसंप्रदायद्वाराअग्रदासजूकेतहांकेमहन्त भेगोविन्दरामजानिये। तिनहींकेशिष्यसन्तदासतस्यकृपाराम कृपारामजूकेरामचरणपिछानिये॥ रामचरणजूकेरामजनतस्यका न्हरभेकान्हरकेशिष्यहरिरामकोबखानिये। हरीरामजूकेदेवादास रामनामभालदेवादासजूकेरघुनाथमोहिंजानिये॥

दो० इष्ट हमारो राम सिय रामनाम प्रिय भाल।
राम रकार मकार है बिन्दु जानकी लाल॥
पावनको पावन करन शिवको धनु मुनि पर्ण।
सुचि संतन के प्राण हैं राम नाम दोउ बर्ण॥
बिबिधग्रंथबहुबिधसुमन मममतिमाखीजानि।
बिश्रामो दधि ग्रन्थ मधु कीन इकट्ठे आनि॥
स्वच्छ मधुर आरोग्य शुचि आवतसबके काम।
जतन किहे सहजे मिलै नाहित महँगे दाम॥

कथा रसिक जे संत जिमि गुणग्राही रस चोर।
ते आदरिहैं ग्रन्थ यह देखि परिश्रम मोर॥
लहिहैंसुख सम्पतिबिबिधजैहैं मिटितिहुंताप।
चारों युग में प्रबल है रघुपति भक्ति प्रताप॥

छन्द॥ अतिप्रबलभक्तिप्रतापसबपरईशजेहि निजवशकरे। कलिकालहूहरिभजनकरिबहुजीवभवसागरतरे॥ सर्बज्ञशंभुबि रागमुनिजपयोगतपप्रेमीजने। शठकोपजामुनिबर्जिशुचिनवन न्दगोपादिकघने॥ अहिनाथसुरुतरुतरणिनीवादित्यतमभ्रमहारे हू। सममेघमध्याचार्यस्वामीविष्णुवोहिततारेहू॥ गुरुनिष्टलाला घार्य्यरामानन्दश्रीरँगरंगियो। पयपानकृतकीलाग्रशंकरनामसुर पारसवियो॥ जयदेवश्रीधरबिन्दमंगलज्ञानदेवत्रिलोचनं। भ थजासुसेवकआइश्रीपतिप्रेमबशदुखमोचनं॥ पृथुरूपबल्लभभूप जनजेहिरामसियदधिमेंलखे। बिबिसूरकूबागदाधरहरप्रेमनि धिमंगलसखे॥ गतिगूढ़हरिअनुकरनराजहि पाणिपुरषातमदि यो। प्रियलागिकर्माकेरि खीचरिबोलिनिजमंदिरलियो॥ सिय टूकभजिनिजसुतनबिषदै प्रभुइपियवाईभई। हरिहंसमामाभान जेसदवृत्तिकीकसनीलई॥ भइभुवनकीअसिसारिकीसितकेशदेवा हितकरे। दियोदाहकामध्वजकलेवरआइजेमलदिशिलरे॥ घर दीनमहिषीगोपकीद्विजहेतुचलिसाखीभरी। शिरनयोगणिकाका नशक्ता दासलगिनिजउरधरी॥ सुखपावसुन्दरिरामकहि रैदास हरिहिबोलायहू। बहुबाररामकबीरहित धनुदीनबरदीलायहू॥ बिनबीजजामेहुधनाकोशशिसैनहितछुरहरिगही। रघुनाथमाधव दासजनको शौचकरवायोसही॥ हरिव्यासदेबिहि दीनिदिक्षान रहरीसमधीलई। त्रिपुरारितत्वाजीवनित्यानंदनाभाअनभई॥ भृगभैंदेवमुरारि गजगोबिन्दगिरिधरकोसखा। गोपालरूपसना तनातददीननगलीन्हेलखा॥ बिठलेशलालाभक्तनरसी खल नबहुपरचैदये। परमार्थकेरसरूपपीपा पतितबहुपावनकिये॥

कोतल्लकेशवभट्टमीरा लीनगिरिधरमेंभई । रतनावतीकरमैति भक्ति गणेशदैदृढ़करिगई ॥ चतुरोगतुलसीदासपावन रामयश जिनउरधरेहु । कविकृष्णलषणप्रयागजूड़े युगुलहरिजनआद रेहु ॥ भेऔरहूबहुसंतअबजे अहेआगेहोइहैं । रघुनाथतिनके चरितसब कहिसकैनहिंअसकोइहै ॥ जिमिक्षीरसिंधुअपारखग निजचोंचसमभरिपावहीं । तेहिभाँतिकविनिजमतिसरिस हरि संतजनगुणगावहीं ॥

कुं० अहो संत भगवंत गुरु बिनयकरहुं ममकान।
यहोंनमहि सुखदेवसुखबिधिसुख पुनिनिरबान ॥
बिधिसुखपुनिनिरबान ऋद्धिसिधिसकलधरीजै।
जहँ राखो प्रभुमोहिं तहां निजपद रति दीजै ॥
दीजैपुनि सतसंग जहँ तवगुन सुन वाकोलहौं।
भक्तिबिमुखकरबदनजनिदेखरायोंसुखप्रदअहौं ॥

अयन तीसरे संख्या गाई। युग सहस्र नवसै हैं भाई ॥
और सतत्तर नानो जोई। इतनी हैं चौपाई सोई ॥
दोहा पांचसै साठि सब जानो। नब्बे सोरठ सोइ पिछानो ॥
हैं छप्पै बावन यहि माहीं। गितिकाछंदउन्तालिसआहीं ॥
चौबोला युग यामें होई। मंजु छन्द यक सुंदर सोई ॥
छंदै हैं मुनि कहा सोहाई। कुंडलियाम्बहिं बीसलखाई ॥
तोटक एक यक दंडक जानो। कमल एक यकतोमर मानो ॥
रोला वेद वेद अश्लोका। रुद्र त्रिभंगी छन्द बिलोका ॥
एक मालिका यामें भाई। संख्या अयन कहा मैं गाई ॥

सो० महिखर छन्द जो एक युग नराच छंदै अहैं।
भुजंग प्रयाता एक एक कबित यामें बिशद ॥

दो० जो कछु देख्यो चूक मम क्षम्यो जानि अज्ञान।

पराधीन जग जीव सब ज्ञानी इक भगवान ॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागर श्रीमज्जगज्जननि
जनकजानकीरामस्यानुगानुगोहंश्रीरघुनाथदास
रामसनेहीनिर्मितबिश्रामसाग

ग्रन्थःसमाप्तः



कमल	कुन्द	निवारी	दुपहरिया
महादेव	यमराज	हनुमान	इन्द्र
हंस	गरुड़	पपीहा	गीध
बेला	केवड़ा	गुल्दावदी	पियाबासा
राम	गणेश	शनिश्चर	भैरव
मैना	कोयल	खूसट	बया
कलगा	सुदर्शन	गुलमहदा	नरगिस
भरत	पवन	जल	शारदा
टिटीरी	भरदूल	खड़रैचा	चंडूल
कंदयल	मरुवा	गुलफिरंग	सेवती
अन्न	शुक्र	अश्विनीकु०	स्वामिका०
गरगवा	कटनाश	तूती	सारस

गुलाब	निवारी	कदम्ब	दुपहरिया
हरि	हनोमान	सूर्य्य	इन्द्र
सुवा	पपीहा	हारिल	गिद्ध
बेला	मोतिया	गुलाचान	गुल्दावदी
राम	कृष्ण	शत्रुहन	शनिश्चर
मैना	बाज	मुरैला	खूसट
चमेली	जूही	अनार	गुलाबास
ब्रह्मा	पावक	नरसिंह	बृहस्पति
काग	चकोर	तीतर	शार्दूल
कनयर	मरुवा	नरगिस	गुलफिरंग
अन्न	शुक्र	शारदा	अश्विनीकु०
गरगवा	कटनाश	चंडूल	तूती

(४)

चांदनी	कुन्द	गुल्लाला	मोतिया
सीता	यमराज	गुरुजन	कृष्ण
लाल	गरुड़	कठफोरा	बाज
चमेली	निवारी	कलगा	गुलमेहदी
ब्रह्मा	हनुमान	भरत	जल
काग	पपीहा	टिटीरी	खड़रैचा
गुड़हल	जूही	केतकी	सेवती
देवी	पावक	मुनि	स्वामिका०
महरि	चकोर	बटेर	सारस
कनैर	मरुवा	गुलाबास	गुलफिरंग
अन्न	शुक्र	बृहस्पति	अश्विनीकु०
गरगवा	कटनास	शार्दूल	तूती

(८)

गेंदा	केवड़ा	कदम्ब	दुपहरिया
लक्ष्मी	गणेश	सूर्य्य	इन्द्र
बकुला	कोयल	हारिल	गिद्ध
गुल्लाला	मोतिया	पियाबासा	नरगिस
गुरजन	कृष्ण	भैरव	शारदा
कठफोर	बाज	बया	चंडूल
कलगा	चम्पा	केतकी	सेवती
भरत	बुध	मुनि	स्वामिका०
टिटीरी	बुलबुल	बटेर	सारस
कनैर	अनार	गुलाबास	गुलफिरंग
अन्न	नरसिंह	बृहस्पति	अश्विनीकु०
गरगवा	तीतर	शार्दूल	तूती

(१६)

हरिसिं०	सुदर्शन	गुलाचीन	गुल्दावदी
चन्द्रमा	पवन	शत्रुहन	शनीचर
कबूतर	भरदूल	मुरैला	खूसट
गुड़हल	गुलमहदी	पियाबासा	नरगिस
देवीजी	जल	भैरव	शारदा
महरि	खड़रैचा	बया	चंडूल

अंगुली रखकर इस प्रश्न को निकालतेहैं ॥

१	२	१३	८	२६	३४
३१	३३	२८	१५	०	..

जूही	चम्पा	केतकी	सेवती	१०	१४	२०	२०	१६	..
पावक	बुध	मुरबर	स्वामिका०						
चकोर	बुलबुल	बटेर	सारस	६	१८	४	२२	५	..
महुवा	अनार	गुलाबास	गुलफिरंग						
शुक्र	नरसिंह	बृहस्पति	अश्विनीकु०	३	८६	१६	६	३०	..
कटना०	तीतर	शार्दूल	तूती	१५	१०	१२	२५	२१	॥

बन्दि गणाधिपशारदा रामसियागुरु बिष्णु ॥
हरिप्रेरित रघुनाथजन बरणत मानस प्रष्णु १
कहमहेश प्रभुपद कमलभजकुरि भेषमराल ॥
होहै मंगल लाभबहु मिटि है सब दुख हाल २
जैसा रंग गुलाब का तैसा यह संसार ॥
कह हरि मति भूलै सुवा यामें दुःख अपार ३
पढ़िमैना बंदि में पर्‌यो अबते सुमिरहु नाम ॥
जब वह बेला आइ है तबहीं सरिहै काम ४
कह सिय पियगुनलालसे सुयशचांदनीछाय ॥
मिलतमोदगावतसुनतगनतबिपतिसबजाय ५
कुंदसरिसतनआउबटि लक्ष्मणभलकुलनीक ॥
कहत धर्मकरि गरुड़पति भजे होइ सबठीक ६
काक भक्ष को त्यागिकै लीन चमेली बास ॥
कहबिधि अस सतसंगहै करु पूजी सबआस ७
सुमिरिनाम चातकसरिस मनका मैलनिवारि ॥
करतल तेरे चारि फल कह हनुमान पुकारि ८
जिन करि तू सुख चहतहै तिनते होई दुक्ख ॥
बकगेंदासमकुटिलअतिश्रीपतिसनमुखसुक्ख ९
बुद्धिमान गणपति सरिस बोलत कोकिल बैन ॥
भजहु हरिहि ह्वै केवड़ा तुम समकोसुखऐन १०
मित्रमिली होरिलमिली सम्पति मिलीकदम्ब ॥

भूलेहुजनि रघुनाथको मतिहिदुखायोअम्ब ११
कीनक्रियाजिमि गीधकी तज्योइन्द्रसुतजानि॥
तासुचरणदुपहरसरिस भजुतूसुखकीखानि १२
सेवहु गुरुजन प्रीति करि फूली मुद गुल्लाल॥
कटफोरवासमरिपुमिटी मिलीसुहृदसुत बाल १३
भरतरहनि धरु हृदय महँ तनु टीड़ी सुत मूल॥
कलगाभक्ति बढ़ाइये निशिदिन मंगलमूल १४
गई ताहि अबझखैमति रहीते भुज नँदलाल॥
कालबाजिशिरसूझिनहिंपरयोमोतियाजाल १५
कर्मकृषी भलि कीजिये जेहि उपजे सुखअन्न॥
चुगहिगरगवाजीवतव होइन कँदयल मन्न १६
सोम परेवा का लखै करु तू हरि शृङ्गार॥
देखुनयनभरिसुखदछबियहिअवसरयहिबार १७
भरुही के अगडा बचे बच्यो पवनसुत जानि॥
तिमितूबचिसुखभोगिहै सुमिरुसुदर्शनपानि १८
गुलाचीन करहार करि रिपुहंतहि पहिराउ॥
पैहैविजयविनोद यश मोर तोर मति गाउ १९
बसै शनिश्चर पाय तेहि फिरै दावदी जैस॥
बिनहरि सुमिरेसुखनहीं खोउनखूसट वैस २०
गुड़हलसम तनहरि भगति देवी शीशचढ़ाउ॥
हाइसिद्धकल्याणजेहि महरिसुवनयशगाउ २१
दुखसुखआवतसमय पर ज्यों खंजनऋतुपाइ॥
आनँदजल बरषतउठी गुल्मेहदी हरियाइ २२
जूही अपने मित्र हित पावक खात चकोर॥
जोहरिसुमिरैप्रीति ते क्योंन होइ फलतोर २३
नारि खहेरिया सरिसहै छूमति मन कट नाश॥
मरुआ पकरिझुलाइहै कविकौड़ी की आश २४

ज्यों मधुकर चंपहि तजै त्यों तूतज यहकाज ॥
बुलबुलसेलड़िजाइहौ कहबुधफिरिबनराज २५
बिनबर्षाघन समुझि घर दीन्हेबयन बिसारि ॥
पियाबास तवतिमितजा भैरवआश निवारि २६
तीतर त्यागे प्राण निज गा अनार तरु सूखि ॥
नरसिंहकोकरुआदिअब तूमतिकाहुइ दूखि २७
सुमिरि शारदाके चरण चढ़ै न क्यों चणडूल ॥
नरगिसकरिक्याकरहिंगे जोईश्वर अनुकूल २८
रहिये रहनि बटेरकी चढ़िये सुयश गजारि ॥
लहैकेतकीबासकिमि मुनिवरकहतबिचारि २९
सारस बदको आद करु है सो मंगल खानि ॥
स्वामिकार्तिक रटतजेहि शंभु सेवती मानि ३०
गुलाबासकी आश तजि शारदूल को ध्याव ॥
होई सुख परदेशमें कहत बृहस्पति जाउ ३१
गुल फिरंग फूली बिपिन भई कृपणके दर्बि ॥
कहरबिसुत हरिबिन वृथा तूती बोलै अर्बि ३२
श्री गुरु देवादासके चरण कमल धरि माथ ॥
बरणौं मानस प्रश्नयह पूरणजन रघुनाथ ३३
देव सुमन अरु खगनके नाम जानि यकतीश ॥
पंच धाम कोठा असी अंक पाँच तिनशीश ३४
सकल सुनावै नाम जो धाम मध्य ठहराइ ॥
अंकजोरिदोहा समुझि सगुनहिं देउबताइ ३५

इति ॥

—*—

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
वाराह पुराण	युगुल विलास	पद्मावतीखण्ड	हरिहरसगुणनिर्गुण
भविष्योत्तर पुराण	तुलसी शब्दार्थ प्रकाश	शुकबहत्तरी	पदावली
स्कन्ध पुराण	भजनावली	बकावली सुनन	कायस्थवर्णनिर्णय
वाल्मीकीय रामायण	प्रेमरत्न	चहारदरवेश	बिहारवृन्दावन
अद्भुत रामायण	चित्रचन्द्रिका	क़िस्साहातिमताई	समरबिहार वृन्दावन
सुन्दर विलास	बारहमासा बलदेवप्र-	अपूर्व्व कथा	कल्पभाष्य
नाटक	मनोहर लहरी	क़िस्सा गुलसनोवर	लक्ष्मीसरस्वतीसम्वाद
प्रबोधचन्द्रोदय	गंगालहरी	दास्तान् अमीरहमज़ा	**दरसी**
रामाभिषेक	यमुनालहरी	सहस्र रजनी चरित्र	अक्षरावली
आनन्दरघुनन्दन	जगद्विनोद	राबिन्सन का इतिहास	स्वयम्बोध
भ्रमजाल नाटक	शृंगारबत्तीसी	सीताहरण	ज्ञानचालीसी
वेदान्त	नवीन संग्रह	सतीविलास	दोहावली
योगवाशिष्ठ	उपदेशचन्द्रिका	क़िस्सामर्द औरत	बालाबोध
आनन्दामृतवर्षिणी	मङ्गलविनोद	साङ्गीतप्रह्लाद	विद्यार्थी की प्रथम पुस्तक
सांख्य तत्व कौमुदी	विजयचन्द्रिका	**मुतफ़र्क़ात**	किताबजंत्री
काव्य	सिद्धान्त संग्रह	शनिश्चर की कथा	गणित कामधेनु
सूरसागर	रामविनय शतक	ज्ञानमाला	लीलावती
कृष्णसागर	**राग**	गोपीचन्द भरतरी	पटवारियों की पुस्तक
कबीरग्रन्थ	राग प्रकाश	कथा श्री गंगाजी	४ भाग
प्रेमसागर	लावनी	अवधयात्रा	**वैद्यकभाषा**
ब्रजविलास बड़ा	वीणाप्रकाश	भरतरी गीत	निघण्ट
ब्रजविलास छोटा	**क़िस्सा वग़ैरह**	दानलीलाव नागलीला	अमरविनोद
कृष्णप्रिया	नानार्थनौसंग्रहावली	दोहावली रत्नावली	वैद्यजीवन
विजयमुक्तावली	ब्रह्मसार	गोकर्णमाहात्म्य	औषधिसंग्रह कल्प-
अनेकार्थ	शिवसिंह सरोज	श्री गोपालसहस्रनाम	वली
छन्दोर्णवपिंगल	भक्तमाल	कथा सत्यनारायणस	अमृतसागर बड़ा
रसराज	इन्द्रसभा	हनूनाटक	अमृतसागर छोटा
सत्सई मूल	विक्रमविलास	हनुमानबाहुक	वैद्यमनोत्सव
सत्सई सटीक	बैतालपच्चीसी	जनकपच्चासी	दिल्लगन
सभाविलास	सिंहासनबत्तीसी	वनयात्रा	इलाजुलगुर्व्वा

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
जातकचन्द्रिका	जातकाभरण	मार्कण्डेय पुराण	भूगोलदर्पण
जातकालङ्कार	होरामकरंद	सङ्ग्रहशिरोमणि	इतिहासतिमिर नाशक
दैवज्ञाभरण	मुहूर्त्तमार्त्तण्ड सटीक	सर्रिश्ते तालीमकी	१ व २ व ३ भाग
ज्ञानस्वरोदय	रसायनप्रकाश	पुस्तकें	अवधदेशीय भूगोल
रमलसार	संस्कृत उर्दूटीका	संस्कृत	इंग्लिस्तानका इतिहास
रमलनौरत्न	मनुस्मृति	ऋजुपाठ १ व २ व ३ भाग	हितोपत्रिका
इन्द्रजाल	विष्णुहारीत	धात्वर्णव	बालाभूषण
संस्कृतकी पुस्तकें	सहिस्रस्तोत्र	नागरीकैथी	पद्यसंग्रह
लघुकौमुदी	व्रतार्क	वर्णमालाकैथी १ भाग	भाषाकाव्यसंग्रह
सिद्धान्तचन्द्रिका	याज्ञवल्क्यस्मृति	तथा २ भाग	कवित्तरत्नाकर १ व २ भाग
भाषातत्वप्रकाश	संस्कृतभाषाटीका	कैथीफारसीनागरी	मङ्गलकोष
पञ्चमहायज्ञ	अमरकोषतीनोंकाण्ड	हरूफमुफर्दात	अङ्कप्रकाश
निर्णयसिंधु	याज्ञवल्क्यस्मृति	अक्षरारम्भ	गणितप्रकाश १ व २ व ३ व ४ भा.
भगवद्गीतापञ्चरत्न	संध्यापद्धति	वर्णप्रकाशिका १ व २ भा.	गणितक्रिया
दुर्गापाठमूल	व्रतार्क	सूरजपुरकी कहानी	क्षेत्रप्रकाश
दुर्गापाठसटीक	भगवद्गीताटीकाहरिबं-	धर्मसिंहकावृत्तांत	क्षेत्रचन्द्रिका १ व २ भाग
कथायमद्वितीया	शलाल	शिक्षावली	सकीलदायरा
अपराधभञ्जनस्तोत्र	भगवद्गीताटीका आन	पत्रहितैषिणी	रेखागणित १ व २ भाग
कायस्थकुलभास्कर	न्दगिरि	पत्रदीपिका	बीजगणित १ भाग
कायस्थधर्मनिरूपण	गीतगोविंद	विद्याचक्र	गुटका १ व २ व ३ भाग
तथा छोटा	कथासत्यनारायण	सृष्टिकाबयान	हिदायतनामा मुर्दरिसीन
मथुरासभा	परमार्थसार	पदार्थविद्यासार	पशुचिकित्सा
विष्णुभागवत	शार्ङ्गधरसंहिता	पदार्थज्ञानविटप	पट्टाबखतकैथी
ज्योतिष	पाराशरीसटीक	भोजप्रबन्धसार	तथाकबूलियत
मुहूर्त्तगणपति	शीघ्रबोधसटीक	शिशुबोध	रजिस्टरहाजिरीपाठशाला
मुहूर्त्तचक्रदीपिका	लघुजातक	राजनीति	रजिस्टरदाखिलखारिज
मुहूर्त्तचिंतामणिसटीक	षट्पञ्चाशिका	भाषालघुव्याकरण १ व २ भा	मुलवामदर्सा
मुहूर्त्तदीपिका	सामुद्रिक	भाषातत्वदीपिका	क्षेत्रव्यवहारिकत १ व २ भा.
बृहज्जातकसटीक	गरुड़पुराण	भाषाचन्द्रोदय	व्योहारपत्रसंग्रहकैथी
जातकालङ्कार	रामविवाहोत्सव	भूगोलतत्व	

